उपमन्यु चटर्जी के अंग्रेज़ी उपन्यास 'इंग्लिश, ऑगस्त - एन इंडियन स्टोरी' का हिन्दी अनुवाद एवं भाषिक-सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

(UPAMANYU CHATTERJEE KE ANGREZI UPANYAS 'ENGLISH, AUGUST – AN INDIAN STORY' KA HINDI ANUVAD EWAM BHASHIK- SAMAJIK-SANSKRITIK VISHLESHAN)

HINDI TRANSLATION AND LINGUISTIC AND SOCIAL-CULTURAL ANALYSIS OF ENGLISH NOVEL 'ENGLISH, AUGUST – AN INDIAN STORY' BY UPAMANYU CHATTERJEE

पीएच.डी. (हिंदी अनुवाद) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

शोध-निर्देशक — **शोधार्थी**

प्रो. देवशंकर नवीन — **शगुफ़्ता**

भारतीय भाषा केंद्र

भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

नई दिल्ली-110067

2018

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
भारतीय भाषा केंद्र
Centre of Indian Languages
भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान
School of Language, Literature & Culture Studies
नई दिल्ली-110067, भारत NEW DELHI-10067, INDIA

Date. 19/07/18

DECLARATION

I hereby declare that the research work done in this Ph.D. Thesis entitled **"Upamanyu Chatterjee Ke Angrezi Upanyas 'English, August – An Indian Story' Ka Hindi Anuvad Ewam Bhashik – Samajik – Sanskritik Vishleshan (Hindi Translation and Linguistic and Social-Cultural Analysis of English Novel 'English, August – An Indian Story' by Upamanyu Chatterjee)"** by me is the original research work, and it has not been previously submitted for any other degree in this or any other University/Institution.

Shagufta
Shagufta Ali
(Research Scholar)

19.07.2018

PROF. DEO SHANKAR NAVIN
(Supervisor)
CIL/SLL&CS/JNU

PROF. GOBIND PRASAD
(Chairperson)
CIL/SLL&CS/JNU

GRAM: JAYENU, Tel: (91-011) 26741557, 26742676 Extn: 4217, (D) 26704217; Telefax: (91-011) 26704217
Email: chair_cil@mail.jnu.ac.in, jnucil@gmail.com

आभार

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में शोधार्थी होना मेरे लिए वस्तुत: गौरव का विषय है। पीएच.डी उपाधि के विषय-चयन से लेकर शोध प्रबन्ध पूरा करने तक की यात्रा में कई मित्रों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। कोई महत्त्वपूर्ण कार्य, अग्रजों के मार्गदर्शन और आशीर्वाद के बिना सार्थक और सफल नहीं होता। मेरे माता-पिता के आशीर्वाद और प्रेरणा के बिना इस शोध की पूर्णता संदिग्ध रहती। उन्होंने पल-पल मेरा मनोबल बढ़ाया। माता-पिता के लिए तो हर संतान जन्मजात आभारी होती है, मैं किस क्षमता से उनके लिए कृतज्ञ होऊँ? अपने शोध-निर्देशक प्रो. देवशंकर नवीन के मार्गदर्शन से इस शोधकार्य को समृद्ध करने में मुझे बड़ी सहायता मिली है। मैं उनकी इस सदाशयता के लिए कृतज्ञ हूँ।

शोध के दौरान कई बार हतोत्साह होने पर मेरे दोस्त समान बड़े भाई मोहम्मद फ़ुरक़ान ने मुझे हिम्मत दी और मदद के लिए हमेशा मेरे साथ खड़े रहे। मैं अपने सभी दोस्तों तनुज, विवेक, अभिषेक, अंकिता, अमित, दिव्या ... सभी का तहेदिल से शुक्रिया अदा करती हूँ, जिन्होंने शोध के दौरान विपरीत परिस्थितियों में मेरा साथ दिया।

एम. फिल से लेकर पीएच. डी के विषय निर्धारण और सामग्री चयन तक डॉ. रणजीत साहा का मार्गदर्शन और आशीर्वाद मेरे साथ बना रहा, मैं उनकी आभारी हूँ। मैं भारतीय भाषा केन्द्र के सभी अध्यापकों के प्रति कृतज्ञ हूँ। उनके सुझावों से ही मेरा शोध कार्य समृद्ध हुआ है।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं साहित्य अकादेमी के पुस्तकालय के कर्मचारियों ने मुझे इस कार्य में बड़ी मदद की है, उन सबके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

भारतीय भाषा केन्द्र के रावत सर, रमेश भैया, आशीष भैया ने प्रशासनिक तौर पर पल-पल मेरी सहायता की है ; मैं इन सबके प्रति आभारी हूँ।

– शगुफ़्ता

विषय सूची

विषय	पृष्ट संख्या
आभार	*iii-iv*
भूमिका	*vi-x*
पहला अध्याय **भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यास और उपमन्यु चटर्जी**	1-23
दूसरा अध्याय **'इंग्लिश ऑगस्त' का हिन्दी अनुवाद**	24-393
तीसरा अध्याय **स्रोत एवं लक्ष्य पाठ का भाषिक अनुशीलन**	394-412
चौथा अध्याय **'इंग्लिश ऑगस्त' के हिंदी अनुवाद पक्षों का सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण**	413-428
पाँचवाँ अध्याय **'इंग्लिश ऑगस्त' के हिन्दी अनुवाद की समस्याएं**	429-442
उपसंहार	443-449
सन्दर्भ ग्रंथ सूची	450-457

भूमिका

भाषा केवल संचार का माध्यम ही नहीं, यह राष्ट्रीय पहचान एवं जातीय परम्परा की निशानी भी है। आदिम समय से कोई-न-कोई भाषा इसकी पहचान बनी रही है। यह पहचान साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत होती रही है। साहित्य समाज का आईना होता है। किसी देश या समाज को उस क्षेत्र के साहित्य और संस्कृति के सहारे ही समझा जा सकता हैं। क्योंकि हर लेखक समाज से लिए गए विषय से ही अपने समाज को संबोधित करता है और उसकी अच्छाई या बुराई को रेखांकित करता है।

भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य का तात्पर्य भारत में रहनेवाले लेखकों द्वारा अंग्रेज़ी भाषा में लिखा जानेवाला साहित्य है जिनकी मातृभाषा हिन्दी या अन्य भारतीय क्षेत्रीय भाषाएँ हैं। इसे उस भारतीय समूह जैसे– वी.एस. नायपाल, किरण देसाई, झुम्पा लाहिरी और सलमान रुश्दी से जोड़कर भी देखा जाता है, जो मूलत: भारतीय हैं। अगर इसको एक कालखण्ड के रूप में देखें तो यह उत्तर-उपनिवेश काल साहित्य के अन्तर्गत आता है। पहले अंग्रेज़ी भाषा में साहित्य की रचना अभिजात्य की निशानी मानी जाती थी परन्तु बीसवीं सदी के अंतिम कुछ दशकों से अब यह सामान्य वर्ग तक आ गई है। भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यासकारों की इसी सशक्त कड़ी में एक अनिवार्य हस्ताक्षर हैं, उपमन्यु चटर्जी। जिन्होंने अपने उपन्यास *इंग्लिश ऑगस्त* में अपनी ब्लैक कॉमेडी वाली एक नयी लेखन शैली के साथ प्रस्तुत की। साथ ही, उन्होंने भारत में रहकर और इस उपन्यास की कथावस्तु का सविस्तार एवं सूक्ष्मता से चित्रण किया। इस कृति ने उन्हें उन अधिकांश तमाम भारतीय अंग्रेज़ी कथाकारों से अलग कर दिया, जो भारत से बाहर रहकर भारतीय कथावस्तु को अपने साहित्य का विषयवस्तु बनाते रहे हैं। उपमन्यु चटर्जी भारतीय प्रशासनिक सेवा के उच्च अधिकारी रहे। उन्होंने कई कहानियाँ लिखीं। *'The Assassination of Indira Gandhi'* उनकी चर्चित कहानी है। उनका पहला उपन्यास है *'English, August – an Indian story'* सन् 1988 में प्रकाशित हुआ। इस पर एक फ़िल्म भी बनी, जो देव बेनेगल ने *'English August'* नाम से ही बनायी। साथ ही, इसका क्षेत्रीय भाषा बांग्ला में अनुवाद भी बेहद चर्चित हुआ। उनकी अन्य कृतियाँ हैं– *'The Last Burden'*, *'The Mammaries of the Welfare*

State', 'Weight Loss', 'Way to Go', और *'Fairy Tales at Fifty'* उनका नवीनतम उपन्यास है।

उपन्यासकार उपमन्यु चटर्जी उपन्यास *इंग्लिश ऑगस्त* के पाठक वर्ग से भलि-भांति परिचित है। वे जानते हैं कि इसके भारतीय पाठक वही होंगे, जो अंग्रेज़ी कथा साहित्य पढ़ते हैं और आधुनिक कथा प्रवृत्तियों, चुनौतीपूर्ण विषयवस्तु और नई शैली से परिचित हैं। इसलिए उन्होंने *इंग्लिश ऑगस्त* में मध्यवर्गीय भारतीय मानसिकता का रूढ़िग्रस्त ढाँचा खड़ा किया गया है। हालाँकि इसका मुख्य नायक अगस्त्य का अभिजात्य पात्रों के साथ कई परंपरागत जीवन जीने वाले पात्रों से ही नहीं, आदिवासी इलाक़े के पात्रों से भी सामना हुआ है, लेकिन वह अपने स्वभाव और रचाव के अनुरूप इन सबसे अलग अपना जीवन जीना चाहता है– निर्द्वंद्व और निर्बंध।

उपमन्यु चटर्जी द्वारा लिखित अंग्रेजी उपन्यास *इंग्लिश ऑगस्त* प्रस्तुत शोध-प्रबंध में आधार सामग्री रही है। इस उपन्यास का मूल से हिन्दी अनुवाद एवं अनूदित पाठ का मूल पाठ के साथ भाषिक-सामाजिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण भी इसमें किया गया है। अनुवाद के दौरान उपस्थित समस्याओं का निदान ढूँढ़ा गया है। बंगाल की तत्कालीन पृष्ठभूमि को उसके सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। इस दृष्टि से बंगाल के संस्कृतिविद और नृतत्त्वशास्त्री द्वारा लिखित पुस्तकों को भी आधार बनाया गया है। इनमें उल्लेखनीय नाम हैं– विनय घोष, नीहार रंजन राय एवं सुकुमार सेन। संबंधित ग्रंथों में उल्लेखित सांस्कृतिक बिन्दुओं की पहचानकर यह देखने का प्रयास किया गया कि *इंग्लिश ऑगस्त* में लेखक ने किन-किन सांस्कृतिक पहलुओं को सूत्र रूप में या विस्तार से विवेचित किया है। उपन्यास में अगस्त्य, उसके पिता, मित्र ध्रुव, टॉनिक और पूर्व प्रमिका नीरा आदि पात्रों पर पड़नेवाले पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को भी अनूदित पाठ में बनाए रखने का पूरा प्रयास किया है।

इंग्लिश ऑगस्त उपन्यास भारतीय अंग्रेज़ी में लिखित कथा शैली की दृष्टि से एक अनोखा और विशिष्ट उपन्यास है। इसमें एक युवा प्रशासनिक अधिकारी के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व, नौकरशाही व्यवस्था (बल्कि दुरवस्था) और दूर-दराज़ के क्षेत्रों की समस्याओं का प्रामाणिक चित्रण किया गया है। साथ ही, इसमें सामाजिक-सांस्कृतिक

और भाषिक समस्याओं को (ब्लैक कॉमेडी) हास्य-व्यंग्य एवं विनोदपूर्ण शैली और माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। चूँकि इसके गद्य के विभिन्न रूपों के अनुवाद की प्रचुर संभावनाएँ विद्यमान हैं, इसलिए इनकी पहचान कर हिन्दी में अनुवाद करने का उद्यम किया गया। *इंग्लिश ऑगस्त* का हिन्दी अनुवाद सर्वथा एक नया शोध कार्य है। चूँकि लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में ब्लैक कॉमेडी शैली का प्रयोग किया है इसलिए इसका प्रस्तुत अनुवाद न केवल चुनौतीपूर्ण बल्कि शोधकार्य की दशा में एक नया प्रस्थान है।

भाषा विज्ञान के स्तर पर हिंदी और अंग्रेज़ी के तुलनात्मक अध्ययन से दोनों के भाषिक संरचनाओं को जानने में मदद मिली है। साथ ही, अनुवाद के दौरान दोनों ही भाषाओं की विशिष्टताओं एवं समस्याओं की पहचान के अलावा उनके समाधान पर भी चर्चा की गई है।

उपन्यास में वर्णित त्रासदी को लेखक ने व्यंग्य एवं विनोद(satire and wit) के माध्यम से प्रस्तुत किया है, जिसे ब्लैक कॉमेडी कहते हैं। साथ ही, इस की विडंबनापूर्ण शैली को हिन्दी अनूदित कृति में यथारूप उपस्थित रखना शोध अध्येता की प्राथमिकता रही है।

उपमन्यु चटर्जी के अंग्रेज़ी उपन्यास '*इंग्लिश, ऑगस्त–एन इंडियन स्टोरी* का हिन्दी अनुवाद एवं भाषिक-सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण' विषयक इस शोधकार्य में भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य के लेखक उपमन्यु चटर्जी के चर्चित उपन्यास *इंग्लिश ऑगस्त* का हिन्दी अनुवाद करते हुए दोनों भाषाओं की विशिष्ट संरचना की भाषिक और सामाजिक - सांस्कृतिक समतुल्यता सम्बन्धी कई रोचक प्रसंग सामने आए। दोनों भाषाओं की स्थानीयता एवं सांस्कृतिक प्रयुक्तियों को ध्यान में रखकर विश्लेषणपरक व्याख्या प्रस्तुत करना वस्तुत: आह्लादक और ज्ञानवर्द्धक रहा। यह कार्य उक्त उपन्यास के हिन्दी अनुवाद को सामने रखकर किया गया है। आवश्यकतानुसार पाठपरक व्याख्या एवं पुनर्सृजन को भी आधार बनाया गया। अनुवाद के दौरान एक तरफ़ समान (सम) अभिव्यक्ति को प्राथमिकता दी गयी, तो दूसरी तरफ़ असमान (विषम) व्याख्यात्मक अभिव्यक्तियों को भी प्राथमिकता दी गई है। इन प्रसंगों पर पर्याप्त सावधान रहते हुए

समुचित अनुवाद किया गया है। स्थानीय समाज तथा लेखक के जीवन एवं स्मृति में विद्यमान बंगाली रीति-रिवाज़ों के साथ, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्सवों, पर्वों, पदनामों एवं नाते-रिश्तों की शब्दावली के साथ मूल पाठ के आन्तरिक पक्षों का भी अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत शोध-कार्य को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहले अध्याय में भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यास की चर्चा करते हुए आधुनिक कथा साहित्यकारों की परवर्ती-पीढ़ी के चर्चित कथाकार उपमन्यु चटर्जी का वैयक्तिक और साहित्यिक परिचय दिया गया है। साथ ही, उनके द्वारा लिखित अन्य गद्य साहित्य और वैचारिक लेखन के अध्ययन के साथ उनके उपन्यास *इंग्लिश ऑगस्त* की अन्तर्वस्तु की भी चर्चा की गई है।

दूसरे अध्याय में *इंग्लिश ऑगस्त* का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है। मूल उपन्यास में कूल 288 पृष्ठ हैं। इस अध्याय में उपमन्यु चटर्जी द्वारा रचित उपन्यास *इंग्लिश ऑगस्त* का संपूर्ण हिन्दी अनुवाद किया गया है। साथ ही, अनुवाद में विभिन्न सिद्धान्तों– जैसे समतुल्यता का सिद्धान्त, व्याख्या का सिद्धान्त, लोप एवं संयोजन की प्रविधि आदि का विशेष ध्यान रखा गया है।

तीसरे अध्याय में स्रोत एवं लक्ष्य पाठ का भाषिक अनुशीलन है। इस अध्याय में मूल अंग्रेज़ी पाठ के संदर्भ में, हिन्दी अनुवाद का भाषिक विश्लेषण किया गया है। भाषाई विभिन्नताओं और विषमताओं के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन और विश्लेषण इसका आधार है।

चौथा अध्याय *इंग्लिश ऑगस्त* के हिंदी अनुवाद से सबंद्ध पक्षों का सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण है। इस अध्याय में 'इंग्लिश ऑगस्त' के आधार पर बंगाल की सांस्कृतिक पहचान और मदना-जैसी जगह की देशज विशिष्ट एवं स्थानीय प्रथाओं, मान्यताओं का सप्रसंग उल्लेख किया गया है। साथ ही, रिश्ते-नाते से संबंधित पदों एवं प्रयोगों, पात्रों की प्रवृत्तियों का मनोवैज्ञानिक रूप से और प्रशासनिक स्तर पर,

आदिवासियों के शोषण और नक्सलवाद से सबंधित समस्या का विश्लेषण और चर्चा की गई है।

पाँचवाँ अध्याय *इंग्लिश ऑगस्त* के हिन्दी अनुवाद की समस्याओं पर केन्द्रित है। इस अध्याय में प्रस्तुत उपन्यास के अंग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद के दौरान आनेवाली विभिन्न समस्याओं के निदान पर चर्चा की गई है।

उपसंहार में शोध योजना से संबंधित निष्कर्ष दिए गए हैं। प्रस्तुत अंग्रेज़ी उपन्यास से हिन्दी अनुवाद के दौरान सके मूल पाठ एवं लक्ष्य भाषा हिन्दी में आनेवाली समस्याओं का समाधान किया गया है। इसके साथ ही संदर्भ ग्रंथ सूची के अंतर्गत आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथों, शब्दों-कोशों, सहायक पत्र-पत्रिकाओं एवं सहायक वेब-साइट्स दी गई है।

पहला अध्याय

भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यास और उपमन्यु चटर्जी

पहला अध्याय
भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यास और उपमन्यु चटर्जी

भाषा की महत्ता को रेखांकित करते हुए हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने नारा दिया था – 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।' जिसका तात्पर्य भारतीयों की उन्नति का मूल भारतीय भाषाओं की उन्नति से था। परन्तु उसी समय एक और नया विचार सामने आया जिसने विदेशी भाषा को वरीयता दी। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य का उद्भव हुआ। इसी विषय पर भारतीय अंग्रेज़ी साहित्येतिहास के विचारक एम. के. नाईक का कहना है कि "एक ओर शक्तिशाली ब्रिटेन और दूसरी ओर सतह पर स्थिर किन्तु आंतरिक उथल-पुथल ग्रस्त भारत का, अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में जो सामना हुआ, उसी के एक दिलचस्प उप-उत्पाद के रूप में भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य की शुरुआत हुई।"[1] ए. सुब्रह्मण्यम, वी. चिंतामणि, हरि सिंह गौर तथा एस. नागराज - जैसे अनेक भारतीय साहित्यकारों ने अंग्रेज़ी भाषा में साहित्य सृजन की परम्परा आरम्भ की तथा उनकी कृतियों को प्रसिद्धि मिली। तथ्य यह भी है कि अंग्रेज़ी भाषा में साहित्य रचने वालों की संख्या अन्य भारतीय भाषाओं के रचने वालों की अपेक्षा बहुत कम है। इस सीमा के बावजूद जितना कुछ लिखा गया, उसमें से बहुत कुछ लोकप्रिय हुआ और उसमें उत्कृष्टता के गुण भी हैं।

---

[1] नाईक,एम. के., अनु. पहारे हेमचन्द्र, *भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य का इतिहास*, 1989, पृ.1

इसमें आरम्भिक समस्या यह थी कि इस 'बाई प्रोडक्ट,'[2] भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य को किस नाम से पुकारा जाए। इसके लिए तरह-तरह के नाम की तलाश शुरू हुई। किसी ने इसे 'अंग्रेज़ी में भारतीय लेखन' नाम दिया तो किसी ने इसे 'भारतीय आंग्ल साहित्य' तथा 'इण्डोएंग्लियन साहित्य' नाम दिया। इतना ही नहीं, कई लोगों ने तो इसे 'एंग्लो इंडियन साहित्य'नाम से भी अलंकृत कर दिया। 'एंग्लो इंडियन' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम कलकत्ता में प्रकाशित *'इण्डो एंग्लियन लिटरेचर'* शीर्षक पुस्तक में उन भारतीय लेखकों को लिए हुआ था, जिन्होंने अंग्रेज़ी में लिखना आरंभ किया था।[3] इस नामकरण को लेकर विद्वानों ने विभिन्न मत प्रस्तुत किए, जिनका विस्तारपूर्वक अध्ययन एम. के. नाईक ने उक्त पुस्तक में किया है। उन्होंने एक जगह लिखा है कि प्रो. वी. के गोकाक ने अपनी पुस्तक *इंग्लिश इन इंडिया – इट्स प्रजेंट एण्ड फ़्यूचर* में इंडो एंग्लियन साहित्य की व्याख्या भारतीय लेखकों की अंग्रेजी रचनाओं के रूप में किया है। इंडो इंग्लिश साहित्य से उनका तात्पर्य भारतीयों द्वारा भारतीय साहित्य के अंग्रेज़ी अनुवाद से है।[4] इसी प्रकार भारतीय अंग्रेजी साहित्य के पुरोधा डा. के आर.श्रीनिवास आयंगर ने अपने विशद सर्वेक्षण *'इंडियन राइटिंग इन इंग्लिश'(1962)* में अन्य लेखकों द्वारा रवींद्रनाथ टैगोर के उपन्यासों एवं नाटकों के अनुवाद को भी अंग्रेज़ी में भारतीय रचनात्मक लेखन शीर्षक के अन्तर्गत शामिल किया है।[5] बहरहाल, भारतीय लेखकों द्वारा अंग्रेजी में रची गई मौलिक कृतियों के नामकरण संबंधी विवाद में पड़े बिना भारतीय अंग्रेज़ी कथासाहित्य के उन चुनिंदा एवं उत्कृष्ट उपन्यासों की तरफ आते हैं, जो भारतीयों द्वारा मौलिक रूप में अंग्रेज़ी में रची गई।

अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग आरंभ में केवल भाषणों, छोटे-छोटे निबंधों तथा समसामयिक प्रश्नों की चर्चा तक ही सीमित रहा। 'बंकिमचन्द्र चटर्जी की *राजमोहन्स वाइफ* (1864) को प्रथम भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यास माना जाता है।'[6] साथ ही, इसको भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य के जन्म के रूप में देखा जाता है। यह उपन्यास समकालीन सामाजिक परिदृश्य की जागरुकता को दिखता है। इसके उपेक्षात्मक सिद्धांत की जड़ें

---

[2] नाईक, एम.के.,*ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन इंग्लिश लिटरेचर*, 2005, पृ.1

[3] नाईक, एम. के., अनु. पहारे हेमचन्द्र, *भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य का इतिहास,* 1989, आमुख

[4] उपरिवत् पृ.1

[5] उपरिवत् पृ.2

[6] Anjaria, Ulka, *A History of the Indian Novel In English*, Cambridge University Press, 2015, p. 31-44

संस्कृत की साधनात्मक कथा या धर्म कथा की परंपरा में भी होती है, हालाँकि यह धार्मिक और सामाजिक अभिविन्यास में थी। उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण का एक महत्त्वपूर्ण पहलू सामाजिक सुधार ही था, इसलिए कुछ शुरुआती भारतीय अंग्रेजी फिक्शन(कथा साहित्य) में यह स्वाभाविक रूप से एक महत्त्वपूर्ण विषय बन गया। इनमें से कुछ उपन्यासकारों के विषय महिलाओं की स्थिति, किसानों की दुर्दशा और पुराने अभिजात वर्ग के क्षय से जुड़े सवालों से सम्बद्ध थे। शेविन्तिबाई एम निकमबे की *Ratanbai : A sketch of a Bombay High Caste Hindu Young Wife* (1895), आर. सी. दत्त की *The Lake of Palms: A story of Indian Domestic Life* (1902), लाल बिहारी डे की *Govinda Somanta or The History of a Bengal Raiyat or Bengal Peasant life* (1908) सरदार जोगेन्दर सिंह की *Nasrin, An Indian Medley* (1911) कुछ ऐसे उपन्यास हैं, जो इस तरह के विषयों को दर्शाते हैं।

सृजनात्मक साहित्य की कोटि में रखी जाने वाली कृतियाँ मोटे तौर पर बीसवीं सदी के आरंभ से ही शुरू हुई। यहाँ उल्लेख किया जाने वाला एक विशिष्ट नाम रवींद्रनाथ टैगोर का है, जो कम से कम दो हज़ार गाने, कई नाटकों और कई उपन्यासों के साथ एक उदार लेखक थे। टैगोर, जो एक कुलीन और समृद्ध बंगाली परिवार से संबद्ध थे, मूल रूप से उन्होंने बांग्ला में अपना अधिकांश साहित्य रचा, लेकिन उनके कुछ उपन्यासों को अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है– *The Home and the World* (घरे बाहिरे, 1919), *The Wreck* (नौकाडुबी, 1921) और *Gora* (गोरा, 1923), इनकी सभी रचनाएँ सामाजिक रूप से प्रासंगिक हैं और सोचने के लिए मजबूर करने वाली हैं। इन उपन्यासों के माध्यम से, टैगोर ने एक आधुनिक भारत के दृष्टिकोण प्रस्तुत किया साथ ही यह सामाजिक घटनाओं को समेटे हुए हैं। जैसे गोरा में स्पष्ट शब्दों में राष्ट्रवाद के साथ विजातीय विवाह की समस्या पर भी विचार किया गया है।

अन्य दो प्रमुख उपन्यासों में मुख्य तौर पर धार्मिक जीवन रूपों को प्रस्तुत किया गया है। बी.आर.राजन अय्यर का अधूरा उपन्यास *True Greatness or Vasudeva Sastri* ने एक नायक का आदर्श चित्र पेश किया है जो गीता की स्थितप्रज्ञ के स्तर

को प्राप्त कर चुका है। माधविया का *Thillai Govindan (1916)* एक समकालीन तिल्लई भारतीय ब्राह्मण युवा के मानसिक विकास का आत्मकथात्मक लेख है, जो पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव में अस्थायी तौर पर अपनी आस्था खो देता है, लेकिन गीता की पुनःप्राप्ति के बाद शांति महसूस करता है।

ऐतिहासिक रोमांस ने अंग्रेजी में भारतीय कथा साहित्य के इस चरण में काफी शुरुआती भूमिका निभाई। प्रमुख उदाहरण हैं; मिरज़ा मारुद का *Lalun the Beragun* या *The Battle of Panipat (1884),* टी रामकृष्णन का *Padmini (1903)* और *A Dive for Death (1911)*, जोगेन्द्र सिंह का *Nur Jahani: The Romance of an Indian Queen (1909)* और स्वर्ण कुमारी घोष का *The Fatal Garland (1915)*। जिसमें तमिल समय से लेकर मराठा इतिहास तक ऐतिहासिक काल खंड को समेटा गया है ।

इस चरण में आत्मकथात्मक साहित्य ने अपनी उपस्थिति को स्पष्ट किया। शुरुआती उपन्यासों में से कुछ ऐसे हैं जो सच मे सभी व्यक्ति के जीवन पर कम से कम एक उपन्यास के लिए सामग्री उपलब्ध कराते हैं। जैसा कि पहले से ही उल्लेख किया गया है, माधव्या के तिल्लई गोविंदन और निकमबे के रत्नाबाई दोनों में आत्मकथात्मक तत्त्व बहुत कम दिखाई देते हैं। कुरुपाबाई सथियन्दन का *कमला: ए स्टोरी ऑफ हिंदू लाइफ* (1895) और *सुगुना: ए स्टोरी ऑफ़ नेटिव क्रिश्चन लाइफ* (1895) उपन्यास रूप में आत्मकथाएँ हैं।

कथा तकनीक की मौलिकता के बारे में के.एस.राममूर्ति ने कहा कि प्रारंभिक भारतीय अंग्रेजी उपन्यासकार "किसी प्रकार के अनुकरण करने वाले नहीं बल्कि सचेतक प्रयोगकर्ता थे, जिन्होंने एक विदेशी शैली और माध्यम को अपनाया, सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति और संवेदनशीलता के लिए जो विशेष रूप से भारतीय थी।".[7] लेकिन डॉ. एम.के. नाईक इस बात से सहमत नहीं हैं और ये टिप्पणी करते हैं

[7] "were by no means imitators but conscious experimenters who adopted an alien form and medium to socio-cultural situation and sensibility which were specifically Indian" (Naik, 2004, p.12)

कि "इन उपन्यासों में से कुछ में कल्पना का अत्यधिक तत्त्व प्राचीन संस्कृत की काल्पनिक परंपरा के साथ संबंध स्थापित करते हैं, लेकिन स्कॉट, बुल्वर-लिट्टन और जी. डब्लयू. एम. रेनॉल्ड्स से भी इसके उधारों का स्पष्ट संकेत हैं।" उन्होंने आगे भी टिप्पणी की है: "हेनरी और इस प्रकार के अन्य लेखकों के रसिक रोमांस ने प्रारंभिक भारतीय अंग्रेज़ी सामाजिक उपन्यासकार को प्रभावित किया है।"[8]

तकनीकी तौर पर सतही जीवन मूल्यों में रचनात्मक प्रयोग से जागरुकता में कमी का संकेत मिलता है। इन शुरुआती कथाओं में प्रयोग का एकमात्र संभव प्रमाण *राजमोहन्स वाइफ़* में पाया जा सकता है, जो भारतीय शब्दों को वर्णनात्मक अनुच्छेदों में उदारतापूर्वक उपयोग करते हैं।

यह ध्यान देने योग्य है कि बंकिमचंद्र चटर्जी की भारतीयता का उपयोग आम तौर पर भारतीय शब्दों के प्रयोग तक ही सीमित रहता है (जैसे: 'साड़ी, धोती', 'पान', 'महल', 'सुपारी', 'कचेरी')इसके विपरीत,बाद में मुल्कराज आनंद,भारतीय शैली से, नीतिवचन और अभिव्यक्ति आदि का यथाशब्द अनुवाद करके अंग्रेज़ी में एक विशेष रूप से भारतीय रंग भरने का जो प्रयास किया, उसे बहुत सराहनीय नहीं कहा गया।

भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास और अंग्रेजी में भारतीय उपन्यास दोनों में सन् 1930 और सन् 1980 की अवधि महत्त्वपूर्ण थी। इस अवधि तक भारतीय अंग्रेजी साहित्य में कोई एक भी संतोषजनक काम नहीं हुआ था। इस चरण के दौरान भारतीय अंग्रेजी उपन्यास का अचानक पल्लवन होता है। इसलिए, इस अवधि को भारतीय अंग्रेजी उपन्यास का 'दूसरा आगमन ' माना जाता है। इसलिए, यह सूत्रों या आधारों की चर्चा की माँग करता है जिससे भारतीय अंग्रेजी उपन्यास फला फूला। पहली महत्त्वपूर्ण घटना है, स्वतंत्रता संग्राम के लिए राष्ट्रीय आंदोलन और महात्मा गांधी और नेहरू-जैसे महान व्यक्तित्वों का आगमन। महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया और ब्रिटिश सरकार के साथ असहयोग के लिए कहा। चूँकि वह स्वयं बलिदान का प्रतीक थे और उन्होंने जो भी अभ्यास किया था वह पूरे देश में

[8] "the sentimental romances of Henry Wood and of such other writers have influenced early Indian English social novelists" (Naik, 2004, p.12)

जन को आकर्षित करता था। अपने धार्मिक, जाति, क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विविधता को भूलकर लोगों ने महात्मा गांधी के विचारों का पालन किया और राष्ट्रीय आंदोलन में न केवल देश की आजादी पाने के लिए बल्कि गाँव की अर्थव्यवस्था, पिछड़े वर्ग के लोगों, अस्पृश्यों और महिलाओं के सुधार के लिए शामिल हुए। महात्मा गांधी ने अपने लेखों के माध्यम से अपने विचारों और विचारों को प्रचारित किया और उनके बारे में बताया। गाँधी द्वारा विदेशी दासता के बंधनों से मुक्त कराने के लिए शुरू किए गए आंदोलन, समाज के भीतर व्याप्त कुरीतियों, अस्पृश्यता आदि को दूर करनेवाले रचनात्मक प्रयास, उनकी अहिंसा नीति आदि ऐसे तमाम कारण थे, जिन्होंने गाँधी को तत्कालीन समाज का नायक बना दिया था। इनके प्रभाव से तत्कालीन लेखक प्रभावित हुए। इन लेखकों ने समसामयिक सामाजिक राजनीतिक परिस्थितियों को अपने साहित्य का मुख्य विषय बनाया और उपनिवेशवाद के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के लिए प्रेरित करते रहे। उस क्रम में ए. सुब्रहमण्यम के *इंदिरा देवी (1931),* वी. चितांमणि के उपन्यास *वेदांतम-ए क्लैश ऑफ ट्रेडीशन (1928)*, हरि सिंह गौर के *हिज़ ओनली लव (1930)* तथा एस. नागराज के *अथवार हाउस (1939)* विशेष उल्लेखनीय हैं।

इसके बाद जिन विशिष्ट कथा साहित्यकारों ने भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य में अपनी महत्त्वपूर्ण स्थिति दर्ज कराई, उनमें प्रमुख थे– मुल्कराज आनंद, राजा राव एवं आर. के. नारायण।

मुल्कराज आनंद का साहित्य जगत में पदार्पण उनकी पहली कृति *अनटचेबुल(1935)* के साथ हुआ और इसके बाद उन्होंने क्रमश: *कुली (1936), टू लीव्स एण्ड ए बड (1937), द विलेज़ (1939) तथा एक्रास द ब्लैक वाटर्स (1940)*- जैसी कृतियों का सृजन किया। मुल्कराज आनंद का कथा-साहित्य सर्वहारा वर्ग के पीड़ा और संघर्ष से सबंद्ध था। एम. के. नाईक ने इनके बारे में लिखा है, “यह विचार बरबस मन में आता है कि आनंद- जैसे लेखक के लिए जिसमें समकालीन सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के लिए इतना गहरा सरोकार था, स्वातंत्र्योत्तर भारत का दृश्य काफी उत्तेजक और उन्नत कलात्मक चुनौती से समृद्ध होना चाहिए था। किन्तु सन् 1945 में अंतिम रूप से भारत आ जाने के बाद वे एक निजी त्रासदी के कारण

मानसिक रूप से संतप्त रहे। संभवत: वे अपने आप में डूबे रहे तथा अतीत से पलायन करते हुए तत्कालीन वर्तमान का सामना करने से कतराते रहे।”[9] भले ही उनके परवर्ती लेखन में वह ओज और तेवर न रहा हो फिर भी उनकी कृतियाँ प्रभावशाली साहित्यिक उपलब्धि कही जाएँगी।

स्वामी एण्ड फ्रेंड्स (1935) से अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत करनेवाले आर. के. नारायण ने अपनी कतिपय अमूल्य कृतियों द्वारा भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य को समृद्ध किया। हालाँकि उनके कुछ उपन्यास, जैसे *द बैचलर ऑफ आर्ट्स* (1937) और *द डार्क रूम* (1938), आदि उनकी ऐसी रचनाएँ है, जिनकी कथावस्तु को उनकी प्रतिभा के लिए उपयुक्त नहीं पाया गया। इनके कथा-साहित्य में मालगुडी नामक स्थान विशेष, दक्षिण भारत के एक काल्पनिक नगर की चर्चा बार-बार आती है। उनके अन्य प्रकाशित उपन्यास जैसे– *मिस्टर संपत* (1949), *द वेण्डर ऑफ स्वीट्स* (1967) आदि सभी में काल्पनिक नगर मालगुडी में रहनेवाले मुद्रक, लिपिक आदि का चित्रण मिलता है। वस्तुत: मालगुडी नगर प्रतीक रूप में भारत का ही प्रतिनिधित्व करता था, जो विदेशी तकनीक द्वारा भारत को आधुनिक बनाने की क़वायद में शामिल था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारायण की कला अपने शिखर तक पहुँचती है और उसे शिखर पर पहुँचाने वाले सोपानों के रूप में उनके तीन उपन्यास थे– *द फाइनेन्शियल एक्सपर्ट* (1952), सन् 1960 ई. में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित *द गाइड* (1958), तथा *द मैनइटर ऑफ मालगुडी* (1962)। दक्षिण भारत के एक मध्यवर्गीय परिवार से संबद्ध नारायण का जीवन सादगीपूर्ण रहा। वह मानवतावादी लेखक थे, इसलिए उनकी कथा-कृतियों में कहीं भी अमानवीय परिस्थितियों का चित्रण नहीं है। उनकी अलंकार रहित भाषा उनके सादगीपूर्ण विचारों को व्यक्त करने में पूर्णत: सफल रही है।

दक्षिण भारतीय परिवार के ही एक विशिष्ट उपन्यासकार हैं- राजा राव। उन्होंने केवल चार उपन्यास ही लिखे जिसमें *कांतापुरा* (1938) उनका पहला उपन्यास है। आज़ादी के पूर्व लिखा गया यह उपन्यास गाँधी युग की सच्ची तस्वीर उकेरने में

---

[9] नाईक, एम. के., अनु. पहारे हेमचन्द्र, *भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य का इतिहास, 1989*, पृ.165

सफल रहा है। फिर लंबी चुप्पी के बाद सन् 1960 में प्रकाशित *द सर्पेंट एंड द रोप* उपन्यास भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य की एक महान कृति थी, जिसे सन् 1963 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनका तीसरा उपन्यास था *द कैट एण्ड द शेक्सपीयर* । राजा राव ने भारतीय जीवन दर्शन को केंन्द्र बनाकर अपने उपन्यास लिखे। इनके उपन्यासों में पूर्व -पश्चिम की टकराहट की गूँज मुखरित हुई है। राव के लेखन में गांधीजी की आत्मकथा के प्रभाव दिखता है। उनके समकालीनों में कई ने सीधे उनके लेखन के ऋण को स्वीकारा है। उदाहरण के लिए, भवानी भट्टाचार्य *Gandhi: the Writer* (1919) में मानते हैं– "*माई एक्सप्रीमेंट विद ट्रुथ* उपन्यास रूपों के लिए एक अपरिहार्य मॉडल के रूप में है और गांधी को 'लेखकों के लेखक' के रूप में प्रंशसा करते हैं और दावा करते हैं कि उपमहाद्वीप में अपने प्रति हस्ताक्षर में सर्वश्रेष्ठ लेखन रखते हैं।"[10]

एक अर्थ में सन् 1930 और सन् 1940 के दशक भी नेहरू के दशक थे। जैसे ही सन् 1933 के दौरान नेहरू ने अपने राजनीतिक जीवन के सबसे क्रांतिकारी और मार्क्सवादी चरण में प्रवेश किया, उन्होंने बताया कि "वास्तविक नागरिक सिद्धांत समाजवादी आदर्श हैं।" नेहरू ने आत्म परिचय में बताया है– "पूर्व और पश्चिम का एक विचित्र मिश्रण,घर पर कहीं नहीं अनुचित हर जगह।"[11] इस प्रकार, नेहरू और गांधी के आदर्शों के बीच एक नतीजा निकला और उसने समकालीन कथा के लिए स्रोत प्रदान किया था। यूरोप की दशा इतनी अच्छी नहीं थीं। यह दशक दो विश्वयुद्धों की घटनाओं से प्रभावित, सभ्यता संकट और बौद्धिक वैश्विक अर्थव्यवस्था के निराशावाद से जूझ रहा था। इसलिए, कई यूरोपीय बुद्धिजीवियों और लेखकों ने यूरोप की मुख्य धारा और इसके सांस्कृतिक बोझ से असंतुष्ट होने के कारण व्यापक संस्कृतियों के साथ ही व्यापक ग़ैर-पश्चिमी दुनिया में अपने रचनात्मक संसाधनों की तलाश शुरू कर दी। मूल और विदेशी प्रभावों ने उत्पादक संश्लेषण प्राप्त किया।

---

[10] "My Experiments with Truth as an indispensable model for the novel forms and praises Gandhi as a 'writer of writers' and claims that the best writing in the subcontinent bears his counter signature" (Mehrotra, 2006, p.172)

[11] "a queer-mixture of the East and West, out of place everywhere at home nowhere" (Mehrotra, 2006, p.172)

उदाहरण के लिए, येट्स और एलियट ने उपनिषदों के अध्ययन के लिए भारत में एक विशाल कथा संसाधन पर प्रकाश डाला। इस परिवेश में, प्रवासी भारतीय उपन्यासकारों को प्रचलित यूरोपीय फ़ैशन द्वारा 'भारतीय संस्कृति और शास्त्रों में लौटने' के लिए निर्देशित किया गया था। इस समय, आधुनिकतावाद चरम बिंदु पर पहुँच गया था। यह एक अस्पष्ट विरासत साबित हुआ। अपने अभिजात वर्ग और अन्य संस्कृतियों के साथ स्वत: को प्रस्तुत करने का कार्य पर तेज़ी से आक्षेप किया जा रहा था। कई मार्क्सवादी आलोचकों और लेखकों ने आधुनिक लेखन की अभिव्यक्ति और ‘सोलिपिसाइटी’ के ख़िलाफ़ रोते हुए और अधिक सरल और सुलभ गद्य शैली के लिए एक अभियान शुरू किया। पूर्व और पश्चिम के बीच इस नए और जिज्ञासु पुल का सामना करते हुए कई प्रवासी भारतीय लेखकों ने आधुनिकतावादी पंथों के साथ विलय की एक क्रमिक प्रक्रिया को सौंप दिया। इसके परिणामस्वरूप, आनन्द ने ब्लूम्सबरी लेखकों के बौद्धिकता को खारिज कर दिया और इसी तरह ऑब्रे मेनन ने भी देखा कि ब्लूम्सबरी के खूबसूरत लोगों ने मानव दयालुता की कमी महसूस की।

अपने समय और समाज के सच को बयान करने वाले अन्य उपन्यासों में प्रमुख थे– भवानी भट्टाचार्य। जिनका पहला उपन्यास *सो मेनी हंगर्स* (1947) बंगाल के अकाल और भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि पर लिखा गया था। अकालपीड़ित कराहती जनता के हृदय-विदारक दृश्यों का मार्मिक चित्रण करने में उपन्यास पूर्णतया सफल रहा। दूसरा उपन्यास *म्यूज़िक फॉर मोहिनी* (1952) आज़ादी के बाद प्रकाशित हुआ, जिसमें सामंतवादी मानसिकता से जकड़े लोगों को आधुनिक बनाकर भारत को विकसित राष्ट्रों की क़तार में कैसे खड़ा किया जाए, इस पर विशेष ध्यान दिया गया था। सन् 1967 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित उपन्यास *शैडो फ्राम लद्दाख* (1966) भारत पर सन् 1962 के चीनी हमले की पृष्ठभूमि में लिखा गया। इस उपन्यास में लेखक ने यह महसूस किया कि गाँधी के अहिंसा और सत्याग्रह- जैसे हथियार अब विदेशी ताक़तों से लड़ने के लिए पर्याप्त नहीं। यदि भारत को विश्व में अपनी पहचान बनानी है तो नई तकनीकी का विकास आवश्यक है।

इसके ठीक विपरीत विचार रखनेवाले उपन्यासकार मनोहर मलगांवकर उपन्यास को विशुद्ध मनोरंजन का साधन मानते थे। उनका उपन्यास *ए बैण्ड इन द गैंजेज़*

ऐतिहासिक महत्त्व रखते हुए भी नीरस नहीं जान पड़ता बल्कि मलगांवकर की उपन्यास-कला पर गहरी पकड़ एवं चुस्त शैली ने इसे बेहद रोचक बना दिया है। उनके अन्य उपन्यास हैं–*डिस्टैण्ट ड्रम* (1960), *कॉम्बैट ऑफ शैडोज़* (1962) और *द प्रिंसेज* (1963)।

भारतीय अंगेज़ी के वे उपन्यास, जिन्होंने घटनाओं की प्रामाणिकता बनाए रखने को ही प्राथमिकता दी, वे प्रभाव क़ायम रखने में असफल रहे। जैसे कि खुशवंत सिंह का उपन्यास *ट्रेन टू पाकिस्तान* (1956) रोचक और लोमहर्षक होते हुए भी इतिवृत्तात्मक होकर रह गया।

अंग्रेजी में भारतीय लेखन सन् 1980 के दशक में एक नए प्रस्थान का वाहक बना। इसके पूर्व दो सांस्कृतिक और साहित्यिक घटनाओं ने पूर्ववर्ती अवधि से लेखन के प्रयासों को प्रेरित किया था: पहले, '*ओरिएंटलिज्म*' में एडवर्ड सैद के सैद्धांतिक विचार-विमर्श ने उपनिवेशवादी उद्भव के प्रवचन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और दूसरा, सलमान रुश्दी के *मिडनाइट्स चिल्ड्रेन* ने आज़ादी के बाद भारतीय अंग्रेजी उपन्यास को यथार्थवाद की ज़मीन को ही एक नई पहचान दिलाई थी। *मिडनाइट्स चिल्ड्रेन* उनका इस दौर के 'धरातल को हिलाने वाला' सबसे उत्कृष्ट उपन्यास है। यह एक बहुआयामी कथा है; यह एक साथ आत्मकथात्मक बिल्दुंग्रोसोमन, एक पिकारस्क (कहानी या उपन्यास का प्रकार, जिसमें दुष्टों के साहसपूर्ण कार्यों का वर्णन हो) कॉमेडी, एक अतियथार्थवादी फंतासी, एक राजनीतिक और अस्तित्वपूर्ण रूपक, एक राजनीतिक व्यंग्य और एक शैलीगत प्रयोगों से पटा है। लेखक ने इसे 'आधुनिक परियों की कहानी' के रूप में वर्णित किया है। इसकी कथा प्राकृतिक और अलौकिक, राजनीतिक रूपक और नैतिक प्रभावों का एक रोमांचक मिश्रण है। इस तरह इस युग की रचना ने एक नई पीढ़ी के आगमन की एक नई एवं उल्लेखनीय अंतर्दृष्टि विपुल मात्रा में उर्वरता और एक निश्चित उत्तर-आधुनिक चंचलता की उपस्थिति, इतिहासन्मुख, भाषिक रचाव, रूपक का पुनर्निर्माण, यौन प्रवणता, यहाँ तक कि बॉलीवुड के संदर्भों की शुरुआत की। अंग्रेज़ी के परवर्ती लगभग सभी लेखक रुश्दी के उपन्यास के ऋणी हैं। इसके परिणामस्वरूप भारतीय अंग्रेजी कथा-साहित्य में वैचारिक कथा विमर्श और साथ ही संसार और जीवन के उद्देश्यपरक

दृष्टिकोण को निष्पादित करने के लिए नियोजित कार्यनीति में बदलाव आया। रुश्दी की कृतियों का प्रभाव और इनसे जुड़े विवाद को समीक्षकों और उपन्यासकारों द्वारा समान रूप से स्वीकार किया गया है। श्याम असनानी ने महसूस किया कि *मिडनाइट्स चिल्ड्रेन* "नए प्रकार के भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यास का जन्म समकालीन सामाजिक-राजनीतिक विषयों के चित्रण से पौराणिक/आद्यप्रारूपी, कल्पनावादी और व्यंग्यपूर्ण शैली में व्यक्तिगत कल्पनाओं के कल्पनामय उपचार की तरफ आगे बढ़ा रहा है।"[12] परांजपे ने टिप्पणी की है कि इससे वास्तव में भारतीय अंग्रेजी उपन्यास की मूल नींव को झटका लगा है। अनिता देसाई ने भी बताया "अतीत में भारतीय लेखन की विशेषताएं स्टॉक-दृश्यों की आवर्ती, विषयों और पात्रों और पश्चिम साहित्य के प्रभाव के अन्तर्गत लम्बी कथा संरचना के चक्कर से वापसी थी।" अभी हाल में "*मिडनाइट्स चिल्ड्रन* में सलमान रुश्दी ने एक वृत्त में एक सीधी कथा संरचना को धकेल दिया।" जबकि *Shame* (1983) में उन्होंने "अभी भी समकालीन लोगों को पौराणिक कर दिया और समकालीन धारणा में वृत्तांतों को शानदार दिव्य किवदंतियों में बदल दिया।"[13] इसके अलावा, दुनिया भर में साहित्यिक समूह में कई अन्य पहलुओं पर *मिडनाइट्स चिल्ड्रन* ने भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यासकारों की सोच के तरीके को बदल दिया है।

युवा लेखकों की कहानियों में पुरानी शैली पर लौटने की पर्याप्त आतुरता थी। यह 'नवीनतम शैली' आश्चर्यजनक रूप से प्रभावकारी थी। इसी तरह नई पीढ़ी द्वारा अंग्रेजी के प्रति झुकाव साहित्यिक भाषा से दूर बोलचाल की भाषा की ओर था। एक बार फिर से अनिता देसाई ने कहा– जिस तरह से रुश्दी आगे चल रहे हैं–" वह

---

[12] "the birth of a new kind of Indian English novel moving from the portrayal of the contemporary socio-political themes to the imaginative treatment of individual fantasies in the mythic/archetypal, fabulist and satiric modes" (Riemenschneider, 2005, p.26)

[13] "Indian writing in the past was characterized by recurring portrayals of stock-scenes, themes and characters and a turn away from the circular to the linear narrative structure under the influence of Western literature"। अभी हाल में "Midnight's Children Salman Rushdie wound the straight line of narrative into a circle"."Mythologized still-living people and turned events in living memory into fantastic legends" (Riemenschneider, 2005, p.26)

अनुकरणकर्ताओं के लिए एक लंबा प्रयोग है।"[14] उनका मानना है कि उनका लेखन एक नई शुरुआत के लिए कहता है।

इस प्रकार, रुश्दी और अन्य उपन्यासकारों का लेखन भारत से दूर आसानी से प्रचलित, राष्ट्रवादी प्रवचन के भीतर नहीं हो पाया। इसलिए अंग्रेजी में 'नए' भारतीय उपन्यास के विचार ने सन् 1980 के दशक के उत्तरार्ध में अपनी क्रमिक रूप से शुरुआत की। 'पुराने' उपन्यास से लेकर 'नया' उपन्यास तक के इस बदलाव के बारे में, विनय कृपाल ने टिप्पणी की है :–

> "यहाँ (नया उपन्यास) धार्मिक गतिविधियों,गंभीरता और आत्म चेतना की कमी है जो एक बार भारतीय उपन्यास की विशेषता रही। वह अपनी पहुँच में निस्संदेह और सर्वदेशीय हैं। पहले के उपन्यासों के विपरीत वह न तो आदर्शवादी हैं और न ही वह भावुक हैं। यहाँ नए रूपों और विषयों के साथ प्रयोग करने के लिए एक महान दृढ़ संकल्प है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति– उनका सबसे महत्त्वपूर्ण विषय है और विस्थापित, सीमांत आधुनिक व्यक्ति उनका पसंदीदा नायक है। लेखन दृढ़, ओजपूर्ण, रसात्मक, और अदम्य है। उपन्यास नायकों की गहरी इच्छाशक्ति व्यक्त करते हैं, जो मजबूरी से बोलने के लिए चीखती है।"[15]

बहरहाल, 'पुराने' और 'नए' पूरी तरह से कट नहीं गए हैं, क्योंकि इस अवधि के उपन्यासकार पारंपरिक भारतीय कथाओं की तकनीक को जारी रखते हैं : 'उपाख्यानात्मक, कथानक की कमी, कथा में कथा', नए उपन्यासकार के तरीके से

---

[14]"a long trial imitators" (Riemenschneider 2005, p.26)

[15] Here (New novel) there is a lack of the staidness, solemnity, and self consciousness that once characterized the Indian novel. They are uninhibited and cosmopolitan in their reach. Unlike the earlier novels, they are neither idealistic nor are they sentimental. There is a great determination to experiment with new forms and themes. Politics- national and international- is their most important theme and the displaced, marginal modern man is their favorite protagonist. The writing is brisk, vigorous, racy, and irrepressible. The novels express the deep urge of the protagonist to speak out unfettered by restraints who virtually screams to be heard (Riemenschneider, 2005, p.27)

"अराजकता, अव्यवस्था, चक्करपूर्ण अव्यवस्था" का पता चलता है। कई लेखकों और आलोचकों की राय के अध्ययन से पता चलता है कि ये मौलिक बदलाव सन् 1970 के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल में शामिल हैं। नया उपन्यास प्रतिबिंबित करता है– "राष्ट्रीय संवेदनशीलता, अभिव्यक्ति और साहित्यिक रूप में एक पहचानने योग्य परिवर्तन।" आगे, विनय कृपाल कहते हैं : "सन् 1980 के दशक के उपन्यास मिश्रित भारतीय परंपरा के विषय को दर्शाते हैं जैसा पहले कभी नहीं किया गया। इस अवधि की प्रकृति को नियंत्रित करने वाले कृत्रिम रचना और बहुरूपता है, जहाँ अल्पसंख्यकों एवं सभी सांप्रदायिक समूहों के साथ धर्म का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।"[16]

सन् 1980 के बाद भारतीय अंग्रेजी उपन्यास के अध्ययन मे, विषय और कथा रणनीतियों में बहुत परिवर्तन देखने को मिलते हैं। पहला महत्त्वपूर्ण विषय यह है कि उपन्यासकार इतिहास पर वापस लौटते हैं। यहाँ तक कि शुरुआती उपन्यासकार भी इतिहास से प्रभावित थे लेकिन उनका उद्देश्य हमारी सभ्यता की महानता और महिमा को चित्रित करना था। परन्तु ये संशोधनवादी इतिहासकार हैं। कई साहित्यिक सामाजिक और राजनीतिक घटनाक्रमों के प्रभाव के कारण इन नए उपन्यासकारों को लगता है कि 'वास्तविकता परिप्रेक्ष्य की बात है'। दूसरे शब्दों में वे रिकॉर्ड किए गए सामग्रियों के बारे में संदेह रखते हैं। वह दर्शाते हैं कि ऐतिहासिक घटनाओं ने व्यक्तियों के जीवन को कैसे प्रभावित किया। वह अनकही कहानियों और विषयों को प्रकाश में लाते हैं। वह दृढ़ता से मानते हैं कि अभी तक जब से उत्तर-औपनिवेशिक क्षेत्रों का इतिहास पर बड़े पैमाने पर उपनिवेशवादियों द्वारा निर्मित कथा, उपन्यास और भाषाएँ, जिसमें वे लिखी जाती हैं, सांस्कृतिक नियंत्रण के साधन के रूप में संचालित होती थीं। इसके अलावा, वे वर्तमान के माध्यम से वर्तमान को पढ़ते हैं। वह समकालीनता के लिए अपनी प्रासंगिकता पाने के उद्देश्य से, वर्तमान व्यक्तित्वों पर व्यंग्य करने के लिए, समझने के लिए, अभिलेख को रिकॉर्ड करने, अधीनता को आवाज़ देने और इसे समाप्त करने के लिए, वर्चस्व पर सवाल उठाने, कई विचारों,

[16] "The 1980s novel reflects as never before, the theme of the mixed Indian tradition. The controlling temper of the period is synthesis, polymorphism where all religions, all communal groups including the minorities have an important place" (Riemenschneider, 2005, p.27)

अवधारणाओं और सच्चाइयों के निर्माण को उजागर करने एवं, राष्ट्र की अवधारणा खोज करते हैं और आख़िरकार अपने दृष्टिकोण को इसके माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। सलमान रुश्दी की *मिडनाईट चिल्ड्रेन*, शशि थरूर की *द ग्रेट इंडियन नॉवल* और अमिताव घोष का *कलकत्ता क्रोमोसोम* इसके अच्छे उदाहरण हैं। "उत्तर-आधुनिक और उत्तर-औपनिवेशिक लेखक इतिहास के उन परिवर्तन रूप में विवेचित अतीत की जगह पुन:परिभाषित वर्तमान के रूप में पुन:स्थापित करना चाहते हैं।"[17]

इन उपन्यासकारों की महत्त्वपूर्ण विषयगत चिंता यह है कि शुरूआत से ही वे यूरोपीय हस्तक्षेप या अस्वीकृति के ख़िलाफ़ खुद को स्थापित या पुनर्वास करने का प्रयास कर रहे हैं। इन पर एक स्वतंत्र पहचान की स्थापना या पुनर्वास में यूरोपीय दृष्टिकोणों का आरोपण, स्वयं पर पर्याप्त नियंत्रण भी शामिल है। इसमें यूरोपीय अधिकारियों के निराकरण, दुरूपयोग और अनावरण शामिल है। इस अवधि के लेखकों ने एकता की प्रकृति पर सवाल किया है। वर्तमान विश्व नव-औपनिवेशिक आपदा से आर्थिक विकार, सामाजिक बुराई, सरकारी भ्रष्टाचार के राज्य दमन, परस्पर विरोधी विचारों का तनाव और सामाजिक व्यवहार के विसंगत रूपों से ग्रस्त है। ये सभी संकट इन उपन्यासकारों द्वारा उजागर किए गए हैं। इस अवधि के उत्तर-संरचनावादी (पोस्टस्ट्रक्चरिस्ट) प्रभाव के कारण उपन्यासकार वर्तमान दुनिया में प्रचलित कई तनावों को हल करने के लिए वर्तमान और भविष्य को एक साथ लाते हैं। इसके अलावा यह राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में विदेशी वर्चस्व के अवशिष्ट प्रभावों का पता लगाने के लिए रचा गया है। ये लेखक राजशाही और औपनिवेशिक संस्कृतियों को मिलाते हैं। यह वैश्विक स्थिति में एकता के विचार के प्रतिरोध व्यक्त करने के लिए किया जाता है। इसलिए, कई उपन्यासकारों ने उपन्यासों के कार्यों को दुनिया के विभिन्न स्थानों पर किया है। उदाहरण के लिए, विक्रम सेठ ने *द गोल्डन* गेट में यू.एस.ए. का गेट और *इक्वल म्यूज़िक* में यूरोपीय पात्रों एवं परिदृश्यों पर कार्य किया। अमिताव घोष के *द सर्कल ऑफ़ रिजन्स* और *द ग्लास पैलेस* में भारत, यू.एस.ए., बर्मा (म्यांमार) और मिस्र का सांस्कृतिक ऐतिह्य फिर से रचा गया।

---

[17] "These post modern and post colonial writers seek to recast history as a redefinable present rather than an irrevocably interpreted past" (Tiffin, 1988, p.170-176)

इस अवधि का उपन्यास सांस्कृतिक अनुवादों, सांस्कृतिक विषमता, सांस्कृतिक संकटों और सांस्कृतिक घटनाओं को दर्शाता है। संकरता, विविधता और बहुलता हर जगह प्रचलित हैं। विक्रम सेठ के *द गोल्डन गेट* में पात्र अमेरिकी हैं, *इक्वल म्यूज़िक* में एक समान ब्रिटिश हैं और जयदीप रॉय भट्टाचार्य के *द गेब्रियल क्लब* में पात्र मध्य यूरोपीय हैं। इस प्रकार, पात्र भी वैश्वीकृत हो गए हैं। इस अवधि के लेखकों ने कुछ प्रमुख कथा उपकरणों में ग़ैर-रैखिक कथानकों, कई अवांतर कथाओं, फ़्लैश बैक, विरोधी नायकों और नायिकाओं, आम आदमी, जादू यथार्थवाद, मिश्रित शैलियों, कहानी के भीतर कहानी का प्रयोग किया। इन उपन्यासकारों ने व्यापक रूप से विदेशों की यात्राएँ की हैं, कई पश्चिमी सिद्धांतों से परिचित रहे हैं और विज्ञान पर अधिक ज़ोर देने के साथ आधुनिकता के परिणामों के संपर्क में आ गए हैं। उनकी नाराजगी दिखाने के लिए फिर से सपने जैसे वृत्तांत के साथ सामान्य घटनाओं के संयोजन की शैली "जादुई यथार्थ" का सहारा लेना। इन लेखकों ने दुनिया के लिए अपनी कहानियों को बताने के लिए, केंद्र को विकेन्द्रित करने के लिए, परिधि को केंद्र तक लाने के लिए और समय की एकता और कार्य की अवधारणा को अस्वीकार करने के लिए जादुई यथार्थ का सहारा लिया। इस कार्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने भारतीय परंपराओं, विश्वासों, किंवदंतियों, पौराणिक कथाओं और लोककथाओं का सहारा लिया। इसी प्रकार, भारतीय लेखक भी अपने ख़ज़ाने का पता लगा रहे हैं, पश्चिम से परिचित हो रहे हैं, और फिर अपने देश को कथानक का केन्द्र बनाया जा रहा है। इस अवधि के उपन्यासकारों ने वृत्तांत एवं आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग भी किया। उनका मानना है कि सभी ग्रंथों को अपनी भाषा या साहित्यिक या वर्गीय समान साहित्य के साथ एक ही वृत्तांत के सागर में तैरने के लिए स्वतंत्रता दी है, जिसके बीच उनके बीच भेदभाव पहले ही मुश्किलें खड़ी करता था।

इस अवधि के उपन्यासकारों ने मुख्य रूप से महानगरों, उनके निवासियों, उनकी समस्याएँ, संस्कृति और उनकी जीवन शैली को दर्शाया है। इसका कारण यह है कि "देश स्वयं गांधीवादी युग के ग्रोमोन्मुखी से नेहरू के बाद के शहर उन्मुख के लिए

स्थानांतरित हो गया है।"[18] हालाँकि, कुछ आलोचकों का मानना है कि अंग्रेज़ी में भारतीय लेखकों ने महानगरीय या सर्वदेशीय अभिजात वर्ग में वापस होने के लिए इस प्रवृत्ति का लाभ उठाया है, जो केवल भारत के भीतर अंग्रेजी पढ़नेवालों या विशुद्ध विशेषाधिकारों वालों या बाहर अंतरराष्ट्रीय जनता के लिए साहित्य सृजन करता है। सन् 1980 के बाद भारतीय अंग्रेजी कथा का अत्यंत आकर्षित पहलू भाषा के उपयोग में प्रयोगवादी प्रवृत्ति है। सन् 1930 के दशक से पहले उपन्यासकार अंग्रेजी का उपयोग करने के लिए बेहद जटिल और सचेत थे। क्योंकि सबसे पहले उनमें से ज्यादातर उस भाषा में माहिर होने के बाद लिख रहे थे, दूसरी बात वे अंग्रेजी पाठकों के लिए लिख रहे थे। सन् 1930 से सन् 1980 की अवधि के उपन्यासकारों ने अंग्रेजी के उपयोग के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया और इनमें से कई लेखकों ने विदेश में रहने के लिए कम-से-कम कुछ समय के लिए इस पर अपना वर्चस्व सिद्ध किया। इस अवधि के लेखकों ने भारतीय शब्दों, वाक्यांशों, मुहावरों, नीतिवचनों और कभी-कभी क्षेत्रीय भाषा से अनूदित शब्दों को अंग्रेजी में इस्तेमाल किया था। यह सब इन लेखकों द्वारा भारतीय पहचान स्थापित करने के लिए किया गया था, जिसके माध्यम से सर्व भारतीय संवेदनशीलता को व्यक्त किया गया और भाषा को भारतीय आस्वाद और रंग दिया।

सन् 1980 के बाद के उपन्यासकारों ने भी अंग्रेजी के उपयोग के साथ प्रयोग किया है। लेकिन यहां उद्देश्य पूरी तरह से अलग है। सबसे पहले, अंग्रेजी के उपयोग के साथ प्रयोग इन लेखकों के लिए एक समस्या नहीं है क्योंकि इनमें से कई ने इसे जन्म से सीखा है और अब यह भारतीय भाषाओं में से एक बन गई है। इस अवधि के लेखक क्षेत्रीय भाषा के शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, न कि क्षेत्रीय पहचान स्थापित करने के लिए और न ही एक भाषा को अन्य भाषाओं से ऊपर स्थापित करने कि लिए। इस अवधि के उपन्यासकार का मानना है कि "भारतीय 'स्वाद' शुद्ध अरक नहीं है बल्कि संस्कृति के मसाले का मिश्रण है जो हमेशा बाहरी समुचित प्रभाव से

[18] "the nation itself has moved from the village centrism of the Gandhian era to the city centrism of the post-Nehru period" Mee, John. "After Midnight The Novel in the 1980s & 1990s". (Mehrotra, 2003, p.230)

निपुण रहा है। भारतीय पहचान खिचड़ी में निहित है, किसी विशेष भाषा में नहीं।"[19] फिर से अंग्रेजी भाषा के कौशल के साथ प्रयोग राजनीतिक स्वाधीनता और आधिपत्य संरचना को नकारने के लिए और अंततः सांस्कृतिक अनुवाद, सांस्कृतिक अव्यवस्था, सांस्कृतिक प्रभाव समाप्त, सांस्कृतिक संकट, संकरता, पहचान का संकट और एकाधिक पहचान के विचार को व्यक्त करने के लिए निराकरण करने के लिए उपयोग किया जाता है।

भारतीय अंग्रेज़ी कथा साहित्य पर पुरुषों के इसे लंबे समय तक आधिपत्य जमाये रखने के बाद इसकी कमान संभाली थी– महिला उपन्यासकारों के एक बड़े समूह ने, जिसमें मुख्य तौर पर कमला मार्कण्डेय, रूथ प्रवर झाबवाला, नयनतारा सहगल और अनिता देसाई हैं।

महिला उपन्यासकारों में, कमला मार्कण्डेय एक सुपरिचित नाम है। लंबे समय तक इंग्लैण्ड प्रवास के कारण इन्हें भी रूथ प्रवर झाबवाला की तरह देश-विदेश दोनों की जीवन शैली को नज़दीक से देखने का अवसर मिला। इनके छह प्रकाशित उपन्यास हैं– *नेक्टर इन सीव* (1964), *सम इनर फ्यूरी* (1955), *ए साइलेंस ऑफ डिज़ायर* (1960), *पज़ेशन* (1963), *ए हैण्डफुल ऑफ राइस* (1967) तथा *द कॉफर डैम्स* (1969)।

हालाँकि रूथ प्रवर झाबवाला ने स्वयं को भारतीय अंग्रेज़ी लेखकों की श्रेणी में रखे जाने से इंकार किया है। पोलिश माता-पिता से जन्मी, और विदेश में शिक्षाप्राप्त झाबवाला एक भारतीय से विवाह कर भारत में ही बस गई। उन्होंने अपना जीवन भारत में और विदेश में बिताया। इसलिए उन्होंने दोनों जगह की अच्छाइयों एवं बुराइयों को नज़दीक से देखा-परखा। भारतीय जीवन शैली के प्रति उदार भाव रखने के बावजूद उन्होंने यहाँ के लोगों की संकीर्ण मानसिकता और इसके खोखलेपन को उजागर किया। इनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय परिवारों का, विशेष तौर पर संयुक्त परिवारों का अंतर्विरोध उजागर किया गया है। साथ ही, पूरब और पश्चिम की

---

[19] "The Indian 'tang' is not a pure essence but the masala mix of culture that has always been able to appropriate influences from outside. Indian identity lies in the chutnification not in the distinct language" (Mehrotra, 2003, p.321)

टकराहट का व्यंग्यात्मक एवं विडंबनापूर्ण पहलू वर्णित है। इनके उपन्यासों में *एस्माण्ड इन इंडिया* (1958), *ए बैकवर्ड प्लेस* (1965), *ए न्यू डोमिनियन* (1973) तथा *एण्ड डस्ट* (1975) प्रमुख है।

पूर्व एवं पश्चिम के संबंधों एवं द्वन्द्व को ही इन उपन्यासकारों ने अपनी रचना का केन्द्र बनाया। बाह्य एवं विदेशी ताक़तों से मुक्त हो जाने के बावजूद भारत अभी भी रूढ़िग्रस्त मान्यताओं और पुरानी सोच से जकड़ा हुआ था जो इन उपन्यासकारों के अनुसार विकास में बाधक था। इन लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति के वास्तविक महत्त्व एवं इसकी विशेषताओं को सही ढंग से पहचानने एवं समझने की ज़ोरदार वकालत की।

इस विषय वस्तु से थोड़ा हटकर लिखनेवाली महिला उपन्यासकार हैं– नयनतारा सहगल, विजयलक्ष्मी पंडित की पुत्री एवं जवाहरलाल नेहरू की भतीजी होने के कारण राजनीतिक चेतना इनके रक्त में घुली मिली है। साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत उपन्यास *रिच लाइक अस* जो *हम अमीर* शीर्षक से हिन्दी में अनूदित भी है, इनका एक चर्चित उपन्यास है। नयनतारा सहगल ने अपने इस उपन्यास में कांग्रेस और नेहरू युग की राजनैतिक प्रतिबद्धता को बहुत निकट से देखा है और उन कमज़ोरियों तथा ऐतिहासिक भूलों की ओर भी संकेत किया है, जिनके चलते एक लंबे समय तक पूरे भारत में राजनैतिक साख जमाए रखनेवाली कांग्रेस पार्टी को हार का मुँह देखना पड़ा। उन्होंने इसमें आपातकाल की भी बहुत जमकर खिंचाई की और इंदिरा गाँधी की नीतियों का खुलकर विरोध किया। इनका उपन्यास *द टाइम टू बी हैप्पी* आज़ादी प्राप्ति के समय दो परिवारों की गाथा है तो *स्टॉर्म इन चंडीगढ़* में पंजाब विभाजन की त्रासदी से जुड़ी गाथा।

इनमें उपन्यास दो बिल्कुल भिन्न विषयवस्तु के बीच झूलते नज़र आते हैं एक तरफ़ राजनीतिक चेतना से ओतप्रोत उपन्यास तो दूसरी तरफ़ आधुनिक भारतीय नारी की यौन-स्वातंत्र्य-जैसा विषय। उनके दो उपन्यासों *द डे इन शैडो* (1971) और *दिस टाइम ऑफ मार्निंग* (1968) दांपत्य जीवन की विडंबनाओं को आधार बनाकर लिखा गया है।

महिला उपन्यासकारों के इस वर्ग में अनिता देसाई आधुनिक जीवन के जटिल प्रश्नों को लेकर मंथन करनेवाली लेखिका हैं। इनके पूर्व की लेखिकाओं ने सामाजिक राजनैतिक स्थितियों के बारे में लिखने पर बल दिया है– लेकिन इन सबसे अलग अनिता देसाई का लेखन व्यक्तिविशेष के मनोभावों, मानव मन की उथल-पुथल को रेखांकित करता है। उनका राजनीतिक घटनाओं पर केंद्रित उपन्यास *बाय-बाय ब्लैकबर्ड* (1971) को छोड़कर शेष सभी उपन्यास *क्राय, द पीकॉक* (1963), *वायसेज़ इन द सिटी* (1965), *व्हेयर शैल बी गो दिस समर* (1975), *फ़ायर आन द माउंटेन* (1977), *क्लियर लाइट ऑफ डे* (1980) में उपन्यासों के पात्र अपने अकेलेपन से लड़ते-भिड़ते रहते हैं और लेखिका उन पात्रों की मन:स्थिति को पर्यात सघनता और गंभीरता से रूपांतरित करती हैं।

इनके बाद भारतीय अंग्रेज़ी कथा-साहित्य में ऐसा दौर आता है जिसमें अधिकांश: लेखक मूल रूप से भारतीय हैं और वर्षों से विदेशों में प्रवास कर रहे हैं। ये लेखक विदेशों में रहते हुए भी अपनी कृतियों में निरंतर भारत के प्रति अपनी व्यक्तिगत प्रतिक्रियाएँ अधिक यथार्थ रूप से व्यक्त करते रहे हैं। इन लेखकों में मुख्य रूप से वी. एस. नयपाल ने अपनी कृति *ए हाऊस फ़ॉर मिस्टर बिस्वास*, अमिताव घोष साहित्य अकादेमी से सम्मानित *द शैडो लाइन्स*, विक्रम सेठ का *ए गोल्डन गेट*, *द सुटेबल ब्वाय*, अमित चौधरी का *ए स्ट्रैंज एण्ड सब लाइन ऐड्रस*, भारती मुखर्जी का *द टाइगर्स डॉटर*, *जैस्मिन एण्ड वाइफ* आदि कृतियों द्वारा भारतीय अंग्रेज़ी कथा-साहित्य के विस्तार में योगदान देते रहे हैं। इनके साथ ही अरुंधती रॉय की बुकर पुरस्कार से सम्मानित *गॉड ऑफ़ स्मॉल थिंग्स*, शशि देशपांडे की *द लांग साइलेंस* द्वारा साहित्य के विस्तार में योगदान देते रहे हैं।साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत *द लांग साइलेंस* हिन्दी में *लंबी खामोशी* शीर्षक से प्रकाशित है। अंग्रेज़ी की कथाकार शोभा डे का नाम भी काफ़ी चर्चित रहा। इन रचनाओं के हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी अपनी विषयवस्तु एवं पठनीयता के नाते व्यापक पाठक वर्ग का ध्यान आकर्षित करते रहे हैं। कथा साहित्य के क्षेत्र में सलमान रश्दी, अमिताव घोष, अनिता देसाई, रस्किन बांड जैसे लेखक सामने आए। भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यासकारों की इसी सशक्त कड़ी में एक अनिवार्य हस्ताक्षर हैं, उपमन्यु चटर्जी। जिन्होंने अपने उपन्यास *इंग्लिश*

ऑगस्त में अपनी ब्लैक कॉमेडी वाली एक नयी लेखन शैली प्रस्तुत की। साथ ही, उन्होंने भारत में रहकर और इस उपन्यास की कथावस्तु का सविस्तार एवं सूक्ष्मता से चित्रण किया। इस कृति ने उन्हें उन अधिकांश तमाम भारतीय अंग्रेज़ी कथाकारों से अलग कर दिया, जो भारत से बाहर रहकर भारतीय कथा वस्तु को अपने साहित्य का विषयवस्तु बनाते रहे हैं।

उपमन्यु चटर्जी भारतीय प्रशासनिक सेवा के उच्च अधिकारी हैं। इनका जन्म सन् 1959 में पटना, बिहार में हुआ। इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में शिक्षा प्राप्त की तथा सन् 1983 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पद ग्रहण किया। बाद में सन् 1998 में मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार में निदेशक (भाषा) के पद पर रहे। सम्प्रति वह पेट्रोलियम रेग्युलेटरी बोर्ड के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। चटर्जी ने कई कहानियाँ भी लिखीं। *The Assassination of Indira Gandhi* उनकी चर्चित कहानी है। उनका पहला उपन्यास है *English August– an Indian story* सन् 1988 में प्रकाशित हुआ। इसका कई बार अनुमुद्रण भी हुआ। इस पर एक फ़िल्म भी बनी, जो देव बेनेगल ने *English August* नाम से ही बनाई। साथ ही इसका क्षेत्रीय भाषा बांग्ला में अनुवाद भी बेहद चर्चित हुआ। चटर्जी लिखित *The Last Burden* नामक उपन्यास सन् 1993 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास बीसवीं सदी के अन्त की भारतीय परिवार के जीवन पर आधारित है। *The Mammaries of the Welfare State* नामक उपन्यास सन् 2000 के अन्त में प्रकाशित हुआ। यह *English August* का अगला चरण था। उनका चौथा उपन्यास *Weight Loss* एक व्यंग्यात्मक (dark comedy) कृति है, जो सन् 2006 प्रकाशित हुई। उनका उपन्यास *Way to Go* सन् 2010 में प्रकाशित हुआ। यह *The Last Burden* का अगला चरण है। *Fairy Tales at Fifty* उपन्यास नवीनतम उपन्यास है जो कि सन् 2014 में प्रकाशित हुआ। समकालीन साहित्य में योगदान के लिए उपमन्यु को सन् 2009 में फ्रांसीसी सरकार का “Officierde l’order des Letters”का सम्मान मिला। वर्ष सन् 2004 में ‘*The Mammaries of the Welfare State*’ उपन्यास के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् 2010 में उनका उपन्यास ‘*Way to Go*’ हिन्दू बेस्ट फ़िक्शन अवार्ड सन् 2010 के लिए संक्षिप्त सूची में नामित हुआ।

उपमन्यु चटर्जी ने साहित्यिक लेखन का आरम्भ *The Assassination of Indira Gandhi* और *Watching them* कथा साहित्य से किया। *The Assassination of Indria Gandhi* एक लघु उपन्यास है। यह उपन्यास इंदिरा गांधी के कार्यकाल के आपातकाल और ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार पर आधारित है। लेखक ने *The Assassination of Indria Gandhi* के बारे में द हिन्दू समाचारपत्र के एक साक्षात्कार में कहा–" I was in Delhi when Indira Gandhi was assassinated. I wrote about a cut Sird (you're going to write 'a Sikh with short hair'!) about to go home when the world explodes. Private nightmare mirroring public nightmare."[20] इस कारण से उन्होंने तत्कालीन समय को बहुत ही मार्मिक रूप से उकेरा और इंदिरा गांधी की राजनीति और उनकी राजनेता रूप को बहुत ही स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया।

लेखक ने *The Last Burden* (1993) उपन्यास में भारतीय मध्य वर्गीय परिवार को कथानक बनाया। उपन्यास का कथानक बेरोज़गार जामुन की जीवन व्यवस्था पर केन्द्रित है। उसके साथ उसके बूढ़े पिता श्यामानंद रहते हैं, उसकी मां उर्मिला का देहांत हो चुका है। उपन्यास में संयुक्त परिवार की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। उपन्यास में बहुत ही बेबाकी से दर्शाया गया है कि आर्थिक, सामाजिक, भावानात्मक समस्याओं के कारण लोग किस प्रकार संयुक्त परिवार से एकल परिवार की संरचना की ओर बढ़ रहे हैं। उपन्यास का आरम्भ मृत्यु शय्या पर पड़ी नायक की माता से होता है। कहानी समकालीन समस्या का आभास कराती है तथा बहुत मार्मिक है।

वहीं लेखक का *The Mammaries of the Welfare State* (2000) उपन्यास *English August* का ही अगला चरण है। लेखक ने अगस्त्य को अब कलेक्टर पद पर आसीन दिखाया है। वह अपने अंतरदंद्व को समाप्त कर स्वयं को मदना में ही कलेक्टर के पद पर कार्य करने कि लिए राज़ी कर लेता है। इस उपन्यास में लेखक ने और खुल कर कल्याण राज्य की अंदरूनी समस्याओं को उजागर किया है। लेखक ने उपन्यास में विभिन्न नौकरशाहों, दलालों, चपरासियों, व्यापारियों को बहुत ही

---

[20] Ramnarayan, Gowri, Way to go, man!, *The Hindu, 11 November, 2016.*

बारीकी और पैनी नज़र से उतारा है। अत: उपन्यासकार की चिरपरिचित व्यंग्यात्मक शैली विषय को और रोचक बनाती है।

Weight Loss (2006) उपन्यास एक ग्यारह साल के लड़के भोला पर आधारित है, जो 37 साल की आयु में आत्महत्या कर लेता है। उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य अपना मोटापा कम करना हो जाता है। उपन्यास में आध्यात्मिक और युवकों की यौन संबंधी ग्रंथि और अवनति को दर्शाया गया है।

लेखक ने *The Last Burden* का अगला चरण *Way to Go* सन् 2010 में प्रकाशित किया था। उपन्यास 45 वर्षीय नायक जामुन के अर्द्ध लक़वे से ग्रसित 85 वर्षीय पिता की खोज की कहानी को समेटे हुए है जो एक रात अचानक ग़ायब हुए हो जाते हैं। वृद्धावस्था के क्रूर सच को उपन्यास में दर्शाया गया है। रिश्तों के खोती अस्मिता और पहचान को लेखक ने व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

उपमन्यु चटजी की नई कृति *Fairy Tales at Fifty (2014)* है। उपन्यास में अगुली और निरिप मुख्य पात्र हैं, जो 50 वर्ष की प्रौढ़ आयु के होने वाले हैं और वे अपने अतीत की चर्चा करते हैं। वे खुद बहस करते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में क्या किया और उनका भविष्य कैसा होना चाहिए। लेखक ने अपनी दृष्टिकोण से भारतीय परिवार और भारतीय परिवेश को प्रस्तुत किया है। यह एक मनोरंजक कथाख्यान है।

उपमन्यु चटर्जी द्वारा लिखित उपन्यास *इंग्लिश ऑगस्त* एक ऐसे युवक की कहानी है, जो तमाम युवकों के लिए एक उदाहरण है। भारत में रहकर भी वह भारत की संस्कृति और विचार से दूर और पाश्चात्य संस्कृति और विचार के क़रीब रहता हैं। उपन्यास के नाम से ही इस भारतीय युवा नायक अगस्त्य पर अंग्रेज़ी रंग दिखाई पड़ता है। अगस्त्य अंग्रेज़ी में *इंग्लिश ऑगस्त* हो गया है। यह कहानी एक युवक की अपनी व्यक्तित्व की खोज की ऊहापोह पर चलती है। जिसने भारत में जन्म तो लिया है परन्तु भारतीयता से कोसों दूर है।

उपन्यास का आरम्भ एक वर्ष के भारतीय सिविल सेवा के एक प्रशिक्षु अगस्त्य के पहली पोस्टिंग-सह-प्रशिक्षण जीवन से होती है। महाराष्ट्र के मदना ज़िला में उसकी बहाली होती है, जो देश की सबसे गरम जगह है। सामाजिक यथार्थ पर आधारित यह उपन्यास मुख्यत: भारतीय प्रशासन की निष्ठुर सच्चाई के साथ एक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा (वेलफ़ेयर स्टेट)को हास्य और व्यंग्य की चाशनी में लपेट कर प्रस्तुत करता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा को लेकर हमेशा जो विरोधाभास रहा है, उसे उपन्यास का नायक अपनी भूमिका से उजागर करता है। वह इसके व्यवस्था पक्ष से विमुख है परन्तु प्रमुख गतिविधियों में स्वयं को ढालने की कोशिश करता है। वह भारतीय प्रशासन तंत्र को चलाने वाले बाबू समुदाय में ख़ुद को स्थापित करने की पहल करता है। सबसे सर्वश्रेष्ठ समझी जानी वाली भारतीय प्रशासनिक सेवा की सच्चाई से लेखक ने रू-ब-रू कराया है। चूँकि लेखक स्वयं एक प्रशासनिक अधिकारी रहे हैं, इस कारण उन्होंने प्रशासनिक सच्चाई को बारीकी से उजागर किया है। किस प्रकार प्रशासनिक सेवा उत्तीर्ण कर सेवा में आनेवाले अधिकारी प्रोन्नति से आने वाले अधिकारियों को दोयम दरज़े का समझते हैं और उन्हें तरजीह नहीं देते। उच्च पद पर कार्य करने वाले अधिकारी दिग्भ्रमित रहते हैं जबकि आज का नवयुवक थोड़ी-सी कठिन परिस्थिति में भी साहस छोड़ देते हैं। वे सुविधाजनक और विलासितापूर्ण जीवन को प्राथमिकता देते हैं।

इस उपन्यास का मुख्य किरदार अगस्त्य प्रशासनिक सेवा छोड़कर शहर में रहकर किसी पत्रिका के लिए लिखना चाहता है। अगर यह उसका रुझान होता तो यह अलग बात होती लेकिन परिस्थिति से बचने के लिए वह ऐसे विकल्पों की तलाश करता रहता है। उपन्यास का मुख्य पात्र बंगाली परिवार से सम्बद्ध है इसलिए उपन्यास में बंगाली संस्कृति और साथ ही शहरी परिवेश का वर्णन किया गया है। इसकी कथा मदना- जैसे अविकसित टूटी सड़कों वाले कस्बे और गँवई परिवेश के बरक्स दिल्ली और कलकत्ता की चकाचौंध भरे जीवन पर प्रकाश डालती है। लेखक ने आज के युवकों की जीवन शैली को, जो जैज़ संगीत, सेक्स, नशे में डूबी है, उनकी विषम मानसिक स्थिति को गहरे मनोविश्लेषात्मक सोच के साथ उकेरा है। लेखक ने हास्य और व्यंग्य शैली का प्रयोग करके उपन्यास को बहुत ही रोचक बना दिया है। इस उपन्यास ने समकालीन भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य में एक नया स्थान बनाया है–कथा, भाषा, शैली और विचार के स्तरों पर।

दूसरा अध्याय

‘इंग्लिश ऑगस्त’ का हिन्दी अनुवाद

दूसरा अध्याय

‘इंग्लिश ऑगस्त’ का हिन्दी अनुवाद

कार की खिड़की से दोनों ने बाहर झाँका। ख़ामोश चौड़ी सड़क जगमगा रही थी। फिर भी बेजान लग रही थी। सुबह-सुबह आवारा कुत्ता शिकार की टोह में नई दिल्ली की सड़क पर दौड़ रहा था। ध्रुबो ने घंटे भर में आठवीं बार पूछा, ‘फिर हम कब मिलेंगे?’ दोनों का बिछड़ना उतना दुखदायी भी नहीं था, मगर गांजे के नशे में धुत्त होने के कारण वह कार छोड़ नहीं सकता था।

अगस्त्य भी नशे में धुत्त था। उसने उफ्फ... कहा और रुक गया। ध्रुबो ने उस दिन की चालीसवीं सिगरेट होठों से लगायी, माचिस ढूँढ़ने में उसे काफी देर लग गई। माचिस जलाने की आरामतलब कोशिश में कामयाब होने से पहले ही वह बुझ गयी। उसे देखकर अगस्त्य हल्के से मुस्कराया।

ध्रुबो ने मुँह से धुएँ का गुब्बार खिड़की से बाहर छोड़ा और अगस्त्य से कहा, मेरी राय में मदना में तेरी तो रेंड़ पिटने (हज़ार फक्ड होने) वाली है। अगस्त्य ने भारतीय

प्रशासनिक सेवा में अभी-अभी पदभार ग्रहण किया था। ज़िला प्रशासन में साल भर के प्रशिक्षण के लिए मदना जैसे छोटे कस्बे में जा रहा था।

हम भी विचित्र अंग्रेज़ी बोलते हैं। 'हज़ार फक्ड।' उर्दू और अमेरिकन अंग्रेज़ी की खिचड़ी, अगस्त्य हँसा। 'हज़ार फक्ड' मतलब सचमुच रेंड़ पिट गई। मुझे यकीन है कि ऐसी घुली-मिली ज़ुबान – इतनी आसानी से हर जगह नहीं बोली जा सकती। नशे की थकी हल्की अजीब आवाज़ें, "मर्मदुक, तुम हज़ार बार फक्ड लग रहे हो! हां दोरेथिया, मैं डरा हुआ हूँ, मैं हज़ार बार फक्ड महसूस कर रहा हूँ"– यह जुमला जँच नहीं रहा। हमारा तलफ्फुज़ भारतीय है मगर हम अगस्त्य की जगह अगस्त पसन्द करते हैं। जब हम अपने उच्चारण की बात करते है तो, ज़ाहिर-सी बात है कि उसमें तुम नहीं होते। क्योंकि तुम्हारे तलफ्फुज़ की तो रेंड़ पिटी रहती है। जब तुम अटैची लटकाए जा रहे होते तो फोन पर कामोत्तेजित औरतों को अच्छे समय की कामनाएं देते हो और जब तुम अपने खुर्राट बॉस से सहमत होते हो, जैसा तुम कहते आए हो 'ओ हो हो हो', क्या बात है' जैसी वाहवाहियाँ देते हो।

ध्रुबो ने कहा है 'बकवास मत करो,' और बंगाली में जोड़ा कि, 'तुम अपनी मातृभाषा पर चोट कर रहे हो,' और हँस पड़ा। यह दसवर्षीय आयु का चुटकुला था, जब वह दार्जीलिंग में स्कूल में था। तब वह उन एंग्लो इंडियन लड़कों से जलता था, जो बोली बानी और व्यवहार में अलग थे, और पढ़ाई में भी बेकार थे; जिसका उनको ख़ास फ़र्क़ भी नहीं पड़ता था। ये वे लोग थे जो हमेशा तिब्बती लड़कियों के साथ रहते थे और सेक्स के बारे में सब जानने का दावा करते थे। शुरुआती गर्मी की दोपहर में, पहाड़ी के बीच फुटबॉल मैदान में, साफ़ आसमान के साथ केक-जैसे सफेद और काले कंचनजंघा के साथ अगस्त्य और प्रशांत (अगस्त्य को फुटबाल पसन्द नहीं और प्रशान्त को खेल पसन्द नहीं) गेंद के साथ दिखावा करते हुए देखे गए थे। एंग्लों लड़कों का हवा में चिल्लाना (जब कभी मैदान से कोई भी तिब्बती लड़की गुज़रती तो दूर की स्मृति में और तेज़ गूँजती, "इधर देना 'मैन'!" 'इस तरफ़!' 'तू भाग नहीं सकता, क्या तेरे पैर टट्टी में सने थे मैन!' (अगस्त्य ने कभी भी किसी एंग्लों को 'मैन' कहते नहीं सुना)। वह और प्रशान्त

उनसे चिढ़ते थे, जो सबसे ज़्यादा चिल्लाते थे और जिनके चेहरे किसी छिपे डर को आने नहीं देते थे, जब कभी कभार गेंद उनके पास पहुँचती थी। और जब कुछ तिब्बती लड़कियाँ साथ आती थी तो चूतिएपन में गिटार बाहर निकालते थे। प्रशांत ने कहा था कि 'टिब्स (तिब्बती लड़कियों) और 'एंग्लों' (अंग्रेज़) के पास हमेशा गिटार होता है।' तभी फुटबाल छोड़ दिया गया और हँसी और ठहाके लगने लगे। प्रंशात ने कहा, 'एंग्लों, और टिब्स के जाघों का रंग' हमारे-जैसा' नहीं होता। अगस्त्य के ईर्ष्या ने तब यह उगल दिया था कि उसकी चाह थी कि वह एंग्लो-भारतीय होता, और उसका कीथ या एलेन नाम होता और वह उनकी तरह अंग्रेज़ी बोलता। उस दिन से उसके दोस्तों के पास उसके लिए बहुत नाम थे। वह स्कूल का 'इंग्लिश मैन' या 'हे इंग्लिश' (उसके दोस्तों का मतलब था कि हे एग्लो, मगर हिम्मत नहीं कर पाए) और कभी कभी "हेलो मदरटंग" (मातृभाषा)-जैसे असंगत और मनमौजी, लेकिन पसंदीदा समकालीनों द्वारा चुने गए अधिकांश नामों जैसे थे। वे सभी नाम, वक़्त और जगह परिवर्तन के साथ सहचर हो गए थे। मगर अगस्त्य, वह अभी तक उन लोगों के साथ ऐसे अवसरों पर रसातल से कुछ बाहर, एक हिस्सा ऐसा भी था, जो अपने अतीत के दबावों को झेलने की आदत को बनाए रखा था।

एक ट्रक की आवाज़ ने अंधेरे को मिटा दिया। मदना में कुछ ही लोग तुमसे पूछेंगे कि तुम प्रशासनिक सेवा में क्या कर रहे हो? क्योंकि तुम उस तरह के दिखते नहीं। तुम तो एक पोर्न फ़िल्म की अभिनेत्री की तरह लगते हो, जो एक झीनी और अनोखी ब्रा पहनती है। एक नौकरशाह को शांत, साफ की हुई दाढ़ी, चश्मे पहने हुए दिखना चाहिए और अगर तमिल ब्राह्मण हो, तो नियमों का हवाला देते हुए। मैं सोच रहा हूँ कि सचमुच तुम्हारी रेंड़ पिटनेवाली है।

'नौकरशाह बनने की जगह मैं पोर्न फ़िल्म में अभिनय करना चाहता था। मगर मुझे इनमें से एक को ही जीना पड़ेगा।'

ध्रुबो ने कहा, चलो आख़िरी बार सुट्टा मारते हैं और उसने कार की सीट से पोलीथीन निकाल ली। याल में पीएच.डी. कोई मज़ाक नहीं था। इसका कुछ मतलब होता है। यह

काफी अहम था। छात्र दाखिले से पहले सोचते हैं। ध्रुबो ने खुली तम्बाकू खिड़की से बाहर फेकी। लेकिन दिल्ली में, पूरे भारत में शिक्षा समय की नीलामी है। आप प्रशासनिक सेवा में हज़ारों में शामिल होते हैं। अपनी किस्मत आज़माते हुए बी.ए, एम.ए और फिर एम.फिल की अर्थहीन डिग्रियों का अम्बार लगाते हैं। बहुत से लोग हर साल सरकारी सेवा प्राप्त करते हैं 'यह बहुत दिलचस्प है।' वह अपनी कोहनी खुजलाने के लिए रुका। 'मुझे हैरानी होती है। भले कितने लोग सोचते हैं कि उनकी शिक्षा उन्हें कहाँ ले जा रही है।'

अगस्त्य ने उबासी लेते हुए कहा, 'अभी तुम याल से लौटे हो।'

'लेकिन मेरी कहानी कोई ठेठ भारतीय कहानी नहीं है। जिसका अन्त पहली दुनिया के कहीं भारतीय रहन-सहन के साथ होता है, चाहे आराम के या बिना आराम के। अगर किस्मतवाला हुआ वापस आकार भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदभार ग्रहण कर लेगा।'

शिक्षा के मामले में तुम गलत हो वैसे। बहुत से लोग मेरे-जैसे ज़रूर हैं, किसी खास योग्यता के बिना, यहाँ तक कि कैसे सँभालना है यह तक सोचते नहीं हैं। तुम अपनी किस्मत सभी में आज़माने की कोशिश करो, कुछ काम आएगा। इस दुनिया में बेपनाह अवसर नहीं हैं।

दोनों ने सुट्टा लगाया। ध्रुबो उसकी शर्ट से खुला तम्बाकू निकालने के लिए उसकी तरफ़ झुका। पिछले वर्ष भी मदना सबसे गर्म जगह थी, थी कि नहीं। वह दूसरी दुनिया होगी, बिलकुल अलग। तुम्हें काफी समझदार होना चाहिए। ध्रुबो ने अगस्त्य को सुट्टा दिया। सही माल है। आखिर तुम मदना में सेक्स और गाँजे के लिए क्या करोगे?

सबसे तेज ट्रेन से भी मदना दिल्ली से अट्ठारह घंटे की दूरी पर था, लेकिन तेज ट्रेन ने वास्तव में उस रास्ते को छोटा कर दिया। जैसे ही वह ट्रेन जिसे दिल्ली से चल कर मदना रुकना था, नई दिल्ली से छूट गई और अगस्त्य ने अपने चाचा के लिए हाथ हिलाया और फिर वह मारिजुआना के सुट्टे लगाने ट्रेन के बाथरूम में बंद हो गया। उस डिब्बे में मदना के थर्मल पावर स्टेशन का एक इंजिनियर भी सवार था। फिर ट्रेन में बैठे लोगों का वार्तालाप शुरू हुआ, जल्द ही अगस्त्य भी उस वार्तालाप में मशगूल हो गया।

मदना के इंजिनियर ने कुछ झुंझलाते हुए पूछा कितना अजीब सा नाम है तुम्हारा? अगस्त्य। यह भी कोई नाम हुआ भला। वह इंजिनियर बहुत ही चिड़चिड़ा इंसान था उसके पास एक बड़ा सा बक्सा था जो सीट के नीचे फिट नहीं हो रहा था और वह उस पर किसी के पैर नहीं रखने दे रहा था।

वह इस तरह जता रहा था जैसे कि, वह रामायण काल के जंगल का बड़ा तपस्वी साधू रहा हो। वह राम को तीर- कमान देता है। वह महाभारत में भी था। उसने विंध्याचल पार करके उन्हें आगे जाने से रोका।'

इंजिनियर बहुत ही असहज सा हो रहा था, वह असमंजस में था, जैसे अगस्त्य ने उसे कोई कामोत्तेजक बेच दिया हो। उसने अचानक से अगस्त्य को टोका, तुम आईएएस हो? लेकिन तुम आईएएस अफसर कतई नहीं लगते। उसने अगस्त्य को शंकालु निगाहों से ताका। 'तुम बंगाली भी नहीं लगते तुम्हारे बोलने के लहजे में बंगालीपना नहीं है।'

अगस्त्य सिर्फ आधा बंगाली था उसकी माँ गोआ की कैथोलिक थी। उसे अपनी माँ के बारे में कुछ याद भी नहीं था जब उसकी माँ की मेनिनजाइटिस के प्रभाव से मृत्यु हुई थी। उस समय वह तीन वर्ष से भी कम उम्र का था। वह पतला था और दाढ़ी रखे था। जब वह मदना में आया तो खाने-पीने का कोई शौकीन नहीं था और उसके कोई खास मंसूबे भी नहीं थे।

उसने ट्रेन के रास्ते गुजरते हुए भारत का आंतरिक इलाका देखा था। सैंकड़ों किलोमीटर जाने-पहचाने परिदृश्य उसने कई बार पार किया था। लेकिन उसे कभी उसकी असलियत से वाकिफ होने का मौक़ा नहीं मिला था– आईएएस बनने से पहले तक वह निरा शहरी भर था। ट्रेन से सफर करते समय उसने छोटे-छोटे से भद्दे कस्बे देखे थे जहां पर ट्रेन नहीं रूकती थी। ट्रेन की खिड़की से उसने लेवल क्रॉसिंग पर निष्तेज़ आंखें, भद्दी साइकिलें, मटीले बच्चे और तालाबों में बैठी भैंसें देखी थी।

उसके लिए ये जगहें अखबार में छपी खबरों के सिवाय कुछ नहीं थी जहां बाढ़ आती हैं और जातिगत लड़ाईयां होती हैं और पूरे हरिजन परिवार की हत्या कर दी जाती है। जहां पर प्रधानमंत्री आपदा के तुरंत बाद या चुनाव के तुरंत पहले अपना हवाई जहाज़ लेकर आता है। उसने इस दूर की दुनिया को देखा और थोड़ा सहज हुआ। वह इस आंतरिक इलाके कुछ महीने बिताने जा रहा था।

ट्रेन चार घंटे लेट थी वे अन्धेरा होने के बाद मदना पहुंचा। थोड़े से प्रकाश वाले स्टेशन, लावारिस कुत्ते, कुछ कुली और रस के साथ चाय बेचता हुआ एक आदमी, नल के पास अपिरिचित भाषा में लड़ता हुआ भिखारियों का एक परिवार। उसी समय एक पसीने से भरा सांवला आदमी उसके पास आया और कुछ बड़बड़ाया। वह सरकारी आदमी था अगस्त्य को स्टेशन पर लेने आया था। अगस्त्य मुस्कराया और बोला, 'क्या आप मुझ से हिंदी में बात करेंगे, मुझे आपकी भाषा समझने में कुछ समय लगेंगा।' वह आदमी मुस्कराया, शर्माया, और बड़े रूखेपन से हिंदी का उच्चारण करते हुए उसने पूछा ,'क्या आप आईएएस मिस्टर सेन हैं? मदना में आईएएस को हमेशा आदमी के नाम के साथ जोड़ा जाता है, फिर वह उसका सरनेम बन जाता है।

जीप में उसे बहुत उमस महसूस हुई। 'अगस्त्य ने पूछा, 'मुझे कहाँ पर ठहराया जाएगा?'

पसीने से भरे आदमी ने पीछे से बताया, 'गवर्नमेंट रेस्ट हाउस में सर।' उसने बताया वह नायब तहसीलदार है। अगस्त्य ने सोचा तुम कुछ भी हो, मुझे इससे क्या। उस आदमी ने

कहा, मदना में सरकारी अफसरों के लिए रिहायशी मकानों की बहुत कमी है, सर। अगस्त्य एक वर्ष तक किसी दूरदराज के देश में बेघरों की तरह एक रेस्ट हाउस से दूसरे रेस्ट हाउस के उन कमरों में डोलता रहा जिन्हें सूइट कहा जाता है परन्तु शूट उच्चारित किया जाता था।

रास्ते में मदना कस्बे के नज़ारे कुछ इस तरह के थे; घासलेट की लालटेनों से रोशन सिगरेट-पान की दुकानें, और जर्जर खाने-पीने के ढ़ाबे, पशु और खड़-खड़ करती रिक्शा और ओवरफ्लो नाले के कीचड़ को लांघते ट्रक का शोर; उसे लग रहा था जैसे वह किसी और की जिंदगी जी रहा हो। मदना में पहली शाम से ही उसकी शिक्षा-दीक्षा शुरू हो गई थी। मदना के रेस्ट-हाउस का कमरा बहुत बड़ा था उसे एक कमरे की तरह नहीं परन्तु एक घर की तरह सुसज्जित किया गया था। उसमें एक बैड, एक ड्रेसिंगटेबल, चार कुर्सियों वाला डाइनिंग टेबल, एक सोफ़ा, दो आर्मचेयर्स, एक डेस्क और कुर्सी, दो छोटी मेंज़ें और एक खूबसूरत बुकशेल्फ था। वह कमरा चोरी का फर्नीचर रखने वाले डीलर का स्टोरहाउस जैसा दिख रहा था। मैंने कहा, 'इतना फर्नीचर यहाँ क्यों है? मुझे नहीं चाहिए यह सब।'

रेस्टहाउस के केयर-टेकर और कुक ने कहा,' सर, वो सांवले रंग का नायब तहसीलदार बड़े तकल्लुफ से हिंदी बोलता है। कमरे के दरवाजे पर सभी साइज़ के बच्चे खड़े थे; लग रहा था सभी मुँह से सांस ले रहे थे।

अगस्त्य ने कहा, 'यह सोफ़ा यहाँ क्या कर रहा है?'

केयर टेकर ने जवाब दिया, 'यह मेहमानों के लिए रखा है, सर।'

'नहीं, इसे यहाँ से हटाओ। यहाँ बहुत ज्यादा फर्नीचर है। मुझे ये सब नहीं चाहिए, क्या तुम यहाँ से कुछ फर्नीचर हटा सकते हो?

'कुछ फर्नीचर हटाओ यहाँ से।'

रेस्टहाउस के कर्मचारियों ने उसी समय कार्यवाही शुरू कर दी, इस काम से उनके चेहरों पर तनाव दिख रहा था। उन्होंने अपनी मदद के लिए दूसरे लोगों को बुलाया। उन्होंने बैड को पंखे के नीचे खिंचा। अगस्त्य ने देखा वहाँ पर मच्छर थे उसने उन लोगों से कीटनाशक छिड़कने को कहा।

केयर-टेकर-कुक वसंत उन्हें सोफे के पीछे से कातिल नजरों से देख रहा था।

नायब तहसीलदार ने मुस्कराते हुए कहा, हां जनाब यहाँ पर बहुत मच्छर हैं इन लोगों ने यहाँ पर कीटनाशक छिडका है।

इसके तुरंत बाद वसंत ट्रे में डिनर ले आया। नायब तहसीलदार दरवाजे पर मंडरा रहा था, वह अपना हर अंग, कंधे, टांगें सभी अगस्त्य को दिखा रहा था और महसूस करवा रहा था कि ये सभी अंग असहज महसूस कर रहे हैं। डीनर बहुत ही अजीब था दाल ऐसी थी जैसे कि उबला हुआ ठंडा किया शैम्पू हो। अपने नथुनों में फ्लीट की गंध लिए वह सोच रहा था कि पूरे महीने ऐसा ही खाना मिलने वाला है। 'क्या वह आमतौर पर ऐसा ही खाना पकाता है?' अगस्त्य ने नायब तहसीलदार के ज़रिये यह बात वसंत तक पहुंचाई। वसंत ने हां कहकर अपनी सहमति जताई। फिर नायब तहसीलदार ने वसंत से कलेक्टर साहब के लिए पीने का पानी उबालने के लिए कहा क्योंकि मदना में वायवीय पीलिया और हैजे का संक्रमण फैला था, जबकि वसंत उसके कहने से पहले ही ऐसा कर चुका था और वहाँ से छुट्टी करने की तैयारी कर रहा था।

दस बज गए थे और अगस्त्य अपने कमरे के सामने के बरामदे में आ गया। ट्यूब-लाइट के चारों ओर किट-पतंगे मंडराने लगे थे। जब-तब लापरवाह छिपकलियां नीचे फर्श पर गिर रही थी। उसका कमरा वहाँ की दो कॉटेजों में से एक था। दूसरा कमरा बंद और शांत था। उसी तरह की दूसरी कोटेजें बड़े सर्किट हाउस से 200 फिट की दूरी पर थी।

कम्पाउंड की कुछ लाइटें जल रही थीं और सर्किट हाउस के बाहर दो जीपें खड़ी थी। वह अपने बीते दिनों के दो शहरों दिल्ली और कलकत्ता से लगभग चौदह सौ और हजारों किलोमीटर दूर था।

सोने से पहले उसने अपने बैड के पास पड़ी मेज़ के नीचे मच्छर मारने वाली धूप जलाकर रखी और अपने बदन पर मच्छरमार क्रीम लगाई। फिर वह मच्छरदानी लगा कर सो गया फिर भी मच्छरों ने उसे ढूंढ निकाला और काटा। मच्छरों से परेशान हो वह रात को दो-तीन बार उठा और बाहर बरामदे में जाकर देखा कि वहाँ भी मच्छर लाइटों के आस-पास मंडरा रहे थे।

मदना में पहली सुबह वह बहुत परेशान होकर उठा (वह थका हुआ महसूस कर रहा था, बाद में उसने ठगे हुए आदमी की तरह, कलकत्ता में नीरा को खत लिखा)। उसने पाया की उसे अपनी आंखे खोलने में मुश्किल हो रही थी, तब उसे अहसास हुआ कि मच्छर उसकी पलकों तक भी पहूँच गए थे। कुछ दिनों तक सुबह की शुरुआत में वह लकड़ी की छत को देखते हुए वह खुद से कहता था 'यदि आपकी सुबह का पहला भाव घृणा का हो तब। उसने शीशे में देखा। उसने अपने दाएं गाल पर दो सूजे हुए निशान देखे, एक मूछों के ऊपर दूसरा बाएं कान के नीचे। कलकत्ता के मच्छर बड़े सभ्य प्रतीत होते हैं, वे कभी चेहरे को नहीं छूते। वह सोच रहा था इस जगह ने पहला खून खराब किया है, क्या हाथीपांव लाइलाज है?’

वसंत को चाय बनाने के लिए कह, उसने बाहर कदम रखा। बरामदे के उस पार इमारतें, चमक की वजह से सफ़ेद दिख रही थी। सुबह के आठ पंद्रह हुए थे और उसे अपनी त्वचा पर चुभती हुयी तेज़ गर्मी महसूस कर ऐसा जान पड़ रहा था कि सूरज की गर्मी उसके सिर और गर्दन को झुलसा देगी और फिर यह इस बार की गर्मियों के आखिरी दिन थे। इससे पहले के वर्ष में भारत में सबसे गर्म स्थान होने के कारण चार्ट में मदना सबसे ऊपर था। उसके भारतीय डेक्कन में कुछ पारंपरिक प्रतिद्वंदी भी थे पर मदना के निवासी हमेशा से यह विश्वास करते थे कि उनका शहर और जिला सबसे गर्म

है। अभिवादन में (और निष्पक्ष तौर पर हीट-स्ट्रोक से बचने के लिए) यहाँ के निवासी सुबह आठ बजे से लेकर सूर्यास्त तक अपने कानों और सिर पर कपड़ा बांधे रखते हैं। बाद में उसने भी काफी आनंद के साथ अपने सिर पर कपड़ा बांधना शुरू कर दिया था। यहाँ तक कि इस होड में उसने अपनी तस्वीर भी ली। और बाद में, उसने सोचा कि जो लोग भारतीय गर्मी में खतरे को देखते थे, और सूरज की ऊर्जा को गड़बड़ कहते हैं और उत्साह और उस तरह के शब्दों से वे केवल सूरज को एक मानवरूपी दानव का रूप बना कर उसका महत्व कम कर देते हैं। निश्चित रूप से गर्मी ने जांघों को कमज़ोर और सिरों के पानी को निकाल दिया था लेकिन दूसरी चीज़ों की तरह मदना का सूरज शिक्षा देने वाला है। यह हमें सामान्य समझ का सूत्र समझाता हैं कि प्रकृति की प्रक्रियाओं से लड़ाई मत करो, ऐसा लगता है यहाँ जितना भीतर रहा जाए उतना ही अच्छा है, यदि संभव हो तो रात्रिजीवी बन जाओ। बाहर की दुनिया घूमने के लायक नहीं है, और दरवाज़ों की खूबसूरती सिर्फ अंधेरे में ही दिखती है।

यदि मदना दिल्ली होता और यहाँ मौसम कुछ कम गर्म और यदि वह कुछ जल्दी उठ जाता, तो वह घूमने जाता, कॉलेज के दिनों में वह लम्बी दूरी तक दौड़ने में सक्षम था। जान पड़ता है कि दौड़ने से उसका दिमाग साफ़ होता है और दिन की शुरुआत अच्छी होती है। लेकिन वह अपने कमरे में लौट आया और उसने सोचा कि क्या उसे सिगरेट पी लेनी चाहिए। आखिरकार जीप उसके लिए ग्यारह बजे तक नहीं आएगी। तब उसने टैगोर की श्यामा कैसेट को रिकॉर्डर में डाला और कमरे में लेट कर विचार करने लगा।

उसे व्यवस्थित होना था, ठीक से सामान खोलना था और थोड़ा सोचना था, सिगरेट कम करे, क्योंकि अनजान जगह में अकेले सिगरेट पीना कुछ खतरनाक था। कम से कम उसका कमरा कुछ बड़ा था और उसे यह पसंद था।

उसके सामने की दीवार पर छपकलियों के बीच एक पेंटिंग टंगी थी, बाद में जिसे वह रेस्ट हॉउस की आम चित्रकला शैली कहा करता था- उस पेंटिंग में, सूर्यास्त, पानी और फिर पानी में सूर्यास्त की छवि यानि दो सूर्यास्त और जापानी हैट पहने नाविक और

किनारे पर दो पेड़ और एक बहुत बड़ा मशरूम था। जैसे-जैसे वह उस तस्वीर में डूबता उसे और आराम मिलता और वह इस उद्देश्य से और भी आश्चर्यचकित होता कि चित्रकला के ख्याल के बिना वह एक चित्रकार की कल्पना करता मगर नहीं कर पाता; क्या चित्रकार उसके दांत पेंट कर रहा था अथवा उसके ऊपर झुक कर उसके मुँह में उसका शिश्न डालने की कोशिश कर रहा था? उसके एक ब्रश के स्ट्रोक पर सिर्फ एक विचार नहीं था। वह झुंझला कर खड़ा हो गया, एक कुर्सी पर चढ़ा और उसने वह पेंटिंग को नीचे उतार दिया।

पीछे मकड़ी के जालों और बरसों की धूल के नीचे वह बदरंग स्याही को पढ रहा था, 'मेरे द्वारा, मदना सर्किट हॉउस मेरे अवांछित दूसरे घर को भेंट। आर. तामसे डिप्टी इंजिनियर, पब्लिक वर्क डिवीज़न 4 जुलाई, 1962।' फिर उसके नीचे भूरी स्याही में एक वाहियात कविता थी।

मेरे पुराने जीवन और पत्नी से दूर,
इस सर्किट हाउस में इतने दिन,
गोवा के, मेरे प्यारे घर से दूर,
मैं ऑफिस के काम के कारण डौल रहा हूँ।

अब उसे यह पेंटिंग दूसरी तरह से दिख रही थी, कम हास्यास्पद; यह उसकी कल्पना का गोवा था, जो रचनात्मकता का आदी नहीं है लेकिन अलगाव द्वारा इसे रचनात्मक बनाने पर मजबूर किया गया। अचानक अगस्त्य ने सोचा वह तामसे को इससे बेहतर समझ सकता है, वह छोटा, मोटा होगा लेकिन वह उसके वजन के बारे में बिलकुल चिंतित नहीं था वह थोड़ा आत्मसंतुष्ट, सज़्ज़न और अगस्त्य जैसे लोगों के साथ थोड़ा सा असहज होगा। इस तरह के कमरे और जगह में, निश्चित रूप से मारीजुआना या अविष्कारशील हस्तमैथुन या सेक्स के लिए तामसे और क्या कर सकता था। शायद बहुत से लोगों ने उसे हौसला दिया होगा कि उसने अच्छा पेंट किया है और अच्छा लिखा है; उसके पिता ने शायद गर्व से कहा होगा, मुसीबत की घड़ी के लिए तुम्हें हुनर सीखना

चाहिए। तामसे निरुत्साहित हो गया था लेकिन उसने साहस नहीं छोड़ा और अपने घर पर एक और पेंटिंग बनाई। शायद वह सूर्यास्त और मशरूम के पेड़ उसकी खिड़की के बाहर का दृश्य होंगे, शायद गोआ में नाविक जापानी कोन वाली हैट पहनते होंगे।

उसने उस पेंटिंग को बार-बार उलट-पलट कर देखा और उसे उस कविता से जोड़ता रहा। उसे वे पंक्तियाँ पसंद थी, मेरी जिंदगी और मेरी पत्नी; तामसे ने अपनी पत्नी को याद तो किया बाकि लोग तो इसमें शर्म करते। वह भावुक भी होगा नहीं तो यह पेंटिंग रेस्ट-हॉउस में क्यों भेंट करता। प्रतिभा न होने पर भी, वह अपना मूड और तजुर्बे को बांटने की कोशिश तो कर ही रहा था। वह उस नीली दीवार और विचार पर मुस्कराया, वे उस पर भी हावी हो रहे थे।

दरवाजे पर एक धीमी लेकिन वेजान आवाज़ हुई। शायद किसी चूहे आदि के दौड़ने की आवाज थी। चपरासी सफेद खादी पहने एक छोटा और काला आदमी था। अगस्त्य के ठहरने की जगह पर उसके लिए नियुक्त किया गया चपरासी दिगंबर था वह। अगस्त्य ने कहा, इधर आओ, इस तस्वीर को साफ कर इसे वहीं टांग दो।' ग्यारह बजे तक नशे की हालत में ही वह अपने ट्रेनिंग के मेंटर और बॉस आर. एन. श्रीवास्तव आईएएस, मदना के कलेक्टर और डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट से मिलने चल दिया।

भारत में जिला प्रशासन काफी हद तक एक ब्रिटिश सृजन है, रेलवे और अंग्रेजी भाषा की तरफ झुकाव, राज की दूसरी जटिल और बोझिल बपौती हैं। लेकिन भारतीयकरण (प्रशासन की विधि, या एक भाषा का) भारतीय कहानी का अभिन्न अंग है। सन् 1947 से पहले कलेक्टर लगभग लोगों की पहुंच से बाहर था, अब वह अपने घर को लोगों के लिए खुला रखता है, मुख्य रूप से इसलिए कि वह एक अलग तरह का और कठिन काम करता है। वह दूसरे इंसानों की तरह अविश्वसनीय हो सकता है, लेकिन उसे ऐसा दूसरे

लोग ही बताते हैं, हालांकि अब भी वह अपनी पुरानी तड़ी (लेकिन अब भारतीय ठसक) दिखाने की कोशिश करता है – उसकी गाड़ी की छत पर संतरी रौशनी चमचमाती है, संगीत के प्रोग्रामों में उसे सामने की पंक्ति का पास मिलता है, और वह प्रोग्राम तब तक नहीं शुरू होता जब तक वह वहाँ नहीं पहूँच जाता और वह वहाँ तब तक नहीं पहुंचता जब तक उसे फोन से खबर नहीं मिल जाती कि बुलाये गए सब लोग पहुंच गए हैं। मदना में भारत की दूसरी जगहों तक किसी अफसर की अहमियत इस बात से आंकी जाती है कि वह कंसर्ट को शुरू करवाने में कितनी देर करवाता है। प्रबंधकर्ता इस बात के लिए अफसर पर गुस्सा नहीं होता। शायद वे उससे ऐसी ही आशा करते हैं, जो कि असल में दुःखद है, और शायद वे उन्हें संतुष्ट कर देते हैं जोकि और भी बुरी बात है।

और शासन प्रबंध एक जटिल प्रक्रिया है, और एक युवा अफसर जब सिखने की पहल नहीं करता तो असल में इस पद की दक्षता नहीं हासिल कर सकता। किसी के काम को देख कर सीखना तो असम्भव होता है; थोड़े समय के लिए वह अपनी इस अज्ञानता पर दुखी हुआ, बाद में जब लोगों ने उसे अवगत कराया तो वह बहुत दुखी हुआ।

कलेक्टरेट रेलवे स्टेशन के पास बड़े से मैदान में बनी हुई कई इमारतों में से एक ईमारत थी, इसका अपना कोई कम्पाउंड नहीं था इसके चारों तरफ़ कोई घेराबंदी नहीं थी। अगस्त्य ने उसे पिछली शाम के अंधेरे में याद किया। जीप बिना तारकोल से बनी पक्की सड़क पर लोगों और पशुओं को पार करती हुई धीरे-धीरे आगे खिसक रही थी। उसने गर्म और साफ़ आसमान के सामने कुछ झंडे देखे। वह समझ रहा था कि राष्ट्रिय झंडा कलेक्टरेट के ऊपर लहरा रहा था। 'दूसरी इमारतें क्या थी उसे पता नहीं था?'

पीछे बैठे नायब तहसीलदार ने बताया, 'वह सामने पुलिस सुपरिंटेंडेंट का ऑफिस है, सर।' अगस्त्य सोच रहा था वे जो भी हों। नायब तहसीलदार बोले जा रहा था, 'वह डिस्ट्रिक्ट और सेशन कोर्ट है और वह सामने बड़ी सी, डिस्ट्रिक्ट कौंसिल है।'

'तुम्हारा मतलब है वह इमारत जिसके ऊपर भी राष्ट्रिय झंडा लहरा रहा है?'

'हां सर। और उस तरफ पीछे; सब-डिविज़नल अफसरों के ऑफिस हैं, तहसीलदार वगैरह के।' जब नायब तहसीलदार इमारतें दिखा रहा था तभी ड्राईवर एक टट्टी करते बच्चे के ऊपर गाड़ी चढ़ाते हुए बचा, फिर वह उसे अपनी भाषा में झिड़क रहा था।

उनकी बाईं तरफ एक हरे पानी का तालाब था जिसमें भैंसें संतुष्ट हुई बैठी थी। बहुत से लोग उकड़ू बैठे सिगरेट फूंक रहे थे और आने-जाने वालों को देख रहे थे। अधिकतर लोग सफेद धोती कुरता और गांधी टोपी (पता नहीं वह नेहरू टोपी थी क्या? अगस्त्य असमंजस में था। गांधी टोपी और नेहरू जैकेट किसी ने नहीं पहन रखी थी। और ना ही किसी ने गांधी जैकेट और नेहरू टोपी पहन रखी थी? और पटेल कुर्ती? और माउंटबेटन लुंगी और राजाजी शाल और टैगोर धोती?), कुछ लोगों के सिर पर तौलिये थे। जीप उन्हें चौंकाते हुए, चिड़चिड़ेपन से हॉर्न बजाते आगे निकल रही थी। सड़क किनारे बैठे कुछ लोग जीप की आवाज सुन कर खड़े हो रहे थे, और कुछ गालियां दे रहे थे। लोगों के लिए तो सड़क ही ऐसी जगह थी जहां पर बरसात के बाद कीचड़ नहीं बनता था, इसलिए यही उनके इकठ्टे होने की जगह थी।

अगस्त्य ने पूछा, 'ये लोग गर्मी से बचने के लिए अपने सिर ढकते हैं, न?'

नायब तहसीलदार ने जवाब दिया, ‘हां सर।'

अगस्त्य ने कहा, ‘यह उनकी समझदारी लगती है, कैसा भी दिखें उनके लिए उनकी सेहत जरूरी है।’ उसने उस रुमाल को अपने सिर पर ढ़कने की कोशिश की लेकिन वह बहुत छोटा था। नायब तहसीलदार ने कहा यह सुन्दर लग रहा है, लेकिन छोटा है। बाजार में बड़े रुमाल भी मिलते हैं यदि आपको चाहिए तो मैं ला दूंगा।'

'हां, धन्यवाद, कृपया जरूर लाना। उसके कितने पैसे लगेंगे?'

'पैसों की आप चिंता ना करें सर।'

'जाओ ना', अगस्त्य ने कहा, और बीस रूपये का नोट उसके सामने कर दिया।

नायब तहसीलदार ने पैसे लेने से इंकार कर दिया और कहा, 'नहीं, सर, आप पैसों की परवाह न करें' अगस्त्य क्षण भर के लिए विचलित सा रहा। उसका क्या मतलब था? वह नायब तहसीलदार के खिसियाने और ठहाके मारने को नजरअंदाज करके वहाँ पहुंचा और उस नोट को अपने कमीज़ की जेब में चश्मे के कवर, कागज़ और पेनों के बीच रख लिया।

उन सभी महीनों में वह ऑफिस से बाहर की भीड़ से नहीं मिला।

'इन सभी लोगों को यहाँ पर काम है?'

शायद उसके बेवकूफ सवाल से हैरान होकर नायब तहसीलदार ने कहा, 'हां, सर।' वे सभी शांत नजर आ रहे थे, शायद वे नेहरू या उसके किसी प्रसिद्ध वंशज, जनसमुदाय के नेता की राजनितिक रैली में शामिल होने का इन्तज़ार कर रहे थे। उनकी आंखें शायद इन्तज़ार करने से चमक रही थी, और वे हर पल उनके आने का इन्तज़ार कर रहे थे।

उसने कलेक्टरेट के बाहर एक जंगली भांग का पौधा उगा देखा। यह तो बहुत अच्छा है, वह मुस्कराया और सोचा कि यह तो प्रतीकात्मक चिन्ह है। एक शाम उसे अकेले वापिस लौटना था।

कलेक्टरेट पत्थर से बनी एक-मंजिला ईमारत थी। उसके गलियारे में बेंच लगे थे और बहुत से लोग खड़े रहते थे। नायब तहसीलदार उसे दूसरे दरवाजे से एक बड़े से हाल में ले गया, जहां पर बहुत से खाली बेंच पड़े थे। एक मोटे से आदमी ने पूछा, यस? नायब तहसीलदार ने धीरे से उसे कुछ बताया और वह मोटा आदमी चापलूसी करने लगा। उसने

कहा,' गुड मोर्निंग सर, कलेक्टर साहब अभी नहीं आये हैं। मैं कलेक्टर साहब का रीडर चिदंबरम हूँ। कृपया मेरे साथ आरडीसी के कमरे में चलें, सर।

वे दूसरे दरवाजे से होकर बीच के गलियारे से निकले वहाँ पर भी बहुत भीड़ थी और गलियारे में बैंचें और वाटर-कूलर लगे थे। दूसरे दरवाजे पर सी. के. जोशी आरडीसी लिखा था। कमरे के अंदर तीन आदमी थे चिदंबरम ने धीरे से कुछ कहा। वे सब खड़े हो गए और उन्होंने उससे हाथ मिलाया, उनमें से दो युवा आदमी उसे सर कह रहे थे। सभी ने अपना-अपना परिचय दिया, अगस्त्य को किसी का भी नाम समझ नहीं आया, और उसने इसकी कोई परवाह भी नहीं की। उसने सोचा, यह तो भला हो इस मैरिजुआना का।

फिर औपचारिक रुचिकर बातचीत शुरू हुई, फिर कोई गाढ़ी मीठी चाय ले आया जिसे ज़्यादातर लोग प्लेटों में पी रहे थे। फिर बातों-बातों में उसे जान पड़ा कि उसके दाहिनी तरफ बैठे आदमी का नाम अहमद था। शायद डेस्क के पीछे बैठा हंसमुख आदमी जोशी था। उसके दाईं तरफ अग्रवाल बैठा था। उसके पास बैठा अहमद निश्तेज आंखें और झूठी मुस्कान लिए जल्द ही असहज हो उठा। वह किसी की भी बात में रूचि नहीं ले रहा था, जब भी कोई बोलता तो वह अपनी नजरें डेस्क पर लगा कर अपने हाथों को झटक रहा था। अहमद और अग्रवाल दोनों डिप्टी कलेक्टर (सीधे भर्ती हुए) हैं, सर। अगस्त्य ने सोचा चाहे जो हों, मुझे इससे क्या, लेकिन उसने सिर हिला कर सहमति जताई शायद यही उचित भाव था।

बाद में अगस्त्य को जानने की इच्छा हुई कि डिप्टी कलेक्टर (सीधा भर्ती) क्या होता है और नायब तहसीलदार राजस्व पदानुक्रम में कहाँ आता है। वह खुद अपने नए संसार को जानने का उत्साह नहीं दिखा रहा था; जैसे-जैसे उसे इसके बारे में पता चल रहा था; वह उसे रोचक नहीं लग रहा था। और बाद में अपनी अवहेलना उसके लिए एक विकृत और प्रतिकूल चुनौती बन जाती।

तीन आदमियों के साथ बैठ कर भी वह फिर से कल्पनामय हो गया। मैं एक अफसर नहीं लग रहा फिर मैं यहाँ कर क्या रहा हूँ। मुझे एक फोटोग्राफर होना चाहिए था, या फिर एड-फिल्म बनाने वाला, या इसी तरह का कुछ और बिल्कुल अव्यवस्थित और शहरी।

'आपकी उम्र क्या है, सर?'

'अट्ठाईस।' अगस्त्य चौबीस वर्ष का था लेकिन वह झूठ बोलने के मूड में था। वह उनके मुखौटों को अब और नहीं झेलना चाहता था।

'क्या आप विवाहित हैं, सर।' फिर से उसे वर्गीकृत करने की माँग हुई। अहमद हर सवाल पर आगे झुकता, उसकी गर्दन तन जाती और उसका सिर नम्रता से एक खास कोण पर मुड़ जाता।

'हां।' वह सोच रहा था कि कह दे, दो बार।

'और आपकी मिसेज, सर?' 'मिसेज' के नाम पर अग्रवाल की आवाज़ धीमी पड़ गई; उन सभी महीनों में पत्नियों का जो ज़िक्र आते ही सबकी आवाज़ धीमी पड़ जाती थी, और लगभग अपमानित होने या करने के लहजे में होती थी। अगस्त्य समझ नहीं पा रहा था कि ऐसा क्यों होता था, क्या इसलिए कि पत्नी के होने का मतलब था सहवास करना, जो कि गंदी बात है।

अगस्त्य ने बताया उसकी पत्नी इंग्लैंड में है। वह अंग्रेज़ है, लेकिन वह कैंसर का ऑपरेशन करवाने वहाँ गई है। उसे ब्रेस्ट कैंसर है।' वह ब्रेस्ट और ट्यूमर का आकार बताने के लिए अपनी उंगलियों को काबू नहीं कर पा रहा था। लेकिन उसने इस जुमले को आगे बताने के लिए छोड़ दिया। बाद में अपनी ट्रेनिंग के दौरान उसने भूमि रिकार्ड के ज़िला इंस्पेक्टर को बताया कि उसकी पत्नी नॉरवियन मुस्लिम है।

वह इसी तरह लोगों को अपने बारे में बरगलाता रहा। उसके माता-पिता अंटार्टिका में पहले अभियान के सदस्य थे। हां, यहाँ तक कि उसकी माँ सोरबोन से समुद्रविज्ञान में पीएचडी हैं। कुछ दिनों बाद उसके बारे में निजी सवाल आने बंद हो गए। बाद में थोड़े दिनों तक वह अपनेआप को कसूरवार समझता रहा।

चिदंबरम ने अपना सिर खुजलाते हुए बताया कि कलेक्टर साहब आ रहे हैं। जोशी अगस्त्य के साथ गया। श्रीवास्तव ठिगना और मोटा था, जब उन्होंने कमरे में प्रवेश किया तो वह किसी पर चिल्ला रहा था। उसने उन्हें बैठने को कहा और उस आदमी पर चिल्लाता रहा। अगस्त्य ने सोचा यदि तुम अपने मातहतों को अपनी शैली में फटकार लगा सकते हो तो तुम असल में वाकपटु हो। डेस्क के लम्बे किनारे की तरफ एक प्रार्थी खड़ा अपनी आंखों से आंसू टपका रहा था, जैसे उसे अभी-अभी पीटा गया हो। दूसरा आदमी जिसपर कलेक्टर साहब चिल्ला रहे थे वह बूढ़ा डिस्ट्रिक्ट सप्लाई अफसर था। अगस्त्य ने यह निचोड़ निकाला कि वे सभी कलेक्टरेट के बाशिंदे हैं, अपने विनीत चेहरे लिए यहीं पर बूढ़ा गए हैं और इन्होंने उचित सूर्य की किरणें नहीं देखी। उन सभी ने ज़र्द कमीजें और ढीली पेंटें पहन रखी थीं। उन सभी के कमीजों की जेबें पेनों और चश्मों के कवरों से भरी थीं और फटने को हो रही थीं। सभी में से अच्छी खुशबू आ रही थी, किसी में से बहुत बढ़िया भारतीय इत्र की खुशबू आ रही थी तो किसी में से सुगंधित तेल की और पान की खुशबू आ रही थी। वे एक शांत भैंस की तरह किसी भी मेहनती अफसर की चिकचिक झेल सकते थे। ज़िला आपूर्ति अफसर का चेहरा कलेक्टर साहब की झिड़की सुन कर तमतमा रहा था।

अगस्त्य को अचानक याद आया, कितनी असहनीय सुस्ती बिखरी थी वहाँ, उस समय वह कहाँ था? अचानक उसे अपने-सामने अबसालोम और अचितोफेल खोले कालेज के दिनों की अंग्रेजी की क्लास याद आई, जब वे नशे में धुत्त थे और अपनी नई महिला शिक्षिका को पढ़ाते देख रहे थे। घबराहट में वह शिक्षिका आक्रामक हो गई थी। उसके साथ बैठे नशे में धुत्त नरसिम्हा ने उस शिक्षिका से कुछ बेवकूफी भरे सवाल पूछे।

शिक्षिका ने कहा, 'तुम्हारे सवालों का कोई सिर-पैर नहीं है।' इस पर खींसें नपोरने वाले खिसियाये। नरसिम्हा ने बड़ी मेहनत से अपनी ड्राइडन (एक कवि) लिखी और उसकी तरफ खिसका दी। अगस्त्य ने उसे बताया, 'हां मेरी प्यारी कुतिया जब तुम्हारे स्पाट चूतड़ मेरे हाथों में होंगे और मेरा मुँह तुम्हारी छाती पर होगा, और मैं तुम्हारी अबशालोम और अचितोफेल के बीच वासना को शांत करते समय दांत से काटुंगा।' वह हँसा और पीछे की सीट से उठ खड़ा हुआ। उसे बाहर भेज दिया गया। आपूर्ति अधिकारी ने एक रंगीन रुमाल से अपना माथा पोंछा। हां, निश्चित रूप से बहुत भारी निष्क्रियता थी। की उसे अठारहवीं शताब्दी के अंग्रेजी कवि के वाक्यों के साथ मिलाया जा सकता है। मदना के जिलाधीश के दफ्तर में पसीने से भरे आपूर्ति अफ़सर ने उसे मुस्कुराने को बाध्य किया।

जिलाधीश एक क्षण भर को अपनी सांस रोकते हुए कहा, हैलो, आपको इसका इस्तेमाल करना होगा। प्रबंधक की नौकरी आसान नहीं होती। और आपूर्ति अफसर के पसीने से भरे सिर को काटने के लिए मुडा। और थोड़ी देर के बाद उसका चींखना बंद हो गया और आपूर्ति अधिकारी चला गया। दरवाज़े पर उसने दुबारा अपने रंगीन रुमाल का इस्तेमाल किया। कई नमस्ते करने और दो-आधे साष्टांग प्रणाम, अपने माथे को जिलाधिकारी के मेज़ पर छुआने के बाद रोता हुआ वह आदमी भी चला गया।

श्रीवस्तव, अगस्त्य को देख मुस्कुराया। उसके बालों की कलमें, समकोण के त्रिभुज जैसी लगती हैं, त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा, गाल की छाया जैसा लगा रहा है। तो अगस्त्य, अगस्त्य कैसा नाम है भाई? उसने धीमे से, लार टपकाते हुए, तुच्छ बात कही, जब तुम अपनी माँ की गोदी में रहे होंगे। क्या तुम्हारी माँ ने कुछ सम्मानजनक हिंदी महाकाव्य के छंदों के साथ नींद में तुम्हारे सिर को नहीं घुमाया। वह कहना चाहता था, संस्कृत में अगस्त्य का मतलब है ऐसा इंसान जो हर सुबह केवल एक लेडा करता है। लेकिन जिलाधीश वाकई में कोई उत्तर नहीं चाहता था। असंबद्ध बातचीत के सिवा, जबकि वह अपनी फाइलें निपटा रहा था।

आपको लेने के लिए कल स्टेशन पर कोई था वहाँ?

हाँ, श्रीमान।

रेस्ट हॉउस के कमरे कैसे थे?

बहुत से मच्छर थे, श्रीमान।

जिलाधीश देख चुकी फाइलों को ज़मीन पर फेंकता जाता था। अपने वज़न के आधार पर सुस्त प्रहार या तेज थपथपाहट के साथ वे लुढ़क जाती। इस तरह के फाइलों के पहाड़ों से उनकी मेज़ ख़राब हो गयी थी और ये फाइलें युद्ध के मैदान में लाशों जैसी लग रही थी, शायद यह उन्हें विजेता का आभास दे रही थी। उसके चेहरे पर त्वरित नज़र डालते हुए, ओह, मच्छर, हाँ, मैं आपके चेहरे पर तुम्हे देख रहा हूँ। गर्मी, नम, बीमारी सभी कुछ। क्या आप अपना पानी उबाल रहे हैं? नायब तहसीलदार से मैंने आपको बताने को कहा है। मदना में आप भाषा की समस्या का सामने करोगे। यहाँ तक कि वे ठीक से हिंदी भी नहीं बोल सकते।

उसने घंटी बजाई। 'चाय लाओ।' वह अचानक से पीछे को झुका और भौंहे चढाने लगा। 'तुमने देखा उत्तर- भारत और बंगाल में सभी हिंदी समझते हैं और बोलते हैं। अगस्त्य कलेक्टर की भौंहें देख कर थोड़ा परेशान हो गया। बाद में उसने देखा यह उसके ऑफिस का चेहरा था; घर पर भी ऑफिस के काम से या जब उसकी पत्नी और बच्चे ऑफिस वालों की तरह व्यवहार करते थे तब भी वह इसी तरह भौंहें चढ़ा लेता था।' और अब राज्य सरकार से सबकुछ क्षेत्रीय भाषा में आ रहा था उन्हें लगता है इससे प्रशासनिक क्षमता बढ़ेगी। उसने एक पीले रंग के हैंड टावल से अपना माथा और हाथ पौंछे। 'बकवास हैं ये लोग।' उसने जोशी की तरफ़ भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'जोशी साहब मिस्टर सेन के लिए कोई भाषा का ट्यूटर देखो।' और फिर बाद में आप इनके लिए एक क्षेत्रीय भाषा का अखबार बांध दो ध्यान रखना दैनिक नहीं, वह तो नीरा बकवास अखबार हैं।' जोशी नोट

ले रहा था, कलेक्टर कुछ भी उगलता उसका पैन वही लिखने को तत्पर रहता था। लग रहा था श्रीवास्तव को जोशी के पैन से कुछ शिकायत थी; वह उनके कुछ गौरतलब वाक्यों को निकालने पर बाध्य करता था। श्रीवास्तव ने घंटी बजाई। 'चिदंबरम, मिस्टर सेन को डिस्ट्रिक्ट गजट दो।'

अगस्त्य ने पूछा, 'सर, क्या मैं इस मैप को देख सकता हूँ?'

'हां बिलकुल, जब तक मैं इन फाइलों से निपट लूं।'

अगस्त्य ने श्रीवास्तव के पीछे टंगे मैप को देखने के लिए अपनी कुर्सी छोड़ी। कुछ देर वह कुछ नहीं समझ पाया। आखिर उसने मैप में मदना कस्बे को ढूंढ लिया। हे भगवान यह जिला तो बहुत बड़ा है। इसका दक्षिणी हिस्सा घने जंगलों से भरा है, यह देखने लायक है। बीच-बीच में उसके कानों में श्रीवास्तव की आवाज घुस रही थी। 'मैं इस हरामी आपूर्ति अधिकारी को सस्पेंड करना चाहता हूँ। वह पिंचरी तालुका का घूसखोर सीमेंट डीलर साला सीमेंट की जगह फिर से रेत सप्लाई कर रहा है और यह हरामी आपूर्ति अधिकारी चुप है क्योंकि इसे भी उसमें से हिस्सा मिल रहा है...' अगस्त्य चिंतित हो रहा था कि, जल्द ही कुछ ही महीनों में उसे भी ऐसी स्थितियों से जूझने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। चिदंबरम ने उसकी कोहनी से एक बड़ी सी काली किताब भिड़ा दी। और वह मदना के डिस्ट्रिक्ट गजटर को लेकर अपनी कुर्सी पर आ गया।

श्रीवास्तव ने कहा, 'इसे यहाँ पर मत पढ़ो अपने कमरे में लेजाकर पढ़ना यह बहुत रोचक है।'

अगस्त्य ने उसे खोला। 'यह तो बहुत पुरानी है सर, यह सन् 1935 की है इसे अप-डेट नहीं किया गया है।'

श्रीवास्तव ने फिर से अपनी भौंहें चढ़ाईं। 'अरे इसके लिए समय किसके पास है?' या फिर तुम इस पर काम करो, इतिहास लिखो। ये लोग तो कभी काम नहीं करेंगे। तुम जल्द ही देखोगे कि यहाँ के लोग कैसे चाय पीते हैं, ये लोग प्लेट में चाय पीते हैं।

उन्होंने देखा जोशी मुस्कराते हुए प्लेट में चाय उड़ेल रहा था। जोशी ने बताया, 'इस तरह चाय ज्यादा स्वाद लगती है।'

ऐसा लग रहा था कि श्रीवास्तव को अपने आश्रित को बहुत कुछ बताना था; उसे अभी यह भी नहीं पता कि वह कहाँ से शुरू करे, और वह एक विषय से दूसरे विषय पर जा रहा था। 'तुम्हारे पास तुम्हारी ट्रेनिंग की कॉपी है। आखिरी दो महीनों में तुम ब्लॉक डिवलेप्मेंट ऑफिसर होगे इससे पहले तुम्हें बहुत से जिलों के ऑफिसों में जाना होगा। पहले तीन सप्ताह तुम्हें कलेक्टरेट में रहना होगा। और इस सप्ताह तुम मेरे साथ रहोगे, मेरे ऑफिस की कार्यवाही समझने की कोशिश करना। आखिर तुम्हें कुछ ही महीनों में असिस्टेंट कलेक्टर बनना है और सब-डिवीजन के काम को संभालना है जैसा कि मैं जिला स्तर पर कर रहा हूँ।

अगस्त्य ने कहा, 'ठीक है सर।'

'आज बारह बज कर पंद्रह मिनट पर गांधी हॉल में समन्वय सभा है।'

अगस्त्य ने पूछा, 'समन्वय, जैसे कि राष्ट्रिय समन्वय?'

'हां, लेकिन इसे यहाँ पर कुछ और ही कहा जाता है।' श्रीवास्तव ने घंटी बजाई और चपरासी से कुछ कहा। जोशी चला गया। तुम देखोगे कि कलेक्टर को मिलने रोज़ाना कितने लोग आते हैं, ऐसे ही जब तुम ब्लॉक डिवलेप्मेंट ऑफिसर बनोगे तब लोग तुमसे मिलने आया करेंगे, कहकर श्रीवास्तव ने अगस्त्य की तरफ भौंहें चढ़ा कर देखा फिर उन गांववालों की तरफ देखा जिन्हें चपरासी अभी-अभी अंदर लेकर आया था।

उन्होंने भक्तिभाव से एक कागज़ का टुकड़ा खोला और श्रीवास्तव के सामने रख दिया। उस कागज़ की काली क्रीजें बता रही थी कि एक अधिकारी से दूसरे अधिकारी के हाथों में से निकल कर उसने कितनी यात्रा तय की होगी। श्रीवास्तव का गांववालों से वार्तालाप शुरू हुआ, जैसे ही उसे उनकी बातें समझ में आ रही थी, उसकी भौंहें ढीली पड़ रही थी। गांववालों की वाणी में भी आत्मविश्वाश झलकने लगा था। जब श्रीवास्तव उस कागज़ पर कुछ लिख रहे थे तब गांववाले शांत होकर धैर्य से इन्तजार कर रहे थे, उनके मजबूत हाथ विनयभाव से मुड़े हुए थे। उनमें से मिटटी और पसीने की गंध आ रही थी, लेकिन वे (अगस्त्य बेवजह छिछोरी मुस्कान लिए सोच रहा था) आकर्षक नहीं लग रहे थे वर्ण उदास थे, अगस्त्य को उन पर दया आ रही थी। उनमें से दो जब-तब उसे देख रहे थे, शायद वह उन्हें इस कलक्टरेट में नहीं जच रहा था।

दिन भर गांववालों का मिलने के लिए तांता लगा रहा। बाद में वह उन्हें वर्गीकृत करने में सफल हुआ। वास्तव में वह यही कर सकता था उनकी बातचीत समझना तो उसके बुते की बात थी नहीं। प्रार्थक हमेशा खड़े ही रहते थे श्रीवास्तव उन्हें तभी बैठने को कहता था जब ज्यादा समय लगने का अंदेशा होता था; यदि वे बैठते भी थे तो कुर्सी के किनारे पर ही। उनकी ढेरों शिकायतों में से वह कुछ ही पकड़ पा रहा था वह भी अंग्रेजी-हिंदी के मुहावरों और इशारों के आधार पर उनके हाव-भाव भी एक-दूसरे से काफी भिन्न थे (जैसा कि गजट के पहले पैराग्राफ़ से विदित हुआ था) उनका क्षेत्र काफी विस्तृत था, वह 17,000 वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ था। किसी ने एक प्रार्थी की जमींन पर कब्जा कर लिया था और उसे तहसीलदार से कोई मदद नहीं मिली थी। गांव से संबद्ध पुलिस एक हत्या के केस को सुलझाने में लगी थी उसे दूसरे केसों की तरफ देखने की फुरसत नहीं थी। कुछ लोग किसी सड़क साइट पर काम करने वाले दिहाड़ीदार ठेकेदार की शिकायत कर रहे थे कि वह उन्हें अनियमित समय पर पगार का भुगतान करता है। एक जगह नायब तहसीलदार किसी आदिवासी की पत्नी को तंग करता था। एक गांव का डीलर हमेशा मिलावटी कैरोसिन बेच रहा था। शुरू में अगस्त्य श्रीवास्तव की दक्षता पर मुग्ध था; वह हर केस को सही ढंग से सुलझा रहा था। कुछ केस सही-सही सुलझाने के

बाद अचानक श्रीवास्तव का नजरिया बदल गया वह केसों के प्रति ना-नुकर करने लगा आखिर उसे वर्षों का अनुभव था।

प्रार्थी बाहर खड़ी भीड़ को अपना-अपना दुखड़ा बता रहे थे। लेकिन वहाँ कुछ कार्यालयों के अधीनस्थ अफसर भी अपनी शिकायतें लिए खड़े थे जिन्हें अंदर बुलवाया जा रहा था और अपना पक्ष रखने को कहा जा रहा था, वे कहने पर ही बैठ रहे थे। फिर वहाँ पर जिले भर की ताज़ा खबरों की चर्चाएं हो रही थी, लेकिन श्रीवास्तव चाह कर भी उन्हें नहीं रोक पा रहा था क्योंकि वे मदना की नब्ज़ पहचानने वाले विभिन्न राजनितिक ग्रुपों के व्यक्ति थे। आखिर में कुछ ऐसे पट्ठे थे जिन्हें चापलूसी करना आता था। कुछ निमंत्रण-पत्र लिए खड़े थे, जिन्होंने बाद में अपने निमंत्रण-पत्र पर पैन से मिस्टर और मिसेज कलेक्टर साहब के साथ अगस्त्य सेन साहब, आईएएस लिख दिया वे किसी स्वतंत्रता सेनानी जिन्होंने कभी गांधीजी के साथ जेल में दिन बिताये थे, के अस्सीवें जन्मदिवस मनाने के लिए कलेक्टर साहब को आमंत्रित करने आये थे। केवल कुछ मिलने वालों को ही अंदर जाने दिया गया। जिन्होंने अपने नाम की स्लिप अंदर नहीं दी थी, वे थे मदना का संसद सदस्य और दो लाल आंखों वाले विधान सभा के सदस्य। अगस्त्य वहाँ पर बैठा काल्पनिक वर्गीकरण किये जा रहा था, और देख रहा था कि श्रीवास्तव ने कुछ लोगों से ही खड़े होकर हाथ मिलाए और सिर्फ दो को चाय के लिए पूछा एक संसद सदस्य को और दूसरे जिले के पेपर मिल के मेनेजिंग डायरेक्टर को।

उनके पीछे की दीवार पर सन् 1902 से आज तक के जिला मजिस्ट्रेटों के नाम लिखे थे पहले के कलेक्टर अंग्रेज थे, एक एवरी नाम के कलेक्टर सन् 1917 से सन् 1923 तक छह वर्ष तक मदना के कलेक्टर रहे। उसे भूख लगी थी और वह उस विचार से आहत हो रहा था जब उसने वसंत के हाथ का बेमज़ा लंच खाया था।

बारह बजकर पैंतालीस मिनट पर श्रीवास्तव ने चपरासी से कहा कि 'मैं बाकी लोगों से बाद में मिलूंगा। ड्राइवर को बुलाओ।' बाहर गलियारे में चपरासी, प्रार्थी, राजनीतिज्ञों के समुह, राजनिति से संबद्ध लोगों के समुह आपस में सटे खड़े थे जैसे ही उन्होंने

श्रीवास्तव को देखा उनकी बोलती बंद हो गई। अगस्त्य सोच रहा था, वे गंभीर और कसूरवार से लग रहे थे जैसे कि वे उन्हें बंदी बनाने की योजना बना रहे हों।
बेहद गर्मी थी।

सड़क पर पड़े ढेर के ऊपर से गुजरते हुए कार धीमी हो गई। इस कार में एक लाइट के साथ अमरजनसी सायरन भी है, मैं अपने कार्यालय समय पर पहुंचने के लिए अक्सर दोनों इस्तमाल करता हूँ।' वे एक जंगली भांग के पौधे और एक तालाब को पार कर आगे बढ़े। बच्चे एक भैंस से दूसरी भैंस पर कूद रहे थे। 'जब बरसात होती है तो पशु कलेक्टरेट के गलियारे में शरण लेते हैं। यही कुछ आज़मगंज में भी होता है जहाँ से मैं आया हूँ। पहले मैं सोचता था कि गाय और आवारा कुत्ते सिर्फ आज़मगंज के कलेक्टरेट के गलियारे में ही होते होंगे अब पता चला कि यह सब जगह आम बात है। एक आदमी ने कार की अगली खिड़की से हमें देखने के लिए अंदर झांका। ड्राइवर उसकी तरफ गुर्राया। उस आदमी ने कहा, 'तुम शहर से आये लगते हो। शुरू में यह जगह तुम्हें अट-पटी लगेगी लेकिन बाद में तुम इसके अभ्यस्त हो जाओगे।' किसी ने स्नेहवश और नीरसता के वशीभूत हो कार को पीछे से थपथपाया। श्रीवास्तव ने देखा अगस्त्य को पसीना आया हुआ था। 'उन्होंने कहा यदि तुम्हें गर्मी लग रही है तो मई के महीने में यहाँ रहना। यहाँ के पुराने बाशिंदे बताते हैं कि मई के महीने में पक्षी तक आकाश से मरे हुए गिरते हैं।’

जैसे ही कार कार्यालयों के मैदान से निकली तो बेकाबू हो गई। 'और वह समन्वय सभा?'

'ओह, यहाँ पर कुछ महीने पहले हिन्दू- मुसलमानों के बीच दंगे हुए थे। इससे सबको बड़ी हैरानी हुई थी क्योंकि मदना कभी भी सामुदायिक संवेदना का केंद्र नहीं रहा। पिछला कलेक्टर, अंटोनी, शायद उन्हीं दंगों की वजह से स्थानांतरित किया गया था। वे बता रहे थे कि वह वहाँ जाने के लिए उत्सुक था लेकिन जिन राजनीतिज्ञों का उन दंगों में हाथ था उन्होंने उस कलेक्टर को बलि का बकरा बनाया। ये हरामी राजनीतिज्ञ! तुम्हें उनकी

असलियत तब पता चलेगी जब तुम ब्लॉक डिवलेप्मेंट ऑफिसर बनोगे। इसलिए हमने एक समन्वय सभा बनाई जो महीने में एक बार बुलाई जाती है। सभी हिन्दू और मुसलमान गुंडे इक्क्ठे होते हैं, खाते-पीते है और समय बर्बाद करते हैं। वहाँ पर कम से कम खाना खाना वह ज़हरीला हो सकता हैँ।'

कार के भूरे पर्दे शहर को कस्बे को दिखने से नहीं रोक सकते। तंग गलियां और दो मंज़िला इमारतें, लोग और जानवर गर्मी के अभ्यस्त हो चुके हैं। श्रीवास्तव ने शायद अगस्त्य के मूड को भांप लिया था उसने कहा, इस कस्बे की आबादी सिर्फ दो लाख है। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि मदना के विकास की कहानी, भारत की प्रतिनिधि कहानी होनी चाहिए। कभी यह भी दूसरे राज्यों की तरह ही थी, यहाँ पर बहुत घने जंगल थे। वे अपने आदिवासी रिवायतों पर गर्व करते थे, जो आपको अपने आर्थिक पिछड़ेपन को भूलने का प्रयास करने का एक और तरीका है। फिर उन्हें यहाँ कोयला, मीका, चूना पत्थर, देश के सबसे अमीर औद्योगिक बेल्टों में से एक, तेल भी मिला। कारखानों ने जल्द ही इस शहर को घेर लिया, नए लोग लगभग हर दिन आते हैं। कार एक सड़क पार करते साइकिल चालक को बचाने के लिए रुकी और लिखने की मेज जितनी चौड़ी गली में जा रुकी। 'विकास एक बड़ा मुश्किल काम है। यदि वह मदना जैसी परिस्थितियाँ पैदा करता है तो विकास के साथ कुछ गड़बड़ जरूर है। विकास में प्राथमिकता अहम है कि हम कहाँ पैसा खर्च करें, कोयला और तेल पर, या फिर टाउन प्लानिंग और जंगलों पर। और फिर समय का दबाव रहता है, विकास के लिए कभी भी पर्याप्त समय नहीं उपलब्ध रहता। लेकिन तुम जब बीडीओ बन जाओगे, तब विकास का एक अलग ही पहलू देखोगे, वह है लक्ष्य को पूरा करने का पागलपन।' श्रीवास्तव अपनी आधी खुली आँखें लिए बोलते जा रहे थे वे अगस्त्य की तरफ देख भी नहीं रहे थे, ऐसे बोल रहे थे जैसे कैसेट रिकॉर्डर के सामने बोल रहे हों।

बुद्धिमता की वसीयत हैरान करने वाली थी खासकर पहली मुठभेड़ में; लेकिन श्रीवास्तव और पुलिस सुपरिटेंडेंट के साथ नमूना बार-बार दोहराया जा रहा था। वयोवृद्ध

अधिकारी नए प्रशासनिक अधिकारी के साथ कार में पीछे बैठ कर हमेशा सिद्धांत गढ़ते हैं, उन्हें समझाने की कोशिश करते हैं, प्रभावित करते हैं और औचित्य बताते हैं।

कार लगातार साइकिल और रिक्शे के बीच में फंस रही थी, जिससे कार ड्राइवर एक संरक्षक की तरह बर्ताव करता हुआ लग रहा था जिसने अचानक लिमोसिन गाडी के साथ थोड़ा मनोरंजन करने की सोची होगी। उसने देखा साइकिल के हैंडल पर रखे हुए नसों वाले हाथ और उनके पीछे अपनी बाल्टी को नाली में खाली करता हुआ आदमी, रिक्शावाले की जांघ की तनी हुई हड्डी, फलों का जूस बेचने वाली एक स्टॉल के चारों ओर पसीने से गीले कमीज़। लेकिन उसके बाद के महीनों में उसने, लकड़ी और जंगलों में व्यापारियों, कोयला खनिकों, पेपर मिलों के श्रमकों, दुकानदारों, सिनेमाघरों और रेस्तरां के मालिकों के जीवन, असली मदना का बहुत कम देखा। ऑफिस का अलग तरह का जीवन जो सभी जिलों में एक जैसा था आम तौर पर बुरी तरह से सुस्त, सामान्य जीवन था। इस दुनिया में कलेक्टर, जिला विकास अधिकारी, पुलिस अधीक्षक, और उनके अधीनस्त कर्मी, कम रुतबे वाले प्रबंधक, घर से दूर स्थानांतरण के कारण इस्तीफा देने वाले, सस्ती दारू लेने वाले और अनुकूल जगह पर स्थानांतरण न होने तक अपना समय बिताने वाले लोग हैं।

सिटी पुलिस थाने के साथ, एक तीन मंज़िला इमारत गांधी हाल थी। एक पल के लिए उसने सोचा कि इसपर बमबारी हुई होगी, जैसे बेरूत पर एक टीवी समाचार क्लिप में दिखाया गया था टूटी खिड़की के शीशे, पुरानी दीवारें, अनिश्चित हवा, ऐसा ही नज़ारा यहाँ पर था। दरवाजे पर और बाहर एक लाल बैनर, एक छोटी सी मोटी बिना चश्मे की मूर्ति जिसके हाथों की छड़ी कमर के पीछे से आगे को निकली हुई थी। अगस्त्य ने हैरान होकर पूछा, 'क्या यह गांधीजी की मूर्ति है?'

श्रीवास्तव खिसियानी हँसी, हँसे। ‘हां, तुमने क्या समझा था?’

‘यह लकड़ी क्या है, सर?'

श्रीवास्तव और भी हँसा। 'यह मूर्ति के सहारे के लिए है। यह मूर्ति बनाते ही गिर गई थी। मदना में और भी बहुत सी हैरान करने वाली चीज़े हैं, सेन।' फिर गुंडे लोग उन तक पहुंच गए।

उन्होंने श्रीवास्तव को घेर लिया, सफेद खादी और लाल दांतों वाला जमावड़ा था वह, उनके बालों के तेल की सुगंध नाली के मल-मूत्र में घुल रही थी। कुछ काली आँखों वाले लोग अगस्त्य को अनिच्छा से निहार रहे थे– उन्हें वह वहाँ नहीं जच रहा था। श्रीवास्तव किसी को अगस्त्य का परिचय दे रहे थे, किसी को भी आईएएस के सिवाय कुछ नहीं सुनाई पड़ा। फिर वे उसकी तरफ भी लपकने लगे।

चौड़ी सीढ़ियां, पान की पीक से कत्थई हुई दीवारें किसी क्रोधित हत्या का नज़ारा पेश कर रही थी (और उसे एकाएक स्कूल के दिनों की याद आ गई, जब वह प्रशांत के साथ वहाँ था, जिंदगी बड़ी सरल थी, एक दिन प्रशांत ने सड़क पर पड़ी घोड़े की लीद को देखकर उसे कहा, 'एंग्लो 'मैं शर्त लगाता हूँ, तुम इसे चाट सकते हो,' मैंने कहा ,'बिलकुल यदि इसके बदले तुम मुझे कुछ अच्छा दो, यानि कि यदि तुम मुझे इतना पैसा दो कि मैं जिंदगी भर उससे गुज़र-बसर कर सकूं तो मैं ऐसा कर सकता हूँ), लोगों की भीड़ और एक विदेशी जुबान। दूसरी मंजिल पर एक बड़ा हॉल, और दूसरा बैनर, और उसके निचे एक छैल-छबीला पुलिस- मैन खड़ा था। वह चश्मा पहने था अगस्त्य सोच रहा था, जैसे वह बाहर खड़ी महात्मा की मूर्ति की नकल हो।

'सेन, मिस्टर कुमार से मिलो, ये मदना के पुलिस सुपरिटंडेंट हैं।'

वे सभी अंदर चले गए रास्ते में कुमार ने अगस्त्य से एक सवाल पूछा जिसका जवाब उसके पास नहीं था। ऑफिस में रंगीन कागज़ों की सजावट थी, फर्श पर कालीन बिछी थी, सफेद चद्दर पर कुशन लगे थे, पंखों से कमरे में नमी ज्यादा बढ़ रही थी। जब

कुमार बैठा तो उसके घुटनों से आवाज आई। उसी समय एक बदमाश उनके पास आया और उससे पूछा, 'आप भी आईएएस हैं?'

हां मैं यहाँ पर जिला प्रबंधन की ट्रेनिंग पर हूँ।'

और सवाल पूछे गए। कुमार के रहने से उसके झूठ बोलने पर पाबंधी लग गई, लेकिन फिर भी वह एक झूठा फेंक गया कि वह पिछली गर्मियों में एवेरस्ट पर चढ़ा था। उन बदमाशों को उनके भोजन की व्यवस्था करने के लिए छोड़ दिया गया। कुमार अपने बोल्स्टर पर लेट गया, और अपनी जांघों को थपथपाते हुए बोला, अरे, अगस्त्य तो बड़ा बंगाली नाम है यार।'

'हां, सर।'

'ये बंगाली लोग अपने लिए इतना मुश्किल नाम क्यों चुनते हैं?'

अगस्त्य मुस्कराया। 'कलेक्टर बता रहे थे, ये हर महीने यह मीटिंग करते हैं, सर। लेकिन उनमें होता क्या है?'

कुमार ने मुँह सिकोड़ा और चारों और देखा कि बाकी लोग क्या कर रहे हैं, और कितने लोग उसकी तरफ देख रहे हैं। कलेक्टर के चारों तरफ एक मंडली खड़ी थी। 'बाहर कोई नहीं है चलो कुछ खाएं। पर इससे कई मायनों में हमें सहायता मिलेगी। हम उनसे पता लगाएंगे कि असल में ज़िले में क्या हो रहा है – बातों से वे चीज़ें पता चलेंगी जो हमारे पुलिस वाले और राजस्व वाले नहीं बता सकते क्योंकि वे खुद उसमें शामिल रहते हैं।' फिर उनकी आवाज से तानाशाही झलकने लगी। प्रभवशाली प्रशासन का मतलब है–लोगों से मिलना, और उन्हें दिखाना कि कलेक्टर और एसपी अक्खड़ और क्रुर नहीं हैं, वे उनसे मिलना पसंद करते हैं। यह भारत है, भाई, एक आज़ाद देश यहाँ अंग्रेजों का राज नहीं है,

हम जनता के सेवक हैं।' एक बदमाश ने कुमार को पान पेश किया, जिसे कुमार ने अपने मुँह में ठूस लिया। 'अरे, तुम तो अंग्रेज लगते हो –'

'अंग्रेज़?'

'जो भी आदमी भारतीय भाषा से ज्यादा अंग्रेज़ी धाराप्रवाह बोलता है उसे मैं अंग्रेज़ कहता हूँ, ठीक है ना?'

'ठीक है, सर।'

'अच्छा फिर तुम कभी भी आ जाना, मेरे पास कुछ नई फ़िल्में हैं, *ए पैसेज ऑफ़ इंडिया, अमडूस, द जेवेल इन द क्राउन*, और भी कई फ़िल्में हैं, तुम ज़रूर आना। कुमार ने हॉल के बाहर किसी की तरफ हाथ हिलाया, वह उन्हें हाथ जोड़ कर नमस्ते कर रहा था।' लेकिन तुम मुझे यह बताओ कि अंग्रेज़ी फिल्मों में भारत में बलात्कार क्यों दिखाया जाता है? काले आदमी को गोरी महिला से बलात्कार करते दिखाया जाता है। क्या तुम साठे को जानते हो? वह मदना का जोकर है, वह कहता है काले आदमी से बलात्कार करवाना गोरी महिलाओं का ख़्वाब होता है।' उसी समय वह आदमी कुमार के पास आया जो उन्हें नमस्ते कर रहा था और वे गप्पे हांकने लगे। फिर एक मंडली अगस्त्य को कम्पनी देने आ मिली।

'आम तौर पर तुम इस भवन का क्या इस्तमाल करते हो?'

इस सवाल से वह मंडली असमंजस में पड़ गई। अगस्त्य ने खुद ही कहा। 'फेमिली प्लानिंग, पुरुष नसबंदी और महिला नसबंदी केम्पों के लिए, स्कूल टेबल-टेनिस, चैंपियनशिप्स के लिए और ब्रिज़ टूर्नामेंट्स, यूथ क्लब की मीटिंगों के लिए तथा शादियों की पार्टियों के लिए इस हॉल का इस्तमाल होता है ...यहाँ कोई भी आयोजन हो सकते हैं।' अगस्त्य सोच रहा था, यहाँ पर एक ही समय में कई आयोजन हो सकते होंगे।

फिर अगस्त्य ने पूछा, ‘ये बाहर गांधी जी की मूर्ति किसने बनवाई थी?’

'एक तामसे नाम के कार्यपालक इंजिनियर ने। कुछ समय पहले तक वह यहाँ पर ही था। वह मदना में दो-तीन बार पोस्टेड रहा। उस नापसंद आदमी की याद आते ही मंडली के चेहरे मलिन पड़ गए।’ वह बहुत उत्साही और मुर्ख था। वह बहुत बेकार पेंटिंग करता था। जब गांधी जी की मूर्ति लगवाई तब मैं वहीं था। सब लोग बड़े नाराज़ थे लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।’

एक फटेहाल बच्चे ने अगस्त्य के हाथों में एक प्लेट थमा दी। प्लेट में लड्डू, समोसे और, हरी चटनी थी। उसे चटनी की आवाज आ रही थी, हाय, मेरा नाम हैजा है, तुम्हारा नाम क्या है?

'नहीं, यह मेरे लिए नहीं हैं।'

लड़के ने कहा, हैं?'

अगस्त्य अपने पीछे खड़े बदमाश की तरफ मुड़ा। आज के दिन मैं कुछ नहीं खाऊंगा। आज के दिन मेरी माँ मरी थी। वह आदमी फिर से परेशान हो गया। 'मेरा मतलब है आज मेरी माँ की पुण्यतिथि है, और इस दिन मैं व्रत रखता हूँ। एक पल के लिए वह चिंतित हुआ फिर बोला, ‘ऐसा मैं प्रायश्चित करने के लिए करता हूँ, क्यों कि वो मेरी वजह से मरी थी।'

उस बदमाश ने फिर से चहरे को सिकोड़ा और धीरे से बड़ी विकलता से कहा, 'लेकिन यह बहुत स्वादिष्ट है, ज़रा चख के देखिए।'

अगस्त्य ने कहा, ठीक है, और वह जल्दी से खाने लगा। उसे बहुत भूख लगी थी, और उसने दूसरी प्लेट भी खत्म कर दी जबकि उसे उस लड़के के नाखूनों की गंदगी महसूस कर घिन आ रही थी।

उनकी बातचीत जारी थी। अगस्त्य को लग रहा था कि वह बदमाश अब भी संतुष्ट नहीं था वह चाह रहा था कि मैं और खाऊं। एसपी और कलेक्टर दोनों गंभीरता से मामलों के बारे में बातें कर रहे थे। उसे फिर से लोगों ने घेर लिया जैसे सुबह जोशी के कमरे में घेरा था, उसे लग रहा था वह किसी और की जिंदगी जी रहा है। उसने अपने हाथ में बंधी घड़ी को देखा। एक बज कर पैंतालीस मिनट हुए थे। अपनी पिछली जिंदगी में वह घर में अपने चाचा के साथ भोजन पर उल-जलूल बातें कर रहा होता। वह अपने विभागाध्यक्ष डाक्टर उपाध्याय के साथ अपनी आखिरी मुलाकात याद करने लगा। डाक्टर उपाध्याय छोटे कद के असंतुष्ट आदमी थे। उन्होंने मुझे कहा था, 'अगस्त्य मैं तुम्हारे लिए बहुत खुश हूँ, तुम बहुत अच्छे पद पर अर्थपूर्ण काम करने जा रहे हो। उसने अपने चारों तरफ रखी किताबों और डेस्क के पास बैठी क्लास की तरफ हाथ फैलाते हुए कहा, 'यह जगह तो एक पैरोडी की तरह है, एक तमाशा है, ये लोग यहाँ पर दूसरा कैम्ब्रिज बनाने जा रहे हैं। अपनी पुरानी यूनिवर्सिटी में मैं एम.ए. अंग्रेजी के बच्चों को हिंदी में *मैकबेथ* पढ़ाता था। भारत में अंग्रेजी तो एक मज़ाक है। लेकिन तुम तो यहाँ से एक वास्तविक पोजीशन में जा रहे हो। मेरे समय में मैं भी सिविल सर्विस की परीक्षा देना चाहता था, मुझे देनी चाहिए थी। अब मैं अपना समय आई।एच। म्येर्स और विंढम लेविस के ऊपर पेपर लिख कर निचले दर्जे के जर्नलों को भेजता हूँ, और कुछ मूर्खों को करनाड पढ़ाता हूँ।'

उस ढुलमुल वर्ष में, बिना मतलब के घूमना और गड़बड़ घोटाले में रहना उसका खास शगल था; जबकि खालीपन और बेकारी से जूझना उसका दुसरा शगल था। उसके दिमाग के गड़बड़झाले में, एक और जन्मजात दंश था कि वह बिलावजह दुखी और शंकालू रहने का आदि था, उसे मदना में अपनी नौकरी के प्रति अनिश्चिंतता थी और भी कपोल-

कल्पित शंकाएं थी, वह संसार में अपनेआप को खुश देखना चाहता था, और ख़ुशी का मायावी जंजाल उसे मुँह चिड़ा रहा था, जबकि वह उसे पकड़ने की जुगत में था।

वापसी के रास्ते में श्रीवास्तव ने उससे पूछा, 'तो फिर, तुमने हमारे एसपी के बारे में क्या सोचा? अगस्त्य बेवकूफी से मुस्कराया। 'इस सप्ताह तुम्हें औपचारिक रूप से उनके ऑफिस में बुलाया जा सकता है, और तुम्हें डिस्ट्रिक्ट जज और डिस्ट्रिक्ट डिवलेप्मेंट अधिकारी के कार्यालय में भी बुलाया जायेगा।' तुम्हें और कहीं नहीं बुलाया जायेगा। आमतौर पर यह मीटिंग काफी देर तक चलती है, कुछ लोगों के भाषण होते हैं, लेकिन मुझे कार्यालय में बहुत से काम निबटाने हैं, इसलिए मैंने इसे छोटा कर दिया। तुम दिन में कितनी बार खाना खाते हो?' श्रीवास्तव ने फिर से बातों का प्रसंग बदल दिया।

अगस्त्य को इस सवाल से हैरानी हुई। उसने जवाब दिया, 'तीन' सोचने लगा कि शायद श्रीवास्तव को ऐसे लोगों की याद आ रही होगी जो एक दिन में पंद्रह बार खाते हैं।

श्रीवास्तव ने हिदायत दी, 'जब तुम नौकरी पर आओगे तब तुम्हें दो बार खाना होगा, ऑफिस से पहले और ऑफिस के बाद। मेरा उदाहरण लो। ऑफिस दस बज कर तीस मिनट पर शुरू होता है, और मैं ठीक ग्यारह बजे वहाँ पहुंच जाता हूँ।' वह अपने गुणों का बखान कर रहा था। श्रीवास्तव ने बताया, मैं लंच के लिए घर नहीं जाता। एसपी ने पहले अपना कोई और पैटर्न अपना रखा था, लेकिन मैंने उनका पैटर्न भी तय कर दिया। वह दस बज कर तीस मिनट पर ऑफिस आता है, लेकिन लंच के लिए एक बजे घर जाता है वहाँ चार बजे तक सोता है! फिर पांच बजे ऑफिस आता है। मैंने उसका समय ऐसे ही तय कर दिया।' श्रीवास्तव अपने निर्णय पर खुश हो रहा था। 'एक बार पूरे सप्ताह भर मैं किसी काम से उन्हें तीन बजे के करीब ऑफिस में फोन करता रहा लेकिन वे वहाँ नहीं मिले। उनके ऑफिस से जवाब मिलता कि वे घर पर हैं। वे झूठ नहीं बोल सकते थे क्योंकि कलेक्टर साहब खुद उनसे पूछ रहे थे, फिर मैंने एसपी साहब को घर पर फोन किया। उसके सिपाही ने मुझसे यह नहीं कहा कि वे सो रहे हैं, और उन्होंने उठ कर मेरा फोन उठाया और यह नहीं कबूला कि वे सो रहे थे। एक सप्ताह तक ऐसे ही चला। तुम्हें

ऐसे लोगों को सीधा करना होता है जो समझते हैं कि उन्हें दोपहर को सोने की पगार मिलती है। कुमार एक रोचक व्यक्ति हैं। वह बड़ी-बड़ी बातें करता है कि वह लोगों के लिए बहुत काम करता है लेकिन तुम जान जाओगे कि वह बहुत ही बकवास पुलिसवाला है। क्या तुम लंच के लिए रेस्ट-हाउस जाना चाहते हो?'

'ओह... हां, मैं यही सोच रहा हूँ।' लेकिन यह तो नीरा मुर्ख फैसला रहेगा उसने सोचा रेस्ट-हाउस का कमरा कलेक्टर के कमरे से ज्यादा गर्म होगा।

वह अपने कलेक्टर और उसकी नौकरी से दूर अपनी दूसरी दुनिया में जाना चाहता था। वह अपने उस गर्म रेस्ट-हाउस और दूसरे रेस्ट-हाउसों की गोपनीय दुनिया में जाना चाहता था जिनमें उसने वह वर्ष बिताया था। उसकी गोपनीय दुनिया बहरी संसार से कहीं अधिक रोमाँचक थी। दोपहर को कमरे में अन्धेरा रहता था, क्योंकि उस समय बाहर की रोशनी को रोकने के लिए कमरे की खिड़कियाँ बंद करनी पड़ती थी और खिड़कियों के शीशों को गुलाबी रंग से पेंट किया गया था (एक इंजिनियर ने बताया था कि ऐसा चमक को रोकने के लिए किया गया था। और दूसरे ने बताया था कि ऐसा प्राइवेसी कायम रखने के लिए किया गया था।) कमरे में मारिजुआना, नंगापन, शांत, बेमेल संगीत (टैगोर या चोपिन का) था, और वे विचार थे जो अकेले में ही पनपते हैं। और गर्मी यानी अपने नंगे शरीर की गर्मी और पसीना देखना भी एक अस्पष्ट सी कामुकता थी।

श्रीवास्तव ने कहा, 'ठीक है, लंच के बाद आराम करना, किसी और चीज़ के पीछे भागने की जरूरत नहीं है। इस गर्मी को झेलने की आदत डालने में तुम्हें कुछ समय लगेगा। लेकिन कल शाम को तुम मेरे घर आ रहे हो।'

कलेक्टरेट से अगस्त्य सफेद एम्बेसडर कार से जीप में आ गया। नायब तहसीलदार पसीने में लथपथ था और अगस्त्य की तरफ मुस्करा रहा था। रेस्ट हाउस में उसने कहा, मैं आपसे से अनुमति लेना चाहुंगा, सर।'

अगस्त्य ने कहा, 'ठीक है धन्यवाद, कल आ जाना'

नायब तहसीलदार ने उसे एक बडा सा नीले बॉर्डर वाला सफेद रुमाल दिया। और पूछा, 'इस सुबह का, सर।'

'हां, हां, बिलकुल इस सुबह।' हां, मैं पूरी कोशिश करूंगा। ड्राइवर और नायब तहसीलदार मुँह दबाकर हंसे। उसने ड्राइवर से वसंत को बुलाने के लिए कहा। उसका कमरा बहुत सुन्दर और ऊँची छत वाला था और उसमें तामसे का फोटो लगा था। उसे भूख नहीं लगी थी, लेकिन उसे अपनी सेहत का ख्याल रखने की गरज से दूध पीना था। उसने वसंत से दूध के बारे में पूछा। वसंत ने इस लहजे में पूछा।

'दूध?' जैसे उसने उसकी पत्नी की योनि माँगी हो। वसंत अपने सिर पर हरा तौलिया लपेटे पागल लग रहा था, लेकिन वह मदना के हिसाब से जच रहा था। अगस्त्य ने उसे साढ़े पाँच बजे चाय देने को कहा और चलता कर दिया। उसके पास अपने लिए तीन घंटे थे और वह उनका इंतजार कर रहा था। उसने कमरे का दरवाजा बंद कर दिया और अपने लिए सुट्ट बनाई, संगीत चला कर वह कपड़े बदलने लगा। वह बहुत धीरे-धीरे सुट्टा पीने लगा और सब बातें भुला दी। मदना में समय-समय पर कुछ-न-कुछ रोचक हो रहा था। कमरे के बाहर उसका गलियारा बड़ा थकाऊ था, लेकिन अगस्त्य अपने गोपनीय जीवन के हर सेकिंड का लुत्फ़ उठा रहा था। वह कोई भी काम यंत्रवत नहीं कर रहा था, मसलन कपड़े बदलना, ब्रश करना वह सभी काम सजग होकर उनमें डुब कर, भावमय होकर कर रहा था। उसने धुबो के दिए विदाई तोहफे कैथ जर्रेट को लगाया।

वह ड्रेसिंग टेबल पर शीशे के पास गया आगे की ओर झुक कर उसने अपनी नाक शीशे से सटा दी और अपनेआप से धीरे से कहा उसे क्या हो रहा था। उसे अभी चौबीस घंटे भी नहीं हुए है और वह अंतर्दृष्टि और ज्ञान की अक्षतिपूर्ति के बिना ही अव्यवस्थित हो गया। वह लेट गया और लकड़ी की छत की तरफ ताकने लगा। वह हस्तमैथुन कर सकता है, लेकिन बिना आनंद लिए। उसने दोबारा अपने आप से पूछा। यह क्या है? क्या

इसलिए कि यह नई जगह है। हां। क्या इसलिए कि मैं शहरी जीवन को याद कर रहा हूँ? हां। क्या इसलिए भी कि मेरी यह नई नौकरी है? हां, यह नौकरी उलझन में डालने वाली और उबाऊ है। इसे समय देना होगा, महज़ चौबीस घंटे काफी नहीं हैं। वह मच्छरों का इन्तजार कर रहा था। कमरे का रोशनदान खुला था हवाका रुख इस तरफ होने पर मल-मूत्र की दुर्गंध आ रही थी। वह ऐसे ही सोच रहा था कि उसके मल-मूत्र में तो ऐसी दुर्गन्ध कभी नहीं आती। उसने अनमने मन से अपने गुप्तांग को सहलाया फिर अपना हाथ दूर कर लिया। उसने अचानक से फैसला कर लिया हस्त-मैथुन नहीं। वह इस बारे में सोचना चाह रहा था लेकिन किसी भी एक विषय पर एक घंटे से सोचना मुनासिब नहीं था और बेकार भी था। नहीं, मैं मदना में अपना वीर्य नष्ट नहीं करूंगा। यह एक आवेग था और वह इस पर टीके रहना चाहता था। उसने अपनी डायरी में आज की तारीख के नीचे लिख दिया, 'आज से कोई हस्त-मैथुन नहीं। अपने ज़मीर का इम्तहान लो साले। फिर उसे अपनी वाहवाही पर हैरानी हुई। हस्त-मैथुन बिलकुल भी नहीं? यह तो मुश्किल बात थी। फिर मारिजुआना उस पर हावी रहेगी अब उससे निबटने का मामला सामने है। वह फिर से लेट गया।

शायद वह सो सकता था, लेकिन कुंठाग्रस्त हो बदजायका मुँह लिए लेट कर समय बर्बाद करता रहा।

बहुत ही शांत और विदेशी प्यानो की धुन पर, जर्रेट का संगीत चल रहा था। उसे लगा मदना में संगीत बहुत ज़रूरी है। जब वह यहाँ आने के लिए अपना सामन पैक कर रहा था तो उसे लग रहा था बियालिस कैसटें बहुत ज्यादा हैं। अचानक किसी ने बड़ी ज़ोर से चौंका देने वाली आवाज से दरवाजा खटखटाया। एकाएक कमरा भावुक संसार में बहुत ही अनमोल और गुप्त, आश्रय देने वाली जगह लगने लगा।

दरवाजे पर एक बिना शेव किये पिए हुए लाल आंखों वाला मोटा आदमी खड़ा था। 'मैं शंकर हूँ,' वह टूटी-फूटी हिंदी में बोला, 'मैं यहाँ ठहरा हूँ' - उसने अपने हाथ से उस दीवार की तरफ इशारा किया जहाँ पर तामसे की फोटो टंगी थी। उसका मतलब अगस्त्य के

साथ वाले कमरे से था उन दोनों कमरों का बरामदा एक ही था। अगस्त्य ने अपनी घड़ी में देखा यह आदमी दोपहर के तीन बजे पीये हुए है, उसे शंकर एकदम पसंद आ गया।

उसने कहा, 'हेलो, मैं अगस्त्य सेन हूँ।'

'अगस्त्य अच्छा नाम है। बहुत दुर्लभ नाम है, मतलब है घड़ा में से जन्मा। जार एक गर्भ होता है, और उसका मतलब देवी माँ से है, और घड़ा में वैदिक व्हिस्की होती थी। सोम-रस की तरह की व्हिस्की, बढ़िया क्वालिटी की स्कॉच, जो बारह वर्ष तक परिरक्षित रहती है। 'शंकर दरवाजे की तरफ झुक रहा था और उबासियाँ ले रहा था और व्हिस्की और नसवार की गंध छोड़ रहा था। इस सुबह आप टैगोर बजा रहे थे। मैं उनका संगीत पसंद करता हूँ। तो फिर हम दोनों दोस्त हुए।'

'यहाँ बहुत गर्मी है क्या हम तुम्हारे कमरे में चलें वहाँ गप्पे मारेंगे?' उसे दोपहर को तीन बजे किसी अजनबी के साथ अजनबी जगह पर व्हिस्की पीने का आनंद लेना था।

शंकर का कमरा हालांकि उसके कमरे जैसा ही था, लेकिन उसमें बहुत गंदी गंध आ रही थी, वहाँ बहुत गर्मी थी और खिड़कियां भी बंद थी। उसने कमरे से कोई भी फर्नीचर नहीं हटाया था, वह खचाखच भरा था। कमरे में सोफे पर एक झुर्रियों वाला आदमी लेटा था उसने अगस्त्य की तरफ हाथ हिलाया। शंकर ने बताया वह उसका छोटा भाई है, चिंता की कोई बात नहीं। यह थोड़ा पागल है, लेकिन बहुत खुशगवार है।

अगस्त्य व्हिस्की का मज़ा दोगुना करने के लिए मारिज़ुआना लेना चाहता था लेकिन चुप रहा। वह उनके कमरे में असहज महसूस कर रहा था। साथ ही वह समझ नहीं पा रहा था कि शंकर और उसके भाई को कैसा लग रहा था। वह रेलवे स्टेशन पर उसे छोड़ने आये चाचा के आखिरी शब्द याद कर मुस्करा रहा था। 'यदि तुम्हें गांजा पीने की तलब लगे तो किसी के सामने मत पीना यह कोई अच्छी आदतों में शुमार नहीं है।' यह सोच कर वह कहीं ओर देखने लगा। 'उन्होंने कहा था जैसे ही तुम सहज हो जाओ तो मुझे

लिखना। जब उसके चाचा ने उसे और मदन को उनके कॉलेज के पहले वर्ष में सुट्टा फूकते देखा था तो वे हम पर बहुत बरसे थे और नाराज हुए थे। एक सर्दी के दिनों के रविवार को वह और मदन छत पर थे और मदन सुट्टा बना रहा था। उसके चाचा उन्हें देख कर उन पर बरसे, 'तुम बंदरों की औलाद।' उनका गुस्सा उनकी नैतिकता को लेकर नहीं होता था, वे उनके खून को धिक्कारते थे। मदन ने उनके साथ बहस करके बातचीत को बेतुका बना दिया। मदन ने बहस की। लेकिन भारत में तो लोग सांझ के समय भी सिगरेट और हुक्का पीते हैं और ऐसा कहते हुए उसने अपने बाएं हाथ से मुँह में गांजा गटक लिया, धीरे-धीरे हंसते हुए अगस्त्य के पेट में बल पड़ गए। 'मेरा नौकर अपने गांव से बहुत सा तम्बाकू लाया करता था और उसने बताया कि अगस्त स्कूल के दिनों से पी रहा था।'

ऐसा कहकर उसके चाचा की कुटिलता क्रोध में बदल गई। उन्होंने हमें डपटते हुए कहा, 'तुम लोगों को अपने आप को अंग्रेज कहलवाने का बहुत शौक रहता है। और यह अगस्त क्या है मेरे सामने इसे ओगु कहो।'

शंकर ने कहा, 'पीओ?' और उसके गिलास में खालिस व्हिस्की उड़ेल दी, और खिसियाई हुई हँसी हँसने लगा। अगस्त्य जल्द ही अमझ गया कि शंकर हंसता बहुत था। शंकर ने पूछा, 'आप मदना में करते क्या हैं, सेन साहब?'

अगस्त्य ने बताया, 'मैं राजस्व विभाग में ट्रेनिंग पर हूँ।'

'ओह, तो फिर आप आईएएस हैं, और मुझे लगता है आप बीडीओ नहीं बनना चाहते होगे।' शंकर इतना हँसा कि उसके पायजामे पर काफी व्हिस्की गिर गई।

अगस्त्य ने बताया, 'हां मैं बीडीओ नहीं बनना चाहता।'

सोफे पर लेटे उसके भाई ने कहा, 'सेन साहब तुम्हारे बेतुके जुमले नहीं सुन रहे।' और वह बोलता रहा, 'सेन साहब आप मदना कब आए।'

अगस्त्य ने बताया, 'पिछली शाम।'

'कुछ दिन पहले नुराणा की महिला बीडीओ ने आत्महत्या कर ली थी। कल एक स्थानीय अख़बार दैनिक में छपा था कि उसका कलेक्टर साहब के साथ संबंध था, और उसने इसलिए आत्महत्या की कि कलेक्टर साहब उससे शादी करने के लिए अपनी पत्नी को तलाक नहीं दे रहे थे।

'तुम्हारा मतलब, मिस्टर श्रीवास्तव साहब से है?'

'हां।' सोफे पर लेटे आदमी ने ज़ोर से जम्हाई ली।

शंकर को अपने भाई के आखिरी वाक्य से कुछ आपत्ति थी, वह पांव पटकते हुए यह कहते हुए दरवाजे की तरफ गया कि वह ठंडा पानी ला रहा है। उसने घंटी बजाई जिसने काम नहीं किया। उसने स्विच बोर्ड को थपथपाया तो वह बाहर निकल आया और सिर्फ एक कील पर लटक गया। कमरे के फर्श पर कूड़ा बिखर गया और कमरे में धूल भर गई और एक बड़ी सी मकड़ी गुस्से में होकर छत की तरफ लपकी। शंकर बाहर निकल गया।

अगस्त्य ने पूछा, 'दैनिक में लिखा था कि मिस्टर श्रीवास्तव का उस बीडीओ के साथ लफड़ा था?'

शंकर के भाई ने कहा, 'हां, मैं झूठ नहीं बोलता।'

अगस्त्य ने सोचा, अजीब जगह है और वह फिर मुस्कराया, उसे याद आया कि उसके चाचा एक ही विषय पर अलग-अलग तरह से प्रताड़ित करते थे और कई तरह के चेहरे

बनाते थे और कई तरह की आवाजें निकाल कर हजारों अलग-अलग स्थितियां बना देते थे। वे एक गंभीर टीवी सीरियल देखते थे जिसमें किसी मेहमान का व्यग्रता से इंतजार होता था और वह आखिरी वाणिज्यिक विज्ञापन के बाद तक भी नहीं नजर आता था।

अगस्त्य ने कहा 'गोडोट,' लेकिन पलटुकाकु को हंसी नहीं आई।

ऐसा क्यों था कि, जब वे एशियन खेलों के लिए बने नए स्टेडियम को देखने गए, तब बातें करते हुए पलटुकाकु का पैर टट्टी में धंस गया तो वे बहुत गुस्सा हुए और कहा कि, ऐसा क्यों है कि तुम्हें जब भी कोई बात याद आती है तो वह घटिया और निम्नतर होती है जोकि तुम्हारे चारों तरफ की जिंदगी से बिलकुल अलग-थलग होती है?'

सोफे पर बैठे आदमी ने कहा, मेरा छोटा भाई बहुत बढ़िया आदमी है, लेकिन थोड़ा मुर्ख जरूर है, इसका नाम शिव था।

अगस्त्य ने कहा, 'वह तुमसे छोटा है, वह बता रहा था तुम उससे छोटे हो।'

'अरे वह तो बेवकूफ है।' शिव ड्रिंक लेने के लिए सोफे से उठा। वह भूरे रंग की बूढ़ी आंखों वाल मुरझाया हुआ नाटा और बहुत मैला था। वह बता रहा था, 'शंकर माइनर इरिगेशन में डिप्टी इंजीनियर है। इसलिए वह हर साल पगार के अलावा 30,000 रूपये अलग से घूसखोरी कर कमा लेता है। मेरी उसके साथ एक डील है कि वह अपने गैरकानूनी रूप से कमाए धन में से एक तिहाई मुझे देगा, और मैं उसके निजी नौकर की तरह उसकी सेवा करूंगा और जब वह घर से बहार जाये तो मैं उसके साथ रहूँ ताकि वह आपना काम अच्छे से कर सके। जब जरूरत होती है तो मैं उसका खाना बनाता हूँ, उसके कपड़े धोता हूँ, उसके लिए बाजार से व्हिस्की और पान खरीद कर लाता हूँ। जब वह कहीं बाहर जाता है तो मैं उसकी पत्नी के साथ सोता हूँ।'

अगस्त्य सोच रहा था, जाहिर है कि वह झूठ बोल रहा है, या फिर वह कमीना है। शायद इस तरह का कमीनापन बेहद निरस्त रहने की वजह से होता है। या फिर शिव को मज़ाक बहुत पसंद है और वह अपनी जिंदगी की निरसता को ठीक से व्यक्त नहीं कर सकता। अगस्त्य खुद भी ऐसा ही महसूस कर रहा था जब उसने अपनी दिल्ली की अगली यात्रा में मदना के बारे में पूछे गए सवालों का जवाब ध्रुबो और मदन की तरफ से दिए थे।

'हम लोग एक सप्ताह पहले ही आये थे। फ़्लैट मिलने में महीनों लग जायेंगे। शंकर का तबादला कोलतांगा से हुआ है। हमारा परिवार वहीं है।' कोलतांगा का नाम सुन कर अगस्त्य को याद आया, यह तो मदना के साथ लगता जिला है।

शंकर हाथ में जग लिए लौटा। वह बोला, अरे यहाँ का यह मौसम।'वह कुछ देर तक यों ही मटकता और गुनगुनाता रहा। फिर, आराम से सोफे पर बैठ गया।' अच्छा तो, शिव, खुश हो ?'

'मैं नाराज़ कभी नहीं होता।'

शंकर ने अपनी तर्जनी उंगली से अगस्त्य को बताया, यह थोड़ा पागल है, लेकिन खुश रहता है।' क्या आप मदना के जोकर साठे हैं?' वह मुझे बता रहा था कि उसने एक जापानी फिल्म देखी थी जिसमें एक आदमी अपने परिवार के बूढ़े लोगों को पहाड़ों में ले जाता है और उन्हें वहीं मरने के लिए छोड़ आता है। मुझे यह सुन कर बड़ा झटका लगा,यह कहकर वह रुका और उसकी आंखें बंद हो गई, फिर उसने जोर से पाद मारा और राहत में उसकी खिसियानी हंसी निकली। वह बता रहा था, 'हम भारतीय अपने बड़े-बूढ़ों को ठीक से रखते हैं वे भी हमारे काम-काज निपटवाते हैं, हम उन्हें पहाड़ों में मरने के लिए नहीं छोड़ कर आते, आप देख ही रहे हैं मैं अपने भाई को हमेशा अपने साथ रखता हूँ।'

लेकिन मैंने किसी जगह पढ़ा था कि रांची के आश्रम में ऐसे लोग रह रहे हैं, जो बिलकुल ठीक-ठाक हैं लेकिन घर में उन्हें पनाह नहीं दी गई और आश्रम में छोड़ दिया गया, यह कितना नीच काम है। फिर वृंदावन में रह रही विधवाओं को ही देखो–'

शंकर ने पूछा, रांची का आश्रम?' घबराहट में उसके चेहरे पर चिड़चिड़ापन आ गया।
'तुम जानते हो, रांची, बिहार में है

शंकर ने पूछा, रांची का आश्रम?' घबराहट में उसके चेहरे पर चिड़चिड़ापन आ गया।

'तुम जानते हो, बिहार में है, रांची।

शिव ने कहा, 'आह ... बिहार' जैसे उसे सबकुछ मिल गया हो, और वह अपने भाई की तरफ मुड़ा उसने फिर से कहा, 'बिहार।' उसने और व्हिस्की डलवाने के लिए अपना गिलास आगे को सरकाया। 'मैंने एक लेख में पढ़ा था कि उस आश्रम में एक पागल आदमी है वह पागल इसलिए हुआ था क्योंकि उसका भाई उसकी बहन के साथ सोता था और वह उसे ऐसा नहीं करने देना चाहता था।'

यह ऐसी बात नहीं थी कि उसके बारे में कोई टिप्पणी की जाए इसलिए सुकर सब चुप रहे। शंकर ने सभी गिलास भर दिए। अगस्त्य ने पूछा, 'शंकर साहब, क्या आप मिस्टर तामसे को जानते हैं?'

'ओह! तामसे! वह गुस्से और जीत की सी ख़ुशी में चिल्लाया और उसने अपने हाथों को ऊपर उठा कर तिरस्कार के संकेत दिए, लेकिन उसने बैड पर लगी मच्छरदानी की डंडी पर हाथ दे मारा और मच्छरदानी नीचे गिर गई। 'वह जोकर कलाकार। वह बेवकूफ आदमी है। मैं आपको बता रहा हूँ। उसने अपनी बेकार पेंटिंग लगा कर कई कमरों को खराब कर दिया। उसने एक दीवार की तरफ इशारा करके बताया इस दीवार पर भी उसकी एक पेंटिंग थी। लेकिन मैंने कहा इस कमरे में या तो यह पेंटिंग रहेगी या मैं फिर

वसंत उसे यहाँ से उतार कर ले गया, नाव में एक आदमी के साथ सूरज डूबने की वाहियात पेंटिंग थी वह। वह प्रत्येक पेंटिंग पर वाहियात संदेश लिखता है। तामसे एक सरकारी कलाकार है।

जो सप्ताह में एक मेज पर खुशी से काम करता है और छुट्टियों में ख़राब पेंटिंग करता है, जिसे केवल उन लोगों की तारीफ मिलती है जो आराम घरों में तामसे की तरह पेंटिंग करते हैं, और जिनकी महान कला का मानदंड किसी प्रकार का मजाक है, चाय पीते समय या पादते समय कोई भी महान कविता लिख सकता है जब कोई चाय पी रहा है या फटकार रहा है तो आप जानते हो आरामदायक तरीके से। तामसे बकवास है। शंकर ने ज़हरीलेपन से जोड़ा और नाराज आंखों के साथ कमरे के चारों ओर देखा, आपको मैं एक कलाकार की तरह नहीं देखता, वह काले बाजार पर सिनेमा टिकट के विक्रेता की तरह दिखता था?

'नहीं। वह काले बाज़ार में सिनेमा के टिकट बेचने वाले की तरह दिखता है।'

फिर भी मैं कई बार राष्ट्रीय कार्यक्रम में रहा हूँ मैं और ज़्यादा हो सकता था मैं एक किंवदंती हो सकता था। वह चेहरे पर प्रदर्शन करने के लिए एक गंभीर भाव ले आया उसके बाद उसने एक अपरिचित ठुमरी की पहली कुछ पंक्तियों को विस्तार से अच्छी तरह से गाया।

'सोफे से शिव ने कहा कि वह बहुत अच्छा गाता है।'

'मैं क्यों पीता हूँ?' क्योंकि भारत में सभी गायक लगभग पीते हैं। यह उसी छवि का एक हिस्सा है और इच्छाशक्ति की कमी के विरूद्ध दारू हमें मुक्ति देती है। यह बहुत आसान है, किसी की अनुशासन के नाम पर किसी का नशे में न जाना।

अगले ड्रिंक पर शंकर ने पूछा, क्या आप जगदम्बा में विश्वास करते हैं?

‘उह...’

आपको जरूरी होना चाहिए, क्योंकि उसने हमें यहाँ एक साथ पहुँचाया। यह मौका या भाग्य नहीं है, हमारी बैठक के लिए देवी ने हमारे आस-पास के कमरे की व्यवस्था की है। अन्यथा, हमें क्यों मिलना चाहिए। खैर बात यह है कि हम दोनों शनि द्वारा शासित होते हैं। हमारे पास अलग-अलग पृष्ठभूमि हैं, अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग लाए गए हैं। क्यों, आयु अंतर। बीस साल होना चाहिए। कभी-कभी मैं इन गहरी चीजों को जानता हूँ। संगीत और ज्योतिष, वे मेरी नसों में हैं उसने अपनी बालों वाली मोटी कलाई उठाई और ख़ुशी से हिनहिनाया। उसने अपने कुर्सी आगे की और अगस्त्य को मीठी, मदिरा वाली नसवार के आगोश में ले लिया था, वे कहते हैं, कि सभी इंजीनियर्स भ्रष्ट हैं। वे सभी पैसे लेते हैं, पर मैं नहीं। मेरे पास मेरा संगीत और मेरा ज्योतिष है।

‘तुम्हारे जन्म की तारीख क्या है?’

4 अगस्त 1958, अगस्त्य ने फिर झूठ बोला

और दिन?

'शुक्रवार'

क्या तुम्हें समय याद है?

सुबह आठ पंद्रह पर मेरी माँ ने मुझे बताया कि उसे मेरी वजह से काफी दर्द हुआ। शंकर ने अपने हाथों के अपने घुटनों पर रखा उठने के विचार पर सोचते हुए और आखिरकार लड़खड़ाते हुए मुड़ा किनारे पर रखी मेज़ से पेंसिल और कागज़ लिए। मैं तुम्हें

आज की रात मिलूंगा और प्रेम करूँगा क्योंकि तुम्हें जगदंबा की मदद की जरुरत है। तुम्हें काफी मदद की जरूरत है, हाँ, मुझे है अगस्त्य ने सोचा, क्या वह होमोसेक्शुअल है?

'इस समय आपको सबसे अधिक किस चीज़ की जरुरत है' अपनी कुर्सी पर झुके हुए शंकर ने पूछा।

मैं चाहता हूँ अगस्त्य ने बेशर्म चुप्पी वाली मुस्कान के साथ कहा। मैं ध्रुबो की माँ के साथ संभोग करना चाहता हूँ (जो ध्रुबो के अधिकतर सभी दोस्तों की किशोर कल्पना थी, और ध्रुबो के लिए भी, उन्होंने ज़ोर दिया, सिर्फ वह इसे स्वीकार नहीं कर सका, वह छरहरी, गर्म और रेशम और गर्म और पहुंच के बाहर थी) अच्छा, पल-पल में मैं क्या बदलाव चाहता हूँ।

शंकर इस उत्तर से अधिक असंतुष्ट था और अपने सिर को शराबियों की तरह हिला दिया था। तुम्हे सच्चा होना चाहिए, शिव ने अचानक से कहा।

ओह अच्छा, क्या फ़र्क पड़ता है, अगस्त्य ने सोचा, और कहा इस घडी मैं जानना चाहता हूँ कि मेरा भविष्य कैसा होगा... किसी अस्पष्ट भावना से नहीं... लेकिन मैं मदना में क्या कर रहा हूँ क्या मुझे इस तरह के जीवन पसंद आएगा। मैं सोचता हूँ मुझे अपना पुराना जीवन बहुत याद आता है। क्योंकि खासतौर पर मैं उसका अभ्यस्त हो गया था और मुझे यह अच्छी तरह से समझ में आया था। बेशक यह केवल एक दिन रहा , लेकिन यह बहुत लंबा लगता है, और मैं बस अजीब सा महसूस करता हूँ.., खुद को शर्मिंदा महसूस करते हुए वह मुस्कुराया।

ओह मदना, शिव अप्रत्याशित रूप से बड़बड़ाया, मदना में हर कोई परेशानी महसूस करता है, जबकि शिव ने कुछ अस्पष्ट सा लिखा और मेज़ पर कुछ हिसाब लगाया। तुम्हे

कोलतंगा जाना चाहिए, खूबसूरत जगह है। हिंटरलैंड में एक दूसरी जगह, अगस्त्य ने सोचा।

अगस्त के बाद तुम इस जगह को, अपनी पसंद की जगह जहाँ तुम जाना चाहते हो के लिए छोड़ सकते हो।

शंकर ने इस ओवर को अपने कंधे के ऊपर से फेंका।

'तुम्हारा मतलब है मुझे पूजा की छुट्टियों में दिल्ली या कोलकत्ता जाना चाहिए।'

जो कुछ भी हो, अगस्त के बाद तुम खुश रहोगे, शंकर ने अगस्त्य को देखा और उसके चेहरे पर आने वाली आनंद देने वाले अविश्वास को देख कर उसे नापसंद किया।

'आप विश्वास नहीं करते हैं, लेकिन आपको जगदम्बा में विश्वास करना चाहिए'

क्या आप खुश हैं? भगवान, अगस्त्य ने सोचा, यह भविष्यवाणी हो सकती है? फिर खुद से शर्मिंदा हो उसने पूछा, 'जगदम्बा ऐसा कहती हैं? वह अचानक पक्के तौर पर विश्वास करना चाहता था।

हाँ, हाँ जगदम्बा ने मुझे ऐसा बताया है

नास्तिकता, बेहतर भविष्य, पैसा, या अनाज, हम सब किसी एक में या किसी दूसरे में विश्वास करते हैं।

हैरानी की बात है मदना से तीन हफ्ते पहले पिछली मुलाकात में उसके पिता ने भी यही कहा था। ओगु, हम में से अधिकांश लोग, पूरी तरह से असंतुष्ट रहते हैं, अगर हम भाग्यशाली हुए, हम कैसा जीवन जीते हैं, हम पर एक विशेष लय के साथ लागू होता है,

– जन्म, शिक्षा, नौकरी, शादी, फिर दुबारा जन्म, लेकिन हम सभी के दिमाग हैं, है ना? हमेशा की तरह उसके पिता ने एक अल्पभाषी विनोदी इंसान की तरह सावधानी के साथ बात की। तुम्हारी उम्र के अधिकतर भारतीयों के लिए, बस कोई भी नौकरी पाना काफी है। तुम ज़्यादा भाग्यशाली हो, क्योंकि तुम्हारे पास विकल्प थे। कोलकत्ता में वे शाम के समय लॉन में दीवारों के बाहर डलहौज़ी स्क्वायर (अब बंगालीकरण, बिनॉय बादल दिनेश बाग) में यातायात की गड़गड़ाहट के साथ थे। पैतृक धर्मगीतों की तरह ये आवाजें, क्या नहीं वे नहीं, लेकिन आपके पास हमेशा सरोगेट माता-पिता, आपकी चाची और फिर दिल्ली में अपने पलटू काका रहते हैं और हमने सच में एक साथ ज्यादा समय नहीं बिताया है।

उन्होंने बोतल समाप्त कर दी। शंकर ने डकार ली और कहा, 'सेन साहब ,क्या आप मुझे कुछ पैसे दे सकते हैं।'

'कितने?'

सोफे से शिव ने कहा, 'लगभग सौ रुपये।'

अगस्त्य और शंकर बाहर चले गए थे। पाँच बजे के बाद भी, बरामदा बहुत गर्म था लेकिन कमरे की तुलना में बहुत ठंडा था। ताज़ा गर्म हवा ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया, जो उसकी त्वचा को गुदगुदा रही थी। शंकर पैसों के साथ लौट गया। मुझे लगता है कि हमें अब सोना चाहिए। उसने बरामदे से एक कुर्सी खींच ली और गर्मी में बैठ गया, फिर भी शंकर के कमरे की उमस से स्तब्ध और हैरान ही था कि क्या वे उसे वापस पैसे वापिस लौटा देंगा, यह पैसा चाहे शराब के लिए अप्रत्यक्ष भुगतान था, क्या दोपहर सिर्फ अपने कुछ पैसे पाने के लिए एक लंबी कैद थी।

उसने नींद महसूस की; आलसी नींद, लेकिन अपनी कुर्सी छोड़ने में अभी भी शिथिलता थी। बजरी के पार, उन्होंने गुलाबी और निर्जीव मुख्य सर्किट हाउस देखा। कार पार्किंग में

पीपल के पेड़ के नीचे एक गली का कुत्ता अपनी पूँछ पर ध्यान दे रहा था। उसे याद आया पिछले साल स्कूल के दिनों में, अंग्रेजी की उनकी नयी टीचर ने इन्हें 'मेरी महत्वकांक्षा' पर एक साफ़-सुथरा निबंध लिखने को कहा था। जो स्वयं नए थे क्योंकि उन्होंने यूरोप में कहीं से शिक्षा में डिग्री हासिल करने का दावा करते थे। यह उनका पहला दिन था, और वे अपने आप को अलग और युवा और मित्रवत होने की कोशिश करके सभी को परेशान कर रहे थे। उन्होंने सबसे पहले खुद के बारे में बात की। सभी ने पूरी अनिच्छा की चुप्पी के साथ सुना ।

उनकी चुप्पी उस वक्त टूटी जब ध्रुबो शुरू हो गया, मै यह जानना चाहता हूँ तब सबने यह कहा, कोई भी जानना नहीं चाहता। 'बौद्धिक पाद' और तुम पहले अपनी माँ को उपलब्ध करो। लेकिन उनकी आवाजों के बीच ध्रुबो जारी रहा था आप अपनी यूरोप की डिग्री के साथ क्या साबित करने की कोशिश कर रहे हैं? उसके बाद ध्रुबो को प्रिंसिपल के पास भेजा गया। लेकिन सभी ने उसे निबंध न सुनाने के लिए नापसंद किया। अपने निबंध में अगस्त्य ने कहा था कि उनकी वास्तविक महत्वाकांक्षा एक लावारिस कुत्ते की थी क्योंकि वे सबसे अच्छा जीवन जीते हैं। उन्हें भोजन मिलने का भरोसा होता है और क्योंकि वे लावारिस होते हैं, उन्हें घर की रक्षा नहीं करनी पड़ती या अपने पंजे नहीं हिलाने पड़ते और कोई बेकार की चीज़े नहीं लानी पड़ती और साफ नहीं रहना पड़ता और भोजन के लिए इसी तरह का कुछ अनावश्यक काम। एक बार भोजन खाने के बाद या सोने से पहले भविष्य के भोजन के लिए सुनिश्चित होने के लिए वे गुलाम और चापलूस हो जाते हैं। भोजन के बाद और सोने से पहले वे बेमन से अपनी पूँछ हिलाते हैं जब वे भूख लगी, एक खिलाया, और नींद से पहले वे सर्विल और सिकोफैंटिक थे, जब भी वे अपने मेजबानों को भविष्य के भोजन के लिए एक निवेश के रूप में पारित कर देते थे, तो वे अपनी पूंछों को खराब कर देते थे। लावारिस कुत्ता मुक्त होता है, वह बहुत सोता है, अप्रत्याशित रूप से भौंकता है एक भयानक दिन वह मुक्त था, वह बहुत सोया, सिर्फ अपने चाहने पर अप्रत्याशित रूप से भौंकता है और उसे बहुत सारा सेक्स मिलता है। लेकिन अपने आक्रोश के कारण उस बेवकूफ अध्यापक ने कक्षा में उसे अपना निबंध पढ़ने को कहा। कक्षा उसे सुनने की बजाये उबासियाँ ले रही थी। यह झूठ बोल रहा है

उसकी एकमात्र महत्वाकांक्षा एंग्लो-इंडियन होना है। अध्यापक ने प्रशांत को भी अपना निबंध पढ़ने को कहा, जिसकी किसी ने प्रशंसा नहीं की क्योंकि किन्हीं कारणों से उसने अपने निबंध को भी पढ़ा था, जिसने सभी को नाराज कर दिया क्योंकि किन्हीं वजहों से उसकी व्याख्या नहीं कर पाया। उसने अपने निबंध में कहा था कि वह एक तिब्बती बनना चाहता है।

किनारे पर एक आकृति मुड़ी– वसंत अपने हरे तौलिये में था। अगस्त्य का चाय को इंकार माने, बातचीत, वसंत ने कुर्सी फर्श पर रख दी और कुछ समय के लिए अपनी त्वचा को देखने लगा। वह अपने पेट की संतुष्टि की कल्पना करने लगा। समन्वय की बैठक के लिए बारह अलग-अलग तरह की चाय के कप, लार और दांतों के बावजूद अपराजित क्रेप-आमलेट, लड्डू, समोसा और हरी चटनी। दोपहर की व्हिस्की सभी के पेट के भीतर आंडोलित ढेर में फेन और बुलबुले उत्पन्न कर रहे हैं। हर रोज़ सभी के पेट पर इसी तरह का हमला होता है, सिवाय उनके, जिनके पास खाने को ज़्यादा नहीं है। और उनमे अम्ल गर्म लाल पेट की परत को निगल जाता है। उसे इंसानी देह पर बड़ा आश्चर्य होता है। वसंत ने चाय का कप पिया, रात्रि के भोजन के लिए इंकार कर दिया और व्याकुलता के साथ सुबह के दो बजे सोता रहा, तब मच्छरों ने उसे उठाया।

खुले हुए झरोखे से रोशनी बिखर कर नीली रोशनी रोमांटिक चमक उत्पन्न कर रही थी। कमरा मधुर लग रहा था जैसे उसे किसी अनुराग के लिए तैयार किया गया हो। वह उठा मच्छरदानी उठा कर उसे कोने में गिरा दिया और नीचे लेट गया। अब उसका पसीना पंखे से सूख जायेगा। दिमाग अधिक सक्रिय होने के कारण वह सो नहीं सका और छवियों से लड़ता रहा। वह दुबारा उठा, अपना चेहरा धोया और लाइट बंद करके बाहर चला गया। दो बज रहे थे और आखिरकार मदना सर्द हो गया था। चन्द्रमा चटख और सूजा हुआ था। भवन गट्टे के विशाल कृतियां लग रही थी, नाज़ुक और असली। वह बरामदे में घूम रहा था, लेकिन शंकर के दरवाज़े से दूर नहीं। शंकर के कमरे की उमस से अभी भी उसका दम घुट रहा था। वह उसके कमरे के दरवाज़े और खिड़की को तोड़ देना चाहता था ताकि थोड़ी ताज़ी हवा भीतर जा सके। आवेग के साथ उसने निकर और जूते

पहने और बरामदे में पुश-अप करने लगा। इससे पहले कि किसी कारण से वह विचलित हो जाये वह दौड़ने के लिए चला गया।

सर्किट हाउस के पीछे एक बिना किसी प्रयोग का बड़ा मैदान था दूसरी तरफ एक किनारे पर गरीब लोगों की झोपड़ियां, कुछ कमज़ोर इमारतों पर डरे हुए से अतिक्रमण।

दक्षिणावर्त घूमना, बाहों को आड़ा-तिरछा घूमाकर, लय और संतुलन, स्थिर, स्वस्थ साँस लेना यह कल्पना करना की शरीर का अच्छी तरह से इस्तेमाल किया जा रहा है, और दौड़ से उसने शानदार महसूस किया। दिमाग सुखद रूप से घूम रहा था फिर भी कोई तनाव नहीं क्योंकि शारीरिक तनाव ने उसे एक आधार दिया था। यदि उन झोपड़ियों से बाहर सोते हुओं में से कोई उसे देखता तो उसे सुबह दो तीस की इस दौड़ के बारे में समझाना कठिन हो जाता। उसे इस विचार पर हंसी आयी। चन्द्रमा की रोशनी में उसने एक भवन को देखा जो सन् 1903 में निर्मित हुआ था। वापसी पर वह प्रसन्न महसूस कर रहा था।

बरामदे में खुद को सुखाते हुए उसने खुद को कहा, यही तुम हर रोज़ व्यायाम नहीं करते तो तुम्हे करना चाहिए। और वह सचमुच कुछ सख्त सोचने के लिए ठहर गया। तुम्हे हाथी पाँव हो गया है लेकिन यह बहुत दूर की बात है। बीमारी के दिनों के अलावा यदि तुम रोज़ व्यायाम नहीं करोगे तुम मदना से कभी बाहर नहीं जा पाओगे। अपनी डायरी में कुछ घंटे की प्रविष्टि को दर्ज करते हुए उसने लिखा, यह बहुत बेहतर था।

ग्यारह बजे तक कोलेक्टरेट में हमेशा से ज्यादा भीड़ लगी थी। वहाँ पर बहुत ज्यादा जीपें थी। चिदंबरम ने बताया, 'रेवेन्यू अफसरों की मीटिंग है सर,' सभी

चारों एसडीओ और दस तहसीलदार भी आ गए होंगे।' कलेक्टर साहब ने कहा है कि आपको भी हाज़िर होना चाहिए और उसने उसे कागज़-पत्र सौंप दिए।

अगस्त्य ने कहा, 'मैं इन्हें नहीं पढ़ सकता, क्या आपके पास इनके अंग्रेजी संस्करण नहीं हैं?' चिदंबरम ने उसे दूसरे कागज़-पत्र सौंप दिए।

साइक्लोस्टाइल कागज़ों में सबसे ऊपर,' 'मदना के रेवेन्यू अफसरों की मासिक बैठक की समीक्षा का एजेंडा 'था। उसने इसके नीचे के कुछ विषय पढ़े, 'रेवेन्यू ड्राइव', 'सरकारी बकाया की वसूली', 'पटवारियों द्वारा सरकारी धन का दुरुपयोग', 'राजस्व मामलों में लापरवाही' लिखा था। ... हम्म अच्छे विषय हैं, उसने चिदंबरम को कहा।

'सर, मेनन साहब आपसे मिलना चाहते हैं, वे कलेक्टर के चैम्बर में आपका इंतज़ार कर रहे हैं। 'वे कौन है?' अगस्त्य ने षड्यंत्रपूर्ण ढंग से पूछा।

'सर, वे आईएएस हैं सर', 'आपसे दो वर्ष वरिष्ठ, रमेरी के सब डिविजनल-मजिस्ट्रेट', अगस्त्य की अज्ञानता से चिदंबरम की आवाज़ में परेशानी झलक रही थी।

कर्णभेदी आवाज वाले मेनन, लंबे और साफ़ रंग वाले व्यक्ति था। बाद के वर्षों में अगस्त्य ने यह निष्कर्ष निकाला कि यहाँ के जिले के आईएएस अफसरों में मेनन को सबसे असामाजिक माना जाता था। उसे श्रीवास्तव सर्वश्रेष्ठ मानते थे। उनमें आत्मविश्वास था और वे नौकरी को निर्विवाद आनंद के रूप में करने वाला एक अस्पष्ट रवैया था। एक दूसरे आईएएस राजन, जिन्हें अगस्त्य ने एक नवम्बर की शाम को कलेक्टर के चेंबर में बला की शान मारते देखा था, जोकि वास्तव में एक बदतर उदाहरण था। वह यह समझने को मजबूर हो गया कि यह नौकरी वास्तव में ज़िम्मेदारी वाली है। जब अगस्त्य ने सप्ताहांत कुमार के साथ मारियागढ़ में बिताया तो उसने इस बात को उसके साथ बांटा और कुमार ने उसके विचारों की पुष्टि की। कुमार ने कहा, 'मुझे नहीं पता कि यह अन्य देशों में कैसा होता है, लेकिन भारत में

तो, एक आम नागरिक अपने चूतड़ धोने से अपनी मौत तक हमेशा सरकार की खिलाफत करता है।' और तुम्हारे बेवकूफ आईएएस जिले भर में अपनी धौंस जमाये घूमते रहते रहते हैं। 17 ,000 वर्ग किलोमीटर का दायरा कम नहीं होता वे इतने बड़े क्षेत्र में भगवान बने फिरते है, सुविधा के लिए शायद भगवान ही उचित शब्द है। तुम जानते ही हो सेन, भारत में नौकरशाही की परम्परा रही है।'

मेनन ने कहा, 'ओह सेन, तुमसे मिल कर अच्छा लगा। तुम कब आये?' वे बैठ गए। फिर से अगस्त्य के बारे में फिर से पूछ-ताछ शूरु हुई, और उसने फिर से अपने बारे में झूठी बातें बतानी शुरू की।

मेनन ने कहा, 'अच्छा तो तुम कलकत्ता से हो? फिर तो अच्छी तालीम पाई होगी तुमने?'

अगस्त्य ने बताया, 'हां, मैं काफी पढ़ा लिखा हूँ।'

'हाँ ठीक है, मैं समझ गया, लेकिन मैं पूछ रहा हूँ कि तुमने कहाँ से पढ़ाई की?'

'उह! केम्ब्रिज से..।'

'तुम्हें पता है मैं बी.ए के लिए वहां गया था। मैं भी वहीं– ट्रिनिटी में।'

अगस्त्य ने सोचा, ओह। 'ओहकैम्ब्रिज ..., मस्साचुसेट्स।'

'ओ, हाँ, बिलकुल, वहाँ पर भी एक है।'

उसी समय एक चपरासी टहलता हुआ आया, उसने बताया, सर, कलेक्टर साहब की कार तालाब के पास दिखाई दे रही है, और उसने फाइलों का ढेर लगा दिया।

मेनन ने मेज के ऊपर से अपने कागज़ उठाये और एक बड़ी सी हरी किताब अगस्त्य की तरफ बढ़ाते हुए पूछा,'क्या तुमने इसे पढ़ा है? रूत झाबवाला की हीट एंड डस्ट है यह।' 'मैंने इसे कलेक्टरेट की लाइब्रेरी से इश्यू करवाया है, क्योंकि मैंने सुना था यह अंग्रेजों के समय के असिस्टेंट कलेक्टर के बारे में हैं, लेकिन ऐसा नहीं हैँ।' अगस्त्य ने उस किताब के पन्ने पलटे, बहुत से पन्नों में कई पंक्तियों को चिन्हित कर रखा था, उनमें असिस्टेंट कलेक्टर की सुबह की सैर का जिक्र किया हुआ था। हाशिये पर लाल रंग के बालपेन से लिखा था: इन दिनों राज की निशानी सोला टोपी पहनना ज़रूरी नहीं। नौकरशाही का भारतीयकरण करने के लिए और भी मुश्किल सवाल हैं। एक अफसर की पत्नी दूसरों से मिल सकती है, लेकिन उसे ऑफिस की मर्यादा में रहकर ऐसा करना होगा।'

अगस्त्य ने कहा, 'किसी ने किताब में घसीटे मारे हैं।'

मेनन ने कहा, 'हां, मैं सोच रहा था कि इस बारे में मैं आवाज उठाऊं कि दूसरे पाठकों को भी अपने विचार बताने का मौक़ा मिलना चाहिए। नहीं तो वे सोचेंगे इस ज़िले में अब भी ऐसा ही होता है।'

कलेक्टरेट का हॉल बहुत बड़ा था और भद्दा था, रोशनदानों में कबूतर गुटर-गुं कर रहे थे दिवारों पर गांधी, नेहरू, टैगोर, तिलक और एक धुधंली सी न पहचानी जाने वाली सरोजनी नायडु या बिना पगड़ी के सीवी रमण की तस्वीर टंगी थी। पंखों के ठीक नीचे रखी कुर्सियों पर बीच की उम्र के आदमी बैठे थे। एक संतरी रंग का बिलकुल नया स्टेंडिंग पंखा कलेक्टर साहब की कुर्सी के पीछे रखा था। अगस्त्य को लग रहा था, यहाँ पर शायद लकड़ी की कुर्सी पर छह घंटों तक चूतड़ रगड़ने होंगे, लोग एक दूसरे का पसीना सूंघेंगे और विषयवस्तु के समझ न आने से बोर होंगे।

कलेक्टर भौंहें चढ़ाते हुए कमरे में दाखिल हुए। शायद वे अपना कलेक्टर का चेहरा कार में बैठते ही ओढ़ लेते होंगे। सब लोग खड़े हो गए। कलेक्टर साहब बैठ गए और गला फाड़ने लगे, अगस्त्य ने फाइल खोली करिने से उसके पन्ने सहेजे, और लगभग एक घंटे तक कुछ खत लिखे। उसने पहला खत अपने पिता को बड़े विस्तार से लिखा, उसमें अपने बोरियत की कोई बात नहीं लिखी। लगता है उसके पिता समझ ही जाएंगे, लेकिन वे उदास होंगे। उसकी जिंदगी महत्त्वपूर्ण थी परन्तु उसे बोर लगती थी, अगस्त्य को अपनी जिंदगी मार्कस ऑरेलियस और रीडर्स डाइजेस्ट का मिश्रण लगती थी और कभी वह उनसे परे हट कर सोचता था।

कई बार वह अपनी माँ के बारे में सोचता कि वे कैसी रही होंगी, ऐसा वह उत्सुक्त हो कर नहीं लेकिन उनकी कमी महसूस करते हुए सोचता था। कलकत्ता में उसकी मौसियों ने उसकी माँ की कमी जरूर पूरी की थी। तस्वीर में उसकी माँ बहुत ही सीधी, विरोध के बावजूद एक हिन्दू बंगाली से शादी करने को तैयार, और मैनिंजाइटिस से मरने को तैयार दिखाई देती थी।

उसने एक खत ध्रुबो को लिखा, जिसमें मदना के बारे में मनगढ़ंत बेकार बातें लिखी, कुछ मामूली बातें बढ़ा-चढ़ा कर लिखी। ध्रुबो को भी वह अपने मन की वास्त्विक स्थिति नहीं बताना चाहता था। शायद वह बहुत शर्मिंदा था या फिर असमंजस में था, या फिर कुछ ज्यादा ही गोपनीय था। लेकिन उसके शब्दों में उसके भाव प्रकट हो जाते थे उसकी मनःस्थिति पता चल जाती थी। उसने तीसरा खत कलकत्ता में नीरा को लिखा, और चौथा खत अपने पिता की तरह का, दिल्ली में पलटुकाकु को लिखा।

बैठक चलती थी। कलेक्टर साहब भी बोलते रहे, वे अपने अधीनस्थ लोगों को रेवेन्यू विभाग को सक्षम बनाने में सहयोग करने का आग्रह कर रहे थे। वे सब सिर हिला कर हामी भर रहे थे, नोट ले रहे थे, और अपना पसीना पोछ रहे थे। वे इस तरह की मीटिंगों के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। असल में यह उनके समय बिताने का अच्छा अवसर होता है। ऐसा लग रहा था कि नोट्स लेते वक़्त वे समय को परे सरका कर अपने सिर को

नीचे कर क्रोध दिखा रहे थे, और इस तरह वे कुछ समय के लिए कलेक्टर को नजरअंदाज कर रहे थे, और अपने दिमाग के खोखलेपन को दबा रहे थे – कुछ लोग अपने खत तक लिख रहे थे।

सवा बारह बज गए थे और कलेक्टर अभी तक दूसरे विषय पर नहीं पहुँचा था। अगस्त्य को फिर से श्रीवास्तव के तेवर पर भाषा-प्रवाह पर हैरानी हुई। इस तरह मैं अपना दिन बेकार नहीं कर सकता, विदेशी ज़ुबान में विदेशी विषयों को सुनते हुए अचानक उसने सोचा और फिर मुस्कुराया। जबकि वह ऐसा करने पर मजबूर था क्योंकि उसे इसके लिए भुगतान किया जा रहा था। 'बेकार' निश्चित रूप से गलत शब्द है। पीछे से अहमद, डिप्टी कलेक्टर ने कहा, ‘कलेक्टर साहब (रिक्रूट डाइरेक्टर) आपको देख रहे हैं।' उसने मुस्कुराना बंद कर दिया।

जल्दी ही वह यह जताते हुए जानबूझकर चला गया, जैसे कि उसे कहीं बहुत काम हो। फिर उसने चिदंबरम के आरामदेह छेद वाले फ़ोन से पुलिस अधीक्षक को फ़ोन किया। 'सर, मैं आपको औपचारिक रूप से ऑफिस में फोन करना चाह रहा था।'

'अरे, ये तो मेरा सौभाग्य है, भाई।'

'कब, सर? क्या मैं अब आ जाऊं?'

उसने एक कागज के टुकड़े पर लिखा, 'सर, मैं एसपी साहब से मिलना चाहता था, उन्होंने मुझे ठीक साढ़े बारह बजे बुलाया है। मैं वहाँ से निपट कर मीटिंग में आऊंगा।' उसने वह कागज चिदंबरम को दे दिया और कहा, 'यह थोड़ी देर में कलेक्टर साहब को दे देना।'

एसपी का ऑफिस जंगली भांग के पौधे को पार कर आता था। अगस्त्य ने भांग के कुछ पत्ते तोड़ कर अपनी जेब में डाल ली। सड़क पर वह गड्ढे और तरह-तरह के कूड़े को

नज़रअंदाज़ करता रहा। एक भैंस के पास से गुजर रहा था, तो उसने अपनी पूंछ पर लगा गोबर उसके हाथ पर दे मारा। अगस्त्य ने कहा, 'ओह हरामी।' उसने एक पेड़ से रगड़ कर हाथ का गोबर साफ़ किया और उसे सुंघा। वह हंसने लगा, ओह वह कितना पागल है, अपने हाथ पर गोबर लगवा लिया।

एसपी के ऑफिस में दरवाजे पर एक शंकालु सा सिपाही खड़ा था। अगस्त्य ने कहा, 'एसपी ने मुझे साढ़े बारह बजे मिलने को बुलाया था। वह सोच रहा था उसे अपना सिर मुंडवा लेना चाहिए था, और उस पर तेल लगी विग पहननी चाहिए थी। 'हां, सेन, आओ।' कुमार ने अपनी मोटी बाजू हिलाते हुए एक कुर्सी की तरफ इशारा किया।

कमरे में एक और आदमी था। विशाल और कोमल। मानो वह कभी उत्साह से वजन उठाया करता हो और एक दिन अचानक उसे अपने परिश्रम की मूर्खता का अहसास हुआ। एक लाल चेहरा, रक्त, शराब और खुश। उसकी गोद में, बीबीसी की टेलीविज़न सीरियल *यस, मिनिस्टर* पुस्तक की प्रति थी। 'सेन, मिस्टर गोविन्द साठे से मिलिए। अगस्त्य ने हाथ मिलाया।

‘आप आईएएस शिक्षार्थी हैं!’

'क्या आप मदना के जोकर हैं?' वे सभी हँसे, आपने यह कहाँ सुना?

पूरे कमरे में लकड़ी के पैनल लगे हुए थे। एक पूरी दीवार पर चीज़ें लिखी हुयी थी। मदना के अधीक्षकों, पिछले साल के डकैतों, चोरों, पुलिस स्टेशनों के नाम। 'साठे एक पीत पत्रकार है।' देखों, वह ऐसा ही दिखता है। साठे हँसा। वह अपने शरीर के साथ खुल कर हँसा। उसने कहा, मिस्टर सेन ने शायद छोटे शहर का अखबार नहीं देखा, मेरी हथेली से थोड़ा बड़ा होता है। ये दैनिक, दिन के समय आते हैं जब वे कुछ कांड और हिंसात्मक कहानी न पका लें, रविवार के साप्ताहिक में रिपोर्ट के साथ कुछ गॉसिप होते हैं।

कुमार ने कॉफी का ऑडर दिया। ये अखबार वाले ब्लैकमेल पर जीते हैं। आप अपने अधीनस्थ सभी अफसरों को देखिए। क्या मुहावरा है, घर का भेदी लंका ढाए है। यहाँ के गुंडे, जब दंगे नहीं हो रहे होते, बड़े अख़बारों के पास जाते हैं और कहते हैं, 'मुझे अपना रिपोर्टर बना लीजिये'। मेरा घर मदना में है। कोई तनख्वाह नहीं, केवल उसे क्या कहते हैं– अधिकारिक मान्यता है। ब्लैकमेल के ज़रिये वे काफी कमा लेते हैं।

हाँ निश्चित ही, कुछ इतने दबंग होते हैं की उच्च अधिकारी पर भी हमला कर देते हैं। हमारे कलेक्टर, साठे ने उदारता से हँसते हुए कहा।

सेन क्या तुम यह जानते हो, कुमार ने पूछा। उसका धड़ खुशी से धड़क रहा था, 'बीडीओ के बारे में दैनिक क्या कहता है?' ...आपको कोशिश करनी चाहिए और दैनिक का अनुसरण करना चाहिए। भाषा को पकड़ने का यह सबसे बढ़िया तरीका है। वह साठे की तफ मुड़ा। 'लेकिन कलेक्टर ने सरकार को मुकदमा चलाने के लिए लिखा है। एक बढ़िया कदम। कलेक्टर के पद के खिलाफ मानहानि का मामला होगा यह, तब सरकार को इस मामले का अभियोक्ता होना होगा – यानी यही कभी कोई इस मामले का जवाब देगा। यदि निजी तौर पर मुकदमा चलाएगा तो काफी मंहगा पड़ता।

‘और वह जरूर हार जाएगा, ज्यादा हँसी।’

‘आज के दैनिक में मंत्री के खिलाफ कुछ लिखा हुआ है।’

हाँ, मैंने उसे देखा। कुछ नया नहीं। लेकिन यह एक घिनौना समाचार पत्र है कुमार एक दम से ज़हर उगलने लगा ‘यह लिखता है कि पुलिस के सड़कों पर गश्त न करने के कारण राजमार्ग पर डकैतों में बढ़ोतरी हुई है। इसका मतलब क्या है, उन्होंने जो लिखा है उसके बारे में वे क्या जानते हैं? छोटे बदबूदार कार्यालयों में बैठ लोगों को ब्लैकमेल करने वाले? क्या कोई पुलिस हाइवेज पर गश्त लगाती है? हरामजादे, हमेशाहमारी जिम्मेदारी पर बात करते हैं अपनी बारे में क्या?

‘लेकिन ये डकैती और हत्याएं लगातार बढ़ रही हैं। आप जानते हैं, वह जो एक हफ्ते पहले होटल से लेन के नीचे हुई थी?’ साठे अगस्त्य की तरफ मुडा। ‘चार डकैतों ने माँ-बापऔर बच्चे, तीन लोगों को मार दिया। उन्होंने घर की एक घडी से बच्चे के चेहरे पर जोर से हमला किया। दिन के बारह बजे, हाँ, इस तरह के मामले जो आप सिर्फ अख़बारों में ही पढ़ सकते हैं, जो कहीं भी घट सकता है, किसी दूसरे शहर की किसी दूसरी कॉलोनी में।’

अगस्त्य थोड़ा बीमार महसूस कर रहा था। जैसे किसी ने उसके अंडकोषों को हलके से काट दिया हो। वे उसके पास भी आये हो, एक ने उसकी अंडकोष पर मारा हो उसके वे .. कैसेट रिकॉर्डर को ले जाने से पहले उसका चेहरा कुचल सकते थे। वह बिना संगीत के अपने कमरे के बारे में सोचने लगा।

दरवाज़े पर एक दस्तक। दूसरा कांस्टेबल, जिसके जूतों ने सल्यूट करते समय एक तेज़ आवाज़ की। उसमे हाथ में कुमार की फाइल थी। कुमार ने उसे एक या दो मिनट के लिए पढ़ा और फिर मेज़ पर अपनी कोहनी के साथ अपना हाथ और बांह की कलाई घुमायी, पूरी तह से समझने में असमर्थता का संकेत। कांस्टेबल कुछ बुदबुदाया। कुमार यह कहते हुए उठ गया, एक पल के लिए माफ़ करें, शर्ट को अपने पेट पर से सीधा किया और बाहर चला गया।

'वह कुछ संदिग्ध सौदे या रिश्वत के लिए बाहर गया है', साठे के कहा।

‘आप किस अखबार के लिए काम करते हो।’

साठे हँसा। मैं एक पीत पत्रकार बिलकुल भी नहीं हूँ। शायद ही मेरे तरह के इंसान से शायद ही पहले आप कभी मिले हो, इनकी छोटी अपमानजनक नस्ल है। मैं एक

कार्टूनिस्ट हूँ। साठे की बड़ी बल्कि उदास आँखे थी। मैं चार मराठी दैनिकों के लिए सुस्त चुटकुले लिखता हूँ, सभी बॉम्बे और पूना से प्रकाशित होते हैं, आपके यहाँ पूना से।

'तब आप मदना में क्या कर रहे हैं?'

'क्यों, मैं इस जगह को पसंद करता हूँ,' साठे हँसा और उसने अपना कप नीचे रखना पड़ा क्योंकि वह अपने आपको रोक नहीं पा रहा था। इस तरह के प्रश्न से आप खुद को व्यक्त करते हैं, मिस्टर सेन, आपका भूतकाल, आपकी घबराहट और आपकी उदासी।

क्या आप मुझे मदना में देखकर आश्चर्यचकित नहीं हैं, मैं लेवाइस पहनता हूँ और *यस मिनिस्टर* पढ़ता हूँ। उसने किताब को छुआ। यह देखने के लिए कि क्या मैं कुछ चुटकुले चुरा सकता हूँ, लेकिन इनके नौकरशाह और राजनेता बड़े सभ्य और सुस्त हैं।'

'नहीं, ऊंह... मैं इस जगह के लिए नया हूँ, बस इतना ही।'

'क्या आप दुनिया भर के लिए व्यस्त हैं, यदि नहीं, तो आप मेरे साथ दोपहर का भोजन क्यों नहीं करते?'

'उसने रेवेन्यू मीटिंग के बारे में सोचा। 'जरूर, शुक्रिया।'

साठे ने अपनी कॉफ़ी खत्म कर ली, यहाँ एक फारेस्ट सर्विस ऑफिसर है जो आपको जानता है। कहता है वह और आप कॉलेज के दिनों में हॉस्टल में एक ही मंजिल पर थे, महेन्दर भाटिया।'

'ओह, हां, बील्कुल।' भाटिया से अगस्त्य की बस इतनी जानथी पहचान-, कि कभी-कभी कॉलेज में वे सीढ़ियों में एकथे जाते दिख को दूसरे-, कभी कॉलेज के डाइनिंग - हाल में मिल जाते थे। लेकिन मदना में वे इतने जोश से मिलते, जैसे उनकी बहुत

घनिष्ठता रही हो। किसी अनजानी जगह पर जानसे वाले पहचान- मिलना किसी अजनबी से मिलने की बनिस्बत ज्यादा असहज कर देता है। एक जानना वाला पहचान- तो दोस्त होता है ना ही अजनबी, उसके साथ तो समझौता भर करना होता है। वह अजनबी था, लेकिन फिर भी, परिचित था, जैसे कि किसी जगह पर कोई अपना सा दिख जाए; उसके दिखते ही इंसान यादों में खो जाता है, लेकिन इस यादाश्त से कोई राहत नहीं मिलती।

'उसने मुझे तुम्हारे बारे में बताया था। खैरवाकिफ़ से कमजोरियों की शहरों छोटे तुम्हें , चाहिए। रहनायहाँ पर कोई ऐसा काम मत करना जो तुम अपनी माँ के सामने नहीं कर सकते।'

एसपी एक बेतुकी-सी माफी के साथ वापस आ गया। मुझे जाना पड़ेगा यार! ज़रूरी काम आ गया है। तुम आज रात आठ बजे मेरे साथ डिनर क्यों नहीं ले लेते!'

अगस्त्य ने सोचा, अच्छा है। वसंत के खाने से छुटकारा मिलेगा। साठे ने पूछा, 'क्या जरूरत से ज्यादा जरूरी है कुमार साहब?'

'यह सब नादान मसखरों के सामने नहीं बताना', कहकर कुमार ने अगस्त्य के कंधों को पकड़ा। 'साठे एक देर रात तुम्हें कुछ सिपाही मिलने आयेंगे।' फिर वह हँसा और चल दिया।

कुमार के पास लाल रंग की मारुती कार थी। अगस्त्य ने एक जुमला बोला, 'कार्टून व्यावसाय के लोग काफ़ी पैसा बना लेते हैं।'

साठे हँसा, नहीं, 'वास्तव में या मेरी कार नहीं है।' परिवार में से किसी की कार है यह और दुबारा हँसा'। कार लो गियर में पुलिस स्टेशन से दूर जाकर छिप गयी। इन सदियों में से एक में वे इस सड़क में सुधार करने जा रहे हैं। यहाँ पर कई सारे दफ्तर हैं और सिर्फ दो संपर्क सड़कें हैं। अब बे यहाँ टीवी ट्रांसमीटर बनाने जा रहे हैं हाँ ... वह कह रहें है मदना में टीवी आ रहा है तीन महीनों के भीतर... उनका मतलब है कल और जब डार्थ

वाडर ने जीसस से मुलाकात की। टीवी एक चुनावी स्टंट है। हां. ओह-इतनी दयनीय ग्रामीण जनसंख्या को खुश करने और दिन में चार घंटे के लिए अपने चेहरों के सामने उसके चेहरे रखने कि लिए। इलेक्शन, लेकिन उससे पहले यहाँ मदना में उप चुनाव होंगे, आपको उनमे से बहुत कुछ देखना होगा। आप नहीं देखेंगे? यह ट्रेनिंग का ही हिस्सा है। चुनावों के समय तुम्हे खुद अपने रेवेन्यू गैंग का अध्ययन करना होगा। कैसे वे खुद कश लगाते हैं। असंभव, अगस्त्य ने सोचा, कि साठे सब कुछ सहज रूप से बोलता है। उसे ऐसा लगता था कि वह अपरंपरागत होने के लिए उपकृत था।

कार धीर-धीरे ट्रेन की पटरियों के बगल से पैदल चलने वालों और रिक्शे के जाल में खुद को उलझाते हुए चली गयी। एक ट्रक उसकी गति की गर्जन को धता बताते हुए संघर्ष करता रहा। साठे ब्रिज के ऊपर रुक गया। एक भिखारी रेलिंग की ओर झुकते हुए पैर की ऊँगली को देख रहा था। उसकी केश-विन्यास कुछ-कुछ पश्चिमी रॉक सुपरस्टार जैसा था। साठे ने कहा, मुझे यहाँ से दृश्य देखना पसंद है, 'जबकि अगस्त्य ने सोचा कि वे रुक क्यों गया।'

पांच हज़ार गज़ की दूर, उदास रेलवे स्टेशन था और उसके गज़ भर दूरी पर कोयले के पहाड़ियां थी। बाएं तरफ दफ्तरों की पुरानी और भद्दी इमारतें थी जिनके नाटकीय इतिहास ने सभी दशकों को नजरअंदाज कर दिया। तिरंगे हृदय में घायल पड़े हुए थे। तालाब, भैंसे अपने धब्बों वाले बच्चों को साथ पिछले पाँव पर उछल कूद कर रही थी। लोग जो सरकार के दयालू होने का इंतज़ार कर रहे थे सफ़ेद धोती, कुरते और नैपकिन के साथ थे। स्टेशन यार्ड की तरफ शहर, अठारहवीं सदी के उस आदिवासी राजा के किले के सभी खंडहरों के साथ रेंग रहा था जिसने मदना को उसका नाम दिया था। ऐसा लगता है कि मुगलों और सन् 1857 और वंदे मातरम और मध्य-शताब्दी की भारतीय सभ्यता की उत्पीड़न के प्रति अभ्यस्त रहे इतिहास और समाचार बनाने वाले सभी लोगों ने इसे छोड़ दिया था। जंगल की इंचभर- की दूरी पर संकुचित नदी के बगल में, अतिआधुनिक नया थर्मल पावर स्टेशन, आसमान को डरा रहा है। जबकि लोग बड़ी शिद्दत से बरसात का इन्तजार कर रहे हैं जो जिले भर में बाढ़ का

प्रकोप लाएगी और वे इसके आदि हो चुके हैं, उनकी जिंदगी इसी चक्र के इर्द घूमती गिर्द- कहा ने साठे है।, 'वे सभी लोग जो कभी देश देखना चाहते थे, और बॉम्बे के होटलों के आसपास बैठे, छुट्टियों के बेकार होने के बारे में हवा खा रहे थे और वे सब जिनकी दृष्टि अभी तक कलकत्ता की धुंध से घिरी हुई है', और यह कह कर साठे चुप हो गया।

साठे शहर के नज़दीक वाले हिस्से में रहता था। सड़कें वहाँ पर भी भयंकर थी लेकिन वहाँ पर भीड़ कम थी। वहाँ पर नए शहरनुमा मदना से अलग तरह के घर बने थे। उसने कहा, 'वे मदना को मेट्रोपोली शहर बनाना चाहते हैं। मुर्ख लोग, समझते हैं कि मेट्रोपोली बहुत अच्छी चीज है।' कुछ लोगों ने अपने घरों के चारों तरफ़ हरियाली की हुई थी, लेकिन आवारा पशु उनको उजाड़ देते थे। साठे एक गुलाबी घर के सामने धीरे हुआ। उसने बताया, 'यह वही घर है जिन्होंने बच्चे को मारा था।' अंत में वह एक घर के सामने रुका जिस पर, 'इंटरनेशनल हॉउस', लिखा था। उसने कहा, 'कितना बेतुका नाम है, है ना? इस नर्क में ही हम रहते हैं।'

'मेरे पिताजी यहीं मदना में लकड़ी के ठेकेदार थे। तुम शायद नहीं जानते, इसका मतलब क्या है?' वे लकड़ियों और दूसरे जंगलात के उत्पादों को बेचने का इंतजाम करते थे। वास्तव में यह एक आत्मा को मारने का काम है, लेकिन इसमें पैसा खूब बनता है। इसी पैसे से मेरे पिताजी ने मुझे बम्बई में पढ़ाया, और मेरे भाई को होटल मैनेजमेंट का कोर्स करने के लिए जिनेवा भेजा। मेरा भाई होटल चलाता है। वह होटल भी उसी पैसे से बनाया था जो मेरे पिताजी ने कमाया था।... चलो अंदर चलें, उनका ड्राइंग रूम - बहुत भद्दा था वह उनके टेस्ट से भी बदतर था ...हां मैं घर के इस हिस्से में रहता हूँ। ... मेरी शादी अभी नहीं हुई। ...मैं सहवास करने के लिए बहुत बड़ा हो गया हूँ। मेरे भाई में मेरे पिता की तरह पैसा कमाने की अक्ल है। उसने मदना में काफी पहले विकास होता दिखा था और सोचा कि यहां पर होटल चल सकता है, होटल में इन फैक्ट्रियों और मीलों में आने वाले लोग ज़रूर ठहरेंगे.. मुझे तो पैसा चाहिए ही नहीं। अब तुम समझ सकते हो कि मैं कार्टूनिस्ट क्यों हूँ?'

उसका कमरा बहुत बड़ा और अव्यवस्थित था। फर्श पर भी किताबें और फाइलें पड़ी थी, खिड़की के पास एक सांचा, बैड पर पैंसिलें और पेंटब्रश पड़े थे। आप व्हिस्की क्यों नहीं लेते, साठे ने एयरकंडिशन चला दिया।

अगस्त्य ने पूछा, 'क्या आप वास्तव में बहुत कुछ पढ़ते हैं या सिर्फ किताबों से घिरे रहने पर काम करना अच्छा लगता है।' साठे दरवाजे पर रुका और गायब हो गया। ढांचे पर एक अधूरा स्केच था ईजल पर एक अधूरा स्केच था। साठे पूरी तरह आकर्षित हुआ . खिड़की हालाँकि था। मौजूद में बगल की खिड़की साथ के टाइपराइटर आदमी एक उसमे था। में कोशिश की लगाने अनुमान का पंचलाइन अगस्त्य थी। स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी

साठे वर्दी पहने वेटर के साथ आया। साठे ने उनके ड्रिंक उड़ेले। 'मैं यहाँ पर काफी पीता हूँ' अगस्त्य ने कहा। कल मेरा पहला दिन था। मैं डिप्टी इंजीनियर शंकर के साथ पी रहा था जो शायद आपको जानता है।

‘लक्ष्मण शंकर,’ साठे ने अपने बिस्तर से कुछ चीज़े दूर की और एक आह लेते हुए बहुत सारे गद्दियों को लेकर बैठ गया। एक घंटे तक बहुत सारी मस्ती हुयी। वैसे वह बहुत अच्छा जाता था।

उसने हमारे लिए थोड़ी सी ठुमरी गयी, जो शानदार थी, मैंने सोचा।

पश्चिम के रॉक संगीत से अलग तुम्हारी रूचि संगीत में है?

मैं हैरान था, मैं सोचता था तुम कोला जनरेशन का हिस्सा होंगे।'

मेरे पिता कहते हैं यह वह पीढ़ी है जो अपने बालों में तेल नहीं लगाती।

यह वाक्य अच्छा है, पेन्सिल और कागज को खोलने के लिए वाक़ई कोशिश की। मैं इसे चुरा लेता हूँ। मैंने कोला पीढ़ी कम-से-कम दस बार इस्तेमाल किया किया है। उसने अगस्त्य की ओर उदासीन आखों से देखा। मैं ऐसा हमेशा दूसरे लोगों के विचार चुराता हूँ।

नहीं, यह काम नहीं करता, यह बहुत महत्वकांक्षी है। बढ़िया कार्टून जो सिर्फ संकीर्णता और बेतुकापन प्रस्तुत करता है। बहुत दुर्लभता से अधिक कठिन। साठे बिस्तर से उठा और चित्रफलक के सामने जा पहुँचा। अगस्त्य अपनी कुर्सी से उठना नहीं चाहता था। लेकिन उसके साथ शामिल होना चाहता था। कई साल विदेश में बिताने के बाद, मैं एक भारतीय लेखक को भारत के बारे में लिखने की सलाह देना चाहता हूँ। उनमे से वे सौ हैं, सौ नहीं तो कम से कम पच्चीस होंगे। मुझे ये लोग बेतुके लगते हैं। एक मिश्रित संस्कृति में भरे हुए और दूसरे के बारे में लिखना, वे किस तरह के दर्शकों का लक्ष्य रख रहे हैं। यही कारण है कि उनका भारत वास्तविक नहीं है, एक काल्पनिक जगह या एक उलझी हुयी आध्यात्मिकता। गुंडों का एक महाद्वीप। ये सभी इंडियन कार्टिकचर हैं। ऐसा क्यों है। क्योंकि वास्तव में उनके पास कोई सार्वभौमिक कहानियाँ नहीं हैं, क्योंकि हर भाषा की अपनी संस्कृति है। साठे कबाब मुँह में रखने के लिए मेज़ तक गया।

'एक कार्टून के लिए यह बहुत महत्वकांक्षी है।'

साठे हँसा, और खिड़की के बाहर खिड़की के पैनल से मसालेदार कबाब छिटक दिया। जिसने उसे और भी हँसाया। अभी भी गड़गड़ाते हुए, वह टॉवल और एक मग पानी के लिए बाथरूम गया। मैं अराजकता में रहता हूँ। अगर मैं तुम्हारी अनुपस्थिति में उस तरह कबाब थूकता तो मैं उसे बिल्कुल साफ नहीं करता। मैं देखता कि धब्बे दिनों-दिन रंग और आकार बदल रहे हैं और परिवर्तनशीलता के बारे में सोचता। खिड़की के पैनल पर से बिना सोचे समझे पानी छिड़कते हुए वह जारी रहा और यह एक महाद्वीप है, बहुत अलग तरह का। महान साहित्य में अपनी क्षेत्रीय विशेषता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, जिसकी असली महानता अंततः किसी भी गैर तमिलियाई के

लिए अस्पष्ट नहीं होगी। क्या आपने मदना में यह विषमता महसूस नहीं की। मैं मानता हूँ कि आपको कम से कम तीन भाषा जाननी चाहिए, अंग्रेजी, हिंदी और बंगाली। फिर भी आपको लगेगा कि संवाद करना इतना मुश्किल है। और तीन भाषाओं में आप यूरोप के मालिक हो सकते हैं.

दोपहर के भोजन तक वे काफी नशे में थे, जो भव्य और धीमा था, और बातचीत अव्यवस्थित हो गयी था। अगस्त्य ने खाने के दौरान योजना बनाई कि वह कितनी अधिक बार साठे के साथ खा सकता है। क्या, मैं बहुत नशे में दिखता हूँ ?.

‘हाँ बहुत। क्यों? साठे की आंखें उन्मुक्त अब भावुक दिख रही थी।’

मुझे वापिस जाना चाहिए और कलेक्टर की रेवेन्यू मीटिंग की बाकी बची हुयी मीटिंग में भाग लेना चाहिए।

उन्होंने लाचारी से हंसना चाहा। अगस्त्य का काटा फर्श पर गिर गया। उसने अस्पष्टता से महसूस किया कि उसे आधिकारिक रूप से मदना में कम-से-कम तीन ज़िन्दगी का नेतृत्व करना था। सरकारी समाज के साथ चलते हुए, अनौपचारिक जिसमें शंकर और साठे के साथ शराब पीना और बाद में भटिया के साथ और अपने कमरे के ब्रह्मांड के रहस्य में, जिसमें चंद्रमा के साथ इधरभी हिलना उधर- शामिल था। हरेक दुनिया खुद को शिक्षित साबित करती थी और मदना से परे की दुनिया लगातार पत्रों और रेडियो के माध्यम और न दबाई जाने वाली स्मृतियाँ उसे से उसे परेशान करती थी। एक से दूसरे में परिवर्तन मुश्किल नहीं था, लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि उसने ऐसा किया था। लेकिन यह उल्लंघन तेज़ी से महीनों और उसके बाद की मीटिंग में कम होने लगा। और उसने अपने जीवन को विलय करने की इजाजत देने के बारे में कल्पना करना शुरू कर दिया। श्रीवास्तव पर दुष्ट निगाह डालते हुए वह उसके साथ रेवेन्यू मीटिंग में खलल डालना चाहता था। ‘यदि तुम मुझे इज़ाज़त दें तो मैं एक निजी मामले को दबाना चाहता हूँ,’ अगर आप सभी मुझे रात के खाने के लिए घर आमंत्रित

करें, क्योंकि रेस्ट हाउस में कुमार के एक अच्छा पुलिसकर्मी होने की कठिनाइयों की सुनवाई करने को उत्सुक हूँ ऐसा करते हुए मैं वसंत का लैडा खाना चाहता हूँ। वह पूछना चाहेगा कि क्या उसका वीर्य भी एक कोमल नलके कमजोर बूँद सा बाहर आया था। तब उसकी कल्पनाओं में उसे चुपचाप हँसाया।

साठे ने कहा, 'मुझे लगता है इस गर्मी में मीटिंग में भाग लेने का यह एक बहुत ख़राब आइडिया है।'

वे फिर से हंसते हुए कांपने लगे। अगस्त्य ने अपना चेहरा धोकर शांत दिखने की कोशिश की।

साठे ने उसे कलेक्टरेट तक छोड़ दिया। धन्यवाद, यह एक शानदार दोपहर थी।

तुम अभी भी नशे में दिख रहे हो।

कलेक्टर अभी भी चीख रहा था। उसका गाला अभी भी सूख रहा था और वह खूब सारा पानी पी रहा था। अधितकर सिर अभी भी नीचे थे और नींद में लहराते हुए दिख रहे थे। सभी अधिक तप्त और थके हुए लग रहे थे। पाँच मिनट में अगस्त्य दोपहर पर विश्वास नहीं कर सकता था, साठे चित्रफलक पर, उसका महत्वकांक्षी स्केच और मटन कबाब। मीटिंग उसके कान के पास से बह कर गुज़रती रही। उसे इसे प्रभावित करना ही चाहिए कि यदि उसे अपनी नौकरी में जाना हो तो। उसे भाषा सीखना निर्धारित करना चाहिए। लेकिन इन महीनों के दौरान कि यह स्थिति कुछ अस्थायी है कि उसे बस कुछ ही महीने रहना है, लेकिन साल से भी कम समय में वह दरअसल कही असिस्टेंट कलेक्टर के तौर पर नियुक्त हो जायेगा और मेनन और श्रीवास्तव की तरह बर्ताव कर रहा होगा– लेकिन ऐसा करना बहुत दूर लग रहा था।

लेकिन शायद उसे नहीं मालूम कि एक वर्ष के अंदर उसे कहीं पर असिस्टेंट कलेक्टर लगा दिया जाएगा और वह भी मेनन और श्रीवास्तव की तरह ही व्यवहार करेगा– यह बात अब बहुत दूर लग रही है।

वह कई बार यह जताता है कि वह अपने काम में बहुत कम ध्यान दे रहा है। वह अपनी लाल आंखें छिपाने के लिए फ़ाइल खोल कर नौकरशाह बनकर दीखाता है। वह सोचता है इस नौकरी में उसे अनगिनत मीटिंग्स अटेंड करनी होंगी इसलिए उसने एक साफ़ सरकारी कागज़ पर (मोटे और पीले कागज़ पर बीच की नीली लाइन के बाईं तरफ) उसने भविष्य के लिए बहुत से बहाने लिख छोड़े हैं। और वह बीमारी के बहानों को छोड़ कर दूसरे बहानों से असंतुष्ट था और नए बहाने सोच रहा था। लेकिन उसकी बीमारी के बहाने ज्यादा देर तक नहीं चल सकेंगे। उसे श्रीवास्तव को इस बात से अवगत कराना होगा कि उसका मेटाबॉलिज्म कमजोर है, और रेवेन्यू मीटिंग से उसके दिमाग की नसें तन जाती हैं। फिर श्रीवास्तव मुझे अपने आप पर हंसते देख कर फिर से पकड़ेगा।

अचानक से ऐसी बैचेनी छा गई जैसे स्कूल के बच्चों की क्लास में घंटी बजने से पहले होती है। कलेक्टर अपने समापन का भाषण दे रहा था। फिर बाहर सब लोग, अपने बदन को तान कर थकावट दूर करने की कोशिश कर रहे थे, कुछ ग्रुप बनाकर बातें कर रहे थे, और फिर अपनी-अपनी जीपों की तरफ लपक रहे थे। मेनन और अगस्त्य कलेक्टर साहब के पीछे- पीछे उनके कमरे की तरफ चल दिए। श्रीवास्तव अपना चाय का पन्द्रहवा कप पीने लगा। श्रीवास्तव कह रहा था,' उफ! ये लोग भी, दिन भर इन पर चिल्लाता रहा फिर भी पूरा काम नहीं करवा पाया, यदि ना चिल्लाता तो वे इतना काम भी ना करते।' वे बहुत थके हुए लग रहे थे. उन्होंने कहा, 'मेनन तुम शाम को अगस्त्य को मेरे घर डिनर पर ले आना।'

रमेरी का रास्ता सात घंटे का था, इसलिए मेनन को रात में (ऑफिशियल स्टे पर) सर्किट हॉउस में ठहरना था। उसने अगस्त्य को उसके कमरे पर छोड़ दिया

और सर्किट हॉउस की तरफ इशारा करते हुए कहा, 'तुम घंटे भर में फ्रैश होकर मेरे कमरे में क्यों नहीं आ जाते?'

अगस्त्य मदना में अपनी व्यस्त सामजिक जिंदगी से चकित था, कभी साठे तो कभी श्रीवास्तव के साथ, और वह बोर बिलकुल नहीं हुआ। हालांकि मेनन और श्रीवास्तव की तुलना घातक थी। बाद में जब वह मदना में महीनों रहने के बाद देखने लगा तो पाया कि कोई ज्यादा मीटिंगें नहीं हुई थी वे सभी एक-दूसरे में मर्ज करते हुए कम कर दी गई थी, वह लोगों के चेहरे, उनके मुँह बनाना, तरह-तरह की आवाजें, अलग-अलग विचार, फिर सबका एकमत होना याद कर रहा था।

उसने अपना चेहरा धोया। पानी के छबके लगने से उसकी आँखे लाल हो गई। मीटिंग में लोगों की तरफ देख कर वह सोच रहा था कहीं उनके दिमाग की नसें तो नहीं फट जाएंगी और कहीं किसी मिथक की तरह (फिर वह अपने पिता को खत लिखेगा कि देखो आप कह रहे थे यह नौकरी बहुत परिपूर्ण है इसमें तो ये-ये खतरे हैं) उनकी आंखों से ख़ून के आंसू तो नहीं आ जाएंगे।

मेनन वास्तव में फ़्रेश हो गया था। लग रहा था उसने फिर से शेव की थी। लेकिन साथ में यह भी लग रहा था कि उसने अपने वीर्य स्खलन का अंडरवियर नहीं बदला था। मेनन ने कहा, 'आह अगस्त्य, मैंने अभी-अभी चाय के लिए कहा है।' अगस्त्य ने सोचा, यदि वह इसी तरह व्हिस्की के बाद चाय पीता रहा तो वह इसका आदि हो जाएगा।

मेनन का कमरा भी घर की तरह सुसज्जित किया हुआ था। उसने पूछा,' रेस्ट हाउसों के लिए फर्नीचर कौन चुनता है?' इंजीनियर्स?'

'या फिर उनकी पत्नियाँ? या फिर वे इससे बहुत सा पैसा बनाते होंगे।'

अगस्त्य झुंझलाते हुए कह रहा था, 'लेकिन उनका टेस्ट।' मेनन के कमरे के पर्दों पर हरे आंगन में छोटे-छोटे लाल हवाई जहाज छपे थे।

मेनन ने कहा, ओह मुझे नहीं पता था तुम इतने आलोचनावादी हो।

अगस्त्य सोच रहा था कि वह उसे बहुत से थप्पड़ मारे उसके बाल नोच ले, और उसके सिर को गर्दन से अलग कर दे। उसकी हिम्मत कैसे हुई कि वह मुझ से इस तरह बात करे क्या इसलिए कि यह मदना है और वह कैम्ब्रिज में पढ़ा है।

वसंत चाय लेकर अंदर आया। मेनन ने पूछा, 'तो फिर तुम केम्ब्रिज के माल हो, जैसा कि वे लोग कहते हैं। तुम्हें वहाँ कैसा लगा?'

अगस्त्य ने उत्सुक होकर कहा, 'बहुत अच्छा लगा।'

'बाहर से पढ़ कर प्रशासनिक सेवा में आना बहुत अच्छा लगता है', मेनन ने कप में तीन चम्मच चीनी डालते हुए कहा। भारत में यह बहुत बढ़िया नौकरी है यह तुम कुछ समय बाद ही जानोगे और बाहर से पढ़ कर आने से इसमें फायदा मिलता है।'

अगस्त्य ने कहा, 'ओह हां, फर्नीचर के बारे में भी बहुत जानकारी मिलती है।'

मेनन ने उसकी तरफ अनमने मन से देखा और सोचा इसे जो कुछ भी कहने दो और असल में उसने अगस्त्य की बात को अनसुना कर दिया।

अगस्त्य धीरे से हँसा और सोचने लगा यदि वह मेनन के बारे में पहले से किसी से कुछ जान पाता तो वह इससे मिलने को उत्सुक जरूर होता।

बीस एकड़ घेरे में मदना के कलेक्टर और ज़िला मजिस्ट्रेट के लिए सन् 1882 में घर बनाए गए थे। सन् 1947 के बाद कभी-कभी कुछ उदार कलेक्टरों ने कुछ एकड़ इधर-उधर दान कर दी थी– पुर्नवास विभाग का ज़िला कार्यालय, सरकारी नौकरों के लिए एक आवासीय कॉलोनी, एक कॉपरेटिव बैंक के लिए। बाईस कमरों का मकान; अधिकतम कलेक्टर लगभग सात इस्तेमाल करते थे। बाक़ी सुनसान पड़े थे और एक के बाद एक आनेवाले परिवारों द्वारा हटाया हुआ सरकारी फ़र्नीचर उनमें जमा पड़ा था। सबसे छोटा कमरा (यह कार्यालय, किन्हीं कारणों से इसे कैम्प कार्यालय कहते हैं) दिल्ली में सरकारी फ़्लैट के आकार का था, जो श्रीवास्तव को मिलता, अगर वह वहाँ नियुक्त होता।

प्रांगण में और घर की पत्थर की दीवार पर पेड़-पौधे सदियों से बढ़ चुके थे। पुराने बरगद और पीपल की नृशंस शाखाएँ, तेज़ी से बढ़ते अधिक स्थान की लालायित थीं। अमरूद और आम का बगीचा, दो चंदन के पेड़ भी थे – राष्ट्रीय ख़ज़ाने के रूप में (जिस तथ्य के बारे में कलेक्टर को सरकार को सूचित करना था)। कुछ परिवार खेती भी करने की कोशिश करते थे; मगर, निस्संदेह, किसी का भी पसीना कभी ज़मीन पर नहीं गिरा था। धान और आलू गोभी की पौध उगाने के लिए नगर पालिका द्वारा वेतन रोल पर माली घर बुलाए गए थे। कुछ कलेक्टर जो कार्यालय की गरिमा मंडन में विश्वास नहीं रखते थे, वह भी चावलों की बिक्री में अच्छे पैसे बना लेते थे (उन्होंने स्पष्ट किया कि विकासशील देश में हमें कभी अन्न बरबाद नहीं करना चाहिए।)

एक महत्वाकांक्षी कलेक्टर द्वारा घर के आस-पास पहले पचास मीटर की दूरी पर एक लॉन के लिए सीमाँकन कर दिया गया था, जिसे बागवानी की कठिनाइयों का कोई पता तक नहीं था। आमतौर पर मई में पहले दस मीटर भी लॉन पर्याप्त रूप से हरा भरा दिखता था। मगर बाद वाला लॉन चालीस मीटर उजड़ा हुआ था, जैसे वह लॉन जंगल के मध्य था। वह भी उजाड़- जैसा दिखता था। उसके निवासियों और उसकी सरकार के प्रयासों के नीचे वास्तव में मदना एक अस्तव्यस्त अनुस्मारक था।

कलेक्टर मैडम अपने बच्चों के साथ शाम को बगीचे में टहलना पंसद करती थी। सूर्यास्त के बाद मौसम लगभग सुहावना हो जाता था, जहाँ वह अंधेरे के बाद मकान के अलावा कहीं जाने से ज़रा डरती थी। वहाँ परिसर में दो लोमड़ियाँ थीं (तो उसने कसम खा ली), मगर अजनबी स्थान पर उनके साथ को प्राथमिकता दी। घर में भूत है, उसके लिए भी उसने क़सम खाई कि उसने अजीब- सी आवाज़ें सुनी थीं। आंशिक रूप से कोई भी उससे कभी असहमत नहीं था क्योंकि आंशिक रूप से घर माँस, हत्या और भुतहा दीखने के लिए काफी विशाल था, यहाँ का जीवन अवर्णनीय रूप से नीरस था, एक भूत मतलब थोड़ा-सा रोमाँस।

श्रीवास्तव के बच्चों को मकान काफी पसंद आया और अन्य कमरों के लिए वे रुक-रुक कर उत्सुक हो रहे थे। श्रीमती श्रीवास्तव को मकान दिन में अच्छा लगता था क्योंकि वह ठंडा रहता था। श्रीवास्तव स्वयं उसकी सुंदरता पर मुग्ध था, पानी की आपूर्ति के लिए भी उसे इसकी प्रणाली पसंद थी। वह एक व्यावहारिक आदमी था। कुमार, पुलिस अधीक्षक को भी यह मकान बहुत पसंद था, क्योंकि वह चरबी के अन्दर छुपा हुआ रोमाँटिक था। मगर खुलकर उसने कभी भी प्रशंसा नहीं की थी, क्योंकि उसे डर था उसकी बात को मैजिस्ट्रेट समूह उनसे पुलिस की ईर्ष्या न समझ लें। अगस्त्य को यह पसंद था, क्योंकि यह भव्य था। मेनन ने इसकी प्रशंसा कि थी क्योंकि यह सम्मान का सही प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें एक कलेक्टर सम्मानित किया जाना चाहिए जब वह उस शाम पहुँचे। वैसे गोधूलि आकाश में बड़े-बड़े चमगादड़ आकृति बना रहे थे।

श्रीमती श्रीवास्तव मोटी थी, स्नेहशील और आश्चर्यजनक ढंग से सैक्सी थी। पूरी शाम अगस्त्य उसकी जाँघ देखने में लगा रहा। उसने सोचा, श्रीमती श्रीवास्तव ने अपनी शादी अच्छी तरह से काटी थी। इनकी शादी के लगभग सात साल हो गए होंगे। आज़मगढ़ में एक आईएएस अधिकारी लगभग कृष्ण के रूप में पूजनीय होगा, इसलिए श्रीवास्तव ने सौदे में पक्का लगभग पाँच लाख बनाए होंगे। लेकिन वह उसे रवि बुलाती है, और ड्रांइग रूम में तस्वीरों में से दो में उसके चारों ओर उसके हाथ था, इसलिए उनकी शादी आधुनिकता से भरी थी, जिसमें पत्नी पति को नाम से बुला सकती है, हालाँकि जब वे

छुट्टियों में अपने ससुराल में होते तो शायद ऐसा नहीं करते। महीने भर चली सामान्य वार्तालापों में, उस पहली शाम में ही, उनकी शादी से जुड़े उसके सन्देह सही साबित हो गए थे, सिवाए इसके कि उनकी दहेज पाँच लाख नहीं सात लाख था।

श्रीवास्तव भयानक रूप में बदल गया, पूरा नशेड़ी। वह कुर्ते, पैजामे के साथ दीवान पर अपने दो बच्चों को गुदगुदी कर रहा था। बच्चे सिकुड़ रहे थे। वे भी उल्लास में पागल लग रहे थे – उत्साह के बिना जब वे चिल्ला रहे थे (अगस्त्य ने सोचा यह वंशगत प्रवृत्ति होगी) झगड़ रहे थे। महीने-दर-महीने यह लड़ाई चली और बिना किसी कारण के चिल्ल-पों जारी रही। अगस्त्य छह साल की बेटी की पैंटी (अपेक्षाकृत सुंदर) को देख सकता था मगर माँ की जाँघों को दूर से शर्माते हुए देखता रहा।

'तुम दोनों बैठ जाओ मालती, यह सेन है नए आईएएस।' और श्रीवास्तव अपने बच्चों के साथ चिल्ल-पों ककने कि लिए लौट गया। अगस्त्य की एक बेबुनियाद धारणा थी कि वह प्रभाव डालने की कोशिश कर रहा था– देखो, दिन में मैं मदना का कलेक्टर हूँ, मगर रात में घरेलू आदमी। ज़ाहिर है, मेनन घर के लिए परिचित था, लेकिन पूरी शाम से कूद-फाँद रहा था, जैसे भूत उसकी चूतड़ में घुस गया हो क्योंकि वह उनकों खुश करना चाहता है, मगर पता नहीं कैसे।

'हाँ, मैंने तुम्हारे बारे में सुना है। मगर मैं तुम्हें सेन नहीं बुला सकती, यह सिर्फ मेरे पति के लिए है।' यहाँ उसने श्रीवास्तव पर एक आधी मुस्कान भरी। अगस्त्य पहले दिन के जोशी के कमरे को याद कर रहा था। अहमद की आवाज़ 'श्रीमती' बोलते हुए नीचे जाते हुए रुक गई; यह वैवाहिक स्वीकृति लगभग शर्मिंदगी का कारण था। 'तुम्हारा पूरा नाम क्या है?' श्रीमती श्रीवास्तव ने पीले ब्लाउज़ के नीचे काली ब्रा पहनी थी। अगस्त्य ने मेनन पर उपहास किया (उसे थोड़ा चौंकाया), भले ही उसे ब्रह्माण्ड में हास्यप्रद पहनावों की समझ होगी, मगर मदना में ठीक ही है, ना?

'अगस्त्य,' आधी तैयारी के साथ अगले सवाल के उत्तर के लिए तैयार था। यह संस्कृत है, उसके के लिए जो अपने मूतने से पहले फ़्लश शुरू कर देता और पानी खत्म होने से पहले मूतना बंद करने की कोशिश करता है।

'यह और भी बदतर है। अधिकांश बंगाली के इस तरह के जटिल नाम होते हैं।' श्रीमती श्रीवास्तव की मुस्कुराहट अच्छी थी। 'मुझे यकीन है तुम्हारे माता-पिता या दोस्त यह नहीं बोलते होंगे। वह क्या बोलते है? 'ओगु' और 'अगस्त' उसने झूठ बोलने के बारे में सोचा मगर तुरन्त कोई झूठ सोच नहीं पा रहा था, सिवाए अश्लील बात के।

वह हँसी। 'अगस्त? यह सही है!'

श्रीवास्तव ने पूछा 'अगस्त ?' अपने बच्चों को जो दीवान पर धक्का मुक्की करने छोड़ आया था और अगस्त्य के आस-पास भीड़ लग गई। अगस्त्य ने खामोशी से पूछा, 'शायद तुम कोई दूसरा महीना पसंद करोगे?'

एक नौकर कैम्पा कोला और नीबू पानी की ट्रे पकड़े भयावह आँखों से अन्दर आया। अगस्त्य दोनों चाहता था मगर बाद के लिए खुद को रोका।

बेटी ने नौकर के पेट पर पैर मारा और चिल्लाई, 'मुझे गुलाब शरबत चाहिए।'

श्रीवास्तव भी चिल्लाया, 'बर्फ़, गोपू, बर्फ़। तुम्हें हज़ार बार बोला गया है कि जब तुम दारू दिया करो, बर्फ के साथ दिया करो! क्या बर्फ घर में है?

'नहीं, सर।'

'तो ख़रीदी क्यों नहीं?'

'सर।' गोपू बर्फ़ के लिए चल गया। वह और भी अधिक परेशान दिख रहा था।

'और तुम कलकत्ता से हो?'

'हाँ मैडम!' जो चार वर्ष का लड़का था, एकदम से मेनन के चेहरे से उत्तेजित लगने लगा और तेज़ी से हँसना शुरू का दिया, ताली बजाते हुए कमरे में चारो ओर दौड़ने लगा। श्रीवास्तव ने उसे चुप कराने की कोशिश की।

'तुम्हारे पिता क्या करते हैं?'

वह दोस्ताना होने और मुझे मेरी सहजता में रखने की कोशिश कर रही थी। अगस्त्य ने सोचा। तो उसने उदार होने और न झूठ बोलने का निर्णय लिया। 'मैम, वह सरकारी नौकरी मे थे।'

'ओह किस विभाग में?' श्रीवास्तव ने पूछा। वह अपने लड़के को उसके निक्कर (स्वयं) उतारने से रोकने की कोशिश कर रहा था।

'सर, वह भारतीय प्रशासनिक सेवा में थे। वह अब बंगाल के गवर्नर हैं।'

'मधुसूदन सेन?' मेनन चिल्लाया। 'तुम मधुसूदन सेन के लड़के हो? भूत ने प्यार से उसके वृष्णों को सहलाया। आश्चर्य और भय ने उसे अपनी कुर्सी के किनारे पर दबाया और मुँह और आँखें फैला दीं।' उनका बहुत अच्छा रिकॉर्ड था, वह गृह सचिव रहे और मुख्य चुनाव आयुक्त और वह गवर्नर बने थे, कुछ लोगों ने आपत्ति की मगर तकनीकी रूप से बंगाल के एक क़रीबी व्यक्ति कभी नहीं थे– उन्होंने अपने सभी साल बॉम्बे प्रेसीडेंसी और पश्चिम बंगाल में गुज़ारे।

अगस्त्य हैरान था। वह किससे बात कर रहा था? मगर एक सफल नौकरशाह के रिकॉर्ड का वर्णन करना मेनन को पर्याप्त उत्तेजना प्रदान करने के लिए काफ़ी लग रहा

था। तो तुम्हारी माता गोवा की थीं, उन्होंने देर में शादी की। वह उनके किसी अधीनस्थ की लड़की थी और वहाँ थोड़ी प्रेम लीला थी। नहीं की थी क्या? अब यह मुझे बताएगा (अगस्त्य ने सोचा) कि सन् 1953 की फरवरी में किस दिन मेरे पिता ने अपने दाँतों में ब्रश नहीं किया था।

बेशक, मदना की नौकरशाही को उसके पिता के बारे में जल्दी ही पता चला (कई मुँह से कई कानों तक गुज़रा कि सेन साहब बंगाल के गवर्नर के लड़के हैं।) और इसका रवैया चापलूसी की दिशा में एकतरफ़ा मगर ज़्यादा था। अगस्त्य एक आईएएस अधिकारी था और गवर्नर का लड़का था। मदना स्वयं को भाग्यशाली मानने लगा था कि साठे उनका दोस्त है। वे जब दोबारा मिले यहाँ तक कि साठे ने कहा, 'तुमने पिछली बार अपनी वंशावली नहीं बताई थी' और हँसा।

'गोपू, रामसिंह।' नौकर के लिए कलेक्टर की चीख़ पर मेनन रुक गया। अब श्रीवास्तव ने दफ्तर की शैली का उपयोग करने के लिए अपना निर्णय बदल दिया और अपने बेटे का निक्कर उतारने लगा। उसने अपने निक्कर में ही पेशाब कर दी थी।' शेखर अपनी उम्र पर शर्म करो, शर्म।

अपने निक्कर के भार से मुक्त, तब लड़का कमरे में चारों ओर दौड़ने लगा, खुशी से छोटी किलकारी निकालने लगा और एकदम से अगस्त्य के सामने रुका, अपने लिंग की तरफ़ इशारा करते हुए समझाने लगा, 'पेशाब यहाँ से आती है।'

'गोपू! रामसिंह! ये हत्यारे नौकर। मैं इन्हें कार्यालय वापस भेज दूँगा।' मेनन भी खड़ा हो गया, अपने तत्कालीन बॉस के तात्कालिक मामले की मजबूती से पेशी के लिए।

'यह नौकर हमेशा रसोईघर के पीछे जाकर बीड़ी पीता है।' श्रीमती श्रीवास्तव ने कहा कि यह सचमुच एक बड़ा मकान है तभी वह वहाँ से सुन नहीं पाते हैं। उनकी आवाज़ में

श्रीवास्तव के गुस्से की वजह से शर्मिन्दगी थी, मकान के बड़े होने का गर्व और शान्ति की नौकर रसोईघर में बीड़ी नहीं पी रहे थे।

अगस्त्य के एकदम विपरीत में वह गलियारा था। वह श्रीवास्तव के देखने से पहले नौकरों को देख सकता था। जब श्रीवास्तव और मेनन लगातार उनके लिए चिल्ला रहे थे। वे बीड़ी साझा करने कोने के आसपास घूम रहे थे। रामसिंह अपने वृष्णों (स्वयं के) को खरोंच रहा था, गोपू ने बची हुई बीड़ी को कुचला और फिर दोनों चलने लगे, पराजित पुरुष धावकों की तरह हाँफते हुए कमरे के पास आकर रुक गए। श्रीवास्तव कुछ मिनट के लिए कोई विदेशी भाषा में उन पर चिल्लाया। मेनन उनके पास डरावने ढंग से खड़ा था। चिल्लाते और लात मारते हुए लड़के को कपड़े बदलने के लिए उन्हें सौंप दिया गया। उसकी बहन ने कुर्सी से उनको हाथ हिलाया और गंभीरता से कहा– बाय-बाय, पेशाब करने वाला।

दरवाज़े के पास लड़के ने रामसिंह का गाल काट लिया। श्रीमती श्रीवास्तव ने कहा 'ये नौकर बेकार हैं।'

ये वास्तव में कार्यालय के चापरासी हैं। बहुत सारे चपरासी, आधिकारिक रूप से सरकार के नौकर है, एक के बाद एक आनेवाले कलेक्टरों का काम करते थे। कई नौकरी की लालच में कार्यालय में शटल फाइल साफ़ करने की जगह किसी भी कलेक्टर की संतान की टट्टी साफ करना पसंद करते हैं। उनकी प्राथमिकता का मतलब था कि कार्यालय में कलेक्टर एक लाख पायदान दूर था मगर घर में जबकि वे उसे उसने जूते दे रहे थे या चप्पल दूर ले जा रहे थे। उनसे अपनी थोड़ी- सी ज़मीन के लिए, सरकारी ऋण को बढ़ाने, किसी कार्यालय में अपने बेटों के लिए चपरासी के पद के लिए तथा अपनी सभी इच्छाओं के गिड़गिड़ाने के लिए वे काफ़ी क़रीब होते हैं। उनके पिता और दादा ने इस तरह बहुत किया था, मगर उन कलेक्टरों की ख़ाल लाल होती थी, और उनकी अंग्रेज़ी का लहजा विदेशी था। बेशक वह घर पर वैसा ही चिल्लाते होंगे, जैसे कार्यालय में; अगर कोई कलेक्टरनी ज़्यादा ही सख्त होतीं तो वे कार्यालय में वापस भेजने तक के इंतज़ार में

कम काम करते थे। अभी तक किसी को वापस नहीं भेजा गया था, क्योंकि वह अपनी गपशप में कलेक्टर के निजी जीवन के तथ्यों को ले आते थे: ‘कलेक्टर कल तीन बार हगे थे, पेट ख़राब है।’ ‘कलेक्टर मैडम कभी-कभी काली चड्डी पहनती हैं (फुसफुसाकर), हाँ!’

ऐसे क़रार छबे-छिपे होते हैं लेकिन स्पष्ट हैं। कलेक्टर और उनकी पत्नियाँ मज़दूरों के तिरस्कार में खूब विश्वास करते थे (मदना में ज़्यादातर लोगों का मानना था कि किसी व्यक्ति का सामाजिक आधार उसके द्वारा किए गए श्रम के ठीक उलट था, जो वो खुद से करता है।) और इस चीज़ों पर यकीन करना आसान है जब घरेलू नौकरों पर भुगतान सरकार द्वारा किया जा रहा है। क़रार करने के लिए अन्य पार्टी, चपरासी, श्रम के तिरस्कार पर भी यकीन था, यह भारतीय कहानी का हिस्सा है। मगर उन्हें यह भी पता था कि सद्भावना और वरिष्ठ अधिकारियों की मदद विश्वासों की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण है।

‘मेरे पूर्ववर्ती एंटोनी ने रामेरी में एक चपरासी का तबादला कर दिया क्योंकि उसने घर में काम करने से इंकार कर दिया था। वह मेरे पास कुछ दिन पहले आया था, कह रहा था कि साहब, मुझे मदना में वापस लगा लो। मैं कहीं भी काम करूँगा जहाँ आपको पसंद हो। तुम देखो, अब वह स्वयं को मूर्ख मान रहा है क्योंकि घर में काम करने का अवसर गवाँ देने के लिए सब उसे पागल बोल रहे हैं।’

‘नहीं रवि, कृपया अपनी कार्यालय के बारे में बात मत करो।’ श्रीमती श्रीवास्तव मुस्कुराई ‘तुम सेन से क्यों नहीं पूछते। अगस्त, आज कुमार कैसा था?

अगस्त्य हैरान था कि उसे कैसे पता लगा और उसने जल्दी से कहा, ओह, वह ठीक था। हमने बहुत सारी बातें की।’

श्रीवास्तव ने कहा, कुमार एक भारतीय पुलिस सेवा का नमूना है। यह सब आईएएस से जलते हैं। ‘तुम्हें ज़िला न्यायाधीश मिश्रा और ज़िला विकास अधिकारी बजाज को भी बुलाना चाहिए। बजाज एक दूसरा नमूना है, एक दुष्ट पदोन्नत।’ वह एक पदोन्नत था, जो राष्ट्रीय सिविल सेवा परीक्षा के माध्यम से आईएएस नहीं नियुक्त होते जैसे श्रीवास्तव, मेनन और अगस्त्य हुए हैं। मगर कुछ नीचे जैसे क्षेत्रीय सिविल सेवा या इंजीनियरर्स से कैडर में पदोन्नत होते हुए इस पद तक पहुँचे थे। श्रीवास्तव की शब्दावली में ‘पदोन्नत’ घिनौना श्राप था– हरामी और मादरचोद के बीच की किसी श्रेणी का। ‘तुम देखोगे बजाज पदोन्नत की तरह बरताव करता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा की एक कार्यनीति है, जबकि ऐसे लोगों के पास कुछ नहीं है।’ श्रीवास्तव ने इस बात पर बहुत नाक- भौं चढ़ाई। ‘अगर देश बढ़ रहा है तो सिर्फ़ हमारी वजह से।’ उसका बिलकुल वही मतलब था जो उसने कहा था और अगस्त्य को तब बहुत शर्मिन्दगी हुई।

मेनन ने कहा, आनंदमग्न रहो। ‘मगर हम सब इतने भी अच्छे नहीं है।’ मिस्टर एंटोनी, उदाहरण के लिए... आह, अगस्त्य ने सोचा, निंदा सत्र।

‘हाँ, एंटोनी।’ श्रीवास्तव ने नाक-मुँह सिकोड़ कर अपनी लड़की के बाल अस्त-व्यस्त किए, जिसने चिड़चिड़ाहट में उसका सिर तेज़ खींच दिया। श्रीवास्तव अगस्त्य की ओर मुड़ा। ‘तुम्हें पता है, यह एंटोनी सहकर्मी पदोन्नत की तरह बर्ताव करता है। जब उसने यह घर छोड़ा था तो वह इस घर के परदे लेकर चला गया। मैं शिकायत करना चाहता था क्योंकि कम से कम एक आईएएस अधिकारी को इस तरह का बर्ताव नहीं करना चाहिए। वरना दूसरों के साथ कहाँ फ़र्क रहेगा? मगर मैंने शिकायत नहीं की क्योंकि कैडर में एकजुटता होनी चाहिए।’ अगस्त्य अचम्भित था कि श्रीवास्तव ने अपनी कलमों का आकार क्यों नहीं बदला था।

‘मैं अपनी किताब लाकर पढ़ सकती हूँ?’ बेटी ने बहुत प्यार से पूछा, शायद उसे लग रहा था कि उसे पर और अधिक ध्यान देना चाहिए।

'हरगिज़ नहीं,' श्रीवास्तव गुस्से से बोला। 'तुम कमरा ख़राब करोगी और सबको परेशान करोगी। चुपचाप यहाँ बैठो!' बेटी ने कुछ चुपके से आँसू चुआए; लेकिन वे कोई काम नहीं आए, वह अपनी माँ के पास रुआँसे मुँह लेकर पहुँची, जिसने उसे चुप होने को कहा, वरना वह अपने भाई के पास भेज दी जाएगी।

तब रामसिंह कपड़े कि लिए और मुस्कुराते शेखर के साथ वापस आया। 'हाँ, मुतेड़ा आ गया' मुस्कुराती हुई पुत्री ने कहा। श्रीमती श्रीवास्तव दोनों को उनके रात्रि भोजन के लिए दूर ले गई। उनके असंतोष से ज़्यादा।

'सेन कॉलिज में तुम्हारा पढ़ाई का विषय क्या था?'

अगस्त्य ने बताया, 'अंग्रेज़ी, सर, और कामना की कि और अधिक सम्मानजनक कुछ किया गया था, भौतिक या अर्थशास्त्र या गणित या विधि। एक विषय है जो आख़िर ऐसे लगते हैं और जिन्हें उनकी परीक्षा के लिए पढ़ाना होता था। कई बार उन महीनों में, अकूत तैयारी के बावजूद, वह अपने अतीत के लिए शर्मिन्दगी महसूस करता था और चाहता है कि कुछ और किया होता। श्रीवास्तव की ड्राइंगरूम में बैठना, उसे याद आया कि पलटुकाकू ने उसके विषय की पसंद में पहले आपत्ति की थी, और कई कारणों से अगस्त्य के स्कूल की पढ़ाई पर आपत्ति की थी: 'चौसर और स्विफ़्ट, तुम इन अप्रसंगिकता के साथ और क्या-क्या करोगे?' लगता है कि तुम्हारे पिता ने सोचा नहीं कि तुम्हारी शिक्षा तुम्हारे आसपास के जीवन से संबंध होनी चाहिए?

श्रीवास्तव ने 'इसे एक अनुपयोगी विषय बताया,' जब तक यह तुम्हें भाषा का ज्ञानी होने में मदद नहीं करता, जो कि बहुत सारे मामले में नहीं होता।' उसने अजीब तरह से मेनन पर नाक-भौं चढ़ाई। जो 'अंग्रेज़ी हम बोलते हैं, वह वो अंग्रेज़ी नहीं होती जो हम अंग्रेज़ी किताबों में पढ़ते हैं क्योंकि यह दोनों अलग-अलग चीज़ें हैं। हमारी अंग्रेज़ी सिर्फ बोलचाल का साधन मात्र है, अन्य लोग इसे मज़ाक समझते हैं। जब तक हमें कोई-न-कोई नया विचार मिलता रहे, हम कैसे बोल रहे हैं इसकी कोई महत्ता नहीं होनी चाहिए।

मेरी खुद की अंग्रेज़ी भी थोड़ी हास्यास्पद है, मगर मैंने खुद से सीखी थी।' अगस्त्य श्रीवास्तव को पंसद करने लगा, वह वफादार, समझदार और अपनी ज़िन्दगी से संतुष्ट था; वह विरला ही था। 'आज़मगढ़ में, जहाँ से मैं आता हूँ, मैं हिन्दी माध्यम स्कूल में पढ़ा था। अब इन स्कूलों का जिन लोगों को कोई अनुभव नहीं है, कहते हैं कि यह अच्छी चीज़ है, क्योंकि हमें अंग्रेज़ी भारत से बाहर फेंक देनी चाहिए। मैं कहता हूँ, यह बकवास है, कई ऐसी चीज़ें बहुत ज़्यादा ज़रूरी है। मुझे पता है भाई। इन छोटी जगहों में इन स्कूलों में कोई अच्छा अध्यापक नहीं होता है। कैसे हो सकता है, जहाँ काम करने की स्थितियाँ बहुत ख़राब है, जब वह खुद इन जैसे स्कूलों और कॉलिज से पढ़े हुए हैं? जब मैं लखनऊ में कॉलेज गया था, मुझे पूरी तरह से मूर्ख महसूस हुआ। तो मैने खुद से अंग्रेज़ी पढ़ना शुरू की। मुझे करना पड़ा था क्योंकि सिविल सेवा परीक्षा के लिए अंग्रेज़ी अनिवार्य थी। तो मैंने शेक्सपीयर और वाल्डसवर्थ और इन जैसे लेखकों को पढ़ा, मेरे लिए यह बहुत मुश्किल था। अभी भी अंग्रेज़ी जानना महत्त्वपूर्ण है, यह एक चीज़ देती है,' उसने अपना हाथ की मुठ्ठी बनाई, 'आत्मविश्वास'।

श्रीवास्तव को स्वनिर्मित आदमी होने का गर्व था। अगस्त्य कभी कभार ही उससे मिलता था। उसके अपने संसार में कई लोगों ने यह किया था। क्योंकि लोग यह जानते थे। वह श्रीवास्तव की भी कल्पना कर सकता था एक अप्रसिद्ध और मामूली सा कॉलिज का छात्र, न समझपाने के कारण पसीने में। मगर '*द प्रील्यूड*' के माध्यम से दृढ़तापूर्वक पानी पर चला क्योंकि वह आगे बढ़ना चाहता था।...तुम वो हो जो वास्तव में तुम हो बस जैसे यहाँ अंग्रेज़ी है, एक अपरिहार्य बची हुई चीज़। हम अपने अतीत को लेकर भी शर्मिन्दा नहीं हो सकते ना! क्योंकि यह अपने वर्तमान के लिए शर्मिन्दा होना है। लोगो को अपने इतिहास पर धिक्कार होता है क्योंकि यह काम करने से ज़्यादा आसान है।' चमगादड़ कमरे में उड़ान भर रहा था। श्रीवास्तव इस पर मुँह सिकोड़ने लगा। वह चला गया। आज़मगढ़ में एक नवयुवक को *हेमलेट* की तरह अनावश्यक कुछ पढ़ना चाहिए, यह बेतुका हैं, ना, मगर ज़रूरी भी है, और सिर्फ ज़रूरत के रूप में अगर हम स्वयं पर काम करते है, तो तीन पीढ़ियों में यह गायब हो जाएगा।

उन्होंने बहुत सारी चीज़ें उस शाम बताई; बेशक, बहुत सारे विषय कलेक्टर द्वारा चुने हुए थे। वह ज्ञानी आदमी था, अपने काम के सिवा वह अपनी विषयों पर पकड़ न तो घर पर और न ही कार्यालय में दिखा सकता था। उसने संविधान, राज्यों का पुनर्गठन, चुनाव, सूखा राहत, क्षेत्रीय राजनीति की प्रकृति, लोकतांत्रिक प्रणाली का सामना किया। जब श्रीमती श्रीवास्तव वापस आयी (थोड़ी थकी लगी, क्योंकि वह बच्चों को बिस्तर पर सुला करके आई थी), श्रीवास्तव उनको भारत में शिक्षा में कमी और आवश्यकता पर अपने विचारों को बता रहा था।

'ओह, शिक्षा,' श्रीमती श्रीवास्तव मुस्कुराई, 'तुम मुझसे भी पूछ सकते हो।' किसी ने नहीं पूछा, तो उसने अगस्त्य को समझाया, 'मैं यह जानती हूँ। कॉलिज में पढ़ाती हूँ। मैंने अपनी एम.एड. भी यहाँ से किया है।'

श्रीमती श्रीवास्तव एक कलेक्टर की पत्नी की तरह थी, जो अपने आगे की पढ़ाई पूरी वहाँ करती हैं जहाँ, उसके पति नियुक्त होते हैं और उन पर आश्रित रहती हैं। जब पति काम करता था, पत्नी छोटे गाँव के बेजान कॉलिज से डिग्रियां एकत्र करती थी। कलेक्टर या ज़िला विकास अधिकारी, या पुलिस अधीक्षक की पत्नी को प्रवेश या एक डिग्री से मना करना इतना आसान नहीं होता। यहाँ तक कि उनकी पिछली डिग्रियाँ जहाँ की हैं, वहाँ के कालेज का प्रधानाचार्य यकीनन अस्तित्व में नहीं था। दरअसल, वह शायद ही इन छोटे मामले से परेशान था। उसे पूरी तरह से पता था श्रीमती कलेक्टर पहले वाले कॉलेज में ग्रेस से उत्तीण हुई थी, वह खुद से ज़्यादा बुरा नहीं कर सकता था। इस प्रकार जब श्रीवास्तव लाल चौक में सहायक कलेक्टर रहा था, श्रीमती श्रीवास्तव ने लाल चौक राष्ट्रीय कॉलेज में कला में स्नातकोत्तर किया था। और जब पति हवेलीगंज में जिला विकास अधिकारी था तो पत्नी ने हवेलीगंज गांधी स्नातक कॉलेज से शिक्षा में स्नातक किया और अब जनता कॉलिज, मदना में शिक्षा में स्नातकोतर।

मगर ये पत्नियाँ ये डिग्रियाँ बहुत अच्छे से इस्तेमाल करती थीं, उन्हें गर्व के साथ दिखाने के लिए (कम-से-कम उसके पतियों की शक्ति का दबाब था अगर उनकी शिक्षा

का स्तर है, न्यायसंगत रूप से, क्योंकि डिग्री इसका संकेत करती थी), वह उन कॉलिज में पढ़ाने के लिए वापस आती है, जो बकवास उन्होंने सीखी थी। यह, उन्हें पढ़ाने से रोकना और भी मुश्किल था। क्योंकि इसका मतलब हुआ कि कलेक्टर के परिवार को एक अच्छे मासिक राशि से वंचित करना। यह कह सकते हैं कि जवान तेज़ अधिकारी अपनी पत्नियों की पढ़ाई पर अच्छा ख़ासा ख़र्च करते थे। लोगों ने कहा कि निंदनीय कॉलेज ने भी कमाया। 'यह एक अच्छा कॉलेज है। मैडम कलेक्टर वहाँ पढ़ाती है।' 'तो मैं भी व्यस्त रहती हूँ जहाँ भी रवि नियुक्त हुए हैं', श्रीमती श्रीवास्तव मुस्कुराई। 'आओ, रात्रिभोजन के लिए चलते है।' उसने मेज़ पर आने को बोला, 'रेस्ट हाउस का खाना कैसा है?'

'बहुत बुरा।'

'कभी भी तुम चाहो, हमारे यहाँ खा सकते हो।' कोई औपचारिकता की ज़रूरत नहीं। इस पूरी जगह को तुम अपने घर समझ सकते हो, ठीक है!'

'शुक्रिया, मैम!' वह उनके साथ लगभग रोज़ खाना खाता रहा। वह शाम को लगभग रोज़ सात बजे टहलता था, नीचे और दूर गेट तक, जहाँ बरगदों से उसे लगातार धमकी दी जा रही थी, लॉन में बच्चों के साथ दौड़ना, दूसरे कमरे की सामग्री और चमगादड़ की खून चूसने की आदतों से उन्हें मोहित करना। (वह खास तौर पर उन बच्चों को पंसद करते है जो अपनी पैन्ट में पेशाब करते हैं। इनसे बदबू आती है।' उसके बाद सभी शाम शिप्रा बेटी के साथ बकबक करतीं) श्रीवास्तव ने धैर्यपूर्वक सुना और निर्थकता से उसकी पत्नी से बात की। उन्होंने परिवारिक जीवन उपलब्ध कराया। उसने सुना था कि श्रीवास्तव अपने पूर्वाधिकारियों के तौर-तरीक़ों के ख़िलाफ़ हल्ला मचाकर दोषारोपण करते थे (वह एंटोनी जैसी सहकर्मी कार्यालय मे जो भी आता था उसको चाय के लिए पूछता था। यह एक मूर्खता भरा लोकलुभावन उपाय है, एक बहुत ही बुरी मिसाल। कार्यालय के चाय का बिल एकदम से बढ़ गया।) वे उनके काम के गुणगान करते थे। वह श्रीमती श्रीवास्तव की प्रथम महिला होने की खुशी को समझता था। वह उनके साथ जगहों, ग़ज़लों की एक शाम को, (बेशक, पहली पंक्ति में वह अपनी जगह जब तक नहीं ले लेते,

कार्यक्रम शुरू नहीं होता था।) क्लब को (श्रीमती श्रीवास्तव हर एक मुलाक़ात में उन लोगों के विरुद्ध पिनपिनाती रहती थी, जो उनके आगमन पर अपनी कुर्सी से उठते नहीं थे। और श्रीवास्तव कहता था 'क्या करे मालती? यही जगह की संस्कृति है।')

डेज़र्ट खाने के बाद (मिठाई के तौर पर एक बहुत अच्छी खीर, जो श्रीमती श्रीवास्तव ने नहीं खाई क्योंकि उन्होंने एक मुस्कुराहट के साथ कहा, कि वह बहुत मोटी हो रही है, जो कि सच था), श्रीवास्तव ने कहा कि तुम अपने प्रशिक्षण में कार्यालय से कार्यालय घूमोगे तो सीखने की कोशिश करना कि सभी कार्यालय क्या करते हैं! अधिकतम अधिकारी तुम्हें कुछ नहीं बताएँगे क्योंकि वह दिलचस्बी नहीं लेते, आलसी, अक्षम या शायद बहुत मसरूफ़ होते हैं। सिर्फ़ अपनी आँखें और कान खुले रखना, सिर्फ़ यही एक तरीक़ा है सीखने का। बाद में पूछा- क्या तुम बैडमिन्टन खेलते हो? पतला होने में मदद करता है। (श्रीवास्तव लगभग कुमार जैसा मोटा था) हम छः तीस से क्लब में रोज़ सुबह खेलते हैं। आना अगर तुम चाहो तो।' और जब वह और मेनन प्रस्थान कर रहे थे। श्रीवास्तव ने कहा कल हम आएँगे और तुम्हारा कमरे का मुआयना करने, देखने कि क्या दिया गया है तुम्हें।'

वह आया और पूरी मुलाकात में नाक-भौं सिकोड़ता रहा, वह अधिकारिक मगर चालाक और ज़िम्मेदार प्रयास था, अगस्त्य से रेस्ट हाउस में सही बरताव किया जा रहा है इसे सुनिश्चित करने का।' बाकी बचा फ़र्नीचर कहाँ है?'

'सर, मैंने हटाने को कहा। मुझे इसकी ज़रूरत नहीं थी।'

'भाई, मगर तुम खातिरदारी कैसे करोगे? जब लोग तुम्हारे कमरे में आएँगें, वे कहाँ बैठेंगे?' श्रीवास्तव कमरे में चारो ओर घूमने लगा और अगस्त्य चकित था कि क्या वह मारीज़ुआना ढूँढ़ रहा था। क्या तुम फ़्लैट में स्थानांतरित होना चाहते हों?

अगस्त्य आश्वस्त नहीं था। वह रेस्ट हाउस के फ़ोन और फ्रिज से दूर रहना चाहता था। उसे फर्नीचर और एक बावर्चीख़ाने का इंतेज़ाम करना होगा। कुछ महीने के लिए इतनी सारी मेहनत। मगर फ़्लैट में उसे वसंत के खाने से छुटकारा मिल सकता था।

वसंत के बच्चे दरवाजे पर थे। वे सफ़ेद एंबेसडर की नारंगी रोशनी देख रहे थे। लेकिन ड्राइवर उन्हें सब जगह कूदने से रोकता रहा। वे बहुत सारे थे और अगस्त्य तय नहीं कर पा रहा था की वसंत ही सबका पिता था। मगर वे एक समान, छोटे, पतले, काले, चौकन्नी आँखों और खुले मुँह के साथ दीखते थे। कमज़ोर आजीविका कुपोषण को बढ़ाती है। अगस्त्य को लगा उनमें अथाह जोश था, जब कभी उसका दरवाज़ा खुला होता था वे झाँकते थे, हँसते थे और भाग जाते थे।

श्रीवास्तव ने उन्हें तरेरकर देखा और उन्होंने एक दूसरे को देखा और हँसने लगे। मैंने तुम्हारे लिए कार्यालय का चपरासी नियुक्त कर दिया है। वह हर रोज़ आएगा? हाँ, सर। और उसने खामोशी से जोड़ा, बाहर बैठेगा, पादेगा, बीड़ी पियेगा और तुम्हें अग्रेषित करने के लिए मेरे लिए असंभव अनुरोध के सपने देखेगा। आपका काम बढ़ाने के लिए, क्योंकि मैं यह सब सोच सकता हूँ उसके लिए कोई काम नहीं है।

वसंत चाय के साथ प्रकट हुआ। श्रीवास्तव कुछ समय के लिए उस पर देशी भाषा में फूट पड़ा 'बस उससे यही कह रहा था कि तुम्हें सही ढंग से खाना खिलाए।' उसने स्पष्ट किया। 'अपनी भाषा शिक्षक के लिए आरडीबी को रखो! बिना भाषा के तुम कभी नहीं रह पाओगे। और तुम्हें इन चीज़ों को पाने की कोशिश करना चाहिए। बल्कि आरडीसी, जैसे ब़ाकी इसके साथी हैं, कोई अतिरिक्त काम करने के बदले मर जाना पसंद करेगें यहाँ मरने का मतलब है और अधिक आराम।

मदना में अगस्त्य की दैनिक दिनचर्या एक साँचे में ढल गई थी, फिर भी वह अनियमित था। क्योंकि जीवन मात्र अन्तर्ग्रहण और उत्सर्जन का, नींद और नींद से उठने पर अपना चक्र थोपता है। खुद को अपनी दिनचर्या और मच्छरों का नींद से बाहर खींचने का वह अंततः आदी हो गया। वह शाम को आधी रोशनी में बरामदे में अकसर कसरत करता था अगर नींद की कमी से ऐंठ गया हो तो, वह दंड पेलता था और सुबह के नाश्ते से पहले अपने कमरे की गर्मी में एक ही जगह पर दौड़ता था, जब दिगम्बर बंद दरवाज़े के बाहर पालथी मार के उकडू बैठता था तो अगस्त्य का ज़रूरत से अधिक खुद को खीचने की मूर्खता को देखकर धीरे-धीरे आश्चर्यचकित हो रहा था। यह उसकी पुरानी ज़िन्दगी का अंश था और यह कुछ हद तक दिन में थोड़ा अर्थभर देता था।

वसंत छह और नौ बजे के बीच उसे चाय देता था। कभी-कभी, जब वह चाहता हर रोज़ नियत समय पर वह खुद वसंत को दूध को लाने के लिए बिस्तर से ढकेलता।' मदना में ज़िन्दगी बहुत आराम से चल रही थी। अगस्त्य कभी शिकायत नहीं करता था। वसंत उसके लिए चाय ला रहा होगा, यह अनुमान लगाना एक बड़े खेल का हिस्सा बन गया था– आवाज़ के माध्यम से बाहरी दुनिया के क्षणों का पहचान करना।

वह विस्तर पर लेट गया था और मच्छरदानी से छत की ओर ताकने लगा; खिड़की से हवा को महसूस करता और फुर्तीला हो जाता और खुद से कहता, हाँ, ये पागल बातूनी वसंत के बच्चे स्कूल जा रहे हैं और यह साइकिल से पाखाना साफ करने आ रहा है। यह रहस्यमयी ठोकर शायद शंकर की शराब की खुमारी में हमे अपने बिस्तर से गिरने की है; वह खनखनाहट शायद वसंत और चाय की है।

कई सुबह, जब यह गर्मी शूरू नहीं हुई थी, वह कुर्सी बरामदे में ले आता और स्तब्ध होकर, दिल्ली के ओर से आनेवाली रेलगाड़ियों की चीख सुनता था। वह नारंगी और क्रीम, सरसों के रंग, पीली और हरी रेलगाड़ियों को देखता था और तय करता कि रेलगाडियों के लिए रंग योजनाओं का निर्णय करना एक अच्छी नौकरी होगी। वह भारतीय रेलवे की विशालता पर अचम्भित होता था, हर रोज़ लाखो लोग हज़ारों किलोमीटर सफ़र करते हैं–

उन्होंने उसे क्यों चकित किया था। थोड़ी कम शांत सुबह में वह अपनी परिस्थिति और अपनी नौकरी के बारे में सोचता रहता था, वह क्यों स्थिर नहीं हुआ है। क्या उसे अपने विस्थापन की समझ सिर्फ अस्थायी थी, या यह चेतावनी का संकेत था। मगर वहाँ कुछ भी विशिष्ट नहीं था जो वह करना चाहता हो, न ही कोई और नौकरी, और तब एक मुस्कुराहट के साथ वह लौट आया, हाँ वहाँ, रेलगाड़ियों के लिए रंग योजना बनाना, एक मर्दाना आवारा कुत्ता होना, या फिर मदन -जैसा, हत्यारा होने की भी आधी कामना।

अब तो सब ख़त्म हो गया, मदन के पास तीखे - धारदार तर्क के कारण थे और इसके लिए कुछ किए बिना सही है।

दिगम्बर अपने सिर पर लाल तौलिया बँधता था, वह सात और दस के बीच कुछ आता था; अगस्त्य ने देखा, उसका समय तय करने का कोई ज़रूरत नहीं है। वह अगस्त्य के कपड़े धोता, बिस्तर और कमरा छः मिनट में सही करता और तब बाहर नींद के लिए व्यवस्थित हो जाता। कभी-कभी अगस्त्य उससे जला करता था।

वसंत द्वारा बनाए गया सुबह का नाश्ता बर्दाश्त के बाहर था। अगस्त्य भी उसके साथ प्रयोग करता था। ब्रेड, मुलायम उबला हुआ अंडा, टमाटर कटा हुआ, उबले हुए आलू कटे हुए, चाय और उसका गाढ़े दूध का टिन, जो कि रेस्ट हाउस के फ्रिज़ में रखा हुआ था। सभी पहले स्वाद से छुटकारा पाने के लिए छेद से वह सुबह के नाश्ते के अंत में चूसता था। वह सोचता था कि यह सब अकेले खाने के लिए बहुत है और वसंत के खाने से जहाँ तक संभव हो बच निकले। तो भी वास्तव में यह क्या हुआ कि उसे ग्यारह बजे भूख महसूस हुई।

मदना में खाना बहुत महत्त्वपूर्ण बन गया था और वह जल्द ही अपने पेट की यातनाओं पर ध्यान केन्द्रित करता था और बढ़ावा देता था। भूख किसी के अच्छे स्वास्थ्य का सबूत थी, और खाने के बारे में सोचना स्वयं उसे कुछ करने को बाध्य कर देता था। उसने गणना की कि मदना में किस घर में दोपहर के खाने और रात्रिभोजन के

लिए वह हमला कर सकता था और अगर वसंत का कूड़ा खाना खाने के लिए मजबूर हुआ तो उसके लिए मैन्यू है। ज़िले में आए बहुत थोड़े दिन हुए थे कि वह बीमार था। यहाँ तक कि डरा हुआ भी। कुल मिलाकर खाने की परेशानी ने उसे कुछ ठोस सोचने को दे दिया था। बिस्तर पर पड़े रहना, छत को ख़ाली आँखों ताकते रहना (सभी महीनों के लिए उसकी लगभग विशेष परिस्थिति थी), उसने खुद से पूछा होगा कहाँ से उसका अगले वक़्त का खाना आएगा और वह इसी घिसे-पिटे सवाल पर असहाय भाव से हँसा। मदना से पहले वह खाने को हमेशा यूँ ही लेता था जैसे हवा। उसके कॉलिज दिनों में कभी हॉस्टेल का भोजन खाने योग्य नहीं होता (मगर कभी भी वसंत की तैयारी जैसा नहीं), वह हमेशा बाहर ढाबे पर खाना खाता। अब वह आशा कर रहा था कि मदना में ऐसी जगह हो, जहाँ सस्ते में खाना खा सके, मगर उसमें इतनी ताकत नहीं थी कि उसके लिए तलाश करे। वहाँ शायद स्वाद की विविधता पर विचार किया जाता और शायद पूरे गाँव में उस च्यूइंगम जैसी चपाती ही मिलती होगी।

श्रीमती श्रीवास्तव ने उसे उस साल सबसे अधिक संख्या में खाना उपलब्ध कराया। वरना विभिन्न सरकारी कार्यालयों में घूमने के माध्यम से प्रशासन की जटिलताओं को जानने की कोशिश करने के दौरान, वह आश्चर्यचकित था कि विभिन्न अधिकारी अपने-अपने सामयिक आमंत्रणों में उसको लेकर जाते ही थे। यह अच्छा खेल था और उसे मज़ा आता था– 'मेनन क्या कहता था 'कार्यालय की मर्यादा' को बरकरार रखते हुए, और अनिच्छापूर्वक लगभग मानना, मगर शिष्टता से। यह कहा कि वह सम्मानित होगा (और वास्तव में प्रफुल्लित हो रहा था) जबकि इसका अर्थ है कि मेज़बान का सम्मान होगा। जब श्रीमती श्रीवास्तव ने यह भी पूछा कि वह फ़्लैट में क्यों नहीं चला जाता और खुद के लिए खाना पकाना सीखता, इसका उत्तर देना मुश्किल था क्योंकि मुफ्त का सामान कम चुनौतीपूर्ण और बहुत ज़्यादा मज़ेदार था।'

विकृत तरीके से ही सही, वसंत का खाना उत्तेजक था। उदासी को अस्थिर करने के लिए, बेचैन करने का पूरी तरह से ख़तरनाक कुचक्र था। वैसे ही उसका देखने मे उबला पानी। 'पानी को उबलने दो, तब पानी फिर से आग पर चढ़ा देना, दस मिनट के लिए

उबालना, और तब गैस बंद करना। दस मिनट के लिए उबालने का मतलब लगातार दस मिनट के बाद पानी का उबलना शुरू होना, दस मिनट के लिए गैस पर पानी नहीं छोड़ना।' ऐसे शब्दों में वह वसंत को बोलता था, धीरे से और ध्यानपूर्वक, जैसे एक जिद्दी और उतावले बच्चे को लगभग हर एक दिन, मगर उन सभी महीनों में कभी भी सुनिश्चित नहीं था कि उसने सच में रेस्ट हाउस में उबला पानी पीया था। जब कभी वसंत जग लाता तो वह पूछता था, क्या यह गर्म है? और वसंत सिर हिला देता कभी अपनी उँगली डुबा देता और कहता, यह गर्म है।' अगस्त्य अपने संदेह को सुलझाने के लिए जहाँ कहीं भी गया उसने पानी पिया और प्रमाण में शीशे के सामने अपने सपाट पेट थपथपाता था।

एक बार, बोरियत के कारण, वह रसोईघर में जाना चाहता था। पीने के लिए उबले हुए पानी के विरोध के चलते वह नहीं गया। वसंत पहले नहीं समझा और तब न समझने का नाटक करने लगा। तब उसने अपना सिर जोश से हिलाया, हर एक स्वीकृति में अपनी आँखें मूँदी और आगे चला गया। अगस्त्य उसके बाद गया और वसंत ने उसे फैलायी हुई बाँह को बुद्ध की तरह एक खुली हथेली के साथ रोक अगस्त्य ने उसके पीछे कहा, 'लानत है।' संत वापस आया मिट्टी के तेल के चूल्हे के साथ, जो कि उसने बरामदे के फर्श रख दिया। अगस्त्य ने कहा था, 'हाँ, हाँ' और उसे दूर भेज दिया, और सोचा कि शायद वह मुझे, अपना रसोईघर देखने नहीं देना चाहता, मैल बाहर आ गया, जिसमें से मेरा भोजन निकलता है।'

और दोपहर का खाना, जो कि सच में दूसरा नाश्ता था, इसके भी आकस्मिक ख़तरे थे, मगर वह कभी-कभी रविवारी अखंबार और शंतरंजी समस्या के रूप में तल्लीन रहता। एक बार, जब नाश्ता ट्रे में ला रहा था, वसंत ने ठोकर खाई और पूरे कमरे में दूध फैल गया। उसने मेज़ पर ट्रे रखी। अगस्त्य ने दूध में से आलू और टमाटर की फाँकें निकाली।

'मै दूध का दूसरा ग्लास लेने जाता हूँ।'

'इधर, ट्रे भी अपने साथ ले जाओ!' वसंत ने ट्रे में एक दूध की प्लेट ऊपर उठाई। वह कुछ मिनट बाद काले तिनकों से भरा एक दूध का ग्लास लेकर आया। 'यह क्या है?'

"चाय पत्ती,' वसंत ने कहा और बाएँ हाथ की तर्जनी से उसे हटा दिया। वह आलू का गर्म मसाला हो सकता था। अगस्त्य को शक था कि वसंत ने दूसरे ग्लास से ट्रे और प्लेट से दूध से भर दिया था। वह स्वयं ऐसा कर चुका था। तब उसके दिमाग़ का कार्य शुरू हुआ। मगर दूध गर्म था। ख़ैर, वसंत ने फिर से गर्म किया था। शायद मुझे उससे पूछना चाहिए। मगर अगर दूध वास्तव में ताज़ा है, और पैन मे थोड़ी सी चाय की पत्ती थी तो मेरा शक उसे अपमानित करता। उसे सुझाव देता। वह तुम्हारा खाना बनाता है, वह तुम्हे खाने को कुछ भी दे सकता था। और याद रखना फिर भी अपनी ग्रे दाढ़ी के छोटे बाल और उसके दाहिने कंधे के ऊपर ट्यूमर के साथ वसंत देखने में पागल लगता है। अगस्त्य ने शीशे के साथ मामले पर विचार करने के लिए ट्रे छोड़ दी। अब वह वसंत पर झिल्ला नहीं सकता क्योंकि वह शायद तुम्हें अपनी टट्टी खिला दे। कोलकाता में उसकी आन्टी (जिन्होंने गोवा में शादी करने के लिए पिता को सबसे ज़्यादा मना किया था) हमेशा यही कहती थी। वास्तव में जिसके पास 'नौकरी है वह पूरी तरह से उसकी दया पर है।' शायद उसे वसंत को चुपके से नज़र बचा, अपने दौड़नेवाले जूते में देखना चाहिए था। मगर अगर उसने देखा होता तो बताना बहुत मुश्किल होता तब वह ट्रे की तरफ़ वापस गया और अपनी भी उँगली दूध में डुबोई यह देखने को कि कैसा है?

लगभग इन तमाम सारे दिनों में, जीप उसके पास ग्यारह से बारह बजे के बीच आती थी। उसके आने से पहले कुछ गांजा पीने का भरपूर समय होता था। कई सुबह वाकई वह ऐसा करना नहीं चाहता था। उन सुबह वह शीशे के पास जाता था, अनमनेपन से अपनी दाढ़ी को देखता था एक तरफ़ दूसरी तो कभी दूसरी तरफ़ मुड़ता और अपनी आँखों के किनारे से अपना आधा चेहरा देखने की कोशिश करता, एक पुरानी आदत के अनुसार अपनी परछाईं से पूछता– क्यों उसे धूम्रपान करना चाहिए और ख़ैर, क्यों उसे बहुत ज़्यादा धूम्रपान करना चाहिए। क्योंकि वहाँ कुछ और करने को ज़्यादा नहीं था। वह उत्तर देता था जब तक वह हस्तमैथुन नहीं करना चाहता। कभी-कभी वह दोनों करता था

और पहले दिन की अपनी डायरी के रोज़ के लेख में मदन की याद में लिखे उनके साझा विश्वास पर हँसा की किसी और को चोदना कम संतोषजनक है क्योंकि हस्तमैथुन कमबख्त अपनी मुट्ठी को अधिक थकाऊ बना देनेवाला काम है।

वहाँ कुछ अधिक करने को नहीं था। अपने दिमाग़ के बेहिस कोलाहल के साथ पढ़ना असम्भव था। और जिस विषय कि किताबों के साथ वह था उसके सामने कोलकाता और दिल्ली लगभग हास्यास्पद थे। उनकी पहुँच में दो उपन्यास पथेर पांचाली और गोरा, कोई भी उसे पकड़ के नहीं रख सकते थे क्योंकि समस्या थी कि नायक लगभग पहुँच के बाहर था, वह हमेशा कुछ तुरन्त पाना चाहता था (पलटुकाकू इस बारे में सख्त रहे थे, उम्मीदवार, जब अगस्त्य ने उन्हें पहली बार पढ़ा, जब इन दो मौलिक उपन्यासों को अपनी भाषा में पढ़ा था, और उन्हें सराहना शुरू भी नहीं किया था'); साहित्यिक जिज्ञासा, किसी अमेरिकी द्वारा रामायण का अनुवाद, वह शुरूआत से इकट्ठे हुए, हिमालय में हनुमान के साथ अकसर बीती बातें लग रही थी, और मार्कस ऑरलियस की एक प्रति, उसके पिता ने उसके जन्मदिन पर उपहार दी थी– उसका पहला पन्ना कहता है, बंगाली में; 'ओगु, चौबीस साल होने पर, उम्मीद है तुमको अधिक समझदार बनाएगा।'

कभी-कभी, जीप के आने से पहले, वह कुछ पंक्तियों पर ध्यान केंद्रित करता था, मुख्यता जब वह थोड़ा नशे में धुत्त होता। *मेडीटेशन* (बहुत असंगत तरह से उसने सोचा) केवल पढ़ने के लिए निकाली है। गद्यांश समान्यत: छोटे थे, तो वह एक बार में कुछेक पंक्तियों से ज़्यादा को पढ़ने की सोच भी नहीं सकता था। उन महीनों में वह इस तरह उदास रोमन की तरह बड़ा हुआ।। मार्कस ने फ़ौरन उसे बेहतर महसूस कराया, क्योंकि लग रहा था कि उसके पास किसी और से ज़्यादा समस्याएँ हैं– ग़रीब होनेवाली रूह कँपानेवाली समस्याएँ नहीं, मगर किसी की अपने आप में पूरी तरह से डूबी प्राणपोषक अमूर्त समस्याएँ। पहले, अगस्त्य ने खुद की शायद उपेक्षा की होगी, ज़िदगी आनंद करने के लिए थी न कि झेलने को। मगर, मदना में वह ऐसी सुगम चीज़ें कहने की हिम्मत नहीं कर सकता था। फिर भी कभी-कभी वह पन्ने पर कहता रहता, दिन के सभी अवसरों का लाभ उठाओ, लड़के तब और मुस्कुराया, मार्कस ऑरलियस के लड़के को बुलाने की

कल्पना करो। एक बार फिर से बेतुकेपन से दूर नहीं था, उस पर हमला करेगा– शायद मार्कस का मेडीटेशन सच में वास्तविक नहीं था, वह संगमरमर लिखने वाली टेबल पर कुछ सफ़ाई कर सकता था, उसके सोफ़े के पास जब एक सुन्दर रोमन बालक (दक्षिण भारत के पत्तनों के इतरों को अपने कान के पीछे और कलाई पर छिड़क रहा था, जो कि जगह से केवल कुछ सौ किलोमीटर दूर रहा होगा जहाँ मार्कस सोलह सौ वर्ष बाद, किसी आदिवासी ने एक साम्राज्य ढूँढ़ा होगा और उसे मदना ने बुलाया होगा) ने उसे चूस लिया था, या जब वह मेहमानों की वाइन गोबलेट में वीर्य स्खलित कर रहा था, कालिगुला की आत्मा से बुदबुदा रहा था कि कहाँ जा रहे हों।

मार्कस की तरह, वह एक असंबद्ध डायरी रखता था, उसी की तरह, वह चिन्तन करता– कुछ समय के लिए जब वह कसरत करता मगर अजीब ही अवस्थाओं में। उसका कसरत करीब बीस मिनट लेता और उसे इसमें काफी मज़ा आता। उसने शुरू करने के लिए खुद को मज़बूर किया था। मैंने सरकार में एक भी इंसान को सही आकार में नहीं देखा है, जैसे ही अपने पुशअप के लिए झुका उसने कहा, मैं उनकी तरह नहीं दिखना चाहता है। मगर यह क्या पाश्चात्य सनक नहीं थी, जवान बने रहने की कोशिश? वह हफ़्ता पहले रुका, अपनी पतलून को फेंककर डायरी पर झपटा और लिखा: नीरा हमेशा कहती है 'क्या यह पाश्चात्य सनक है जवान रहने की कोशिश?' कोलकाता में उसकी दोस्त नीरा अकसर कहती थी कि पश्चिम में युवा को पूजते हैं; वह जब बूढ़े लगने शुरू होते है, आयु को पूजने लगते हैं (नीरा खुद मोटी और आलसी थी) वह अपने अस्तव्यस्त दिमाग के साथ फिर अपने पुशअप की ओर मुड़ा और क़ालीन पर गिरे अपने पसीने को देखा। क्या कसरत कर के तंदुरुस्त और जवान बने रहने की कोशिश ग़लत है? एक चीटी पसीने के बिंब पर शायद जल्दी से गुज़री। ख़ैर, चींटी ने अपने पैरों के नीचे महसूस किया था या नहीं? क्या चींटी के पैर होते हैं? अगर नहीं तब उसके जाँघे खत्म होती थीं, एक बिन्दु पर? उसने फिर पुशअप शुरू कर दिए, मगर ताक़त ने उसके दिमाग को छोड़ दिया। अपनी डायरी में उसने लिखा था, 'एनबी नीरा एक मार्क्सवादी थीं और बहुत बकवास करती थी' और उसके नीचे लिखा, 'तुमने कभी भी सोचा कि अगर किसी को पता चल जाए कि तुम डायरी रखते हो कितनी शर्मनाक बात होगी?'

डायरी में सभी विवरण ओछे नहीं थे; बेशक यह सच में जानबूझ कर लिखा गया था तो वह अधिक शर्मिन्दा था। मार्कस ऑरेलियस ने अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें भाव -विरेचन का सिद्धान्त सिखाया था। यह लेखन विचार और दिमाग की स्पष्टता में मदद करता है, यह तर्कसंगत होना अच्छा था। यह छोटी -सी चीज़ महत्त्वपूर्ण हो गई। वह कलम पृष्ठ भर में घूमी और वह उसके निशान जैसे वह थे ने कुछ अर्थ बनाया – अचानक यह सब जादुई लग रहा था। यह टेढ़े-मेढ़े अर्थ समेटे हुए है। उसने लिखा, 'तुम्हारी क्या समस्या है?' और हँसा, भगवान, वह बहुत सारी हैं, और सब कुछ पूरी तरह से अस्पष्ट है। लेकिन इस विश्लेषण से मदद मिली, या मदद प्रतीत हुई, इसलिए तर्कसंगत होना अच्छा था।

जीप का ड्राइवर, जो अगस्त्य को सुबह लेने आता था, अक्सर एक ज़िला कार्यालय से दूसरे स्थान में ले जाने में असमर्थ था। इसलिए कुछ (अच्छे) दिनों में लगभग एक घंटे तक वह अगस्त्य को गांव भर में घुमाता रहा। भूमि रिकार्ड्स के जिला निरीक्षण के कार्यालय का कहते हैं या विभागीय वन अधिकारी का पता लगाने की कोशिश कर रहे थे। अच्छे दिनों में यह एक अजीब और उत्साहजनक साहसिक काम था, एक अनोखे शहर की संकीर्ण गलियों में दौड़ना, पानवाले और मोची से पूछने के लिए ख़तरनाक तरह से ब्रेक लगाना, बेमन से किसी कार्यालय को ढूँढ़ना। जो जगह वह जाना चाहते थे, कईयों ने उसके बारे में सुना नहीं था, कइयों ने उन्हें ग़लत बताया, कुछ जोर दे रहे थे कि वह जगह अब मौजूद नहीं थी। लोगो को देखकर जब ड्राइवर पूछता तब अगस्त्य को एहसास होता कि वे अपने कार्यालय के बाहर असली मदना को कितना कम जानते हैं।

और गाड़ी की यात्रा खुद में सुलानेवाली थी। वाहन में कभी-कभी मारिज़ुआना के वशीभूत होने, गर्मी और जीप की लय और आवाज़ के लिए बिना किसी मतलब में चिंतित हो रहा था।

अंतत: जब वह उस दिन के कार्यक्रम पर कार्यालय पहुँचा, तब पता चला कि अधिकारी नहीं था, दौरा कर रहा था या छुट्टी पर था। कभी-कभी वह वहाँ होता था मगर उसे

अगस्त्य के साथ क्या करना है या क्या कहना है, का कोई अंदाज़ा नहीं था। कभी कभी अगस्त्य की रुची में कमी अधिकारी के द्वारा की जाती थी। अगस्त्य उसके पीछे बैठता और इधर-उधर देखता, गंदी दीवारों और कोने में कूलर, दीवार पर उपासना के योग्य मानचित्र और सरकारी कैलेंडर था। अधिकारी कुछ सवाल पूछेगा, अगस्त्य बेरोक टोक झूठ बोलेगा। फिर वह बदले में सवाल पूछने के लिए बाध्य होगा। जब उसे लगा कि उसी शाम उसने कलेक्टर से झूठ बोला था जबकि उसे कार्यालय के बारे में पर्याप्त पता था, उसने यह बोल दिया कि उसे दोपहर के भोजन के लिए गेस्टहाउस वापस जाना है और मुस्कुराहट के साथ जोड़ा कि वापस आते-आते दोपहर में बहुत गर्मी होगी। अधिकारी उससे सहमत था और मुस्कुराया। कभी-कभी वह चाहता था कि वह श्रीवास्तव को शिकायत करे कि कोई भी उसे कुछ सिखा नहीं रहा मगर कभी नहीं की, क्योंकि उसे लगा कि ग़लती शायद उसी की है, उसकी निष्ठा में कमी के लिए अपमानित किया जाएगा। आरोप मढ़ा जाएगा जिसे वह इनकार नहीं कर पाएगा।

उसने कुछ कार्यालयों में थोड़ा-बहुत सीखा भी था। प्रशासन की जटिलता के बारे में नहीं, मगर मोटेतौर पर, व्यापक दुनिया के तौर-तरीक़ो के बारे में। भूमि रिकॉर्ड्स के ज़िला निरीक्षण ने उदाहरण के लिए उन्हें बताया कि भारत के मानचित्र पर प्रत्येक इंच पर कुछ रेखाचित्र क्यों बनाया गया था।

‘प्रत्येक इंच पर?’ वह कुछ हद तक प्रफुल्लित और गर्वित हुआ।

बेशक, सर। बहुत सारा सरकारी काम भूमि रिकॉर्डस पर निर्भर होता है कि कौन, कौन-सी भूमि का मालिक है, जब भूमि स्थानांतरित या विरासत में मिली हो। अगर सरकार को किसी के लिए किसी की भूमि का अधिग्रहण करना है, एक बाँध या थर्मल पावर स्टेशन का निर्माण करने के लिए, हमें ज़मीनी रिकॉर्ड रखना होगा है कि नहीं! यह तय करने के लिए कि किसको मुआवजे का भुगतान करना है। आख़िरकार भूमि सभी के लिए सबसे महत्वपूर्ण सम्पत्ति है।’ इन्सपेक्टर थका हुआ उदार आदमी था। वह एक छोटे शोरभरे कमरे में बैठा था। एक गली में, आगे एक दुकान जो प्लास्टिक के मग और

बाल्टी बग़ैरह बेचता था, उसके आगे किनारे पर एक विडियो लाइब्रेरी थी। वह पुरानी साइकिल पर घूमती रहती थी। 'कार्यालय में हमारे पास पूरे ज़िले का मानचित्र है। हम तुम्हें दिखाएँगे।'

मानचित्र चाय के साथ आ गया। इंस्पेक्टर ने अपनी प्लेट से पी। मानचित्र पतले पारदर्शी या ट्रेसिंग कागज पर था। इंस्पेक्टर ने उसे अपनी टेबल पर किताबों के ऊपर श्रद्धापूर्ण खोल दिया। (किताबें खुद ब खुद अगस्त्य को लुभा रही थी। सिटी सर्वे मैनुयल, नियम का मैनुयल और भूमि रिकॉर्ड स्थापन से संबंधित स्थायी आदेश। किसी ने कहीं ने वास्तव में ऐसी चीज़ें लिखी थीं और यहाँ विश्व में ऐसे लोग थे, जो इससे हर रोज़ मशविरा करते थे।) पुराना मानचित्र अंग्रेज़ी में था, मगर अभी तक पूरी तरह से सुपाठ्य था। वे सभी क्षेत्रों को ज्यामितीय आकृतियों की एक ख़ास किस्म में विभाजित करते थे, प्रत्येक को एक संख्या के साथ। अगस्त्य ने सोचा कि बच्चे इन नक्शे पर गेम खेल सकते हैं, और इन वर्गों और हेक्साग्राम को गति या धोखे या दोनों माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं और प्रत्येक आकृति के लिए अलग-अलग मान प्रदान कर सकते हैं। इस्पेक्टर ने कहा– 'भूमि हर जगह महत्त्वपूर्ण है, सभी प्रकार की भूमि, लेकिन चूँकि आप शहरों में रह चुके हैं।' वहाँ आप कृषि को भूमि के महत्त्व को नहीं समझ सकते, यह असली धन है। इनमें से प्रत्येक वर्ण और हेक्साग्राम लाखों के लायक़ हो सकते हैं।' निरीक्षक उस कुर्सी पर सालों से बैठे थे। हर दिन उन्होंने नक्शों और इनके सहायक बहीखाते और दस्तावेजों की जाँच की होगी। कारों और रिक्शावालों के शोर और विवादों में अपनी चाय कप की प्लेट में पी। जब वह पेशाब करना चाहता था तो ऊपर दुकान के पीछे किसी बिल में जाता था।

उसी दुर्लभ दोपहर को श्रीवास्तव ने अगस्त्य को किसी बैठक या अन्य काम के लिए कलेक्टरेट के पास बुलाया अन्यथा ज़्यादातर दिन वह अपने कमरे में रहता था। वह कभी-कभी कई दोपहर को शंकर के साथ पीने, झूठ बोलने, मदन, या तामसे की कला के बारे में सुनने में गुज़ारता था। शंकर साहब, क्या आप कभी भी कार्यालय नहीं जाते?'

'सेन साहब, अपने बारे मे बोलिए,' और खुशी से खिलखिलाया, हम बहुत हद तक समान हैं। मैं कहता हूँ, शनि से संचालित और जगदंबा से हमें प्रेम प्राप्त है। हमारी समान आदतें है, उसने अपना ग्लास उठाया और फिर से खिलखिलाया 'दोपहर के खाने के बाद न तो कार्यालय जाना होता है, और सामान विचार यह है कि हम कार्यालय से नफ़रत करते है और उसके बाहरी ज़िंदगी को पसंद करते है। संगीत के लिए एक- जैसी पसंद है और समान परिस्थितियों में हम दोनों को मदना में छोड़ दिया गया है।'

अपने दोपहर के भोजन से लेकर जब भी उसने वसंत से चाय के लिए पूछा उसकी दोपहरें लंबी हो जाती थी। इसलिए वह एक अर्थ में अपनी अवधि को नियंत्रित कर सकता था। चाय के बाद उसे शाम के बारे में सोच था। लेकिन इससे पहले वह थोड़ा सो सकता था। तामसे की पेंटिंग, या दीवार पार कर सहवास करने को भागती छिपकली को देख सकता था। नज़रुल इस्लाम या विवाल्डी के संगीत को सुनता, कल्पना करता, अपने अतीत के बारे में सोचता और पहचानता, स्वयं के एक पैटर्न से बाहर निकालने का प्रयास करता, बिना खुशी के हस्तमैथुन करता, कभी-कभी गांजा फूकता, थोड़ा मार्कस ऑरेलियस पढ़ता या बस लेट जाता और सूर्य द्वारा बाहरी दुनिया को जलाने के बारे में का सोचता। वह दोपहर को अपने स्वप्निल अंधेरे कमरे में रहना पसंद करता था। यहाँ वह सुरक्षित महसूस करता था उसके लिए दुनिया जल गई थी। जब उसने बसंत के लिए दरवाज़ा खोला, तब धूप थोड़ी धीमी हो गई थी, और कुछ घंटो में मदना में मिट जाएगी।

उसने कलेक्टरेट मिल में बहुत सी शामें बिताईं। लेकिन कुछ शामों को वह बहुत उदासीन महसूस कर रहा था। उसकी आँखें बहुत लाल लग रही थीं। वह किसी से भी अच्छी तरह से बात करने लिए ख़ुद को अकेला महसूस कर रहा था। तब वह सूरज ढलने का इंतज़ार करता और टहलने जाता। गाँव बहुत गंदा और बहुत भीड़भाड़ वाला था। हमेशा से कार्यालय से किसी-न-किसी के मिलने का ख़तरा होता था और इन्हीं बातों के चलते वहाँ नीरसता थी, तब वह अकसर गांव से दूर ट्रेन की पटरी के साथ टहलता था।

कई रातों में वह नौ बजे रेडियो पर ख़बरें सुनता था। शुरूआत में, वह सामान्यत: समाचार पत्र और उसे क्या कहते हैं सामयिकी से बचता था। उसे ख़बरों में कभी कोई

दिलचस्पी नहीं थी, जब तक कि बुरी हो न हो, उस स्थिति में उसे वैसे काफ़ी समय मिल गया था। लेकिन मदना में उसने ध्यान से रेडियो सुनना शुरू कर दिया। कभी-कभी कमरे में बस एक और आवाज़ आती है। यह एक महत्वपूर्ण थी, जो एकमात्र उद्देश्य बन गयी थी, सच में मदना से परे दुनिया के साथ। बॉम्बे और कोलकाता के अख़बार देर से आते थे और अनिवार्य रूप से बासी खबर के साथ। मदना में कपटभरी जानकारी का प्रसार करने के लिए उसे रेडियो की शक्ति के बारे में पता चला, मनोरंजन और सूचना के लिए महानगर और ग्रामीण भारत में लाखों लोगों का इसी पर भरोसा था और उनमें से आधे से अधिक निरक्षर थे। रेडियो पर कहा गया था कि वर्ष के अंत तक सत्ररह प्रतिशत देश टीवी द्वारा कवर किया जाएगा। इससे पहले उन्होंने कभी ऐसी टिप्पणी नहीं सुनी होगी, लेकिन अब यह पंजीकृत अर्थ था। साठे ने कहा था कि टीवी भी मदना में आ रहा है और उसने पूरी तरह से इसके प्रभाव की कल्पना की होगी। यह रेडियो से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली है क्योंकि इसके लिए वह आँखों को क़ैदी बना लेती है। साठे ने संवेदनात्मक रूप से जोड़ दिया था कि मदना में टीवी चुनावी स्टंट था और इसका भी अलग ही अर्थ निकलता था।

ज़्यादातर रातों को उसने कलेक्टर के साथ नहीं खाया। रात का खाना लगभग जल्दी होता था, आठ बजे, क्योंकि वसंत को जल्दी सोना पसंद था। तब रात के खाने के बाद, वह सुबह चार बजे तक जागता रहता था। मदना में वह नींद को कभी भी यूँही नहीं लेता था। वह दोपहर में गतिविधियाँ दोहराता था, सोचता रहता कि बीस सालों से अधिक वह हमेशा अच्छी तरह सोता रहा है। एक या दो रातों के सिवा, जब उत्तेजना ने उसे जगा दिया था। जैसे जब वह सात साल का था कक्षा की पिकनिक से पहली रात वह पूरे घर में घूमता था, अति उत्तेजित होकर कि पिकनिक के लिए नई जींस पहनेगा। मगर मदना में वह लगभग नींद से त्रस्त हो गया था। थकावट और निराशा के कारण वह अन्ततः बाहर निकला आया।

इस प्रकार वह दिनभर अकेलेपन के जीवन को झेलकर थक गया।

एक शाम क़रीब छह बजे, वह मार्कस ऑरलियस के साथ बरामदे में बैठा था। उससे सर्किट हाउस के एक नौकर ने कहा, 'सर, आपके लिए फ़ोन।'

यह फॉरन कॉलोनी से महेन्द्र भाटिया था। 'हेलो, मैनडी, यकीनन आप मुझे याद हो... हाँ, शायद तीन साल होंगे जब हम आख़िरी... हाँ, साठे ने मुझे भी बताया था, तुम्हारे बारे में... मैं तुम्हें फ़ोन करने की सोच रहा था, मगर तुम्हें पता है कैसी है यह नई जगह, नई नौकरी, मैं पूरा दिन व्यस्त रहता हूँ... बिल्कुल, हमें मिलना चाहिए... आज शाम के बारे में क्या ख़याल है...? हाँ, आज शाम, मैं अभी खाली हूँ सुबह जल्दी उठा था...हाँ, तुम आ जाओ, क्योंकि मैं वाकई में अभी तक इस शहर को सही से नहीं जानता... यह रेस्ट हाउस का चौथा कमरा है, सर्किट हाउस के प्रांगण में... ओह, मुझे लगता है कि मुझे यहाँ आए हुए तीन हफ्ते हो गए... हां, यह बहुत अलग है... (जब वह मुझे मिले थे तो कुछ भी वह बात करते थे? वह साथ पीते थे वरना शाम असहनीय होती)... सुनो मैनडी, आज शाम हम क्यों न पीए? वरना बस बोतल साथ रख लेना... ठीक है आधे घंटे में...बाय।'

व्हिस्की का वादा होते हुए भी अगस्त्य भाटिया को लेकर ज़्यादा उत्सुक न होकर बरामदे लौटा। उसका कॉलेज के दिनों में पूरी तरह से अलग समूह था; भौतिक विज्ञान या रसायन विज्ञान का एक छात्र वह भूल गया था जो कि ध्रुबो की भाषा में वह एक और शहरी भारतीय तीसरे दुनिया में अमेरिका की अत्यधिक विक्री से मोहित था। भाटिया को टी-शर्ट और कैल्विन क्लेन की जीन्स, दिल्ली के फास्टफूट के केन्द्र, भारतीय मोटर साइकिल (क्योंकि वह विदेशी खरीद नहीं सकता था), पसंद आता था, गर्लफ्रेंड जिसके साथ वह किसी समय सो सके, (वे मायावी साबित हुए), मारिज़ुआना, यहाँ तक कि थोड़ी कोकीन, और गायक जो ग्रमी अवार्ड्स जीते थे (और जिनके लिए भारतीय टीवी, उनके उत्साह के लिए आखिरकार, दिखाना शुरू कर दिया था) रूपये को बक्स बोलते है, और

मैनडी कहलाते हैं। उसकी महत्वाकांक्षा विदेश जाने की (ए का यूएस के लिए) थी, शायद यह दिखाने के लिए कि वह उनकी जीवन शैली के साथ कितनी अच्छी तरह से फ़िट है (दो कॉलेज के आगे लॉन में बैठे हुए थे, नशे मे धुत्त और भाटिया वहाँ से गुज़रा था, कुछ क्लोन, वो हैडफोन्स और एक वॉकमैन के साथ तो ध्रुवों ने एक बार कहा था - 'यह उन लोगों जैसा है जो एड्स को सिर्फ इसलिए पसंद करते हैं क्योंकि यह अमेरिका में उत्पन्न हुआ है।'); इसके बदले, भाटिया ने मदना को जीत लिया था, अगस्त्य ने इसे हर्षजनक पाया।

अगस्त्य को यह देखने में भी खुशी हुई कि तीन सालों में मदना ने शायद भाटिया को बुझा दिया था। उसके कपड़ों में बदलाव नहीं हुआ, ग्लोरिया वेंडरबिल्ट और टी-शर्ट पर लिखा था कि 'मुझे कोई तारों की लड़ाई नहीं चाहिए' (वह भूमि रिकार्ड के ज़िला निरीक्षक से इन्हीं कपड़ों में मिल चुका है। अगस्त्य हल्के से हँसा।), मगर वह अधिक दुबला लग रहा था साफ और अधिक गंभीर था। शायद नौकरी ने उसे हर दिन दाढ़ी बनाना सिखा दिया था। उसकी व्हिस्की दुर्भाग्य से सिर्फ़ आधी बोतल ही थी।

'हेलो,' उन्होंने हाथ मिलाए। वे बरामदे में बैठे। अगस्त्य अपने कमरे में नहीं बैठना चाहता था क्योंकि वह महमानों को असंगत दिखता था। कमरा वास्तव में अकेलेपन की बातों के लिए ही था।

खैर, वे अंततः थोड़े भंड हो गए। भाटिया के लिए ऐसी बोली ठोली होने के लिए काफ़ी था। वह भूल गया था और फ़र्क़ नहीं पड़ता था या शायद उनके लिए इतना काफ़ी था कि अगस्त्य उनके पुराने जीवन से आया था और इसलिए लोग समझते होंगे। भाटिया अपनी नौकरी, छोंटा-सा गाँव, लोग, अकेलापन, सेक्स का अभाव के ख़िलाफ़ निंदा करने में लगा था। यह अस्फुट मुख से रोदन भरा गान अगस्त्य को थोड़ा शर्मिन्दा कर गया ; वह कभी भी स्वीकार नहीं करेगा कि वह और भाटिया में कुछ समानता है, मगर अब स्पष्ट रूप से उन्होंने किया, यह उनका विस्थापन था।

'यह उबाऊ जगह है, यहाँ बात करने को कोई नही, कहीं जाने को जगह नहीं, कुछ करने को नहीं, कार्यालय के बाद अपने कमरे में वापस आओ, दारु पीओ, अकेलापन महसूस करो और हस्थमैथुन करो।'

भाटिया ने अगस्त्य के गुप्त जीवन को इतना हास्यास्पद बना दिया, वह हँसना चाहता था। इसकी बड़ी तसल्ली यह थी कि यह एक अलग अनुभव था, कुछ दुर्लभ; अब यह व्हिस्की की बोतल के तौर पर सामान्य लग रही थी, कुछ उसने भाटिया के साथ साझा की थीं। अगस्त्य आखिरी सांत्वना देनेवाले और मरीचिका तबाह करने के लिए उसको बेहद नापसंद करता है।

मगर वह उसकी बातों को सामान्यत: स्वीकार नहीं कर सकता था। उसे प्रच्छन्नतापूर्वक अहसास हुआ कि अकेलेपन का अहसास बहुत ही कीमती है, साझा करने, और अंतत: अवर्णनीय है। आदमी आख़िरकार, एक टापू है; हर एक का अपना ब्रह्मांड है, केवल खुद के लिए, समझ और दूसरे के हित से परे। उनके लिए अग्निपरीक्षा है यह ओछापन भी अतुलनीय था, कीमती था, सबसे ज़्यादा सहानुभूति भी एक झिलमिलाहट भर थी। वह वाकई भाटिया के जीवन में रुचिकर नहीं था: बाद में, ध्रुबो उसमें रुचि नहीं लेगा और उसके पिता भी यह समझने में समर्थ होंगे।

भाटिया को सुनने, प्यार से विरोध करने और आगे उसे चिढ़ाना भी सुखद था। उसने इस तरह से समय बिताया। 'मगर, मैंडी, सभी नौकरियाँ बोरियतवाली हैं और सबके लिए ज़िन्दगी समान्यत: दुखदायी है। तुम मदना को दोष नहीं दे सकते। शायद तुमें शादी कर लेनी चाहिए। तब कम से कम तुम दो समस्याओं का समाधान कर सकते हो सेक्स और अकेलेपन का।' अगस्त्य ने जल्द ही उनके सहज और उथली (उथली क्योंकि वह घिसी - पिटी थी) बहस का आनंद लेना शुरू कर दिया था। 'और मैं सोचता हूँ जब कभी कोई भी नई जगह में विस्थापन होता है, तो शुरू- शुरू में वह थोड़ा अजीब महसूस करता ही है।'

'भाटिया ने उसे रोका, 'क्या शुरूआत में? मैं यहाँ दो साल से ज़्यादा समय से रह रहा हूँ।'

'मगर यह संसार रोमाँचक सुअवसरों से भरी अति उत्तम जगह नहीं है। हर जगह आमतौर पर घटिया और लानत होती है। तुम्हें जमना ही चाहिए जब तक कि तुम आत्महत्या नहीं कर लेना चाहते। बहुत सारे लोग करते है, तुम्हें पता है। अगस्त्य को उसका नया विषय पसंद नहीं आया। यहाँ आत्महत्या के कई घरेलु तरीक़े हैं। तुम अपना लिंग बदल सकते हो, अपने पति को मारो, यदि वह अपने आप न मरे, और खुद को उसकी चिता पर जला लो मगर मेरे विचार से सती (आपके लिए) होना निषिद्ध है- उन्होंने एक महान भारतीय परंपरा को मार दिया है, मगर उसकी जगह नयी है– तुम लिंग बदल करके दूसरी शादी कर सकते हो : और अपने पति को मना लो खुद को जलाने के लिए– यह सर्वश्रेष्ठ सनकी अनुभव है।

अगस्त्य ने अपना तीसरा जाम खत्म किया और लगा कि व्हिस्की नीचे की ओर गई, इधर-उधर बढ़ी और उसके लीवर पर हमला किया। भाटिया नहीं सुन रहा था। वह अपने ग्लास के तले को घूर रहा था। मैनडी, क्या कभी खाली ग्लास से तुम ग़ज़ल के लेखक की तरह महसूस करते हो?

'नहीं, तले में कोई काली चीज़ है। चूहे की लेंडी की तरह दिखती है देखो।'

'हाँ, यह चूहे की गू की तरह दिखता है।' अगस्त्य ने फ़ौरन ग्लास वापस कर दिया। 'वसंत, वह पागल आदमी, जिसे तुमने देखा था, सर्किट हाउस के डाइनिग रूम की आलमारी से ग्लास निकालकर कर लाया था। तुमने वो अलमारी देखी है? एक बड़ी लानत। अंदर एक बाघ रह सकता है और किसी को पता नहीं चलेगा। मैंने सोचा, ग्लास साफ़ थे, इस हरे ग्लास के बजह से चूहे की लेंडी नहीं दिखी।

भाटिया ने बरामदे में ट्यूब की रोशनी में ग्लास को ऊपर उठाया। अगस्त्य का कोलकाता में एक रेस्टोरेन्ट याद आया, जिसका पीज़ा नीरा को पसंद था, जिसके बल्ब के शेड हरी बोतलों के थे। भाटिया ने पूछा 'चूहे की लेंडी के घोल से मुझे क्या हो सकता है?'

'प्लेग?'

'पागल मत बनो, वह दुर्लभ बला है।'

'दुर्लभ? बीमारियों के लिए यह सही शब्द है? कुछ और नहीं मेरे विचार से। वह चूहे की बासी लेंडी थी, थी की नहीं।'

'मुझे कैसे पता चलेगा?' भाटिया ने चिढ़ के पूछा।

'और किसे पता होगा? तुमने तो यह पीया था।' जिस पर भाटिया ने कुछ भी नहीं कहा, लेकिन आने वाले विपत्तियों के बारे में चर्चा की।

तभी बिजली चली गई। सर्किट हउस के पीछे पूरा अंधेरा था। नौकरों के घरों से उल्लास की आवाज़ आई। 'यह शायद वसंत के बच्चे हैं, खुश हैं कि होमवर्क नहीं करना पड़ेगा। अब वे आइस-पाइस खेल सकते है।' मंद हवा महसूस करने के लिए और अंधेरे में साधारण मामलों के बारे में बात करने के लिए कुछ न दिखना बेहतर था।'

'यहाँ बिजली को आपूर्ति सच में बहुत ख़राब है। यह लगातार दिन के गर्म पहरों में बंद कर शुरू कर देंगे। क्या तुम कहीं से रोशनी ला सकते हो? यहाँ बोतल में आख़िरी जाम रह गया है।' अगस्त्य को एक मोमबत्ती मिली और उसे उसने मदना ज़िला गैजेटियर पर रख दी। उसी किताब को प्यार से देखा, पेपर वेट के रूप में और मोमबत्तियों को रखने के लिए यह मोटी किताब अच्छी है।

'तुम्हें इसे कभी-कभी खोलकर देखना चाहिए। यह काफ़ी दिलचस्प है।' अगस्त्य अश्चर्यचकित हो गया, उसने यह कभी नहीं सोचा था कि भाटिया का ये पहलू भी था। भाटिया ने मोमबत्ती से सिग्रेट जलाई और गैजेट को छुआ। कार्यालय से है? सभी सरकारी चीज़ों के साथ ऐसा ही बरताव करते है। सच में कभी-कभी मोमबत्तियाँ रखने के लिए फ़र्नीचर, पुराने घर, पूरानी किताबें बहुत महत्वपूर्ण चीज़े हैं, सभी के साथ इसी तरह बर्ताव किया गया है।'

'मुझे लगता है कि प्लेग होने जा रहा है। क्या तुम्हारी बगलें सूज रही हैं।' बिजली फिर से आ गई, फिर से बच्चे खुशी से चिल्लाने लगे। शायद वे खुश है कि रोशनी आई है क्योंकि यह उन्हें चीख़ने का मौक़ा देती है।'

'हम खाने के लिए क्या करेंगे? मैंने सुझाव दिया कि हम बाहर टहलते हैं और साठे के साथ एक रात का खाना खाने के लिए एक और आधी बोतल ले लेते हैं।'

उस शाम अगस्त्य ने मकानों के क़रीब मदना का कुछ अंश देखा। भाटिया को एक रिक्शा चाहिए था मगर अगस्त्य टहलना चाहता था। उन्होंने रास्ते में एक जगह रिक्शा ले लिया था। वह अपनी सीटों में झूलते रहे और रिक्शे वाले के पिण्डली की माँसपेशियों को देखा। उसे दशकों के पसीने की और कुपोषण की गंध आयी। वे गराज, गन्ने को बेचने की दुकानों से गुज़रे। मंदना में कैमिस्ट्रों के दुकानों को ध्यान में रखते हुए' भाटिया ने कड़े तरीके से कहा, 'यह जगह स्वास्थ्य के लिए कितनी हानिकारक है।'

'आठ बजे हैं, मगर यह जगह छह बजे की सेहतमंद दिल्ली से ज़्यादा चहल पहल वाली है।' सड़कों पर भीड़, रिक्शावाला अपनी दोनो घंटियों का प्रयोग करते और अपनी कर्कश आवाज़ उसके विरुद्ध। ढाबे से डोसा और तली मछली की सुगन्ध पुलिस स्टेशन के पास से पेशाव और कीचड़ की बू आ रही थी। गन्ने के स्टॉल से एक ट्रांजिस्टर हिन्दी फ़िल्म के डिस्को गानों से उसके आस-पास के कान फोड़ रहा था। म्यूज़िक की दुकान से

नक़ली ग़ज़लों की धीमी आवाज़, गलियों को पार करते हुए अंधेरा था। नशे में इधर उधर घूमना और यह सब देखना यह ज़्यादा बोरियत वाला नहीं था।'

'असम्भव, मदना बहुत छोटी जगह है। कई आपराधिक लोग आपको मिलेंगे। किसी दफ़्तर से कुछ कमीने आपको देखेंगे और बातें करेंगे और जल्द ही पूरे शहर में, अन्य सभी दफ्तरो में भी पता चल जाएगा कि यह दिल्ली का पाश्चात्य किस्म का जवान बस बाज़ार के आस-पास घूमता है। वैसे भी ये तुम्हारे कलेक्टर के संसार को नापसंद करते हैं।'

, जब वे किराये पर रिक्शा-वाले के साथ बहस कर रहे थे तब वे जोशी आरडीसी से एकदम से मिले। 'हेलो, सेन, सर, आप यहाँ क्या कर रहे हो? वह जो उसकी पत्नी की तरह लग रही थी के साथ था, मगर उसने उसका परिचय नहीं कराया। अगस्त्य ने स्वयं से कहा उदार रहो, शायद वह उसकी मिस्ट्रेस है। शायद उसके पास जनजाति महिलाओं का एक हरम है और हर शाम रात्रि भोजन के बाद वह उनके साथ नंगा नाचता है।'

'हेलो, जोशी साहब, यह मेरा दोस्त महेन्द्र है। यह यहाँ वन सहायक संरक्षण है। मिस्टर जोशी कलेक्टरेट में हैं, यह आरडीसी है।' और मुझे अभी तक नहीं पता है यह क्या हैं– उसने खामोशी से जोड़ा। वे बकवास करके अलग हो गए।

भाटिया ने कहा, 'अभी, तुम इंतज़ार करो और देखो। कुछ दिनों में जोशी, तुमसे भरपूर बेकार की बकवास करेगा, जैसे "तो तुम शाम को बाज़ार टहलने कि लिए जाते हो।" तुम रुको और देखो।

तीन शाम के बाद श्रीमती श्रीवास्तव ने कहा – 'अगस्त्य, मैंने सुना कि तुम पीते हो और फिर किसी वन अधिकारी के साथ हर रोज़ बाज़ार में टहलते हो।'

जिस पर श्रीवास्तव ने त्योरियाँ चढ़ाई और जोड़ा, 'सेन, तुम मदना में जिसके साथ रहते हो उससे सावधान रहना चाहिए। यह एक छोटी जगह है। लोग बहुत सी बातें करते है, उन्हें और कुछ करने को नहीं है। तुमको गोविन्द साठे-जैसे एक हरामी, एक कार्टूनिस्ट लोगों से सावधान रहना चाहिए। वैसे यह पूरी तरह तुम्हारा व्यक्तिगत मामला है, लेकिन आप बाद के घंटों में भी सरकार के लिए भी ज़िम्मेदार हैं। और यह गोविन्द साठे, सचमुच ग़ैरज़िम्मेदार क़िस्म का आदमी है, वह सोचता है कि ज़िन्दगी एक बड़ा मज़ाक़ है। '

भाटिया और अगस्त्य एक गली में मुड़ गए। कोने में ट्यूब की रोशनी के अन्दर भाटिया ने अपने पैर को पास में गोबर के ढेर में डाल दिया। 'देखो इसे।' लाइट में गोबर काला-हरा था, छोटे बुलबुलों के साथ जो अगस्त्य को वसंत की पालक की याद दिला रही था। उसने सोचा, शायद इसका स्वाद बेहतर होगा। क्या गाय सामान्यत: ऐसा ही हगती है, या मदना के पानी ने इसे भी बरबाद कर दिया? या शायद इसने भी रेस्ट हाउस का खाना खाया था। दोनों तरफ़ छोटे बदसूरत घर, पुराने और बेरंग– यहाँ गलियों में कोई भी सौंदर्य की दुहाई देता नहीं लग रगा था। बंद खिड़कियाँ, नीली दीवारों का कमरा, एक लड़का बिस्तर पर अधिकृत ट्यूब लाईट के नीचे पढ़ रहा था। मदना की अपनी ज़िन्दगी भी है।

'मैनडी, वे मूर्तियाँ है, नहीं है क्या?' अगस्त्य ने एक घर की ओर इशारा किया। मुख्य सीढ़ियों के दोनों तरफ़ के किनारों पर दो सफ़ेद बकरी बैठी थी, बिलकुल स्थिर।

भाटिया ने कहा, 'यह मूर्तियों की तरह नहीं महक रही थी मगर गली की रोशनी और अंधेरे मे वे सफेद संगरमर की मूर्तियाँ हो सकती थीं। 'शायद वह सो रहा था या नशे में धुत्त था। क्या हिन्दू पौराणिक कथा में सफ़ेद बकरियाँ कोई अच्छा शगुन नहीं थीं?' अगस्त्य ने सोचने के लिए अपने दिमाग़ को चारों ओर घुमाने का प्रयास नहीं किया, लेकिन उसे इतना अच्छा ज़रूर लगा कि वे बेतुके और आकर्षक हैं, जैसे कि अतिथियों का स्वागत करने का इंतज़ार कर रहे हैं।

भाटिया ने कहा, 'एक कोने के चारों ओर प्रकाश की एक किरण, एक बोर्ड एक भ्रामक रूप से बेहिसाब भारतनाट्यम के नर्तक को दर्शा रहा था। उस पर लिखा था कि 'दक्षिण बार और रेस्टोरेन्ट में स्वागत है।' 'तुम यहाँ कुछ पकौड़े के लिए जाओ, हमें शराब के लिए उनकी ज़रूरत होगी।' मैं जाऊँगा और ले आता हूँ, दूकान सड़क के नीचे है। हम समय बचा लेगे।' अगस्त्य रेस्टोरेंट में गया, और अश्चर्यचकित हुआ कि भाटिया समय क्यों बचना चाहता था।

दक्षिणी रेस्ट्रां बहुत बड़ा था। शोरगुल से भरा और जगमग रोशनीदार। रिक्शा और स्कूटर प्रांगण के सामने वह दरवाज़े के पास ही बैठ गया। वह पहचाना नहीं जाना चाहता था। नहीं चाहता था कि इस दुनिया को एक कलेक्टर के साथ जोड़ा जाए। हिन्दी डिस्को वाले गाने छत के किनारे स्पीकर से गूँज उठे। उस बेहतर लगा। अगली मेज़ पर एक आदमी, जिसका आधा चेहरा ल्यूकोडर्म द्वारा बदला हुआ था, साँभर के समुंदर से इडली ढकोसता जा रहा था। अगस्त्य उस पर मुस्कुराया, बल्कि मेरा चेहरा भी आपकी तरह दिखना चाहिए, उसने सोचा। मेरी माता गोरी और ईसाई थी और तब उसे खुद पर शर्म आयी। एक सिक्ख आया, मोटा और मज़बूत, तंग जीन्स में और एक टी-शर्ट उसकी बड़ी छाती के चारों ओर खींची हुई थी। छोटी लाल आँखों से उसने कातिल की तरह इधर-उधर देखा। एक छोटी-सी चोंचदार नाक, पतले होंठ, पतली दाढ़ी। अगस्त्य ने सोचा, मुझे इस आदमी के बारे में जानकर अच्छा लगता अगर वह खुल कर वर्णन करता। सिक्ख ने अपने कंधों को खुजलाया और मोटरसाइकिल का शोर छोड़ गया। अगस्त्य ने प्रतिक्रियाओं के बारे में सोचा कि अगर वह सिक्ख को रात के खाने के लिए कलेक्टर के घर में ले जाए, उसकी मोटर साइकिल को चलाकर घूमे और उसको श्रीवास्तव से मिलवाए: सर, यह मेरा जिगरी दोस्त है, लगभग मेरा आधा हिस्सा। ...भाटिया तभी पैकेट के साथ पहुँच गया, वह एक षड्यंत्रकारी की तरह दिख रहा था।

साठे के होटल पर रिक्शावाले ने कहा 'चार रुपये।' भाटिया ने कहा, 'बकवास मत करो, दो।' आलस्य से लगभग बेमन से उसने कुछ समय बहस की। बीच में ही भाटिया

अगस्त्य की तरफ़ मुड़ा। 'उसूल पर' इंसान। मैं हमेशा टेक्सी, स्कूटर या रिक्शावाले के साथ उसूल पर बहस करता हूँ।' वरना सफर पूरा नहीं होता।

अकस्मात् रिक्शावाले ने बहस इसके साथ ख़त्म की, 'जब अगली बार तुम्हारे पिता पादें, तो उसकी गाँड़ में दो रूपये घुसेड़ देना।' और चला गया। भाटिया थोड़ा आहत दिखा। 'भारत में किसी भी सार्वजनिक वाहन का कोई चालक कभी भी अपने बाक़ी पैसे लिए बिना नहीं छोड़ता है। ये रिक्शावाले अलग दिखाने की कोशिश क्यों करते हैं... हरामी।'

'आशा करता हूँ कि साठे घर में हो!' वह था, उन्हें देखकर वास्तव में वह खुश दिखा। अगस्त्य ने कहा मुझे लगता है, हम तीनों थोड़ा पिये हुए है।' 'हमने सोचा था कि हमें थोड़ा और नशे में होना चाहिए और एक रात का खाना आप कराओ!' साठे के पीछे के गलियारे में एक बड़ी हड्डी वाली महिला थी, थोड़ी उभरी आँखों के साथ। मेरी भाभी गीति। भाभी, यह कलेक्टर और क्षेत्रीय वन कार्यालय के दो नालायक जवान। वह अच्छी लग रही थी। 'हम बस रात के खाने के लिए बैठे थे। मगर आप शायद अपना खाना थोड़ा बाद में चाहते हैं।'

साठे के बिस्तर पर किताबों के ऊपर भगवतगीता का एक अंग्रेज़ी अनुवाद पड़ा था। चित्रफलक पर एक नया अधूरा स्केच दिखा, युद्ध के मैदान कुरुक्षेत्र में आसानी से पहचाने जाने योग्य कृष्ण, लेकिन अर्जुन की जगह एक मोटा गंजा राजनीतिज्ञ, उसके सिर को खरोंचते हुए, उसका चेहरा अस्पष्टता के साथ सिलवटों से भारा था। 'यह एक श्रृंखला का पहला है,' साठे मुस्कुराया, कुछ कारणों से, बिस्तर के नीचे से चश्मा निकाला, सच में एक महत्त्वाकांक्षी योजना। हम सबको और अधिक सोडा चाहिए।' बस एक पल में वह बाहर चला गया।

भाटिया ने एक अनपढ़ की तरह एक किताब पकड़ी, एक व्यावहारिक सरकारी कर्मचारी की तरह, जो किसी भी मुद्रित दुनिया को नापसंद करता है, जो किसी भी रूप से अपने

व्यवसाय को आगे नहीं बढ़ाता; सिर्फ़ इसलिए कि उसका हाथ बेचैन था और किताब करीब थी। किताब क्रिकेट की गेंद भी हो सकती है या रुबिक क्यूब साठे ने भी यह देखा। अपने पीछे एक वर्दीधारी वेटर के साथ उसने दरवाजे से कहा, 'वह फ़िलिस्तानियों के लिए नहीं है। भाटिया ने एक शफ़ल कार्ड जैसे पृष्ठों को पूरा पलटा और किताब को नीचे रख दिया।'

साठे ने कहा, 'यह किताब ज़बरदस्त चुटकले का संग्रह है,' कुर्सी को ख़ाली करते हुए कहता है 'एक असल आंनद देने वाला संग्रह है।' वह फिर से निंदक जैसे कि लोगों को लगता है, वह ऐसा ही हो गया। 'लेकिन मैंने देखा आपको मुझ पर यकीन नहीं है।' वह स्थिर हो गया। 'क्या अपने कभी यह पढ़ी है?'

अगस्त्य ने कहा 'बिलकुल नहीं।' सवाल भाटिया के लिए था भी नहीं।

साठे गम्भीरता से उठा, दो क़दम बढ़ाकर, किताब उठाई और अगस्त्य की गोद में रख दी। 'इसे पढ़ो। जब तक आप इसे पढ़ते नहीं, हम इस पर चर्चा नहीं कर करेगें। मैं बता सकता हूँ मैं काफ़ी हैरान था।'

'तुम अभी नशे में धुत्त हो!'

'मैं उम्मीद कर सकता हूँ कि भाटिया को यह नहीं पढ़ना चाहिए। क्योंकि यह पंजाबी है या दिल्ली में जन्मा एक अमेरिकी– मुझे संदेह है कि अगर पंजाबी में भी इसका अनुवाद होता है तो भी यह पढ़ नहीं सकता।' साठे थोड़ा मुड़ा। 'आप उसके चहरे से देख सकते है, वह नहीं पढ़ता है। मगर आप।' वह चित्रफ़लक के सामने धातु की आकृति के सम्मुख कल्पना करने के लिए चला गया। यह एक बंगाली है, गवर्नर का लड़का और अज्ञात गोआ की ईसाई– हाँ मदना में सभी जगह खबर फैल चुकी है और इसमें कोई संदेह नहीं है कि, तुम्हें जाति में रखने के लिए तुम्हारे पिता ने तुम्हारी ग़रीब माँ के साथ जो किया है, तुम सबने असम के साथ किया था। तो केवल हमने रोना शुरू कर दिया जब अंग्रेज़ों

ने यही हमारे साथ किया था'– नक़ल में साठे ने आवाज़ तेज़ की, 'आप हमें अपनी प्रशंसा करने में असमर्थ बना रहे हैं?' - मेरा मतलब है कि क्या फर्क पड़ता है?' वह अपने थुलथुल शरीर के साथ हँसा। और इसलिए स्वयं के आधे हिस्से को नज़रअदाज़ कर रहे हो आप केवल एक बंगाली-धोती, रोशोगुल्ला और टैगोर के साथ बढ़े हुए हो।' वह फिर से हँसा, लगभग चित्रफ़लक पर लुढ़क गया। 'शायद तुमने अभी तक गीता नहीं पढ़ी क्योंकि बंगाली अभी तक साबित करने में समर्थ नहीं है कि यह उनमें से एक ने लिखी थी।'

'भाटिया ने कहा, 'बकवास बंद करो और कुछ कबाब लाओ!'

इसलिए, घटनास्थल के माध्यम से अगस्त्य अपनी आलमारी में मार्कस ऑरेलियस के पास भगवद्गीता रख सकता है। उन्हें पता था, पुलतुकाकू नाराज़ होंगे। (यह रासीन द्वारा लिखा नहीं है, आपको पता है कि आपको इसे अंग्रेज़ी में पढ़ना होगा) अगस्त्य हमेशा उम्र के साथ गीता- जैसी किताबों को जोड़ता था, जब जीवन के बाद का हिस्सा महत्वपूर्ण लगना शुरू हो जाता है, और विशेष रूप से एक रूढ़िवादी चाचा के साथ, जो हर रोज़ प्राचीन हिन्दू शास्त्रों को पढ़ता हो। एक ईसाई से शादी करके और बंगाल के राज्यपाल होने के बावजूद उसके पिता फिर भी सताया गए, कलकत्ता के क्षय और अंग्रेज़ी का पलायन से दुखी थे (पलटुकाकु उन्हें नापसंद करते थे फिर भी यह बुढ़ापा एंग्लोफाइल को समझ नहीं पाता।' कोलकाता को बहुत सुन्दर रखा गया क्योंकि लोगों को आज़ादी से घूमने से रोक दिया गया था। यहाँ तक कि इलियट सड़क एकदम साफ़ दिखाई देगी अगर आप उससे लोगों को हटा देते हैं तो। एक शहर लोगों के लिए है या हार्डिंग और उसके गिरोह के लिए है।) और महसूस करते थे दुनिया शांति में होगी अगर हर कोई हिन्दू बौद्धिक बन जाए। अधिकतम अंश गहन थे, लेकिन अगस्त्य कुछ हैरान-सा था:

'मन बहुत बेचैन है कृष्ण, अविवेकी और मनमौजी भी, इस पर लगाम लगाना मुश्किल है: मस्तिष्क को वशीभूत करना उतना ही मुश्किल है जितना शक्तिशाली हवाओं को वशीभूत करना।'

‘मन वस्तुतः बेचैन रहता है, अर्जुन : इस पर अंकुश लगाना कठिन है। मगर लगातार अभ्यास करते रहो और वासना से मुक्त होते रहो, तो सचमुच मन पर अंकुश लगाया जा सकता है।’

क्या मैं जिला विकास अधिकारी श्री बजाज से बात कर सकता हूँ?... हाँ... सर, मैं सेन बोल रहा हूँ, मैं आईएएस अधिकारी हूँ, मैं... हाँ, सर मैं एक हफ्ते पहले आया था (अगस्त्य ने खुद से कहा झूठ बोल दो, रिस्क ले लो)। सर, ... मैं बीमार था, सर, पहले कॉल नही कर पाया... हाँ, सर, ऊह, बहुत पेट में दर्द है, सर ... क्या कुछ समय में कॉल कर सकता हूँ सर?...ओह अभी?...नहीं, सर, यह सही रहेगा, मैं अभी आता हूँ।’

जिला परिषद की इमारतें कलेक्टरेट के मुकाबले कहीं ज़्यादा नई, बड़ी और भद्दी थीं, बाहर खड़ी आवारा भीड़ की तरह। प्रवेश द्वार के बाहर खड़ी एक जीप अगस्त्य के ध्यान को बार-बार भंग कर रही थी। वह युरोपीयन झंडे की तरह रंगी थी, नीला, पीला और सफेद रंग से और उस पर अंग्रेज़ी और वर्नाक्यूलर में प्रचार वाक्य लिखे हुए थे। आईयूडी प्रयोग करें, निरोध गर्भनिरोधक आपके लिए अच्छी है। कोपरटी खुशहाल परिवार सुनिश्चित करता है, क्या आपकी नसबंदी हो चुकी है? राष्ट्रीय नसबंदी कार्यक्रम में शामिल हों। नीचे लाल रंग से लिखा हुआ था, जिला स्वास्थ्य अधिकारी का अधिकारिक वाहन, जिला कॉन्सिल, मदना। शायद, अगस्त्य ने सोचा जिला स्वास्थ्य अधिकारी शायद पागलों के लिए होनेवाली हिमालय कार रैली में नियमित रूप से भाग लेते रहे हों। जीप के पीछे के दरवाज़े पर दो कुश्ती करते हुए दो टेढ़े मेढ़े लोग बने थे, उनके चेहरों पर टेनिस की गेद के आकार की बूँदों जैसी डिज़ाइन बनी हुई थी, उसने उन बूँदों को पसीने की बूंद ही समझा। जाँच पड़ताल के बाद उसने फैसला लिया कि फुटबाल जैसे सिर और धड़ से मोटी जाँघों वाले पहलवानों को विकृत नही होना चाहिए था यह किसी शैतान दिमाग़ वाले कलाकार (तामसे!) का काम था। पहलवानों के माध्यम से स्वास्थ्य विभाग

यह कह रहा था कि नसबंदी नपुंसकता का कारण नहीं है। ज़ाहिर-सी बात है जीप पर वह एक खुशी से संभोग करते लड़के को पेन्ट नहीं कर सकते थे, इसलिए उसने पहलवान पेन्ट किया। देखो, देखो, नसबंदी के बाद भी तुम सख्त रह सकते हो यहाँ तक कि आपका जननांक आपको उकसाने के बाद आप फिर भी सख्त सकते हो (चिंता की कोई बात नही है अगर तुम्हारा सिर और जाँघें बिना वजह बढ़ रही हो), और अपने जैसे लगने वाले आदमी के साथ कुस्ती कर सकते हो मगर तुम्हें पसीना आएगा परन्तु पसीना आना पौरुष की निशानी है, न?

लोग गलियारे में घूम रहे है, बेंच पर आराम कर रहे हैं, आँखो में इंतज़ार की चमक दिखती थी, दरवाजे पर एक खडूस चपरासी बैठा था ठीक वैसे ही जैसे पुलिस अधीक्षक के कमरे के बाहर बैठता है, अगस्त्य ने कहा, मै एक आईएएस अधिकारी हूँ, बस इतने से काम हो गया।

बजाज का कमरा बहुत ही खुबसूरती से सुसज्जित था, भूरे रंग के विभिन्न प्रकारों से। दो पुरुष उसके बग़ल में बैठे थे, और एक औरत घबराहट में पागल सी उसके सामने बैठी थी। ओह हाँ सेन, अन्दर आओ, अन्दर आओ। क़द लम्बा था और चितांजनक रूप से पतला। उदास आँखें और कम थोड़ी बजाज की पहचान थी, जैसे कि उसके पूर्वज स्पेनियल और डान कुईज़ोर रहे थे। अगस्त्य को एक मोटे लपरवाह पंजाबी की उम्मीद थी। बैठ जाओ और फिर देखो मज़ा। हम जिला परिषद के स्कूलो में शिक्षकों के पदों के लिए साक्षात्कार आयोजित करते है। खीस भंग हुई बजाज के सामने एक उम्मीदवार था। चौबीस ने पद के लिए आवेदन दिया है हम साक्षात्कार के लिए अठारह बुलाया हैस छह उपस्थिति हैं। सभी उम्मीदवार आदिवासी हैं उन्हीं के लिए पद आरक्षित है।' मेज पर अपनी कोहनी टिकाकर और अपने जड़ हाथ की कलाई से बग़ल में बैठे व्यक्ति को हल्के से मारा। इनसें मिलो, हमारे शिक्षा अधिकारी। दूसरे आदमी ने परिचय देने की ज़रूरत नहीं समझी।ऐसा लगा कि अगस्त्य के आने से इंटरव्यू में बातचीत में बाधा पड़ी। शिक्षा अधिकारी ने उसी गंभीरता और उत्साह से पूछना जारी रखा, 'अस्सी के बीस प्रतिशत कितना है?'

'वह हँसी, अपनी साड़ी का किनारा अपने मुँह में रखा और फिर बदले में पूछा पच्चीस?' बजाज ने अगस्त्य की ओर पेन से एक नाम पर ठकठकाया। अगस्त्य ने पढ़ा, खीखी करनेवाली औरत ने उसने सीनियर स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की थी और यहाँ तक कि किसी शिक्षा में डिप्लोमा किसी बिल से किया था। इसे अगर नौकरी मिली, तो वह दस वर्षीय आयु को गणित इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र और अन्य बहुत सारी चीज़े सिखाके पीड़ित करेगी।

शिक्षा अधिकारी, जो धैर्य में विश्वास करता है कि धैर्य एक मालिक के सामने प्रदर्शित करने के लिए अच्छी विशेषता है, सवाल समझाता है।

'पन्द्राह?' फिर से हँसी। बजाज गरजा बहुत ही क़रीब, और उसने जाने को कहा। 'अन्तिम, जैस एक छोटा काला युवक आया शिक्षा अधिकारी ने कहा, 'सर उम्मीदवार!' वह स्नातक था। उसने शुरूआती सवालों के जवाब बुदबुदाए। तब बजाज ने पूछा, राष्टपिता किसे कहा जाता है? 'नेहरू' एक रटारटाया उत्तर।

'ओह, और तब गाँधी कौन है? शायद राष्ट्र के अंकल? बाद में बजाज ने कहा, तीसरे का चयन कर लो और अन्य पाँच खारिज कर दो।' शिक्षा अधिकारी ने भरोसेमंद निंदा की और कहा, सर। 'लेकिन ये छः पद चार साल से ख़ाली पड़े हैं। और राजनेता और स्कूलों दोनों लंबे समय से शिकायत कर रहे हैं।

बजाज कंधे उचकाए बोला, ठीक है, तो उन सभी को नियुक्त करें और अगस्त्य को देखकर मुस्कुराया। जल्दी निर्णय लेने की उसकी साख थी। सेन आप देंखेगे, जब अब इस साल के बाद बीडीओ होगे, और इन चीज़ों से सीधा डील करेंगे तब आपको वास्तव में पता चलेगा विकास क्या है?

'अब तुम ठीक हो?'

अगस्त्य ने कहा, हाँ, सर। सोच रहा था क्या मतलब है (शायद वह उस इंटरव्यू से झटका लगा था।) और फिर याद आया ओ हाँ, उसका पेट ख़राब है।

‘तो हमारे साथ डिनर करो। मैं अपनी बीवी को फ़ोन करके बोल दूँगा।’

‘बजाज दोस्ताना हो रहा था। मगर श्रीवास्तव ने अगस्त्य को सचेत कर दिया था, यह एक साँप की तरह है, एक पदोन्नत, याद रखना, कोई नैतिकता नहीं है।’ बजाज श्रीवास्तव से दस साल बूढ़ा दिखता है मगर सेवा में पद में छोटा है।

एक मुस्कान के साथ एक वकील के लिए दरवाज़ा खोला गया। उससे आत्मविश्वास और पान की पीक दोनो टपक रही थी। ‘आहहा बजाज साहब!’ उसकी बेटी को कॉन्सिल कॉलिज में दाखिला नहीं मिला था, वह सिर्फ न्सूनतम दाखिला अंक से 0.4 प्रतिशत से रह गई। बजाज ने कहा,’ ओह। बजाज साहब प्रधानाचार्य को फोन कर सकते हैं। बजाज मुस्कुराया ‘नहीं’, प्रधानाचार्य को निर्णय लेने दो। उसका अपना काम है और मेरे पास मेरा। अरे, मगर कौन प्रधानाचार्य आपकी नहीं सुनेगा बजाज साहब? तुम वकील मुझे मेरे काम के हिस्से से अधिक बोझ देने मे आनंद लेते हो बजाज मुस्कुराया। वकील की हँसी में एक मासूम खुशी थी। तो यह पक्का हो गया। तो यह पक्का हो गया बजाज साहब? क्या पक्का हो गया? बजाज मुस्कुराया। बजाज साहब, इसका मतलब सिर्फ यह है कि फ़ोन करना है, एक लड़की का भविष्य दाव पर लगा है। अगस्त्य ने देखा मुस्कुराहट के साथ बजाज ने मना किया और बिना मुस्कुराहट के वकील चला गया, दरवाजा धम से बंद करके। बजाज अगस्त्य को देखकर झेंप से मुस्कुराया। अगस्त्य ने सोचा, श्रीवास्तव के सामने एक वकील कभी दरवाज़ा धम से बंद करके नहीं गया। पहले तो इस तरह के अनुरोध के साथ आ ही नहीं सकता था। कई शामों बाद, अगस्त्य ने श्रीवास्तव को पूरी घटना बतायी, जो की जीत की खुशी मे मुस्कुराया। पदोन्नत। यही समस्या है पदोन्नत की। लोग उसको वह इज़्ज़त नहीं देते, जिस पद का हकदार है।

उसी हफ्ते में अगस्त्य ने डिस्टिक जज को भी कॉल किया। जज ने फोंन पर कहा, 'पाँच बजे आइए। अगस्त्य ने कहा कि 'जी, सर।' वह मदना से प्रभावित न होना सीख रहा था। जज के घर के सामने टीन और कैनवस की गराज थी। बैठक फीकी हल्के रंग और अजीब थी। ऐसा लग रहा था बाहर रोशनी और गर्मी थी लेकिन जज ने कमरे मे ट्यूबलाइट ऑन कर रखी थी। दूसरे कमरे से आवाज़ से ऐसा लग रहा था कि पीड़ित कातिल को रोकने की कोशिश कर रहा था। मैंने तुम्हे एक हफ्ते पहले कलेक्टरेट के पास अपनी कार से देखा था, जज ने कहा। तुम अपने हाथ को पेड़ पर रगड़ रहे थे और सूँघ रहे थे और हँस रहे थे। किसी ने पंखा नहीं चलाया क्योंकि मुझे नज़ला है, जज ने कहा। अगस्त्य बैठा और पसीने से तरबतर होता रहा। वे एक घंटा निरर्थक बिन सिर पैर की बात करते रहे, वह पागलों की तरह झूठ बोलता रहा।' दरवाज़े के पास कोने में एक जूते की आलमारी खड़ी थी, उसके पास एक टूटा शीशा था, उसके साथ में आवाज़ करने वाला फ्रिज़।

एक दूसरे कोने में लाल रंग की प्लास्टिक की बाल्टी। अगस्त्य ने खुद से कहा कि उसने गराज बाहर बनाया है क्योंकि वह अपनी गाड़ी कमरे में नहीं रख सकता है। कोई कराची का हलवा लाया था।' क्या तुम गुनगुना पानी लोगे या ठंडा पानी? नहीं, मुझे तुम्हारा मूत चाहिए। जिला जज थोड़ा बहरा था। अगस्त्य को अपना झूठ चिल्लाकर बोलना पड़ा। उसे अचानक से गुस्सा आ गया। उससे सोचा अगर वह अपना मालिक होता तो वह यहाँ समय बर्बाद नहीं कर रहा होता।

जज ने कहा, मैं कुछ महीनों में सेवानिवृत्त हो रहा हूँ। मदना से बाहर निकलकर मैं बहुत खुश होउँगा। मैं अपना बेलगांव याद करता हूँ। अगस्त्य में अचानक बूढ़े बहरे आदमी के लिए हमदर्दी आ गई – इतने सारे लोग घर छोड़ रहे है, जिसे कभी नहीं छोड़ना चाहते हैं। जज ने धमकाने वाली आवाज़ में पूछा क्या तुम थोड़ा और हलवा लोगे? अगर तुम करोगे तो मैं दैनिक में कहानी दे दूँगा।

'जी, धन्यवाद!' अपनी घर की याद को लेकर जज की टिप्पणी ने अगस्त्य की झुँझलाहट को दूर कर दिया था। पहले जज एक पागल घर का बहरा और उबाऊ क़ैदी लग रहा था (अगले कमरे में से आवाज़ अब कभी कभी हँसी को भी शामिल करती है), लेकिन अब वह शंकर या अगस्त्य की तरह लग रहा था। एक और आदमी जिसने वर्तमान के साथ समझौता कर लिया। सब कुछ ठीक है, या लग रहा था। चाय (और डिनर को नहीं) का निमंत्रण उस इंसान से था जो मेहमानो को उस जगह बुलाता था जिसे वह खुद पसंद नहीं करता था। बिखरे हुए ड्राइंग रूम से संकेत मिलता है कि जैसे कभी लोगों को घर न बुलाया हो और न ही इस बात की कोई परवाह नहीं की होगी कि लोग क्या सोचते होगे। कुछ मायनों में जज उदास हो रहा था, अगस्त्य हँसना चाहता था।

जब उसने कहा, 'मै आपकी आज्ञा चाहूँगा, सर?' (उसने थोड़ा दफ़्तर का काम सीखा और मज़ा आया), जिला अधिकारी खड़ा हुआ, बुदबुदाते हुए कहा हाँ, हाँ। अगस्त्य उनके कंधे पर थपथपाना चाहता था और सांत्वना देना चाहता था और कहा उदास मत हो, लड़के, यह मेरी उम्र है उदास होने की और उसने पास से जज के चेहरे को देखा तो उसने महसूस किया कि घर से दूर होने की भावना का उम्र से लेना देना नहीं था।

सेन, तुम शामों को बोर होते होगे, तुम मुझे हमेशा फोंन कर सकते हो, और फोन पर बात करना। मैं तुम्हारी बोरियत को दूर करने की कोशिश करूँगा।

दो रातो के बाद, अगस्त्य पर बुखार चढ़ गया लेकिन इसका जज किसी भी तरह ज़िम्मेवार नहीं था। तीन बजे सुबह, वह सो गया– वह उठा क्योंकि बिजली चली गई थी। बिना पंखे के मच्छर उसे नोच रहे थे। कमरा बिलकुल अंधकारमय था, बारमदे पर कोई रोशनी नहीं थी। बुख़ार की वजह से उसे ज़्यादा पसीना नहीं आ रहा था। वह माँ के पेट में बच्चे की तरह सिकुड़ गया उसने अपने सूखे पड़े होठ को गीला किया। उसकी पीठ पर थोड़ा दर्द हुआ। वह टेबलेट के लिए उठना चाहता था मगर हिम्मत नहीं हुई। वह आराम करना चाहता था, बुखार और भी बढ़ा। बिजली आ गई। बरामदे की बिजली ने फिर से

कमरे को रूमानी कर दिया। तृप्त मच्छर दूर चले गये। मगर पंखे से उसे ठंड लग रही थी। उसने खुद को चादर के नीचे छुपा लिया। वह कुछ भी नहीं सोच सकता था। मन अस्वस्थ है, कृष्ण। कहाँ उसने यह पढ़ा था। उसने इसे पढ़ा था लेकिन हाल ही में। वह याद नहीं कर पाया।

वसंत छह बजे चाय लाया। अगस्त्य ने कहा, 'मुझे बुख़ार है'। वसंत ने उसकी तरफ़ अनमने मन से देखा, खैर, मुझे यह मत दो! दिगंबर सात बजे आएगा। अगस्त्य ने एक नोट के साथ आरडीसी के घर भेजा था। डॉ अजीब से नाम वाला लगभग आठ बजे आया।

उसका बहुत अच्छा व्यवहार था। अगस्त्य को बेहतर महसूस हुआ जब उसने उसे देखा। वह छोटा, नाटा, गुलाबी था। तुम मदना में क्या कर रहे हो? अगस्त्य ने खामोशी से पूछा। तुम्हें बंबई में अरबो को अपना पिछवाड़ा बेचकर पैसा कमाना चाहिए।

डॉक्टर ने कहा, 'थोड़ा वाइरल बुख़ार है, तुम्हें चिंतित नहीं होना चाहिए। तुम दो तीन दिन में सही हो जाओगे। तुझको बिलकुल महसूस नहीं करना चाहिए कि मदना में अच्छे डॉक्टर नहीं है, हमलोग है आपका ख़याल रखने कि लिए। अगस्त्य आश्चर्यचकित था: क्या उसका अकेलापन चेहरे पर आ गया था? या शायद ड्रॉक्टर यह सबको कहता है, यहाँ तक कलेक्टर को भी। श्रीवास्तव को परेशान करने के लिए यह सिर्फ़ एक तरह का बयान था कि जब मुझे ज़िले की देखभाल करनी है तो आप मेरा कैसे ख़याल रख सकते हैं?– श्रीवास्तव ने अपने नथुनों के माध्यम से तीखी हँसी हँसी।

मैं ख़ैर शाम को देखने आऊँगा, या कल सुबह। वरना तुम क्लिनिक आ सकते हो, अगर तुम आना चाहो।' उसने नुस्ख़े की ओर इशारा किया। अगस्त्य ने पढ़ा इसका नाम डॉ. मुलतानी था।

'क्लीनिक? क्या आप सिविल हॉस्पिटल से हो?'

डाक्टर ने कहा, 'ओह , न, न, न, मैं गैर-सरकारी डॉक्टर हूँ।' मुल्तानी खूबसूरती से मुस्कुराया, 'जोशी साहब सरकारी डॉक्टरों पर लगता यकीन नहीं करते। मैं सालों से उनके परिवार को देखता हूँ। मैं मदना के सभी सभी महत्त्वपूर्ण लोगों, कलेक्टर साहब, एस पी साहब, सभी महत्वपूर्ण लोगों को देखता हूँ।'

बाद में श्रीवास्तव ने उससे मुलाक़ात की तो वह कहने लगा, 'अगर आप आईएएस नहीं होते तो मुल्तानी आपके कमरे में कभी नहीं आता।'

मुल्तानी ने कोई भी फीस लेने से मना कर दिया। 'मैं अपने अच्छे दोस्तो से फीस कैसे ले सकता हूँ?'

जब वह दरवाजे पर पहुँचा, अगस्त्य को याद आया 'ओह, डॉक्टर मैं आपको एक और रोग लक्षण बताना भूल गया, नींद नहीं आती। मैं मदना में एक दिन में चार घंटे से ज़्यादा नहीं सोया हूँ जब से मैं यहाँ आया हूँ। क्या ये दोनों समस्याएँ जुड़ी हुई हैं?'

ओह-हो, मगर ऐसा क्यो है? बिस्तर की ओर मुड़ा। 'क्या आपको सोने से रोक रहा है? अगस्त्य को उसके चेहरे पर चिंता से आश्चर्य हुआ। उन अरबों को नहीं पता वह क्या खो रहे हैं।

'मुझे लगता है गर्मी' जैसे कि मैं आमतौर पर कंचनजंगा के शीर्ष पर रहता हूँ। और वो कहना चाहता था कि मेरा दिमाग ही तो समस्या की जड़ है।

हां, यह गर्मी बहुत बुरी है। मगर मैं आशा करता हूँ कि आपको कोई चिंता नहीं कर रहे हैं, कोई भी परेशानी या कुछ ऐसा तो नहीं है? देखिए, सामान्यत: यह दिमाग़ के वजह नींद नहीं आती है। अगर आपको कोई समस्या है तो शायद मैं आपकी समस्या में मदद नहीं कर सकता,लेकिन आपको ठीक से सोना चाहिए।

'न, न, मेरा दिमाग ठीक है।' अगस्त्य दूसरी ओर दीवार पर लगी तामसे का चित्र देखता है, एक अजनबी से और क्या वह कह सकता था।

मुल्तानी ने नुस्खे में कुछ और जोड़ दिया। अगर आप अच्छे से सोएँगे तो आप जल्दी सही होगे। वह खड़ा हुआ, छोटा और गुलाबी, मगर आश्वस्त। 'हम फिर से ज़रूर मिलेगे, सेन साहब, मगर अव्यवसायिक रूप से। अधिकतम मेरे मरीज मुझे तब याद करते है जब वह बीमार होते है। जब आप ठीक होगे, मेरा परिवार और मैं वहुत खुश होऊँगा अगर आप घर आएँ और रात का खाना हमारे साथ खाए, कोई औपचारिकता नहीं, मात्र परिवारिक रात्रि भोजन। वह मुस्कुराया। मैं हमेशा मदना से बाहर के रहनेवालों से बताना चाहता हूँ, विशेष रूप से उनलोगो से जो विभिन्न प्रकार की जगह के आदी हैं कि मदना भी एक अच्छी जगह है। आप यहाँ अच्छे दोस्त बना सकते हैं।'

दिन में कुछ और लोग आए सान्त्वना देने के लिए या फिर कि शायद यह देखने के लिए के उसे कहीं वह झूठ तो नहीं बोल रहा। शर्म आ रही थी। मदना का उपप्रभागीय अधिकारी, लाल के साथ,जोशी पहले आया, एक छोटा सा हँसमुख आदमी फिर शंकर आया, सुबह दस बजे दारु का भपका मारते हुए यह कल रात के बची रह गई गंध होना चाहिए, अगस्त्य ने सोचा है, शंकर भी दस बजे नहीं पी सकता है।

श्रीवास्तव कार्यालय के रास्ते में घूमते हुए आ गए, असहज महसूस कर रहे थे, यहाँ तक कि दोषी भी। तुम अभी तक अपने कमरे में सोफ़ा वापस नहीं लाए। कहाँ लोग बैठेंगें? मुल्तानी ने क्या कहा था? ओह, वाइरल बुख़ार। यह ठीक है, मुझे हैजा का डर था।

तुम अभी भी अपना पानी उबाल रहे हो न? इसके बाद तुम मेरे घर आ जाओ, वहाँ बहुत सारे कमरे है। तुम अच्छा खाना खाओगे और सहज होगे, तुम्हारा पास साथ भी होगा। वसंत के बच्चे अन्दर देखते, हँसते और दूर भाग जाते थे।

मसलन, अगले कुछ दिनों में उसने सोचा कि श्रीवास्तव की पेशकश से कैसे बचना है। कलेक्टर के पास रहने का मतलब उसके गुप्त जीवन का अंत होना। वह धूम्रपान और दोपहर के बाद कार्यालय से बच नहीं पाएगा। श्रीवास्तव के घर का घरेलूपन उबाने वाला होता है और ज़रूरत से ज़्यादा से ज़्यादा रहता। वह घंटो विस्तर पर और छत को घूर नहीं पाएगा और इधर-उधर नंगा घूमना, खुद से घूमना, संयम के बिना कल्पना करना। लेकिन सीधे मना करना असंभव था और उचित कारण देने पड़ेंगे। शायद श्रीवास्तव फिर से इस विषय का उल्लेख नहीं करेगा, या फिर उसे चुपके से बीमार पड़ना पड़ेगा, ताकि श्रीवास्तव को न पता चले, या वह उसकी बेटी का यौन शोषण कर सकता था (लेकिन बेटी बेहद अविश्वासनीय दिखती है)– वह इस तरह की कल्पना में चला गया।

दोपहर में फिर से बुखार आ गया जब अगस्त्य अंग्रेज़ी में रामायण पढ़ने की कोशिश कर रहा था। श्रीवास्तव ने उसे सुबह छोड़ने से पहले, घृणा भरी आँखों से देखा, और उसके सिर को हिलाते हुए देखा।

सोचा इस तरह की मोटी किताब पढ़ना, सोचो इस पर पैसे की बर्बादी, और साथ ही रखने की जगह की। उसने किताब तकिए के सिरहाने रख दी और फिर से छत की ओर ताकने लगा। दोपहर में बुखार रात के बुखार से कम ख़तरनाक है। बंद कमरे में अकस्मात् शांति में वह तेज़ी से हँसने लगा। भगवान, वह चुद गया था- बुखार मे कमजोर, दर्द होना, दमघोंटू कमरे में, मच्छरों द्वारा तबाह किया जाना है, पूरी तरह से अकेले, नौकरी के साथ जो उसे रुचि नहीं थी, ख़तरनाक मौसम में और अब वह पागलो की तरह यौन उत्तेजित। उसकी हँसी से दर्द उसके पेट में होने लगा। वह बगावत करना चाहता था। उसने ज़ोर से कहा, मैं अच्छा हो जाऊँगा, मेरा सर मूड़ दो, पट्टा डाल दो और मेरे रास्ते मे मुझे टहलाओ।' उसकी आवाज़ ने उसे चौंका दिया। वह अपना कोई भी संगीत सुनना नहीं चाहता था सभी कैसेट उसे दुखी करते थे। जब बिजली वापस आयी उसने रेडियो में हिन्दी खबरे लगा दी। वह सालो से अचम्भित था कि खबरे क्यों धीमी गति में पढ़ी जाती थी। अब यह उसके मनोदशा को उपयुक्त है ब्राह्मांड में स्पष्टीकरण

के बिना एक और अधिनियम। बाद में स्टेशन ने तमिल फ़िल्म का संगीत बजाया उसे रेडियो चलता छोड़ दिया।

एंटीबायोटिक कैप्सूल नीला और पीला था और गर्मियों में एक भीड़ वाले कलकत्ता के बस की तरह बासी पसीने वाली बगल की तरह बदबू आ रही थी। उन्होंने अपनी डायरी में नीचे नाम लिखा, पोनो मैक्स, यह जानते हुए कि कोई नहीं मानता है कि एक कैप्सूल इस तरह बदबू मार सकता है। मगर किसी को भी दिलचस्पी नहीं होगी। उसकी सामग्री कितनी बुरी होगी उन्होने सोचा, अगर जब प्लास्टिक में, यह इस तरह से बदबू आ रही है। मुल्तानी ने उसे दोपहर न सोने की कोशिश करने को कहा (आराम करो, मगर सोओ मत)। जब बुखार चला गया, उसने निर्णय लिया कि बीमार होना एक बुरी चीज़ है।

वह फिर हँसा, इस बार वह अपनी सोच मे बदलाव पर हँस रहा था। मगर बीमारी की अपनी खूबियाँ थीं। उसे धोना या स्नान या अपने दाँतो को ब्रेश करना नहीं था और उसके क्रोच से बदबू की चिंता नहीं थी ('लुढ़कती छिपकली और छम:' उसने एक बार मदन को इस प्रकार वर्णित किया था) क्योंकि कोई भी उसके साथ अपने विस्तर नहीं बाँट रहा था।

अच्छे मूड में, उसने रेडियों बंद किया और कैसेट डाली। एला फिडजेराल्ड कोल पोर्टर गा रही नीरा द्वारा एक उपहार (मुझे पॉप संगीत पसंद नहीं है, मै इसका अनुसरण नहीं कर सकता हूँ, उसने कहा था। उसने अपनी आँखें नाटकीय रूप से लुढ़काई और कहा एला फिडज़ेराल्ड पॉप संगीत नहीं हैं।) बाद में उसे गाने पसंद आए। मगर उसने नीरा को न बताने का निर्णय लिया। मुझे पैरिस से प्यार है। उसकी शानदार आवाज़ ने उसे खुश किया। उसने अस्पष्ट रूप से वंचित महसूस किया, उसने पेरिस नहीं देखा था, कैसा शहर होगा जिस पर इस तरह का गाना लिखा गया है। एक कोलकाता का गीत भी था, लेकिन वह सिर्फ़ एक बुद्धिहीन सेना का गीत था, युद्ध में किसी वेश्या के बारे में था, वह कभी भी भारत से बाहर जाना नहीं चाहता था (कि वह भाटिया के सामने, वह मुस्कुराया) उसने यूरोप और अमेरिका को महँगा, विचित्र और अलग-अलग लोगो के साथ छोटी-मोटी

ग़लतफ़हमियाँ, साफ सुथरे रास्ते, जहाँ लोग उसे दिख रहे होगे। 'मुझे गरमियों में पेरिस पसंद है।' उसने कलकत्ता के लिए प्यार का पैदा होना महसूस किया और हँसा, बंगाली की तरह, बंगाली को ही कलकत्ता के लिए विश्वास था,बार-बार ज़ोर देते हैं कि वह उसकी आत्मा है। ध्रुबो ने एक बार कहा था, 'तुम्हें लन्दन बहुत पसंद आएगा।' मुझे लगता है कि आपको उस प्यारे लौंडेबाज को लिखना चाहिए, जो हम सबको प्यार करता है, उसका नाम क्या है, एनोपॉवेल, खुद को नीरद चौधुरी का पोते के रूप में पेश करता और एक आमंत्रण के लिए गिड़गिड़ाने लगा। वह तो बंगाली मे बदल गया था, लंदन बहुत अच्छा है इसका टुकड़ा एक साफ धुले कलकत्ता की तरह है और सभी बंगाली लोग इसे पसंद करेगे, और एकदम जड़ से एंग्लोफ़िल्स है।

अगस्त्य ने सोचा, कुछ जगह पुरानी होने के वजह से सुन्दर और रोमाँटिक लगती है। कलकत्ता था (और नहीं था), इस्तांमबुल, वियेना, हांगकांग (बैंकॉक में यहाँ तक कि केले को योनि से दिलाता था, मदना ने कॉलेज के पहले हफ्ते में ही यह जानकारी दे दी थी। क्योंकि वह अपने माता पिता के साथ पन्द्राह दिनों के लिए दक्षिण-एशिया गया था घूमने। और वे केले काटके तुम्हे प्लेट मे देते और तुम्हे खाना होता है वरना वह बुरा मान जाते हैं। 'वे कौन थे?' अगस्त्य जनना चाहता था, सोचता है, शायद सभी बैकॉक में ऐसा व्यवहार करते थे। बस कन्डक्टर, कैमिस्ट, सिनेमा हॉल में सीट दिखाने वाला, बस हर कोई) अचानक से ये नाम ज़िंदगी में नहीं रह जाते हैं लेकिन सच्चाई यह है कि सुनने में अच्छे लगते हैं क्योंकि वह पहुँच से बाहर होते है। उसे बाहर की दुनिया के अनुभव याद नहीं था– थोरियो ने क्या कहा था, बाद में मै पता करना चाहता था कि मैंने नहीं जिया था (लेकिन थोड़ा पागल था, और शायद इसका अर्थ था कि वह एकदम अलग था जो वह है, अगस्त्य, उससे मतलब रखना चाहता था)।

वसंत उसके लिए चाय लाया, जम्हाई लेते हुए पूछा, कि वह कैसा था।

'मुझे लगता है मैं इस शाम तक मर जाऊँगा।'

वसंत उस पर व्यंग्यात्मक मुस्काता है, 'यह तो बहुत आसान है।'

'सब उबाल दो। एक बूँद भी तेल न हो। मुझे उबला हुआ खाना ही खाना है।'

'उस शाम दिगंबर ने उसका पहला पत्र दिया। उसने कहा सर,' आखिरकार कोई आपको लिख रहा है ।'

उसके पिता ने निजी पत्रों के लिए कभी राज भवन की स्टेशनरी का इस्तेमाल नहीं किया, लेकिन उनकी लिखावट आसानी से पहचानने योग्य थी। वह पत्र लेता है, जैसे वह सब कुछ देखता है, गंभीरता से।

मेरे प्रिय ओगु,

इस देरी के लिए मुझे खेद है लेकिन मुझे अपना जवाब तैयार करने के लिए समय चाहिए था। मुझे तुम्हारा पत्र चार बजे, दोपहर बाद मिला। मैंने फौरन पढ़ा और एक बार दोबारा रात में। मैं तुम्हारे मदना में नाखुश होने पर नाख़ुश हूँ। तुमने इसका विशेष रूप उल्लेख नहीं किया है लेकिन यह तुम्हारे पत्र की हर पंक्ति में स्पष्ट है।

अपनी पिछली बैठक में मैंने शायद बहुत ज़्यादा बात की थी, लेकिन फिर मुझे लगा था कि मुझे बहुत कुछ बोलना था। मैंने सुझाव दिया था कि तुम्हारी नौकरी एक विशाल विविधता प्रदान करेगी, और तुमको अन्य परिस्थितियों और अस्तित्व की झलक देगी जो शुरू से ही चौकने वाली साबित हो सकती है। तुम्हारा असंतोष अब मैं समझ गया हूँ। मैंने तुम्हारे पत्र को पढ़ने के बाद पुलतु को फोन किया। उन्होंने कहा कि उन्होंने उस पत्र से वही महसूस हुआ है जो तुमने उसे लिखा था। उसने तो, हमेशा की तरह, हम दोनों को दोषी ठहराया। शायद पुलतु सही था बहुत पहले, जब उसने मुझे तुमको एक बोर्डिंग स्कूल में डाल देने पर आपत्ति की थी। उन्होंने कहा कि एक लड़का हमेशा, घर पर बड़ा होना चाहिए लेकिन वह इतना अप्रत्याशित है कि उसे गंभीरता से ले जाने के लिए वह असफल था।

लेकिन ओगु, याद रखो कि मदना कोई विदेशी जगह नहीं है तुमको इसे समय देना चाहिए। मुझे लगता है कि तुम अपनी नौकरी को आखिरकार पसंद करोगे लेकिन अगर तुम ऐसा नहीं करते, तो दृढ़ता से सोचो कि तुम इसके बजाए क्या करना चाहते हो, और खुद को बदलो। तुम्हारे पुराने मणिक काका कुछ दिन पहले आये थे, पिछले शनिवार को, बहुत कम समय के लिए। वह चाहते हैं कि मैं उनकी पोती से तुम्हारी शादी करूँ। मैंने उनसे कहा कि आप अभी तक शादी का नहीं सोच रहे हैं, लेकिन वह असहमत दिखे। वह तुम्हारा पता ले गए थे। इसलिए आचम्भित मत होना, अगर तुम इस विषय पर उनकी सुनो तो। तुमने लिखा है कि पूजा के दौरान एक ब्रेक लेने का तुम्हारा इरादा है। क्या तुम कोलकाता आओगे या दिल्ली जाओगे? शायद तुम दोनो कर सकते हो। कलकत्ता अभी लगातार गर्म रहेगा, अपना ख़याल रखो। निराश मत हो। नियमित लिखना। मैं भी नियमित रूप से लिखने का प्रयास करूँगा।

प्रेम सहित,बाबा

अपने चेहरे पर आधी मुस्कुराहट के साथ अगस्त्य ने फिर से पत्र पढ़ा, जैसा कि वह सोच रहा था कि उसके पिता यह लिख रहे हैं। मदना में विताए उसके महीनों में, अच्छी तरह से लिखे गए पत्र हमेशा उसे उत्तेजित करते थे, उसे अन्य संसारों और दृष्टिकोणों को लेकर उसे परेशान करते थे। वह ऐसे औपचारिक पत्रों से नफ़रत करता जिन की एक भी लाइन सोच समझ कर नहीं लिखी गई हो। जो बातचीत के लिए बहुत ज़रूरी है मगर पत्र एकतरफ़ा बातचीत है। सोच समझकर लिखता था और अच्छे पत्र सँभाल कर रखता था।जब कभी बाते, वाक्यांश और याद आ जाती थी तो मुस्कुराता था पुराने पत्र फिर से पढ़ता था ।

मुल्तानी ने उसे चार बार के लिए नींद की गोलियां फैंसी पैकेट में दी। उन्हें सोमनोरक्स कहा जाता है और बंबई के पास उल्हासनगर में बनाया गया था। प्रत्येक पैकेट पर एक लापरवाह राजा बनाया, उसके सिर के नीचे हाथ और आँखे किसी बड़े से छेद की तरह थी और उसके नीचे:...

-वो आंतरिक शान्ति की नींद

वो बाहों में लिपटे चैंन भरा प्रेम,
जो दिन को थपकी दे कर सुलाती है,
आशांत मन को लोरिया सुनाती है,
प्रकृति का सबसे संपूर्ण तोहफा,

-शेक्सपीयर,मैकबेथ

अगस्त्य को तामसे की पेंटिंग के रूप में ले जाया गया, छूने में पैकेट उतना ही बुरा था। मुस्कुराते हुए, उसे एक लिफाफे में डाल दिया और डॉ. उपाध्याय उस के पहले के विभाग के उपाध्यक्ष के नाम पर भेज दिया। माननीय सर, फिर से वही बचकानी हरक़त की है, उल्हासनगर में किसी ने अंग्रेज़ी साहित्य के सबसे प्रसिद्ध नींद न पड़ने वालों शख्स का प्रयोग किया है। मैंने सोचा था कि आप एल. एच. मयर्स की तुलना में इसे और अधिक रोचक समझेंगे अन्यथा में धीरे-धीरे दूसरी गियर में आगे बढ़ता हूँ, जैसे कि... उसने मूँह मे एक प्यार से गोली डाली लेकिन ग्यारह बजे वह अभी भी बिस्तर पर करवट बदल रहा था। और याद करता है कि कैसे उसके पिता नशे की दवा खाकर भी सो नहीं पाते थे। उसको खुद को बूढ़ा महसूस करके अच्छा नहीं लगा।

गुसलख़ाने के दरवाज़े के पीछे एक खटखटाहट फिर एक झटका। उसे बंद दरवाज़ों से नफ़रत थी। शायद एक बड़ा चूहा उसका साबुन और शैम्पू की बोतल की प्लास्टिक को चबा रहा है। आवाज़ फिर से आई। वह उठा, चिंता से और बुखार से गरम और सभी लाइट ऑन की, उसको कमरा बहुत उदास लग रहा था। उसने अपना सफेद कैनवस जूता उठाया और देखा और उस कीड़े मकोड़े के लिए देखा (यह उसके पिता की हिदायतो में से एक थी)। शायद एक उड़ता चूहा। अपनी घबराहट पर चिढ़कर उसने दरवाज़ा खोला। साथ ही उसे अपने उतावलेपन पर पछतावा हुआ। वह रोशनी को टटोलते हुए गया। शायद वह बिच्छू है, स्विच पर बैठा। एक उड़नेवाला बिच्छू, लम्बा और काला, हमेशा के लिए जो तुम्हारे गले के पीछे बैठ गया है और वही पर रुका हुआ है। यहाँ तक कि सभी बारह सोनोराक्सेस से भी आपको रात की नींद नहीं मिल सकती है। रोशनी में पहले कुछ नहीं

लगा तो उन्होंने कोने में बड़े मेढ़क को देखा। उसने चारों ओर देख लिया कि क्या कुछ और था और फिर दरवाज़े के सामने ठहर गया।

उसने सोचा, कैसे कोई बाथरूम से एक मेढ़क निकाल सकता है? मेंढक काला हरा दिखता था और काफी शांत। या क्या यह एक बाथरूम, मेंढक के साथ साझा करना ठीक है? वह तय नहीं कर सका इसलिए उसने दरवाज़ा बंद कर दिया और वसंत को ढूँढने में निकल गया।

वसंत पूरे परिवार के साथ खुले में सोया हुआ था। उनके परिसर का एक हिस्सा किसी दंगे के बाद के राहत शिविर की तरह दिखता था, कुर्सियों बर्तनों और तसलों के बीच बिस्तर के बाद बिस्तर।

'वसंत, वसंत।' उसने जल्द ही सभी को जगा दिया सिर्फ वसंत को छोड़कर। तीन अन्य अपने बिस्तर से उठा गए और अचंम्भित वसंत को हिलाकर उठाया। अगस्त्य ने सोचा कि शायद उसने उसकी सोमनोरैक्स चुरा ली थी। क्या तुम मेरे साथ थोड़ा चलोगे? उसके श्रम के लिए बहुत कुछ वसंत ने कुछ नहीं पूछा और उसके पीछे आँखें मलते हुए चलने लगा, अपनी लुंग्गी सही करते हुए और जम्हाई लेते हुए।

अगस्त्य ने उसे मेंढक दिखाया मेंढक पूरे आराम में दिख रहा था, लगभग दार्शनिक की तरह। कैसे इसे बाहर धक्का दूँ?' वसंत ने उसे देखा। अगस्त्य चिंतित था। तुम्हें लगता है इसे यहाँ रहना चाहिए? जहरीला?... एक साँप मेंढक खाता है न?... तुम्हारा। मतलब क्या है कि मेंढ़क भाग्य लाते है...' मगर वसंत की चल गयी। महीनों के लिए मेंढक कभी-कभार रहता है। वह काफी शांतिमय रहा। कभी-कभी उन दोपहरों में अगस्त्य अपने आप को दरवाज़े के पीछे छिपाकर पानी के मग्घे फेंक देता था। लेकिन वह हमेशा अपनी मर्जी से ही हिला, कभी-कभी एक कोने के लिए कमरे में घुसने के लिए, जहाँ वह खुद को हर हाल में निर्वाण में स्थिर कर सकता था। कितना साधारण जीवन जीता है हरामी, ईष्या में अगस्त्य सोचता और कुछ दिनों में वह इसका नाम देता दे है, दादरु।

अगली सुबह बरामदे में वह अपनी चाय पी रहा था और तभी उसने एर्नाकुलम एक्सप्रेस की तेज़ी से कलकत्ता जाने के रास्ते पर देखा। शंकर अपने कमरे से आया हुआ, भयानक दिखता और गंधमार रहा था, 'ओह, सेन साहब,' डगमगाती चाल में, सेन साहब,' और डगमगाती चाल में उसकी ओर बढ़ा, सौ रूपये के जल्दी नोट से खुद को पंखा करते हुए। 'आपके लिए।' वह कुर्सी के पीछे झुकते हुए, वसंत को इशारा किया, चाय के लिए उससे पूछा, चारों तरफ़ देखा, साँस निकाली और कहा, मैं सारी रात जाग रहा था, गाना गा रहा था।

'ओह, मैंने तुम्हें सुना नहीं।'

'धीरे-धीरे से, नियंत्रित गायन। शिव मेरी पत्नी को लेने कोलतंगा गया है। उसे कल वापस जाना चाहिए था, उसने अगस्त्य के चेहरे पर लयभरी साँस ली।' 'तुम्हारी नाक की कील से मोती गिर गए मेरी प्रमिका।' शानदार ठुमरी सेन साहब, आपने सुनी?

अगस्त्य के पास एक अच्छा गीत था। मगर शंकर ने एक गीत कभी नहीं गाया, जिसने यौन रिसाव को इंगित किया हो। मोती गिरने का मतलब हाईमन का टूटना?

'छी, छी, छी, सेन साहब, सेन साहब।' शंकर, भंग और नशे में दिखता था। क्या कह रहे हो आप। यह बहुत सुन्दर सीधा विचार है– मेरी प्रमिका, तुम्हारी नाक की कील से मोती गिर गया है और मुझे लगता है आपको संगीत की तारीफ़ करनी चाहिए। वह बैठा और अपनी कुर्सी की ओर फिर से झुका। कभी-कभी वह फिर से अपना सिर हिला रहा था, ज़ाहिर तौर पर अगस्त्य की कुटिलता से तबाह हुआ। एकदम उसने पूछा, 'बुख़ार कैसा है?'

अभी बुखार नहीं है। हालाँकि मैं अभी भी थोड़ा कमज़ोर हूँ। वहाँ मेरे कमरे में एक मेंढक है। शंकर ने उसको देखा, लाल आँखे थीं और नहीं समझ रहा था। वह कल रात आया। वह अभी भी-वहाँ है गुस्लखाने के उसी कोने में। वसंत ने ज़ोर दिया कि मेंढक

कमरे में रहना सौभाग्य है। शंकर ने जम्हाई ली। अगस्त्य को उसके दाँतों के रंग पर यकीन नहीं हुआ। जगदम्बा कैसी है? जगदम्बा कैसी है? उसने कहा कि मैं अगस्त्य के बाद खुश हूँ।'

'लेकिन आप उसकी मदद करना चाहते है तो आपको देवी के प्रति अविनीत नहीं होना चाहिए। देखो, अगर मेंढक आपके लिए सौभाग्य ला रहा है। आखिरकार, सब हमारे इर्द गिर्द है। वसंत को घेरने के लिए दोबारा चक्कर लगाया। सर्किट हाउस और आकाश , विलक्षण, मौलिक रूप से अभिकल्पनीय है। मैं मदना में क्या कर रहा हूँ जबकि मुझे कोलतंगा में होना चाहिए और मैं होना चाहता हूँ? मैं इसे गहराई से बेतुके सवाल के रूप मैं देख रहा हूँ। तुम कहोगे क्योंकि तुम यहाँ नियुक्त हो गए। मगर क्यों मुझे यहाँ नियुक्त होना चाहिए?' वह अभियन्ता है, जो मदना से है और जो मदना में नियुक्त होना चाहते और तबादले के लिए मंत्री को तीस हज़ार रूपये देने के लिए तैयार है; और मंत्री को और ज़्यादा नहीं चाहिए। तो मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ। मेरे कारण इस दुनिया के साथ सामना नहीं करते है तो मैं जगदम्बा से प्रार्थना करता हूँ और कहता हूँ, कृपया , आप मेरे लिए यह संसार ठीक कर दे। तब तक मैं दारू पीता और गाता हूँ। सामान्यत: तुम्हें कैसे पता कि मेंढक अच्छा शकुन नहीं है। तुम कहोगे, मेरे कारण कहते है। मगर सच्चा उत्तर सरल है, कि तुम दिल्ली और कलकत्ता के घरों में रहे हो और यह मेंढ़क पहले तुम्हारे कभी भी गुलसख़ाने में नहीं रहा, तो तुम्हें पता नहीं कैसे इस पर प्रतिक्रिया दे और क्योंकि सिर्फ यह अचानक था तो तुम्हें यह पसंद नहीं। एक मेंढ़क अच्छा जानवर है, और इंतज़ार करो और देखो, यह तुम्हारे कमरे के कुछ मच्छर खा जाएगा।

तब मदना में बारिश उतरी थी। जिसके चलते वहाँ कुछ दिनों से हवा में भारीपन था, बिजली अक्सर गुल हो जाया करती थी। 'बारिश से पहले अक्सर ऐसा ही होता रहा है,' वसंत ने बड़ी सूझ-बुझ से ऐसा कहा। उसने सुबह ही आकाश की तरफ़ देखते हुए भविष्यवाणी की थी' आज बारिश होगी'। एक और गर्म दुपहरी, अगस्त्य बिस्तर पर निवस्त्र हो इस तरह आलस में पड़ा हुआ था मानों उसे लू लग गई हो। अचानक एक गर्जना हुई और शोर सुनाई दिया जैसे दूर कहीं लड़ाई हो रही हो। अगस्त्य को उस आवाज़ को पहचानने में कुछ समय लगा। फिर वह बिस्तर से उठ कर अपनी लुंगी और कुर्ता ढूँढ़ने लगा लेकिन वह ढंग से लुंगी-कुर्ता नहीं पहन सका। जल्दबाज़ी करने की वजह से उसका सिर और बाहें कुर्ते में उलझ गए। वह बाहर की ओर लपका। बाहर बारिश हो रही थी।

बारिश की वजह से संसार एकरंगा हो चला था, ऐसा लग रहा था जैसे आकाश में विस्फोट हो गया हो। बादल, इमारतें, पेड़, सड़कें सभी पर स्लेटी रंग की धुँधली छांया फ़ैल गई थी। कुछ ही मिनटों में रोड़ियां पानी से सराबोर हो गंदली और बुलबुलेदार हो गई। वसंत के बच्चे निर्वस्त्र हो आजाद-पंछी की तरह दौड़ लगाते और चिल्लाते हुए आये। वे मिट्टी में लथ-पथ, नाचते-गाते और अठखेलियाँ करते सभी के आकर्षण का केंद्र बने हुए थे। अगस्त्य ने सोचामौसम के जानकार ठीक कह रहे थे, मानसून में सचमुच कुछ सुधार हुआ है, मेरा मतलब साड़ी से नहीं है, हा हा हा वसंत की पत्नी जो समय से पहले बच्चा जनने की वजह से कमज़ोर है। वह अपने बच्चों को रोकने के लिए आई है। उसके टखने और पिंडलियाँ बहुत ज़्यादा पतले हैं।

इधर कमरे की लकड़ी की छत कोने से टपकने लगी है। थोड़ी-थोड़ी देर में नारंगी रंग की बाल्टी में पानी टपकने की आवाज़ उसे बेचैन कर रही थी। थोड़ी देर में अगस्त्य ने महसूस किया कि वह एक के बाद दूसरी छपाक की आवाज़ का इंतज़ार करने लगा था। वह फिर से बाहर की तरफ़ निकल गया। पूरा मदना बारिश में धुल गया था, पेड़ों पर नई हरियाली थी। कहीं कोई धूल का निशान नहीं बचा, इस वजह से सबको भ्रम हो रहा था कि उनकी आँखों की रोशनी में सुधार हो गया है। बारिश मंद और सुहावनी हो गई

थी। उसने अपना छाता खोला और सैर के लिए चल दिया। कुछ दूर चलने पर उसके कैनवस के जूते मिट्टी से सन गए।

कुछ बहुत ही साधारण सी दिखने वाली महिलाओं की एड़ियां और पिंडलियाँ बहुत ही आकर्षक होती हैं, नीचे से पतली और घुटनों की तरफ़ फूली हुई, उसे वसंत की पत्नी की याद आई। उसे लगा श्रीमती श्रीवास्तव तो डगमगा कर चलती है। मदना की हवा में ताज़गी और खुशबू थी, कोई मैला या धूआँ नहीं। उसने सावधानी से चलते हुए रेल ट्रैक तक पहुँचने में पंद्रह मिनट लगाए। उसे उन पटरियों पर चलना अच्छा नहीं लगता जहाँ पर लोग हर समय मल-मूत्र विसर्जन करते रहते हैं। उसने लेवल-क्रॉसिंग के किनारे इंतज़ार किया और ट्रकों को गुज़रते हुए देखा। उसने बारिश के छिद्र को देखा और काले धूएँ को हटा दिया। उसने सोचा, इस समय बारिश में रेलवे क्रॉसिंग पर देख कर हर कोई मुझे पागल समझ रहा होगा। अचानक क्रॉसिंग नीचे आ गया। ट्रकों की कतार लगनी शुरू हो गई, उनके चालक अपनी लुंगी को दुबारा बाँधते हुए और जांघों को खुजलाते हुए बारिश की तरफ़ मूहँ किये हुए पेशाब करने और धूम्रपान के लिए नीचे उतरे। उसे यह जानने की उत्सुकता हुई, क्या यह ट्रेन मद्रास से दिल्ली जा रही है या हैदराबाद से कलकत्ता? उसने अचानक से निर्णय लिया यदि यह कलकत्ता जा रही है तो, जगदंबा सही होगा, दादुर अच्छा शकुन है। मुझे ख़ुशी होगी। यदि दिल्ली होगा तब सब गड़बड़ हो जाएगा। वह रुका और उसने मेरे शेष जीवन में एक उपसंहार जोड़ दिया। उसने कुछ पलों तक इंतज़ार किया और अचानक से परेशान हो हँसा। यह मालगाड़ी है, धीमी और भारी, खाली बोगी के दरवाज़ों पर खड़े हुए कुछ लोफरों वाली। इसके पहिये विशालकाय और अद्भुत हैं, हत्यारे से। लोग हर समय उनके नीचे से गुज़र जाते थे। जल्दी जाने का यही एक सही तरीका था।

लेकिन ट्रेन को गुज़रते हुए देखना अच्छा था, चूँकि वह कुछ जंगली कैनबिस लेने के लिए पटरियों से थोड़ा नीचे चला गया था, अभी तक किसी तरह की अस्थिरता भी है। ट्रैन उसे यह अहसास दिलवाती हैं कि संसार बहुत बड़ा है और वह उसे साथ में लिए बिना आगे बढ़ रहा है।

यहाँ पर दो ट्रैक हैं एक घुमावदार घाटियों और चर्च की बगल में पान की दूकान की तरफ़ गायब होकर पावर स्टेशन की तरफ़ बढ़ जाता है। दूसरा ट्रैक सही में काफी सीधा है बहुत ही व्यवहारिक जिसका अंत आकाश के किनारे को छूता हुआ लग रहा था। तब उसे यह ख़याल आया कि साठे के साथ उसने एक गर्म दोपहर को पुल से इन पटरियों को देखा था, दूर से वह ब्रिज पर संघर्ष करती हुई खिलौनों जैसी कारों और ट्रकों और धीरज रखते हुए सहजता से पैदल चलने वालों को देखा करता था। उसे हैरानी हो रही थी कि वह बिना किसी कारण इन कड़ियों को परिप्रेक्ष्य से जोड़ रहा है मैं सोच कुछ रहा हूँ देख यहाँ रहा हूँ यह सोच कर उसे अजीब लगा।

अपने सिर पर बूँदों को महसूस करने के लिए छतरी को पीछे हटा कर उसने रुक-रुक कर फिर से चलना शुरू कर दिया था, वह ट्रकों की वजह से सड़क से नीचे उतर गया था। उसी समय एक बहुत ही प्यारी एवं लंबी और सुदृढ़ शरीर वाली आदिवासी औरत उसके पास से गुजरी। ये लोग अभी भी अपना अस्तित्व बचाये हुए हैं। वह बड़बड़ाया आदिवासी शोषण और कृषि सुधार के बारे में कलात्मक फिल्मों से बाहर, वजूद अब भी बखूबी कायम है। उस स्त्री के फ़टी एड़ियों वाले लंबे पैर थे, और उभरी हुई नसों वाले हाथ थे। उसे लगा कि एक महिला को सहवास के बाद लाड-प्यार की अपेक्षा रखने वाली और नाज़ुक न होकर ऐसा ही मज़बूत होना चाहिये, फिर अपने विशेषण वाक्याशों पर वह धृष्टतापूर्वक मुस्कुराया। वह रुका, उसने आदिवासी अहसास पाने के लिए इंतज़ार किया। तब उसे सिर्फ तंबाकू और पसीने का आभास हुआ।

उसने दूर से भाटिया को रेस्ट हॉउस की तरफ़ मुड़ते हुए देखा। उसने हाथ हिलाया, भाटिया ठहर गया। शिव, एक महिला के साथ उसकी तरफ़ आ रहा था। वह शंकर की पत्नी थी। अधेड़ उम्र की मलिन स्त्री जिसके होठ उसके दाँतों को छुपाने में नाकाम थे,वह हिंसक दिखती थी।

अगस्त्य ने कहा,'खूबसूरत बारिश है।' शिव ने आँख मार कर हाँ में हाँ मिलाई।

'हेल्लो, मैंडी अद्भुत बारिश।'

हाँ, कम से कम यह जगह तो ठंडी हो गई है। लेकिन अब मच्छर ज़रुर आ गए हैं, मैंने आपको फ़ोन करने की कोशिश की मगर मुझे लगा कि लाइन्स काम नहीं कर रही'। उन्होंने रेस्ट हाउस से दूर चलना शुरू कर दिया। 'यहाँ पर एक दूसरा वन का सहायक-संरक्षक है जिसके साथ मेरी अच्छी दोस्ती है। उसका नाम गाँधी है। क्या मैंने पहले कभी उसके बारे में तुम्हें बताया है? उसने हमें अपने यहाँ चाय का न्यौता दिया है, तुम्हें भी। उसने तुम्हारे बारे में सुना है और वह तुमसे मिलना चाहता है। वह अलवर का एक अच्छा, भोला-भाला लड़का है। उसकी पत्नी वाकई कामुक है, वह भी गाँव की है, काश मैं उससे सहवास कर पाता।'

'मदना में सहवास के लिए कुँवारे क्या कर सकते हैं, वयस्कों की तरह हस्तमैथुन के अलावा?'

'मैंने साठे को एक बार कहा था, उसने हमेशा की तरह हँसते हुए कहा था, तुम्हे क्या लगता है मैं हैदराबाद अक्सर क्यों जाया करता हूँ।' मैं सोचता हूँ गाँधी एक बढ़िया इंसान है लेकिन दिल्ली में मैं उस जैसे को दोस्त कभी ना कहता। मैं उसे छोटे शहर वाला कहता।'

इस वाक्य ने अगस्त्य को चिढ़ा दिया। वह शहर को हास्यास्पद तरीके से परिभाषित करना चाहता था।' शायद ही यह दिल्ली की ग़लती है। हम कॉलेज में दोस्त नहीं थे। उसने भाटिया को नापसंदगी से देखा उसने दूसरी टी शर्ट पहन रखी थी जिस पर 'हेरपर इज़ फॉरएवर' लिखा था। दूसरा बैचेन कर देनेवाला अहसास, जिससे भाटिया की एक मज़ाकिया छवि बन रही थी।

मैं जगह-जगह जाकर परिचितों की संख्या नहीं बढ़ाना चाहता। मैं नहीं समझता कि एक निश्चित उम्र के बाद कोई भी नए दोस्त बना सकता है। यदि आप मेरे जैसी

नौकरी में हैं तो अपने पुराने दोस्तों से लम्बे समय तक दूर रहते हैं, वे ऐसा ही जीवन जीते हैं जैसा कि आप जीना चाहते हैं, और जब आप अगली बार उनसे मिलते हैं तब धरातल पर सब कुछ वैसा ही होता है, क्योंकि आप उन चीज़ों के बारे में बातें नहीं करते जो वास्तव में मायने रखती हैं।

अभी उसे क्या हो रहा है? अगस्त्य को आश्चर्य हुआ। वे वन कॉलोनी के द्वार पर पहुंच गये। भाटिया ने कहा, 'मैं आपको कुछ दिखाना चाहता हूँ और वह अगस्त्य को सड़क के किनारे एक नाले के पास ले गया। वहाँ पर हरे रंग के कीचड़ में आधाडुबा हुआ हल्के- पीले रंग का पाखाना था। अगस्त्य ने कहा, तो तुम मुझे यह दिखाना चाहते थे?

'देखो मैं यहाँ मदाना में एक साल से रह रहा हूँ, और जब-जब भी मैं इस जगह से गुजरा हूँ मुझे इस हरे रंग के कीचड़ में यह पाखाना ही देखने को मिला है। मैं दिन में लगभग चार बार इस जगह से गुज़रता हूँ मुझे इस कीचड़ में हर बार ही इसी तरह के एक या दो पाखाने नज़र आते हैं, इसके अलावा और कोई गंदगी नज़र नहीं आती। कोई रोज़ाना यहाँ आकर मल की निकासी करता है। मुझे समझ नहीं आती वह कहीं खेत या खुले में क्यों नहीं हगता है? मुझे एक आदत सी हो गई है इस ओर देखने की, मैं जब भी यहाँ से गुज़रता हूँ इस ओर देखता हूँ कि शायद आज यहाँ उसने मल त्याग नहीं किया होगा परन्तु मैं हमेशा ही गलत होता हूँ। मुझे हर दिन पाखाना यहीं पर देखने को मिलता है। एक दिन मैं इसकी तस्वीर खींचूंगा और मदना के लिए नये -साल के कार्ड के लिए भेजूँगा। और एक दिन मैं सुबह जल्दी आकर उस मल-त्याग करने वाले व्यक्ति को ज़रूर पकड़ूँगा और पूछूंगा वह ऐसा क्योंकर करता है।'

'अरे तुम्हे पता है, एक रात मेरे कमरे में एक मेंढ़क घुस आया या। इतिफाक़न उस रात मैं बीमार था और वह रात भर मेरे साथ कमरे में ही रहा।

'अरे मेंढ़क तो ठीक है,' वे तो वन-कॉलोनी में रहते ही हैं, अगस्त्य को फिर से हैरानी हुई कि वन-कॉलोनी में मेंढ़क का होना क्यों वाज़िब है।

‘मैंडी तुम्हारी वन- कॉलोनी ठीक है,’ मदना में वन-विभाग बहुत पहले से है इसके बाद ही ज़िले भर में कारखानों के लिए बहुत सी ज़मीन पर कब्ज़ा किया गया और वन-विभाग कुछ नहीं कर पाया इस कहानी की यहाँ जन-जन को जानकारी है। इसके बाद वनवासियों को राजस्व-विभाग के लोगों ने बुलाया जिन्होंने घने पेड़ों, लकड़बग्घे के गिरोहों यहाँ तक कि कभी-कभार शेरों के प्रकट होने वाली जगह पर यह कॉलोनी बनाई थी। ऐसा तो सिर्फ कुछ दशक पहले ही था ; मदना का परिदृश्य तेजी से बदल रहा था। कॉलोनी का वृहद विस्तार किया गया था इसे कांटेदार तारों से सीमाँकित किया गया था जो बाद में खराब होगई या चोरी कर ली गई इसका बाँस का बना बहुत सुन्दर दरवाज़ा था, जिसकी कभी भी ठीक से देखभाल नहीं हुई।

अगस्त्य ने कहा, 'ये दरवाज़े तो कभी बहुत सुन्दर रहे होंगे।' अब तो दोनों दरवाज़े अपने-अपने क़ब्ज़ों से निकल चुके हैं और इन्हें खम्बों के सहारे खड़ा किया गया है। बाँस भी सड़-गल चुका है, और टूट गया है।

भाटिया ने कहा, 'तुम्हारे सूचनापत्र की तरह,’ अरे सरकारी सामान तो उपेक्षा का शिकार होता ही है।'

हमारी सैर लम्बी और घुमावदार थी। बारिश की वजह से हवा बहुत रोमाँटिक हो गई थी, यह सैर एक ऐसे रोमाँटिक जोड़े के लिए बड़ी सुखदाई हो सकती थी जिनका सम्बन्ध कभी न बिगड़ने वाला रहा हो। घने पेड़ों के बीच बने कृत्रिम छतों वाले एक मंजिला ठंडे रहने वाले घर जिनमें चूहे बड़ी आसानी से अपने बिल बना सकते थे। यह जगह वन जैसी नहीं लगती थी ऐसा लगता था, जैसे ये पेड़ मानवीय हाथों द्वारा रोपे गए हों, परन्तु ये पेड़ अब भी बंदरों के आकर्षण का केंद्र थे उन पर नटखट बच्चे पत्थर मारते थे, कभी-कभी वहाँ लोमड़ी भी दिखाई पड़ जाती थी जिसकी वजह से माताएँ दिन छिपने के बाद अपने बच्चों को बाहर नहीं जाने दिया करती थी।

'मैंडी, सचमुच यह बहुत खूबसूरत जगह है, यह इस पूरे शहर से बिलकुल अलग है। यह इन बच्चों के खेलने के लिए एक बहुत ही बढ़िया जगह है।'

उसी समय पसीने से लथ -पथ, एक तगड़ा लड़का उनकी तरफ़ दौड़ता हुआ आया और उसने कहा,' भाटिया चाचा उस पेड़ के नीचे साँप है। '

भाटिया ने कहा, 'इसके पास मत जाओ। 'वे अगले रविवार के दिन एक पिकनिक की योजना बना रहे हैं। उस पिकनिक में हर कोई जा रहा है, श्रीनिवास चाचा और कुमार चाचा भी।' वह लड़का अपनी तरह पसीने से भीगे साथियों के समूह में शामिल होने के पेड़ की तरफ़ भाग गया जहां वे सब खड़े थे।

भाटिया ने कहा, 'यह मेरे बॉस का लड़का है।' इसकी ऊर्जा लाजवाब है।यह बिना किसी मतलब के ही मई महीने की तपती दोपहरी में भी बाहर घूमता रहता है।'

सूरज निकल आया था, बिलकुल निष्क्रिय और हारा हुआ सा, लेकिन उससे संसार में काफी उजाला हो गया था। अगस्त्य ने कहा, 'क्या यह हैरान कर देने वाली बात नहीं है, मौसम के बारे में तुम क्या सोचते हो? क्या साठे मजाक में यह बता रहा था कि वह मौज-मस्ती करने हैदराबाद जाता है?

'शायद ऐसा वह मज़ाक़ में नहीं कह रहा था। वह मदाना के वेश्यालयों में नहीं जा सकता, क्योंकि ऐसा करने से बात पूरे कस्बे में फ़ैल सकती है। और दूसरी बात यह है कि बड़े शहरों के वेश्यालयों की वेश्याएँ बहुत कामुक होती हैं, याद करो, जैसा कि हमें भी छात्रावास के दौरान वहाँ जाने का अनुभव रहा है। जैसे हम नौकरी पाने के लिए जगह बदलते हैं। और वहाँ हम वेश्या नहीं बदल सकते। फिर भी हम जरूर रेंज के फ़ारेस्ट ऑफिसर से मिलेंगे या अपनी पेंट को बाँधते हुए नायब तहसीलदार से। तब वे जान पाएँगे ही हम भूखे हैं और टूर के दौरान वे तुम्हें शराब पिलवायेंगे और आदिवासी औरत उपलब्ध करवाएँगे।' यह सब अगस्त्य को बुरा नहीं लग रहा था। 'यह बीमार मानसिकता

है,' भाटिया ने कहा। वे टूर के दौरान कुछ अफसरों के लिए ऐसा करते हैं लेकिन वे अफसर अय्याश होते हैं और वे अपनी प्रतिष्ठा और नौकरी का ख़याल नहीं रखते।' अगस्त्य ने क्षण भर के लिए शंकर के बारे में सोचा। यदि किसी कारण वश उन्हें अपने बॉस और परिवार से दूर भेजा जाता है तब वे सहवास और फर्श को साफ़ करने के लिए आदिवासी स्त्री को अपने घर रख लेते हैं रेस्ट हॉउस का मतलब ही यह होता है। मैं दो कमरों से सुइट्स में गाँधी और उसकी पत्नी के साथ रहा हूँ। इस कॉलोनी में घरों की काफी दिक्कतहै।' वे जंगल के रेस्ट हाउस की तरफ़ मुड़ गए। भाटिया ने पास से गुजरने वाले एक इंसान से गुड इवनिंग श्रीमान कहा फिर उसने अगस्त्य से पूछा, 'साठे ने बताया था तुम्हारी माँ गोवा की रहनेवाली है। कॉलेज के दौरान मैं यह नहीं जानता था।'

'हाँ, मेरी माँ साड़ी पहनती है और बंगालियों की तरह से मछली खाती है, अगस्त्य ने हँसते हुए कहा। भाटिया के सामने वह अपनी कोई भी बात नहीं खोलना चाहता था।' मेरे माता-पिता की शादी को सत्रह साल गए थे। मैं काफ़ी बाद में पैदा हुआ। मेरी माँ को आबाद करने के लिए मेरे पिता को काफी समय लगा।' मेरे पिता कहा करते थे मेरी मौसी इस बारे में विजयी रही। मेरे पिता ने मेरी माँ के गर्भ धारण करने पर कहा था गोवा और बंगाली खून को मिलने में देरी लगी। 'मुझे अपनी माँ की याद नहीं है।' वह बिना किसी दुख के संकेत देते हुए अपनी यादों के दूर होने पर मुस्कुराया। मेरे लहू में थोड़ा फेनी दौड़ रहा है या कुछ वैसा ही लेकिन यही सब है। भाटिया चुप रहा। वह कुछ परेशान लग रहा था।

गाँधी चुप था, वह नाटा और आत्ममगन इंसान था। अगस्त्य ने उसे देखते ही पसंद कर लिया था। उसकी आँखे बड़ी और शांत थी, भाटिया के मुक़ाबले वह जल्दी प्रतिक्रिया देता था भाटिया की पीली झिल्ली वाली और अस्थिर आँखे थी। उसका पूरा नाम मोहनदास गांधी था। 'अब यह नाम परिचित सा क्यों लगता है?' अगस्त्य मुस्कुराया।

यह बहुत ही असमंजस में डालनेवाली बात है। मेरी एक बड़ी बहन है, मेरे माता-पिता ने उनका नाम इंदिरा रखा है। वे परिवारों और पीढ़ियों से भ्रमित होने की परवाह नहीं करते।' इस पर वे हँसे।

अगस्त्य गाँधी की पत्नी रोहिणी से मिलने पर मुस्कुराया भाटिया ने उसके बारे में सब कुछ बताया था। वे अपने दो कमरों के घर के बरामदे में बैठे थे और बच्चों को मिट्टी में खेलते हुए और उनकी टहलती हुयी माँओं को उनके इंकार करने पर चिल्लाते हुए देख रहे थे। हवा चलने लगी थी। मैं यह कभी विश्वास नहीं कर सकता था कि मदना में ऐसी फॉरेस्ट कॉलोनी होगी।' अगस्त्य तब रुका, शर्म की अस्पष्ट भावना से बाहर आया। किसी तरह कहने में यह अशिष्ट बात लग रही थी। महीनों तक पुरानी परिस्थितियों और कई कारणों से उसे यह शर्म की बात याद रही। 'मुझे बुलाने के लिए शुक्रिया मोहन।'

'कृपया ऐसा मत कहो, हमें पहले मिलना चाहिए था, लेकिन मेरी पत्नी की तबियत ठीक नहीं रहती।' मेरी पत्नी' शब्द पर मोहन की आवाज़ डूब गई। अगस्त्य एक पल के लिए उन दोनों को बिस्तर पर सिमटने के ख़याल से विचलित हो गया। बाद में भाटिया ने मुझे बताया कि मेरी पत्नी की तबियत भी ठीक नहीं रहती। गर्भावस्था के शुरूआती हफ़्तों में मोहन उत्साह से भरा रहता था। गाँधी को यह शर्मनाक लगा। देखो कहो की उसकी पत्नी गर्भवती है क्योंकि उसे लगता है कि यह कहना इतना अच्छा है जैसे कि यह कहना कि हम सहवास कर रहे हैं।'

वे अटपटी बातें कर रहे थे और पकौड़े तलने की खुशबू सूंघ रहे थे। मोहन ने भाटिया से नाराज़गी दिखाते हुए उसके खिलाफ कोई भी प्रतिक्रिया नहीं दी। वह खुश नहीं दिख रहा था लेकिन काफी हद तक वह शांत था, अपने आप से बहुत संतुष्ट, मदना में एक कमरा, एक स्नानगृह जिसे वह अपने कुलीग के साथ शेयर करता है एक देखभाल करने और खाना बनाने के लिए सेक्सी महिला। एक सुस्त नौकर, कम रोशनी (ट्यूब लाइट जो रात ग्यारह बजे या इसके आस-पास जलती थी), महीने के 1800 रूपये कुछ हफ्ते में एक कालकोठरी जैसी जगह पिरताना में स्थानांतरण (मुझे पता है बिजली हमारे वहाँ

पहुँचने से पहले चली गयी होगी) एक स्वस्थ शरीर। शरतचंद्र के अनुवाद से प्रेम।अगस्त्य एक अच्छा नाम है, जिसे हमें अंग्रेजी में पढ़ना चाहिए। लेकिन मैं उसकी एक किताब *द मैन विदाउट कैरक्टर* को सच में पसंद करता हूँ और वह भविष्य जो वर्तमान का संभावित विस्तार है।

'मैंने शरतचंद्र का अंग्रेजी अनुवाद नहीं देखा। लेकिन तुमने कई चीज़े नहीं देखी होंगी। अगस्त्य ने खुद को धीरे से याद दिलाया।

'हाँ। यह मुझे उतरकाशी के एक कॉलेज में मिली जहाँ मैं पढ़ाता था। एक भयंकर अनुवाद और भयंकर जगह।'

'मैं उतरकाशी काशी गया था हम तब वहाँ कॉलेज के टूर पर रुके थे। उत्तरकाशी अपने गाइड की तरह सूखी चमड़ी की तरह सूखा है। उन्होंने बेवकूफ़ी में उत्सुक योकल्स और चाँदी-सी सफ़ेद गंगा के पास बदसूरत ढाबों की तलाश में घंटों बिताये थे। अगस्त्य उत्तरकाशी में पढ़ाने के बारे में सोच भी नहीं सकता था। वहाँ पर कोई भी अपनी बुद्धिमत्ता नहीं बघार सकता था। 'क्या तुम वहाँ लंबे समय तक रुके थे?'

'मैंने वहाँ दो साल पढ़ाया था। वहाँ वह तजुर्बा बहुत निराशाजनक रहा था,' मोहन शर्माते हुए मुस्कुराया कॉलेज स्नातकोत्तर स्तर का बताया जाता था। लेकिन प्रयोगशालाएं माध्यमिक स्तर की भी नहीं थी। सभी चीज़ें टूटी हुई थीं, या चुरा ली गयी थी। वहाँ पर दो बुजुर्ग़ गुंडे प्रिंसिपल होने का दावा करते थे दोनों के पास अंगरक्षक के रूप में युवा गुंडे थे। मुझे हैरानी होती थी कि इनमें से कौन प्रिंसिपल की तनख्वाह लेता है। जब कभी वे गलियारे में मिलते तब दोनों एक दूसरे को काफी रंगीन तरह की गलियां दिया करते थे और सभी बच्चे उन्हें सुनने के लिए कक्षा से बाहर आ जाते थे। यहाँ तक कि मैंने भी उन्हें सुनते हुए कुछ नए पाठ सीखे। मोहन अपनी पत्नी के सुनने की सीमा को सुनिश्चित करने के लिए अपनी कुर्सी से थोड़ा उठा। जब आप एक दूसरे को बुला रहे होते हो तब आप एक रोगग्रस्त चूहे को मुर्गा बना रहे होते हो। एक बार उनमें से एक ने

कहा, तुम्हारी माँ अपने पाखाने को लौड़े के रूप में इस्तेमाल करती है। याद रहे कॉलेज के प्रतिद्वंदी प्रिंसिपल थे दोनों। यदि सही कहा, जाये तो उत्तरकाशी के लिए वह किसी दूसरी जगह के कॉलेज से अधिक ख़राब नहीं था। उदाहरण के लिए, इसे आसानी से अलवर के कॉलेज समझने की गलती भी की जा सकती है।' वे हंसे।

नौकर ने सुस्ती से चाय पेश की। आख़िर में शर्मीली और कामोत्तजक दिखने वाली रोहिणी भी उनमे शामिल हो गई। मोहन ने कहा, 'ये मिठाइयाँ यहाँ की स्थानीय दूकान से आयी हैं, लेकिन तुमने सोचा होगा ये कोलकत्ता में बनी हैं।'

'क्या यह गोपालन नहीं है?' भाटिया ने पुछा। मुझे लग रहा है वह इसी तरफ़ आ रहा है। रोहिणी ने नौकर से कह कर उसके लिए एक दूसरी कुर्सी की व्यवस्था की। वे सभी गोपालन के आने पर उठ गए। वह प्रभागीय फारेस्ट अफसर और भाटिया का बॉस था। भाटिया ने उनसे अगस्त्य का परिचय करवाया।

'हेल्लो, 'गोपालन ने कहा, 'एक दूसरे मूछवाले सरकारी अफसर को देखकर मुझे खुशी हो रही है।' वे हँसे। वह अच्छे स्वभाव का अनौपचारिक व्यक्ति था। वह बिना किसी झमेले के उनके साथ शामिल हो गया।

'हम सब अगले रविवार को गोरापाक में पिकनिक मनाने का सोच रहे हैं। श्रीवास्तव साहब और कुमार साहब ने हाँ कर दी है। सभी की पत्नीयाँ आराम करेंगी और पति खाना बनायेंगे मैं साठे को भी बुलाना चाहता हूँ पर श्रीवास्तव साहब ने इसके लिए काफ़ी जोरदार असहमति दी। वे सिर्फ ऑफिसर्स और उनके परिवार को ही इसमें शामिल करना चाहते हैं। तुम भी ज़रूर आना सेन?'।

एकनिस्तेज सा स्थानीय अवकाश।' तुम एक दिन के लिए घर आओ' श्रीवास्तव ने आदेश दिया। दोपहर के भोजन और रात्रि भोजन के लिए, तुम्हें अच्छे से खाना चाहिए। क्या तुम ब्रिज खेलते हो? अच्छा तुम खेलते हो अच्छी बात है, दोपहर के बाद हम क्लब जाएंगे एसपी साहब भी आएंगे वहाँ पर शाम को एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होगा।'

'अगस्त्य तुम्हारे लिए खास दोपहर का भोजन होगा। अब तुम ठीक हो,' श्रीमती श्रीवास्तव मुस्कुराई, 'बंगाली के लिए मछली'।

बच्चे कमरे के चारों तरह चिल्लाते हुए घूम रहे थे। 'बंगाली के लिए उपहास का सबब।'

करीब बारह बजे एक दूसरी तंग कमीज में कुमार आये। इस लौंडेबाज को तो ब्रा चाहिए अगस्त्य ने सोचा।' हेल्लो सेन,' कुमार ने मुस्कुराते हुए कहा। 'मैंने तुम्हें एक बार रात्रि-भोजन के लिए लिए बुलाया था, 'क्या नहीं बुलाया था?' बहुत खेद है कि मैं भूल ही गया। लेकिन मेरा घर पत्नी के लौटने तक अव्यवस्थित है, क्या किया जाए।'

दोपहर के भोजन में श्रीमती श्रीवास्तव ने कहा, 'अरे आप मछली असली बंगालियों की तरह खाते हैं। 'देखो आपकी प्लेट एकदम साफ है।

'एक असली बंगाली,' बेटी ने दोहराया और तिरछी नज़र से अगस्त्य को देखा।

'लगता है तुम्हारे माँ का पक्ष तुम्हें दूषित नहीं कर सका,' कुमार ने कहा।

सिर्फ श्रीवास्तव को ऐसा महसूस हो रहा था कि अगस्त्य इस विषय से शायद परेशान हो रहा है। उसने कहा, 'धीरज तुम वन विभाग के अफसरों के साथ पिकनिक जा रहे हो। क्या तुम नहीं जा रहे?

'हाँ, बेशक मज़ा करना चाहिए, और ज़िले के अलग-अलग अफसरों को एक साथ मेल-मुलाक़ात करनी चाहिए।

लेकिन ये वन विभाग के अफसर, श्रीवास्तव ने मुँह सिकोड़ा क्योंकि वह अब ऑफिस के मामलों पर बात कर रहा था, कुछ हीन भावना से पीड़ित लग रहा था। वे बेहद गरिमा से यह क्यों नहीं स्वीकार करते कि उनकी नौकरी जिलाधीश से कम महत्वपूर्ण है और उसने जोड़ा उपस्थित लोगों से अधिक जागरूक जैसे एस. पी.? वे हमें हमेशा कार्यक्रमों और मुलाकातों में आमंत्रित करते हैं जैसे हमारे पास इन सब चीज़ों के लिए खाली समय रहता हो। उसने अगस्त्य की तरफ़ देखा तुमने देखा वे पिकनिक में कैसे पेश आ रहे थे। वे बराबरी जैसा व्यवहार करते हैं, ख़ासकर उनकी बीवियाँ। पिकनिक बड़े निराले ढंग से शुरू हुई।

'ओह, कमाल है उन वनविभाग की पत्नियों का। परन्तु अगस्त्य की कुछ अफसरों के साथ अच्छी दोस्ती है,' मिसेज़ श्रीवास्तव ने टोकते हुए कहा।

अगस्त्य को लगा, उसे एक थप्पड़ दे मारे और वह बोला ,'मुझे लगता है यह मौसम देर तक बना रहता है।'

'अरे, हाँ, यह बारिश का मौसम। बारिश तो और भी होनी चाहिये ताकि हमें बाद में पीने के पानी की कमी न झेलनी पड़े। लेकिन यदि बारिश कहीं ज़्यादा हो गई तब नदी में बाढ़ आ जायेगी।' श्रीवास्तव प्रसन्न हो थोड़ा मुस्कुराते हुए (एक कलेक्टर का काम बेहद महत्त्वपूर्ण है,लेकिन सरकार इस तरह के पद के लिये सही व्यक्ति चुनने में विचारशील रही है- उस तरह की मुस्कराहट)। यदि आप कहीं और सहायक कलेक्टर होंगे सेन, तब तुम्हें आभास होगा कि, उत्तरदायित्व की स्थिति में, आपको चीज़ों को व्यावहारिक तरीके से कुछ अलग तरह से देखना होगा। उदाहरण के लिए, त्यौहार आराम करने और आनंद लेने के लिए कतई नहीं हैं। 'उसने अपनी आँखें आधी बंद कर ली और सिर को हिलाते हुए कहा, 'तब हमारे पास चिंता का विषय रहताहै कानून व्यवस्था और

और साम्प्रदायिक दंगों की संभावना। पूरा माहौल बदल ही जाता है। ओह, नो हमें बारिश के मौसम में रोमाँटिक कुछ नहीं लगता।' ओह अगस्त्य साहब, हम लोग तो इसके बारे में कुछ नहीं सोचते, आप के ऊपर तो दुनिया भर का बोझ है।

सबने देखा कि कुमार मिठाई का दूसरा कटोरा ले रहे थे। इस पर श्रीमती कुमार मुस्कुराई।उनकी बेटी ने कहा 'कहा 'कुमार अंकल खा-खाकर पेट भर लेंगे फिर हम उन्हें रात के खाने के लिए ले जाएँगे।'

जब ऐसा कहने पर माता-पिता ने बेटी को कोसा। कुमार ने कहा, 'दोपहर में क्लब, अरे नहीं? वहाँ दूसरे लोग होंगे ?'

'हाँ, जोशी ने यह कहने के लिए टेलीफोन किया कि वे दो बजे वहाँ होंगे। उसने कहा, सेन ब्रिज खेलता है।'

'ओह, यह तो बहुत अच्छा है। तुम्हारे जैसे ओहदे के लिए ब्रिज बहुत महत्वपूर्ण है, भई। आप श्रीवास्तव साहब को सहभागी बनाएँ और अच्छी तरह खेलें, फिर देखना ये आपको कितनी गोपनीय रिपोर्ट देंगे। 'वे केवल हँस दिए। 'हमें क्लब फिर से जाना चाहिए, रवि।'

'हाँ, जाना चाहिए, लेकिन एंटोनी की तरह नहीं।' श्रीवास्तव ने नकारने वाली हँसी हँसते हुए अगस्त्य को कहा, 'वह एंटोनी। उसने क्लब में पीने के लिए एक लाइसेंस दिया। जैसे ही मैंने पद संभाला था मैंने इसे रद्द करवा दिया था। क्लब तो परिवारों के लिए है, छड़े पियक्कड़ों के लिए नहीं। एंटोनी के समय कोई भी महिला वहाँ नहीं जाती थी। और वहाँ जाना सुरक्षित भी नहीं था! एंटोनी की पत्नी हैदराबाद में नौकरी करती थी और वहीं रहती थी इसलिए वह दूसरों की पत्नियों की परवाह नहीं करता था। मैं आपको सच बता रहा हूँ उन दिनों क्लब तो हिंदी फिल्मों की तरह एक बार बन गया था। पियक्कड़ लोग गुनगुनाते, गाना गाते, वहाँ टहलते रहते थे। 'उसने कुमार की तरफ़ देखा और कहा ' हमें

ब्रिज जैसे खेल और सांस्कृतिक संध्याओं को बढ़ावा देना चाहिए। आमतौर पर एक छोटा सा जिला कोई रोमाँचक जगह नहीं होता जब तक वहाँ कोई क्लब ना हो, आखिर वहाँ के अफसरों के परिवार जाएं तो कहाँ जाएं?'

कुमार दोपहर के भोजन के बाद धीरे से वहाँ से खिसक लिए और दीवान पर फ़ैल गए। इस पर उनकी बेटी खिसियाने लगी। श्रीमती श्रीवास्तव ने पूछा 'तो कुमार साहब, कुमकुम कब वापिस आ रही है, लगता है तुम लोग उसे याद नहीं करते?'

ऐसा लग रहा था कि कुमार दोपहर में आराम करना चाह रहे थे। कुमार ने कहा 'मैं दशहरे पर दो या तीन दिन के लिए घर जा रहा हूँ लौटते समय उसे साथ लेकर आऊँगा।'

श्रीवास्तव कार की चाबियाँ घूमाते हुए गलियारे से होकर आए। 'आप पर लानत है धीरज। आपने दोपहर के भोजन के बाद आराम करके जो उदाहरण कुमार के सामने रखा है। उसकी पहले से ही अजीब सी आदतें हैं, वह हमारे साथ रेस्ट हाउस में रहना पसंद करता है।'

कुमार कोशिश करते हुए बेड से उठा। शायद उसके अपने कारण रहे हों। शायद वह पहले से ही महिला बीडीओ से सम्पर्क करने में कामयाब रहे जो वह... ' कुमार ने पलकें झपकाईं। दूसरे लोग हंसने लगे। श्रीवास्तव ने कहा वह शैतान अख़बार। वो साले सचिवालय वाले, उन्होंने मेरी फरियाद का जवाब देने में बहुत समय लगाया है।लेकिन जोशी बता रहा था दैनिक अखबार बहस और स्पष्टीकरण का कॉलम प्रकाशित करने जा रहा है।'

'अच्छा, यह तो बहुत अच्छा रहेगा। परन्तु इन लोगों को इस तरह पेश आने पर ज़ुर्माना करना चाहिए।' उनमें से तीन कार की तरफ़ जाने के लिए बाहर आए। श्रीमती श्रीवास्तव और बच्चे संगीत सुनने के लिए शाम को उनके साथ जुड़ेंगे। कुमार ने पूछा,'तुम्हारी पत्नी कैसी है, सेन?'

एक सेकिंड के लिए अगस्त्य स्तब्ध रहा कि क्या करना चाहिए। 'फिर कहा, ‘मैंने अब तक शादी नहीं की, सर।’ 'मेरी शादी तो बहुत पहले हो चुकी होती, लेकिन मेरे पिताजी ने उसे अस्वीकार कर दिया था,वह मुस्लिम है।'

'तुम शादीशुदा नहीं हो? मैंने सुना था तुम शादीशुदा हो, और यह भी सुना था कि तुम्हारी पत्नी इंग्लैण्ड में कैंसर से मर रही है।'

'मैं? मेरी पत्नी? नहीं, सर, कुछ ग़लतफ़हमी रही होगी। वह मेरा चचेरा भाई है जिसकी पत्नी इंग्लैण्ड में है।'

श्रीवास्तव चले गए, और कुमार सामने बैठ गए। अगस्त्य ने उनके सिरों को पीछे से देखा। दो बलों की गर्दन पर कुमार का सिर गोल था, और श्रीवास्तव गंजा था। सहसा उसे लगा कि वह मदना से ऊब गया है। उसने आगे झुककर पूछा, 'सर, क्या मैं पूजा के दौरान कुछ दिनों के लिए दिल्ली जाऊँ?'

श्रीवास्तव ने कहा, 'ओके', अगर आप आकस्मिक छुट्टी लेनाचाहते हैं, तो दस दिन की छुट्टी ले सकते हैं। यही नियम हैं।'

कुमार ने अपना सिर एक इंच तक दूसरी तरफ़ घुमाते हुए कहा, 'हम एक साथ चलते हैं, सेन। 'अगस्त्य पीछे की तरफ़ ऐसे बैठा था, जैसे वह आनंद से प्रफुल्लित हो। उसकी कमर ऐसे सुस्ता रही थी जैसे अभी-अभी तनाव से मुक्ति मिली हो।

'श्रीवास्तव ने अफ़सोस दर्शाते हुए कहा, 'ओहो, ओफ़, इस सड़क को देखो ज़रा, पीडब्ल्यूडी के इंजीनियरों ने इसे कभी चौड़ा नहीं किया।' आगेवाली सड़क से मदना की सड़कों की विशेषता साफ़ नज़र आ रही थी, यानी यातायात की अव्यवस्थता साफ़ नज़र आ रही थी।

कुमार ने कहा ,'लेकिन आज तो समस्या इस ट्रक की वजह से है, पता नहीं, किस बास्टर्ड ने इसे यहाँ खड़ाकर दिया हैँ।' ट्रक आधी सड़क को घेरते हुए ऐसे खड़ा था जैसे धौंस जमा रहा हो, इतने भारी यातायात के लिए सड़क वैसे ही बहुत सँकरी थी।

श्रीवास्तव कार से बाहर आ गया। उसने धीरज से कहा,'आओ ज़रा उधर चलें उस ट्रक ड्राइवर को कुछ यातायात के नियम समझायेंगे।'

श्रीवास्तव और कुमार सड़क पर चलते हुए थोड़ा अजीब लग रहे थे, अगस्त्य को लगा शायद उसने उन्हें इस तरह सड़क पर चलते कभी नहीं देखा। उनमें से एक मोटा था तो दूसरा पतला, वे ऐसे सामान्य नागरिकों की तरह लग रहे थे जो रिक्शा नहीं कर सकते थे। वे साईकलों,स्कूटरों को पार करते हुए चले जा रहे थे उनके चेहरे झुँझलाहट में बदसूरत से हो चले थे। एक स्कूटर से एक कार को हल्की- सी खरोंच लग जाने से झगड़ा हो गया और वहाँ लगी भीड़ उस तरफ़ आकर्षित हो गई, उस झगड़े की वजह से पहले से पीड़ित लोग अधिक परेशान हो गए। लेकिन अगस्त्य को वह अच्छा लगा, रुके हुए यातायात के बीच से गुजरना तुम्हें अहसास दिलाता है कि आप भी दुनिया का एक हिस्सा हैं, इस तरह के तजुर्बे आपको कुछ सिखाते ही हैं। ट्रक का कोई वारिस वहाँ नहीं था। 'श्रीवास्तव ने वहाँ से गुज़रने वाले कुछ लोगों से ट्रक ड्राइवर के बारे में पूछ-ताछ की।

'आखिर उस ट्रक का ड्राइवर सड़क किनारे बने एक ढाबे पर मिल गया, वह अपने साथी ट्रकवाले झुण्ड के साथ चारपाई पर चौकड़ी मारे बैठा था और चाय पीते हुए गप्पे हांक रहा था।

'क्या वह ट्रक तुम्हारा है?'

श्रीवास्तव और कुमार के चारों और कुछ तमाशबीनों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी, दोनों के ओहदे आदेश देने वाले थे और उनके वर्षों के अनुभव से वे लोगों के सामने गरिमामय तरीके से बोलने के अभ्यस्त हो चुके थे। उनकी ठसक प्रभावित करने वाली थी।
ट्रक के बारे में पूछे जाने पर उस खड़े ट्रक ड्राइवर ने ट्रक वालों जैसा रवैया अपनाते हुए कहा,'हाँ।'

लुंगी कुर्ता पहने वह शख्स आक्रामक हो गया, उसकी आँखें लाल थी और वह कमीनेपन और ढिठाई से पेश आने पर उतारू था।

'तुमने अपना ट्रक गलत जगह पर खड़ा किया है।'

ड्राइवर ने अपने दोस्तों की तरफ़ देखते हुए उनसे कहा, 'सालों, 'तुम कौन होते हो कहने वाले।'

'अरे साले नहीं, ये मदना के कलेक्टर साहिब और एसपी साहब हैं। ड्राइवर ने झट से अपनी चाय एक तरफ़ रखी, पैरों में चप्पलें पहनी (अगस्त्य ने अच्छी तरह से नोट किया कि उसने जल्दबाज़ी में दाएं पैर की चप्पल बाएँ पैर में और बाएँ पैर की चप्पल दाएँ पैर में पहन ली थी) और वह बदहवासी में अपने ट्रक की तरफ़ लपका। उसके दोस्त भी खड़े हो गए।उस ड्राइवर ने ट्रक तेजी से भगा लिया। 'अच्छा,' अब इस साले को सँकरी सड़क पर तेज़ी से ट्रक भगाने के लिए पकड़ो।' जब अगस्त्य उनकी धौंस से अस्तव्यस्त हो खड़ा था तब श्रीवास्तव और कुमार वहाँ खडी भीड़ को मदाना में ही नहीं पूरे भारत में यातायात के नियमों की अवहेलना करने के बारे में बता रहे थे। अगस्त्य सोच रहा था दिल्ली और कलकत्ता जैसे शहरों में इस ट्रक वाले की तरह नहीं किया जा सकता वहाँ तो कांस्टेबल उसे पीट देगा या उसका पैसा और लाइसेंस और ट्रक तक को भी ज़ब्त कर लेगा।

वे अपनी कार में वापिस आ गए, सड़कपर हमेशा की तरह अस्तव्यस्तता बनी रही, श्रीवास्तव ने अपना भाषण जारी रखा, 'सेन क्या आप नौकरी का प्रभाव और जिम्मेदारी देख रहे हैं ?' वह प्राचीन भारत के राजा की तरह लग रहा था, अगस्त्य ने मुस्कुराते हुए कहा, वह अपनी जनता के बीच छद्म रूप से घूम रहा था, वह लोगों की भलाई कर रहा था और बुरे लोगों को दंडित करते हुए अपनी पहचान का खुलासा कर रहा था।

उसने एक बार पहले भी अपने देर रात के दौरे पर क्लब को देखा था। तब चाँदनी रात की वजह से इसका भद्दापन कम नज़र आया था। एक पुरानी इमारत, प्रवेशद्वार पर मेहराब के साथ एक लम्बा बरामदा, पीले रंग का पलस्तर, उधड़ी दीवारें, बिजली की तारों ने दीवारों पर गहरे भूरे रंग का चित्रण कर दिया था। सेंट्रल हाल में ब्रिज खेलने के लिए पाँच टेबल सेट रखे थे, जहाँ पर एक साथ तीन खेल चलते रहते थे। जोशी ने आकर उनसे गर्मजोशी से मुलाक़ात की। वह एक मेज़ पर डम्मी सा हो बैठ गया था। 'मुझे ज़्यादा लोगों की उम्मीद थी,' श्रीवास्तव ने चारों ओर निहारते हुए कहा। उसे क्लब में भी स्वागत के लिए अपने आस-पास भीड़ चाहिए थी। कुछ खिलाड़ियों ने अव्यवस्था की वजह से उस क्लब को अस्वीकार किया। वे बिजली बोर्ड और थर्मल पावर स्टेशन के खिलाड़ी थे, कुछ व्यवसायी थे - यह सब श्रीवास्तव की सीमा से परे की बात थी।

कुमार और श्रीवास्तव, अगस्त्य और एक अजनबी के साथ वाली मेज पर बैठ गए। कुछ ही मिनटों में अगस्त्य ने उस अजनबी को क्लब की तरह का शख्स जान लिया। एंटनी के शासन काल के शांत दिनों में श्रीवास्तव ने इस क्लब को एक हिंदी फ़िल्म के दृश्य का सा आभास किया था जहाँ हीरो नशे की सी अवस्था में गाना गाते हुए आते हैं। लम्बे और पतले, क़मीज़ की बाँहें कोहनी तक मोड़े हुए, मोटी-मोटी मूछें, पान से सने दाँत, छोटी-छोटी निस्तेज आंखों वाले लोग होते थे वो। वह क्लब का अभ्यस्त हो गया था, आमतौर पर घर से पीकर, क्लब में समय बिताने के लिए आता था। वह कुछ भी खेलने को तैयार था, ब्रिज़, तम्बोला, गप्प-शप्प, बिलियर्ड्स, टेबल-टेनिस, बैडमिंटन। वह श्रीवास्तव या कुमार किसी को भी 'सर' कहकर नहीं बुलाता था, इस तरह वह उन्मुक्त भी था।

'क्या सम्मेलन?' उसने अगस्त्य से पूछा। 'गोरे, यदि वह आपके साथ ठीक है तो। श्रीवास्तव और कुमार ने स्ट्रांग क्लब खेला और बहुत बुरी तरह खेला। कुमार सहज में ही मुर्ख बन गया और श्रीवास्तव एक बुरा साथी। कुछ राउण्ड में ही अगस्त्य ऊब गया और श्रीवास्तव अपने मन के मालिन्य को नियंत्रित करता रहा। वह एसपी पर चिल्ला नहीं सकता था, और अगस्त्य अपने खेल के साथी के साथ कभी नहीं बिगड़ा, चाहे जिसने भी खेल में उसका साथ दिया हो। वह बीच-बीच में अपने दिल्ली के ट्रिप का सपना देख रहा था, वह और उसका पार्टनर दो रबड़ आगे बढ़ रहे थे।

दोपहर की गर्मी असहनीय थी। श्रीवास्तव की मनोदशा बदतर हो गई। हर गेम के बाद उनकी पोस्ट-मॉर्टम लम्बी हो गई थी एवं ज़्यादा खुराफ़ाती हो गई थी। आख़िरकार मनोदशा सुधारने के लिए संगीत बजाने की व्यवस्था के लिए कहा गया। लेकिन श्रीवास्तव को इससे भी संतोष नहीं था। उसने दूसरी मेज़ के पास बैठे जोशी को बुलाया। 'हमें सेन के लिए दूसरे पार्टनर की ज़रूरत है। तुम हमारे साथ आ जाओ। सौभाग्य से कुमार ने थकावट का हवाला देते हुए उनके साथ खेलने से मना कर दिया। फिर वे चेहरे पर मनहूसियत लिए चुपचाप वहाँ से चाय पीने के लिए बाहर की ओर चल दिए।

अगस्त्य को अपने आप पर गुस्सा आ रहा था कि, उसने दोपहर में क्लब आने के लिए क्यों हामी भरी कि, वह इस नौकरी के लिए मदना में क्यों था कि, उसे श्रीवास्तव तथा उसकी पत्नी के प्रति विनम्र बने रहने पर मजबूर होना पड़ता है, उसे लग रहा था कि उसने अपनी ज़िन्दगी को इंटेलिजेंसी से क्यों नहीं व्यवस्थित किया, उसने ऐसा क्योंकर सोचा कि वह किसी भी नौकरी या परिस्थिति के लिए सर्वथा अनुकूल है, जीवन को बर्बाद होने से बचाने के लिए अपने आप को कैसे परिवर्तित किया जाए। उसने अपने भविष्य के सूनेपन का अहसास करते हुए, कतार में लगी कुर्सियों, तथा बैडशीट से ढँकी मेज़ों की तरफ़ निहारा।

बाहर आकर श्रीवास्तव और कुमार अफ़सरी ठसक में लौट आए और तैयारी का प्रतिनिधित्व करने लगे। थोड़ी देर में वे आनंदित हो उठे, और कुर्सियों की व्यवस्था, मंच के कालीन और लाईट की व्यवस्था के बारे में बहस करने लगे। अगस्त्य उनके पीछे की तरफ़ था और अपने आपको कोस रहा था।

आमतौर पर सभी तरह की मानसिक स्थिति क्षणिक होती है; इसलिए अगस्त्य की मानसिक स्थिति में भी सुधार हुआ। साथ ही, बाहर आकर उसे अच्छा लगा, ख़ासकर एक थके हुए पीले मानसूनी आकाश के नीचे की हलचल से दूर होना उसे भाया। शीघ्र ही वह अपने चारों ओर के नज़ारों में सलिप्त होने और अनायास के हास्य दृश्यों की वजह से वह पुल की यादों और स्वयं के प्रति घृणा से मुक्त हो गया। उसने देखा कुमार एक चपरासी को साईड टेबल पर एक बड़ा पीने के पानी का ड्रम रखने का निर्देश दे रहा था। पानी का ड्रम टेबल पर रखते समय धड़ाम से नीचे गलीचे पर गिर गया। ड्रम का पानी एक गुप्त स्रोत की तरह लगातार बहता जा रहा था। कुमार चपरासी पर इस तरह चिल्लाया जैसे सारा कसूर सिर्फ उसी का था। चपरासी ने एक शब्द भी नहीं सुना, वह क्रिकेट मैदान के किनारे गया, वहाँ पर उसने अपनी गीली पेंट उतारी, उसे घास पर सूखने के लिए डाल दिया और अपने लंबे अंडरवियर में वापिस आकर उस हलचल में शामिल हो गया। लेकिन श्रीवास्तव उसे इस पोशाक में क्लब में घूमने की अनुमति नहीं देना चाहता था(बेवकूफ़ हम यहाँ तुम्हारे घुटने देखने बैठे हैं?); उसने चपरासी से वहाँ से जाने को कहा, और कहा कि वह अपनी पैंट सूखने के बाद उसे पहन कर ही यहाँ आए। चपरासी भोजन की तरफ़ चक्कर काटने लगा। अगस्त्य को अचानक से यह दुनिया अजीब लगने लगी, और वह खुद पर मुस्कुराया उसे लगा उसके मूड में निश्चित रूप से कुछ सुधार हुआ है।

वह श्रीवास्तव और कुमार की दादागिरी से दूर, आख़िरी क़तारों में से एक के किनारे की कुर्सी पर बैठ गया। ये लोग कुछ समय से अपने भाग्य के खुद स्वामी हैं, लगता है अब यह सब एक मोहक झूठ लग रहा है, सच कहो तो आधा-सच। समय के किन क्षणों में? वह श्रीवास्तव की चंचल रूपरेखा के बारे में सोचने लगा (वह किस तरह इशारे

करता है और भौहें चढ़ाता है उसकी भौहें किसी के गू में कीड़े की तरह होती हैं, असली चालबाज है वह) और वह सोच रहा था कि उसके त्रिकोणीय कलमों के बगल में गाल नरम हो जायेंगे यदि ठीक से उबले और पके होंगे तब। वह सोच रहा था कि इंसान महत्वपूर्ण क्षणों को केवल बीते हुए कल पर दृष्टि डाल कर ही देख सकता है, पिछले समय के शानदार, मजेदार अलंकार, अनमोल रत्न, जिनके बारे में सोचने पर केवल पछतावा और मायूसी ही हाथ लगती है, फिर यही प्रायोजन की एक श्रृंखला का पहला कारण होता है और फिर दुबारा से पुनर्निर्माण का प्रयास। उसकी तरह अधिकतर लोग अज्ञानतावश अपना कैरियर चुन लेते हैं, फिर इस अरुचिकर तराशी हुई दुनिया में विचरण करते रहते हैं और उसे गरिमामय तरीके से या बिना किसी गरिमा के स्वीकारना और समझौता करना सीख जाते हैं, या फिर निराशाओं से घिरे रहते हैं। उस दोपहर की मायूसी इंसान द्वारा बनाई गई लग रही थी। अगस्त्य अपने इरादे से ऐसा करने से पहले किसी काम करने के परिणाम दिखाना चाहता था। उसने अपनेआप से कहा मैं अपना वर्तमान जानना चाहता हूँ, मैं अपना अंतर्ज्ञान ही नहीं, अपना कारण जानना चाहता हूँ, मैं यहाँ बता रहा हूँ, तुम अपने आने वाले समय के स्वयं स्वामी हो और उसी तरह काम करो। लेकिन उसे लग रहा था कि वह स्वयं इस अर्थपूर्ण कार्यवाही को करने में असमर्थ है। एक बार जब उसे विश्वास हो गया कि तर्कसंगत होना अच्छा है,लेकिन उसे लग रहा था कि उसकी समझ असाधारण सवालों का जवाब नहीं दे सकती, या किसी गौरैया के गिरने पर उसे उठाने की कोई खास तरीका नहीं सोच सकती है। इसका एक तरीक़ा है शंकर की तरह जगदम्बा के लिए अलौकिक हो जाना,या फिर वसंत की तरह जो कि कमरे में मैंढक के आ जाने के भी कारण ढूँढ़ने लग जाता है; एक और तरीका है कुछ भी ना सोचो, उन दाँतदार पंजों के लिए भी कुछ ना सोचो जो शांत समुंदर के फ़र्श पर चलते थे और कॉलेज के दिनों में उसे परेशान करते थे।

उसने देखा, कुमार उसकी तरफ़ देख रहा था, शायद वह उसे बुलाना चाह रहा था ताकि मेरी परेशानी और बढ़े। वह पहले की तरह कमरे में वापिस नहीं लौटना चाह रहा था। वह क्लब लौट गया और इधर-उधर टहलने लगा। क्लब में बिलियर्ड्स के कमरे में ही कुछ

लोग थे। वह वहाँ कुछ देर खेला। उस खेल का स्तर ब्रिज की तरह ही बहुत उम्दा था। इस तरह वह मदना से हैरान होता रहा।

जब वह बहार निकला तो लोगों ने अंदर आना शुरू कर दिया था। रोशनी की सुन्दर व्यवस्था से मंच बहुत ही खूबसूरत लग रहा था, दोपहर को देर तक चलनेवाली वाली तैयारी अस्तव्यस्तता का परिणाम आखिर शानदार ही निकला। मंच पर ड्रमों का एक सैट, दो इलेक्ट्रिक गिटार,एक हारमोनियम, तबलों का सैट इत्यादि रखे थे। वहाँ पर मुग सिंथेसाइज़र भी रखा हुआ था, जिसे देख वह अचम्भित था। कुमार चौड़ा होकर मंच के पास खड़ा था, उसकी हर बात पर हंसने वाले लोगों का झुण्ड उसे चारों तरफ़ से घेरे था। अगस्त्य को तसल्ली थी कि उसकी बातों में हँसने जैसा कुछ भी नहीं था लोग उसी पर हँस रहे होंगे। अधिकतर लोग अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहने थे (उसे इस बात पर मदन का जुमला याद आया 'ये लोग अपरिपक्व वर्ग से दीखते हैं); जाहिर तौर पर वह मदना के अधिकारियों के परिवारों के लिए एक अदद शाम थी। बाद में जब उसने कुछ और देखा तो उसने अपनी राय में संशोधन किया; बाज़ार जाना, बैंक जाना, किसी के घर जाना और सिनेमा देखने जाना इत्यादि सभी सैर-सपाटे उनके शुष्क जीवन को आनंदित करते हैं; उन सभी ने अच्छी पोशाकें पहन रखी थी और सबने ने अपने चेहरों पर पाउडर लगा रखा था। उसने अहमद को देखा जबकि अहमद की नज़र उस पर नहीं पड़ी थी, और वह एक महिला के पीछे छिप गया। बच्चे साफ़ दिख रहे थे वे किसी को भी अपने बाल तक नहीं छूने दे रहे थे। वे अभी हैरान से दिख रहे थे; कई बच्चों की कमीजों पर स्नूपी और सुपेरमैन छपे थे। ऐसा लग रहा था कि महिलाएं किसी एम्पोरियम के लिए कैट-वॉक कर रही हों - कोई भी वहाँ बैठ कर विंडो शॉपिंग कर सकता था। उसी समय एक रूखे और नज़र न पड़ने वाले कोने में उसे साठे, भाटिया और मोहन दिखाई पड़े (उसने सोचा, रोहिणी नहीं आई शायद उसकी तबीयत खराब होगी) उन्हें देख कर उसका मूड कुछ और ठीक हो गया ।

'इडियट' साठे ने श्रीवास्तव की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। इस बात पर अगस्त्य बेतहाशा हँसने लगा, लग रहा था उस दिन की बेचैन दोपहर उसके अंदर से बाहर आ रही

हो। 'इसने क्लब को गड़बड़ कर दिया। कभी यह क्लब पीने, बिलियर्ड्स खेलने और समय गुजरने का अच्छा साधन था। परन्तु उसने लाइसेंस रद्द करवा दिया-क्या उसने तुम्हें यह बात बताई? वह चाहता है कि क्लब में आएं और उससे बातें करें। यह सब मेरी समझ से बाहर है, उसका यह कदम, वह गैर अधिकारियों को क्लब से बाहर रखना चाहता है। यह तो ब्रिटिश राज़ की तरह हुआ कि, यहाँ के मूल निवासियों को क्लब में आने की अनुमति नहीं है। 'साठे इतना ठहाका लगाते हुए इतनी ज़ोर से हँसा कि आसपास के लोगों का ध्यान उसकी तरफ़ आकर्षित हुआ। और इस मामले में मदाना के निवासियों को यहाँ आने की अनुमति नहीं है तुम अधिकारी लोग तो राह चलते पक्षी की तरह हो, वैसे भी श्रीवास्तव तो डेढ़ साल में चला जाएगा।

ये तो हमलोग हैं जो क्लब के साथ यहाँ रहते हैं। अगर हम पीना चाहते हैं तो हमें अनुमति मिलनी चाहिए। एंटनी ठीक था, वह ऑफिस की गरिमा बनाये रखने के लिए श्रीवास्तव की तरह मूर्खतापूर्ण व्यवहार नहीं करता था। वह क्या समझता था कि क्लब किस लिए है? यह इस जंगली शहर में आने पर आश्रय का एक मनोरम स्थान है। यदि आपका परिवार मनोरंजन करने की चाह रखता है तो इसे शहर में क्यों नहीं ढूंढता? वैसे एक कलेक्टर को सिनेमाघरों और रेस्तराओं में अक्सर नहीं दिखना चाहिए, वह अपने पद के गौरव को बनाए रखेगा।' वह चपरासी जिसने अपनी पैंट सूखने को डाली थी वह अपनी सूखी हुई पैंट पहन कर शीतल पेय की ट्रे लिए चारों तरफ़ घूम रहा था। भाटिया ने एक सांस में एक ठंडा गिलास डकार लिया और दूसरा लेने को लपका।

मोहन ने कहा, मैंडी 'मदना से इतना गुस्सा मत हो।'

'अगस्त्य मुझे बताओ, क्या तुम्हें नौकरशाही के बारे में कुछ पता है ?'

'नहीं।'

यह श्रीवास्तव जैसे लोगों के कंधे पर लगी ब्रिटिश भारतीय चिप क्या है? हाँ, वह इस क्लब के साथ ऐसा ही करने की कोशिश कर रहा है, है कि नहीं, यह ऐसा स्थान बनता जा रहा है जहां पर दिन में अपना लंड ज़िले भर के लिए बंद करके रखते हैं और शाम को गर्मी, धूल से दूर इस जगह पर आकर आराम करते हैं, और अपनी तरह की चाह रखनेवाले अधिकारियों से मिलते हैं। उन्हें मदना को अकेला छोड़ देना चाहिए ताकि क्लब सहित मदना अपने तरीके से विकास करे। ये हमेशा हस्तक्षेप करते रहते हैं। एक समय था जब मैं क्लब को पसंद करता था।' उसी समय गेट पर चाटुकारों को देख घबराहट होने लगी। श्रीमती श्रीवास्तव आ चुकी थी।

केवल उसी की कार को क्लब में घुसने की अनुमति थी।' जैसे ही वह गेट से गुजरेगी उसके चूतड़ फ़ट जायेंगे,' साठे ने कहा। जोशी और कम्पनी कार के साथ-साथ अठारहवीं शताब्दी के आधुनिक बुरी दशा के धावकों की तरह धीरे-धीरे दौड़ने लगे (अगस्त्य उस नज़ारे को देखकर मुस्कराया) जैसे वह किसी रानी की पालकी हो। श्रीमती श्रीवास्तव ने गुलाबी, सुनहरी साड़ी पहन रखी थी –शायद वह साड़ी कांचीपुरम रेशम की बनी थी। रोशनी में उसके गुलाबी ब्लाउज़ के नीचे काली ब्रा भी नज़र आई। मेक-अप में उसका चेहरा कथकली के मुखौटे जैसा लग रहा था। बच्चों ने कार के पीछे दौड़ने वाले धावकों का पीछा किया, एक लड़के ने शिकायत की। उसकी नई टी शर्ट 'मैं एक अच्छा लड़का हूँ ' कहकर गलतबयानी कर रही थी।

'कोई इस तरह के क्लब में आने के लिए ऐसी पोशाक कैसे पहन सकता है?' साठे ने कहा,' अरे यह तो इस पल के लिए हफ्तों से इंतज़ार कर रही होगी।' वह बहुत खराब मूड में था। उस बास्टर्ड ने गोपालन से कहा, साठे को पिकनिक के लिए नहीं बुलाना चाहिए था। लेकिन नोट करना पिकनिक में इनकी पत्नीयां कैसा व्यवहार करेंगी। गोरपाक एक प्यारी जगह है, संयोगवश, वहाँ एक मंदिर है और उसी जगह एक साधू रहता है।

एक व्यक्ति ने माइक्रोफोन पर चुटकुले सुनाने शुरू किए। यह देख हर कोई बैठने के लिए कुर्सियों की तरफ़ मुखातिब हो गया। संगीतकारों ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया।

एक गिटारवादक ने भी कुछ चुटकुले सुनाए। संयोग देखिए, उसी समय एक बच्चा रोने लगा। इस पर अगस्त्य ने कहा'क्या हम यह बकवास सुनने आए हैं?'।

'यह बकवास नहीं है, बिलकुल नहीं, मैंने इन्हें पहले भी सुना है, इनका स्टैंडर्ड बहुत अच्छा है, 'साठे ने कहा। 'हालांकि जो गाने ये गाएंगे वे बकवास होंगे, संभवतः इस भीड़ की सामान्य पसंद की वजह से। इन्हें श्रीमती श्रीवास्तव जैसे लोगों को खुश करने के लिए हिंदी फिल्मों को शामिल करना चाहिए।'

फिर मोहन ने कहा, 'हमें कहीं और जाकर पीने का इंतज़ाम करना चाहिए, मुझे ऐसा मौका कभी नहीं मिला।'

उन्होंने देखा कुमार उनकी तरफ़ आ रहा था। 'मैं उस राइनो को नहीं सहन कर सकता, 'भाटिया ने कहा और वे सभी साठे की मारुती की तरफ़ मुड़ गए।

'ओह ,'अगस्त्य को समय से याद आ गया, 'मुझे श्रीवास्तव के साथ रात का भोजन करना था। क्या आप थोड़ा इंतज़ार करेंगे? मैं उसके पास जाऊंगा और कहूँगा मेरे सिर में दर्द है मैं अपने कमरे में जा रहा हूँ।' रोशनी मंद हो गई थी, और पहला गाना हिंदी फ़िल्म के डिस्को गीत के रूप में शुरू हुआ। गायक आवर्तन और घूरने में खो गया था, लेकिन वह अच्छा गा रहा था। उसी समय अगस्त्य ने देखा कि पुरुष और महिलाएँ अलग अलग बैठे थे, उनके अलग बैठने की व्यवस्था बीच के गलियारे और कुछ खाली कुर्सियों से की गई थी।

बाद में साठे ने खुलासा करने की कोशिश की,'यह मदना की परम्परा रही है। दूसरे छोटे कस्बों में भी ऐसा ही होता है। पुरुष महिलाओं और बच्चों से अलग बैठते हैं। मुझे सच में नहीं पता कि ऐसा क्यों होता है। शायद इसलिए कि कोई भी महिलाओं और पुरुषों को इकट्ठा बैठ कर आनंद उठाते नहीं देख सकता।

'लेकिन क्यों?' वे जनता के बीच संभोग तो नहीं कर रहे। ऐसा ही फिल्मों में भी होता है?'

श्रीवास्तव कुमार के साथ सामने की कतार में थे। कुमार की आँखें बंद थी। वह ताल की आवाज पर अपने सिर को झटक रहा था। अगस्त्य मुड़ते हुए एक संकरी जगह से हो उनकी तरफ़ गया, और उसने कहा, 'सर, मेरे सिर में दर्द है-'

'आप सभी शाम के समय कहाँ थे? मैं और एस पी साहब तुम्हें पूछ रहे थे।'

उसने माइग्रेन दर्द से पीड़ित की तरह चेहरा बनाया, यह बताते समय वह अपने आप को कसूरवार जता रहा था,'सर,' मुझे रात के खाने के लिए माफ़ करें, चेहरे पर जबरन मुस्कराहट लाते हुए उसने कहा, 'मैं अपना हिस्सा कल निबटा लूँगा।' श्रीवास्तव बहस करने के लिए बहुत तल्लीन था। उसने भौंहें चढ़ाते हुए एक बार उसकी तरफ़ देखा फिर एक पल के लिए मंच की तरफ़ देखा।

वे चुपके से बाहर मारुती के पास चले गए, जैसे किसी गलत काम के दोषी हों। अचानक से साठे ने पूछा,' तो तुम्हें भगवत गीता कैसी लगी ?'

'हां, मैं इसे पढ़ रहा हूँ। इसमें से अधिकांश असंबद्ध सी है। और कुछ भाग नहीं हैं - "लेकिन अगर कोई केवल विविधताओं को उनके मतभेद और सीमाओं के साथ देखता है तो यह एक अशुद्ध ज्ञान है। और यदि जड़ता की वजह से किसी मुर्ख ने आलस्य, भय, आत्म-दया, अवसाद और वासना का त्याग नहीं किया, तब वह वास्तव में अज्ञानता की स्थिरता है। "– तुम क्रेफ-एबिंग के मामले को जानते होंगे, वह मुझे इस्तेमाल किये हुए पेंटी स्निफ़र की तरह छोटा और घिनौना महसूस कराती है।

साठे इतना हँस रहा था कि वह एक रिक्शा से टकराते-टकराते बचा। 'मैं सचमुच महसूस करता हूँ कि हम धर्म को तभी समझना शुरू करते हैं जब हमारा लंड खड़ा होना

शुरू हो जाता है। 'उस दिन पूरी शाम को ऐसा ही मूड था, धींगामस्ती और ईशनिंदा से भरा अपने साहबीपन से दूर, अपनी स्वयं की स्थिति और दुनियादरी को भुलाता हुआ सा।

अगस्त्य का एक ख़त दिगंबर ने ध्रुबो के कमरे के दरवाजे के नीचे से खिसका दिया था इसलिए वह ध्रुबो से अपना ख़त लेकर देर से अपने कमरे में लौटा।

रेणु, वह पंजाबन जिसके साथ मैं संभोग करता था, वह अमेरिका चली गई (ख़त को इसी तरह शुरू किया हुआ था बिना किसी हैलो, नमस्ते या तारीख के। यही ध्रुबो का स्टाइल था मुँहफट और बेशर्मी भरा।) वह कह रही थी हमारे संबंधों को तोड़ने का यही एक तरीका है। उसने वहाँ जाने से पहले यही फर्स्ट वर्ल्ड रवैया अपनाया है – 'आजादी' और 'अपनी अंतरात्मा की खोज 'वह जाने से पहले यही जुमले दोहराया करती थी। वह हर चीज़ का आनंद अनमने मन से आँसूओं के साथ लिया करती थी। जाहिर है इसी ऊहापोह में वह अपने आपको वयस्क और परिपक्व समझने लगी थी।' कृपया सब लोग देखें मैं एक रिश्ता तोड़ रही हूँ, इसलिए मैं अब वयस्क हो गई हूँ, क्या यह आइसक्रीम खाने की तरह नहीं है?' उसके इस व्यवहार से मुझे लगता था कि मैं एक बच्चे को सतानेवाला व्यक्ति हूँ। पूजा के लिए दिल्ली आ जाओ। तुमने नौकरशाही को पतलून उतरने देने की तरह समझा है, इसलिए यदि तुम कलकत्ता गए तो गवर्नर तुम्हारे चूतड़ ले लेगा। यहाँ पर नशा बेचने वालों के लिए पुलिस बहुत सख्त हो गई है। इसलिए जब तुम आओगे तो कुछ ले आना। ध्रुबो।

मदना के बारे में एक शब्द भी नहीं था। यह उसका दूसरा संसार था; हालाँकि दो महीने पहले उसने इस बारे में कुछ बताया था; अब यह कुछ परेशान करने वाला वाकया था। अगस्त्य ख़त को हाथ में लिए, कमरे में घूम रहा था,साठे और रेणु के रिश्ते, उनके ब्रेकअप के बारे में सोचता हुआ वह मोहन और ध्रुबो को एक ही थाली के चट्टे -बट्टे समझ रहा था। वह नहीं चाहता था कि उसकी ज़िन्दगी के उलग-अलग दौर के दोस्त आपस में मिलें। उनकी मुठभेड़ लगभग खुद के पहलुओं के बीच होनी चाहिए, आमन-

सामने। वह सोच रहा था। वे एक दूसरे से क्या कहेंगे? फिर तुरंत खुद को जवाब दिया। परेशान मत हो, अलग वे मिलेंगे तो सामान्य बातें ही करेंगे मसलन राजनीति के बारे में, मौसम के बारे में और पिछली क्रिकेट टेस्ट की हार के बारे में; इस तरह के क्षणभंगुर मुद्दों पर बातें करना उन्हें अच्छा नहीं लगेगा; क्योंकि कोई भी नहीं चाहेगा कि दूसरे को यदि उसके बारे में कुछ पता भी चले तो सब कुछ न पता चले। मेंढक उसके जूतों के पास गू कर रहा था। 'हैलो, दादरु'। अगस्त्य ने सोचा 'हम सब अपनी परेशानियों और स्वार्थ को लिए हुए एक खोली की तरह हैं; ध्रुबो को समझना चाहिए कि मुझे उसके संसार में इतनी ही दिलचस्पी है जितनी कि उसे मेरे संसार में है।

पिकनिक का दिन था। वे साढ़े छह बजे कलेक्टर के घर इकट्ठे हुए और सात बजे गोरपाक के लिए निकल लिए। गोपालन ने बड़ी समझदारी से उस जगह को चुना था; उस जगह पर सबको ठीक समय पर पहुंचना ही था। यदि वे किसी और जगह पर मिलने का फैसला करते तो श्रीवास्तव खुद लेट हो गए होते- उसकी स्थिति ही ऐसी थी। अगस्त्य ने पांच बजे का अलार्म लगाया था क्योंकि उस दिन उसे कसरत भी करनी थी।

वह कसरत के लिए पागलपन की हद तक पहुँच गया था। अगर वह उस दिन कसरत ना करता तो आम दिनों की बनिस्बत वह दिन और बुरा होता। वह कसरत करने का अभ्यस्त हो गया था और उसे जारी रखना चाहता था, कसरत करने से उसके मन में ठहराव सा बना रहता था, कसरत के बिना उसका दिन गड़बड़ हो जाता था। कसरत करने के बाद वह कुछ भी करने को तैयार रहता था चाहे वह बेतुका काम हो या अविवेकी। बिना कसरत किए वह उदास हो जाता था, पुश-अप और तेज़ी से सांस लेने वाली कसरत वह जरूर करता था इससे उसके दिन की शुरूआत अच्छी होती थी।

जब उसने कसरत करनी शुरू की थी तब उसे अच्छा लगा था, और कसरत करते समय वह अपने आपसे कहता था, ('मैं पैंतीस साल की उम्र में श्रीवास्तव और कुमार जैसा नहीं दिखना चाहता।'लेकिन तुम पैतीस साल के होकर भी बीस साल के क्यों दिखना चाहते हो? नीरा यह तो धोखा है, है कि नहीं?' 'ठीक है मैं कसरत इसलिए भी करता हूँ की इससे मुझे अच्छा लगता है, और इस तरह का आत्मविश्वास यौन-क्रिया में फायदा करता है।' और मदना में यौन-क्रिया के लिए है ही कौन? “मैं कसरत इसलिए भी करता हूँ कि कसरत करने के बाद मेरी भूख बढ़ जाती है और मैं पागलों की तरह खाना खाता हूँ।' 'हाँ यह सच है, तुम पागल की तरह कहते हो। जैसा कि मदन कहा करता है, तुम बंगाली की तरह खाते हो। 'लगता है महिलाएँ कसरत नहीं करती। वे तो डाइटिंग करती हैं उन्हें यही तरीका आसान लगता है।' 'नीरा तो डाइटिंग भी नहीं करती।'); और जब वह कसरत खत्म करता है, तब उसे बिलावजह बहुत तसल्ली होती है, उसके चेहरे पर चमक आ जाती है। पिकनिक वाले दिन वह कुछ अधिक ही चमक रहा था क्योंकि उस दिन उसने समय निकाल कर जाने से पहले कसरत की थी और कलेक्टर बन साढ़े छह बजे बाहर आ गया था, उसके एक मिशन का उत्साह पूरा हो गया था, और एक लक्ष्य प्राप्त कर लिया था।

हर दिन अपने आप को यह बताने से शुरू करो; आज मुझे दखलंदाजी, अकृतज्ञता, बदतमीजी, बेवफ़ाई, वैर भाव, और खुदगर्ज़ी का सामना करना होगा–ये सभी भावनाएँ अपराधियों की अज्ञानता का कारण हैं, उन्हें होश नहीं कि अच्छा क्या है और बुरा क्या।' जब मदना के लोग सैर करने बाहर निकलते हैं तो, मार्कस को उनके पास से सैर करते हुए गुजरते देखना अपने आप में एक मनोरंजन है। मार्कस की परेशानी खुश करने वाली होती है, अगस्त्य के लिए दुनिया इतनी बुरी नहीं है जितनी कि मार्कस के लिए।" सुबह बिस्तर से उठते समय अनिच्छा से मत उठो कि मुझे लोगों के लिए खपना है, वरन सूरज की पहली किरण से ही उत्साह से भर जाओ।" जब वह सड़क किनारे मल-त्यागते समय बतियाते हुए बच्चों के झुण्ड के पास से सैर करते हुए गुजर रहा था तब अगस्त्य सोच रहा था कि ऐसे नज़ारों की याद कर बिस्तर से उठने का किसी का दिल नहीं करता, शायद मेनन का भी नहीं। 'क्या मेरा यही वज़ूद है कि मैं घर पर बिस्तर में

कम्बल में लिपटा पड़ा रहूँ? 'मेनन के लिए कोई आवाज कमोड में लेंड़ी गिरने जैसी है, लेकिन वही आवाज मार्क्स को प्यारी लगती है, यह सोचकर वह मन-ही-मन मुस्कराया।

कलेक्टर के घर अब तक सभी सो रहे थे। दुबले-पतले और तेज आँखों वाले सपेरे पतले कपड़े पहने छाया दर छाया चुपचाप चले जा रहे थे, लेकिन बड़ों के पेड़ों का धुँधलापन अभी छटा नहीं था। पीपल की निचली टहनी पर एक बंदर बेशर्मी से हस्तमैथुन कर रहा था। हवा शांत और ताज़ा थी। अगस्त्य ताज़ा हवा में गहरी साँसे लेना चाहता था, इसलिए वह धीर-धीरे दौड़ने लगा, उसके दौड़ने की आहट सुन, बंदर निचली टहनी से ऊपर की टहनी पर छलांग लगा गया। वह उस सड़क पर दौड़ते हुए जा रहा था, जो ऐसी जगह बनी थी, जहाँ कभी एक प्राचीन जंगल हुआ करता था, जंगल के पक्षियों की चहचहाट, और जंगली जानवरों की सरसराहट रहित शांत जगह थी वह। घर के दरवाजे पर पहुँचने से पहले उसने गहरी सांसें भरी।

वह सबसे पहले वहाँ पहुँचा। श्रीमती श्रीवास्तव लॉन पर बैठी चाय पी रही थी, वह उंनींदी,गुसैल और पहले से सुन्दर लग रही थी।' 'आप कितने तरोताज़ा लग रही हैं,' उसने अनमने मन से कहा। उसी समय जींस और टाईट टी-शर्ट पहने श्रीवास्तव वहाँ आ गया, वह बेहद शर्मीला लग रहा था। अगस्त्य सोच रहा था इसे तो एक ब्रा की ज़रूरत है, अच्छा रहे कि यह अपनी बीवी की वह काली ब्रा पहन ले (फिर उसे अपने स्कूल के दिनों की याद आई, स्कूल में ध्रुबो ने मोटे और ढीली चमड़ी वाले प्रशांत के बारे में एक बार कहा था, 'जब यह गू करने के लिए उकडूं बैठता है तब अपने स्तनों को कंधों पर डाल लेता है वरना इसके निपल्स अपनी गेंदों की गुदगुदी करते हैं')। नींद से भरे बच्चे पीछे खड़े थे। फिर सुबह की चुप्पी तोड़नेवाली वाहनों की आवाज लिए सभी पिकनिक वाले लोग एक साथ आ गए- बजाज और उसकी मोटी मितभाषी पत्नी, कुर्ता और चश्मा लगाए कुमार जींस में थे, वन विभाग के और लोग, उनमें से कुछेक को अगस्त्य ने पहले कभी नहीं देखा था। देखते-ही-देखते पूरा लॉन चिल्लाते हुए उत्साहित बच्चों और एक दूसरे से मुखातिब हो मुस्कराती हुई पत्नियों से भर गया। पत्नीयाँ देर रात टीवी प्रोग्राम

पेश करने वाली महिलाओं जैसी लग रही थी–कॉस्मेटिक्स और उनकी मुस्कराहट से उनकी अधूरी नींद नहीं छिप रही थी।

मोहन, भाटिया और अगस्त्य के साथ सिगरेट फूँकने की योजना बनाते समय अपनी पत्नी की राह देख रहा था। श्रीवास्तव, कुमार, बजाज और गोपालन हड़बड़ी मचा रहे थे, और उन चपरासियों पर दादागिरी कर रहे थे, जो पिकनिक के लिए ढेरों खाना जीपों में लाद रहे थे, और मोटरों के काफ़िले के बारे में बहस कर रहे थे। वे बहस करते समय कभी खिसियानी हंसी हँसते, कभी ठहाका मारते हुए कर कर्णभेदी अट्टहास करते और कह रहे थे 'खाना, महिलाएं, बच्चे और चपरासी पहले’, फिर दो कारें और दो जीपें बची वे बच्चों की बातों को नज़रअंदाज़ कर रहे थे।

एक कार और दो जीप पुरुषों के लिए छोड़ दी गई। अचानक सभी ने मर्दानगी और तेजी दिखने की सोची और जीप में जाने का निर्णय लिया। अगस्त्य, भाटिया और मोहन के विरोध को नज़रअंदाज़ करते हुए वन विकास निगम के दो व्यक्तियों– रेड्डी और प्रभाकर के साथ कार में धकेल दिया गया। प्रभाकर ने यह कहते हुए विरोध किया,'यह पिकनिक का कोई तरीका नहीं है, यह तो इस तरह है जैसे कि अफसर लोग किसी टूर पर जा रहे हों। निर्णय यह लिया गया था कि खाना हम खुद पकाएंगे, फिर हम इतने सारे चपरासियों को अपने साथ क्यों लेकर जा रहे हैं? ये लोग......। कह कर उसके शब्द या फिर उसकी ज़बान जवाब दे गई।

यह अगस्त्य की शहर से बाहर ज़िले में जाने की पहली यात्रा थी, इस तरह उसकी शिक्षा ज़ारी थी। उन्हें शहर के बीच से निकलने में आधा घंटा लगा। वे गांधी हाल के पास से होकर गुज़रे, उसने अपनी पहले दिन की इंटिग्रेशन मीटिंग को याद किया। गांधी के हाथ की छड़ी अब भी वहीं थी, उनके चूतड़ से सटी हुई। उसने कहा 'कोई विश्वास ही नहीं कर सकता कि यह गांधी की प्रतिमा थी।

'मदना के लोगों से आप और क्या उम्मीद कर सकते हैं?' भाटिया ने खुलासा किया।

'अच्छा यह शहर या ज़िले की ग़लती है,' अगस्त्य ने जवाब दिया, और याद किया उसने दिल्ली में भी भाटिया पर लगे आरोपों की ख़िलाफ़त कर उसका बचाव किया था, लेकिन उसे याद नहीं आ रहा था, किन आरोपों के ख़िलाफ़ और कब।

'लेकिन यह शहर की गलती है। अगर उनके दिलों में खुद के लिए या महात्मा के लिए कोई सम्मान होता तो महात्मा की प्रतिमा को इस तरह ज़लील न होने देते। 'भाटिया के मुँह तोड़ जवाब ने अगस्त्य को चुप कर दिया। वह आमतौर पर भाटिया की बातों से हैरान और घृणित हो जाता था और उन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया करता था। लेकिन भाटिया ने जो कहा था वह सच था, कि मदना में किसी को फ़िक्र नहीं थी कि उनका शहर कैसा लग रहा है। एक महात्मा की प्रतिमा को इस तरह बेइज़्जत करने पर उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। उस इंटीग्रेशन मीटिंग में एक गुंडे ने बताया था कि, महात्मा की प्रतिमा लगाने का सब लोगों ने विरोध किया था, लेकिन प्रतिमा तो लग चुकी थी और लोग अपना गुस्सा उसे अपमानित कर निकाल रहे थे। वह सोच रहा था, लेकिन जाहिर है यह मदना की इकलौती बेपरवाही नहीं थी, उसने दिल्ली या कलकत्ता जैसी बड़ी जगहों पर ऐसी बिगाड़ी हुई प्रतिमा शायद कभी नहीं देखी। अगर कहीं कोई बिगड़ी प्रतिमा होगी भी तो उसने बस की खिड़की से देखी होगी या फिर गुजरते समय अनमने मन से आंख के कोने से देखी होगी; उसे हल्का सा याद है कि उसने किसी पत्थर की प्रतिमा का घटिया प्रतिरूप देखा था; लेकिन किसी भी बिगड़ी प्रतिमा पर वह इस तरह एकदम से हैरान नहीं हुआ था। उसे हैरानी हुई कि, शायद मदना में देखने के लिए बहुत कुछ नहीं है इसलिए उसने महात्मा की प्रतिमा पर ज़्यादा गौर फ़रमाया– फिर उसे अहसास हुआ कि दिल्ली और कलकत्ता में उसका दिमाग बेकार की बातों में ज़्यादा व्यस्त रहता था वह किसी के साथ भी बे-सिर- पैर की बातें करता रहता था, किसी से कोई चीज़ लेने के लिए कहीं जाने को उत्सुक रहता था, किसी को कुछ कहने के लिए दोबारा मिलने की सोचता रहता था। वहाँ पर उसका दिमाग इतना अस्तव्यस्त रहता था कि वह अपने आसपास को नज़रअंदाज़ करे रहता था।

गोपालक तक जाने का ढाई घंटे का सफ़र था। भाटिया पूरे रास्ते जीभ लपलपाते हुए नशेड़ी की तरह सिगरेट फूँकने की जुगत भिड़ाता रहा और उन दो वन कार्पोरेशन वालों के साथ बकवास करता रहा कि, चलो कार में ही धुआँ छोड़ें। अगस्त्य हर चीज़ के लिए मज़ाक़ था, लेकिन मोहन ने इशारों -इशारों में उन दोनों को रोक रखा था।

पचास साल पहले मदना के एक छोर पर यहाँ के पुराने किले की दीवार थी। गेट से कुछ दूरी पर एक सूखी खाई थी (उस खाई में अब मदना का कूड़ा-कर्कट डाला जाता है) खाई से लेकर कुछ दूर तक ख़ाली मैदान, फिर मीलों दूर तक छिट-पुट कारणों से अशांत जंगल। लेकिन बढ़ती आबादी की वजह से शहर पुरानी हदों को पार कर बाढ़ की तरह जंगल की सीमाओं तक फ़ैल गया था, और जंगल का दोहन शुरू हो चुका था– यह एक दूसरी जानी-मानी कहानी है। एक बार एक आदिवासी राजा के हाथी एक ही कतार में इस पूर्वी गेट से होकर गुजरे थे। अब राजदूत यहाँ चौकड़ी मार कर बैठता है, वह दो झगड़नेवाले रिक्शावालों को दूर हटाने के लिए अपनी मोटर का हॉर्न बजाता है, जबकि लकड़ी से लदे ट्रक का ड्राइवर नशे में धुत्त हो डगमगाते हुए किनारे से अपने ट्रक को सबसे पहले आगे बढ़ाने की जुगत में रहता है। गेट के प्रवेशद्वार पर लोफरों से घिरा एक पनवाड़ी राजदूत को बिना किसी उत्सुकता से कनखियों से देखता है। सड़क किनारे सुबह साढ़े सात बजे ही सब्जियों, मछलियों और गन्ने के जूस की दुकानें सज जाती हैं। गेट के किनारे से दूर क्षितिज तक नदी की चमक दिखाई पड़ती है। शौच करते बच्चे खड़े होकर कार पर मुक्के मारते हैं जैसे वे रैली में जाती कार को उकसा रहे हों।

कार सिर्फ़ जंगल के पास ही तेज़ हो सकती थी। भाटिया ने अगस्त्य को कहा 'देखो नन्हें सागवान के पेड़,' इन्हें बड़े होने में आने वाले कुछ दशक लगेंगे, ये सब वन विभाग ने लगवाए हैं।' 'पेड़ पतले और मरियल थे, और जंगल सूखा था।

'भारत में सागवान की लकड़ी की सबसे ज़्यादा तस्करी होती है, 'आगे की सीट पर बैठे रेड्डी ने बताया। 'हमारे लिए बहुत मुश्किल है।'

मोहन ने जंगल की दुर्दशा पर निराश बैठे अगस्त्य की मनसा को भाँपते हुए कहा,'ये हमारे बागान हैं।' 'असली बड़े सागवान के जंगल तो दक्षिण में रामेरी के सब-डिवीजन में हैं, लेकिन अब वे भी उजड़ने लगे हैं। वह बहुत बड़ा आदिवासी इलाक़ा है, और वहाँ बहुत से नक्सलवादी हैं, जो आदिवासियों को शोषण से बचने के लिए संगठित करने में लगे हैं।'

वे छोटे-छोटे गाँवों, ज़िले की बसों के बस-स्टॉपों, छोटे नालों पर बने पुलों को पार करते जा रहे थे। कार रास्ते के पुराने बड़े पेड़ों की छाया के नीचे सुस्ताने बैठे, लेटे लोगों को परेशान कर रही थी कार का हॉर्न सुनकर वे लोग चौकस हो रहे थे। अगस्त्य ने पूछा' क्या आप समझते हैं ये पेड़ों के नीचे इसलिए आसरा लेते हैं क्योंकि यहाँ साँपों का डर कम है।' कोई नहीं जानता था। 'क्या आप समझते हैं कि ये लोग घास पर या जमी हुई मिट्टी पर बैठने के लिए सड़क किनारे बैठना पसंद करते हैं।' फिर से यह बात भी शायद कोई नहीं जानता था। इस बात में किसी की कोई दिलचस्पी भी नहीं थी। बाक़ी लोग सुस्त लग रहे थे, शायद एक जानीमानी सड़क पर कार से एक और लम्बी यात्रा का असर था उन पर। फिर वह जवाब अगस्त्य को खल गया।' निस्सन्देह पेड़ों की छाया उन्हें आकर्षित करती है ना कि सड़क की घास या जमी मिट्टी।’ नई-नई चीज़ें उसे उत्साहित कर रही थी, और वह इस यात्रा से ग्रामीण भारत के छोटे-छोटे रहस्यों को जानने में रूचि ले रहा था। 'कुछ छतें फ़्लैट और कुछ ढलवाँ क्यों हैं?' 'क्या वे खाइयों की खुदाई इसलिए कर रहे हैं ताकि जंगल में अचानक लगी आग फैल ना पाए?' 'वह अजीब-सी टहनी, झाड़ी, पेड़ जो भी कुछ है, क्या यह बाँस है?'

मोहन ने आखिरी सवाल का जवाब शुद्ध हिंदी में दिया, 'तुम अपनी नादानी का प्रदर्शन एक मोहक खूबी की तरह करते हो।' इसके बाद अगस्त्य शांत हो गया।

गोरपाक का मंदिर दिखने से पहले उन्होंने नदी को पार कर लिया। नदी बहुत विशाल और फैली हुई थी लेकिन शांतचित्त जानवर की तरह शांत थी। हालाँकि उसका पुल चूतड़ तोड़ देनेवाला था।

अगस्त्य गोपालक के शिव मंदिर को देखकर हैरान था (मोहन ने उसी दिन बाद में हल्की चिड़चिड़ी आवाज़ में कहा, 'तुम हमेशा, इस मंदिर से, शहर में गांधी की प्रतिमा से, वन कालोनी की सुंदरता से इतने हैरान क्यों होते हो? तुम इस ज़िले के बारे में इतनी गलत धारणाएँ लिए क्यों आये थे?')

मंदिर परिसर के बाहर भारत के पुरातात्विक सर्वेक्षण की पट्टिका लगी थी, जिस पर लिखा था– यह मंदिर एक संरक्षित स्मारक है, इसको किसी तरह का नुकसान पहुँचाने से दण्ड दिया जा सकता है और विभिन्न प्रकार के जुर्माने देने पड़ सकते हैं। अगस्त्य ने कहा, 'मुझे लग रहा था इस पर लिखा होगा, इसे किसने और कब बनवाया था।'

'अरे, अगस्त्य, लगता है तुम मंदिरों के लिए बहुत बौद्धिक नज़रिया रखते हो,' श्रीमती श्रीवास्तव ने मुस्कराते हुए कहा। इस बात पर कुछ पत्नीयाँ दाँत निकालने लगीं।

चारों की टोली खाने का सामान वन के रेस्ट हाउस में रखने का आदेश देने लगी। श्रीमती बजाज सब से पूछ रही थी, 'क्या हमें मंदिर दोपहर के भोजन से पहले देखना चाहिए या बाद में?' कोई भी उसका जवाब नहीं दे रहा था।

भाटिया ने कहा, 'हमें यहीं पर नहीं खड़े रहना चाहिए।' हमें किसी की सहायता ले लेनी चाहिए।'

मोहन ने कहा, 'मुझे लगता है हमें पहले सिगरेट पी लेनी चाहिए,' फिर सब ठीक ठाक हो जाएगा।' वे गेट से होकर अंदर चले गए।

यह मंदिर पहाड़ी पर था, जिसके ऊपर से फैली हुई विशाल नदी दिखाई दे रही थी। उबड़-खाबड़ चट्टानों की सीढ़ियों पर चार सौ फ़ीट की ऊँचाई थी, जिन्हें गोपालक के लोगों ने बड़ी सुघड़ता और बिल्ली की सी-तेज़ी से काटकर बनाया था। सुबह के लगभग

दस बजे थे। सूरज के नीचे और मंद हवा में पानी एक सुनहरे काँच की धारीदार चादर जैसा लग रहा था; पेंटिंग की तरह अचल सी कुछ नौकाएँ, रेतीले तटों पर पक्षी; नीचे एक किनारे से दूर हटते पानी की आवाज़ और पानी लेती, कपड़े धोती गाँव की महिलाओं की बातचीत की आवाज़– ये सब मिलकर मनोरम दृश्य बना रहे थे। 'महिलाओं को देख रहे हो?' पीछे से कुमार बड़बड़ाया।

पिकनिक की पूरी टोली अंदर आ गई। उन्हें एक पुजारी गाइड कर रहा था, वह श्रीवास्तव से आनंदित हो बातें कर रहा था। बजाज को एक भिखारी बच्चों के झुण्ड ने तंग कर रखा था। वे उनकी बाजू की चमड़ी खींच रहे थे और पैसे माँग रहे थे, और एक दूसरे को देख मुस्करा रहे थे। पुजारी परिसर के खंडहर के पास टोली को गाइड कर रहा था। परिसर बहुत बड़ा नहीं था करीब चार टेनिस कोर्ट के आकार का था, भीड़-भाड़ ज़्यादा नहीं थी, कुछ घुमक्कड़ ही थे जो कि आदिवासी थे, मंदिर के अंदर से मंत्रोच्चारण की ज़ोरदार आवाज़ आ रही थी।

कुमार और अगस्त्य टोली की तरफ़ चले गए, अगस्त्य सोच रहा था भाटिया और मोहन कहाँ सिगरेट पी रहे होंगे। कुमार ने पूछा, 'आपका पुलिस बंधन कब शुरू होगा?'

'लगभग दस दिनों में, सर।'

'अच्छा, फिर हमें मज़ा आएगा।' उसने मंदिर की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। 'क्या तुमने ये सब देखा है? सेक्सी मूर्तियाँ, जोड़े कैसे कठिन आसनों में संभोग कर रहे हैं।' मंदिर की दाँतेदार दीवार नक्काशीदार आकृतियों से भरी पड़ी है, कभी ये बहुत खूबसूरत रही होंगी।

'मुझे माफ़ करना, सर।'

'तुम कहाँ जा रहे हो?' अगस्त्य ने अपनी छोटी उँगली उठाई। 'या फिर मूर्तियां आपको उत्तेजित कर रही हैं– थोड़े हाथ के प्रयोग की ज़रूरत है?' इस बात पर कुमार तब तक हँसता रहा, जब तक उसका चश्मा उसकी नाक तक नहीं फिसल आया।

आख़िरकार अगस्त्य खंडहर की दीवार के पीछे खड़े भाटिया और मोहन के पास चला गया। 'तुम कहाँ गए थे?' भाटिया ने उसे सिगरेट पकड़ाते हुए कहा। मोहन रूखेपन से मुस्कराते हुए, दीवार के सामने पड़ी एक ग्रेनाइट की चट्टान पर बैठा था। 'अगस्त,' कहकर वह हँसा,'क्या नाम है, अगस्त। मैं तुम्हें अगस्त्या बुलाऊँगा।' मोहन उसकी तरफ़ तिरस्कार की भावना से देख रहा था। 'अगस्त्य, तुम्हारी समझ मैंडी की समझ से ज़्यादा चौंकानेवाली नहीं है। इसे और कम चौंकाने वाली होना चाहिए।'

भाटिया ने कहा,' मदहोशी में मोहन कट्टर हिन्दू बन जाता है।'

ज़ाहिर है अलवर में उसने अपने देहाती गिरोह के साथ चिलम पी और उन्होंने एक दूसरे से हिन्दू मिथक के उद्दण्ड सवाल पूछे, जो भी हो वे इतना खो गए कि उन्होंने एक दूसरे को अपने चूतड़ भी दिए होंगे।'

मोहन मदहोशी में था– वह मंद और बेकाबू हँसी हँसा। उसने परेशान करने के इरादे से धीरे से मज़ाक में कहा, 'अरे तुम ईसाइयों के बच्चो,यह क्या है?'उसने अपने सामने की आलीशान खुदाई की हुई दीवार के खंडहर की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, लेकिन ये नक्क़ाशी जानवरों और पुरुषों दोनों की हैं।

अगस्त्य ने एक मछली, एक कछुआ और कुछ पुरुषों को देखा। 'ओह, विष्णु के दस अवतार। 'वह दीवार की तरफ़ ज़्यादा ध्यान से देखने के लिए मोहन के पास बैठ गया। 'इन्हें बहुत अच्छी तरह से बनाया गया है।'

'भाटिया ने कहा और अगर यह पूरी दीवार देखने को मिलती तो हमें पाशविक व्यभिचार देखने को मिलता। उसने यह गंभीरता से कहा, मोहन खुश होकर भाटिया की तरफ़ मुस्कराया, 'यह राष्ट्रीय शर्मिंदगी कैसे महसूस कराता है?'

भाटिया ने कहा, 'चलो उस भीड़ में शामिल होने से पहले आख़िरी बार कुछ धुआँ छोड़ लें।'

'यह मंदिर दसवीं शताब्दी की दूसरी छमाही में बनाया गया था, मैंने यहीं कहीं दूसरी पट्टिका में यह पढ़ा था। इसे चंदेल वंश के ढंगा ने बनवाया था। ज़ाहिर है तुमने तो यह नाम पहले कभी नहीं सुना होगा। जाहिर तौर पर मोहन उन सबकी तरफ़ देख उनका मज़ाक़ उड़ाना चाह रहा था।

'ओह, खुजराहो।' यदि अगस्त्य गंभीर नहीं होता तो वह और अधिक रोमाँचित हो गया होता। 'चन्देलों ने खुजराहो को बनाया। कोई आश्चर्य नहीं।' उसने दूसरी तरफ़ की दीवार को और अधिक दिलचस्पी से देखा।

'मैं बहुत प्रभावित हूँ,' मोहन ने उसके कंधे थपथपाते हुए कहा, 'पिकनिक में आये इन सब बेवकूफ़ों में से किसी को भी यह नहीं पता होगा। कुमार- जैसे कुछ लोग तो इन स्वप्नदोष वाली महिलाओं को देख उत्तेजित हो गए होंगे। रोहिणी जैसे कुछ लोग जो सेक्स को गंदा समझते हैं, वे सोचेंगे यह जगह ठीक है क्योंकि यह एक मंदिर है। श्रीमती श्रीवास्तव आपको अभी नहीं बता रही थी कि आपका मंदिरों के लिए एक बौद्धिक नज़रिया है। वे तो थोड़ी सी बात पर ही चिड़चिड़ी हो जाती हैं। उसका मतलब है, तुम मंदिर में आकर ऐसा क्यों सोचते हो? वह ऐसा नहीं कह सकी क्योंकि वह तो एक गूँगी गाय है।'

भाटिया ने कहा, 'लेकिन सेक्सी,' मुझे लगता है हमें नीचे चलना चाहिए नहीं तो कुमार जैसा कोई हमारे पास ऊपर आ जाएगा।

'मोहन ने पूछा, क्या तुमने कभी देखा है महिलाएं शिवलिंग के आगे कैसे पेश आती हैं।

'नहीं।' असल में अगस्त्य वहाँ से जाना नहीं चाहता था।

'ओह, यह तो एक ब्ल्यू फ़िल्म की तरह है। यदि लिंग शिवजी का है तो क्या हुआ, है तो लिंग ही, चलो देखते हैं।'

दूसरे लोग मंदिर के प्रवेशद्वार पर थे, वे अपने जूते,चप्पल निकाल रहे थे। भाटिया ने कहा,'अरे, दुःख की बात है मैंने तो आज अच्छे जूते पहन रखे हैं, नहीं तो कोई बढ़िया जूते चुराता।' मंदिर में मंत्रोच्चारण ज़ोर-ज़ोर से हो रहा था लेकिन फिर भी सुरीला लग रहा था। कुमार शिवजी के आगे झुकते हुए कहता है, 'शिव भोले, मैं आपको नमन करता हूँ' फिर वापिस आकर चैन की सांस लेता है, 'क्या यह संतोषजनक था?'

गलियारा एक बड़े कमरे की तरफ़ जा रहा था, जहाँ पर क़रीब एक दर्जन भक्त बैठे भजन कर रहे थे। उनकी आवाज़ें तेज़ होती जा रही थीं। अगस्त्य को लगा, पुजारी कलेक्टर के कान के पास आकर बताते हुए, दीवार पर कुछ दिखा रहे थे। उसने दीवार को अपनी उँगलियों से छूकर महसूस किया, किस तरह दीवार पर नक़्क़ाशी करके इसे संजीदा बनाया गया था। शिवजी के काले पत्थरों के लिंग के ठीक ऊपर पवित्र अभयारण्य में एक नीले रंग की ट्यूब-लाइट थी। वहाँ पर पत्नीयाँ बड़े गर्व से आ रही थी।

वे अपनी बारी आने पर शिवजी के लिंग पर बड़े आराम से चंदन का लेप मसल रही थी, उस पर पानी और फूल चढ़ा रही थी, दंडवत् हो उसके सामने प्रार्थना कर रही थीं और धूपबत्ती लगा कर उस जगह को दमघोंटू बना रही थी, वे लिंग को छूकर अपनी उंगलियों को चूम रही थीं। अगस्त्य को वह सब बेहद सनकीपन सा लग रहा था। उसके पीछे खड़ा कुमार मुश्किल से सांस ले पा रहा था।

लेकिन अगस्त्य को ईशनिंदा से कोई गुरेज़ नहीं था। उसके लिए धर्म के प्रति आस्था दूर की चीज़ थी, दूसरी तरफ़ उसके पिताजी वंशानुगत आध्यात्मिकता से बँधे थे। उसके पिताजी कहा करते थे कि कोई भी इंसान किसी एक धर्म की आंतरिक श्रेष्ठता को साबित नहीं कर सकता, जब उसके बहन और भाई उसकी पत्नी को जालसाज़ी करके धर्म परिवर्तन करने को कहते थे तब वह उन्हें बहुत गौरवशाली ढंग से कहा करता था– मैं हमेशा हिन्दू ही रहूँगा और वह कैथोलिक। क्योंकि हम वैसे ही पैदा हुए हैं, इसलिए धर्म परिवर्तन करने का कोई सवाल ही नहीं उठता। यद्यपि वे चाहते थे कि उनका बेटा हिन्दू ही रहे, इसके लिए वे बौद्धिक तर्क देते थे। उन्होंने कहा था यह धर्म तुम्हारा बहुत कम समय लेगा। 'तुम अपने हिसाब से कुछ भी सोच सकते हो और कुछ भी कर सकते हो फिर भी हिन्दू बने रहोगे। 'नतीजतन अगस्त्य शायद ही कभी मंदिर जाता हो, और वह शरद ऋतु की पूजा में सिर्फ माँ दुर्गा की मूर्ति के सामने खड़ा होता था– लड़कपन में, फिर बाद में जब वह किशोर था, तब कलकत्ता में अपनी मौसियों से ज़्यादा लगाव रखता था, पूजा के लिए सभी नए कपड़े पहने होते थे, त्यौहार की वजह से भारी होने वाली हवा में सांस लेते, रात को जादू के शो के लिए और सारी रात चलनेवाली खुली हवा में दिखाई जानेवाली फिल्मों के लिए तैयार रहते।

उनके पुलटुकाकु को, हमेशा की तरह, शुरू से ही उसके बड़े भाई की गोअन से शादी करने पर ऐतराज़ था। 'तुम्हारे बच्चे सांस्कृतिक रूप से संकर जाति के होंगे। हमारा अतीत बताता है कि हम क्या हैं, तुम उन्हें सम्पति से वंचित कर दोगे।' लेकिन उनकी कोई नहीं सुनता था और कोई भी उनकी परवाह नहीं करता था। वर्षों से उन्होंने परिवार के कम-से-कम एक लाख फ़ैसलों पर आपत्ति जताई होगी, लेकिन अगस्त्य के लिए उनका रुख़ कभी नहीं बदला। 'तुम एक बेतुका मिश्रण हो, एक बोर्डिंग- स्कूल -अंग्रेजी साहित्य की शिक्षा और एक हिन्दू मिथक का अस्पष्ट नाम। कृपया आधिकारिक रूप से अपना नाम बदल लो, उन हास्यास्पद विकल्पों में से, जो आपके दोस्तों ने आपको दिये हैं, कोई भी एक नाम रख लो।

कुमार ने अगस्त्य की बाँह खींची। और वे बाहर चले गए। 'जब भी मेरी पत्नी शिव मंदिर जाती है तब मैं उसके साथ जाता हूँ। वह समझती है मैं बहुत धार्मिक हूँ,' कहकर कुमार ठहाका लगा कर हँसा, उसका चश्मा उसकी नाक पर आ गया, सूरज के सामने एक आँख बंद हो गई।' और हर एक गोपालक आता है, यहाँ तक कि ब्रिटिश कलेक्टर भी आये थे।'

हैट पहने एक आदमी उनके पास आया। उसने कुमार को कहा, 'गुड मॉर्निंग सर, और अगस्त से हाथ मिलाया। 'मैं दुबे हूँ, यहाँ गोपालक में वनों का सहायक संरक्षक हूँ।'उसने कुमार की तरफ़ मुड़कर कहा,'रेस्ट हाउस में नाश्ता तैयार है, सर। बाद में अगस्त्य को पता चला कि उसने सूरज की रोशनी से बचने के लिए टोपी नहीं पहन रखी थी, लेकिन अपने मुंडाए सिर को ढँकने के लिए पहन रखी थी।क्योंकि कुछ दिन पहले उसके पिता स्वर्ग सिधार गए थे।

दुबे ने कैम्प में अलाव जलवाने के लिए चपरासियों के साथ काफी मशवक्त की थी। खाना पकाने से पहले वे नाश्ते के लिए लॉन में बैठ गए, उन्होंने वहाँ खाया-पिया। उनके खाने में थोड़ी फ्राइड दाल, अंगूर, हल्की गर्म कोला, मीठी चाय, आलू के भरवां पराठे, दही, आमलेट, आम और फ्राइड चावल थे। अगस्त्य इतना मदहोश था कि किसी चीज के लिए भी मना नहीं कर रहा था। इतने अव्यवस्थित खाने के बाद सब लोग इतने सुस्ता गए कि दोपहर का खाना पकाने का किसी का भी मन नहीं था। श्रीवास्तव ने तेज़ कर्कश आवाज़ में हँसते हुए कहा, 'हमें पत्नियों से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे चपरासियों से दोपहर का खाना बनवाएँ। इस पर बाक़ी सब लोग भी हँसने लगे। यह सुनकर पत्नीयाँ अलाव की तरफ़ चली गईं और सलाह-मशविरा करने लगी। मोहन ने अपनी पत्नी को भी उनके साथ भेज दिया ('रोहिणी ऐसे अच्छा नहीं लगेगा कि हम दोनों बैठे रहें और बाक़ी सभी पत्नीयाँ काम करें।') फिर उसने भाटिया और अगस्त्य को मिलाने के लिए अपनी तरफ़ खींच लिया। लेकिन जब वे दूर जा रहे थे तो गोपालन ने भाटिया को आवाज़ लगाई।

'हरामी' बड़बड़ाते हुए भाटिया चला गया। जब वे वापस लौटे तब वे गोपालन के साथ पत्नियों के पास थे। मोहन रोहिणी के पास चला गया। आराम कुर्सियों पर बैठे सभी लोग उनींदे से हो रहे थे, सिर्फ़ गोपालन का बेटा अशोक, क्रिकेट बैट और बाल लिए किसी को अपने साथ खेलने के लिए ढूँढ रहा था।वह अगस्त्य की तरफ़ दौड़ा।

अगस्त्य ने कहा 'ओके, लेकिन पहले बल्लेबाजी मैं करूँगा।'

लड़का उत्तेजित हो खिसियाने लगा क्योंकि उसके साथ उसकी भाषा में बात करने वाला कोई तो मिला। 'नहीं, पहले बल्लेबाजी मैं करूँगा।'

'बकवास बंद कर, 'अगस्त्य ने मुस्कराते हुए कहा।

लड़के ने कहा, 'ठीक है, आप पहले बल्लेबाजी करो,'और वह विकेट लेने के लिए दौड़ गया।लग रहा था उसे इतनी गर्मी में भी न खेलने की बजाय गेंदबाजी करना पसंद था।

उन्होंने गेट से बाहर गाड़ियों के रास्ते में अपनी विकेट जमाई। वहाँ पर धूप ही धूप थी और कोई छाया नहीं थी। लड़के ने कहा,' नो हिटिंग, अगर आप हिट करेंगे तो आउट हो जाएंगे। 'अगस्त्य लड़के को बाल-दर-बाल वापिस कर रहा था। जल्दी ही लड़का थक गया।

'अब मुझे बल्लेबाजी करने दो।'

'लेकिन मैं अब तक आउट नहीं हुआ हूँ।'

'नहीं,अब बल्लेबाजी करने की बारी मेरी है।' लड़का रुआँसा हो उठा था।

'ओके एक आखिरी गेंद,' अगस्त्य ने कहा। लड़का अपने गेंदबाजी के रनों में घोटाला कर रहा था।अगस्त्य ने चाँद की तरफ़ गेंद को उछाला और पेड़ के ऊपर से उसका घुमाव

देखी। 'खोई हुई गेंद,' वह मुस्कराया, और उसने सोचा कम से कम अब यह कमीना रोएगा, कम से कम अब मैं इस ब्रहमाण्ड को फाड़ूँगा, और सब इसकी चीख़ सुनेंगे।

'मैं अपने साथ कई सारी गेंदें लाया हूँ। मैं अभी दूसरी गेंद लाता हूँ।' लड़का कूदता हुआ वहाँ से भाग गया। 'तुम रुको, हुह, नहीं भाग गया।' अगस्त्य ने बैट को विकेट पर ज़ोर से दे मारा, परन्तु वह नहीं टूटा। इतने में भाटिया वहाँ आ गया, 'वे चाहते हैं कि तुम प्याज छीलने में उनकी मदद करो। यह अच्छा मज़ाक़ है, पहले शराब पिला कर टुन्न कर दो फिर प्याज छिलवाओ।

'लड़का दौड़ता हुआ वापिस आ गया, उसका चेहरा धूप और खुशी से तमतमा रहा था।'मुझे खाना पकाने जाना है,' अगस्त्य ने कहा। लेकिन वह बच्चे की ऊर्जा और ख़ुशी खत्म करना चाहता था।

लड़के का चेहरा मुर्झा गया। 'लेकिन आपको मेरे लिए बल्लेबाज़ी करनी है।'

'अब मेरी तरफ़ से तुम्हारे भाटिया अंकल बल्लेबाजी करेंगे। मैंडी, इस कमीने को तोड़ दो बस, यह तुम्हारे बॉस का लड़का है।' अलाव के चारों ओर बहुत उछल-कूद और हँसी-ख़ुशी थी। वहाँ पर सब लोग थे। पत्नियों के मेक-अप में से पसीना नाले की तरह छूट रहा था। रोहिणी की बगलों से बहते पसीने को देख वह उत्तेजित हो उठा। अपना आपा खो देने की वजह से वह धीरे से बोला, कुतिया। 'अरे, सेन, तुम कहाँ थे? चलो हमारे साथ आओ, 'श्रीवास्तव ने महीन आवाज़ में कहा। पुरुष लोग सफेद चद्दर पर चौकड़ी लगाए, हाथों में चाक़ू और प्याज लिए बैठे थे।

कुमार ने पलक झपकाते हुए कहा, 'वह दीवारों पर की गई मूर्तिकला से बहुत प्रभावित था। सब लोग ठहाका मारकर हँसने लगे।'

वह चौकड़ी मार कर, नीचे बैठ गया। गोपालन ने एक चाक़ू और चार प्याज उसकी तरफ़ फेंके। 'अब रोना शुरू करो। 'सब हँसने लगे। उसने अपनी उंगली चाकू की नोक पर रख दी और नीचे दबा दी। उसे हल्का सा तेज़ दर्द हुआ। उसने देखा, खून आ गया था, उसने खून के ऊपर प्याज मसल दिया। उसका खून हल्का दिखाई दे रहा था वह सोच रहा था वह गाढ़ा और ज़्यादा लाल होगा।

श्रीवास्तव ने सबसे पहले उसे देखा। 'क़क, तुमने तो अपनी उंगली काट ली। 'वह चिंतित होने की बजाय चिड़चिड़ा लग रहा था।

'चलो, मैं इसे धो लेता हूँ।' यह कहकर वह वहाँ से चला गया।

फालतू बेड रेस्ट हाउस के एक कमरे में रख दिए गए थे ताकी सब बच्चे वहाँ पर सो सकें। दरवाजे पर एक चपरासी अपनी बीड़ी छिपाते हुए उकड़ूँ बैठा था। बाथरूम में अगस्त्य ने अपनी पेंट की ज़िप खोली और अपने लिंग की नोक को खून भरी उंगली से छुआ। लेकिन उसे कुछ महसूस नहीं हुआ। उसे शीशे में अपना चेहरा धुंधला दिखाई दे रहा था—वह विकृत और हास्यास्पद लग रहा था।

उस शाम उसने अपने पिता को एक ख़त लिखा।

प्रिय बाबा,
मेरे पिछले ख़त में मैंने जो कुछ लिखा था वह सच है। मुझे यह जगह और यह नौकरी दोनों पसंद नहीं हैं। मैं यहाँ पर अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ, और बर्बादी का आनंद नहीं ले रहा हूँ। मुझे बीमारी की सी हालत महसूस हो रही है। मैं पूजा के दौरान दस दिन की छुट्टियाँ ले रहा हूँ किन्हीं एक दो वजहों से मैं दिल्ली जाऊँगा। मैं सोच रहा हूँ टॉनिक से भी मिलूँ।क्या आप उसे फ़ोन करेंगे या ख़त लिखेंगे, क्योंकि वह मेरी बातों पर विश्वास नहीं करेगा,कि वह भी नौकरी देगा मुझे वह क़बूल होगी। मुझे माफ़ करना। सप्रेम,ओगु।

कृपया दिल्ली में जवाब देना।

पुलिस अनुबंध इस एक सप्ताह के अंत में कुमार के साथ रामेरी के सब-डिवीज़न मरियागढ़ में शुरू होगा। कुमार ने खुद वहाँ जाकर पुलिस स्टेशन का मुआयना किया था। अगस्त्य भी देखने के लिए उसके साथ गया था।

तो यह उसकी ज़िले में दूसरी यात्रा थी, लेकिन इस बार शाम को, कार स्टीरियो से उर्दू गज़ल से प्यार का बखान जताते हुए, कुमार ने बड़ी शान से पान मसाले का डिब्बा बाहर निकाला। उसने पान मसाले के चार चम्मच अपने मुँह में डाले और फिर वह डिब्बा अगस्त्य की ओर कर दिया। 'ये लो।' अगस्त्य कुछ ले लो। कुमार मुस्कराया। 'मैं समझा तुम मना करोगे। पान मसाले के लिए तुम्हारी लत बहुत इंग्लिश स्टाईल की और सुसंस्कृत है।'

कुमार ने अपनी ब़गल को खुजलाया और मीलों दूर तक फैले धान के खेतों को देखा।'तो आप हमारी पिकनिक के बारे में क्या सोचते हैं?'

'अच्छी थी, सर।'

'लेकिन दोपहर के उस तम्बोला सत्र में तुम बहुत ऊबे हुए दिख रहे थे।'

'हाँ सर, मैं बहुत बोर हो रहा था।'

कुमार अपनी छाती को झुकाते हुए हँसने लगा।

गाँव के आगे से निकलने के बाद कार तेज़ हो गई। कुमार ने पूछा।'तुम्हें धान की गंध नहीं आ रही?'

ओह, अगस्त्य ने सोचा, तो ये धान के खेत हैं, और उसने क्षण भर के लिए सोचा, धान एक प्यारे नाम की तरह इतना छोटा क्यों है, या एक मूल रूप से शांत नाम के लिए एक कॉलेज नामकरण, शायद पद्मनाभ, या पद्मजा। 'हाँ, सर।'

'तुम जानते हो, सेन, जब तुम इस नौकरी में बड़े हो जाओगे, तब तुमको पता चलेगा कि यह आपकी नौकरी की असली राहत है, एक चिकनी सड़क पर चलती एक तेज गति से दौड़ने वाली कार में दौड़ना (बाई द वे इंजीनियरों ने इस सड़क को बनाने में लाखों रूपये कमाए होंगे) संध्या के समय, उन गंदे शहरों में से किसी में भी इतनी बदबू नहीं आती जो हमें मदना में सूंघने को मिलती है, सिर्फ़ किसी गाँव की रोशनी और, ये धान के खेत।'

'सर।'

'सब कुछ भरम- भ्रम है, भाई, माया हैं। कुमार फिर से हँसा। 'लेकिन तुम्हारी नौकरी मेरी नौकरी से अलग है। मैं एक पुलिस मैन हूँ, हम तो तीस साल तक सिर्फ अपराधियों के पसीने की गंध ही सूंघते हीं। हैं।'

'लेकिन मैंने किसी से सुना था, सर, याद नहीं आ रहा किसने कहा था, कि संभोग के बाद वीर्य के स्खलन पर पूरा होने की भावना होती है, हालांकि वह भावना खुद बहुत क्षणिक है, इससे यह पता चलता है कि पूरी दुनिया कितनी क्षणभंगुर है।' उसने आधार बना लिया था; वह कुमार को गंदी बातें करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता था। फिर उसने कल्पना को तर्कसंगत समझने का फ़ैसला किया। 'अगर मुझे ठीक से याद है तो, यह कामसूत्र का शुरूआती मंत्र है सर।'

'क्या तुम आज शाम को ब्ल्यू फ़िल्म देखना चाहते हो?'

'जी, सर।'

कार धीमी हो गई और लेवल क्रॉसिंग पर खड़े कुछ ट्रकों के पीछे खड़ी हो गई। अब अन्धेरा हो चला था, क्रॉसिंग पर कुछ लाईटें जल रही थीं। चन्द्रमा नहीं था, मीलों तक फैले धान पर सिर्फ हल्की चमक थी। शाम के समय आनेवाली ट्रेन की सीटी की आवाज़ आ रही थी। कुमार और अगस्त्य पेशाब करने के लिए कार से बाहर आए।

'उनके पेशाब गिरने की आवाज़ पर कुमार ने कहा,' उनकी कार में एक छोटा वीडियो होना चाहिए। इतनी लंबी दूरी की यात्रा, तुम्हें इसकी आदत डालनी होगी। मैं सबको दिल खोलकर बताता हूँ कि यदि आपको सड़क से लम्बी यात्रा करना पसंद है, तो आप एक अच्छे व्यवस्थापक हैं। तुम्हारी नौकरी का एक तिहाई हिस्सा यात्रा करना माँगता है, भाई। ये ज़िले बहुत बड़े हैं, इनके बड़े डिवीजन हैं, फिर ये राज्य, यह ब्लडी देश है ही बहुत बड़ा।'

ट्रेन जब झनझनाई तो जोर की आवाज़ आई। ट्रेन की बोगियों में रोशनी थी, अनगिनत सिरों की छाया, दूसरे प्राणियों की झलक। वे ट्रक वालों के बीच खड़े थे और ट्रेन को देख रहे थे। कुमार ने कहा, 'क्या यह अफ़वाह है, मैंने सुना था तुम ट्रेनिंग नहीं करना चाहते?'

'अफ़वाह, सर?'

'मैंने सुना था भाई, मुझे याद नहीं है किससे सुना था कि तुम कभी-कभी ऑफिस जाते ही नहीं, और दोपहर के खाने के बाद ऑफिस कभी नहीं।'

'ओह नहीं सर, यह सच नहीं है।' अँधेरे में कुमार ने यह तुम्हारा मामला है कहकर एक समस्या सरका दी। उसी समय लेवल क्रॉसिंग खुल गया था, एसपी के ड्राइवर ने टर्कों को पीछे छोड़ दिया और आगे बढ़ गया, नारंगी रंग की लाईट एक बड़े जुगनू की तरह चमक रही थी।

कुमार वायरलेस के लिए उनके पीछे पहुँच गए। 'हेलो, मारीगढ़, शुगर पीटर है यहाँ, शुगर पीटर बोल रहा है, हैलो। 'जवाब में कुछ गड़बड़ी की सी आवाज़। कुमार ने मुँह बनाया और फोन बंद कर दिया। 'जब यह चल रहा होता है तो ये हरामजादे काम पर नहीं होते।'

'शुगर पीटर?'

'पुलिस सुपरिंटेंडेंट, एसपी के लिए।'

'ओह, क्यों नहीं सिएरा पापा?'

उनकी कार की और बढ़नेवाली एक जीप की रोशनी से कुमार का परेशान चेहरा दिखा। 'लेकिन शुगर पीटर क्यों नहीं?' क्योंकि यह अश्लील लग रहा है, अगस्त्य ने चुपचाप कहा।पिकनिक और पिता के ख़त के बाद वह पहले से हल्का महसूस कर रहा था, हालाँकि इस बदलाव से उन्हें कुछ नहीं करना है। वह ज़्यादा पीने लगा था।पहले वह बिस्तर पर पड़ा सोचता रहता था, सोच-सोच कर निचोड़ निकाल लेता था कि अकेलापन एक तुच्छ और निजी चीज है, मानवीय कारण अधूरे हैं। अब जो कुछ बचकाना और रसहीन लग रहा है, वह स्वस्थ दिमाग़ के बेमेल विचार थे। अब वह अपने चारों ओर के संसार को देखने लगा और उसके बारे में सोचने लगा। जब वह उठता है तो उसे शायद ही कभी सुबह की आवाज़ें सुनाई देती हों। कई दोपहर को तो वह सिगरेट पीने के लिए भी बिस्तर से नहीं उठ सका।रात को नींद नहीं आती थी, मुल्तानी के सोमनोराक्सिस से भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। लेकिन अब ऐसी कोई परेशानी नहीं है। अब तो सुबह के तीन चार बजे तक ट्यूब-लाईट की असली रोशनी देखना, करवटें लेना, चद्दर को वीर्य से मसलना, एक कोने से दूसरे तक फुदकते मेंढक की आवाज सुनना आदि जीवित होने के तथ्य का एक हिस्सा बन गया है। अब वह यंत्रवत् हो ज़्यादा हस्तमैथुन करने लगा था। अब अगर इसमें उसे मज़ा नहीं आता है तो उसे कोई परवाह नहीं। वह पहले वाले लोगों से मिलता है और अपने दौरे ज़ारी रखता है, लेकिन बिना किसी चिंता के। अब वह अपने

आपका मुआइना करने के चक्कर में नहीं पड़ता। वह अपनी उंगली के कटने के निशान को मिनटों तक देखता है और सोचता है कि उसने असावधानीवश वह चोट खा ली थी। कई बार वह अपने अंगूठे के नाख़ून से उस निशान को दबाता है ताकि उसे दर्द में कुछ राहत मिले।

गीता और मार्कस औरेलियस पर चिंतन दूर हो गया था, कभी-कभी वे झूठ भी लगते थे। क्योंकि वह इस बात पर विश्वास करने लगा था कि, जिस किसी ने भी यह सब लिखा है उसे खुद कभी महसूस करके नहीं देखा। फिर भी किसी समय वह उन लाइनों को पसंद करता था।

'ओह, एक तरफ़ तो इस रुझान से अलग होने की तसल्ली, और हर थकाऊ बेजा दख़ल देनेवाली धारणा को भूल जाना, हर पल पूरी तरह से शांति में रहना।' अब वह सोच रहा था कि अपने खालीपन की असली लालसा के लिए ये शब्द बहुत ज़्यादा थे। मेरी आत्मा की अंधेरी रात में मुझे बहुत मायूसी महसूस होती है। मैं अपने पर तरस खाकर धार्मिकता का रास्ता नहीं देखता।' लेकिन एक व्यक्ति के विचार अंतहीन हैं और कई भागों में बँटे हुए हैं और उसमें दृढ़ संकल्प की कमी है।' वास्तव में वह यही सब सोचता था। उसने महसूस किया, हे कृष्ण यह मन तो बीमार है।

उस दोपहर में क्लब में कुमार और श्रीवास्तव के साथ, फिर ब्रिज पर और संगीत में, फिर भी चाहे क्षण भर के लिये ही सही, लेकिन अस्पष्ट रूप से वह अपने भविष्य को लेकर परेशान था। अब उसे अपना भविष्य बिलकुल ही नहीं दिखाई दे रहा था, फिर भी किसी हद तक वह हतोत्साहित नहीं था; यह केवल मात्र एक और तथ्य था। कभी-कभी बिस्तर पर लेटे हुए वह अपने स्कूल के दोस्त को याद करता था, जो बिलकुल साधारण और आकर्षक था, लेकिन जिसने पाँच साल पहले अपने आपको खत्म करने का रास्ता चुना, वह एक ट्रक के रास्ते में लेट गया और उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े होकर वीआईपी सड़क के तपते कोलतार में सन गए, उसने सिर्फ एक नोट छोड़ा था जिस पर लिखा था–

मुझे माफ़ करना, लेकिन अपनी इह लीला ख़त्म करने का कोई कारण उसमें नहीं लिखा था। फिर भी उस तरह के खात्मे को तलाशने की बहुत कोशिश की गई।

उसकी कभी कोई महत्वाकांक्षा नहीं रही, शायद इसलिए क्योंकि वह कभी नाखुश नहीं रहता था। अब वह पहले की अपनी उन इच्छाओं को याद कर के हैरान होता है और जिन्हें वह अपनी नादानी समझता है– मसलन ट्रेन की बोगियों के रंग चुनना; इस तरह की इच्छा करना सिर्फ एक छिछोरापन था और अब तो यह निंदाजनक लगता है। अब जीवन अचानक से एक गंभीर प्रसंग हो गया है, कष्टों भरा, दर्दनाक मायावी, निश्चित लेकिन घिसा-पिटा, निर्धारित लक्ष्य लिए अपने मन की बेचैनी को दूर करने का झमेला लिए हुए। यही वजह थी कि उसने महसूस किया उसका मदना का अनुभव समय की बर्बादी थी, एक सेकंड ही हुआ होगा कि उसे दीवार पर बने दाग़ में भी अपना दुःख दिखने लगा।

आजकल तो, वो लोग कभी अपने भाग्य के स्वामी थे जैसा कोटेशन भी प्रसिद्ध कोटेशन नहीं रह गया है। यह विचार उसे सता रहा था, लगातार उसका मुकाबला करने के लिए ताना मार रहा था, लेकिन उसका दिमाग़ सुस्ती से धीमी बेअसर लहर में प्रतिक्रिया दे रहा था। वह समझ नहीं पा रहा था कि अपनी इस दुनिया से इस्तीफ़ा दे दे या फिर जिस लय में उसकी जिंदगी बहे जा रही है, उसे जारी रखे, या फिर उस प्राचीन हिंदू कविता पर विश्वास करे– जो कहती है कुछ ना करने से कुछ-न-कुछ करते रहना अच्छा है। लेकिन उसके यह विचार वह मदना में किसी को नहीं बता सकता था, मदना में क्या कहीं पर किसी को भी वह यह सब नहीं बता सकता। असल में कोई इसमें रुचि भी नहीं लेगा यह सब किसी को समझ में भी नहीं आएगा।

वह बिस्तर से नीचे गलीचे पर नज़र डालता है, दो चींटियों को बतियाते देखता है, और अपने आपसे कहता है, मैं सर्दी की धूप में अपने दिल्ली के घर की छत पर लेटना चाहता हूँ, या फिर बेहाल की पुरानी हवेली में जाने को मिले, वहाँ सिगरेट फूकूँ, थोड़ा संगीत सुनूँ, किसी ऐसी युवती के साथ संभोग करूँ जो पहले कभी न देखी हो और जो

संभोग करने के बाद फिर कभी न दिखाई पड़े, और कुछ काम करूँ ताकि फिर मैं भरपूर आराम कर सकूँ। फिर वह अपनी नज़रें बिना लकड़ी के पैटर्न पर ग़ौर फ़रमाए छत की तरफ़ कर लेता है। उसे अकेलापन पसंद है, लेकिन मदना में वह अकेला था फिर भी वह अकेलेपन को पसंद करनेवाली बात वहाँ नहीं थी, बहुत अंतर था दोनों परिस्थितियों में। मदना की अनूठी चीजें उसे उत्तेजित करती थी, लेकिन यहाँ ऐसा नहीं था। वह नहीं समझता था कि अब वह ज़्यादा ख़ुश था, वंचित जरूर था, समय निकलता जा रहा था। अब और तब में फर्क के कोई मायने नहीं थे। कभी-कभी वह अपने मदना के अनुभवों को पीछे मुड़कर देखता तो उसे हैरानी होती और वह निराश हो जाता था; उसका मन इन नई अनुभूतियों से इतना जीवंत क्यों हो उठता है?

अब उसे अपने पहले के महानगरीय जीवन में लौटने की कोई इच्छा भी नहीं थी, हैरानी इस बात की थी कि उसे किसी चीज़ का अभाव खलता नहीं था। उसे अपने चारों तरफ़ के जीवन से कोई नफरत भी नहीं थी, मसलन श्रीवास्तव और उसका परिवार, मेनन और कुमार अदि से; सिर्फ उसे अपने पिता और ध्रुबो में दिलचस्पी नहीं थी, ख़ास कर उन बातों में जो वे ख़त के जरिये उसे बताते थे, और उसे रेडियो और चलती ट्रेन को देखने में भी दिलचस्पी नहीं थी। उसने अपने पिता को लिखा था कि वह अपनी नौकरी बदलना चाहता है लेकिन असल में वह अपनी नौकरी नहीं बदलना चाहता– वह तो सिर्फ़ एक इशारा भर था– जो सिर्फ नपुंसकता के कारण बनी निराशा भर थी। उसे लग रहा था कि उसे कुछ नहीं चाहिए– सिर्फ शांति चाहिए उसे, लेकिन यह तो बहुत दमदार शब्द था।

अचानक से कुमार ने कहा, 'यह जमपन्ना का रास्ता है,' फिर अपनी मोटी बांह अँधेरे में निकालते हुए कहा, और मरिहंदी का, जहाँ एवरी को शेर ने मार डाला था, वह संदेहास्पद ढंग से अगस्त्य की तरफ़ मुड़ा।

'तुम उस कहानी को जानते हो,नहीं ?'

'हाँ, सर।'

असल में उसे वह कहानी नहीं पता थी लेकिन वह कुमार की आवाज़ नहीं सुनना चाहता था।

'कितनी दुःख की बात है, नहीं, जाने का कोई रास्ता ही नहीं है।'

कुमार और अगस्त्य लगभग आठ बजे मारीगढ़ रेस्ट हाउस पहुँचे। रेस्ट हाउस एक बनावटी पहाड़ी पर था। जब कार एक छोटे इंडिया गेटवे-जैसी जगह के बरामदे के आगे रुकी तब कुमार ने कहा 'कुछ साल पहले इस जगह पर एक घोटाला हुआ था, कुछ साल पहले सरकार ने करोड़ों रूपयों का मदना नदी डैम प्रोजेक्ट मंजूर किया था। इंजीनियरों ने लाखों रूपये डकारने के बाद पहला काम किया इस रेस्ट हाउस को बनाने का। कल सुबह तुम इसे अच्छी तरह देखना, यह एक हिंदी फ़िल्म के वेश्यागृह की तरह लगता है, जिसमें एक विलेन घूमता रहता है। फिर सरकार ने बदलाव किया, उस प्रोजक्ट को बंद कर दिया। अब सिर्फ यह वेश्यागृह जैसा रेस्ट हाउस बचा है।

उनके पहुँचते ही रेस्ट हाउस में हलचल हो गई। उनके आगे ढलान पर रोशनी कर दी गई। धुँधले से दीखते लोग कुर्सियाँ बरामदे में निकालने लगे। रेस्ट हाउस एकमंज़िला था, लेकिन छत पर बने तालमहल जैसे गुंबद पर हरे रंग की हिड्डन लाइटें जला दी गई थी। अधीनस्थ पुलिसकर्मी छातियाँ और तोंद ताने मुस्तैदी से खड़े उनकी अगुवाई का इंतजार कर रहे थे। किसी ने सुपरिंटेंडेंट के लिए एक वीडियो और दो व्हिस्की की बोतलें रख छोड़ी थी।

'हमें बाहर बैठना चाहिए। लेकिन मच्छर।' कुमार ने छाया की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।' हम बाहर बैठना चाहते हैं। इन मच्छरों से छुटकारा दिलवाना पड़ेगा, शायद तुम कुछ कर सकोगे।'किसी ने वहाँ पर धूप जलाई, किसी ने पूरे रेस्ट हाउस में फ़्लीट छिड़की और एक सिपाही ने बड़ी विनम्रता दिखाते हुए सुपरिंटेंडेंट को मच्छर भगाने की क्रीम देने

की पेशकश की। कुमार ने अपना रिकॉर्डर बरामदे में लगा दिया और ग़ज़लें बजा दी।' क्या तुम शुद्ध उर्दू समझते

हो, सेन?'

'नहीं, सर, मुश्किल से।'

'ओह-हो,फिर तो सब बेकार है। मैं तुमको बताता हूँ कि तुम अच्छी कविता मिस करते हो। इतनी सुंदर और गूढ़ कविता। क्या सर, सेन, तुम सचमुच में अंग्रेज़ किस्म के हो। मैं तुम्हें कुछ लाइनें अनुवाद करके बताऊंगा लेकिन ये इतनी जटिल हैं कि इनका अनुवाद करना बहुत मुश्किल है।'

बरामदे से नीचे लॉन में लगे रोशनी के मालाएं अगस्त्य को दिवाली की याद दिला रहे थे। उनका आकार परिचित सा लग रहा था। 'ओह,' अगस्त्य ने कहा,'क्या इंजीनियरों ने यह लॉन भारत के नक्शे के आकार का बनवाया है?'

कुमार हँसा। 'इण्डिया के गेटवे जैसा बरामदा, और ताजमहल जैसा गुंबद। अंदर की एक दीवार पर कोणार्क व्हील लगी है, लेकिन किसी ने उसकी एक छड़ तोड़ रखी है, और किसी ने भी उसकी मरम्मत के लिए पैसे मंजूर नहीं करवाए। और ड्राइंग रूम और डाइनिंग रूम के बीच की जगह पर एक चार मीनार-जैसा नमूना बना है। पूरे रेस्ट हाउस में सिर्फ तीन स्यूट हैं, भगवान जाने इसे बनवाने में कितना पैसा ख़र्च हुआ होगा। पूरे रेस्ट हाउस का डिजाइन तामसे नाम के एग्जूकिटिव इंजीनियर के एक हरामी चमचे ने तैयार किया था, मेरा ख़याल है, तुम अब तक कभी उस इंजिनियर से नहीं मिले होगे।' एक साया उनकी तरफ़ आया और वह कुछ फुसफुसाया। कुमार अगस्त्य की तरफ़ मुड़ा, डिनर के लिए चिकन लोगे या मटन?' 'दानों।' यह सुनकर वह साया चला गया। कुमार ने उसे पीठ के पीछे से कहा, 'क्या बर्फ़ साफ़ है? नहीं तो हम इसके बिना भी काम चला

लेंगे। 'फिर अगस्त्य को कहा, 'सोडा ठीक रहता है, है कि नहीं?' बरसात के दिनों में हम पानी की शुद्धता पर भरोसा नहीं कर सकते।'

'क्या यहाँ पर सोडा मिलेगा?'

‘आप तो पुलिस के मेहमान हैं, भाई। पुलिस तो कुछ भी कर सकती है।' वे रात के कोलाहल, तारों, कीड़े-मकोड़ों और थोड़ी दूर पर बसे गाँव की रोशनी में रच-बस गए थे। 'सेन, तुम गवर्नमेंट में सालों रहने पर जान पाओगे कि यहाँ सभी बेईमानी करते हैं, यहाँ पर ईमानदारी-जैसी कोई चीज़ नहीं है, सबके सब बेईमान हैं। सभी अफ़सर ज़्यादा या कम बेईमान हैं– कुछ हमारे इंजीनियरों जैसे हैं, जो लाखों डकार जाते हैं, कुछ मेरे जैसे हैं जो वीडियो-जैसा तोहफ़ा लेने से मना नहीं करते, कुछ इतने चालक होते हैं कि, वे अपनी पत्नी और बच्चों के पास हैदराबाद ट्रंक-कॉल सरकारी खर्च पर करते हैं, अपना पैसा नहीं खर्च करते। सिर्फ थोड़ी सी बेईमानी, लेकिन ईमानदारी का मतलब योग्यता क़तई नहीं है।'

अगस्त्य चाहता था कि कुमार अपनी बकवास बंद करे, ताकि वह उस चुप्पी और अँधेरे में घूमे और रिकॉर्डर पर बजने वाले प्यार और विलाप के गाने सुने। सोडा आ गया था, लेकिन इसके साथ ही शोर मचाती गाड़ी के साथ मेनन भी प्रकट हो गया। एक औपचारिक मुलाकात हुई, अँधेरे में वह ज़्यादा गुलाबी और उत्साहित नहीं दिखाई पड़ रहा था। 'कुमार ने कहा,' कुछ ठंडा लो, लेकिन मेनन ने मना कर दिया और इसकी बजाय उसने दूकान की बात की, और फिर जल्द ही वहाँ से चला गया, इसके बाद कुमार ने उसको कोसा। 'साफ़ सुथरा और गुलाबी कमीना। अब वह ज़िले भर में बताएगा कि कुमार सेन के साथ पी रहा था। थोड़ा रुको, देखना सप्ताह भर में श्रीवास्तव तुमसे इसके बारे में पूछेगा। फिर वे दोनों पीने में मस्त हो गए। 'जब मेरी पत्नी मदना में थी तब मैं पीने के लिए और कुछ गर्म फ़िल्में देखने के लिए अक्सर यहाँ आया करता था। यहाँ का पुलिस इन्स्पेक्टर इन मामलों में बहुत अच्छा था लेकिन उसकी नौकरी का काम

निराशाजनक था।' कुमार गज़ल की एक लाईन पर आनंदित हो चिल्लाने लगा। 'वाह-वाह -वाह-वाह वाह वाह। क्या तुमने वह लाइन सुनी?

'शादी एक नापाक काम होगा

क्योंकि तब मैं तुम पर अपनी हथेलियों से मिटटी मलूँगा।'

गाना खत्म होने तक कुमार आनंद में अपना सिर हिलाता रहा। 'सेन, तुम शादी कब कर रहे हो?'

'कुछ समय तक नहीं।' वह भूल गया उसने कुमार के लिए कौन सी कहानी गढ़ी थी।

'तुम्हे जवानी में ही शादी करनी चाहिए। इससे कम-से-कम ज़िले में तो संभोग करने की समस्या हल हो जाएगी।'

सामनेवाली पूरी दीवार पर चमकदार नीले और सफ़ेद रंग का ईस्टर्न हिमालय का एक विशालकाय ब्लो-अप था। 'अगस्त्य ने कहा, 'ओह, यह कंचनजंगा है, दार्जिलिंग का दृश्य।' अचानक उसे एक झटके में स्कूल के दिन याद आ गए, नादानी पर नादानी की यादें, बस स्टैंड के पास बहुत ही टाईट जींस पहने नेपाली लड़लकियों को देख होठों पर जीभ फेरना, लेकिन तिब्बती बदमाशों से भय खाना (वे अपनी गेंदों का इस्तेमाल करते हैं,'प्रशांत जोर देते हैं, अजीब रहस्यमयाभ्यास, अगर तुम उनकी बाल पर किक मरोगे तो तुम्हारी उंगलियाँ टूट जाएंगी'), लेकिन गिटार सिखने के लिए उनकी खुशामद करना, उनके आखिर के दो सालों में उनसे भांग खरीदने पर ठगे जाना, उनके साथ उनकी छांग पीना और उसका स्वाद पसंद करना; पर्वत की सड़कों पर लम्बी जोगिंग करना, न समझ आनेवाले हिंदी गाने गाती तिब्बती नवयुवतियों के पास से गुज़रना, गर्मियों में कम से कम एक बार उत्साहित रिश्तेदारों के साथ टाइगर हिल के पीछे से सूर्योदय का नजारा देखने जाने के लिए सुबह बहुत जल्दी उठ जाना, नशे में धुत्त होकर सड़क किनारे वाले मीलों दूर तक लहराते चाय के बाग़ानों को देखना, और इस कंचनजंगा के क्षितिज को

निहारना। अगस्त्य अपने बीते हुए सुनहरे पलों को याद करने पर फिर से मज़ाक़ का सबब बना।

'बेसुध दिमाग़ से अंगूरों का गुच्छा निगलते हुए कुमार ने कहा,'वह कमीना तामसे, इस रेस्ट हॉउस को बनवाने के जरिये पूरे भारत को निचोड़ना चाहता था,जैसे कि प्रधान मंत्री हर सप्ताहांत यहाँ राष्ट्रीय एकता को याद दिलवाने आया करेंगे।'

वे डिनर करने चले गए। कुमार ने कहा, तुमने पूजा के लिए छुट्टियाँ ली हैं, है ना? 'ठीक है दोनों साथ चलेंगे। मुझे कानपुर जाना था, लेकिन अपन दिल्ली होते हुए चलेंगे, यही अच्छा रहेगा। शुक्रवार को छुट्टी है, तो हम गुरुवार दोपहर को निकल लेंगे। हम एयर कंडीशंड स्लीपर से चलेंगे, तुम्हारा क्या ख़याल है?'

उन्होंने रात के तीन बजे तक ठोस अश्लील फ़िल्म देखी। सिपाहियों ने कुमार के कमरे में बैड के सामने वीडियो रख दिया था,रामेश्वरम के विशालकाय ब्लो -अप ने रास्ता रोक दिया था। कमरे में स्लेटी रंग के मोटे -मोटे कीड़े थे। कुमार ने एक कीड़ा अपने तकिए के पास भी देखा। लेकिन कीड़ा काफी नरम था उसे फेंकने में कोई दिक़्कत नहीं हुई। चींटियाँ बाथरूम के दरवाज़े पर पड़ी छिपकली का मरी देह खा रही थी। कुमार ने कहा,'वह कमीना तामसे,' क्रीम रंग का कुर्ता पायजामा पहने दूसरे जीवित चीज़ों को खोजने के लिए बैड और अलमारियों की जाँच कर रहा था, यह सब उसकी गलती थी। उसे खिड़कियों पर तारों की जाली लगवाना पसंद नहीं था, तुम्हे पता है क्यों, यंग इंडिया में लिखे गांधी जी की एक कोटेशन की वजह से, मैंने कहीं वह कोटेशन पढ़ा था -कि मेरी खिड़कियाँ अवरुद्ध नहीं होनी चाहिए, मैं चाहता हूँ सभी संस्कृतियाँ मेरी खिड़कियों के जरिये मेरे तक पहुँचे। तामसे का दिमाग़ इसी तरह का है। इसलिए सभी संस्कृतियों का मतलब है मच्छर और ये कीड़े। लेकिन यह भी हो सकता है कि कुछ जूनियर इंजीनियरों ने जालियों के पैसे अपनी जेबों में भर लिए हों और तामसे का नाम लगाते हुए ऐसी कहानी गढ़ी हो। लेकिन यह कहानी इस रेस्ट हाउस पर तो ठीक फ़ब्ती है, है कि नहीं?'

कुमार फ़िल्म देखते हुए शराब ख़त्म करना चाहता था। वे कमरे में धूप लगाकर और अपने शरीरों पर मच्छर भगाने की क्रीम लगाकर बैड पर बैठ गए। कुमार शराब के नशे में और खुश होने की गरज़ से खिसियाई हँसी हँस रहा था। पहली फ़िल्म के पहले शॉट में एक पतला-सा काला अमेरिकन व्यक्ति अपने होंठ रँगे हुए सफ़ेद बिकिनी में दिखा, वह चक्कर काटता घूम रहा था। वासना में चूर पाँच गोरी लड़कियाँ उसे अपनी-अपनी तरफ़ खींचते हुए खुशामद कर रही थी। वे सभी अपने -अपने होठों पर जीभ फेर रही थी, उसी समय उस काले व्यक्ति ने युवा उत्तेजना दिखाते हुए अपना लंड दिखाया। फिर लड़कियों ने अपना काम करना शुरू कर दिया। 'देखो।देखो, युवा उत्तेजना से वशीभूत हो कुमार चिल्लाया,'यह कमीना काला कितना भाग्यशाली है... 'पूरी फ़िल्म को देखते हुए वह बैड पर जगह बदलता रहा और बीच-बीच में बड़बड़ाता रहा,' इस तरह की चीज़ें भारत में कभी नहीं हो सकती... भारतीय लड़कियां बहुत हिचकिचाती हैं... बड़ी शर्म की बात है...

आख़िरकार फिर दिल्ली की यात्रा। अगस्त्य ने सोचा, लेकिन यह तो भाग जाने जैसा होगा, इससे मुझे कोई सुकून नहीं मिलेगा, बल्कि इससे उसकी बेचैनी और बढ़ेगी। सिर्फ दस दिन की छुट्टी, और डेढ़ दिन तो सफ़र में ही चला जाएगा। और वह जानता था कि दिल्ली में भी उसका दिमाग़ शांत नहीं हो पाएगा, उसके दिमाग़ में मदना के नज़ारे ही घूमते रहेंगे। जब वह ट्यूलिप्स लगाने के बारे में पुलटुकाकु के साथ बहस कर रहा होगा, तब वह सोच रहा होगा कि अगले हफ्ते इस समय मैं रेस्टहाउस में कसरत कर रहा हूँगा जबकि दिगंबर बाहर इंतज़ार कर रहा होगा। फिर मदन के साथ दिल्ली हवाई अड्डे पर हवाईजहाज़ों को उतरते देखते हुए, सुबह शराब के नशे में,वह सोचेगा अगले हफ्ते इस समय, मैं रेस्टहाउस में बैड पर होऊंगा, अनिंद्रा की वजह से ऑखें फूली हुई होंगी, मच्छर काटने की जगह को खुजलाते हुए, दादुर की अगली उछल-कूद की आवाज का इंतजार कर रहा होऊँगा। और नौ दिनों के बाद वह फिर से वापिस जाने के लिए पैकिंग

कर रहा होगा, अपने चाचा को गुड बाय कर रहा होगा, उस समय उसका दिमाग यह सोचते हुए उसका तिरस्कार कर रहा होगा कि, कहीं जाने की खुशी विदाई के खालीपन की भरपाई नहीं कर सकती फिर से ट्रेन में कोई व्यक्ति उसके बारे में पूछेगा, वह विश्वास नहीं कर पायेगा कि वह वह था, और उसने अगस्त्य नाम कभी नहीं सुना होगा।

फिर भी, यह सब होने के बावजूद, रवानगी की सुबह, वह दिगंबर के साथ पैकिंग करते समय उत्साहित था। उसने सोचा, शायद मुझे सब कुछ पैक कर लेना चाहिए, और फिर कभी वापस न आने के लिए दूर चले जाना चाहिए। उसने शेल्फ़ से मार्कस औरेलियस, और साठे की गीता और उसकी डायरी भी उठा ली।

कुमार और वह स्टेशन मास्टर और दर्ज़नों अधीनस्थ पुलिसकर्मियों के साथ ट्रेन में सवार हुए। जब तक ट्रेन नहीं चली, कुमार उन्हें अपने निजी मामलों के बारे में हिदायतें देता रहा... 'और उन्हें फ़ोन करके याद दिलाना कि वे मुझे स्टेशन पर मिलें, हम कल सुबह लगभग सात बजे पहुँचेंगे... और उन्हें याद दिलाना कि वे मेरे लिए कानपुर की सीट बुक करवाएँ, और यदि आरक्षण उपलब्ध ना हो सके तो किसी भी ट्रेन का इंतज़ाम करवा देंगे। बखत्यार को बताना कि फ्रिज में अब भी ख़राबी है वह उसे ठीक करने के लिए किसी और को भेजे, यदि उसने ऐसा नहीं किया तो मैं उसे परेशानी में डालूंगा। ...वह टेलर दो शर्ट लेकर आएगा, उसे बताना कि मैं वापिस आकर उसके पैसे दूंगा। ...'स्टेशन से निकलते ही कुछ सेकिंडों में ट्रेन ब्रिज के नीचे से गुजरी, उस जगह पर कितनी दुपहरियों को अगस्त्य साठे के साथ नज़ारे देखने रुका था, और फिर उस लेवल क्रॉसिंग पर, मानसून की पहली शाम, उसने महसूस किया था कि संसार बहुत बड़ा है और लगातार चलायमान है...वह संतरी और क्रीम रंग की ट्रेन पर सवार उन पटरियों पर था, जो आकाश के क्षितिज तक जाती थी, और वहाँ चर्च के पीछे धुँधले पीले रंग का एक बहुभुज रेस्ट हाउस था, जहाँ वह चाय के लिए बैठा इन्हीं ट्रेनों को गुजरते हुए देख रहा था।

दिल्ली तक का अट्ठारह घंटों का सफ़र। कुमार ने यात्रा का भरपूर आनंद लिया जिस तरह वह हर चीज़ का लुत्फ़ उठाया करता है। उसने उस मौक़े की खुशी मनाने के एवज़ में अपने चश्मे पहने और सिगरेट सुलगाई। फिर उसने ट्रेन कोच के परिचायकों पर अपना प्रभाव जमाया और रात के लिए दो उम्दा कम्बलों का इंतजाम करवा लिया। अगस्त्य शौचालय में जाकर फिर से शराब में टुन हो गया। वे हर स्टेशन पर उतर कर कुछ-न-कुछ खाते-पीते थे। एक बच्चे ने अपने पाजामें में टट्टी कर रखी था और वह बोगी में वैसे ही इधर-उधर घूम रहा था, कुमार ने उसे नजरअंदाज करते हुए कहा, 'अरे, सेन, घर जाने जैसी खुशी से बढ़कर कोई खुशी नहीं है।'

'लेकिन, घर को न छोड़ना इससे भी बढ़कर खुशी है।'

'नहीं, कभी-कभी मुझे लगता है कि घर छोड़ना बेहतर है, क्योंकि इससे घर वापिस जाना बहुत आनंदित करता है। वैसे भी ज़िंदगी इतने उतार-चढ़ावों से भरी है।'

वह भीतरी इलाके में दौड़ता रहा, और अब वह उनको अच्छी तरह से जान गया। रेलगाड़ी अनजाने में रतलाम से पहले रूक गई। शहर का कुछ हिस्सा दिखाई पड़ रहा था। वह पुरानी लेकिन मजबूत इमारत शायद कलेक्टर कार्यालय होगा और वह लाल टाइलों की छत वाला स्लेटी खस्ताहाल मकान जिला न्यायाधीश का घर हो सकता है और वह खंडहर शायद रतलाम क्लब होगा। ये इमारतें शहर के शांत इलाके में हैं। शायद यह सिविल लाइंस इलाका है; इनसे एक फर्लांग की दूरी पर सुस्ताने के लिए सुस्त मौसम है इसके बारे में यहाँ के निवासियों को शायद ही पता हो – पानवालों, दुकानदारों, जूते ठीक करने वालों और रिक्शावालों का संसार; जिन्हें बाकी संसार के बारे में सिर्फ़ तब ही पता चलता है जब वे लेवल क्रॉसिंग पर रुककर चलती ट्रेन को देखते हैं जिसके कुछ डिब्बे संतरी और कुछ क्रीम रंग के होते हैं।

कुमार रात का खाना साथ लाया था; बल्कि उसके कुछ सहायकों ने उसके लिए खाने के सामान के पैकेट और कुछ टिफ़िन कैरियर छोड़ दिए थे। 'वह भारतीय रेलवे का खाना

पसंद नहीं करता, नहीं,' कुमार ने कहा और उसने दो, तीन डिब्बे खोले। 'ये लोग, 'कहकर मुस्कराते हुए और अपना सिर हिलाते हुए वह दावत को प्यार से लालच भरी निगाहों से देखने लगा, 'वे सोचते हैं मैं सूअर की तरह खाता हूँ।' यह कहकर वह और अगस्त्य खाने पर टूट पड़े। 'भारतीय भोजन को बहुत अस्वास्थ्यकर माना जाता है, है ना, सेन, खूब सारा तेल और मिर्ची, लेकिन मसालों के बिना जीवन क्या है, यार?' क्या घर में तुम अंग्रेजी खाना खाते हो, सब कुछ उबला और बेक किया हुआ? नहीं, नहीं याद आया, तुम बंगालियों की तरह मछली खाते हो। 'जब वे खा रहे थे तब कुमार ने पूछा, 'तुम दिल्ली में किसके साथ रहते हो? अकेले?’

'नहीं, एक चाचा के साथ।'

'और जब तुम्हारे पिताजी रिटायर हुए तब उन्होंने कहीं पर अपना मकान बनाया होगा।'

'नहीं, कलकत्ता के बेहाला में हमारा एक पुश्तैनी मकान है। बहुत खूबसूरत जगह है वह, मेरे पिताजी को वह जगह बहुत पसंद है।' फिर उन्होंने पान -मसाला खाया और अगस्त्य ने सिगरेट का अगला सुट्टा लगाया।

रात में वह फिर से उथल-पुथल दिमाग़ से चिंतित हो बेचैन नींद सोया। उसके नीचे ट्रेन की गहरी लय उसे कहीं दूर पर एक विशाल असंयमी जानवर सी महसूस हो रही थी,जो उसे थोड़ा सा उत्तेजित कर रही थी। एयर कंडीशनिंग वेंट सीधे उसके सिर पर लगा था। उसे कुछ-कुछ विश्वास था कि ठंडक मिलने से उसके दिमाग़ की बेचैनी दूर होगी।

सुबह के छह बजे थे, और दिल्ली के उपग्रह औद्योगिक शहरों का भद्दापन सुबह की रोशनी में भी धीमा नहीं पड़ रहा था। लेकिन अगस्त्य को उन्हें देख भी अच्छा लग रहा था, वह हर मिनट जोर से शोर करता जैसे कि कोई बहुत बड़ा शहर आ गया हो। वह सुबह की ताज़ा हवा लेने और फैक्ट्रियों की चिमनी और भंडारण परिसर को निहारने के

लिए डिब्बे के दरवाज़े पर गया। उसने पहले भी ऐसा ही महसूस किया था, और ये नज़ारे और महानगरीय भाव उसे रोमाँचित करते रहे हैं, कुछ महीने पहले कलकत्ता में हवाई जहाज़ के पश्चिमी विंग के पीछे डूबे हुए सूरज पर बहुत विकट संकट था, पूरे शहर पर संतरी चमक को निगलती हुई भूरे रंग की उदासी छाई थी। ट्रेन खटखटाती जा रही थी। सीवेज और गंदे नालों के सैलाबों की अजीब सी महानगरीय गंध आ रही थी; झोपड़-पट्टियों की क़तारें, लेकिन कुछ टी वी एरियलों के साथ, लाखों पैदल चलते लोगों वाले महानगरीय नज़ारे।

दिल्ली के स्टेशन पर कुमार के इन्तज़ार में कोई भी प्रतिनिधिमंडल नहीं खड़ा था। स्टेशन पर चाय और पकौड़ों की महक फैली थी, भीड़ छूँटकर सिलसिलेवार गुटों में बँट रही थी, भोले- भाले यात्री कूलियों के साथ सौदेबाजी कर रहे थे, और कुमार बदमिज़ाज हो रहा था। 'ये लोग कितने ग़ैरज़िम्मेदार हैं। यहाँ तक कि फोन कॉल भी नहीं की उन्होंने। कुमार की अकड़ गायब हो गई थी; अपने आस-पास बिना किसी रक्षक दल के वह दूसरे मैले- कुचैले यात्रियों-जैसा लग रहा था। अगस्त्य को कुमार के चेहरे के वे अजीब से भाव याद आये जब श्रीवास्तव और कुमार मदना की सड़क पर, गलत जगह पार्क किये गए ट्रक की तरफ़ चल रहे थे; वे थोड़े डावाँडोल और मुरझाये हुए लग रहे थे। हालांकि अगस्त्य चलने को बेताब था लेकिन उन्होंने थोड़ी देर इंतज़ार किया। आखिर में, 'ओके, सेन, चलो चलते हैं। हम टैक्सी कर लेंगे, तुम मुझे रास्ते में छोड़ देना।'

टैक्सी स्टैंड पर वे शान्ति से खड़े थे जबकि शरारती लोग उनके लिए हो-हल्ला कर रहे थे। आखिर जिसकी टैक्सी के लिए वे राजी हुए वह टैक्सीवाला चंबल के डाकू-जैसा दिख रहा था, वह अपनी राक्षसी मूछों की वजह से डरावना लग रहा था, उसकी आवाज़ ने सभी विरोधियों को मात दे दी। जब टैक्सी रिक्शाओं के बीच से रास्ता बनाते हुए गुज़र रही थी तब कुमार ने शिकायती लहजे में कहा, 'पूरा उत्तर भारत दबंग है। 'मैं जानता हूँ, मैं इन्हीं शहरों में पला-बढ़ा हूँ। तुमने कभी गौर किया, मदना के लोग ज़्यादा सुसंस्कृत और ज़्यादा विनम्र हैं।

दक्षिण दिल्ली की साफ़-सुथरी सड़कें, लेकिन इसका यातायात शायद इस नए रूप को नहीं मानता जो एशियाई खेलों ने इस शहर को दिया। लेकिन संभावित विदाई के दर्द के आश्वासन के बावजूद अगस्त्य खुश था। उसकी दिल्ली की कोई ख़ास खुशी की यादें नहीं थी; जहाँ तक उसे याद था वह नाखुश भी नहीं था उसके लिए बस यही काफी था। शायद वह अपनी छोटी-छोटी दुविधाओं को भूलकर पैदाइशी वर्तमान में अतीत को याद कर रहा था और उन्हीं पर मंत्रमुग्ध हो रहा था क्योंकि वह अपना मालिक स्वयं नहीं था।

कुमार ने दक्षिण दिल्ली की पुरानी कॉलोनियों में से एक कॉलोनी में टैक्सी बंद करवा दी। टैक्सीवाला डिक्की में से दो-एक सूटकेस निकालने के लिए टैक्सी से बाहर आ गया।

कुमार ने पूछा, 'कितने पैसे हुए?'

अगस्त्य ने सांकेतिक विरोध किया, मैं उसे घर में दे दूंगा, सर।'

'अरे, मैं नहीं चाहता कि कोई जूनियर मेरे लिए ऐसा करे, है ना, भाई, कितने हुए ?'

टैक्सीवाले ने अपनी लिंग को खुरचते हुए और अपने नाखूनों को जांचते हुए कहा,'पचास रूपये।'

'पचास रूपये,' हैं, क्या मतलब है तुम्हारा! फिर एक लम्बी बहस शुरू हो गई। ..."पचास रूपये! ...तुम क्या सोचते हो। ...तुम हमें रस्सी से बाँध कर बंदूक दिखाकर लूट लो, ये तुम्हारे लिए ज़्यादा आसान रहेगा। ...साले डाकू। ...तुम्हारा मीटर साला पच्चीस रूपये दिखा रहा है, असल में हुए हैं सिर्फ बीस रूपये। ...'

अगस्त्य ने कुमार से गुहार लगाई कि वह चुप हो जाए। उत्तर भारत के रिक्शावालों और टैक्सीचालकों का कमीनापन अतुलनीय और लगभग मिथकीय था। जब कुमार ड्राइवर पर बरस रहा था तब वह उबासियाँ ले रहा था, फिर उसने बोरडम कम करने के

लिए सिगरेट सुलगाई। 'तुम नहीं जानते हम कौन हैं, मैं एक एस पी, आई पी एस ऑफिसर हूँ, और यह एक आई ए एस अधिकारी है –'

इस पर टैक्सीचालक ने कुमार पर अपनी लाल आँखें तरेरते हुए सरसरी नजरें डाली, अपना पायजामा और उसका नाड़ा ठीक किया, अपना लिंग टेढ़ाकर कहा, 'मैं तुम्हारे जैसे सरकारी लोगों के बारे में यही सोचता हूँ।'

टैक्सीचालक की बात सुनकर अगस्त्य हँस पड़ा, हैरानी की बात यह थी कि कुमार भी हँसा। यह बुद्धि का सहारा लेने की बात थी, लेकिन वे मदना में किसी गलत ट्रक चालक से नहीं जूझ रहे थे। फिर कुमार गंभीर हो गया और उसने ड्राइवर से कहा, ‘अपना पायजामा ठीक कर ले और पुलिस का इंतज़ार कर उसने पुलिस को बुला भेजा है।’ उसने कहा, 'सेन, टैक्सी में से अपना बैग बाहर निकाल लो और इस घर की पहली मंज़िल पर चलो।’

अगस्त्य ने ड्राइवर से कहा, 'तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। अजनबियों को अपना शिश्न दिखाना अच्छी बात नहीं है। यह मोटा आदमी सच में एस पी है। अब वह तुम्हारी ऐसी-तैसी करवाएगा।'

टैक्सीचालक अपनी टैक्सी में बैठ गया और बोला, 'उससे कहो पचास रूपये में वह अपने चूतड़ की छेद सिलवा ले, 'यह कहकर वह भाग गया।

कुमार बरामदे में दिखाई दिया। लग रहा था पहली मंजिल पर किसी को भी नज़दीकी पुलिस स्टेशन का फोन नंबर नहीं मालूम था।अगस्त्य ने उसे टैक्सी का नंबर दिया और मेन सड़क की तरफ़ चल दिया। कुमार ने बरामदे से कहा, 'बाय, बाय, सेन, मदना में मिलते हैं। 'यह अजीब लग रहा था। उसके चाचा धोती कुर्ता पहने लॉन में खड़े थे, जैसे ही अगस्त्य ने दरवाजे को छूआ, उन्होंने कुछ सोचते हुए पूछा, 'क्या ट्रेन लेट थी?'

'हैलो, काकू नहीं ट्रेन लेट नहीं थी, मुझे रास्ते में एक बेवकूफ़ को छोड़ना पड़ा।

पार्थिव सेन लगभग साठ साल का था और वह अविवाहित था।वह संदेहास्पद किस्म का स्वतंत्र पत्रकार था; कोई नहीं जनता था कि वह इतने ऐशो-आराम से कैसे रहता था ध्रुबो ने बताया था कि वह सीआईए एजेंट था। वह थोड़ा सनकी भी था; उसकी स्थिति की यही माँग भी थी। उसने कुछ बंगाली और अंग्रेज़ी पत्रिकाओं के लिए एक या दो पेज़ की पांडित्यपूर्ण राजनीतिक कमेंटरी भी की थी। उन्होंने बहुत ही सरल और सीधी राजनीतिक घटनाओं का आश्चर्यजनक लाभ लिया। उसने अपने भतीजे को इसका राज यह बताया था कि यह शब्द का अर्थ में भेदों को छिपानाभर है। एक दशक पहले वे एक निम्न क़िस्म की अमेरिकन यूनिवर्सिटी में अंतर्राष्ट्रीय संबंध और तीसरी-दुनिया में पत्रकारिता विषय पर कोर्स करने गए थे, वह एक अमेरिकी कोर्स था (उस कोर्स से उन्हें बहुत फ़ायदा हुआ, वे भारतीय यूनिवर्सिटियों को इस तरह का कोर्स ना उपलब्ध करवाने के लिए कोसते थे और अमेरिकी यूनिवर्सिटियों की अक्सर सराहना किया करते थे) जो उन्होंने रेपिड वाटर या फ्लोइंगब्रुक नामक अमेरिकी शहर में किया था; यह कोर्स करने के बाद उन्होंने अमेरिकी पत्रिकाओं में भारतीय राजनीति की गड़बड़ी के बारे में लिखना शुरू कर दिया था। वे महत्वहीनता और नापसंदगी जाहिर करके ही फलने-फूलने लगे। यह घर उनका अपना था जो उन्होंने अगस्त्य के दादा यानी अपने पिता द्वारा छोड़े गए धन से लगभग तीस वर्ष पहले बनवाया था। 'दादा ने कुछ दिन पहले टेलीफ़ोन किया था, और उन्होंने एक ख़त भी लिखा था जिसमें वे तुम्हारा इन्तजार कर रहे थे।' दादा उनके बड़े भाई और अगस्त्य के पिता भी थे। 'तुमने शायद नाश्ता नहीं किया होगा, है ना!

एक हंसमुख गढ़वाला किशोर नौकर आया, उसने अगस्त्य को नमस्ते कहा और उसका बैग उठा कर अंदर ले गया। अगस्त्य ने उस घर में क़रीब छह साल बिताए थे। जब वह कॉलेज के हॉस्टल में रहता था, उन दिनों वह अपने चाचा के साथ सप्ताहांत बिताया करता था, और अपना आखिरी साल भी उसने अपने चाचा के घर बिताया था। यह एक तीन बैडरूम का घर था, सादा, लेकिन परिचय ने एक तरह का प्यार पैदा कर दिया था। नौकर अच्छा खाना बनाता था। साधारण चीज़ें, अच्छा खाना, नीम की छायावाला लॉन,

जकरण्डा और गुलमोहर के पेड़, उसके कमरे की पूर्वी खिड़की के बाहर एक शानदार बोगनवेलिया; मदना में उसकी एकमात्र महत्त्वाकांक्षा ये सरल चीज़ें पाने भर की ही थी।

'यह क्या बकवास है, कि तुम आइएएस की नौकरी छोड़ना चाहते हो और टॉनिक से कोई और नौकरी माँग रहे हो।' अगस्त्य बरामदे से दो कुर्सियां ले आया। वह अपने चाचा की सरलता पर मुस्कराया, यह उनकी विलक्षणता का हिस्सा था। उसने कहा 'तो बाबा फ़ोन पर चिंतित लग रहे होंगे।'

वे नीचे बैठ गए। घर की एक पूरी साईड में तीस साल पुरानी युक्लिप्टस के पेड़ों की श्रृंखला थी। 'मैं मदना में बहुत खुश नहीं हूँ। मैं इस नौकरी में फ़िट नहीं हो पा रहा हूँ... कहकर 'वह बेशर्मी से मुस्कराया। उसका चाचा चुप रहने वाला नरम आदमी था, उसकी लम्बी नाक और भूरी छोटी आँखें थीं, अगस्त्य के जवाब पर वह कुछ नहीं बोला, लेकिन अगस्त्य की तरफ़ एकटक देखता रहा ताकि वह कुछ बोले और अपनी सफ़ाई पेश करे 'बेशक कुछ भी तय नहीं है। मैं एक तरह से डावाँडोल स्थिति में हूँ, बेचैन।' वह अपनी कुर्सी पर कसमसाया। मुझे नौकरी में चुनौतियाँ और ज़िम्मेदारी या कुछ भी नहीं चाहिए मैं तो बस खुश रहना चाहता हूँ...'वह परेशान होकर चुप हो गया। ऐसा कहना बहुत बुरी बात है। उस शरद ऋतु की मंद धूप में रोशनी वर्षों दूर लग रही थी, फिर भी वह जानता था कि रोशनी वापिस आएगी, शायद अँधेरे के बाद या जब वह अकेला होगा। यह भ्रम लग रहा था, फिर भी अभी तक सुलभ, सपना अभी अठारह घंटे दूर है। वह बहुत कुछ बताना चाहता था, लेकिन समझ नहीं पा रहा था कि कहाँ से शुरू करे और अपने आपको कैसे व्यक्त करे। वह कहना चाहता था, देखो मैं कोई स्वर्ग की कल्पना नहीं करता, न ही कोई क्षणभंगुर या कोई शक्ति या महिमा की, मैं सिर्फ यह चाहता हूँ, यह क्षण, यह पल, यह सूरज की रोशनी, गैराज में एक कार, मेरे कमरे में संगीत की व्यवस्था बस यही सब कुछ। अगर मेरी कोई बड़ी इच्छाएँ हैं, तो वे सिर्फ़ सुस्त कल्पनाओं की आस हैं... मसलन वियना, हांगकांग और बैंकांक में शरारतें करना। यहाँ जैसा संकीर्ण और शांत संसार अब है, जहाँ सफलता का मतलब है, जो रजनीगंधा के फूल तुमने लगाए हैं उन्हें खिलता देखना, बस यही सब मेरे लिए काफी है। मैं परमानंद का महत्त्वाकांक्षी नहीं हूँ, आप मुझे

भविष्य के बारे में सोचने के लिए कहेंगे, लेकिन आनेवाला दशक एक सेकिंड से पहले धुँधला जाएगा, मेरे जीवन की अवधि इसकी गुणवत्ता से कम महत्त्वपूर्ण है। मैं यहाँ हल्की धूप में बैठना चाहता हूँ और कोशिश करूंगा कि कुछ ना सोचूँ और अपने दिमाग की बेचैनी दूर करने की कोशिश करूंगा। क्या आप कुछ समझे। क्या कोई यह नहीं समझ पता कि महत्त्वाकांक्षा के न होने में कितनी सादगी है।

'लेकिन टॉनिक क्यों? टॉनिक तो मूर्ख है। तुम प्रकाशन कम्पनी में काम करने के लिए एक अच्छी नौकरी छोड़ना चाहते हो? भारतीय नृत्य और छोटानागपुर के आदिवासियों जैसी पाण्डुलिपियों को सम्पादित करना चाहते हो?' (टॉनिक उसका दूसरा चचेरा भाई था, जिसने पुलटुकाकु का भारतीय नवीकरण पर लिखा लेख बड़ी चालाकी से प्रकाशित करने से मना कर दिया था।) नौकर बाहर आया और उसने बताया कि नाश्ता तैयार हो गया है अगस्त्य ने अपने पिता का ख़त खोला।

मेरे प्रिय ओगु,

मैं तुम्हारे पिछले ख़त से हैरान था लेकिन मैंने तुम जैसा चाहते हो वह कर दिया। टॉनिक तुम्हारे फ़ैसले से बहुत हैरान था। उसने कहा, 'यह एक शहर में रहने का प्रभाव है, और वह नहीं जानता कि भारत के बाक़ी हिस्सों में क्या हाल है, और इसी तरह की बहुत सी बातें कहीं। मैं समझता हूँ कि टॉनिक हमेशा की तरह बढ़ा-चढ़ाकर बोलता है। यह सच है कि तुम लम्बे समय तक दिल्ली, कलकत्ता जैसे बड़े और आरामदायक शहरों में रहे हो और तुम्हारे दोस्त भी पाश्चात्य जीवन-शैली जीने वाले लोग हैं। जब मैं तुमसे पिछली बार मिला था तब मैंने तुम्हें बताया था कि तुम्हारी यह नौकरी तुम्हें बहुत ही समृद्ध अनुभव देगी। लेकिन मेरा मतलब यह था कि वह एक अलग तरह का माहौल है। तुमने मदना को दिल्ली और कलकत्ता के परिप्रेक्ष्य में रखा होगा, ऐसा होता है। जब मैं चालीस साल पहले कोंकण में था तब मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ था। लेकिन मुझे लगता है मेरी प्रतिक्रियाएँ तुमसे अलग थीं। प्रेसिडेंसी कालेज के बाद कोंकण एक अद्भुत आश्चर्य था। लेकिन यहाँ पर मैं खुद को दोहरा रहा हूँ। जब तुम पिछली बार कलकत्ता

आये थे तब मैंने तुम्हें यह सब बताया था। इस पल तुम्हें मदना खिन्न कर रहा होगा, और तुम इससे परेशान हो रहे होंगे, लेकिन सिर्फ इन्हीं कारणों से यह नौकरी छोड़ने का फ़ैसला मत करो। ओगु, मैं तुम्हें आगाह कर रहा हूँ, जिंदगी में कभी कठिनाइयों को देखकर मख़मली विकल्प ना चुनो, कोई भी जीवन में ऐसे विकल्प ढूँढ़कर तृप्त नहीं हो सकता। यह ठीक है कि तुम्हारी ज़िन्दगी के लिए फैसले तुम ही लोगे। मैं तुम्हें और कोई उपदेश नहीं देना चाहता। कोशिश करके टॉनिक से जल्दी मिलो, ताकि जब मैं अगली बार पलटू को फोन करूँ तो तुम्हारी मुलाक़ात के बारे में बता सकूं।

प्यार के साथ, तुम्हारा बाबा।

उसके चाचा ने बताया, 'पिछले हफ्ते टॉनिक का फ़ोन भी आया था, वह तुम्हारे यहाँ पहुँचने के बारे में पूछ रहा था।' एक बार तो वह तुम्हारी बात लेकर खुश था लेकिन इस बार नहीं आगे का विश्लेषण मैं नहीं कर सकता। वह शरद ऋतु के सूरज में वापिस लौटना चाहता था। वह किसी समझनेवाले को बताना चाहता था कि भविष्य में उसे अफ़सोस हो सकता है, लेकिन यदि ऐसा हुआ तो वह उसका सामना कर लेगा। हे भगवान, एक समय में सिर्फ़ एक ही संसार दिखाओ।

उसके कमरे के बाहर वाली बोगनवेलिया मोटी हो गई थी और जीभरकर खिली हुई थी। नौकर फर्श पर झाड़ू लगा रहा था इससे रोशनी में धूल उड़ती दिखाई दे रही थी। बैड पर वही चददर बिछाई हुई थी, जो पिछली बार वह खुद ख़रीद कर लाया था लेकिन सामान ज़्यादा होने की वजह से इसे यहीं छोड़ गया था, यह क्रीम रंग की चद्दर है और इसके बीच में बड़ा-सा लाल रंग का गोला है, वे मूर्ख, जो 'ज़ातीय 'शब्द का अर्थ ही नहीं जानते वही 'जातीय' शब्द का इस्तेमाल करते हैं, 'ध्रुबो ने कहा था कि इससे उसे चुनने में मदद मिलती है। 'वह धीरे-धीरे अपने सामान को खोल रहा था और बीच -बीच में कमरे में घूम कर उस जगह से नाता जोड़ने की कोशिश कर रहा था। जापान में बने विशाल स्टीरियो सिस्टम पर (यह कम्प्यूटर होने का दिखावा क्यों करता है, मदन ने जब इसे पहली बार देखा था तो इसका मज़ाक़ उड़ाया था, 'ये सभी चमकती लाइटें और डायल, आप ‘स्टार वार्स’ पर अपना अगला हीरो क्यों नहीं लगाते, और तुम क्या ये बेकार के बंगाली गाने

लगाए रखते हो, ये चीज़ें तो पिंक फ्लॉएड के लिए बनी होती हैं।) उसने टैगोर का पसंदीदा गीत लगाया। उसने इस गीत को मदना से विदाई लेने की सुबह सुना था; उस समय वह पिछली रात ध्रुबो के साथ पीने की वजह से बहुत भड़का हुआ था, वे उसके फ़्लैट के बाहर ध्रुबो की कार में बैठे हुए थे, सुबह के एक बजे तक वे विंडशील्ड में से सामने की चौड़ी शांत सड़क को देख रहे थे; उसी समय एक पालतू दिखने वाला आवारा कुत्ता वहाँ से गुज़रा। गीत धीमा, और लगभग सभी टैगोर के रोमाँटिक गीतों जैसा था।

दिवस के अवसान पर, मेरे भीतर एक लाल कली पनपती है
और फिर वह प्रेम में खिल जाती है।

वह संगीत, जो कुछ समय पहले उसकी मनोदशा के अनुरूप हुआ करता था; वही आज वह जगह छोड़ने पर उसे उदास कर रहा था, और वह आनेवाले दिनों के लिए भी कुछ उत्साहित था। अब वही गीत जलन की वजह से उसके मन को नहीं भा रहा है; इसकी संबद्धता की वजह से यह इसकी अनिवार्यता पर विलाप कर रहा है, या फिर घरों से बिछुड़नेवाले लाखों घर की कामना कर रहे हैं।

उसने खिड़की से बाहर देखा। बोगनवेलिया के बाद ड्राइव थी, फिर नीची दीवार, फिर स्तंभों- जैसे दिखते फीके स्लेटी रंग के युक्लिप्टस के तने, फिर एक गली और फिर मैदान जहां पर पड़ौस में रहने वाले बंगालियों ने दुर्गा पूजा के लिए शामियाना और मंडप लगा रखा था।

कई रातों को वह खिड़की से अपने कमरे में देखने के लिए बाहर निकलता था, यह उसकी पुरानी आदत थी, वह यह देखने के लिए कमरे में देखता था कि दूसरे को चाहे वह कोई उठाईगिरा या माहिर हो, उसे उसका कमरा कैसा लगता होगा। बैड के साथ रखे बारहमासी अव्यवस्थित डेस्क के पास जुड़वाँ लैम्प रखे थे, जो उसने काफी साल पहले आसाम इम्पोरियम से ख़रीदे गए थे। वे हमेशा ही बढ़िया दिखते हैं, वे बाँस के बने हैं और झोंपड़ी के आकार के हैं; और कमरा हमेशा ही आरामदायक दिखता था कुछ

रोमाँटिक और अनुबंध पूरा करने की जगह और हमेशा रहनेवालों के इन्तजार में रहता था।

बाद में सुबह, उसने ध्रुबो को उसके ऑफिस में फ़ोन किया और फिर वह दो नक़ली सेक्रेटरियों के साथ उसके पास पहुँच गया। उन्हें अगस्त्य नाम समझने में कुछ समय लगा।

'तुम अपनी वेश्याओं को फ़ोन पर यह क्यों नहीं बताते हो कि यह उनका न्यूयॉर्क का ऑफिस नहीं है इसलिए वे उच्चारण भूल सकती हैं?'

'नहीं, मैं ऐसा नहीं करता, वे अमेरिकन सेंटर में काम करनेवाले भारतीयों से उच्चारण की जाँच कराते हैं जिसे टी-ई-आर उच्चारित करते हैं।

एक बार मैंने अंग्रेजी में कहा था, ‘क्या वे मेरे साथ संभोग करेंगी।?'

'सिर्फ अगर तुम्हारा लिंग गोरी नस्ल की तरह सफ़ेद और सूजा हुआ लाल दिखता है तब। मैं जल्दी ही घर जा रहा हूँ। तुम दोपहर के खाने के लिए क्यों नहीं आ जाते? दोपहर में मेरी माँ खारतूम जा रही है।'

'अगर तुम खाली हो, तो क्या मैं तुम्हारे साथ सो सकता हूँ?'

जब वह ध्रुबो के पास जा रहा था तब ख़ुशी के तनाव में था।

ध्रुबो की माँ ने दरवाजा खोला। वह सुंदर और सेक्सी लग रही थी। 'ओह ओगू, अंदर आओ। ...तुम्हारा वजन बहुत कम हो गया है। ...आज दोपहर को मैं तुम्हारे काका से मिलने खारतूम के लिए निकल रही हूँ, इसलिए घर इतना अव्यवस्थित है, इसकी तरफ़ ध्यान मत देना। ...'ध्रुबो अब तक नहीं आया है। ...ध्रुबो को मेरे साथ जाना था, लेकिन

वह अपनी परीक्षा की वजह से नहीं जा रहा, मैं समझती हूँ अच्छा निर्णय लिया है उसने, वैसे सिटी बैंक भी अच्छी तनख्वाह दे रहा है ----'

'कौन-सी परीक्षा?' अगस्त्य ने मेज से सेब उठाते हुए पूछा।

'वह आईएएस की परीक्षा दे रहा है, क्या उसने तुम्हें नहीं बताया। तुम उसे कुछ सुझाव देना। मेरे जाने के बाद वह अकेला पड़ जाएगा और उजाड़ हो जायेगा।'

ध्रुबो आ गया था। उसने अपनी सफल एग्जीक्यूटिव की सी ड्रेस पहन रखी थी, बेदाग़ शर्ट पर काली टाई। आखिरी मिनट की तैयारी की पैकिंग का आर्डर देते हुए छोटी-छोटी बातें होती रही, मदना में उसकी ज़िन्दगी के बारे में सवाल जिनका उत्तर ध्रुबो शायद ही सुन पाया हो। उन्होंने दोपहर का खाना आधा खड़े-खड़े ही खाया; फिर वे ध्रुबो की माँ को एयरपोर्ट छोड़ने गए। वापिस जाते समय उन्होंने एयरपोर्ट की सड़क पर सिगरेट पी।

'मदना आने वाला है?' अगस्त्य ने पूछा।

'ओह, हाँ, वह पिछले हफ़्ते हवाईजहाज़ो को नीचे उतरता देखने आया था। कैसा वाहियात शौक है यह।'

वे विंडशील्ड में से, सड़क के ट्रैफिक और कार, टैक्सियों को, स्पीड लिमिट 60 किमी प्रति घंटा पढ़ते जाते देखते जा रहे थे, उनके चारों तरफ़ नीले आसमान तले मीलों दूर तक ख़ाली फ़्लैट थे।

'अच्छा तो अब तुम्हें लगता है कि तुम्हारी सिटी बैंक से ज़्यादा भारत सरकार को जरूरत है,' अगस्त्य ने धीरे से कहा। 'ओह, तुम्हे माँ ने बताया होगा, कहकर ध्रुबो ने दूर देखा। 'हाँ मैं इस बारे में एक अस्पष्ट रास्ते से सोच रहा था। 'उसने दस्तानों के डिब्बे में

टटोल कर एक कैसेट निकाली और उसे लगा दिया, और स्कॉट जोप्लिन के संगीत से अपने आप को हल्का किया।

'मैं समझता हूँ तुम जानना चाहते हो क्यों"? 'ध्रुबो ने कहा। असल में अगस्त्य यह नहीं चाहता था; हर किसी का अपना मत है वह सोच रहा था। 'नहीं यदि उसकी आत्मा जल रही है और, उसे ज़्यादा ध्यान की जरूरत है। '

'उसने ध्रुबो की प्रोफाइल देखी, छोटी तीखी नाक, पतली डब्बल गालें, और वह समझ रहा था कि ध्रुबो बहुत कुछ कहना चाहता था, लेकिन वह समझ नहीं पा रहा था कि कहाँ से शुरू करे और अपने आपको कैसे व्यक्त करे।

'अरे, मैं सिटी बैंक की नौकरी से तंग आ गया हूँ। वास्तव में ऐसा कतई नहीं है कि वहाँ स्थिति असहनीय हो।' ध्रुबो ने अजीब सी बात कही जो बहुत अटपटी थी। शायद उसने गांजा पीया हो, उस पर उसका असर हो या फिर वह संकोच कर रहा था, या उसे अपने आप को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे। 'लेकिन दस साल बाद मैं अपने आपको मूर्ख नहीं कहना चाहूँगा, यह समझ कर कि मुझे बहुत पहले अपनी नौकरी बदल लेनी चाहिए थी।वास्तव में, ऐसा नहीं है।' वह कार के दरवजे की तरफ़ झुका और उसने गुज़रते ट्रैफ़िक और स्कॉट जोप्लिन को चिढ़ाते हुए विंडशील्ड से बात की। 'मुझे लगता है, मैं समझता हूँ कि मैं पाश्चात्य संस्कृति से कुछ ज़्यादा ही संबद्ध रहा हूँ ... अबे मादरचोद तुम क्यों मुस्करा रहे हो?'

'किसकी माँ को गाली दे रहे हो? "पाश्चात्य संस्कृति से संबद्ध" होने से तुम्हारा क्या मतलब है? तुम ये वाक्यांश इसलिए इस्तेमाल कर रहे हो क्योंकि यह अंतर्राष्ट्रीय डोप गैंग की तरह अच्छा लगता है।'

'मैं समझा नहीं सकता। ...' और अगस्त्य ने अचानक से कहा कि वह ऐसा करने की कोशिश भी ना करे। उसने धीरे से कहा जब तुम अपने आपको आराम और सुकून देने के

लिए कोई अनैतिक काम करते हो तब, पिछली अय्याशी की मृगमरीचिका तुम्हारे ज़ेहन में रहती है। तुम जिस खर्च के ब्योरे, खराब उच्चारण वाली सक्रेटरियों, न्यूयॉर्क और हेड ऑफिस और हांग कांग में हमारे आदमी जैसी बातें करते हो, जो तुमने किसी से सुनी हैं और तुम उन्हें ही दोहराते हो– असल में तुम झूठ बोलते हो, तुम समझ रहे हो, मैं क्या कह रहा हूँ? 'और अगस्त्य फिर से सोचने लगा कि संसार कितना बड़ा है और उसकी तकलीफ़ें कितनी छोटी; जब वह मदना में था और मोहन के साथ बातें करते हुए चलते समय बच-बचकर चल रहा था कि कहीं भैंस अपनी पूँछ का गोबर उसे न लगा दे, तब ध्रुबो उस जगह था, जहां अगस्त्य रहना चाहता था, लेकिन उसे तो संकटों से जूझना था। 'और मैं टाई पहनता, अपना क्रेडिट कार्ड इस्तेमाल करता, और जब मेरे सहकर्मी की पत्नी मुझे मिलती तो मैं उसके गाल चूमता, फिर घर आकर मैं सिगरेट के कश खींचता, और स्कॉट जोप्लिन और कैथ जर्रेट का संगीत सुनता और, सप्ताहांत में हेर्ज़ोग या कार्लोस सौरा की कोई फ़िल्म देखता, लेकिन यह तो एक... सपना भर है।'

अगस्त्य ने कहा, 'यह सब बहुत अच्छा लगता था,' लेकिन ध्रुबो परेशान लग रहा था, इसलिए उसने कहा, 'अच्छा, यह कड़वा लग रहा है, क्योंकि मैं खुद यह नौकरी छोड़ने की सोचकर अपने साथ खिलवाड़ कर रहा हूँ। 'वह अनमने मन से मदना में अपनी उलझन और अकेलापन बताने की कोशिश कर रहा था और अपने आप में बातूनी और घटिया महसूस कर रहा था।

उसने ध्रुबो को क्रोधित किया 'तुम कौन हो और कहाँ हो, एक अमेरिकन को कॉलेज के बाद खुद को समझने में एक साल लगता है। उसने कार के स्टीरियो की आवाज तेज कर दी, और वे नीचे उतर गए, रेगटाइम संगीत के सुस्त मजाकिया नोट्स दूसरी कारों से टकरा कर शोर पैदा कर रहे थे।

'तुमने ऐसी मूर्खता का फ़ैसला कब किया?' ध्रुबो ने कुछ मिनट बाद पूछा।

'गोरपाक नामक एक जगह पर, एक मंदिर में पिकनिक मनाते समय।' वह जगह बहुत दूर लग रही थी। 'मैं एक डिविजनल फारेस्ट ऑफिसर के बेटे के साथ क्रिकेट खेल रहा था। उस समय मैंने बहुत कमीनापन दिखाया।'

ध्रुबो ने उसकी तरफ़ अजनबियों की तरह देखा और लगभग एक पब्लिक बस से टकरा गया। ड्राइवर उसकी तरफ़ गुर्राया। बदले में ध्रुबो भी उस पर गुर्राया, और जब वे बस से दूर निकल गए तब उसने अगस्त्य से कहा, 'वह कुत्ताचोद, भारत में किसी को भी सड़क के नियम नहीं पता।'

'तुम्हे भी नहीं।' यह कहकर दोनों हँसे। ध्रुबो के घर वे दोनों सोफे पर पसर गए और सिगरेट के सुट्टे लगाने लगे। 'मैंने पूजा के लिए और इधर-उधर मस्ती करने के लिए काम से कुछ दिन की छुट्टी ले रखी है। गवर्नर तुम्हारे पागलपन पर घबरा गया होगा।'

'वह निराश है। लेकिन मेरा चाचा गुस्से में है, लेकिन मैं समझता हूँ वे इसलिए गुस्से में हैं क्योंकि वे टॉनिक को बिलकुल पसंद नहीं करते। अगर मैं कहता कि मैं फ्री-लांस-पत्रकार बनने के लिए आईएएस की नौकरी छोड़ रहा हूँ तो शायद वे गुस्सा नहीं होते। 'दूसरी तरफ़ की दीवार पर जामिनी राय की पेंटिंग टँगी थी जिसे अगस्त्य ने पहले नहीं देखा था। उनका गवर्नमेंट फ्लैट था (अगस्त्य दाँत निपोरते हुए सोच रहा था, ऐसा फ्लैट तो श्रीवास्तव- जैसे को अगले पंद्रह सालों की ज़द्दोजहद के बाद ही मिल पाए) लेकिन ध्रुबो की माँ ने सुघड़ता और अपनी कलात्मकता के ज़रिये इसका भौंडापन छिपाकर इसे खूबसूरत बना दिया था – कहीं पर पीतल के कलश रखे थे तो कहीं पर नारियल की जटा की वाल हैंगिंग टंगी थी। ध्रुबो के पिता खरतूम में संयुक्त राष्ट्र की किसी असाइनमेंट पर काम कर रहे थे। ध्रुबो उठ गया। 'मैं तुम्हें रेनू का ख़त दिखाना चाहता हूँ।' वह अपने कमरे से एक पतला सा क्रीम रंग का लिफाफा लाया।

'रेनू तुम्हारी वो पंजाबन, जो तुमसे रिश्ता तोड़ने के लिए बाहर गई, वही है ना?' मुझे नहीं लगता कि मैं यह ख़त पढ़ूँ, मैं उसका ख़त तभी पढ़ना चाहूँगा जब वो तुम्हारे पिछले

यौन संबंधों की बरीकियों और मधुर यादों से भरा होगा। तुम कुछ चाय नाश्ते और संगीत का प्रबंध क्यों नहीं करते?'

'नहीं, अरे हरामी जात के आदमी, तुम्हे इसे पढ़ना चाहिए, ताकि तुम्हें फ़र्स्ट वर्ल्ड की कुछ झलक मिले। हमारी आधी राय तो वहीं से आती हैं।' ध्रुबो अगली सिगरेट सुलगाने की तैयारी करने लगा। 'क्या तुम मदना में ज़्यादा सिगरेट पीने लगे।'नहीं, कोई ज़्यादा नहीं। 'वह अपने जीवन का राज़ किसी के आगे नहीं जाहिर करना चाहता था।

रेनू ने वह ख़त चमकीले सफ़ेद कागज पर सधे हाथों से, इलियन्स से लिखा था।

प्रिय डी,
[ध्रुबो वो तुम्हे डी बुलाती है डी! हे भगवान, डी! तुम दोनों तो सचमुच पहले नाम के नियमों से भी परे चले गए, है कि नहीं, हा, हा, हा!]

यह वास्तव में बड़ा अजीब था, कि मेरी पहली शाम इधर गुजर रही है, वहाँ स्थानीय भारतीय गैंग की सभा थी। वे तीनमूर्ति लाइब्रेरी, यूनिवर्सिटी के कॉफी हॉउस और एम फ़िल विभाग के बारे में, पुरानी यादों के सहारे कुछ विचार- विमर्श करेंगे। मुझे मृणालिनी नाम की एक लड़की मिली थी। वह तुम्हें जानती थी, वह बता रही थी कि वह तुम्हें एक बार किसी बड़ी विदेशी सर्विस पार्टी में मिली थी। जहाँ पर तुमने उसे बताया था कि, 'अमेरिका और सोवियत रूस परमाणु दौड़ में लगे हैं। वे बाकी दुनिया का विध्वंस करना कहते चाहते हैं। 'यह सब उनका खेल है, वे हम सबका दिमाग असली मुद्दे से दूर रखना चाहते हैं, असली मुद्दा यह है कि वे सोवियत जरूरत और अमेरिका का सपना पूरा करने के लिए तीसरी, चौथी और पाँचवीं दुनिया बनाना चाहते हैं।' मैं समझती हूँ तुम्हें शर्मिंदगी हो रही होगी? मृणालिनी समझ रही थी मैं उस पर विश्वास नहीं कर रही। वह बता रही थी कि तुम पार्टी के दूसरे लोगों की तरह मोटे और रौबदार लग रहे थे और तुमने बहुत पी रखी थी। मैं जितना सम्भव हुआ उतने अक्षर लिखकर ख़त बंद कर दूंगी क्योंकि मेरे लिए इन दिनों ख़त लिखना एक बहुत बड़ी बेवकूफी है। यहाँ लोगों के साथ

बातचीत करना बहुत मुश्किल है इसलिए इस कमी को पूरा करने के लिए खतों का सहारा लेना पड़ता है। ख़तों के ज़रिये कम से कम आपको एकदम प्रतिक्रिया तो नहीं देनी होती, तुम कल्पना कर सकते हो कि जो कुछ तुम लिख रहे हो वह उसकी पसंद का है और जो उसे तुम समझना चाहते हो वह उसे समझ रहा है -ऐसे उपदेश जो बहुत बुरे लगते हैं, इस जगह के वे सब लोग जिनके साथ मैं बातें नहीं करना चाहती, ख़त लिखना इन सब कुछ से बाहर निकलने का एक अच्छा तरीका है। कोई आसान रास्ता निकालने का बड़ा लालच रहता है, इस बारे में जानने के लिए कि यहाँ के लोग कितने कुंठित, जाहिल, दम्भी और संकीर्ण हैं। वो जैसे भी हों, लेकिन मेरा अपना रवैया उनके प्रति बहुत गलत है। मेरे रंग और उच्चारण इत्यादि की वजह से, मैं अमेरीकियों से बात करने में सावधान रहती हूँ-जिस समय मैं उनसे बात करती हूँ, तब मुझे लगता है मेरे शटर बंद हो रहे हैं, और मुझे लगता है कि मेरा चेहरा ख़ाली, ऊबाऊ और परिचित लगता है।

यहाँ आने के कुछ ही हफ्तों में मैंने अपने चारों ओर 'चुप्पी का घेरा' बना लिया (जैसा कि गणपति खास किस्म की झुँझलाहट के साथ कहा करता है) जिसे तोड़ने की कोशिश कोई भी नहीं करता। शांत और उदासीन रहना सबसे बड़ा सुरक्षा कवच है, तुम सुनिश्चित रहते हो कि तुम्हारे साथ कुछ नहीं होने वाला। और 'मुझसे दूर रहो' वाली अभिव्यक्ति की बात हाथ से निकल जाती है– सिर्फ़ वही अमेरिकी जो मुझसे बात करने की बहादुराना कोशिश करता है और पूछता है कि क्या मुझे पोस्टर चाहिए, और मैं बिना सोचे और बिना ऊपर देखे कहती हूँ, 'नहीं, इसे आप ही रखो।' उसका अपनापन मुझे बेहद आभार भरा और जवाबदेही माँगने वाला लगता है– इससे मैं अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए मैं इतनी उत्सुक हो जाती हूँ कि जब यह महसूस करती हूँ कि वह मेरे आसपास ही है, तब मैं वहाँ से भाग जाती हूँ। मैं नहीं जानती कि मैं ये बेकार की बातें क्यों लिख रही हूँ।

पिछला हफ़्ता वास्तव में बड़ा अच्छा रहा- मुझे क्लास में जाना पड़ा, फ्री लेखन का अभ्यास किया- जिसमें सबको दस मिनट तक नॉनस्टाप जो दिमाग में हो वह लिखना पड़ता है। पिछले हफ्ते एक छात्र ने लिखा, मैं एक भारतीय से यह सुनने के लिए इतनी बड़ी रकम का भुगतान नहीं रहा हूँ कि अंग्रेजी कैसे लिखते हैं। और उसका कमबख़्त

उच्चारण मुझे माइग्रेन का दर्द दे रहा है। 'मुझे सचमुच हैरानी हो रही है कि मैं यहाँ क्या कर रही हूँ, खासकर इसलिए क्योंकि अकादमिक तौर पर यह जगह वास्तव में बहुत 'बेकार' है, एक तो अमेरिकन अभिव्यक्ति में ही पूरी नकारात्मकता समाई रहती है। मैं तुम्हें कभी आगे लिखूँगी कि यहाँ के लेक्चरों में कितनी बेकार की बातें बताई जाती हैं। इन लेक्चरों के बारे में किसी को ना बताना सचमुच मूर्खता ही होगी। पहले तो हर कोई यहाँ दोस्त होने का दावा करता है, हरेक तुम्हारे पास रुकेगा और पूछेगा, 'हाय, कैसा चल रहा है?' फिर जवाब में हल्के मन से यही कहा जाता है कि 'बहुत बढ़िया चल रहा है,' बस यही सामाजिक निर्ममता है यहाँ। तीव्रबुद्धि, चालाक और व्यस्त होना ही यहाँ का मजहब है। तुम समझ सकते हो कि मेरा चेहरा कितना निस्तेज है और मेरी आवाज़ तो बिलकुल ही नीरस, मनहूस और सुस्त है।

मैं एक मेक्सिकन के साथ अपना कमरा साझा करती हूँ। वह ठीक है। कई बार मैं उन्मादपूर्ण होकर सोचती हूँ कि लोग अपना देश छोड़कर दूसरे देश क्यों जाते हैं। हम यह क्यों नहीं समझते कि जगह का बदलाव हमेशा बदतर हालत पैदा करता है। यह किसी जगह से प्यार नहीं है, यह तो सर्दी के कपड़ों की तरह अंतरंगता है। क्या तुम इस तरह का कुछ नहीं अनुभव करते? तुमने अपने अमेरिकन अनुभवों के लिए हमेशा ही मुँह बंद रखा है। कल मुझे एक अमेरिकी ने पूछा कि मैं भारत के किस शहर से हूँ। मैंने बताया,'बॉम्बे।' उसने एक पल के लिए कुछ सोचा फिर मुझसे पूछा कि क्या तुम कॉलेज हाथी पर चढ़कर जाती हो। मैंने कहा,' हाँ, लेकिन मैं किराए के हाथी पर चढ़ कर कॉलेज जाती हूँ, क्योंकि हम बहुत गरीब हैं और हाथी अपने घर नहीं पाल सकते। 'यह पूरी तरह से मेरी गलती थी, इसलिए कि मुझे अपने देश में अपने घर होना चाहिए था। मैं इस पीएचडी प्रोग्राम की वजह से यह यूनिवर्सिटी नहीं बदल सकती। वरना मुझे अपने क्रेडिट खोने पड़ेंगे। मेरा इससे पहले अमेरिका का अनुभव सिर्फ न्यूयॉर्क का ही था और मुझे यह समझना चाहिए था कि न्यूयॉर्क अमेरिका के मकई देश के दिल में होने से बिलकुल अलग होगा।

एक मेरी याददाश्त ही है जिसके साथ मैं समझौता नहीं कर सकती- मेरी याददाश्त ऐसी है कि अतीत मेरे लिए अतीत है कोई परेशानी नहीं देता। लेकिन यहाँ पर 'गुड्डी' और 'बारूद' जैसी हिंदी फिल्मे देखते हुए मेरी यादें चरम सीमाएँ तक लाँघ जाती हैं, मैं नहीं समझती कि जब किसी जगह तुम्हारे रिश्ते गड़बड़ा जाएं तो उस जगह को अलविदा कर दो। यहाँ पर मैं पहली बार यह सोच रही हूँ कि निरन्तरता बनायेरखनी चाहिए, लेकिन मैं नहीं समझती कि मेरा यह विचार चिरकाल तक बना रहेगा, सिर्फ यह बात ही अटल है कि हर जगह पर मेरा अपना अस्तित्व यही बना रहेगा – लेकिन यह निश्चित रूप से खुश रहने का कोई कारण नहीं है! पहले कुछ दिन मैंने सोचा कि मैं अपनी मेक्सिकन कमरे की साझेदार से दोस्ती करूँगी और यहाँ के जातिवाद के बारे में बात करूंगी। सौभाग्यवश मैंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि मुझे याद आ गया कि हम भारत में अफ्रीकियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, मबेले का मामला याद करो ज़रा।

मैं नहीं सोच पा रही कि मैं यह सब बातें तुम्हें क्यों लिख रही हूँ अब जब मेरी क्लास मिस हो ही गई है तब मैं यह पेज तो लिखकर भर ही दूँ। बेशक अब फिर से मैं हिफ़ाजती होती जा रही हूँ। मैं अपने लिए साफ़ रास्ता बचाते हुए किसी दूसरे के बारे में कुछ नहीं कहती, 'इन सब बातों को गंभीरता से मत लेना 'और मैं यह भी नहीं जानती कि मैं यह सब क्यों लिख रही हूँ।' इन चीज़ों से पार पाने का यही एक रास्ता है कि यह मान लो कि तुम्हारे आसपास कुछ हुआ ही नहीं।

ओह, यहाँ पर कुछ प्यारी चीज़ें भी हैं– क़िस्म-क़िस्म की हेम, हर किस्म की किताब सिर्फ दस सेंट में उपलब्ध रहती है, भूमिगत रेडियो स्टेशन मृणालिनी जहां घंटों तक लगातार पुराने ब्लूज़ बजते रहते हैं, यहाँ के बार– लेकिन यह सब ही काफी नहीं है।

मैं कई बार तुम्हें मन में साक्षात देखती हूँ– टाई पहने हुए अपने सिटी बैंक के डेस्क के पीछे अपने क्लाइंट के किसी बैंक के मामले में बिलकुल डूबते हुए। फिर मैं अपने आपसे पूछती हूँ कि अंत में तुम इतने ठंडे और कटे हुए क्यों हो गए हो? 'अंत में' कहना बड़ा नाटकीय लगता है लेकिन तुम तो जानते ही हो कि इससे मेरा क्या मतलब

है। इसका उल्लेख करना ही बेतुका लगता है क्योंकि यह किसी दूसरे देश में था। आख़िरी लाईन के लिए तुम अपने अंग्रेजी साहित्यिक दोस्त से परामर्श कर सकते हो, यदि उसका वह ख़त, जो तुमने मुझे दिखाया था वह सच था तो वह कहीं मदना के ठहरे पानी में आनंद ले रहा होगा। कृपया जवाब जरूर देना,

प्यार के साथ–रेनु।

अगस्त्य ने ख़त को सावधानी से मोड़ा और उसे लिफ़ाफ़े में वापिस डाल दिया। 'कितना नंगा ख़त है वह काफ़ी सेक्सी लग रही है। तुम उससे इस शर्त पर शादी कर लो कि वह तुम्हारे साथ सिर्फ़ ख़तों के जरिये ही बातचीत करेगी।'

वे चाय बनाने रसोईघर में चले गए। रसोईघर में फिनाईल और धोई हुई चटाइयों की गंध आ रही थी।

'तो क्या आप सलाह नहीं देते कि मुझे सिटी बैंक छोड़ना चाहिए?'

'आप को मदन की कहानी याद है? जब कोई भारतीय उनसे सहायता के लिए पूछता है तो जापानी क्या कहता है,

शायद हाँ, शायद नहीं।

शायद मैं नहीं जानता – यही मेरा जवाब है।

इसका फ़ैसला तुम खुद करो,यह तुम्हारा अपना दुःस्वप्न है। या फिर इसे बिना किसी फ़ैसले के ऐसे ही छोड़ दो। हर कोई ऐसा हर समय करता रहता है, जल्द ही तुम भी इसके अभ्यस्त हो जाओगे। फिर जब कभी तुम कोई कड़क फैसला लोगे तब तुम्हे अजीब लगेगा, जैसे कि फ़ैसला रद्द करने का लक्षण या कुछ और। वह सख्त आवाज में बोलना चाहता था ध्रुबो के सवाल से वह चिढ़ गया था, इससे उसे खुद की अकथनीय और गुप्त

ऊहापोह की याद आ गई। 'मेरा मदना का एक दोस्त अपनी सभी समस्याएँ माँ जगदम्बा के सामने रखता है और उत्तर के इंतजार में शराब पीता है– तुम अपनी समस्याओं के लिए क्या करते हो?'

ध्रुबो कुछ समय से कुकिंग-गैस के सिलेंडर की नोब के साथ उलझा हुआ था। 'ये साले, बिना चेतावनी के ही आधुनिक हुए जा रहे हैं। यह गैस सिलेंडरों की कोई नई सीलिंग प्रणाली है। सिर्फ़ मेरी माँ और वह नौकर ही जानता है कि यह कैसे खुलता है। 'उसने एक आख़िरी कोशिश की और पूरी की पूरी नोब उसके हाथ में आ गई। 'हे भगवान, अब यह लीक करने लगी।' नोब के हाथ में आते ही उन्हें गैस की गंध आनेलगी। थोड़ी देर के लिए वे सिलेंडर के ख़तरनाक मुँह को देख रहे थे, ध्रुबो थोड़ी देर हँसा। फिर बोला, यह तो चूतड़ के छेद जैसा दिख रहा है।'

'हमें इसके लिए कुछ करना चाहिए, 'अगस्त्य ने कहा। 'क्या हम दियासलाई जलाएँ?' यह तुम्हारी दुविधा का ख़याल रखेगा।

'एक सेकिंड के लिए वह विस्फोट करना चाहता था, ताकि उनकी हड्डी के टुकड़े-टुकड़े हो जाएं और उनके खून के चिंदे-चिंदे उड़ जाएँ।

ध्रुबो ने सिलेंडर की नोब को दुबारा उसमें ठोकने की कोशिश की। 'अगले दिन भारतीय अख़बारों में जानी-पहचानी खबर छपेगी। तीसरे पेज के दो इंच की जगह पर, "गैस सिलेंडर फटा, दो को मौत।" ‘उसी समय उन्हें हल्की सी अलग तरह की क्लिक सुनाई दी। लग रहा था की सिलेंडर का सिरा ठीक से फिट हो गया था। उन्होंने उसे शंका से देखा।' नोब इसलिए हाथ में आ गई क्योंकि मैंने उसे दूसरी तरफ़ से मोड़ दिया था। मुझे लगता है अब यह ठीक से लग गई है,' ध्रुबो ने अपने मन में शंका के साथ भारी आवाज में कहा।

'सच में, तो तुम पक्के विश्वास के साथ क्यों नहीं बोल रहे?'

उन्होंने एक दूसरे की तरफ़ देखा और लगभग गुनहगारों की तरह मुस्कराए। 'तुम्हें तो स्कूल में साइंस बहुत पसंद थी फिर तुम इसे फिट क्यों नहीं कर पाए?' ध्रुबो ने पूछा। 'अपने चूतड़ से मत बोलो हमारी शिक्षा कब कामयाब हुई थी। तुम वो रीडर्स डाइजेस्ट क्यों नहीं पढ़ते जो तुम अपने पिताजी से खरीदवाया करते थे, उसमे एक कॉलम आता है, जिसमें इस तरह की हजारों चीजें छपती हैं वो भी चित्र सहित।' उन्होंने चौकसी बरतते हुए हवा को सूँघा। अगस्त्य ने सिलेंडर के सिर को छुआ। 'सुनो, मैं दियासलाई सुलगा रहा हूँ। याद करो हम यहाँ चाय के लिए आये हैं। यदि यह अब भी लीक कर रहा है तो हम पता लगाएँगे, हा, हा। तुम नहीं चाहोगे कि यह कल सुबह तक लीक करता रहे, है कि नहीं?'

'हम किसी गैस ठीक करने वाले को फ़ोन कर सकते हैं। 'ध्रुबो ने फिर से शर्मसार होते हुए कहा। 'किसे?' अगस्त्य ने सवाल करने के लहजे में कहा, जैसे एक बहस करने वाला दूसरे स्पीकर को स्कोर प्वाइंट बताता है। फिर वह मुस्कराया और उसने दियासलाई उठाई।'तुम्हारा मकसद दुविधा में पड़ना ही होगा – क्या यह उस शोरगुल करने वाले गीत की लाइन नहीं है जो मदना हमारे लिए हमेशा गाया करता है? या फिर मैं अपना आधा चेहरा और दोनों हाथ गँवा सकता हूँ। फिर मुझे मदना वापिस नहीं जाना पड़ेगा, और न ही भविष्य के बारे में,या किसी ओर चीज़ के बारे में सोचना पड़ेगा, बस मेरे आधे चेहरे के बारे मेंही चिंता रहेगी। जीना बहुत आसान रहेगा। 'वह ध्रुबो की तरफ़ मुस्करा रहा था।

ध्रुबो की तरफ़ से एक दर्द भरी चीख़ निकली, 'रुको,' 'क्या तुम जानते हो तुम क्या कर रहे हो?'

'यह इस तरह के कड़वे सवाल करने का समय नहीं है, पागल,' कहते हुए अगस्त्य ने दियासलाई सुलगा दी और चाय की केतली गैस पर रख दी। वह झुका और उसने गैस सिलेंडर के सिर को जाँचा। 'अरे मूर्ख,'ध्रुबो, निर्देश तो यहाँ इस जगह पर लिखे पड़े हैं! "गैस प्रवाह के लिए नोब को उत्तर की तरफ़ घुमाएँ, सिर हटा कर नया सिलेंडर जोड़ने के

लिए दक्षिण की तरफ़ घुमाएं "क्या तुम्हें येल और सिटी बैंक में गैससिलेंडर चालू करना नहीं सिखाया”?

'लेकिन ये निर्देश अंग्रेज़ी में क्यों हैं रक्तपात करनेवाले साम्राज्यवादियों की भाषा है ये तो, उन्होंने हमारे दिलों को रुलाया, और हमारी गौरवशाली विरासत की प्रशंसा करने के लिए हमें अपंग किया। मैं इसका विरोध करता हूँ और एक अच्छे बंगाली की तरह, मैं स्टेट्समैन अख़बार के "शिकायत" कॉलम में यह छपवाऊँगा कि गैस सिलेंडर के निर्देश संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त चौदह भारतीय भाषाओं में लिखे होने चाहिए।'

वे दोनों फिर से सोफ़े पर सहवास के बाद की थकावट की तरह मुद्रा बनाए, कांपते हाथों में चाय के कप लिए हँस रहे थे।'ओह, वह सच में बंद हो गया था,'ध्रुबो ने कहा,” मैं समझ रहा था हम जश्न मनाने की एवज में अगली सिगरेट सुलगाएंगे।'

'बेशक, तुम जानते ही हो,यदि तुम शराब के नशे में न होते तो ऐसा कभी नहीं होता।' अगस्त्य ने टॉनिक को उसके ऑफिस में फ़ोन किया। 'हेलो, क्या मैं मिस्टर गोपाल चौधरी से बात कर सकता हूँ, कृपया।

...मेरा नाम अगस्त्य सेन है। ...उह - मेरा नाम अगस्त्य सेन है। ...अगस्त, मई, जून, जुलाई, अगस्त, अगस्त सेन। ...हेलो, टॉनिकदा?' वह बंगाली लहजे में बोलने लगा, क्योंकि उसका चचेरा भाई बंगाली ही पसंद करता है। 'मैं ओगु बोल रहा हूँ। ...

टॉनिक ने कहा,‘बस एक मिनट रुको,’और फिर लाइन बंद हो गई।

अगस्त्य ध्रुबो की तरफ़ मुड़ा। 'तुम शायद टॉनिक से कभी नहीं मिले होगे, है ना? वह दक्षिण एशिया का सबसे उबाऊ व्यक्ति है, तुम सिर्फ़ शराब के नशे में ही उससे बातें कर सकते हो। मुझे लगता है पलटुकाकु उससे बहुत नफरत करते हैं, उन्हें लगता है कि वह अपनी बातों से बोर करके एक पत्थर की मूर्ति को भी ढहने पर मजबूर कर सकता है।'

ध्रुबो दीवान पर दो कुशनों के नीचे सिर करके पसर गया और उसने कहा, “क्या उसने कभी अपना नाम बदलने की नहीं सोची?”

'लगता है उसे छोटेपन में टॉनिक बहुत पसंद थे। वह इतिहास के रिकॉर्ड में पहला ऐसा बच्चा है, जिसे वाटरबेरी कम्पाउंड का स्वाद बहुत अच्छा लगता था। वह इसकी फालतू चम्मच चोरी करके पी जाता था– 'टॉनिक फ़ोन पर लौट आया। 'हेलो, टॉनिकदा, मैं समझ रहा था मैं कल आपसे बात करूँगा... कहाँ पर बात करूँ घर पर या दफ़्तर में?... जब हम मिलेंगे तभी उस बारे में बात कर लेंगे... '

कुछ घंटों बाद, वे नहा धोकर तरोताज़ा हुए, लेकिन नशा अभी भी बरकरार था, वे अगस्त्य के चाचा के साथ रात के खाने पर थे, अगस्त्य के चाचा उस दिन चुपचाप ही रहे। उनकी सनक की जरूरत थी कि वे सप्ताह में कम-से-कम दो दिन शांत रहें। अगस्त्य उन्हें भड़काना चाहता था क्योंकि शांत दिनों में उनके तंज़ बेजोड़ होते थे।

'काकू, ध्रुबो भी अपनी नौकरी छोड़ना चाहता है।'

उसके चाचा थोड़ी देर कुछ नहीं बोले, फिर ध्रुबो की तरफ़ अपनी भूरी आंखें तरेरते हुए बोले, 'और शायद, यह भी टॉनिक की विशाल प्रकाशन कम्पनी में नौकरी करना चाहता है?'

'ओह, नहीं, नहीं, 'ध्रुबो ने कहा ' मैं तो सिविल सर्विस की परीक्षा दूंगा, अब... ओगु तो बेवकूफ़ है, लेकिन मैं बेवकूफ़ नहीं ।'

अगस्त्य के चाचा ने सीधी कुर्सी पर अपनी पीठ पीछे करते हुए कहा, 'अगर सचमुच तुम बेवकूफ़ नहीं हो तो ठीक है, तुम अपने इस दोस्त को थोड़ी बुद्धिमता क्यों नहीं दे देते?'

फिर साथ के मैदान में लगे पूजा के शामियाने से ड्रम बजाते हुए उत्सव की गर्जन होने लगी। ड्रम बजानेवाले अपने कंधों पर ड्रमों को लादे हुए धीरे-धीरे ड्रम बजाते हुए सख्त पैरों पर खड़ी मूर्तियों के आसपास टहल रहे थे; वे शामियाने बनाने में माहिर थे। उन्होंने बंगाल से लेकर पूरे देश में इस तरह के हजारों शामियाने बनाए थे; चार दिनों तक चलनेवाले इस उत्सव में मिटटी की मूर्ति के आगे माँ की महिमा गाई जाती है। अगस्त्य के दिमाग पर अक्टूबर के महीने की यादें उस उत्सव के साथ जुड़ रही थी, मसलन खुले में अस्थाई स्क्रीन पर फ़िल्म देखना, मूर्ति के चारों ओर धूपबत्ती की सुगंध, सुबह के तीनबजे किसी ढाबे पर मीट पाई खाना।

'जब मेरी पीढ़ी जवान थी, तब मुझे नहीं लगता कभी मैंने या तुम्हारे पिताजी ने ऐसा छिछोरापन किया हो। यह इतनी समृद्ध धरती नहीं है यहाँ पर नौकरियाँ मिलना बहुत मुश्किल है– यहाँ तक कि हम जैसे लोगों को भी कठिनाई होती थी जिन्हें पता रहता था कि किस नौकरी के लिए सही व्यक्ति कौन था। अब तो यह निश्चित रूप से समृद्ध धरती नहीं है। कोई भी इस तरह से नौकरी नहीं छोड़ता था– एक सरकारी नौकरी इतनी सुरक्षित है कि, यदि तुम बिलकुल भी काम नहीं करो, तब भी तुम्हे कोई निकाल बाहर नहीं करेगा। और तुम सिर्फ़ कुछ महीने काम करके छोटी-मोटी नहीं, एक आईएएस की नौकरी छोड़ना चाहते हो। नीच काम है यह। यह तुम्हारे पिता की तरह होता जो भारतीय सिविल सर्विस छोड़ना चाहते थे। लेकिन किसलिए? ऐसे काम के लिए नहीं -जैसा सुभाषचन्द्र बोस या दूसरों ने किया था– उन्होंने खुश रहने के लिए सिविल सर्विस नहीं छोड़ी थी, जैसा कि सुबह तुम कह रहे थे, कि मैं तो बह बस खुश रहना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि तुम्हारे पिताजी ठीक ही कोशिश कररहे थे, कलकत्ता राजभवन में मूर्खतापूर्ण बैठे धैर्य का खेल खेल रहे थे, वे तुम्हें तुम्हारी अपनी समझ से ज़्यादा समझ दे रहे थे। तुम अपनी पोस्टिंग की जगह इसलिए पसंद नहीं करते थे कि वह कलकत्ता और दिल्ली नहीं थी और वहाँ पर फ़ास्ट फूड और हमबर्गर के सेंटर नहीं थे। तुम हमेशा सुरक्षा में रहे हो इसलिए इस तरह काव्यवहार कर रहे हो। तुम अब बड़े हो गए हो, समझदार बनो ओगु, तुम अब चौबीस। साल के हो किशोर नहीं रह गए।'

यही मैंने आज दोपहर को इसे कहा था, ध्रुबो ने सिर हिला कर हां में हां मिलते हुए कहा, 'भारत में यह अपने आप को खोजने की कोशिश कर रहा है।'

कृपया इस तरह की बकवास करके मेरे लिए बाधा मत बनो। लेकिन पलटुकाकु ने ध्रुबो को यह कहकर परेशान नहीं किया। 'और तुमने टॉनिक से नौकरी माँगी क्योंकि तुम दिल्ली में रहना चाहते हो। तुम्हें प्रकाशन की कुछ भी जानकारी नहीं है बस तुम तो दूर से ही इसके लिए हामी भर रहे हो। असल में तुम्हें किसी चीज में कोई रुचि नहीं है और तुम इसे ही अपना गुण मानते हो।'

अगस्त्य और ध्रुबो बाहर आकर पूजा के शामियाने को देखने निकले। ध्रुबो ने कहा,' वह बढ़िया मूड में था।'

'शायद पिछली रात उस प्यारे नौकर ने पलटु को अपने चूतड़ नहीं दिए।'

वे गेट पर थे जब पलटुकाकु ने ड्राइंग-रूम की खिड़की से उन्हें पुकारा। 'ओगु, आज शाम को माणिक का फोन आया था। मुझे उनकी बातों से आभास हो रहा था कि वे अपनी पोती की शादी तुमसे करना चाहते हैं। वे कल सुबह-सुबह यहाँ आएंगे। मैंने उन्हें बताया था कि जब तक वे दिल्ली में हैं उन्हें इसी वक़्त मिला जा सकता है।'

ड्रम शांत हो गए थे। शायद नाटक और फ़िल्म शुरू हो गई थी। खड़ी कारों और लोगों का जमावड़ा बता रहा था कि लोग कितना आनंद ले रहे थे; वैसे पूरा साल पुरुष लोग पैंट शर्ट पहनते हैं, लेकिन उत्सव के मौक़े पर वे अपनी जातीयता का बखान करता सफ़ेद धोती-कुर्ता पहनते हैं। शामियाने के चारों तरफ़ पान-सिगरेट की दुकानों, अंडे के पराठे और मिठाइयों की दुकानें थी, ट्यूब लाइटों के पोलों पर रंगीन कागज लिपटा था, जो रोशनी को परिवर्तित करके चमक पैदा कर रहा था, दो साड़ियों की दुकानें थी और

एक सोवियत किताबों की दुकान तक भी थी। चमड़े के कवर में माय अप्रेन्टिसेस के संस्करण पर गोर्की का चित्र देखते हुए ध्रुबो ने कहा, 'सोवियत लोग हमें उखाड़ फेंकेंगे।'

शामियाने में अन्धेरा था कभी कभी हँसी की आवाज़ें आ रही थीं। वे बैठे- खड़े लोगों के बीच में टहलते हुए एक हँसी मज़ाक़ का खेल देख रहे थे, बाहर की रोशनी पड़ने पर लोगों के तेल चुपड़े सिर चमक रहे थे।अगस्त्य ने भी दर्शकों को देखा और मदना को याद किया।' मदना में इस तरह के उत्सव में पुरुष और महिलाएं अलग-अलग बैठते हैं। 'लेकिन ध्रुबो उसको नहीं सुन रहा था; वह शामियाने के मुँह के सामने लगे चार्ट पर शाम के प्रोग्राम पढ़ रहा था। अगस्त्य मूर्ति की तरफ़ मुड़ गया।

दुर्गा की मूर्ति हमेशा की तरह, मंच के सामने लगभग साठ गज़ की दूरी पर लगाई हुई थी। हार की शक्ल बनाए खून बहता महिषासुर राक्षस उसके पैरों पर पड़ा था। पीले चेहरे और फैली आँखोंवाली माँ दुर्गा धूप और रेशम से घिरी हुई थी। दो छोटे और कठोर दिखने वाले ड्रमर कोने में बैठे सिगरेट पी रहे थे।

साल-दर-साल वह अपना अक्टूबर का सूजा हुआ चेहरा देखता आ रहा है और अनायास ही भक्तों के द्वारा और अल-सुबह रेडियो पर वह माँ का गुणगान सुनाई दे रहा है, 'माँ मुझे शक्ति दो, मुझे जीत दो, मुझे प्रसिद्धि दो, मेरी बुराइयों की अनदेखी करो।' उसने माँ दुर्गा का चेहरा देखा, खून से भरे होंठ और सिर के मिट्टी के सुनहरे ताज के नीचे उसकी तीसरी आँख देखी। माता के हज़ारों चेहरे देखे, लेकिन किसी भी चेहरे ने उसके मन में विश्वास की आस्था नहीं जगाई। उसके पिताजी कहा करते हैं, हमें किसी-न-किसी में आस्था रखनी चाहिए, लेकिन उसके लिए तो आस्था का मतलब है सिर्फ़ उत्सव, त्यौहार आँखों को चुँधिया देने वाले सिल्क में लिपटी एक औरत, जो रात को आकाश में गुब्बारे छोड़ती है, और जब वह अपनी मौसियों के साथ माँ दुर्गा के सामने अपनी हथेलियों को जोड़ कर भक्ति का परिचयात्मक संकेत देते हुए खड़ा होता है तब लगता है गाँजे की धूल कलकत्ते की शाम की वजह से आये पसीने में घुल-मिल गई हो। 'मेरी सर्वव्यापक माँ मैं तुम्हें शीश नवाता हूँ, तुम प्रसिद्धी में, नींद में, शर्म में सब कुछ में

व्याप्त हो'- कुछ भक्त लोग चमत्कार में अवश्य विश्वास करते होंगे, लेकिन उनसे कोई भी शान्ति के लिए इसरार नहीं करता होगा, वह माँ की प्रतिशोध से चमकती आंखों को देखकर आधे खुले होठों से मुस्कराया। “माँ दुर्गे, आपका मेरी प्रसन्नता के बारे में क्या ख़याल है, मुझे आनंद दो कृपया।’ 'तुम बहुत नशे में लग रहे हो,’ ध्रुबो फट पड़ा। जब वह स्वांगिया लोगों की तरफ़ मुँह कर के हँसा तब एक "अच्छी खबर" आई। ‘वे दस बजे बंगाली फ़िल्म अजांत्रिक दिखाएँगे, लेकिन दूसरे, दो बंगाली पॉटब्वॉयलर्स देखना चाहते हैं। चलो, बाहर चलें और चाय पीएं।' वे चल पड़े, अगस्त्य ने जो कुछ किया था उस पर आश्चर्यचकित था - वह शंकर के इस संसार के बारे में मतों पर कम विश्वास करता था।

वे सड़क किनारे के एक ढाबे पर, दो एल्युमिनियम की कुर्सियों पर बैठ गए। एक नटखट लड़का उनके हाथों में आधे भरे मीठी चाय के ग्लास थमा गया। अगस्त्य थकावट महसूस कर रहा था। ध्रुबो चहचहाया, 'मैंने अभी तक अजांत्रिक नहीं देखी है, क्या तुमने देखी है?' 'मेरी पहली ऋत्विक घटक होगी। बेशक जब तक फ्रेंच ने इसे अच्छा नहीं कहा तब तक यह भयानक था, अब यह एक मास्टर पीस है ..साला, तू मेरी बात क्यों नहीं सुन रहा?'

वह बहुत नशे में था। फिर ध्रुबो भी चुप हो गया। वे अपने आसपास के दृश्यों में खो गए, अगस्त्य को खुद पर आश्चर्य हो रहा था। उनसे छह फ़ीट की दूरी जमघट से दुखी होकर कारें शोर कर रही थी, खुश भीड़ की बुदबुदाहट हो रही थी। गुब्बारे बेचनेवालों की दुकान से गैस की बदबू आ रही थी, बहुत बड़ी सी कढ़ाई में आलू-टिक्के तले जा रहे थे। नटखट लड़के एक मोटे आदमी द्वारा अपने कानों के बालों में कंघी करके समय नष्ट करने पर चिल्ला रहे थे, एक किशोर लड़की अपनी चमकदार साड़ी और पुते हुए चेहरे पर इठलाते हुए एक बूढ़े दम्पति को सड़क पार करवा रही थी, साथ की मेज पर बैठे एक सुंदर व्यक्ति पर पास की हरी लाइट की रोशनी पड़ रही थी।

ध्रुबो बिना वजह अपने हाथों को गोलाकार में घुमा रहा था, अचानक से उसने कहा, 'अमेरिका में मैं इस तरह के दृश्यों को मिस करता था।'लेकिन अगस्त्य सुन नहीं रहा था

और इधर-उधर देख रहा था। फिर शामियाने में तालियाँ बजीं, और रोशनी हुई। आमतौर पर शो खत्म होने के बाद होने वाली सरसराहट और बड़बड़ाहट हुई, फिर पिए सिस्टम पर बंगाली में आवाज आई, 'हम अब दस बजे ऋत्विक घटक की अजांत्रिक दिखाने जा रहे है, लेकिन हमारे बहुत से दोस्त आज रात को निर्धारित इसके बाद की दो फ़िल्में दिखाने के लिए कह रहे हैं, इसलिए अजांत्रिक सुबह चार बजे दिखाई जाएगी...।' यह सुनते ही शामियाने के अंदर से उनकी पसंद स्वीकारने पर खुशी का शोर आने लगा, बाहर कुछ लोग तालियाँ बजा रहे थे। उद्घोषक ने आवाज लगाई, 'हम सब लोगों तक इस संशोधित कार्यक्रम को पहुँचाने के लिए, पहली फ़िल्म साढ़े दस बजे शुरू करेंगे।'

भीड़ बाहर आ गई, शोर-शराबा बढ़ गया, कहीं से एक बच्चे के चिल्लाने की आवाज़ आई 'ध्रुबो ने हँसते हुए कहा,'मास्टर के लिए यह कुछ ज़्यादा ही है।'

'तुम चार बजे तक यहाँ रहना चाहते हो?'

ध्रुबो ने कहा, 'नहीं, चलो यहाँ पर कुछ देर बैठें, यह शोर शराबा अच्छा लग रहा है। चलो, एक चाय और पी लें, फिर अपन चलेंगे।'

सुबह के एक बज रहे थे वह घर की छत पर था, ध्रुबो एक घंटा पहले निकल चुका था। युक्लिप्टस के झुरमुटों में से वह पूजा का मैदान देख सकता था। भीड़ छट चुकी थी। वह फ़िल्म के डायलागों को सुनने की कोशिश कर रहा था। तारे छूती पेड़ों की टहनियाँ शांत थीं। एक दिन बीत गया था। जाने के साढ़े सात दिन बचे थे। वह सोना नहीं चाहता था छह घंटे बर्बाद होंगे। शायद मदना में बारिश हो रही होगी, रात की सुहावनी बरसात। उसका कमरा शांत होगा, उसकी मेज़ पर पड़ी कैसेट धूल पकड़ रही होंगी। वह रेनु के ख़त को याद कर रहा था, उसे दुखी होने की जरूरत नहीं है, इस दुनिया के लोग बिना किसी विवेक के इतने आराम से चल चुके हैं कि उन्हें ज्ञान नहीं कि कितना कुछ बिगड़ चुका है। लोग भाग्य की तलाश में, बेपरवाह समुन्द्र की तरह अंतहीन चले हैं, दूसरे देशों में, दूर-दराज के छोरों पर, वे नहीं समझते कि स्वर्ग तो उनके दिमाग़ में ही है। अगस्त्य

ने धीरे से कहा, मैंने इस सब के लिए जन्म नहीं लिया। उसने कहा था कि वह तो बस खुशी चाहता है। अब वह अकेले सितारों के नीचे बिना किसी शर्मिंदगी के खुद को स्वीकार कर सकता है। उसके पिता और ध्रुबो ने भविष्यवाणी की थी कि मदना का अनुभव शिक्षाप्रद सिद्ध होगा, लेकिन उसके दिमाग़ ने तो बस बेचैनी की नपुंसकता ही सीखी है। उस पर तो विचारों की भयावहता शुरू हो गई, उसके दिमाग में बिना किसी कार्यवाही के अनियंत्रित रूप से विचार ऐसे दौड़ने लगे मानों किसी ठंडे सुरंग में चूहे दौड़ रहे हों। और मदना की याद आते ही उसकी यहाँ की दुनिया को भी दूषित कर दिया था, पूजा में भीड़ ने उसे मदना क्लब की याद दिलाई, दुर्गा ने जगदम्बा की याद दिला दी। सिर में एक से ज़्यादा दुनिया का समा जाना बहुत ही असहनीय है।

सुबह के साढ़े तीन बजे हैं, सड़कों पर हँसी सुनाई दे रही है, लोग दो पोटबायलर्स मुफ्त में देख कर खुश होकर घर जा रहे थे।

माणिक पतली और तेज़ आवाज में हँसा, उसके माथे पर पसीना झलक रहा था। नौकर चाय लेकर आया। अगस्त्य ने कहा, 'बाबा ने लिखा था कि आप उन्हें कलकत्ता में मिले थे। 'उसके मुँह का स्वाद बिगड़ा हुआ था, कफ़ और गोबर की सी अनुभूति हो रही थी फिर चाय आ गई। 'हाँ, हाँ,' माणिक ने कहा मैं उनसे मिला था वे पहले जैसे ही अच्छे थे। वे पुराने दोस्तों को कभी नहीं भूलते। 'तुम्हारी पोती क्या करती है काकू? मैं उससे कभी नहीं मिला। असल में मैं आपसे भी दस साल पहले मिला था।'

'हां, हां,' उसने असमंजस में अपना सिर झटका, कभी वह चाय पर लपक रहा था तो कभी अगस्त्य की तरफ़ मुड़ रहा था। 'बेशक मेरी पोती तो तब बिलकुल बच्ची ही थी।'

अगस्त्य अनजान बनते हुए बोला, 'मैं भी वैसा ही था, सिवाय इसके कि जब हम यह जानने के लिए कंडोम खोलते थे कि जवान लंड कितना बड़ा होता है तो कंडोम को देखकर चिंतित हो जाता था।'

अपने चश्मेवाले सिर के नीचे पीले दाँत दिखाते हुए माणिक ने फिर से कहा, 'हां, हां।' उसने सोचा कि अगस्त्य उसकी हाँ हाँ पर ही फ़िदा हो जाएगा।

मेरी पोती अब बीस साल की है, कलकत्ता में अंग्रेजी में एम.ए कर रही है। यह बहुत बढ़िया विषय है, खासकर कीट्स और टेनिसन लड़कियों के लिए बहुत अच्छे हैं। 'वह - 'अपना धड़ अख़बार के पीछे छिपाते हुए एक गंदी सी मुस्कराहट लिए पलटुकाकु ने कहा,' आपका मतलब है इसका शादी के बाजार में एक ख़ास लाभ है। "फिर तो वैवाहिक कॉलममें आपके विज्ञापन में लिखा होगा, “कॉन्वेंट में पढ़ी, अंग्रेजी में एम.ए", और फिर जब तुम ड्राइंग-रूम में उसे उसके होने वाले पति को दिखाओगे, तब वह वैधानिक टैगोर का गाना गाने के बाद,"लेडी ऑफ़ शैलोट" गाएगी। और यदि उसकी शादी आईएएस से हो जाती है तो वह सामान्य आईएएस ऑफिसर की पत्नी से अव्वल साबित होगी, और जब किसी दूर-दराज के सब-डिवीजन के "खास नागरिक "उन्हें बुलाएँगे और उसका आईएएस पति उनसे अपेक्षित चालीस मिनट माँगेगा तब, वह उनसे लोचिनवार के बारे में बात कर सकती है। उस दिन अख़बार उसी का चेहरा कवर करेंगे। यह उसका मनचाही आशाओं का दिन था।

'असल में मैं अभी शादी नहीं करना चाहता। साथ ही, मैं अपनी इस नौकरी से खुश भी नहीं हूँ, मेरी नौकरी की स्थिति अभी अनिश्चित सी है काकु, ऐसी स्थिति में आपकी रुचि भी मुझमें नहीं होगी। 'वह उस बूढ़े आदमी के विरोध की आशा कर रहा था परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ। 'हम शायद इस बारे में फिर कभी बात करेंगे। 'सड़क दुर्घटना में मौत की तरह, जैसा कि कुछ लोगों के साथ हुआ भी है– अब जैसी मानसिक स्थिति उसकी थी, ऐसी अवस्था में शादी की बात करना तो दूर की बात थी। एक अनजान लड़की के साथ मदना के कमरे को साझा करना, खासकर एक अंग्रेजी की एम.ए के सामने शराब पीना और मार्क्स औरेलियस पढ़ना अकल्पनीय था। जब माणिक पलटुकाकु के साथ बातें कर रहे थे और उसकी एकांतप्रियता और कम बोलने के बारे में कुछ बता रहे थे, और उसके बारे में की बेतुकी बातें बता रहे थे, बता रहे थे जैसे कि उसका नाम अगस्त्य भी तो अटपटा ही है, और क्या वह अपनी पत्नी के सामने कसरत कर सकेगा, जब वह उसके

सामने पुश-अप्स करेगा तब वह कहेगी तुम्हारे कसरत करने के बाद भी तुम्हारा शरीर इतना बेढ़ब है। और मान लो उसने इसका पैसा चुरा लिया? और सेक्स के बारे में सभी बक़ायदा विषयों पर बातें करना क्या वह पसंद करेगी-और क्या वह उसके इस्तेमाल किये हुए अंडरवियर इस्तेमाल करना पसंद करेगी?

वह जानता था कि, बाक़ायदा वह शादी करेगा तो सही, लेकिन उन्माद के वशीभूत होकर नहीं, बल्कि परम्परागत ढंग से करेगा, वही शादी ज़्यादा सुरक्षित रहेगी। और फिर शादीशुदा भविष्य के बारे में सोचने लगा कि साल के कुछ महीने वे किसी न किसी मामले में एक दूसरे से उलझे रहेंगे, मसलन मैं उसे दंतमंजन की ट्यूब से अजीब तरीके से पेस्ट निकालने के बारे में टोकूँगा, तो वह मुझे पीने के बाद ग्लास ना धोने को लेकर नाराज़ होगी, और फिर वे शांत होकर सहज ही नाराज़ हो जाएंगे, फिर शाम को हम अपने-अपने कुकून में बसे, टीवी निहारते रहेंगे लेकिन शायद इस तरह से साथी रहित होना मूर्खता होगा। और इस तरह कभी गुप्त रहनेवाला उसका जीवन एक मरे हुए मन को लेकर जेल में कैद हो जाएगा, फिर इसी चिंतित भावना के रहते, एक पल में एक झटके के साथ किसी गंध या किसी अनियंत्रित विचार के आने से (ट्रेन के किसी दृश्य को या टीवी की एड को याद कर) उसे मदना के अपने बेचैन संसार की याद आ जाएगी, और उसे याद आ जाएगा कि वह एक प्रचीन हिन्दी कविता की गहराई में जाने से किस तरह हिल गया था।

टॉनिक के ऑफिस जाते समय उसने माणिक काकु को एक माकूल जगह पर छोड़ दिया। साथ ही, ऊपरी मन से मदना से उनको लिखने का वादा भी किया। अगस्त्य ने उन्हें सड़क पार करते हुए देखा उनकी, धोती उनके छड़ी- जैसे पैरों के चारों और उड़ रही थी।

टॉनिक का ऑफिस उनके घर से लगभग पंद्रह किलोमीटर की दूरी पर था। एक लाल बत्ती पर, एक गाढ़े लाल रंग की फिएट को देखते हुए वह सोच रहा था कि वह रोज़ाना इतनी दूरी नहीं तय करेगा। वह हैरान था कि वह टॉनिक से मिलने क्यों जा रहा था,

जबकि असल में वह उसके साथ काम नहीं करना चाहता था। उस दिन गोरपाक में पिकनिक के दिन उसने प्रभाव जमाने के लिए अपने पिता को लिखा था, असल में वह अपने अकेलेपन पर विफरते हुए उन्हें लिख रहा था, लेकिन अब उसे लग रहा था कि यह तो दुल्हन बदलने जैसा है। उसके पीछे से एक ऑफिस वाले लोगों की बस निकली, जिसके दरवाजे पर लोग ऐसे लटके हुए थे जैसे कि एक कुत्ते के मुँह से जीभ लटक रही हो। वह सोच रहा था, मैं भी इनमें से एक हो सकता हूँ, मुझे निश्चित रूप से इतना पैसा नहीं मिलेगा जितना यह (वह अपने चाचा की पुरानी एम्बेस्डर कार चला रहा था) जंगली राक्षस पी जाती है; और फिर हर सुबह नौ बजे, वह हाथ में टिफिन उठाए बस पकड़ने के लिए दौड़ेगा, और बस स्टॉप पर इंजन के तेल और बस की बदबू सूँघते हुए बस के इन्तजार में खड़ा रहेगा, और उस कैप्सूल की बदबू को याद करेगा, जो उसने बीमार होने पर मदना में खाये थे। और फिर उसके विचार यहाँ आकर सीमित हो गए कि मालूम नहीं वह सबसे सुविधाजनक बस पकड़ पायेगा और मालूम नहीं कि उसे मनमानी सीट मिल पाएगी या नहीं; और बस की समय सारिणी एक कागज़ के टुकड़े पर लिखी उसकी मेज की दराज में पड़ी होगी और उसके दिमाग पर भी अंकित रहेगी; समय सारिणी में किसी तरह का परिवर्तन होना बहुत उथल-पुथल मचा देगा।

अपनी उम्र के और अपने समय के कई और लोगों की तरह उसे नौकरी ढूँढने की जरूरत नहीं पड़ी। उनकी तरह वह पैसों के लिए कभी दुविधा में नहीं पड़ा। लेकिन उसे उन बसों में कुत्ते की जीभ की तरह लटकनेवाले लोगों की तकलीफ़ों पर भी जलन होने लगी, बाद में उसे अपनी जलन पर घिन आई। नीरा ने उसके इन विचारों पर तुरंत कठोर मार्क्सवादी प्रहार किया होता कि तुम्हारी यह जलन तुम्हारी नीच मनस्थिति के कारण है। अब उसके दिमाग़ में कोई भी विचार नहीं था, वह बस की पिछली सीट को देख रहा था, और उसे देख उसे कोई भ्रम नहीं हो रहा था। वह अपने भूत को लेकर ही कोई- न- कोई खाका बनाता रहता था, लेकिन आगे की कोई योजना उसके दिमाग में नहीं होती थी। उदाहरण के लिए, ध्रुबो अपने येल के अनुभवों में उलझा रहता था और वह अपने मदना के अनुभवों में मशगूल रहता था, लेकिन इस तरह की उलझन में पड़ना वाकई एक गलत आदत थी जिसका कोई सही फल नहीं मिलना था, यह तो शतरंज के खेल की तरह

दिमाग़ की एक कसरत भर ही थी या फिर उसके पिताजी की तरह धैर्य का एक खेल। उसके पिताजी की धैर्य रखने की आदत काफ़ी विवेकपूर्ण थी– ऐसा उसकी माँ ने उन्हें सिखाया था। लेकिन उसके पिता इस खेल से बचने की काफ़ी कोशिश भी करते रहे थे 'धैर्य हमें कुछ खास सिखाता है ओगु, ज़िन्दगी की मंजिल धैर्य के बिना हासिल नहीं हो सकती। 'अगस्त्य ने सोचा, यह सब बकवास है, लेकिन ऐसा उसने कहा नहीं। वह अचानक ही अपने पिता की तरह नहीं बनना चाहता था, वह अपने ख़ाली समय में राजभवन के विशाल कमरे में बैठकर कथा और आख्यान पढ़ेगा।

उसने कार पार्क की और चल दिया। उसने मैकमिलन और ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस को पार किया, और बहुत ही नीरस टाईटल लिखी बड़ी-बड़ी शो- खिड़कियों के पास से गुजरा।

टॉनिक की प्रकाशन कम्पनी बग़ल की गली में एक गुलाबी बिल्डिंग की दूसरी मंजिल पर थी। टॉनिक अपने क्यूबिकल में बैठा अपने काम को छोड़कर पाइप भर रहा था, वह एक इकहरा और ढीला-ढाला आदमी था उसकी, डब्बल गालें और मोटी आँखे थी। 'ओह, तुम अपनी नौकरी के बारे में गंभीर नहीं हो, हो कि नहीं? 'वह हमेशा बेबाक बोलता था, और कुछ ही सैकिंड में सामने वाले अनजान को अपने रुतबे से प्रभावित कर देता था।

'नहीं, सचमुच नहीं। 'इस जवाब पर टॉनिक सहम-सा गया, शायद इस जवाब से उसके बेबाक बोलने पर फुलस्टॉप लग गया था। लेकिन अगस्त्य उसे कुछ सोचने का समय देना चाहता था, और उसने कहा, 'बाबा बता रहे थे कि आप उनको कह रहे थे कि मैं हमेशा बड़े शहरों में रहता रहा हूँ और छोटे शहरों के बारे मैं कुछ नहीं जानता।

'आह, टॉनिक ने अपनी पाइप इस तरह सुलगाई जैसे वह किसी रोमाँटिक मर्दाना आफ्टरशेव या सिगरेट लाइटर की एड कर रहा हो। शायद वह अचानक अपने कपड़े बदल ले, और एकदम खिलाडियों की सी पोशाक पहन कर अपनी लाल कार में बैठ कर बंबई की महिलाओं के साथ गोल्फ खेलने निकल जाए। और फिर सड़क पर एक ट्रक इसकी

लाल कार के चूतड़ रगड़ दे और ट्रक ड्राइवर टॉनिक को इस तरह पाइप सुलगाने के लिए पिटे। 'ओह, भारत गांवों में बसता है, सभी झड़पों की तरह उनकी एक भयानक झड़प होती है। विट्गेंस्टाइन, शायद उसी ने, किसने कहा है कि, भारत गाँवों में बसता है ?'

'नहीं, गांधी ने।'

उसी समय एक जूनियर अंदर आया। उसके मुँह खोलने से पहले ही टॉनिक ने कहा, 'ओह हाँ मुझे याद है, मैं कर दूँगा यह बहुत आसान है, इसे करने में मुझे कुछ समय नहीं लगेगा, मैं बहुत ही व्यस्त था, यह मेरे दिमाग से फिसल जाता, लेकिन मुझे याद है मैं इसे कर दूँगा। जूनियर वहाँ से चला गया। उसके जाने के बाद टॉनिक ने खूब धुआँ छोड़ा।

'ओह, ओगु, तुम समझते हो, तुम्हारे जैसे लोग नहीं जानते कि असल में भारत कैसा है। खास कर तुम तो बिलकुल ही नहीं जानते- दक्षिण दिल्ली बहुत अशिष्ट जगह है, और वहाँ पर तुम्हारे साथी हैं सिर्फ पलटुकाकु, उनकी वजह से तुम वास्तविक चीज़ों का एक वाहियात पैमाने समझने को बाध्य हो– बेहद ग़रीबी और भयावह अज्ञानता। लेकिन, फिर, अपनी शिक्षा प्रणाली को देखो। 'ओह, वे गप्पें मारना कितना पसंद करते हैं। वह बगल की मेज से एक पाण्डुलिपि लेने पीछे की तरफ़ झुका। मेरठ यूनिवर्सिटी के डाक्टर प्रेम कृष्ण ने भारत के प्रिय इंग्लिशमैन ई एम। फोस्टर पर एक किताब लिखी है– हममें से बहुत से लोग आभारी हैं कि उन्होंने भारत के बारे में एक उपन्यास लिखा है। डाक्टर प्रेम कृष्ण ने मेरठ यूनिवर्सिटी से जॉन ऑस्टेन पर पीएचडी की थी। क्या तुम कभी मेरठ गए हो? बेकार-सी जगह है, लेकिन हाँ पूरी भारतीयता झलकती है उस शहर में। जॉन ऑस्टेन वहाँ पर क्या कर रहे हैं?

'या फिर उल्हासनगर में मैकबेथ, और आज़मगढ़ में वर्ड्सवर्थ - कुछ भी नहीं, चलो चलें।'

'हम प्रेम कृष्ण की किताब को प्रकाशित कर रहे हैं क्योंकि इस किताब से हमें बहुत पैसा मिलेगा। उसकी पूरी किताब प्रश्न और उत्तर के रूप में है। छात्र उसे हाथों-हाथ लेंगे। टॉनिक ने अपनी पाइप फिर से सुलगाई। अगस्त्य फिर से सोच रहा था कि ट्रक ड्राइवर उसे कैसे पीटेगा। 'मेरठ में कुछ जाट जॉन ऑस्टेन क्यों पढ़ते हैं? मेरठ जैसी जगह पर अंग्रेजी का कोर्स क्यों है? सिर्फ इसलिए कि प्रेम कृष्ण-जैसे लोग इस बकवास को वहाँ पढ़ा सकें। उसने पाइप हाथ में लिए हुए नाटकीय ढंग से किताब पर मुक्का मारा। 'निश्चित रूप से वे विभाग को किसी और जगह उपयोगी ढंग से चलाने में पैसा बर्बाद कर सकते हैं। 'टॉनिक ने अगस्त्य की मुस्कुराहट को हतोत्साहित करने या यह जानने के लिए कि वह समझा कि नहीं, अपनी मोटी -मोटी आँखें अगस्त्य पर टिका दी। 'यही कारण है कि शिक्षा एक असली चुनौती है। और आने वाले वर्षों में, आप एक नौकरशाह के रूप में इन चीज़ों के बारे में, ऐसी चीज़ें जो बहुत मायने रखती हैं, और आप इनके लिए कुछ करने की स्थिति में होंगे। और फिर भी तुम बेवजह, सिर्फ इस बेहूदा कारण से आईएएस की नौकरी छोड़ना चाहते हो कि तुम्हें मदना में दिल्ली, बॉम्बे की तरह अपने चूतड़ों पर पैंट टाँगे और उसके ऊपर भद्दी तरह कामुक दिखने वाला टी-शर्ट पहने लड़कियाँ नहीं दिखाई पड़ती।'

अगस्त्य को अपने आप पर गुस्सा आ रहा था कि वह ऐसा आदमी दिखता है, जिसे इस तरह की बातें कही जा सकें। टॉनिक ने उससे चाय के लिए पूछा। उसी समय एक दूसरा जूनियर आया और उसने टॉनिक को तत्काल कार्यवाई करने की बात के लिए उकसाया और फिर वह बाहर निकल गया। 'देखो, ओगु, मैं तुम्हें किसी भी समय नौकरी दे सकता हूँ लेकिन तुम इस बारे में फिर से सोचो। तुमने वास्तव में इस बारे में गंभीरता से नहीं सोचा है। मैंने तुम्हारे चेहरे पर यह पढ़ा है। 'अगस्त्य को अपने चेहरे पर गुस्सा आ रहा था। 'ऐसी नौकरी छोड़कर पिछले जीवन के कुछ तुच्छ किस्म के आनंद फिर से उठाने के लिए तुम्हें बहुत भारी कीमत अदा करनी पड़ेगी।'

अगस्त्य चकराये हुए दिमाग को लेकर वहाँ से चला गया। टॉनिक की बातों से वह इतना आहत हुआ जितना किसी ऐसे स्नेही, जिससे वह नफ़रत करता था, उसकी समझवाली बातों से भी नहीं हुआ था।

घर पर दोपहर के खाने पर अगस्त्य ने अपने चाचा को बताया कि मुमकिन है कि वह टॉनिक के यहाँ नौकरी ना करूं।पलटु काकु ने कहा, 'कोई भी आदमी जो थोड़ी अक्ल रखता है वह टॉनिक को उसके ऑफिस में देख कर यही फैसला लेगा। वह गर्म हवा छोड़ने वाले गुब्बारे की तरह काम करता है।'

खाने के बाद उसने एक झपकी ली, फिर फोन की घंटी बजी। अगस्त्य ने फोन उठाया, 'हैलो।'

'हैलो, क्या यह दिल्ली है, मिस्टर अगस्त्य सेन? ...क्या आप होल्ड करेंगे कृपया। ...गवर्नर साहब आपसे बात करना चाहते हैं। ...।'

कुछ अंतर्राष्ट्रीय क्लिक और छोटी बातें, फिर हैलो, क्या यह ओगु है? अगस्त्य उस आवाज़ पर नरम हो गया, दूर की आवाज़ थी लेकिन थी कठोर।

'हाय, तुम्हारा धैर्य कैसा है? मैं आज सुबह टॉनिक से मिला था। वह बड़ा भाषण दे रहा था, और फिर उसने मुझे चलता कर दिया।'

'चलो मैं देखता हूँ। ...क्या होगा?'

'मैं कुछ भी नहीं जानता, बाबा, मैं मदना वापस जाऊंगा और वहाँ घुलने-मिलने की कोशिश करूंगा।' फिर एक ठहराव।

'हाँ, ओगु, यही करो। कोई भी निर्णय लेने से पहले अपनी ट्रेनिंग को याद करो। इन सभी महीनों में तुम ऑफिस-दर-ऑफिस घूमे हो। अब तुम ब्लॉक डेवलपमेंट ऑफिसर बनने जा रहे हो, यह तुम्हें पहले से दिलचस्प मालूम होगा।'

'हाँ, मैं समझ रहा हूँ मैं इसे कर पाऊँगा।' उसे लग रहा था उसके अंडकोष में खालीपन आ गया, और उसे लग रहा था जैसे उसके अंदर खून का बहाव बंद हो गया हो।

'और ओगु ...' वह अपने पिताजी को अच्छी तरह देख सकता था, छोटे से सिर पर सफ़ेद छोटे बाल, छोटे सोने के फ्रेमवाला चश्मा, क्रीम सिल्क के धोती कुर्ता, सुबह पाँच बजे उठकर वह शौच से निवृत हो जाते हैं, उनके चेहरे पर मार्क्स औरेलुस और रीडर्स डाइजेस्ट के अनुभव साफ़ झलकते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी कुछ मदद करूँ, लेकिन तुम पलटु और उसकी बकवास से पहले ही आहत हो चुके हो, लेकिन उसकी सब बातों को नजरअंदाज़ कर और मस्त रहो, और अपने बारे में सोचो और सही फ़ैसले लो। ... और थोड़ी देर बाद,' पलटु को देखेंगे, मैं कुछ चीज़ों के बारे उसके साथ लड़ना चाहता हूँ।'

सुबह के छह बजे हैं और ध्रुबो और वे कालेज के एक दोस्त मदन से मिलने जा रहे हैं, रास्ते में ध्रुबो दक्षिण दिल्ली के ट्रैफिक को कोस रहा था, 'तुम मानोगे नहीं दक्षिण दिल्ली की कालोनियों में दस किलोमीटर तक हमेशा ऐसा ही परेशान करनेवाला ट्रैफिक रहता है।'

मदन के पिता, जो अभी-अभी सिंगापुर की रहस्यमय व्यावसायिक यात्रा से लौटे थे, इसी बारे में बता रहे थे। 'सिंगापुर इतना व्यवस्थित है, कि तुम्हें क्या बताऊँ। ट्रैफ़िक इतना व्यवस्थित है, और सड़क पर न कोई थूकता है न कोई पेशाब करता है, और किसी रेस्तरां में यह नहीं लिखा होता कि गिलास में हाथ धोना मना है– भारतीय वहाँ नहीं रह सकते। और यह जगह, हुह, जब भी मैं किसी गाड़ी में बैठता हूँ तो मेरा रक्तचाप बढ़ जाता है।' वह खुशहाल था लेकिन बेहद बदसूरत आदमी था।

मदन अलग से दिखता था। उसने अपने बाल कटवा रखे थे और वह ज़्यादा फेडेड जींस नहीं पहनता। 'साली इस नौकरी की वजह से मुझे हर रोज साफ रहना पड़ता है।' उसने अभी-अभी चार्टर्ड अकाउंटेंट की एक प्रतिष्ठित फर्म ज्वाइन की है। 'आओ मेरे, कमरे में शिफ्ट हो जाओ।' जो कि गांजा पीने के लिए कॉलेज का विकल्प था।

बाद में, बड़ा ज़ोर देकर मदन ने कहा, नौकरी करना, काम करना बड़ा उबाऊ काम है। तुम्हारा सारा दिन इसी में चला जाता है। मैं समझता हूँ, बैंक की नौकरी सीए से भी बेकार है। 'उसने ध्रुबो की तरफ़ देखा और हँस दिया। 'साले, ओडिपस ध्रुबो, सारा दिन डेस्क के पीछे बैठकर दूसरों के पैसे गिनना कैसा लगता है? मेरी बहन ऑक्सफ़ोर्ड जा रही है। उसे इस साल रोडस छात्रवृत्ति मिली है। उसने कहीं से हर बात पर 'माफ़ करना', और 'बहुत बहुत धन्यवाद' का उच्चारण करना सीख लिया है। साली। अब वह उन लोगों को ढूँढ़ती फिर रही है जो बलेशित गए हैं– उसने उसे इंग्लैंड कहना बंद कर दिया है। मुझे उसके लिए बहुत शर्म आती है। मैंने उसे कहा था कि, ब्रिटिश उच्चायोग में फ़ोन करके मालूम करले कि ऑक्सफ़ोर्ड में लोग कहाँ पर हगते हैं, बर्तनों में या, महिलाओं के हैंडबैग में, क्योंकि संसार में सब जगह शौच पर जाने की प्रथा अलग-अलग है। मूर्ख लड़की, मेरी शिकायत करने मेरी माँ के पास पहुँच गई, मेरी माँ ने मेरा ही पक्ष लिया। क्योंकि मेरी माँ ने उसे दो बड़े जार अचार के वहाँ पर ले जाने के लिए रोका था और उसे फटकार लगाई थी। मदन नीचे लेट गया। 'हर रोज़ ऑफिस में मुझे ऐसा लगता है जैसे कि मेरे दिमाग़ का किसी ने बलात्कार कर दिया हो, जैसे कि किसी ने अपना लंड मेरे कान में घुसेड़ दिया हो और फिर उसे घुमाकर मेरे दिमाग़ में अपनी धात में घोल रहा हो। क्या तुम्हे कभी ऐसा महसूस हुआ है?'

'क्या तुम्हें, कॉलेज का भाटिया याद है? वह छत्रावास में हमारी मंज़िल पर ही रहता था, जो इस तरह की टी-शर्ट्स पहनता था जिनके ऊपर लिखा होता था, "मैं शहर में सबसे अच्छा प्रेमी हूँ " और वह हमेशा अंग्रेजी लहजे में बातें किया करता था? वह मदना में, वन विभाग की नौकरी में है।'

'उसके साथ ठीक हुआ। मुझे लगता है कम- से- कम वह जैसा हरामी वह दिखता था वैसा ही वह महसूस कर रहा होगा। 'अच्छा ठीक है, मदना कैसा है, तुमलोग वहाँ सेक्स के लिए क्या करते हो?'

'तुम नहीं जानते कि बीडीओ क्या है, लेकिन मैं कलेक्टर के साथ कमरा साझा कर रहा हूँ। वह क्राफट-एबिंग के मामले की तरह बहुत कामुक है।'

इस तरह वे तीनों व्यभिचार की बातें कर रहे थे। लग रहा था उनके मुँह अपने आप काम कर रहे थे, उनके दिमाग से स्वतंत्र होकर ही अपना सिलेबस बना रहे थे। उनमें से कोई भी बाक़ी के दो की तरफ़ ध्यान नहीं दे रहा था। हरेक बात करना चाहता था लेकिन उत्साह से भर कर नहीं। ऐसा लग रहा था कि कुछ समय बीत चुका था, और जब एक बात कर रहा था तो उस पर कम टैक्स लग रहा था क्योंकि न बोलने का मतलब था दूसरे की सुनो या कुछ सोचो। और विशेष रूप से अगस्त्य का मन इन बातों में नहीं था। वह अपने दिल का संशय किसी दूसरे को नहीं बताना चाहता था। उनकी किसी एक चीज़ में दिलचस्पी नहीं थी। और सुबह टॉनिक की तरह उनके कुछ शब्द उसकी प्रतिष्ठा गिरा सकते थे। और उसे अहसास था कि जो कुछ वह सोच रहा था वह घिसा-पिटा था, कोई अनूठा नहीं था– उदाहरण के लिए, भाटिया मदना से जा चुका था, और मदन को अपनी नौकरी पसंद नहीं थी, वह समझ रहा था कि वह अपना समय बर्बाद कर रहा था, लेकिन उसके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। पवित्रता से तो कोई भी भावना उसकी अपनी नहीं थी, और उसे आधी आशंका थी कि इसी से वशीभूत हो वह कमज़ोर पड़ता जा रहा था। शायद उसका मन अंततः यह महसूस करेगा कि उसकी बेचैनी केवल उसकी अपरिपक्वता का सूचक थी, जैसे कि वीर्य का पहला स्खलन बड़े होने का संकेत होता है, जो मल की तरह सार्वभौमिक है, और उल्लेखनीय है।

मदन ने कहा, 'कुछ समय से हमारे साथ एक अमेरिकी महिला रह रही है।'उसका नाम क्रिस्टीन ऐसा कुछ है, वह कहती है कि वह क्राइस्ट कहलवाना पसंद करती है। वह मेरे पिता के किसी सायादार कारोबारी संबंध रखनेवाले व्यक्ति की बेटी है। तीस साल के

आसपास है, बेहद सेक्सी है। उसके एक हुन्गु नामके कीनियाई के साथ शारिरिक संबंध हैं। वह यूनिवर्सिटी में प्रबंधन पढ़ता है। लगता है उसका लंड बहुत लंबा है। मुझे लगता है, वह मुझसे नफरत करता है, लेकिन यही नहीं, वह सभी भारतीयों से भी नफरत करता है। तुम्हारी क्राफ्ट-एबिंग ने मुझे उनकी याद दिलाई। वह अंधभक्त है। वह बहुत घिनौना भी है। वह भारत की वास्तविकता जानने में ही लगी रहती है, उसे लगता है दुनिया के लोग एक दूसरे के बारे में क्यों नहीं जानना चाहते, जैसे कि यह काम बहुत अहम और ज़रूरी है। मेरा कसूर यह है कि जिस दिन वह आई थी तब मैंने ही उसे इस विषय से रूबरू करवाया था। वह शिकागो से आई है। मैं कैसे जान सकता हूँ- कि वहाँ कोई प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन कर रहा है? उसने बताया कि वहाँ पर प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन किया जाता है। मैं तो अल कैपोन से ही शिकागो को जानता हूँ। इससे वह चुप हो गई। मैं कितना अज्ञानी था, और कैसे लोग एक दूसरे को जानने के लिए आपस में मिलें, और किस तरह उनमें अंतरंगता बढ़े –उसके व्यवहार से मैं समझ रहा था कि उसका मतलब संभोग से था। वह साली भारत के बारे में बहुत कुछ जानती है। वह कल या परसों रिसर्च के लिए लोथल नाम की जगह को निकलेगी, जब मैंने उससे पूछा कि यह जगह कहाँ है तो वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी।

फिर वह भारतीयों को अपने खुद के इतिहास के बारे में अंधा कहती चली गई, इतना ही नहीं, वह उन्हें अपने से बाहर के संसार के बारे में अनभिज्ञ बताने लगी। वह हमेशा यह बताती है कि हम किताबों के ज़रिये दूसरों की संस्कृतियों के बारे में जानने की कोशिश करते हैं लेकिन किताबों में सब उल्टा-सीधा लिखा होता है और लोग अन्य संस्कृतियों के बारे में सिर्फ़ अनर्गल बातें पढ़ते हैं। मैं समझता हूँ वह सीआईए के लिए काम कर रही है। वह मुझे अल कैपोने के नाम के ताने देकर कहती है, "देखो, देखो, तुम तो अमेरिका के बारे में बस इतना ही जानते हो।" 'तब मैंने कहा, लिओनल रिची। अब वह मुझसे ज़्यादा बातें नहीं करती।'

मदन रसोईघर में अपने नौकर से कुछ और गाँजा खरीदने गया, बाद में वे ड्राइव के लिए निकल गए। ध्रुबो, राजेंद्र प्लेस के पार्किंग में रुकने तक पूरे रास्ते ट्रैफ़िक को

कोसता रहा। वह जगह दफ्तरों के अंधेरे ब्लाकों द्वारा संरक्षित थी, उन्होंने सुना था कि यहाँ गाड़ियों के भोंपू तीस मीटर की दूरी से एक दूसरे पर चिल्लाते हैं, ऐसा करके वे अपने आप को सुरक्षित समझते हैं, जैसे कि वे एक द्वीप पर हों। मदन ने एक गली के मर्करी लैम्प की रोशनी में सिगरेट का धुआँ छोड़ा और ध्रुबो ने स्कॉट जोप्लिन को कीथ जेरेट के लिए बदल दिया। बाहरी रूप से यह पिछले छह सालों में लगभग किसी भी दिन हो सकता था।

ध्रुबो ने कहा, ऑफिस वैट वॉरेन केवल अंधेरे के बाद ही अच्छा दिखता है।लगता है पश्चिमी दिल्ली की हर मुठभेड़ ने इसे आगे से आगे बिगाड़ दिया है। 'हर सुबह, 'यह जगह मेरे जैसे लोगों को एक्टिव करती होगी,जो अपने खाली समय में वॉल स्ट्रीट जर्नल और कभी टाईम के पन्ने पलटते हैं– लगता है कुछ बिजनेस इंडिया को और इंडिया टुडे को।'

मदन ने इस लहजे में कहा, जैसे एक शिल्पकार किसी सड़क की रोशनी में जोड़ के आकार की जाँच कर रहा हो, 'तुम्हें हमेशा टाइम और न्यूज़वीक कहना चाहिए नहीं तो न्यूज़वीक को बुरा लगेगा।' 'अगस्त्य, तुम्हे ध्रुबो ने बताया होगा वह कितना फ़ालतू था? उसे लगता है यह बहुत बुरा है। बेवकूफ आदमी, मुझे लगता है मैं भी खुद को फ़ालतू महसूस करूँ। यह पूरी तरह मूर्खता है, ज़ाहिर है, वह तरह-तरह की मूर्खता से परेशान रहता है कि सब कुछ इकट्ठा नहीं हो सकता– येल और तुम्हारी बेकार की दुर्गा पूजा– एक असली बेवकूफ, और इसलिए कि वह अकेला कोई व्यवस्था नहीं कर सकता, वह किसी दूसरे के भरोसे रहना चाहता है। और वह इसकी दोस्त रेनु, वह बहुत बुरी दिखती है लगता है उसके चुंबन में बदबू आती है, और इसने मुझे बताया था कि वह 'बहुत निजी इंसान' है। मैंने सोचा, वह हर किसी के साथ संभोग करने की इच्छुक रहती है, हर कोई ऐसे रिमार्क पर यही सोचेगा, लेकिन वह कोई ख़ास नहीं है। सेक्स तो आवारा कुत्ते की तरह होना चाहिए, खूब सारे कंडोम इस्तेमाल करो – कोई परेशानी नहीं। और ध्रुबो अपने सभी दोस्तों को उसके ख़त ऐसे दिखाता है, जैसे वह कोई लोथल अमेरिकी महिला

हो, जैसे कि अमेरिका दुनिया का रीडर्स डाइजस्ट हो, और जैसे हर कोई हर किसी के लिए अच्छा होता है।'

जेरेट का प्यानो ट्रैफ़िक कोलाहल के बीच भी चलता रहा। एक कांस्टेबल टोपी और दिन में खाकी दिखनेवाला ओवरकोट पहने, हाथ में जाँघों तक का डंडा लिए, सीधे कार की तरफ़ आया। ध्रुबो को अपनी सिगरेट नीचे तक करने का समय नहीं मिला। लेकिन, हैरानी की बात यह थी कि, मदन उसे जानता था, और उसने उस कांस्टेबल के साथ बड़े दिल से और अशिष्टता से, पंजाबी में बातें की। कांस्टेबल ने उनके साथ वह सिगरेट पी और जब मदन ने उसे गांजा भरी एक और सिगरेट दी तब वह वहाँ से चला गया। वापसी में अगस्त्य ने गाड़ी चलाई, जबकि ध्रुबो कीथ जेरेट के साथ संवाद करता रहा और मदन ने सबको सुनाते हुए अपनी मंशा बताई, मुझे लगता है, 'मैं किसी की मिस्ट्रेस बनना चाहता हूँ। ...मेरे पास एक फ़्लैट होगा...,पैसा होगा, एक वीडियो। ...अच्छे अच्छे अंडरवियर होंगे...।’

अगस्त्य के लिए दिन बड़ी तेज़ी से निकल रहे थे। वह लगभग आधा दिन निकल जाने के बाद बिस्तर से उठता था। ब्रंच पर वह मदना के खाने को याद करके इतना खाना खा जाता था जैसे उसे खाना पेट में इकट्ठा करना हो। वह अपने चाचा के साथ शतरंज खेलता या अपने कमरे में संगीत सुनता। वह लगभग हर शाम अपने पिता से फ़ोन पर बातें करता था और उन्हें बताता था कि वह ट्रेनिंग के बाद कलकत्ता जाने के लिए छुट्टियाँ लेगा। वह हर दिन ध्रुबो और मदन से मिलता था। वे ना कहीं जाते थे और ना ही कुछ काम करते थे, वे सिर्फ़ आराम करते थे, और अधिकतर ध्रुबो के घर में रहते थे और बिना एक दूसरे की सुने बोलते जाते थे। वह दिन के बेतुके समय में जॉगिंग करता था। दिन तेज़ी से बीत रहे थे, लेकिन रातें जल्दी नहीं कटती थी। रात में वह अधिकतर जागता रहता था और उसके चाचा के टाइपराइटर पर चलनेवाले हाथों से आनेवाली क्लिकें सुनता रहता था और खिड़की से बाहर बोगनवेलिया के काले आकार देखता था, उनके आकारों में वह हज़ारों चीज़ें देखता था, लेकिन उसे उनमें अपना भविष्य कभी नज़र नहीं आया।

और वह दोबारा से मदना जाने के लिए ट्रेन में सवार था, अनमने मन से सैंकड़ों किलोमीटर तक गाँवों के दृश्य निहार रहा था, चंबल घाटी में चन्द्रमा को सैर करते देख रहा था, रास्ते में विकास की योजनाओं से अछूते पड़े गाँव थे, अच्छे मानसून से फलीभूत हुए हरे-भरे खेत, ब्रिज के नीचे से जाते लोग बिंदुओं सरीखे दिख रहे थे,पानी से लबालब भरी नदियों में कपड़े धोते लोग दिखाई दे रहे थे। लग रहा था, मदना और दिल्ली अवास्तविक अस्तित्व के दो चरम बिंदु थे; महसूस करनेवाली स्पष्ट बात यह थी कि नीचे विशाल जंगली जानवर की सी आवाज करती लय, एक आश्चर्य थी, जो दो असमान दुनियाओं को जोड़ सकती थी।

वह हर तरह के सम्पर्कों से बचने के लिए ऊपरवाली बर्थ पर लेट गया, और चाहे किसी को सुने या न सुने, उसने धीरे से कहा, हे भगवान! बस, अब और कोई यात्रा नहीं, कृपया बिलकुल नहीं। जीवन एक सरल व्यवसाय बन गया है, इधर-उधर डोलना और न चाहते हुए भी नई-नई चीज़ें खोजना। वह चाहता था, कि उसके दिमाग़ में अब कोई भी विचार ना आए, वह एक जगह टिकना चाहता था, कोई भी एक जगह बस, और वह बिना किसी दूसरे के हस्तक्षेप के नितांत अकेला रहना चाहता था। यहाँ तक कि वह मदना में भी रह सकता है बशर्ते कि दिल्ली और कलकत्ता की यादें उसे ना सताएँ, उसे नीरा के साथ लेक गार्डन में घूमते हुए किताबों और सेक्स पर लम्बी बातें करना और उसका हिचकिचाते हुए अपने कौमार्य के बारे में रहस्योद्घाटन करना याद ना आए; और इसके साथ ही उसे सिंगापुर भी ना याद आए, जहाँ सब कुछ व्यवस्थित था, और इलिनोइस भी ना याद आए जहाँ हैम की बहुत- सी क़िस्में मिलती हैं। उसके दिमाग़ में इस तरह की सांसारिक बातें खलबली मचा रही थीं।

उसे बर्थ पर लेटे-लेटे उन असंख्य महिलाओं के चेहरे मोहरे और जाँघें याद आती हैं, जो उसके दिमाग के उस हिस्से ने रिकॉर्ड की थी जो दर्द की परिस्थितियों में चीज़ें रिकॉर्ड करता है, और जिन्हें उसने सिनेमा की टिकट और दवाइयों की दुकानों की क़तारों में

देखा था, चाहे वे अतीत से निकले अमरपक्षियों की क्षणभंगुर झलकियाँ भर ही थी- और फिर उसका वीर्य स्खलित हो जाता है।

उसका व्यवहार, उसके पूरे अतीत कीतरह, तानों के ढेर में गड़बड़ा गया, जिससे वह पछतावे वाला का मुँह बनाए अपने बर्थ पर लेट गया, जैसे कि उसके लकवाग्रस्त हाथ की अंगुलियाँ। फिर बिलकुल ठीक समय पर मदना स्टेशन आ गया।स्टेशन पर भिखारी नलों को घेरे बहस कर रहे थे, अब उनकी भाषा विदेशी नहीं लग रही थी, अजीब सी जीप, सिगरेट और गन्ने की स्टालें, ब्रिज, वसंत के बच्चे रेस्ट हॉउस के गेट पर झूल रहे थे, शंकर के दरवाजे पर शराब की बदबू और बासी हवा (वह कुछ दिनों के लिए कोलतंगा गया था, लेकिन अपनी बदबू पीछे छोड़ गया था)आ रही थी, लगता है वसंत अपने हाथों में उबले पानी का जग और एक चाय का कप लिए था। कुछ भी नहीं बदला था। उसे ऐसा लग रहा था कि मदना से दूरी के बावजूद समय उसका पीछा कर रहा था।

वसंत और उसकी औलाद ने उसको दरवाजा खोलते देखने के लिए भीड़ जमा कर ली। वसंत ने कहा 'बहुत से लोग आए, पाल के कलेक्टर और डिप्टी सेक्रेटरी उद्योग, और एक अंग्रेज अपनी पत्नी के साथ। 'वे अगस्त्य के पीछे-पीछे उसके अंधेरे कमरे में चले गए। मेंढक डर कर दूसरे कोने में दुबक गया। अगस्त्य आईने के सामने गया। कमरे की तरह ही आईने की सतह भी धूल से अटी पड़ी थी।

वह अपनी चाय लेकर बरामदे की आरामदायक गर्मी में आ गया। जब बच्चे कमरे की सफ़ाई करते समय कमरे को टटोल रहे थे तब वसंत बात को दोहराने के लिए उसके पीछे आया। 'पाल के कलेक्टर और डिप्टी सेक्रेटरी उद्योग श्रीवास्तव साहब के घर ठहरे हैं। लेकिन अंग्रेज यहाँ रह रहे हैं।' अगस्त्य ने ठान लिया था कि वह बिना पूछ-ताछ किये और बिना कोई दिलचस्पी दिखाए वसंत से पूरी सूचना ले लेगा। वह रूखेपन से मन बहला रहा था, वह एक केयरटेकर कुक के साथ दम्भ का खेल खेल रहा था और सोच रहा था कि वह कितनी आसानी से मदना के जीवन में फिर से लौट आया है। वसंत ने वह दौर लगभग जल्दी खत्म कर दिया।' वह अंग्रेज यहाँ दो दिन पहले ही आया था। वह

अपने चचेरे भाई के बारे में पता करने आया था।' उसका ये बातें बताने का कोई मतलब नहीं था फिर भी अगस्त्य ने कुछ नहीं कहा। खुले दरवाजे में से धूल खड़बड़ा रही थी। हालांकि बड़ी धुंध थी फिर भी उसे दिखाई दे रहा था कि एक लड़का दूसरे लड़के के सिर पर कचरे की टोकरी रख रहा था। अपनी कुर्सी दरवाजे से दूर करते हुए उसने वसंत से कहा, 'उन्हें कहो कि मेंढक को परेशान ना करें।'

बाद में उसने धीरे-धीरे अपना पैक किया हुआ सामान खोला। उसने गीता, मार्कस ऑरलियस, और अपनी डायरी वापस शेल्फ़ पर रखी। उसने अपनी छुट्टियों में शायद ही उन्हें कभी याद किया हो। उसने अपने बैड पर वही चद्दर बिछाई, जिसे वह पिछली बार नहीं ला सका था, वही क्रीम रंग की चद्दर, जिसके बीच में बड़ा-सा गोल बिंदु था। उसने बसंत से एक और चाय मँगवाने के लिए आवाज लगाई, और उसे तामसे की पेंटिंग धूल पोंछने के लिए दी। उसने अपनी दाढ़ी बनाई धीरे-धीरे बड़ी सावधानी से कटाई की। लग रहा था कि उसकी गैर हाजरी में छिपकलियों की तादाद बहुत बढ़ गई थी। दोपहर के बाद की धूप उसके कमरे में पड़ी मेज के ऊपर रखी कैसटों के ऊपर पड़ रही थी। वह अपनी डायरी को ब्राउज़ करता रहा। अब उसके पास रिकार्ड करने के लिए कुछ नहीं था। उसने नीचे की शेल्फ़ पर अपने कैनवास के जूते के पास रखे मदना के डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर को उठाया। उसने एक या दो पैराग्राफ पढ़े लेकिन कोई शब्द उसके पल्ले नहीं पड़ा। फिर वह लेट गया और छत की तरफ़ ताकने लगा।

आटोमैटिक मशीन की तरह उसने अपने जाने-पहचाने काम फिर से करने शुरू कर दिए। सात बजे के क़रीब सैर करते हुए कलेक्टर के घर के सामने से गुज़रना सर्क्यू हाउस कम्पाउंड तक जाने के बाद जम्हाई लेते आवारा कुत्तों के सामने से गुज़रना। बड़े मैदान के एक किनारे पर झोपड़ियों की कतारें थी। क्रिकेट का मौसम आ गया था, इसलिए उन्होंने क्लब के पास नेट लगा लिया था, मदना क्लब पार किया। बसस्टॉप के अंदर और बाहर भीड़। मदना से निकलने के लिए स्कोर का इन्तजार हो रहा था। यात्री बस की छत पर स्वयं का जोखिम उठाते हुए अपना अपना सामन बांध रहे थे। बस के बोर्ड पर लिखा था मदना से जापना। खिड़कियों की सलाखों के पीछे आशंकित चेहरे। एक

खिड़की के पीछ एक बीमार महिला बैठी थी। उसने उसे खिड़की से बाहर सफेद उल्टी गिराते देखा। कोई गाली दे रहा था। वह मोहन था जो मुस्कराते हुए उसकी तरफ़ चला आ रहा था। उसने सारे दृश्य अपने मानस-पटल पर फॉक्स कर क्लिक किए। कुछ गज की दूरी पर भाटिया सिगरेट खरीद रहा था। मोहन के साथ एक छोटे बालों वाला जाना-पहचाना आदमी था।

'हैलो, अगस्त, दिल्ली में कैसा था? तुम दुबे से पहले मिले हो, है न, यह गोरपाक के वनों में असिस्टेंट कंजर्वेटर हैं। ... ; बेशक हम पहले मिले हैं, तुम्हें तुमने हमारी पिकनिक की दावत तय की थी।'

वे हँसे और उन्होंने हाथ मिलाए। उसी समय भाटिया वहाँ आया वह पहले से ज़्यादा खुश लग रहा था। 'मैं लम्बी दीवाली की छुट्टियों में यहाँ से निकल रहा हूँ। मैं आज शाम यहाँ से निकल रहा हूँ, शाम क्या बिलकुल अभी निकल रहा हूँ। मैं जल्दी से वापस जाकर आखिरी मिनट की चीज़ों को पैक करूंगा।'

मोहन ने कहा, 'इतने उत्साहित मत होओ, 'तुम ब्रश करने जितनी देर में ही वापस आ जाओगे।'

भाटिया ने कहा, 'अरे बिलकुल ना जाने से तो इतना ही अच्छा है।'

अगस्त्य ने कहा, 'मैं इतना आश्वस्त नहीं हूँ।'

भाटिया जवाब में सिर्फ मुस्करा दिया,और उसने सबको "अलविदा" कह कर कहा कि ठीक है जब मैं वापसआऊंगा तब बातें करेंगे और फिर उसने तीनों के साथ हाथ मिलाये और चल दिया। वे तीनों उसे यातायात में से निकलते देखते रहे।

मोहन ने कहा, 'जहाँ तुम जाना चाहते हो वहाँ थोड़ी देर में चले जाना। चलो, अब चलकर चाय पीते हैं।' जैसे साठे कहता है, मदना में यदि कोई इन्तज़ार नहीं कर सकता तो कुछ नहीं कर सकता।'

वे स्टेशन से दूर बने एक ढ़ाबे की ओर चल पड़े। अगस्त्य ने पूछा,क्या तुम खाली शामों को यहाँ आकर बसों को बस स्टैंड से छूटते देखना पसंद करते हो। 'शायद तुम्हें मदना से जाते लोगों को देखना अच्छा लगता है?' वे हँसे।

दुबे ने कहा, 'मैं यहाँ दिन भर के लिए आया था। अब मैं गोरपाक लौट रहा हूँ, और मोहन और भाटिया मुझे छोड़ने आए हैं। मेरी छह बज कर तीस मिनट वाली बस छूट गई, मुझे अगली बस का इंतज़ार करना पड़ेगा।

वे एक छोटी सी भीड़ के पास से गुजरते हुए एक बूढ़े मक्कार आदमी के पास पहुँचे,जो कामोत्तेजक बेच रहा था। उसकी दाढ़ी उसकी उम्र से ज़्यादा धूल से अटी दिखाई दे रही थी। वर्षों से चिल्ला-चिल्ला कर प्रेरणा देने और भरोसा दिलवाने के लिए कल्पित बातें कहने से उसकी आवाज बेअदब हो गई थी। अगस्त्य ने देखा कि उसका चपरासी, मुँह पर आधी मुस्कराहट लिए एक बोतल खरीदने को आतुर हो गया था।

अगस्त्य ने सोचा सभी ढाबे एक जैसे दिखाई पड़ते हैं.. सब पर केरोसिन लैम्प जल रहे थे, जर्जर मेजें थी, सभी पर खूब भीड़ थी, नटखट वेटर्स,एक रुखा आदमी उन पर चिल्ला रहा था, नकली कोक की ट्रे, तंदूरी रोटी और छोले की मोहक खुशबू नाली की बदबू के साथ घुल-मिल रही थी। दुबे ने गंदे से चीथड़े मेज साफ़ करते एक लड़के से कहा,'तीन चाय।'

अगस्त्य ने पूछा, 'क्या तुम दोनों दिवाली के लिए घर नहीं जा रहे?'

'हाँ, मैं जा रहा हूँ,' मोहन ने कहा, मैं परसों निकलूँगा। रोहिणी अलवर में ही रहेगी। उसको पिरतना ले जाने का कोई औचित्य नहीं है। '

'पिरतना तो गोरपाक से भी बेकार है।'

दुबे ने कहा, 'पिरतना तो गोरपाक से भी बदतर होगा, जिसमें बहुत खामियाँ है, याद है वहाँ पर बिजली भी नहीं है।'

मोहन मुस्कराया,' नौकरी की मजबूरियाँ।'

एक बस भोंपू बजाते हुए बस स्टेशन के बाहर आई, उसने ढाबे को धुँए से भर दिया। दुबे ने अपना सिर खुल खुजलाया।

वह एक अपराधी की तरह परेशान और बेढंगा लग रहा था। गोरपाक में अपनी जिंदगी के रूखेपन की बातें करते समय उसका सिर कह कभी-कभी अनायास ही हिल रहा था। यहाँ पर कोई भी बाजार नहीं है। यहाँ पर सिर्फ़ एक क्लब है जहां लोग सिर्फ ब्रिज़ खेलते हैं और कुछ नहीं। दफ्तर के बाद मेरा अपने कमरे में जाने का कतई भी दिल नहीं करता, वहाँ जाकर लेट जाओ और रात के खाने का इन्तजार करो, लेकिन और कोई चारा भी तो नहीं है। जाएँ तो कहाँ जाएँ।'

अगस्त्य ने पूछा, 'तो तुम क्या करते हो ?'

'मैं नदी किनारे उसे देखने बैठ जाता हूँ, या फिर उन्हें ब्रिज़ खेलता देखने चला जाता हूँ।'

अगस्त्य दूर देखने लगा। लग रहा था वह अपने निर्वासन के दौरान जिला न्यायाधीश, भाटिया और अब दुबे के द्वारा किये गए नीच कृत्यों के बारे में सोच रहा था।

दुबे ने कहा, 'मैंने अपने पिता की मौत के बाद मेरी माँ और मेरी छोटी बहन मेरे साथ रहेंगी कारण बताकर किसी अच्छी जगह पर ट्रांसफर के बारे में लिखा है, उम्मीद है कि ट्रांसफर के आर्डर जल्द ही आ जाएँगे।'

'कहाँ का ट्रांसफर। ?'

'ठीक है' दुबे फिर से मुस्कराया, 'मोहन के बाद यहाँ मदना में जगह खाली हो जाएगी। हम मेरी बहन के स्कूल की परीक्षा खत्म होने का इन्तजार कर रहे हैं। वह कालेज ज्वाइन लेगी। 'अगस्त्य ने धीरे से कहा, हाँ हाँ कलेक्टर की पत्नी के योग्य अध्यापन के तहत।'

उन्होंने अपनी चाय ख़त्म की और गोरपाक की बस के बारे में पता करने निकल गए। टिकट काउंटर के सामने थकाऊ लोगों की बदबू थी। पीली टब ट्यूब लाइटों के नीचे सीमेंट के दागदार बेंच रखा था। बेमेल भड़कीले गुलाबी और हरे लिबास में हमेशा बीमार रहने वाली गाँव की महिलाएं फर्श पर चौकड़ी मारे बैठी थी और बीड़ी पी रही थी।आस-पास कहीं ट्रांजिस्टर पर परिवेश से निराशाजनक बेसुरेपन से हिंदी डिस्को गाना बज रहा था। वे दुबे को बस में खिड़की की सलाखों के पीछे जाकर निराश बैठ जाने तक देखते रहे। जैसे ही बस थोड़ी दूर को निकली तब अगस्त्य ने धीरे से कहा, कम से कम मुझे कहीं जाना होता है तो मैं जीप किराए पर ले लेता हूँ।

जब वे बस स्टेशन के गेट की तरफ़ जा रहे थे तब मोहन ने पूछा 'जब हमने तुमसे हमारे साथ चलने की मिन्नत की, उससे पहले तुम कहाँ जा रहे थे?' 'कलेक्टर के पास रिपोर्ट करने कि मैं छुटियाँ बिताने के बाद लौट आया हूँ।'

मोहन ने व्यस्तता दिखाते हुए कहाँ, 'चलो, कुछदूर तक रास्ते मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।'

उन्होंने औद्योगिक ट्रेनिंग इंस्टीच्यूट को पार किया,जो कि एक एकड़ में फैले कंकड़-पत्थरों के पास बनी एक मंज़िली ईमारत थी। उसके चारों तरफ़ बाउंड्री के लिए कांटेदार तारें लगी थी और गेट के खम्बे बने हुए थे लेकिन गेट नहीं लगा हुआ था। मोहन ने अचानक से कहा,'यह रोहिणी है, वह घर से ज़्यादा दूर रहना पसंद नहीं करती, और उन जगहों पर रहती है जहाँ पत्नियों को करने के लिए कुछ नहीं होता।'

अगस्त्य ने दिलासा देने के लिए हाँ में हाँ मिलाई। मोहन ने पूछा तुम बीडीओ की ट्रेनिंग के लिए कहाँ जा रहे हो?'

'अब तक मुझे पता नहीं चला हैं।'

वे कलेक्टर के घर के पास के मोड़ पर अलग-अलग हो गए। अगस्त्य ने कहा, 'मैं अच्छी तरह नमस्ते करने के लिए कल आऊँगा।'

'हाँ, तुम्हें ऐसा ही करना चाहिए, मोहन ने कहा,क्योंकि कौन जाने हम फिर कब मिलें?' उसे अगस्त्य के चेहरे पर हल्की सी परेशानी दिखाई पड़ी। 'देखो, मैं परसों अलवर के लिए निकल रहा हूँ। जब मैं लौटूँगा तो तुम किसी सब-डिवीज़न में बीडीओ लग गए होंगे। और वैसे भी मैं तुरंत पिरतना जाऊंगा। और तब तुम किसी राज्य के असिस्टेंट कलेक्टर बन जाओगे। 'लग रहा था कलेक्टर के घर की सभी रोशनी जला रखी थी, पहले से ज़्यादा रोशनी थी, इतनी लाइटें अगस्त्य ने पहले कभी नहीं देखी थी। बगीचे में लैम्प थे। लग रहा था इन दस दिनों में वे पागल हो गये और इस जगह को आश्रयस्थली बना दिया, उसने सोचा पागलों ने पूर्णिमा की रात को नर्सों और वार्डन को और बाकी सभी लोगों को मारकर और जश्न मना रहे हैं और श्रीवास्तव की लाश पर बड़े आनंद से खून पी रहे हैं, मौत पर भी त्यौरियां चढ़ा रहे थे।

लान में कुर्सियाँ लगी थीं, साइड की टेबलों पर रखे स्पीकरों में से उर्दू गजलों की आवाजें आ रही थी, चपरासी इधर-उधर दौड़ रहे थे, कुमार दो बैठे हुए मरीजों को बड़े

जोश से कुछ बता रहा था, लेकिन लग रहा था कि वे ध्यान से नहीं सुन रहे थे, श्रीवास्तव शराब सर्व कर रहे थे, लटकते सफारी सूट में जोशी भी चपरासियों के साथ डोल रहा था, ब्रिज खेलने वालों के दो टोले थे, मुँह पोते और परफ़्यूम लगाए महिलाएँ औपचारिक सर्कल बनाए बैठी थीं, बच्चे इधर उधर दौड़ रहे थे, उसने सबसे पहले श्रीवास्तव की बेटी शिप्रा को देखा। 'बंगाली चाचा आ गए! बंगाली चाचा आ गए! चिल्लाते हुए वह अपनी माँ की तरफ़ दौड़ी। दूसरे बच्चे भी उसी की बातें दोहराते हुए उसके पीछे-पीछेदौड़े। कुछ शरारती बच्चे इसे बदलते हुए कह थे,' पुमपाली कंक्ल आ गए। 'यह सोचते हुए कि उन्हें कैसे रोके, अगस्त्य उनकी तरफ़ हैलो करने चला।

उसने एक राउंड पत्नियों को नमस्ते कहने का लगाया; उसने नोट किया कि कुमार की पत्नी भी छोटी और मोटी थी, और सुपरिंटेंडेंट पुलिस की पत्नी दिप्ति बेहद सेक्सी लग रही थी; फिर ब्रिज की मेजों की तरफ़ जाते हुए वह कुमार से नहीं बच सस्का,'हें, सेन,तुम कब आए, दिल्ली में वह हरामी टैक्सी-ड्राइवर याद है? खैर, उसे पीटा गया और उसका लाइसेंस ज़ब्त कर लिया गया। उसके पीड़ित व्यक्ति, पालान के कलेक्टर, बजाज और राजन भी बैठे थे।

श्रीवास्तव अपने मोटे दाढ़ीवाले शांत पार्टनर के साथ डमी बना बैठा था और उसकी तरफ़ त्योरियाँ चढ़ा रहा था। लग रहा था उसका पार्टनर कोई घातक कला फ़िल्म बनानेवाला व्यक्ति हो। श्रीवास्तव विचित्र ढंग से उसे एक तरफ़ ले गया और कहा, हें,सेन मुझे खुशी है कि आप आए, दिल्ली में तुमने खूब मज़े किए होंगे।' देखो जाओ और उस अंग्रेज और उसकी बीवी से मिलो और उनसे बातें करो। मेरी समझ से बाहर है कि मैं उनके साथ क्या करूं। ये दोनों बहुत चुप और सुस्त हैं, लेकिन, भाई कोई तो उनके साथ बातें करेगा।'

'वे कहाँ हैं, साहब?'

श्रीवास्तव नाक-भौं चढ़ाते हुए चारों तरफ़ देखने लगा। अगस्त्य ने धीरे से कहा, साहब, मैंने एनीड बलरान बेलरांन में पढ़ा था कि जब तुम मुँह बनाते हो उस समय अगर हवा का रुख बदल जाए तो तुम्हारा चेहरा हमेशा के लिए वैसा ही बिगड़ा रह जाता है। श्रीवास्तव ने सख्ती से कहा, मुझे वे कहीं भी नहीं दिखाई पड़ रहे कहीं वे सर्कट हाउस ना चले गए हों। 'देखो, सेन वे तुम्हारी जिम्मेदारी हैं। क्या तुम पीओगे?' श्रीवास्तव अगस्त्य के ऊपरी बटन को देखकर मुँह बना रहा था।

'जी, साहब।'

'ठीक है, उनके साथ पीना और उन्हें खुश रखना। श्रीवास्तव अपनी मेज की तरफ़ लौट गया। उस के साथी से उसका अनुबंध टूट गया था।

अंग्रेज़ और उसकी बीवी घर से बाहर निकले। अगस्त्य सोच रहा था शायद उसकी पत्नी भारतीय हो। या फिर वह अपनी भारतीय मिस्ट्रैस के साथ घूम रहा है। वे दोनों युवा थे निश्चित रूप से तीस से कम होंगे। 'हैलो, मेरा नाम अगस्तीय सेन है।' वो मेरा नाम नहीं पकड़ सके।

महिला ने कहा,'पिछले दो दिनों से तुम हमारी बातचीत का एकमात्र विषय थे। यहाँ के सभी जिला अधिकारी तुम्हारे लौटने का इंतजार कर रहे थे। वे व्यावहारिक रूप से कई शब्दों में कह रहे थे कि जब तुम लौट आओगे तब मदना में तुम्हारा अच्छा समय व्यतीत होगा। मुझे लगता है हमारा समय बेहद उम्दा बीतेगा। तुम्हारी माँ ईसाई थी, इसलिए हम में बहुत सी बातें एक जैसी हैं, और आपके पिता मधुसूदन सेन हैं, हम दोनों बहुत प्रभावित हुए हैं, हालाँकि मुझे उस समय डर से अपने पति को कोहनी मार कर आगाह करना पड़ता था। 'अगस्त्य थोड़ा सा स्तब्ध हो गया। वह एक किशोर के सपने की तरह भारी और खूबसूरत थी, और गहरे नीले सलवार कमीज में थी।

अंग्रेज ने कहा, 'मिस्टर श्रीवास्तव हमारे लिए बेहद अच्छे हैं।' हल्की भूरी और छोटी मूँछें, किन्तु करुण, नीली आँखें। वे दूसरों से कुछ दूरी पर एक लैम्प की बग़ल में बैठ गए। कुमार दायें से उनकी तरफ़ मुस्कुरा दिया, और एक लंबी दूरी से अपना ग्लास उठा कर सम्मान दिखाया। अगस्त्य सुन रहा था, श्रीवास्तव आश्चर्यजनक विनम्र आवाज़ में, अपने मोटे साथी, को समझा रहा था कि उसने आखिरी खेल बहुत खराब खेला उसने इरादा किया कि वह यह नहीं पता करेगा कि अँग्रेज और उसकी पत्नी मदना में क्या कर रहे हैं; ऐसा करना ज़्यादा दिलचस्प रहेगा। 'आप क्या पीना चाहेंगे, साहब?' एक विनम्र सा बैरा आया, वह अँग्रेजी में बोल रहा था, उसके छोटे बाल अच्छी तरह कंघी किये हुए थे, घनी मूछें थी, जैसे कि सिगरेट के विज्ञापन में रहा हो। 'लगता है तुम कलेक्ट्रेट से नहीं हो?'

'साहब?'

'तुम कलेक्ट्रेट के चपरासी नहीं हो, नहीं हो ना?'

वेटर जाहिर तौर पर चकित नहीं दिख रहा था। 'मैं मदना इंटरनेशनल, में काम करता हूँ, सर।'

ओह,साठे के होटल में। अच्छा तो श्रीवास्तव ने पेशेवर सहायता ली थी। 'मिस्टर गोविन्द साठे कहाँ हैं?'

'वे किसी काम से, आधा घंटा पहले यहाँ से चले गए, सर। उन्हें जल्द ही लौटना चाहिए।'

'उह..। मेरे पास व्हिस्की और सोडा है। आप क्या पीओगे?' अगस्त्य अपने दोनों मेहमानों की तरफ़ मुड़ा।

'हम पूरी शाम यही कुछ लेते रहे हैं, उस महिला ने कहा, अब हमें 'जिन' और लाइम चाहिए।'

'अँग्रेज ने कहा, 'मुझे एक डबल व्हिस्की लेनी है।'

अगस्त्य को उस शाम का मौक़ा पसंद आया; आज वह जमकर सरकारी शराब पीएगा (निश्चित ही श्रीवास्तव ने इस रात के खाने के पैसे किसी न किसी मद से लिए होंगे: शायद पाल के कलेक्टर के साथ 'सीमावर्ती तहसीलों में कानून और व्यवस्था की समस्याओं पर चर्चा के दौरान रात्रिभोज' या 'डिप्टी सक्रेटरी इंडस्ट्रीज के साथ मदना की डिस्ट्रिक्ट इंडस्ट्रीज सेंटर की समस्याओं पर चर्चा करने के लिए रात्रिभोज'; श्रीवास्तव के ऑफिस में हजारों विषयों पर रात्रिभोज करने का प्रावधान है) और कलेक्टर के लान में,एक अनजान अँग्रेज और उसकी बेबाकी और सेक्सी पत्नी की चौकसी करेगा।

अंग्रेज ने पूछा,तुम छुट्टी पर चले गए थे।'

अगस्त्य एक सेकंड के लिए असमंजस में रहा कि वह झूठ बोले, फिर उसने कहा, हाँ।' उसी समय श्रीवास्तव का बेटा शेखर दौड़ा हुआ आया, अगस्त्य की बाँह पर हाथ मार कर कहा,'पंबाली कंकल आ गए,'और फिर वह चिल्लाता हुआ दौड़ गया।

अंग्रेज़ की पत्नी ने कहा, 'अरे इस बच्चे ने क्या कहा?'

अगस्त्य ने कहा, 'यह यहाँ की लोकप्रिय जनजातीय प्रार्थना 'है। 'मोटे तौर पर इसका मतलब है, भगवान मुझे प्रजनन क्षमता दे। इसका उपयोग उन आदिवासी लोगों द्वारा किया जाता है जो नागों की पूजा करते हैं। ये प्रजातियां कोबरा के साथ गूढ़ प्रजनन प्रथाओं को अमल में लाते हैं। एक पल के लिए उसने यौन संबंधों के बारे में सोचा; फिर सोचा नहीं, यह मैंने बहुत जल्दी में कुछ अटपटा कह दिया। फिर उसने अंग्रेज़ से बहुत ही अदब से कहा, 'यह बहुत ही भारतीयपन है आप जानते हैं, जैसे एक गाय दिल्ली की

दौड़ती गलियों में बैठे हुए जुगाली करती है या कुछ चबा रही होती है।' बच्चे शायद इसे अपनी आया से ही सीख लेते हैं। मुझे लगता है मिसेज श्रीवास्तव ने अपने बेटे को यह कहते नहीं सुना होगा नहीं तो वे बहुत नाराज होतीं।' एकाएक दी गई इस जानकारी पर अंग्रेज की पत्नी ने एकदम भौंचक्की होकर देखा।

उसने पूछा, 'आप आईएएस में हैं, है ना?'

'हाँ,' अगस्त्य ने अंग्रेज की तरफ़ मुड़ते हुए कहा, 'यह भारतीय प्रशासनिक सेवा है।'

अंग्रेज़ ने कहा, 'हाँ, मुझे पता है, लगभग सन् 1947 से पहले भारतीय सिविल सेवा क्या थी।'

अगस्त्य ने कहा, 'यह बात श्रीवास्तव साहब को सुनाकर मत कहना, वे बहुत नाराज होंगे।' अब तो शायद उन्होंने नहीं सुना होगा। वेटर ड्रिंक्स लेकर आ गया। अगस्त्य ने महिलाओं में साठे की साली को पहचाना, वह अभी भी सुनहरी साड़ी पहने थी। अंग्रेज़ की पत्नी ने पूछा, 'तुम भी सर्किट हाउस में रह रहे हो, है ना?'

'रेस्ट हाउस में, हाँ, यह एक ही परिसर में है, लेकिन यह अभी पूरी तरह से बना नहीं है।'

'हाँ, उस कुक वसंत ने हमें तुम्हारे कमरे की तरफ़ इशारा करके बताया था, वही हमरे लिए भी खाना पकाता है।

अगस्त्य हँसा, अच्छा वह आपका भी खाना बनाता है, ठीक है?

अंग्रेज़ और उसकी पत्नी भी हँसे। पत्नी ने कहा, 'मेरी समझ से बाहर है कि इतने लंबे समय तक ऐसा खाना खाकर आप बच कैसे गए। 'मैं ज़्यादातर दूसरों के यहाँ खाना

खाता हूँ, खास तौर पर मिसेज श्रीवास्तव के यहाँ।' 'मैं जॉन को अक्सर बताता रहता हूँ कि वसंत को ढंग से खाना नहीं पकाना आता।

'आह तो वह जॉन था। शायद वह मैरी थी, और जॉन और मैरी अब तक ठीक से रह रहे हैं। अगस्त्य ने धीरे से हँसते हुए कहा, लेकिन ज़्यादा संभावना है कि वे मदना में हजारों के साथ संभोग करते हैं; और यदि कोई उन जाहिल किताबों और फिल्मों की बातों के दसवें हिस्से पर भी विश्वास करे जिनसे पता चलता है कि जब भी कोई अँग्रेज किसी काम से या किसी चीज की तलाश में भारत आता है, तो जल्द ही वह यहाँ के देशी लोगों के साथ संभोग में लिप्त होता पाया जाता है।

जॉन ने पूछा, 'यहाँ पर आप किस किस्म का काम करते हैं?'

अगस्त्य ने यह जानने के लिए कि भारत सरकार इस जैसे मुर्ख को किस चीज की तनख्वाह देती है, उसके चेहरे की तरफ़ सन्देहपूर्वक देखा। 'उह... मुझे प्रशासकीय ढांचे के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है, एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय जाकर यह ज़ानने की कोशिश करता हूँ कि वह कार्यालय क्या करता है।'

उसने नोट किया लॉन के परे का खाली मैदान, पार्किंग के लिए इस्तमाल किया गया था। एक एम्बेस्डर कार के पीछे उसे एक महिला दिखाई दी। वह हैरान था कि वह वहाँ क्या कर रही थी? वह शायद कारों के पीछे कोई जादू-टोना कर रही थी। उसने हल्की सी मुस्कराहट करते हुए याद किया, प्रशांत के भाई की तरह, जो तीन साल की उम्र तक ड्राइंग-रूम के सोफे के पीछे ही टट्टी करता था, फिर प्रशांत अपनी माँ को कहता, 'तुम क्यों चिंता करती हो माँ, यह तो आइंस्टीन की तरह प्रतिभासम्पन्न होने की निशानी है।' अगस्त्य ने उस महिला को पहले कभी नहीं देखा था। उसने चारों तरफ़ देखा, किसी की तरफ़ हाथ हिलाया, और हैरानी की बात यह थी कि वह उनकी तरफ़ चली आ रही थी। वह रौबदार लग रही थी, इसलिए अगस्त्य अपनी कुर्सी से उठ गया। उसने जॉन और

उसकी पत्नी से कहा, 'हैलो, अच्छा तो मजे कर रहे हो?' उसने अगस्त्य की तरफ़ सवालिया नजरों से देखा।

'मेरा नाम अगस्त्य सेन है मैडम। मैं...'

वह मुस्कराई। 'ओह,' मैंने मिसेज श्रीवास्तव से आपके बारे में सुना था। शायद आप मदना में उसके विंग के नीचे हैं। मैं वत्सला राजन हूँ। मेरे पति पाल के कलेक्टर हैं। रुको, मुझे एक कुर्सी मिलेगी, 'उसने कहा, और अगस्त्य का आगे बढ़ने के लिए इंतजार करने लगी।

वह पहले एक और ड्रिंक लेने चला गया। श्रीवास्तव फिर से डमी बना बैठा था। जब वह कुर्सी लेकर उस गुट में फिर से जा बैठा तो मिसेज पाल हाथों को हिला-हिला कर बातें कर रही थी,'– यहाँ पर टूटिंग में, मेरे कुछ दोस्त हैं। और मैं समझती हूँ कि इस उत्सव की सराहना करनी चाहिए क्योंकि यह बहुत ही जोशपूर्ण प्रयास था। 'उसने यह कहकर अपनी बात खत्म की और उत्साहित हो सबकी तरफ़ देखने लगी।

'दुःख की बात है हम इसे पूरी तरह से नही देख पाए,' जॉन ने अपनी पत्नी की तरफ़ देखते हुए कहा।

मिसिज़ राजन फिर से आगे की तरफ़ झुकी, उसकी गर्दन एक षड्यंत्रकारी की तरह अकड़ी हुई थी। ' लेकिन यह जरूरी है कि विदेशों में भारत का सही प्रदर्शन हो। यह भ्रम दूर होना चाहिए कि भारत के लोग चापलूस हैं, साँपों को पालते हैं, और हाथी रखते हैं, तांत्रिक क्रियाएँ करते हैं। 'यहाँ पर... उसने अपनी बंद मुट्ठी इस तरह खोली जैसे टाइम-लैप्स-फोटोग्राफी में एक कली खुलती है; शायद उसे लग रहा था कि उसकी हथेली में और विशेषण लिखे हों।

अगस्त्य ने सोचा कि वह डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट पुलिस की पत्नी से दूर खिसक ले; लेकिन जब वह लौट कर आया तब भी मिसेज राजन दो पुलिस वालों से बातें करे जा रही थी। अगस्त्य सोचने लगा कि जॉन का बेटा, जो शायद अभी बच्चा है दूसरे एंग्लो-इंडियनों की तरह इंग्लैंड में कहीं पढ़ रहा है, जब तीस साल बाद यह जानने के लिए मदना लौटेगा कि उसके माता-पिता की मौत पार्टी में एक महिला की बातें सुनते हुए कैसे हुई, और उस पोस्टमार्टम रिपोर्ट पर विश्वास नहीं करेगा जिस पर लिखा था, 'बोरडम से मौत', तो वह तब ही जान पाएगा जब वह दिल्ली में मिसेज राजन से उनके बड़े से घर में (जिसे मिस्टर राजन ने उस समय बनवाया था जब उसने अकेले ही आइसलैंड में फेस्टिवल ऑफ़ इंडिया का प्रोग्राम हड़प लिया था और लाखों कमाए थे) मिलेगा– तभी उसे अगस्त्य को ख़याल आया कि मिसेज राजन ने उससे कोई सवाल पूछा था।

'माफ़ करना मैड़म, मुझे आपकी बात सुनाई नहीं दी।'

अगस्त्य ने सेक्स के मज़े जितने पल के लिए सोचा,'मैं और जॉन अपने पदों को परिभाषित करने में लगे हैं लेकिन अभी तक कठिन स्थिति में हैं। जॉन जोर देकर मुझे कहते हैं कि मैं "भारतीय" शब्द का प्रयोग बहुत ढीलेपन से करता हूँ। अब तुम ही बताओ, अगस्त्य- तुम्हारा नाम कितना सुन्दर है, एकदम सजातीय– तुम "भारतीय" शब्द को कैसे परिभाषित कर सकते हो?' मेरा कहना है कि भारत आकर्षक रूप से इतनी भिन्नता वाला देश है कि किसी भी शब्द को सटीकता से परिभाषित किया जा सकता है।'

अगस्त्य बचने के लिए अपनी आँखें बाएँ से दाएँ घुमाने लगा।ये साले अब तक कर क्या रहे थे? कोई आश्चर्य नहीं वहाँ राजन शांति से बैठा कुमार को सुन रहा था; राजन की पत्नी के मुक़ाबले में कुमार तो समरसेट मौम है। 'उह.. ।'

'तुम मिश्रित विरासत लिए हो, जाहिर है तुम्हारा नजरिया तो रोचक होना ही चाहिए, 'राजन की पत्नी ने कहा। जॉन की पत्नी एक आश्चर्यजनक किशोर आवाज में हँसी।

'उह, मुझे नहीं पता, मैंने इन चीज़ों के बारे में कभी नहीं सोचा–'

राजन की पत्नी ने आँखें मूँद, सिर हिलाकर जोर देकर कहा,'तुमने यह सही खुलासा किया, बहुत से भारतीयों को नहीं पता होता कि भारतीय होने के मायने क्या हैं। 'अगस्त्य उसे थप्पड़ मार कर शिष्टाचारपूर्वक दूसरी ड्रिंक लेने जाना चाहता था। उसने सिर हिलाते हए और आँखें झपकाते हुए जोर देकर कहा,' ठीक है चलो।

मैं समझता हूँ भारतीय होने का मतलब है भारत में जन्म लेना और फिर अपनी नागरिकता को कभी न बदलना। 'जब उसने मिसेज राजन के चेहरे पर चिड़चिड़ापन और घबराहट देखी तब अगस्त्य ने अपनी जीत समझ चुपके से मन में कहा, 'अब ले, कुत्तिया।' उसी समय मिसेज श्रीवास्तव एक लम्बे समय से प्रतीक्षित चमत्कार की तरह अपने मेजबानी दौरे पर आई और मिसेज राजन को जबरन अपने चेहरे का प्रारूप बदलना पड़ा।अगस्त्य ने इरादा कर लिया था कि, यदि जरूरत पड़ी तो, वह मिसेज श्रीवास्तव का पल्लू पकड़ते हुए यहाँ से छुटकारा पाकर उसके पीछे हो लेगा। जब वह धीरे से अपनी ड्रिंक खत्म कर रहा था, तो थोड़ी सी बातें हुई।

जॉन की पत्नी ने मीठा बोलते हुए कहा, 'हमारे लिए भी थोड़ा रिफिल के लिए कह दो।' 'ये अपने आप ही धीरे-धीरे पी रहा होगा, है ना,' मिसेज श्रीवास्तव ने पूछा। लॉन के किनारे पर बनाये गए अस्थाई बार से लौटते समय, अगस्त्य को बजाज ने बुलाया। उसने चलते-चलते ही धीरे से कहा, 'धन्यवाद।' बजाज श्रीवास्तव के पहले वाले ब्रिज-पार्टनर के साथ खड़ा बातें कर रहा था, खड़े होने पर वह ज़्यादा ही मोटा लग रहा था। अब गोपाल श्रीवास्तव के तेवरों का शिकार था। बजाज ने कहा, 'हैलो सेन, तुम दिल्ली से कब वापस आये? 'क्या तुम कोलतांगा के पूर्व कलेक्टर, डिप्टी सक्रेटरी इंडस्ट्रीज मिस्टर पांडा से मिले ...' अगस्त्य ने अपना गर्म, नम और चिपचिपा हाथ मिलाया, और वह अचम्भा कर रहा था कि यदि वह मोटा आदमी गुप्त रूप से अपने ब्रिज पार्टनर की राय जानने के लिए, ब्रिज की मेज के नीचे हस्तमैथुन कर रहा होता तब।

बजाज ने कहा, 'सेन, श्रीवास्तव साहब ने तुमको बताया है? हम तुमको ब्लॉक डेवलपमेंट ऑफिसर के रूप में जोमपन्ना में पोस्ट करेंगे। यह एक आदिवासी पिछड़ा हुआ इलाका है, और वह तुम्हारे लिए एक समृद्ध अनुभव होगा।' अगस्त्य ने सिर हिलाया और उत्साहित दिखने की कोशिश की।

पांडा ने कहा, 'यदि तुम्हें जोमपन्ना में बीडीओ बनकर जाने का मौक़ा मिला तो तुम भाग्यशाली हो। वह आश्चर्यजनक रूप से एक नया संसार है। 'उसने अपना चश्मा ऊपर किया और एक सिगरेट सुलगाई। उसकी आवाज़, बहुत पढ़े-लिखे और गहन अनुभवों का गाम्भीर्य लिए बहुत धीमी और भारी थी। वह बोलता रहा, 'बीडीओ होने की वजह से तुम जमीनी स्तर पर विकास देखोगे, फिर वह मुस्कराया, एक विकासशील देश में भी उसके दाँत भूरे रंग के थे। तुम वे सभी कार्यक्रम लागू करोगे जो अब तक तुमने केवल कागजातों में ही पढ़े होंगे, मसलन ग्रामीण विकास, जनजातीय कल्याण, परिवार कल्याण, यह सब सीखने का एक शानदार अवसर है वहाँ पर बीडीओ बनकर जाना।' बजाज ने डॉन कुइज़ोटे फ्रेम के पीछे, चाटुकार आँखें दिखाते हुए सिर हिलाया।

अब एक जानी - पहचानी ठुमरी बज रही थी, जिसके बोल थे,' तुम्हारी लौंग का मोती गिर गया, मेरे साजन'। शंकर का गाना था यह, उस शाम अगस्त्य बुखार से उबरा था, और शंकर ने शराब पी रखी थी, उसका दावा था कि दुनिया को सहन करने के लिए बुद्धि से काम लेना पड़ता है। एक आदमी उनकी छोटी-छोटी बातों में आ मिलाया बाद में पता चला कि वह डिस्ट्रिक्ट हेल्थ ऑफिसर शर्मा था। अगस्त्य को याद आया, ओहो, पेंट किए हुए पहलवानों के साथ सर्कस की जीप इस्तमाल करनेवाला। उसने उसे चारों तरफ़ देखा, अरे यह तो यहाँ है, नीम अँधेरे में वह करीब- करीब गरिमामय लग रहा था। शर्मा और बजाज थोड़ी देर के लिए ऑफिस की बातें करने लगे, फिर बजाज ने पांडा को भी बातों में लगाने की कोशिश की। कुछ असामान्य सी स्थिति बन गई। आपने बाबा रमण का पुनर्वास गृह सुना है,' पांडा ने बड़े धीरे से गर्दन हिलाई मोटापे की वजह से वह तेजी से नहीं हिला सकता, उन्होंने विनम्रता से सरकारी सहायता लेने से मना कर दिया। वे कहते हैं कि उन्होंने चालीस साल तक सरकार के बिना काम चलाया है।'

पांडा ने कुछ नहीं कहा, लेकिन ध्यानपूर्वक देखा। उनको बातों में लगाने की गरज से, डिस्ट्रिक्ट हेल्थ ऑफिसर ने अक्खड़पने से कहा, 'मैं आज सुबह फिर गया, लेकिन बाबा को नहीं मिल सका। हालांकि मैंने उनके बेटे से बात की। उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य से सरकारी सहायता सरकार के हस्तक्षेप के बाद मिलेगी।'

'हालांकि, यह बिलकुल सच्च है, लेकिन वह आदमी तो लगभग बिलकुल ही संत है, पांडा ने कहा। उनका पुनर्वास का कार्यक्रम कितनी आत्मीयता का काम है।' सबने सत्यनिष्ठापूर्वक सिर हिलाया।

एक लाल मारुती चरमराई, अगस्त्य ने ड्राइव की तरफ़ देखा। साठे बाहर निकला, उसने चारों तरफ़ देखा, और एक ब्रिज की मेज के पास जाकर किसी से बातें करने लगा। तब बजाज उससे पूछ रहा था, 'सेन तुमने बाबा रमण का घर देखा है, है ना ?'

'ओह... नहीं साहब, अब तक मुझे उनसे मिलने का मौक़ा नहीं मिला,'और वह यह भी बताना चाहता था कि, मेरी उनमें इतनी ही दिलचस्पी है, जितनी उनकी मुझमें हो सकती है।

बजाज लगभग भौंचक्का रह गया। 'सच, सेन प्रशिक्षण के दौरान तुम क्या कर रहे थे?' वह शर्मा की तरफ़ मुड़ा ‘अब तुम कब जाओगे। सेन साहब को अपने साथ ले जाना। उसे देखना चाहिए, यह बहुत शिक्षाप्रद रहेगा।'

डिस्ट्रिक्ट हेल्थ ऑफिसर ने अगस्त्य की तरफ़ सिर हिलाते हुए कहा,'शायद अगले सप्ताह किसी समय।' 'मैं तुम्हे रेस्ट हाउस से ले लूँगा, क्या यह ठीक है?'

'बिलकुल ठीक है, धन्यवाद, अगस्त्य ने कहा, लेकिन मन में सोच रहा था कि शायद शर्मा भूल जाए या फिर वह खुद ही कमरे में ना हो या इतने नशे में हो कि उसे दरवाज़े

की घंटी ही ना सुनाई पड़े। उसने अपने आपसे कहा, तुम्हे गिनना चाहिए कि तुमने कितनी बार 'शिक्षा' और 'समृद्ध अनुभव' शब्दों को सुना, उन्होंने तुम्हारे बारे में कितने विकल्प इस्तमाल किए थे।

उसने कहा, 'अगर आप मुझे माफ़ करें, साहब, मुझे जाकर उनसे बातें करनी हैं... उसने महसूस किया कि वह उनके नाम नहीं जानता '...अंग्रेज़ और उसकी पत्नी।' यह गलत बात है। 'मिस्टर श्रीवास्तव ने मुझे आज शाम उनकी सहायता करने के लिए कहा था।'

वह चला गया, उसने देखा मिसेज राजन अब भी आगे की तरफ़ झुकी बकवास कर रही थी, फिर वह साठे से मिलने के लिए मुड़ी, जिसने कहा, 'तुम वहाँ पर खड़े उन हिप्पोपोटामस से क्यों बातें कर रहे थे?' क्या हुआ कि वे इंसानों को नहीं खाते। आओ,पी लो, हम रिफिल लेंगे, और इस सर्कस से दूर चले जाएँगे।'

उन्होंने ऐसा ही किया, अगस्त्य आनेवाली गड़बड़ी सोचकर मुस्कराया। 'कौन-सा जटिल मास्टरपीस आपके चित्रफलक पर आख़िरी छोर का इंतजार कर रहा है, ओ पेंटर?'

साठे हमेशा की तरह अपने पूरे शरीर को हिलाते हुए हँसा। 'क्या तुमने मेरा कृष्ण कार्टून देखा? बारह का सेट है। वो अख़बार वाले उसे छापना नहीं चाहते, कहते हैं कि वे बहुत निदात्मक हैं। बहुत दुःख की बात है। मैं सोचता हूँ कि उनको अंग्रेज़ी कैप्शन लगाकर कहीं और भेज दूँ, लेकिन वे अँग्रेजी में इतने अच्छे नहीं लगेंगे।' वे कारों की तरफ़ चले गए और आखिरकार सर्कस की जीप के बोनट के सहारे खड़े हो गए। 'एक में मैंने कृष्ण को राजनीतिज्ञ बताया है, जिसके चारों तरफ़ बोरियाँ लिपटी हैं जिन पर,'काला धन', 'भ्रष्टाचार' आदि आदि लिखा है। अगस्त्य शुरू हो गया ...' ओ कृष्ण दिमाग अशांत है।' शब्द बहुत जाने पहचाने थे ...यह दो शब्दों का मेल-मिलाप था, निश्चित ही ये शब्द कार्टून का विषय नहीं थे ...'और कृष्ण उन्हें दो पाचन की गोलियाँ देता है और सुबह आने को कहता है।' साठे अगस्त्य के हँसने का इन्तजार करने लगा। 'तुम्हारा अंग्रेजी

मन कुछ नहीं समझ पाया? ठीक है, यह अंग्रेजी में बहुत बढ़ा-चढ़ाकर दीखता है। तुम जानते हो एक राजनीतिज्ञ के लिए, मन और पेट, ज़्यादा या कम एक ही हैं।'

'नहीं, नहीं, मुझे समझ में गया, यह वास्तव में अच्छा मजाक है, मैं सिर्फ कुछ और सोच रहा था।'यहाँ से कुछ मिनट की दूरी पर, एक भुतहा मच्छरदानी के नीचे सफ़ेद चद्दर पर बेचैन लेटा हुआ हूँ, शरीर की अशांति मन की घबराहट की नकल कर चिढ़ा रही है।

ब्रिज की मेजों पर हलचल थी।' वे बेवकूफ़ फिर से अपने पार्टनर बदल रहे हैं।' साठे ने अपने गिलास से एक बड़ा घूँट लिया। क्या तुम हमारे अंग्रेज़ और उसकी पत्नी से मिले हो?'

अगस्त्य ने देखा कि राजन की पत्नी किसी दूसरे शिकार के लिए वहाँ से उठ गई थी, उसने कहा, 'चलो हम उनसे बातें करें। मुझे आज की शाम उनसे बातें करने का आदेश हुआ है।'

'ठीक है चलो, और चलो रास्ते में अपने गिलास भर लें।' उसने अपना गिलास खाली कर दिया। 'मैंने नहीं सोचा था कि अँग्रेज इतना...भावुक हो सकता है, जॉन का यहाँ भारत में असली उद्देश्य कर्म को जानने का है,या उसकी रीढ़ की हड्डी के आधार पर शक्ती को जगाना, और उसे यह स्वीकार करने में शर्म आती है।'

अगस्त्य ने अपने आपसे कहा, तुम अपनी नासमझी से बहुत अच्छा कर रहे हो 'यहाँ तक कि साठे को भी मालूम है कि, जॉन और उसकी पत्नी मदना में क्या कर रहे थे, इसमें कोई शक नहीं कि वह बाबा रमण के बारे में नहीं जानता हो। उसकी अज्ञानता की अनमोल सुरक्षा कितनी बचकानी थी.. उसे अपने स्कूल के शुरूआती वर्षों के गुप्त रोमाँच की याद आई, बोर्डिंग में रहने वालों की डे स्कॉलर्स के टिफिन चुराने की साजिश, फिर घुटने दबा कर साँस रोके तनाव में उस बुद्धू का इंतजार करना जिसने उस दिन खाना

नहीं खाया... उसी तरह लग रहा था। उसे वह मुस्कराया तुम सचमुच लताड़ के लिए वापस लौट आये।

साठे ने बारमैन से कहा, 'दोनों के लिए डबल बनाओ, गणेश।'

'ओह, हाँ, यह तुम्हारा आदमी है,' अगस्त्य मुस्कराया, 'जब श्रीवास्तव ने तुमसे इस पार्टी के लिए सहायता माँगी, तब मैंने सोचा तुम बदमिज़ाज हो गए होगे और मना कर दिया होगा, या फिर बदले में क्लब में पीने का लाईस लाइसेंस माँगा होगा।'

साठे हँसा, 'उसने मुझसे नहीं कहा। मेरे भाई को कहा था। जॉन और उसकी पत्नी दिखाई पड़े, अगस्त्य उन्हें देखकर खुश हुआ, वो थोड़ा पिए हुए थे। 'हैलो,' साठे ने कहा,'तुम दोनों अब तक कन्वेंट्री में हो,यही ठीक शब्द है ना?' सब हँसने लब लगे। 'क्या तुम कभी मदना के गौरव, साठे, से मिले हो?'

पत्नी ने कहा, 'हाँ, वे यहाँ ड्यूटी पर थे, लेकिन मिसेज राजन के आने पर चले गए।'

साठे ने इस बात की हाँ में हाँ मिलाते हुए सिर हिलाया। 'तुम जोमपन्ना के लिए कब निकलोगे?'

अंग्रेज़ ने कहा, 'कल सुबह, मुझे जाने से पहले मिस्टर श्रीवास्तव से मिलना होगा, वे हमें जीप मुहैया करवाने की सहायता करेंगे।'

साठे ने अप्रत्याशित रूप से कहा, 'वैसे, वह बहुत अच्छा कलेक्टर हैं।' उन उदास आँखों के पीछे एक उत्कृष्ट प्रशासक है।

तुम उनके साथ थोड़ी देर बात करके अपना बुरा कर सकते थे। मैंने किसी से सुना था कि अगस्त्य तुम्हारे साथ जोमपन्ना जाएगा।'

'हम भी जाएंगे, जॉन मुस्कराया, 'यह तो एक दोस्त, दर्शनिक और गाइड है।'

अगस्त्य ने कहा, कुछ ही हफ्तों के समय में मैं वहाँ पर 'बीडीओ' बनकर चला जाऊँगा, और जॉन को बताया, वहाँ मुझे विकास का प्रबंधन करना होगा।'

'जोमपन्ना की भगवान ही रक्षा करेगा, साठे ने कहा, जिस उत्साह से तुम बोल रहे हो ऐसा ही वहाँ विकास करोगे। वह एक शानदार जगह है, किसी समय वहाँ पर ज़िले के सबसे बढ़िया वन हुआ करते थे, और वह भारत के भी सबसे बढ़िया वनों के लिए जाना जाता था। मैं बीस साल पहले एक बार अपने पिताजी के साथ वहाँ गया था, उस समय वहाँ पर बाघ काफ़ी थे। ज़ाहिर है, अब वहाँ पर विकास के नाम पर सड़कें और डिस्पेंसरियाँ बन गई हैं। वहाँ पर नक्सलवादी भी हैं, जो आदिवासियों को सोचने पर मजबूर करते हैं कि वे अपनी ज़िंदगी शराब के नशे में, पत्नियों के लिए एक दूसरे को मारकर और अपने बच्चों को मरता हुआ देखकर और मेरे पिता- जैसे वन के ठेकेदारों द्वारा ज़्यादा काम करने को किसलिए मजबूर हैं। मुझे लगता है, आदिवासियों को अपने लिए सोचना आता ही नहीं।' साठे जॉन की तरफ़ मुड़ा। तुम्हें नहीं पता ना, कि नक्सलवाद क्या होता है?' 'आप नहीं जानते कि नक्सली क्या है, है ना? वे बंकिम चन्द्र और रोशोगोल्ला की तरह बंगाल की कहानी का एक हिस्सा हैं– '

'वे एक हिंसक और आतंकवादी राजनीतिक दल हैं,' उसकी पत्नी ने जॉन को समझाया।

अगस्त्य ने कहा, 'तुम लोग उन्हें आतंकवादियों जैसे मानते हो।'

साठे हँसा, उनका विरोध प्रदर्शन दिखाता है कि वे बंगाल के सच्चे सपूत हैं, 'बंगाल के महान आदर्शों को भ्रष्ट करने पर दुखी।' नक्सलवादियों आतंकवादियों! तुमने सीता की तरह ठीक ही कहा होगा, यदि टैगोर के गानों को गोलियों में परिवर्तित करा जाय, तो सभी नींद की गोलियों को बाजार से बाहर फेंक दें।' साठे ने अगस्त्य की तरफ़ उदारता से

देखा, 'अगस्त्य तुम कितने शर्मीले बंगाली हो, तुमने कभी अपनी माँ के बारे में सोचा है?'

फिर, आख़िर में रात का खाना। सभी ग्रुप बिखरने से लॉन में हलचल हो गई। पूरी शाम महिलाओं को अनदेखी करने के बाद अब पुरुष उनकी तरफ़ मुखातिब होने लगे। मिसेज श्रीवास्तव और साठे की साली मेहमानों को मेजों की तरफ़ ले जाने लगी। प्लेटों की खनखनाहट और झंकार होने लगी। खाने की मेज पर पूरे समय, ब्रिज़ खेलने वाले अपने पहले और बाद के खेलों के दौर के बारे में बातें करते रहे, ऐसा कर वे ना खेलनेवालों को जता रहे थे कि 'देखो तुम नशा करके अपना समय बर्बाद कर रहे थे और हम दिमाग़ी कसरत कर रहे थे,' और वे दूसरे ब्रिज खेलनेवालों के नजरिये को भी नजरअंदाज कर रहे थे।

अपने ओहदे के बल पर श्रीवास्तव ने सभी बहसों में बाजी मार ली और अपनी जीत में दूसरे मातहतों की तरफ़ देखा। अगस्त्य खुश हुआ कि वह उसे अपने काम पर तैनात दिख गया (वह उन अंग्रेज़ों नामों से बहुत खुश हुआ। दम्पति के रूप में, वो ना यहाँ के थे ना वहाँ के, ना राम और सीता और नाही जॉन और मैरी)। 'तो, श्रीवास्तव उन्हें देख मुस्कराया, क्या तुम्हारी शाम अच्छी रही? यह क्या है? उसने अपने देखने के उदास तरीके में परिवर्तन कर चंचल निगाहों से सीता की प्लेट को देखा। 'तुम वेजिटेरियन हो?'

'अगर जीप मिल जाती है तो हम कल निकलने की सोच रहे हैं,' जॉन ने कहा।

श्रीवास्तव की भौं सीधी हो गई। 'ओह, हाँ, जीप बिलकुल मिलेगी। सेन तुम्हारे साथ जाएगा। तुम इनके साथ जा रहे हो,जा रहे हो कि नहीं?'

'जी साहब।'

‘देखना, जोमपन्ना कैसा है। यदि तुम्हे वह नहीं पसंद आया तो मैं तुम्हें कहीं और बीडीओ बनाकर भेजूँगा।' वह जॉन की तरफ़ मुड़ा, 'अच्छा तो तुम्हे रिकार्ड रूम से तुम्हारे काम का कुछ मिला?' 'हाँ,' जॉन मुस्कराया, इस बार बिलकुल सही और सटीक, 'मेरे दादा के निरीक्षण के कुछ नोट्स, उनकी आधिकारिक यात्रा डायरी, विभिन्न मामलों में फैसले। मैंने कुछ चीजें फोटोस्टेट करवाई हैं।'

श्रीवास्तव ने सिर हिलाया। 'रिकार्ड रूम गड़बड़ स्थिति में है, हो सकता है, इसी वजह से तुम्हें तुम्हारे काम की चीजें मिल गईं। अगर उन्हें ठीक से सहेज कर रखा होता तो, हो सकता है, कुछ चीजें बाहर फेंक दी गई होतीं।' श्रीवास्तव ने अचानक से भौंह चढ़ाते हुए कहा, 'फिर अब तुम किस विभाग में जा रहे हो?'

'इस सप्ताह डिस्ट्रिक्ट इंडस्ट्रीज सेंटर में,साहब।'

'ओह, एक कचरा जगह है वह तो, तुम्हें वहाँ पर बहुत निराश होना पड़ेगा। तुम महीनों तक डिस्ट्रिक्ट गैजेटियर पढ़ते रहे’, उसने जॉन को कहा, फिर उसने अगस्त्य की तरफ़ मुखातिब हो कहा, 'तुम्हें जो कुछ नहीं समझ में आया वह ये तुम्हे बता देगा। 'मैंने जोशी को कहा है कि वह तुम्हे लघु बचत वाली जीप दे दे। तुम आज रात जाने से पहले मुझे याद दिलवा देना।'

चाय के समय अगस्त्य का पाल के कलेक्टर राजन से सामना हो गया। वह यह देखकर हैरान रह गया कि राजन तो अपनी पत्नी से भी बेकार था (फिर उसे मदन की याद आई और उसने सोचा कि यदि इन दो व्यभिचारियों की आपस में शादी हो गई होती तो मुझे अच्छा लगता-- और लगता कि दुनिया व्यवस्थित होने लगी है) राजन लड़ाका और साफ़दिल था, उसे यकीन था कि उसकी बातें, सुननेवालों को आकर्षित करती हैं। वह बातों के बीच-बीच में लगातार अपनी भावनाओं का खुलासा करता रहता था। उसने अमेरिका में कहीं पर 'कुछ नोबल पुरस्कार विजेता भौतिकविदों' के साथ भौतिक विज्ञान पढ़ाया था। दस मिनट की एकतरफा बातों से अगस्त्य को पता चला कि भौतिकी उसे

कांत ले गई और वहाँ से वह भारतीय प्रशासनिक सेवा में गया। 'यहाँ तक कि उन भौतिकविदों में आपसी जलन थी। मैंने सोचा, मैं कहीं का नहीं रहा। मैं बेचैन था ...'

तुम भी, राजन, कह कर अगस्त्य मुस्कराया।

'तुम मुस्करा क्यों रहे हो?'

'कोई बात नहीं है, सर, आप बताते चलो।' और राजन फिर शुरू हो गया। अगस्त्य सोच रहा था दस सालों में, शायद मैं भी ऐसा ही हो जाऊँ, मेरी भी मिसेज राजन जैसी पत्नी होगी जो किसी अजनबी के साथ अपनी बेचैनी के बारे में ऐसे बातें करेगी जैसे पट्रोल की कीमत के बारे में बात कर रही हो।

वह ठीक बारह बजे से पहले अपने रेस्ट हाउस के कमरे में पहुँच गया। जॉन अगली सुबह सात बजे निकलना चाह रहा था; जबकि अगस्त्य ने अपनी कसरत की वजह से, उन्हें आठ बजे के निकलने लिए कहा और आश्वस्त किया कि उस समय असहज गर्मी नहीं होगी।

उसके कमरे में हल्की नीली रोशनी थी और उसने शाम को जो मच्छरों को दूर करने के लिए धूप लगाई थी उसके धुएँ की कुंडली ऊपर को उठ रही थी। वह कमरे के अंदर देखने के लिए दरवाजे पर खड़ा हो गया। सोच रहा था कितनी रातें और मुझे यहाँ रहना है। उसने बरामदे की ट्यूब-लाइट बंद कर दी। उसे लगा नहीं, अब कमरा मक़बरे की तरह, काला हो गया। उसने फिर से कमरे में रोशनी की और कमरे में देखने की यात्रा शुरू कर दी, बैड के चारों ओर, मेज के नीचे और ड्रेसिंग-टेबल में देखा, जहाँ पर उसका अक्स हमेशा भूतहा दीखता है, उसकी धीमी हँसी सुननेवाली छाया जिसका वह हमेशा मज़ाक़ उड़ाया करता था। मेज पर वही कैसट, मेज पर किताबें, वह साठे की कृष्ण कार्टून की बयानबाज़ी याद करने लगा। उसने एक किताब उठाई और ट्यूब-लाइट की रोशनी में उसे पढ़ने लगा। "दृढ़ पुरुषों को निराशा नहीं होती अर्जुन, इस जीत से तुम्हें न स्वर्ग

मिलेगा और ना ही पृथ्वी।" उसे अपनी आवाज अजीब लग रही थी, जैसे किसी और की हो। "मौत समझ के प्रभाव, भूख की चपेट, विचारों की यात्रा, शरीर की सेवा से छुटकारा पाना है।" उसने अपने आपको ड्रेसिंग-टेबल के सामने खड़े होकर देखा, वह अपने अक्स को देख खुश हुआ, फिर उसने डायरी में लिखा:'जब मैं लोगों के साथ होता हूँ, बातें करता हूँ, तब मुझे अच्छा लगता है, लेकिन जब मैं अकेला होता हूँ।' फिर उसने लिखना बंद कर दिया और पूरे पेज को बिलावजह बिंदियों से भर दिया। ऐसा करके उसे अच्छा लगा, जैसे उसने अपने पेन को मनमानी करने की इजाजत दे दी हो। उसने अपनी पहले की कुछ टीपों को पढ़ा, फिर, अपने पैन को हल्के से पकड़कर शब्दों के चारों ओर घायल चींटी की तरह घसीटने लगा।

उसने कसरत की, नहाया, और पौने आठ बजे तक तैयार हो गया। जीप भी बिलकुल समय पर आ गई, उसे उसका पुराना दोस्त चला रहा था, जिसे एक ज़िले के ऑफिस से दूसरे ऑफिस का कभी पता नहीं चला। सीता ने साड़ी पहन रखी थी और जॉन सोला हैट में था। अगस्त्य को लग रहा था कि उसकी बात सच निकलेगी और गर्मी नहीं होगी, उसने अपनी मोहक मुस्कान लिए हुए पूछा, 'अगर धूल और गर्मी ज़्यादा हुई तो?'

जॉन शर्माते हुए मुस्कराया। 'असल में यह पारिवारिक विरासत है। मेरे दादा इसे दौरों पर पहना करते थे। मैं इसे अपने साथ ले आया, क्योंकि मैं इसे पहनने के लिए मर रहा था। अब मैं पक्का बड़ा साहब लग सकता हूँ।'

वे मारियागढ़ जानेवाली सड़क पर आ गए, जिसके आख़िरी छोर पर एक बार उसने एक पुलिस सुपरिंटेंडेंट के साथ रेस्ट हॉउस में ब्लू फ़िल्म देखी थी, उस रेस्ट हाउस से तामसे ने पूरे देश को निचोड़ने की कोशिश की थी। यह यात्रा उसके लिए बड़ी अजीब थी, वह एक ऐसे अँग्रेज का साथ देने के लिए प्रतिबद्ध था, जो अपने उस दादा की मौत की

तहकीकात करने निकला था जिन्हें दो पीढ़ियों पहले शेर ने मार दिया था। अगस्त्य को यह संसार बड़ा अजीब लग रहा था।

सीता और अगस्त्य आगे बैठे। उसने जॉन एवरी से कहा, 'तुम चाहते हो तो, आगे बैठो, यह कम बेढंगा लगेगा।'

'नहीं पीछे बिलकुल ठीक है, यहाँ पर मैं फ़ैलकर बैठ सकता हूँ।'

एवरी ने डीज़ल इंजन के शोर की वजह से, बड़ी जोर से कहा, 'बड़ा अच्छा हुआ कि मिस्टर श्रीवास्तव ने हमें जीप दिलवा दी।'

अगस्त्य ने सोचा, मुझे इतना औपचारिक बनने की क्या ज़रूरत है, और वह भी जवाब में जोर से बोला, 'मुझे तुम्हारे साथ भेजने का यही मकसद था कि इस यात्रा को सरकारी यात्रा बनाया जा सके। फिर जीप की लोग-बुक में लिखा जाएगा, अंडर ट्रेनिंग सहायक कलेक्टर, जोमपन्ना के दौरे पर।'

जीप के शोर ने उनकी बातचीत के बीच विघ्न डाल दिया, अगस्त्य इससे खुश ही था। वह अपनी सीट पर, पीठ और गर्दन को आराम देकर बैठ सकता था ताकि अपने दिमाग को बेचैन रहने का मौक़ा दे सके। वह जीप में, इस यात्रा के आख़िर तक, अपने आपसे बहस कर सकता है, मुस्करा सकता है, भविष्य के बारे में दिमाग को कुछ नहीं सोचना। चलती हुई जीप में उसे अपनी जिम्मेवारियों से परेशान नहीं होना पड़ता। बाद में वह इसी वजह से बीडीओ बनाना चाहेगा; इस नौकरी में उसे जीप में मिलों लम्बी यात्राएं करनी पड़ेंगी ...रास्ते में उसे पेड़ों पर चढ़ते बच्चे, झोंपड़ी में डाकघर, सूर्यास्त में आकाश की लालिमा देखने को मिलेंगी, जबकि उसका दिमाग़ घूम रहा था, फिर भी वह भयभीत था कि सड़क के आखिरी छोर पर उसे रुक कर काम करना होगा।

वह शहर इतना गंदा लग रहा था कि उसे हँसी आ रही थी। उसे अहसास हुआ कि अगर उसे मदना पसंद आया तो उसकी भयावह उदासीनता की वजह से, उसका अपने गंदे नाले से स्वागत करने से।

यहाँ का नज़ारा भी कुछ इसी तरह का था, झाड़ियों के पीछे टट्टी करते व्यस्क, भगवान का रूप बच्चे, सड़क किनारे टट्टी करते समय जाती हुई जीप को हाथ हिलाते हुए, गाय और आवारा कुत्ते, यहाँ तक कि बेवजह घूमते ऊँट, लोग, कैंसर की तरह बढ़ते लोग ही लोग। लगता है 'राष्ट्रीय या सामजिक स्वच्छता की भावना हमारा गुण नहीं है। हमें फ़र्क़ नहीं पड़ता कि हम कुएँ, नदी या तालाब के किनारे नहाकर गंद फैला रहे हैं। 'बेशक, सबने राष्ट्रपिता, गांधी के बारे में सुना है (अगस्त्य हँसकर याद कर रहा था, लेकिन कुछ के लिए वे चाचा थे ...यह बहुत भ्रमित करनेवाली बात है क्योंकि उनके वंशज भी गांधी हैं) बीसवीं सदी का सुपरस्टार (ख़ास कर हिंदी संस्करण फ़िल्म के बाद जो उन्होंने खचाखच भरे सिनेमाघरों में हाथों की उँगलियाँ फँसाकर बड़े खुश होकर देखी, उन्होंने अपने स्वतंत्रता संग्राम के सितारों पटेल! और नेहरू को, देखा है इसके बाद उनका नज़रिया बदला, और वे उनके बारे में अक्सर बातें करते हैं) जिनका जन्म दिन एक राष्ट्रीय अवकाश होता है। लेकिन इनमें से आधे खुले में टट्टी करनेवाले लोग हताश और अशिक्षित थे, वे गांधी को कभी नहीं पढ़ेंगे, और उनके असूलों को कभी नहीं लागू करेंगे; ये लोग दैनिक अख़बार और कलेक्टर के साथ बीडीओ के प्यार जैसे मसाले की बातों से आगे नहीं बढ़ेंगे। और वे अंधे लोग, जो खुले में टट्टी करते हैं और पढ़ सकते हैं और सड़क किनारे पड़ी टट्टी की जानी पहचानी बदबू आने पर अपनी नाक बंद कर लेते हैं। इसके अलावा, अपने हीरो को समझने की तुलना में उसकी पूजा करना ज़्यादा आसान था। खुले में टट्टी करनेवाले नादान लोग सिखाए सीख सकते; अगस्त्य को पिछली रात की अजीब-सी याद आई, याद आया कि साठे कह रहा था कि जोमपन्ना के पास नक्सलवादी आदिवासियों को समझाते हैं; लग रहा था कि अपनेआप सीखो वाला मंत्र यहाँ काम नहीं करता... कुछ लोगों को दूसरों को जबरन सिखाना पड़ता है, कई बार उन्हें यह समझाना पड़ता है कि उनके पास भी सोचने के लिए अपना एक दिमाग़ है।

जीप मीलों तक फैली फसल के साथ-साथ भाग रही थी। फ़सलों की कटाई शुरू हो गई थी। सीता ने उसके कान की तरफ़ मुँह लेजाकर पूछा, 'ये सब खेत किस चीज़ के हैं?'

अगस्त्य चिल्लाया, 'तुम्हें अपनेआप पर शर्म आनी चाहिए, शहरी मक्कारो,' ये धान हैं। इस बात पर सीता को हँसी आ गई।

उसने उसके गालों के किनारों के नीचे की तरफ़ देखा, उसके भूरे गालों पर धुँधले सलवटों के निशान थे। वे सम्भवतः किसी दौड़ के दौरान दंगों में उन अंग्रेज़ी विश्वविद्यालयों में मिले थे...(फिर उसके दिमाग ने भटकना शुरू किया) या फिर किसी अँग्रेजी शहर में; हो सकता है जॉन एवरी ने विग पहन रखी हो और वास्तव में उसके नीचे सिर्फ चमड़ी हो, इसने उसके औपचारिकता के नीचे छिपे शातिर से अनभिज्ञ हो, शादी की हो। वह मदना में उनकी मौजूदगी में फिर से सोच रहा था। सीता ने फिर से उसके कान में कहा, 'तुम क्यों हँस रहे हो?'

वह चिल्लाया, 'मैं तुम्हें बता दूँगा जीप कब रोकनी है।'

लेवल क्रॉसिंग फिर से नीचे था। उसी तरह अनुमान से ज़्यादा वजन से लदे बेतरतीब ट्रकों और दूसरी जीपों की कतारें, उनके ड्राइवर वक्त बिताने की गरज से सिगरेट पी रहे थे और एक दूसरे को बेवजह गालियाँ दे रहे थे। पिछली बार वह कुमार के साथ बेकार की बातों पर बहस कर रहे थे। वे सभी उतर गए सब लोग एवरी की तरफ़ देख रहे थे।

अगस्त्य ने कहा, 'यह तुम्हारी सोला हैट है, मैंने सन् 1947 के बाद सोला हैट और अँग्रेज को एक साथ नहीं देखा।'

'हाँ, यह थोड़ा बेतुका है,' एवरी ने कहा, फिर उसे उतार कर पीछे की एक सीट पर रख दिया।

ड्राइवर खेतों के किनारों पर लगी झाड़ियों की तरफ़ चाला गया तो अगस्त्य ने उसे जलन की निगाहों से देखा। उसे अपने साथियों की उपस्थिति खल रही थी। लेकिन सबसे नज़दीकी रेस्ट हॉउस अभी भी 45 मिनट की दूरी पर था। उसने कहा, 'माफ़ करना,' और ड्राइवर के पीछे-पीछे चला गया।

एवरी भी उसके पीछे गया। एक झाड़ी के पीछे से एवरी हँसा और उसने कहा,'भारत में कब...।'

कुछ किलोमीटर चलने के बाद, उन्होंने क्षितिज पर गहरे हरे रंग का जंगल देखा। फिर वे सड़क के दोराहे पर बाईं ओर मुड़े। ड्राइवर ने इशारा किया,' राज्य स्टेट हाइवे मारियागढ़ तक जाता है, सर, और फिर बाद में, मद्रास जानेवाले नेशनल हाइवे से जा मिलता है।'

अनजाने में वे जंगल में घुस गए। शुरूआत में बेतरतीब मुहाने पर कुछ सागौन के पेड़। अगस्त्य सोच रहा था, लेकिन यह जंगल अछूता नहीं है। चारों तरफ़ इंसानी हस्तक्षेप के निशान हैं, पेड़ों के टुकड़े, सड़े हुए बांस के पेड़ों के ढेर, पेड़ोंके बीच का फासला दर्शाता है कि कभी यहाँ पर खेती की गई होगी, चिंतित वन विभाग द्वारा लगाए गए ढेरों नए पौधे, और यह सड़क, (जिसके बारे में कुमार ने बताया था कि इन्हें बनाने में इंजीनियरों ने लाखों रूपये कमाए थे) जंगल की देह पर अनंत घावों के निशान थे।

जीप गाँवों, खेतों, जंगल के टुकड़ों, नालों के ऊपर बने ब्रिजों, सड़क किनारे रहने वालों को पार करते हुए चलती जा रही थी। अगस्त्य को लगा उसके कंधे पर कुहनी लगी है। सीता सो गई थी उसका सिर अगस्त्य के कंधे पर सुस्ता रहा था। उसने पीछे मुड़ कर देखा एवरी भी अपने सोला हैट को तकिया बनाए असहज हो सो रहा था।

वे कुछ दुकानों, बस-स्टैण्ड, गांधी की एक और टूटी हुई मूर्ति, शहर किनारे रहनेवालों द्वारा सब्जियाँ बेचने वालों, धूल-गर्द और उत्सुक आँखों से देखनेवाले लोगों के तिलन

नाम के एक छोटे से शहर के रेस्ट हाउस में दोपहर का खाना खाने रुके। वे रेस्ट हाउस के बरामदे में जोमपन्ना के तहसीलदार से मिले। 'आप पाँच बजे के क़रीब जोमपन्ना पहुँचेंगे सर। आप लोगों को रात में जोमपन्ना रुकना पड़ेगा सर। मैंने इंतजाम कर दिया है। फिर कल सुबह आप मरिहंदी को निकल सकेंगे, सर, जीप में आपको वहाँ पहुँचेंगे में सिर्फ़ पैंतालीस मिनट लगेंगे। डाइनिंगरूम की कुछ इंचों की दूरी पर किसी ने हाथ हिलाकर कहा, 'खाना तैयार है, सर, और उन्होंने पीने के लिए पानी भी उबाल दिया है और ...'तहसीलदार ने अपनी ठोडी और भौंहों के इशारे से, अगस्त्य को उसका साथी दिखाया।

वे इतने उदासीन, सुस्त और थके हुए थे कि उनको बातें करना अच्छा नहीं लग रहा था। खाना भव्य था, तेल से सने चिकन (आधिकारिक रूप से उसे रेवेन्यू चिकन कहा जाता है, रेवेन्यू विभाग के लोग अपने टूर पर आनेवाले वरिष्ठों के लिए बनवाते हैं, और उसके लिए उन्हें तुरंत ही इनाम मिलता है) से लेकर अंगूरों तक। तहसीलदार और नीचे काम करने वाले लोग खाने की मेज के चारों तरफ़ मंडराने लगे।

अगस्त्य ने बेमन से कहा, 'क्या तुम लोग हमारे साथ नहीं खाओगे?'

'नहीं सर, मैं तो दिन में दो बार खाना खाता हूँ। नहीं तो मैं ठीक से काम नहीं कर सकता।'

अगस्त्य बड़बड़ाया, यह तो भीख माँगने जैसा सवाल है।

उन्होंने एक जग पानी पीकर खाना शुरू किया, दो ग्लास पानी पीकर एवरी ने कहा,'यह पानी तो जैसे उबल रहा था?'

अगस्त्य हँसा, 'मुझे लगता है तुम्हें यह अच्छा नहीं लगा।' तुम्हें अपने साथ भारतीय पेट लाना चाहिए था। उन में से किसी को हँसी नहीं आई। उन्होंने कम खाया, और

अगस्त्य को खाना अच्छ लगा उसने पेट भर कर खाया, क्योंकि ज़िले भर में वसंत जैसा वाहियात खाना कोई नहीं पकाता होगा।

खाने के तुरंत बाद तहसीलदार ने चाय के लिए पूछा।

अगस्त्य ने सख्ती से कहा, 'नहीं।'

'लेकिन चाय तो तैयार है सर।'

'ओके,' अगस्त्य ने कहा।

वे चाय के लिए बरामदे में बैठे, हरी जाली में से बाहर का संसार देख रहे थे, तहसीलदार प्लेट में चाय पी रहा था। एवरी और सीता ने चाय के लिए बिलकुल मना कर दिया, बल्कि वे बीमार लग रहे थे। अगस्त्य ने कहा, 'मैं समझता हूँ, हमें जल्दी चल देना चाहिए। उसके साथी किसी भी सुझाव के लिए कोई जवाब नहीं दे रहे थे।

तहसीलदार सोच रहा था कि ये लोग सो जाएं, उसने कहा,' कमरे बिलकुल तैयार हैं, सर।'

अगस्त्य ने ड्राइवर से कहा,'क्या हम तुरंत चलें?'

उसने सिर हिलाया, ठीक रहेगा कि हम अभी चलें, सर, हम रोशनी रहते जोमपन्ना पहुंच जाएंगे।'

अगस्त्य तहसीलदार की तरफ़ मुड़ा, 'धन्यवाद। खाने का कितना पैसा हुआ ?' तहसीलदार ने मना करने की गरज में मुँह और आँखें बनाई। वे थोड़ी देर के लिए लड़े। एवरी उनके पास आ गया। उन्होंने जीप की तरफ़ जाने से पहले तहसीलदार की जेब में चश्मे के कवर और पैनों के बीच में पचास रूपये का नोट डाल दिया।

सीता ने जीप में चढ़ते हुए कहा, 'ये अच्छा रहा कि तहसीलदार ने हमरे लिए दोपहर के भोजन की व्यवस्था कर दी।'

अगस्त्य रूखेपन से मुस्कराया। 'ठीक है, यदि हम खाने के पैसे नहीं देते, तो कुछ दिनों में वो कहते कि, सेन भी दूसरे अफ़सरों की तरह है, कभी पैसे नहीं देता। ज़्यादातर ऑफिसर पैसे देते हैं लेकिन पूरे नहीं।'

एवरी ने कहा, 'मैं समझा नहीं।'

अगस्त्य ने कहा, 'दोपहर के खाने के 100 रूपये से ज़्यादा नहीं लगे होंगे, हमने 50 रूपये दिए हैं।' ज़ाहिर है, तहसीलदार ने एक पैसा भी नहीं ख़र्च किया। इसके अधिकार क्षेत्र में बहुत से छोटे व्यवसाय आते हैं, मसलन, छोटी चावल की मिलें, पेट्रोल पम्प वग़ैरह और वे लोग इन्हें पैसे देते रहते हैं। इस व्यवस्था से सब खुश भी रहते हैं।'

वे अगस्त्य के इस तरह के सांसारिक ज्ञान से हैरान हो रहे थे। 'फिर वे जीप स्टार्ट होने के बाद चुप रहे। जोमपन्ना तक उसी तरह के जंगल के दृश्य थे, वे रास्ते भर झपकी लेते रहे, लेकिन अगस्त्य ने देखा कि धीरे-धीरे जंगल घने होते जा रहे थे।

वे पाँच बजे के बाद पहुंचे, जीप के झटकों ने उनकी हड्डियाँ झंझोड़कर रख दी थी और उनके शरीरों में थकान भर दी। नालियों के किनारे भद्दी घास उगी थी, झोपड़ियाँ, साप्ताहिक बाजार की हलचल, साइकिलें, सड़क किनारे बेचनेवाले, आदिवासी लोग विभिन्न रंगों के कपड़े पहने थे, अनाज, गन्ने, कच्चा तम्बाकू, महिलाओं के नकली गहने, बच्चों की छोटी-मोटी चीज़ें, कपड़े वग़ैरह बिक रहे थे, अगस्त्य ने थोड़ी हशीश ली। वे धीरे-धीरे बाज़ार में से निकल रहे थे, फिर उन्होंने तीनमंजिला इमारतों और एक वीडियो की दुकान को पार किया। जोमपन्ना क़स्बा नहीं था लेकिन वह लगभग बारह हजार की आबादी वाला बड़ा गाँव था, जिसमें आधी आबादी आदिवासियों की थी। रेस्ट

हॉउस शहर के किनारे वाले रेतीले इलाके में नया बनाया गया था। क्षितिज पर जंगल दिखने तक लाल रेत थी, इसकी भयावह एकरसता, इमारतों, सड़को, झाड़ियों और पेड़ों से सँवरी थी। सरकार जोमपन्ना में अभी आई है... तीन साल पहले तक यह मदना की अनारक्षित चौकी थी।

सीता ने चिल्लाकर कहा, 'हे भगवान कितना बेढंगा रेस्ट हॉउस है!' वह ऐसा ही था। सस्ती पेस्ट्री जैसा चमकदार गुलाबी और हरे रंग से पुता, जिसमें, सफेद लोहे की ग्रिलें, एक साइकेडेलिक पिंजरा, चमचमाता नया, जिसमें उम्र की गरिमा के कोई निशान नहीं थे। बरामदे में आवभगत पार्टी थी, जिसके इर्द-गिर्द अंग्रेज़ों को देखने के लिए कुछ तमाशबीन खड़े थे।'मैं कहकर उसने बड़बड़ाते हुए अपना नाम बताया, सर, मैं जोमपन्ना का बीडीओ हूँ, जी हाँ, सर, जब आप ट्रेनिंग के लिए आएँगे तब मैं आपको चार्ज दूँगा। और ये। उसने फिर से हल्के से उसका नाम बड़बड़ाया, है सर, यहाँ का सभपति, और ये रेवेन्यू सर्कल इंस्पेक्टर है, जो कल आपके साथ मारियागढ़ में रहेगा। चाय, सर?'

कमरे सामान्य रूप से घरों की तरह सुसज्जित थे। बाथ-रुम में टाइलें लगी थी और नल थे लेकिन नलों में पानी नहीं था।' जब भी पानी आएगा हम कनेक्शन लेने के लिए तैयार हैं, सर, ख़ाकी कपड़े पहने पतले से बातूनी केयर टेकर ने बताया, 'जब तक हम कुएँ का पानी इस्तेमाल करेंगे।'

'तुम यहाँ के खनसामा भी हो? हम सभी शाकाहारी हैं, तुम्हें पता है, ना ?'

'शाकाहारी! फिर भी–' उसने अपनी आँखों की पुतलियों को अगले कमरे की तरफ़ करके झपकाया।

अपनी मंशा जाहिर करते हुए अगस्त्य ने कहा, 'सबसे पहली बात यह है कि कभी यह क्रिश्चियन था, साला बीफ़ खानेवाला, लेकिन जैसे ही यह भारत आया, इसे यहाँ से प्यार

हो गया, और फिर जैनी बन गया...एक दिगंबर जैन ,ये इंग्लैण्ड में भी नंगे घूमते हैं।' केयर टेकर ने उसकी तरफ़ सन्देहपूर्वक देखा।

बरामदे में चाय का इंतजाम था। एवरी और सीता कुछ देर नहीं आये। सफेद धोती कुर्ते में मोटा सभापति, ऊपरी होंठ ढँकी मोटी मूँछें, और छोटी-छोटी साजिश वाली ऑंखें लिए कोई राजनेता लग रहा था... जो साठे के कार्टून की तरह कृष्ण पर भी संदेह करता है। बाद में, बजाज अगस्त्य को इस स्थनीय राजनीतिक संगठन के अध्यक्ष से बचने के लिए कहेगा। बजाज कहेगा, 'इस पर निगाह रखना, इसने जोमपन्ना को अपनी मुट्ठी में कर रखा है। यह एक अकेला आदमी इस इलाके के आदिवासियों का विकास रोकने में बाधा है। '

दिन लुप्त होते आसमान में साफ़ संतरी सूरज। उसके नीचे सलेटी पत्थरों से बनी अनुमान से लम्बी एक ऐसी एकमंजिली इमारत जो बाकी जोमपन्ना से अलग थी। अगस्त्य ने पूछा, यह क्या है?

बीडीओ ने बताया,'यह नया अस्पताल है, सर, इसे पिछले साल एक डच ने बनाया था।'

अगस्त्य को हँसी आ रही थी।

सभापति ने धीरे से लेकिन धड़ल्ले से अंग्रेज़ी में बात की। 'सेन साहब, आप कल मारियागढ़ जाएँगे, जहाँ पर एवरी साहब को शेर ने मारा था?'

'हाँ।'

'लेकिन अब वहाँ कोई शेर नहीं है। यहाँ पर बारह साल पहले एक बार शेर को आखिरी बार देखा गया था।'

'हम यहाँ पर शिकार खेलने नहीं आए हैं,' अगस्त्य मुस्कराया, 'हम तो सिर्फ इस जगह को देखने आए हैं।'

सभापति ने पूछा, ये मिस्टर एवरी आठ हज़ार किलोमीटर की यात्रा करके सिर्फ मारियागढ़ देखने आए हैं?'

बेवकूफ़ी पर बेवकूफ़ी की बातें सुनकर अगस्त्य को फिर से हँसी आ रही थी।

उन्होंने चाय ख़त्म की और कप-प्लेटें नीचे रखे। सभापति ने पूछा,' आप हमें ज्वाइन करने कब आ रहे हैं, सेन साहब?'

'सही तारीख़ तो अब मैं नहीं बता सकता, लेकिन जल्द ही आ रहा हूँ।' फिर वे खड़े हो गए।

बीडीओ ने कहा, हम अब कल मिलेंगे, सर। अब हम आपसे छुट्टी चाहते हैं, सर, और वे चले गए।

अगस्त्य ऑफिस की असंख्य चीज़ों से खुश था। कोई ऑफिसर कहीं नहीं जाएगा, वह हमेशा अपनी छुट्टी लिया करेगा। उनमें से कोई भी रात में कहीं ओर नहीं रहा था, वे हमेशा रात को वहीं रुकते थे।

उसकी अतृप्त भावना के लिए छुट्टी तो शायद चूतड़ के छेद की जगह एक अच्छा शब्द इस्तमाल करने का विकल्प था: हम एक रात को रुकेंगे, सर, मैं आपकी छुट्टी ले जाऊँगा। वह जोर से हँसा, जिससे दूसरे लोग उसे देखने लगे। उस पर फिर से ख़याली भावना हावी हो गई। अब वह यहाँ एक असाधारण से रेस्ट हाउस के बरामदे में बैठा जोमपन्ना जैसी महत्वहीन जगह पर क्या कर रहा था, जिसके दाईं तरफ़ हॉलैंड का अस्पताल है, और जिसके आगे लाल रेत पर एक बरगद के पेड़ के नीचे एक बड़े से

गाँव के कुछ तमाशबीन अंग्रेज़ों को देखने के लिए इंतजार कर रहे थे .. और कल वह उस अंग्रेज के साथ दूर जंगल में जाएगा जिसके बहुत से पेड़ों को काटकर जगह साफ़ कर दी गई है और जहाँ पर पचास साल पहले किसी शेर ने अँग्रेज का शिकार बनने से पहले उसे ही मार डाला था। और फिर जल्द ही अंग्रेज़ और उसकी भारतीय पत्नी समय बिताने के लिए चार घंटे तक बातचीत करके उसे दिखाई देंगे, और दुनिया बेतरतीब तरीके से घूमती रहेगी। दिल्ली से अट्ठारह ट्रेन घंटे दूर (नहीं, इससे भी ज़्यादा, यह मदना नहीं है, जॉपना से छबीस घंटों के लगभग), दिल्ली में, उसके चाचा के बाद होंगे, और ध्रुबो हजारों ऑफिस वालों की तरह चमड़ी को परेशान करनेवाले कपड़ों में अपने ऑफिसों से बँधे होंगे; और बाइस-घंटे दूर, लेकिन उत्तर-पूर्व में, कलकत्ता में, उसके पिता एक अपना औपचारिक कार्य पूरा कर चुके होंगे, और शायद इस समय लें में टहलते हुए अपने बेटे के बारे में सोच रहे होंगे, और नीरा बाहर गश्त पर गई होगी, या अपने पत्रकार दोस्तों के साथ भीड़ भरे कैफे में चाय पर चाय पी रही होगी।

सूरज जंगल की तरफ़ ढ़ल गया। सलेटी-नीले आसमान के नीचे अँधेरे में रोशनियों की बिंदियाँ दिखने रेस्ट हाउस के गेट के बाहर गन्ने के जूस की दूकानों की जर्जर मेजों पर सभी लैम्प जला दिए गए थे, और नंगे बल्बों पर शोसित आदिवासी कुम्हारों द्वारा बनाएगए मिटटी के नक्क़ाशीदार शेड लगा दिए गए थे ('जातीय',ध्रुबो ने इन शेडों को देखकर इन्हें रमणीय कह कर इनकी अवहेलना की होती)। आवारा लोग गायब हो गए थे। बरामदे से दुकानें, दिल्ली के किसी नए होटल (जिसका अजीब भारतीय नाम होगा और जिसे विदेशी ज़ुबान में बड़े बेतरतीब तरीके से बोला जाता होगा, और जहाँ पर कॉफ़ी की कीमत इतनी होगी जितनी मदन की आमतौर पर पहनी जाने वाली कमीजों की होती है) के छत वाले रेस्तरां की तरह सुन्दर दिखाई दे रही थी, दिन छिपने की वजह से यह चमकदार परिवर्तन हुआ था... लैम्पों की वजह से मंद रोशनी ने गंदगी को आकर्षक दिखने का भ्रम पैदा कर दिया था।

फिर स्टालों पर संगीत बजना शुरू हो गया, तो सिर्फ एक स्पीकर लेकिन पूरे वॉल्यूम में था। हमेशा की तरह हिंदी फिल्मी गाने बज रहे थे भले ही वहाँ की आधी आबादी उन्हें

नहीं समझ पा रही थी। 'मेरे अंदर बसंत की बहार आ गई थी और मैं उसे अचरज की निगाहों से देख रहा था।' एक लयबद्ध ताल, इतनी साफ़ आवाज जैसे बरसात के बाद नज़र ज़्यादा स्पष्ट हो जाती है, और वह याद कर रहा था कि उसने यह गाना पहले\ कब सुना था। फिर उसे याद आया, स्कूल के आखिरी साल में गर्मियों की एक साफ़ शाम को, वह और प्रशांत दार्जिलिंग में पहाड़ की सड़कों पर सैर कर रहे थे; प्रशांत चिंताग्रस्त हो रहा था... वह अपनी समलैंगिकता का खुलासा करने के बाद असमंजस में पड़ा हुआ था, किन्हीं कारणों से उसके संबंधों को लेकर अगस्त्य काफी प्रभावित था, कंचनजंगा एक तस्वीर की तरह बहुत चमकदार और दो-आयामी था, उसी समय तिब्बती लड़कियों का एक ग्रुप फुर्तीली कदमताल में इस गाने को गुनगुनाते हुए उनके पास से निकला, वे अपने आप में खुश थी कि वे इस उदासीन सी जगह पर विदेशियों की औलाद हैं। अगस्त्य इस धारणा से अभिभूत हो रहा था कि उसके अतीत में निरंतरता थी, मसलन दार्जिलिंग में कंचनजंगा, और मरियागढ़ में उसकी तस्वीर, दिल्ली में दुर्गा और मदना में जगदम्बा। इस तरह वह अपने अतीत को व्यवस्थित करने की कोशिश करेगा, ताकि उसे क्रमबद्ध किया जा सके, और इस तरह वह दुनिया से गायब होने वाली तस्वीरों की नकल करता रहेगा।

उसके पीछे बरामदे में कुछ हलचल हुई, और वह चलने के लिए तैयार हो गया– वे एवरी दम्पति थे। 'हम थोड़ा सो गए थे,' सीता ने हँसते हुए कहा, अगस्त्य को सहवास के बाद की विचित्र हँसी लगी उसकी, उसने फिर से देखा कि किसी के साथ होने से कितना अच्छा लगता है, कैसे सेकिंडों में उसका दिमाग गंभीरता से छिछोरेपन पर उतर आया।

अगला गाना तेज ताल में, सुखद और पैरों की थपथपाहट पर था। इस आसमान तले मेरे जैसा प्रेमी कोई नहीं। मैं तुम्हारे कूल्हों का दूर तक पीछा करूँगा। उसने देखा कि एवर दम्पति कुर्सियों पर काली छाया की तरह बैठ गए। गाने के साथ-साथ शाम सुहावनी थी, पास से गुजरती हुई साइकिलों की चरमराहट, कहीं दूर से जीप की आवाज, केयर टेकर के घर से धीमी बातचीत की आवाज, घने होते धुंधलेपन में कहीं से हँसी की आवाज आ रही थी।

'कितनी शांति है, है ना,' सीता ने अचानक से कहा,'और बिलकुल अलग सा लग रहा है।'अगस्त्य को आभास हो रहा था कि वह उसकी तरफ़ मुड़ रही थी। 'मेरा मतलब है, जब तुम कलकत्ता से यहाँ आये तब तुम्हें अलग सा नहीं लगा? भले ही कलकत्ता भी बहुत बेकार है।'

अगस्त्य ने पूछा, 'क्या तुम कलकत्ता बनाम बाकी के भारत के बीच लड़ाई करवाना चाहती हो? 'कलकत्ता की एक आत्मा है... से बाहर निकलती आत्मा।' 'चूची',कहने से पहले वह रुका, फिर एवरी ने बोलते हुए उसे चौंका दिया, उसे लग रहा था कि वह बाकी के दो दिन असमंजस में रहेगा और चुप रहेगा।

'तुम ठीक कह रही हो सीता, यह जगह दादाजी के खतों में लिखी बातों जैसी नहीं हैं।' मैं इसे बिलकुल वैसे की उम्मीद तो नहीं कर रहा था, लेकिन फिर भी, यह कुछ आश्चर्यजनक है।'

अगस्त्य अँधेरे में गंभीर दिखने की कोशिश कर रहा था। सीता के साथ वह ज़्यादा बातूनी और सहज हो जाता था, क्योंकि वे एक जाति के थे, महानगरों के भारतीय, जो हमबर्गर खाते थे, और जानते थे कि आरटू डीटू कौन था। लेकिन एवरी भिन्न था, लगभग दूसरी प्रजाति का। अकेले उच्चारण को छोड़ उनमें कोई समानता नहीं थी, उनकी भाषा भी एक जैसी नहीं थी। अगस्त्य को अपने मानस पटल पर साठे दिखाई दिया, जो कह रहा था हर एक भाषा एक संस्कृति थी। और दो पीढ़ियाँ पहले एक अँग्रेज कलेक्टर और डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने भारत के दूर दराज कस्बे से ख़त लिखे थे। और जॉन एवरी ने उन्हें पचास साल बाद पढ़ा, और अपने दादा की कहानियों के बारे में सुना, फिर वह एक भारतीय लड़की से मिला, और उसने किताबों और दूसरे देशों की फ़िल्मों द्वारा एक देश को महसूस किया, और फिर कुछ बेचैन होकर और पगला कर यात्रा करने निकला।

लेकिन अगस्त्य ने कुछ नहीं कहा, अन्धेरा एवरी की अकड़ को भंग कर रहा था, और अगस्त्य को लग रहा था कि इसका एक शब्द भी मूड ख़राब कर सकता है। 'मेरे दादा लगभग हर रोज घर पर ख़त लिखा करते थे और उनके खतों में रुचिकर विवरण होते थे, ज़िले में जीवन, क्लब, जिससे भी वे मिलते थे, किसने क्या कहा... वे सभी चीजें आज ऐतिहासिक महत्व की लगती हैं... उदाहरण के लिए, उन्होंने कुछ ख़तों में लिखा, कि तुम अख़बारों में भारत के असहयोग के बारे में और अँग्रेजी सामान को जलाने के बारे में पढ़ते हैं, ऐसा किसी दूसरे देश में होता होगा, मदना में ऐसा बिलकुल नहीं होता। उन्होंने अच्छी तरह से लिखा है... उन्हें यह जगह और यहाँ का काम पसंद था। उन्होंने अपना आखिरी ख़त यहाँ, जोमपन्ना के किसी निरीक्षण बंगले से लिखा था। लेकिन मैं वो चीज़ें यहाँ नहीं देख रहा हूँ, एवरी के हाथ अँधेरे में कोई डिजाइन बना रहे थे, मैं इस जगह को उनके ख़तों के अनुरूप नहीं पा रहा।'
'तुम्हारे दादा ने मदना क्लब के बारे में लिखा था क्या तुम वहाँ गए थे?'

एवरी ने कहा, 'हाँ,' और वे तीनों हंसने लगे।

सीता ने कहा, 'यह बहुत उदास जगह है, लेकिन यह काफी दिलचस्प है।'

एवरी ने कहा, 'मुझे लगता है, यदि मेरी दादी ज़िंदा होती तो वह भी यह जगह देखना चाहती। सीता और मैं भारत में बंबई के लिए भी आ रहे थे।'

सीता एकाएक हँसने लगी। 'मैं समझती हूँ, हमें इस युवक, जॉन, से कहना चाहिए कि वह इतना हैरान ना होए। 'वह अगस्त्य की तरफ़ मुड़ी और कहा, मैंने और जॉन ने अभी शादी नहीं की है लेकिन हम जल्द ही शादी करनेवाले हैं। हम बंबई जाएंगे ताकि यह मेरे माता-पिता से मिल सके और मैं उन्हें आश्वस्त कर सकूँ कि यह पाकीबाशर नहीं है, जैसा कि वह समझती है, और यह कहकर वह किशोरों की तरह हँसी। फिर मदना तो सिर्फ एक ट्रैन दूर था, इसलिए इसने कलेक्टर को लिखा, और यहाँ पर हमने कहा कि हम शादीशुदा हैं, क्योंकि यही एक आसान तरीका था। सच में यदि जॉन दो पीढ़ियां बाद में

जन्मा होता... तो वह राज में अच्छी तरह फ़िट होता। मैं इसे बता रही थी कि मदना तो महज समय बर्बाद करना है। अब यह पछता रहा है, है ना।'

'नहीं, बिलकुल नहीं,' एवरी बुदबुदाया। वह चुप हो गया, शायद सीता की स्पष्टता की वजह से, लेकिन कुछ न कुछ और था जरूर। अँधेरे में भी अगस्त्य को उन दोनों के बीच कुछ तनाव लग रहा था; शायद वे किसी बात पर लड़े हों,या शायद, उसका पेट उपहासात्मक हँसी से भारी हो रहा था, भारत भी उन्हें ही मिला था।

वे उसे हिलता हुआ देख रहे थे; उसने घबराहट से पूछा, तुम मुझे अपने बारे में कुछ क्यों नहीं बताते, तुम एक-दूसरे से कहाँ मिले थे?'

थोड़ी देर चुप्पी रही, सीता की चिढ़ और हँसी ग़ायब हो गई थी, फिर उसने सवालिया तौर पर गंदी सी आवाज में कहा, 'लंदन में और कहाँ? मैं लंदन स्कूल ओफ़ इकोनॉमिक्स में पीएचडी करने एल्फिंस्टोन गई थी। जॉन भी वहाँ था। अब यह ब्रिटिश काउंसिल में शामिल हो गया है।' अगस्त्य को ब्रिटिश काउंसिल के बारे में इतना ही पता था कि उसने और मदन ने अपने कॉलेज के शुरूआती दिनों में उसकी लाइब्रेरी से किताबें चुराई थी।

केयरटेकर उनके पीछे पीछे हो गया और लाइटें जला दी। 'नहीं, नहीं, इन्हें बुझा दो, अगस्त्य ने झल्लाहट से कहा। उसने ऐसा ही किया, और उनसे चाय की पूछी। लेकिन बरामदे की रोशनी उन्हें परेशान कर रही थी, जिससे उनकी अंतरंगता भंग हो रही थी। 'मुझे गन्ने का जूस चाहिए,' अगस्त्य ने कहा, 'क्या तुम दोनों को चाय चाहिए?' सीता को भी गन्ने का जूस चाहिए था, एवरी को कुछ नहीं लेना था।

वे जूस पीते समय और खाना खाते समय, बेढंगेपन से बातें करते रहे, खासकर अगस्त्य और सीता, एवरी बीच बीच में एक-आध शब्द बोल रहा था, खाना और जूस दोनों ही अच्छे थे (एवरी ने कहा,'मुझे अच्छा लगा कि तुमने उसे बता दिया कि हम शाकाहारी हैं, 'अगर अगला खाना भी दोपहर के खाने जैसा ही होता तो मेरी जान पर

बन गई होती ')। अगस्त्य चाह रहा था कि एवरी और बातें करे, लेकिन उसे लग रहा था कि उसे कैसे सक्रिय करे; और वह हैरान हो रहा था कि एवरी ने बंबई से मदना की ट्रेन यात्रा कैसे झेली।...ट्रेन में हर कोई हर किसी के बारे में जानना चाहता है। शायद सीता सवालों को टालती रही होगी और एवरी खिड़की से बाहर देख रहा होगा।

अगस्त्य की मदना में पहली रात दूसरे कमरे में। इस कमरे की छत नकली नहीं थी। वह बीडीओ के रूप में, सोच रहा था, केयरटेकर ने खाना ठीक पकाया, इतना बुरा नहीं था। उसने मदना में अपनी पहली शाम को याद किया, जब वह वसंत के खाने के ऊलजलूलपन से हैरान हो गया था। एक सादे अच्छे खाने से भी इंसान खुश रह सकता है, उसने सोचा, खाना कितना अच्छा या जानवरों जैसा हो सकता है। मदना में उसे पहला झटका वहाँ के खाने से लगा, और फिर मच्छर और गर्मी। शायद, वह बहुत थका देनेवाला दिन था, लेकिन वह रात को अच्छी तरह सोया।

अगले दिन सुबह सवेरे, वह और एवरी चाय के कप लिए बरामदे में बैठे जोमपन्ना की शांत जर्जरता देख रहे थे। अगस्त्य ने कहा, 'तुम्हारे दादा के समय, जंगल बहुत नजदीक रहा होगा।' तुम लाल रेत दिखने तक जंगल काट देते हो। फिर उस लाल रेत पर तुम निर्माण करते रहते हो जब तक कि एक वीडियो पार्लर न बन जाए।

एवरी ने बताया था, सीता की तबियत ठीक नहीं है, उसने सुझाव दिया वे उसके बिना ही मरिहंदी जाएंगे अगस्त्य का अनुमान था वह डाउन होगी, या फिर उसे पीएमटी होगा। उसे याद आया, जब बहुत साल पहले, नीरा ने उसे पहली बार मासिकधर्म के तनाव के बारे में बताया था, तब वह स्त्री जाति की परेशानियाँ जानकर कितना परेशान हो गया था।

एवरी ने कहा, 'हाँ, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि यहाँ पर कोई वीडियो की दुकान होगी।' अगस्त्य ने कहा, यह पूरा जिला ही अचरज भरा है। 'यहाँ पर मेरे पहले दिन ही, मुझे पुलिस सुपरिंटेंडेंट, कुमार, ने अपने वीडियो पर एमेडियस और उसी तरह की फ़िल्में

दिखाने के लिए बुलाया था।' एवरी एकदम हैरानी से देख रहा था। 'लेकिन यहाँ जोमपन्ना में हिंदी फ़िल्में ज़्यादा लोकप्रिय होंगी, और लुके-छिपे ब्लू फ़िल्में देखी जाती होंगी,' अगस्त्य ने जोड़ा। उन्होंने बाहर सामने गन्नों की दुकानों, और लदने को तैयार, चोरी किये हुए बाँस और सागवान के धूल भरे टुकड़ों की तरफ़ बाहर देखा।

एवरी ने एकाएक कहा,' यह हैरान करनेवाला दृश्य है, यहाँ का एक वीडियो।'

'हाँ, यह ऐसी जगह है।' एवरी एक तरह से विवेकहीन महसूस कर रहा था, जोमपन्ना का बेतुकापन उसे थोड़ा चिड़चिड़ा बना रहा था। 'जोमपन्ना ब्लॉक की लगभग पैंसठ प्रतिशत जनसंख्या अनपढ़ है... एक ब्लॉक ज़िले का लगभग छठा या सातवाँ हिस्सा होता है। लेकिन ब्लू-फ़िल्म की वीडियो देखने के लिए दिमाग होना या पढ़ा-लिखा होना ज़रूरी नहीं है। तुम्हारा असली ताज्जुब तो सिर्फ इतना है...' इसके लिए वह शब्द खोज रहा था, 'तुलना, ठीक है, कि नहीं? और फिर वह एवरी की गंभीरता से घबरा गया (फिर उसे 'संभालने' के लिए उसने मदन का किस्सा शुरू किया),' लेकिन इसलिए ही तो भारत एक उत्कृष्ट और चित्ताकर्षक विरोधाभासों का देश है, जहाँ आत्मा का हिमालय गोबर से बाहर निकलता है, और लोग शिव का लिंग लिए हाथों में हाथ डाले नृत्य करते हैं।' एवरी ने उसकी तरफ़ निस्तेज श्रीवास्तव की तरह भौंहें चढ़ाते हुए देखा।

जल्द ही वे मरिहंदी के लिए निकल गए, एवरी ने एक छोटा सा बदरंग-कैनवस बैग ले रखा था। सीता उन्हें अलविदा कहने बाहर आई और उसने कहा, 'शाम को मिलते हैं।' मरिहंदी का एक घंटे का सफ़र था, ज़्यादातर चढ़ाई थी।

यहाँ पर जंगल का अतिक्रमण ज़्यादा नहीं हुआ था, लेकिन जंगल बहुत अच्छा भी नहीं था। मरिहंदी सिर्फ एक गाँव था, बच्चे नंगे घूम रहे थे, गोबर के कंडों का धुआँ आसमान छू रहा था। पहले दिन वाला रेवेन्यू सर्कल इंस्पेक्टर, हल्का-नीला शर्ट और क्रीम रंग की धोती पहने, इंस्पेक्शन बँगले के बरामदे में खड़ा था। यह बँगला 1940 के बाद बनी

इमारत थी। एवरी ने कहा, 'मुझे लगता है अब यहाँ पर मेरे दादा के समय का कुछ भी नहीं है।'

रेवेन्यू सर्कल इंस्पेक्टर उन्हें बातें बता रहा था (वह खड़ा होकर बोल रहा था,जबकि वे बरामदे में बैठे चाय पी रहे थे) और अगस्त्य उसका अनुवाद कर रहा था। वह जगह जहाँ रिचर्ड एवरी मरा था, केवल एक घंटे की पैदल दूरी पर थी और वहाँ चलना भी कठिन नहीं था। उन दिनों यहाँ पर पानी जमा होता था, इसलिए यह जानवरों के लिए पानी पीने की जगह हुआ करती थी। जाहिर है, अब यहाँ पर बाघ नहीं थे, पानी भी नहीं था और कई जगहों पर पेड़ भी नहीं थे। इंस्पेक्टर ने कहा, पचास साल जगलों की जगह के लिए बहुत लम्बा समय होता है। लेकिन हमले की जगह एक स्मारक के रूप में चिह्नित की गई थी, शायद वे उसे पहले देख लें, और फिर कुछ भी जो साहब देखना चाहें। वे चाय के बाद चल पड़े, अगस्त्य को बहुत बुरा लग रहा था। उनके साथ इंस्पेक्टर था और गाइड के रूप में एक कूल्हों को झुलाता हुआ कुछ कामुक दिखनेवाला पतला सा किशोर आदिवासी था, जिसे मीलों चलने का अनुभव था। शायद एवरी ने अगस्त्य का मूड भाँप लिया था, उसने कहा, 'मुझे नहीं लगता हम कोई ख़ास रोमाँचक चीज़ देखने जा रहे हैं, वह तो सिर्फ एक पत्थर है।' लेकिन लगता है, यही यात्रा का अंत है। हालांकि तुम मुझे पहले दिन ही कह सकते थे कि यह शहर के रॉस, कब्रिस्तान में है। क्या आपको पता है कि इसे रॉस क़ब्रिस्तान कहा जाता है? मैंने रॉस के बारे में पूछा, कोई नहीं जानता था।

वे गाँव के बीच से होकर निकले, वहाँ की मिट्टी ऐसी थी कि बरसात में कीचड़ बन जाती होगी, वे झोंपड़ियों के अंदर झाँकते हुए जा रहे थे, रास्ते में एक सरकारी सस्ती दुकान थी, हर कोई उनकी तरफ़ ताक रहा था, कुछ मज़ाक़िया हँसी हँस रहे थे। कुछ लोग इंस्पेक्टर को सलाम कर रहे थे, कुछ गाइड से ऐसी बातें पूछ रहे थे कि हँसी आ रही थी, सब जगह बच्चे उनका पीछा कर रहे थे। बीच शरद ऋतु का सूरज उनके कंधों को सुहावनी गर्मी दे रहा था। कुछ पलों बाद ही अगस्त्य को लगा कि एवरी उससे कुछ बात कर रहा था, और लयबद्ध आवेग से अपने कैनवस के जूतों को हल्के भूरे रंग की रेत पर पड़ते देख रहा था। एवरी को थोड़ा पसीना आ गया था।

अगस्त्य ने पूछा,'तुम अपना सोला हैट क्यों छोड़ आए?'

एवरी मुस्कराया, 'कहीं बाघ मुझ पर भी हमला ना कर दे।'

वे खेतों के बीच में से जा रहे थे, गाइड बीच बीच में उनके लिए रुक रहा था। अगस्त्य ने पहले ध्यान ना देने के लिए थोड़ा क़सूरवार समझते हुए पूछा, 'जब से तुम और सीता मदना में आए हो, तुम वहाँ पर क्या कर रहे थे?

'पहले दिन, मैंने कब्रिस्तान के आलावा,मेरे दादा के बारे में कुछ जानने के लिए कलेक्ट्रेट का रिकार्ड देखा। असल में, उस दिन वहाँ मुझे दूसरे संदर्भ में कुछ मिला। फिर दूसरे दिन मैं और सीता गोरपाक गए,' एवरी अचानक मुस्कराया, 'मेरे दादा ने अपने खतों में गोरपाक का की बार जिक्र कर रखा था। जब वे जोमपन्ना शिकार करने नहीं जाते थे, तब वे गोरपाक जाकर "सुस्ताते" थे। उन मंदिर की दीवारों को देखकर आराम फरमाते थे। लेकिन जब मैंने खुद आकर यह जगह देखी तब वह मेरे दादा मुझे और भी अच्छे लगने लगे।'

उन्होंने चारे के खेत पार किए, उनके चारों तरफ़ बराबर अंतराल में लगे विशाल आमों के पेड़ ऐसे लग रहे थे जैसे कि शतरंज खेलनेवाले विशाल लोग थककर खड़े हों; कुछ सौ मीटर आगे झाड़ियाँ दिखनी शुरू हो गईं फिर छोटा-सा जंगल शुरू हो गया। इन्स्पेक्टर ने उनकी तरफ़ मुड़ कर कहा, 'साठ साल पहले यह बढ़िया जंगल रहा होगा, सर।' ज़ाहिर है, अब यहाँ पर कोई भी शिकार खेलने नहीं आता, और सब जानवर यहाँ से गायब हो गए, इसलिए मैं नहीं समझता कि कोई हमें बता पाए कि साहब के दादाजी किस रास्ते गए थे। और अब जंगल भी इतना घना नहीं रहा। अब यहाँ पर बहुत से रास्ते बन गए हैं, जिनसे होकर आसपास के गाँवों के आदिवासी जोमपाना जाते हैं। हर रोज़ नए रास्ते बनते रहते हैं। अगस्त्य ने अनुवाद करके बताया, साहब यह न समझ लें कि जिस पगडंडी पर हम चलेंगे उस पर उनके दादाजी चले होंगे।' इन्स्पेक्टर पचास के लगभग

था। थकावट की वजह से ढीला लग रहा था। अगस्त्य ने उसे देख सोचा, बेचारा आदमी, इसके बोस ने अभियान का जिम्मा इस पर डाल दिया, और इसको बेमतलब के अभियान से जूझना पड़ा, लेकिन किसको दोष दिया जा सकता था, ये तो एवरी और श्रीवास्तव ही थे, एक ख्याली और दूसरा उदार।

एवरी ने अगस्त्य की तरफ़ मुस्कराते हुए कहा, 'पहले दिन हम एक क्लब भी गए थे। मेरे दादा ने खतों में, पारिवारिक पार्टियों... नृत्य और नाटकों, के लिए एक क्लब के बारे में लिखा था।' थोड़ी देर बाद वह फिर बोला, गोरपाक में मुझे एक वन विभाग का आदमी मिला था, वह तुम्हें जानता था... दुबे नाम था उसका,'फिर अगस्त्य को अचानक याद आया कि दो शाम पहले मोहन को अलवर के लिए निकलना था और उसने उसके निकलने से पहले उससे मिलने का वायदा किया था, वहाँ मोहन ने पूरी शाम उसका इंतजार किया होगा और, वह जोमपन्ना में बरामदे में बैठा मुआयना कर रहा था, उसने मदना के रेस्ट हाउस में फोन किया होगा, तो उसे पता चला होगा कि अगस्त्य बिना कुछ बताये जोमपन्ना निकल गया। उसे वन विभाग के किसी व्यक्ति के पास एक ख़त लिखकर दे देना चाहिए था, जिसमें कोई बहानेबाजी नहीं लगती वह अपनी मजबूरी बता देता। सीता को इस पर कुछ नहीं बोलना था... तुम्हें पता है यह बंबई से बाहर के देश को कम ही जानती है... और दुबे गोलमोल आदमी था। वह कह रहा था कि सेक्स तो हिन्दू का एक हिस्सा है,' एवरी कुछ दार्शनिक बातों को व्यक्त करने के लिए हाथों का इस्तेमाल कर रहा था, 'काम और आनंद, हिन्दू विचारधारा का हिस्सा हैं... इस तरह की बातें बता रहा था कि आप सुन नहीं सकते।'

ठीक है, हमने बीच का एक टुकड़ा छोड़ दिया। 'मुझे लगता है कि विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए यह एक आध्यात्मिक नौटंकी है,' वह हँसा, नहीं तुम ठेठ विदेशी नहीं हो। नहीं, मैं वास्तव में नहीं जानता कि हिन्दू मंदिर में इतना सेक्स क्यों है, लेकिन देखने के लिए बहुत मजेदार है, नहीं– निश्चित तौर पर तुम्हारे दादा इससे सहमत होंगे। इस हिन्दू जीवन के आनंद के व्यापार के अलावा, एक दूसरी थियरी यह है कि कारीगरों को अपना कौशल दिखाने का मौक़ा मिला, और किसी ने कोई एतराज नहीं जताया

क्योंकि उन्होंने बहुत बढ़िया मूर्तियां बनाई, हा, हा। नहीं, जहाँ तक मुझे पता है, इसके लिए कोई निर्णायक स्पष्टीकरण नहीं है।'

जंगल में, साल और सागवान के छोटे पेड़, झाड़ियाँ, साधारण झाड़-झंखाड़, और कुछ जगह आदिवासियों ने पेड़ों को जलाकर खेती के लिए साफ़ कर रखी थी। ट्रेक पर सूरज की छाया पड़ रही थी वे अचम्भित नजरों वाली काली-ताँबई रंग वाली आदिवासी महिलाओं के ग्रुप के पास से निकले। कभी-कभी अजीब सी चट्टानें, या चारमंजिल ऊँचा और पाँच घरों जितना चौड़ा बहुत पुराना, बेढंगा बरगद का पेड़ दिख जाता था। वे बहुत जल्दी-जल्दी पगडंडी बदल रहे थे। फिर आदिवासी रुका और उसने दो पेड़ों की छाया के बीच में, पगडंडी से कुछ फिट की दूरी पर एक पत्थर की तरफ़ इशारा किया। उसने बताया 'यह है वो,' स्लेटी-सफेद पत्थर, ऐसा दिखाई दे रहा है जैसे इसे अक्सर धोया जाता हो, स्थिर और सुंदर दिख रहा है।'

'रिचर्ड एवरी की याद में, सन् 1917 -1923 तक, मदना के कलेक्टर और डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, इस जगह पर 22 अगस्त 1923 को शेर ने हमला किया था और उन जख्मों के कारण उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें मदना के रॉस क़ब्रिस्तान में दफनाया गया था। एक निष्पक्ष और दयालु प्रशासक, जिस जगह वह रहता था उसे बहुत प्यार करता था। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे। यह मेमोरियल स्टोन ,1923 में मदना ज़िले के सिविल प्रशासन द्वारा खड़ा किया गया था। ' एवरी ने कैमरा लिया और उसे क्लिक करना शुरू किया।

'अगस्त्य ने कहा, आख़िर तुम एक स्थानीय पर्यटक हो।'

एवरी, इंस्पेक्टर, अगस्त्य और मुस्कराते हुए आदिवासी की तस्वीर लेने के लिए स्थिर हो गया और उसने पूछा, तुम्हे क्या लगता है, मैंने इस बैग में और क्या ले रखा है?'

'ओह, बहुत सी चीज़ें एंटी डाइसेंटरी गोलियां, एंटी-सनबर्न लोशन, एक हवा वाली सोला हैट, शायद एक क्रिकेट बल्ला, एक कप चाय, रानी या शायद डायना की तस्वीर।

एवरी हँसा और क्लिक करता रहा। एक बार जब मैं शुरू कर देता हूँ फिर रुकता नहीं हूँ। इसलिए मैंने रास्ते में एक भी शॉट नहीं लिया।'

पगडंडी की नारंगी रेत, कुछ पेड़, साल और सागवान, कुछ गज की दूरी पर एक और बरगद का पेड़। सड़ी हुई पत्तियाँ, पेड़ के ठूंठ, कचरा, बाँस का एक अनोखा झुरमुट, खुले मुँह आकाश की तरफ़ निहारते हुए पास से गुजरते कुछ आदिवासी...दो एवरियों के लिए रास्ता बंद।

'यहाँ पर चाय का कोई इंतजाम नहीं, नहीं है ना?' अगस्त्य ने आतुर होकर पूछा।

'नहीं, सर,' इंस्पेक्टर ने दृढ़ता से कहा, 'हम थोड़ी देर के लिए यहाँ आराम कर सकते हैं, सर, फिर वापसी का एक छोटा चककर रास्ते में हम देख सकते हैं कि झरने के पानी का छेद कैसा था।

एवरी एक पत्थर के सहारे पीठ लगाकर बैठ गया। भिन्न-भिन्न पक्षियों की आवाजें, धूप और छाँव, हवा और जंगल की सरसराहट सुनाई दे रही थी। एवरी आसमान की तरफ़ निहारते हुए कह रहा था, 'मेरे दादा मदना में बहुत खुश थे।

अगस्त्य ने कहा, 'और अब तुमने यह जगह देख ली, तुम हैरान हो रहे होगे कि कैसे।'

एवरी हँसा, वह उस पत्थर को छूने के लिए मुड़ा, फिर उसने खुद आधा शिलालेख जोर से पढ़ा। 'लेकिन मैं अब महसूस कर रहा हूँ, कि उनके खतों में सब कुछ विस्तार से लिखने के बावजूद जीवित स्थान का कोई जिक्र नहीं है। वास्तव में वे सभी विवरण किसी न किसी तरह आगे इसे धीमा कर देते हैं। जाहिर तौर पर डाइनिंग-रूम में एक

बड़ी घड़ी थी, और उनके अधिकतर ख़त, ‘अब चार बजे हैं और बलदेव मेरे लिए चाय लाया है,’ ‘अब सात बजे हैं, और नटवर जिसे कभी मेरे सही जूते नहीं मिले, रात के खाने ने बारे में पूछने के लिए दरवाज़े पर खड़ा है’, से शुरू किए गए। सब कुछ स्थिर है, जैसे कि रिचर्ड एवेरी हमेशा मदना में, अपने कर्मचारियों और क्लब के साथ संतुष्ट रहते थे, और जोमपन्ना के पास शिकार खेलने जाते और गोरापाक में आकर आराम करते थे। जैसे कि कुछ भी कभी नहीं बदला... ख़त तस्वीरों की तरह हैं, इसलिए मैं बहुत उत्सुक था।

अपने और दादा के बारे में सजग रहस्योद्घाटन; फिर झरने के पास, और फिर वही हलचल, वापसी में खेतों और गाँव से होकर गुज़रना, सब थक गए थे, इंस्पेक्शन बंगले पर चाय, इंस्पेक्टर और गाईड के प्रति आभार जताना, वास्तविक हँसी (एवरी ने फुसफुसाते हुए पूछा। 'इंस्पेक्टर को 'क्या हमें टिप देनी चाहिए, बिलकुल नहीं’ वह अपमानित महसूस करेगा, इस लड़के को देनी चाहिए'), उन्होंने ड्राइवर को उठाया और जोमपन्ना के लिए चल दिए, और तीन बजे के बाद वहाँ पहुँच गए। सीता चाय और इलेस्ट्रेटेड वीकली लिए बरामदे में खड़ी थी। एवरी ने उत्साहित होकर सीता को सब कुछ बताया, देर होने की वजह से दोनों ने दोपहर के खाने के लिए मना कर दिया।

उस शाम फिर से बरामदे में, गन्ने की स्टालों से हिंदी फिल्मों के गाने, लैम्प और रोमानी चमक, सीता ने अचानक अगस्त्य से पूछा, 'अब तुम्हारी पत्नी कैसी है?' और वह सो लेने के बाद ढीला महसूस कर रहा था, जीप की विरल यात्रा का प्रभाव था शायद, वह उसके सवाल पर हैरान नहीं हुआ, और न ही उसने कुछ झूठ बोलना चाहा, उसने कहा,'मैंने अभी शादी नहीं की है।'

अहमद, डिप्टी कलेक्टर (डायरेक्ट रिक्रूट) ने उन्हें कहानी बताई थी – वह गोरपाक के लिए उनका मार्गदर्शक था। सीता ने कहा, 'एक अजीब व्यक्ति है,' जब कोई भी कुछ कहता, तो वह अपनी कलाई आगे करके हँसता था, और हम थोड़ा भ्रमित थे - उसने तुम्हारे बारे में बहुत सी बातें की। यह लग रहा था कि तुम्हारी माँ और पत्नी दोनों

अंग्रेज़ थी, लेकिन लग रहा था कि तुम्हारी माँ को कैंसर था और बच्चा पैदा होते समय उनकी मौत हो गई, और वो गोवा के एक मछुआरे की बेटी थी, जिसे तुम्हारे पिता ने बहुत तंग किया, अगर मैं अहमद की बातों का ज़िक्र करूँ तो, उसके परिवार से छिपाते हुए। यह स्पष्ट था कि वह ईसाई हो गई थी, जो अहमद को बहुत प्रभावित करती थी। अहमद ने अगस्त्य के सम्मान में दाग लगाए। सीता ने कहा, 'तुम्हें पता है, मैंने सोचा था कि तुम एक एंग्लो-इंडियन हो, वह खिन्न होकर खिसियाई, जिसे हम स्कूल में "डिंग" या "डिंगो" कहते थे। बंबई उनसे भरा पड़ा था।

और कलकत्ता, और बेंगलुरु, और दार्जिलिंग के स्कूलों' में, अगस्त्य ने कहा, 'लेकिन न केवल एंग्लो को, मुझे लगता है कि लगभग सभी ईसाइयों को 'डिंग्स' कहा जाता था। कई सालों तक अन्य चीज़ों के साथ-साथ मुझे अपनी माँ की वजह से, कभी आधा-डिंग और कभी सिंगल-डिंग बुलाया गया था, और हैरानी की बात है कि, सभी एंग्लो खेलों में बहुत अच्छे थे, और पढ़ाई में ऐसे ही ख़तरनाक थे, आप जानती हैं, और वे लोग अच्छे होते थे, ज़्यादातर सफ़ेद नस्ल के दिखते थे, वे तेजी से आस्ट्रेलिया की तरफ़ भागते थे, और अफ़सोस की बात है कि वे लोग, जो मेरी माँ के चचेरे भाई की तरह गलती से भारतीय दिखते थे, वे कॉन्वेन्ट स्कूलों में जूनियर कक्षाओं के निराशावादी शिक्षक बन गए, मायूसी के चलते बेवकूफ़, लेकिन बहुत ही रूखे और नीच -'

'ओह, हाँ, हाँ -' सीता अपने सिर और गालों को कुर्सी के पीछे टिकाकर बेबस हो हिलते हुए हँस रही थी; अगस्त्य की साधारण याद साझा करना सीता की ख़ुशी का कारण बना और उसे भावनात्मक प्रतिक्रिया करने को मजबूर किया। उसने फिर महसूस किया कि ये दोनों, एक एवरी और दूसरी एवरी बनने वाली, दूसरे जोड़ों से बिलकुल अलग थे, उनके ऐसे अतीत थे जो कोई और नहीं समझ सकता था... लेकिन शायद उनके लिए उनका अतीत महत्वपूर्ण नहीं था, और संभवतः उनके लंदन के वर्ष उन्हें एक उचित और मजबूत आधार दे सके।

अगले दिन वे मदना लौट गए। अगस्त्य खुश था क्योंकि उसने अपने कमरे में एक ग़ैर क़ानूनी हरकत कर ली थी। वे शाम को श्रीवास्तव के घर गए, अगस्त्य रिपोर्ट करने और खाना खाने, एवरी और सीता खाना खाने, धन्यवाद करने और अलविदा करने। श्रीवास्तव खुश दिख रहा था और उसने बहुत जिज्ञासा दिखाई; अगस्त्य ने जानकारी से ज़्यादा जोश में भरकर जवाब दिए ('क्या तुम्हें वहाँ पर अकाल जैसे हालात दिखे? हालाँकि इस साल बहुत अच्छी बारिश हुई, आपको पता है, जोमपन्ना ब्लॉक हमेशा सूखे का शिकार रहा है, जलाशय का क्षेत्र छोटा है और पानी की मात्रा कम है, इसलिए जब आप वहाँ पर बीडीओ होंगे तो आपको पीने के पानी की कमी के बारे में विशेष रूप से सावधान रहना पड़ेगा...।' इस तरह के सभी सवालों का जवाब अगस्त्य ने, 'जी सर' कहकर दिया) और जोमपन्ना के खाने को याद कर, कहा, 'हाँ सर, मैं बीडीओ बनकर वहाँ जाना चाहूँगा।'

उन्होंने घर की बात की, रिचर्ड एवरी के समय में यह क्या हुआ होगा, उनके खतों में, फ़र्नीचरों को किस तरह का बता रखा था, किस साल कलेक्टर ने किस संस्थान को लाभ के लिए कितने एकड़ ज़मीन दी थी; भारतीय सिविल सेवा और भारतीय प्रशासनिक सेवा के बारे में, और भारतीय सिविल सेवा के अंग्रेजी और भारतीय सदस्यों के बीच का अंतर, और साथ ही, मापदंडों के अपवाद – रिचर्ड एवेरिज़ और मधुसूदन सेन के बारे में भी बातें की। ज़ाहिर है, श्रीवास्तव, ने सबसे ज़्यादा बातें की; हैरानी की बात है कि एवरी बोलने में दूसरे नंबर के काफ़ी क़रीब था।

जॉन और सीता को अगली सुबह, पाँच चालीस की ट्रेन से बंबई के लिए निकलना था। इसलिए इतना अधिक खाने के बाद उन्होंने जल्दी अलविदा कह दिया। श्रीवास्तव ने कहा,'सेन, क्या तुम इन्हें समय पर स्टेशन छोड़ने के लिए जल्दी उठ जाओगे। मना मत करना, ये ज़िले के मेहमान हैं।' बाहर निकलते समय, अगस्त्य ने आवेग में आकर, कलेक्टर की कार की चाबियाँ चुरा ली।

ख़ैर, श्रीवास्तव उस शाम बहुत हँसमुख थे, और श्रीमती श्रीवास्तव ने अपनी काली ब्रा पहन रखी थी; और जोमपन्ना के पूरे रास्ते वह अपनी दिल्ली की यात्रा के बारे में सोचता

रहा, जो सिर्फ तीन दिन पुरानी बात थी, लेकिन पिछले सालों के मुकाबले हल्के सालों में ... धुंधलके में एकजुट होती क्षणभंगुर छवियाँ, ध्रुबो की माँ द्वारा दिल्ली एयर पोर्ट पर उसके गाल चूमना, उसने एक पुरानी फ़ोटो खोजी थी, जिसमें वह और मीरा विक्टोरिया मेमोरियल के सामने नशे में चूर थे; वह अपने रेस्ट हॉउस के कमरे में आ गया था जहाँ आईने पर फिर से धूल जमी थी। और वह मोहन के बारे में (वह सोच रहा था, इससे वह बिला वजह परेशान रहा) अपने आपको गुनहगार समझ रहा था। एवरी खुश था कि उसका अभियान पूरा हो गया था, सीता भी खुश दिखाई दे रही थी। वह घर जा रही थी। और उसके दिमाग़ में अन्धेरा छा रहा था, वह फिर से अपनी परेशानियों के क्रम को हटाना चाह रहा था, क्योंकि उनसे वह अपना काम करने में अक्षम होता था, लेकिन बौद्धिक होने के लिए कोई भी माद्दा नहीं था। पूरी शाम वह उनकी बातचीत, हँसी और बच्चों से परेशान होता रहा; उनके बीच वह ज़्यादा अकेला महसूस कर रहा था और अपने आप में सिमटता जा रहा था। कार की चाबियाँ बगल की मेज़ पर रखी ट्रे में रखी थी, उसने उनको यह सोचकर उठा लिया कि अब बेकार की खोजबीन होगी और लापरवाही के दोषारोपण होंगे, इससे कम से कम एक और ज़िंदगी गड़बड़ाएगी। एवरी और सीता के साथ सर्किट हाउस में वापस जाते समय वह खुद अपने कमीनेपन पर हँस रहा था।

वह अपने कमरे की ट्यूबलाइट चुप्पी पर कुछ ज़्यादा ही हँसा। पाँच चाबियाँ, कभी-कभार बिना किसी वजह के कोई अजीब काम करने में बहुत अच्छा लगता है। श्रीवास्तव बिना वजह अपने ड्राइवर और नौकरों पर चिल्लाएगा, जबकि उनकी पत्नी कह रही होगी तुमने खुद अपनी चाबियाँ कहीं और रख दी होंगी। एक चाबी कार की, दूसरी पेट्रोल टैंक के लिए, शायद तीसरी गेराज की, और कम से कम दो चाबियाँ, लगता है, दो स्टील की अलमारियों की जिनमें वे सभी महत्वपूर्ण चीजें शामिल होंगी जो कि श्रीवास्तव कभी पाना चाहते थे, और उनकी डुप्लिकेट्स को श्रीमती श्रीवास्तव ने इन्हीं अलमारियों में बंद कर दिया होगा और श्रीवास्तव अपनी पत्नी की बेवकूफी को लेकर चिल्ला रहे होंगे। उसने अपने कपड़े उतारे और कीथ जेरेट के संगीत में डूब गया और बिना कपड़ों के ही नंगा लेट गया।

कार की चाबियों को उषा और संघ कहा जाता था (जिससे वह एक क्षण के लिए चकित हो गया था, संभावना है कि देश में किसी को कहीं पर कार की चाबियों के नाम रखने के लिए पैसे दिए जाते हों, और फिर उसने तर्क दिया कि यह हिंदी रेडियो समाचार की तरह धीमी गति से पढ़ता है, जो कि बिना स्पष्टीकरण के एक और काम था), और उनके निचले किनारे टेढ़े-मेढ़े थे लेकिन सुंदर थे, दूर के पहाड़ों की तरह ही लचकते थे, वे चिकनी और घिसी हुई थी, कम से कम उनका एक मतलब था।

वह सबसे बाद में ड्राइंग रूम से बाहर निकला था; बच्चे नौ बजे निकल गए थे,वह सोच रहा था कि या तो वे सो गए होंगे या फिर एक दूसरे की तहकीकात कर रहे होंगे (और फिर वही अंधकारमय भाव जो चैन नहीं लेने देता,केवल एक मृगतृष्णा, उसके साथी, देखनेवाले आईने के साथ ही साझा किया जा सकता है)। सीता और श्रीमती श्रीवास्तव एक दूसरे की तरफ़ मुस्कुराते हुए इंतजार कर रही थी कि कब एवरी और श्रीवास्तव की रिकार्ड रूम के बारे में बात करना बंद करें। वह फिर से अपने आप को हीन समझ रहा था, उस समय वह हावी होना चाहता था, ठहाका मार कर हँसना चाह रहा था। अब उसने चाबियाँ उठाई और उन्हें चूमा, उसका मुँह हंसी की उलटी करना चाह रहा था। एक उन्मादी बदला है, लेकिन ठीक है – ऐसे संसार के लिए जहाँ पर एक बैल की पूँछ तुम पर गोबर के छींटे डाल सकती है यदि तुमने सावधानी न बरती तो, जिसमें एक बदमिज़ाज डिस्ट्रिक्ट जज तुम्हें फ़ोन करके बुलाकर कह सकता है कि वह तुम्हें खाने पर आमंत्रित नहीं कर रहा, जहाँ आप भूख से अधीनस्थ ज़िला अधिकारियों के कार्यालयों को भोजन के लिए निमंत्रण के लिए दबाव डालते हो, क्योंकि आपको संदेह है कि आपका कुक आपको अपना मल खिला सकता है। वह रात में अच्छी तरह हँसा और गहरी नींद सो गया।

अगस्त्य पुलिस सुपरिंटेंडेंट ऑफिस में कुमार को दिल्ली की ट्रेन की टिकट के पैसे देना जा रहा था। वह तालाब और भैंसों, कलेक्टरेट के ऑफिस के सामने अब तक इंतजार करती भीड़, जंगली भाँग के पौधे पार करते हुए निकला। कुमार अपने ऑफिस में बैठा, सामने की मेज पर रखी मशीन में ख़तरे की आशंका देख रहा था।

'हाँ भाई सेन, तुम्हारा अंग्रेज़ चला गया?...' दोस्ताना बातें '... तुम किसी दिन रात के खाने पर आओ यार, मेरी पत्नी से भी मिलो। ... '

अगस्त्य ने चार सौ पचास रूपये निकाले।' ट्रेन की टिकट के पैसे, सर।'

कुमार मुस्कराया, और अगस्त्य के हाथ से सौ रूपये का नोट लेते हुए कहा, मुझे पता है 'नौकरी की शुरूआत में तुम्हें ज़्यादा पैसे नहीं मिलते यार, तुम सेकिंड क्लास से ज़्यादा नहीं अफ़ोर्ड कर सकते इसलिए मैंने सेकिंड क्लास की ट्रेन टिकट के पैसे लिए हैं।' उसके चेहरे के भाव कह रहे थे, मैं कितना प्यारा हूँ, है ना? फिर कुछ छोटी-छोटी बातें।

पुलिस ऑफ़िस से वापिस जाते समय, अगस्त्य को यकीन नहीं हो रहा था कि कुमार बेकार में दानी बन रहा था या अच्छा बनने की बुनियाद रख रहा था। कुमार ने वो टिकटें खरीदने के लिए किसी नौकर को भेजा होगा, अपने काम करने का तरीक़ा दिखाया होगा, उसने नौकर को टिकट के लिए पहले पैसे नहीं दिए होंगे। और टिकट खरीदने के बाद किसी की हिम्मत नहीं होगी कि कुमार जैसे व्यक्ति से पैसे माँगे। यदि वह नौकर को दो ट्रेन की टिकटों के लिए 900 रूपये दे रहा होगा, तो उसने अगस्त्य की टिकट के लिए मुश्किल से 300 रूपये दिए होंगे। अगर इसकी जगह मैं होता तो मैंने ज़्यादा पैसे लिए होते, कहकर अगस्त्य मुस्कराया। शायद यह भविष्य में ब्लू फ़िल्म दिखाने के लिए जमा राशि हो, यह दैनिक के लिए एक सनसनीखेज खबर थी, खासकर जब यह सब अनुमान था; उसने इस बारे में थोड़ी देर सोचा, लेकिन बिना किसी झंझट के इस कहानी को दैनिक में नहीं दिया जा सकता था।

वह कलेक्ट्रेट की तरफ़ चला गया; वहाँ कुछ काम हैं, उस बेवकूफ चपरासी ने कई ख़त छोड़ दिए थे उनकी वहाँ तहकीकात करनी थी, अपने वेतन का चेक लेगा और अच्छे अफसरों की तरह, दूसरे अफसरों से मिलेगा,चाय पीएगा और समय बर्बाद करेगा। भीड़ में से उत्सुक आँखें उसे देख रही थी... कुछ जिन्होंने उसे कहीं देखा था, धक्का धक्का-मुक्की कर उसे सलाम करने आगे बढ़ रहे थे, शायद वह खास था, हालांकि उन्होंने उसे नहीं देखा, फिर भी उसे संदेह का लाभ देना सही था।

कलेक्ट्रेट के गलियारे से भी चपरासियों द्वारा सलाम किया गया। अब तक श्रीवास्तव नहीं आया था, चिदंबरम भी अपनी जगह पर नहीं था। हक्का-बक्का हुआ क्लर्क पसीने में तरबतर हुआ कलेक्टर के फोन उठा रहा था, उसने चिदंबरम की तरफ़दारी करते हुए कहा, 'वे कुछ कार की चाबियाँ लेने गए हैं।' अगस्त्य को जब पता चला कि उसके वेतन का चेक, किन्हीं कारणों से अब तक नहीं आया है, तो उसकी हेकड़ी गुम हो गई। क्लर्क भी दूसरे क्लर्क का काम करने के तनाव से बेसुध हो गया था और वह अगस्त्य के वेतन की जाँच के बारे में सवालों का जवाब ठीक से नहीं दे पा रहा था। वह जोशी के कमरे में गया।

लगता है वह वहाँ की छह (या तो) चाय के ब्रेकों में से दूसरी में बाधा डालेगा। मदना में जीवन एक आरामदेह मामला था। उसको देखते ही कलेक्टरेट के उम्रदराज मोटे लोग असहज हो बगलें झाँकने लगे, और सलीके से बैठ गए। जोशी उसे देख मुस्कराया, 'कलेक्टर की चाबियाँ गुम हो गईं,' और हाथ हिला-हिला कर उसकी वजह से होने वाली गड़बड़ी के बारे में बताने लगा। वहाँ पर डिस्ट्रिक्ट सप्लाई ऑफिसर भी था, अगस्त्य को याद आया उसने उसे कलेक्टर के गलियारे में पहले दिन देखा था। उसे अब भी पसीना आ रहा था, लगता है महीनों पहले श्रीवास्तव के चीखने चिल्लाने ने उसका नाज़ुक मेटाबोलिज्म सतही रूप से खराब कर दिया था। अगस्त्य ऐसे शांत चेहरे देख कर खुश था। वह सप्लाई ऑफिसर के पास बैठ गया, उसमें से ज्योमेट्री बॉक्स निकले सुगंधित इरेज़र जैसी गंध आ रही थी। सोलह वर्ष पहले, ऐसा इरेज़र लेने के लिए वह और उसके दोस्त, कुछ भी करने को तैयार रहते थे। पहले जोशी को चाय दी गई फिर अगस्त्य को।

चुप्पी, बड़बड़ाहट, खनखनाहट और चाय गुड़कने की आवाजें आ रही थी। फिर सप्लाई ऑफिसर ने दो पान बनाए, दूसरा जोशी के लिए। उसके मोटे हाथ धीरे-धीरे और अदब से चल रहे थे। वह ऐसे काम कर रहा था जैसे कोई पान का कारीगर हो, क्योंकि उसके लिए समय महत्वपूर्ण नहीं था। जब वह और जोशी अपने मुँह में पान डाल रहे थे, तब अचेतन मन से, मेजों, फाइलों और दीवार पर टंगे कलेंडरों की तरफ़ देख रहे थे। आरडीसी के कमरे में चाय मानों एक अनुष्ठान थी, और अगस्त्य उनके अनुष्ठान में विघ्न नहीं डालना चाहता था।

लेकिन जोशी ने, मुँह में पान लिए खाली कप को मेज के एक तरफ़ सरका दिया, फिर वह उसकी तरफ़ मुस्कराया। अगस्त्य ने कहा, 'जोशी साहब, ख़ज़ाने से मेरे वेतन का चेक अभी तक नहीं आया है। लगता है यहाँ कोई नहीं जानता कि क्यों। 'चश्मे के पीछे जोशी की आँखें चिंता में फैल गई। उसने अपना इंटरकॉम उठाया, स्वाभाविक लगने के लिए अपनी जीभ से पान को मुँह में एक तरफ़ सरकाया। कुछ बातचीत हुई, एक क्लर्क आया, उसके हाथ की फाइलें उसे अंदर आने की अनुमति दे रही थी, किसी को ट्रेजरी भेजा गया, अंततः अगस्त्य को बताया गया कि उसे अगले दिन चेक मिल जाएगा। जोशी फिर से मुस्कराया। फिर बहुत बेमेल बातचीत हुई, और अगस्त्य को हैरानी हुई कि रेवेन्यू ऑफिसरों की मासिक मीटिंग कल होनी थी।

जब वह जोशी के कमरे से निकला (निश्चित रूप से डिस्ट्रिक्ट इंडस्ट्रीज़ सेंटर के लिए नहीं जिसके साथ वह इस हफ्ते के लिए जुड़ा था, लेकिन अपने कमरे के लिए ताकि कुछ घंटे नशे में बिता सके), वह राजस्व अधिकारी की बैठक के बारे में चिंतित था। यह तो धीमी मौत होगी क्योंकि वह ऐसी चार बैठकों में था, लेकिन अब वह सब कुछ बेतरतीब महसूस कर रहा था। ऐसा लग रहा था कि चाबियों की चोरी ने उसे मुक्त कर दिया था। जब वह जीप में बैठा तो खुद से कह रहा था कि बैठक की समस्या को विज्ञान की समस्या की तरह सोचो – जैसे उसने स्कूल में भौतिकी के सवालों से खूब आनंद उठया उठाया था, और जिनसे प्रशांत और ध्रुबो के विद्यार्थी, भौतिकी में कमजोर होने की वजह से बहुत घबराते थे और घबराकर कनखियों से बाजू की मेज पर होशियार

साथी को देखते थे, ...इसमें वे ज़्यादा समय बर्बाद करते थे। वह हँसने लगा। ड्राइवर असली सहानुभूति में मुस्कुरा दिया, क्योंकि उसे ख़ुशी का माहौल अच्छा लगा। साफ़ रास्ता तो यह था कि बीमारी का बहाना बनाया जाए, लेकिन इसका नुकसान यह था कि, श्रीवास्तव देखने आ सकता था। और श्रीवास्तव उसे हस्तमैथुन करते या नशा करते पकड़ सकता था। इसलिए बीमारी का मज़बूत मामला बनाने के लिए डॉ मुल्तानी को बुलाना होगा। वह अपने आप मुस्कराया, वह ठीक सोच रहा था, यकीनन सही ढंग से।

जीप कच्चे रास्ते पर चल दी, वह आगे बढ़ने की बजाय शोर ज़्यादा मचा रही थी। वह अपनी पिछली रात की गड़बड़ लेकिन निराली करतूत, और बिना वजह दूसरों के कामों पर ध्यान देने की वजह से घबराया हुआ था, और यह सब उसे असली जिंदगी से ज़्यादा चुनौतीपूर्ण और मज़ेदार लग रहा था। वह फिर से हँसा, और सोच रहा था कि भारत सरकार कभी नहीं जान पाएगी कि मदना में यह कैसा ऑफिसर है, जो ट्रेनिंग ले रहा है।

और डॉ. मुल्तानी से वह कहेगा कि उसका पेट खराब था। लेकिन यदि डॉ मुल्तानी टट्टी का सैम्पल लेने को कहेंगे तब क्या होगा? फिर तो मुश्किल हो जाएगी क्योंकि वह तो पिछले दिनों से बिलकुल ठीक टट्टी कर रहा था। फिर तो उसे किसी और की टट्टी चुरानी होगी, शायद वसंत की, इसके लिए उसे रसोईघर में व्यस्त करवाकर, टैंक में खड्डा खोदना होगा। फिर यह एक सनसनीखेज खबर हो सकती है, एक आईएएस ऑफिसर कुक के मसाले चुराते हुए पकड़ा गया।

शंकर का दरवाजा खुला था अंदर घुसने की अनुमति दे रहा था। नहीं, उसने अपने आप को कड़ाई से कहा, पहले मीटिंग का मसला सुलझाओ। ठीक है पहला कदम बीमारी का और दूसरा डॉ मुल्तानी का। शायद बुखार का बहाना ठीक रहेगा? उसने कमरा बंद किया और सिगरेट पीने के बारे में सोचा। फिर उसने अपने आपको जाँचा, और मुस्कराया, अरे इतनी सारी चीजें एक साथ सोचना ठीक नहीं। उसने याद किया और हँसा, अरे अर्जुन इतनी सारी विचारों की शाखाएं तो ऐसे व्यक्ति की होती हैं, जिसमें दृढ़ संकल्प का अभाव होता है। उसने नशे की डोज़ लेने की तैयारी की। स्कूल में एक बहुत

ही लोकप्रिय मिथक यह था कि बगल में एक प्याज रखने से बुख़ार को बुलाया जा सकता है। प्रशांत जैसे कई लोग इसके लिए शर्त लगाते थे ('शर्त! हाँ तुम इस पर मुझसे शर्त लगा सकते हो!') लेकिन अगस्त्य ने असल में किसी को अपनी बग़ल में प्याज रखते नहीं देखा। साथ ही, वह बुखार बिल्कुल नहीं लाना चाहता था, वह तो सिर्फ़ मीटिंग से बचना चाहता था। फिर उसने अपनी दाढ़ी बनाने के बारे में सोचा। अगर आप क्लीन शेव्ड हैं, और आप दो-तीन दिन दाढ़ी नहीं बनाते तो लगता है कि आप बीमार हैं।

ख़ैर, उसे कमज़ोरी का बहाना बनाना होगा, इतनी कमज़ोरी कि खून टेस्ट करवाना पड़े। उसने जो नशा हथेली पर घुमाया था उस पर इंच भर राख उभरी देखकर वह मुस्कराया। राख इनायत से पीसा के झुके हुए टॉवर की तरह एक तरफ़ झुक गई, और उसमें से नीली धुएँ की एक लहरदार लाइन निकली। राख झुर्रीदार और दाँतेदार थी; यह मानव त्वचा भी हो सकती है, जो उम्र के साथ अनन्त रूप से बढ़ती है और सर्दी में बिखरती है, बीमारी, कुष्ठ रोग या उन भयावहताओं में से किसी भी अन्य रूप में तब्दील हो जाती है, फिर यह मायूस स्लेटी रंग हो जाता है।

आख़िरकार उस शाम उसने डॉ मुल्तानी को दिखाने का फ़ैसला किया, उसे देख कर मुल्तानी एक पाजी की तरह खुश होगा, और अगस्त्य द्वारा कमजोरी का कारण बताने पर सहमत होगा। और क्लिनिक में वह मुल्तानी से धीरे-धीरे इशारों में जब तक बातें करता रहेगा, जब तक वह उसे रात के खाने का आमंत्रण ना दे दे। अब जब वह अपनी ऊहापोह से निकल कर पक्का हो गया, तो ख़ुशी मनाने के लिए बैड पर लेट गया। वह खुश होकर मुस्करा रहा था, एक मीटिंग से बचने के लिए कितनी जद्दोज़हद और बहानेबाज़ी करनी पड़ेगी। किसी की कार की चाबियाँ चुराना कितना कारगर और आसान था। फिर उसका कोई फ़ायदा नहीं हुआ, वह फिर मुस्कराया उसके पास हमेशा कोई ना कोई तर्क और तरीक़े रहते हैं। और वह हमेशा ही सबसे आसान तरीका चुनता है।

वह सोच रहा था कि उसे फिर से सिगरेट पीनी चाहिए। दिल्ली में मदन ने कोलम्बिया में ज्वालामुखी की बात करते हुए कहा था, पुलिस धूम्रपान करनेवालों के बारे में सख़्त हो

रही थीं, पकड़े जाने पर बचने का सबसे अच्छा तरीका था कि पकड़नेवाला सिपाही भी धूम्रपान करता हो, अगले सत्र में सोमाराम (सोमाराम मदन का पुराना दोस्त और लाल किले के इलाक़े में पसंदीदा विक्रेता) जैसे लोगों के खिलाफ संसद में एक बिल पारित होनेवाला था। लेकिन अगस्त्य ने तर्क दिया, मदना को दिल्ली बनने से पहले, एक लंबा, बहुत अनंत लंबा समय तय करना होगा।

बाद में, उसे अपनी ही बातों पर बहुत हँसी आई और उसने दिगंबर के हाथों श्रीवास्तव के पास भिजवाने के लिए एक नोट लिखा, 'सर, मैं आज बहुत ही कमज़ोरी महसूस करते हुए उठा। इसलिए मैंने डॉ. मुल्तानी से कंसल्ट किया, उन्होंने मेरी कमज़ोरी को मौसम के बदलाव के कारण होनेवाली थकावट बताया, और मुझे कुछ दिन आराम करने की सलाह दी। माफ़ कीजिए, मैं रेवेन्यू आफिसर्स की मीटिंग नहीं अटैंड कर पाऊँगा। जैसे ही मैं ठीक हो जाऊँगा आपसे आपके घर मिलूंगा। 'वह दिन छिपने के बाद डॉ. मुल्तानी से मिलने उनके क्लिनिक गया। दवा की पर्ची पर, '(फ्रेंड्स केमिस्टस के पास लिखा था। पर्ची के ऊपर दो इंच ऊँचा एक विज्ञापन था।

'सब लोग फ्रेंड्स केमिस्ट के पास आओ'

अगस्त्य ने सोचा, जैसे बैंकाक की कोई चीज हो, मुल्तानी को इस विज्ञापन से जरूर कुछ प्रतिशत हिस्सा मिलता होगा।

वह फिर से मदना की गलियों में था। इस जगह से वह वाकिफ नहीं था। फ्रेंड्स केमिस्ट्स में मार्केट रोड पर गली की कोने की दूकान थी, मुल्तानी क्लिनिक गली के नीचे की तरफ़ था। वेटिंग रूम गली के साथ चलनेवाली नाली के ऊपर लकड़ी के बोर्डों पर घूमते हुए था, वेटिंग रूम में घबराए हुए चेहरे, रोते हुए बच्चों और थकी हुई माँओं से भरा था। उसे उदास दिखनेवाले लोग देख कर अच्छा लगता था। मुल्तानी ने अपना रिसेप्शनिस्ट गुंडा टाइप रखा हुआ था, उसने लाल शर्ट पहन रखी थी, जिसका सिर्फ सुंडी के पास का बटन ही बंद था, उसकी मोटी गर्दन में सोने की चेन थी, अगस्त्य मायूसी से

मुस्कराया। वे सब अगस्त्य की तरफ़ देखने लगे, वह वहाँ नहीं जँच रहा था। उसने गुंडे से कहा, 'मैं डॉ मुल्तानी का दोस्त हूँ', उसने सोचा मुल्तानी ने यह डरावना गुंडा इसलिए रखा होगा कि लोग कंट्रोल में रहें, वह बिना नरमी के भद्दी बोली में बातें कर रहा था। वह लकड़ी के आधे दरवाजे से बदबूदार हरे पर्दे को हटा कर हँसते हुए अंदर गया।

मुल्तानी स्टील की टेबल पर बैठा एक किशोर के मुँह का मुआयना कर रहा था, अगस्त्य को देख कर वह वहाँ से हट गया। उन्होंने ख़ुशी से हाथ मिलाए, कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा कि किस सवाल का क्या जवाब दिया। फिर मुल्तानी ने उसे गंदी सी गुलाबी रंग की दीवार के साथ रखे ऐसे कूलर के पास बैठने को कहा, जिसमें शहर भर के चूहे पनाह पा रहे थे। 'सेन साहब, मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मुझे इस तरह कोई मिलने आ सकता है, आप तो बिलकुल ठीक लग रहे हैं, मुझे बिना बीमारी के कोई नहीं मिलने आता...। 'आप मुझे बीस मिनट का समय दें मैं सभी मरीजों से निबट कर आपसे मिलता हूँ (अगस्त्य ने सोचा यह कह रहा है, मैं टाइम पास करूँ)' ... फिर हम आराम से बातें करेंगे...' मुल्तानी फिर से मुस्कराया, और उस किशोर के गले के टोन्सिल देखने लगा। वह किशोर मुल्तानी के गोल गुलाबी सिर के ऊपर से अगस्त्य को देखता रहा। अपने फैले हुए जबड़े से वह ऐसा लग रहा था जैसे कि कोई अजगर क्षण भर के लिए सूअर के बच्चे को निगलने से वंचित रह गया हो।

मुल्तानी का कमरा भयावह रूप से दर्दनाक लग रहा था लेकिन वह उसे मनोरंजक लग रहा था। वह मलिन से क्लिनिक का व्यंग्य-चित्र लग रहा था, जिसे टीवी धारावाहिक में यथार्थवादी दिखाने की कोशिश की जा रही हो। वहाँ पर अस्पताल की हरी स्क्रीन के पास एक अस्पताल का बैड रखा था और उसके पीछे एक आलमारी में दवाइयों के बक्से और गोलियों की पट्टियाँ ऐसे रखी थी जैसे मुँह खुली टूथपेस्ट की ट्यूब से पेस्ट बाहर निकल रही हो। दीवारों पर, फार्मास्युटिकल कंपनियों के कैलेंडर, एक कलेण्डर में एक ताँगे के साथ-साथ एक महिला साड़ी पहने भाग रही थी और ताँगे में बैठे उसके साथी उसकी तरफ़ देख कर हँस रहे थे। अगस्त्य ने पढ़ा, यह कम्पनी बेल्टलेस सैनिटरी नैपकिन बनाती है (वे एक जगह बने रहते हैं, 'शर्त लगाता हूँ? प्रशांत ने अपने जीवन के आखिरी

साल में, 'द्रव्य की चिपचिपाहट की वजह से ऐसे नेपकिन इस्तेमाल किए थे')। इस बीच मुल्तानी ने गुंडे को चाय और थर्म्स अप लाने को भेजा, और अगस्त्य से सवाल पूछता रहा, अगस्त्य को झूठे जवाब देने का पर्याप्त समय मिल रहा था। मुल्तानी बहुत गुलाबी और सकारात्मक लग रहा था, उसने सोचा कि वह उसके साथ अकेले में साथ कुछ गड़बड़ करेगा, फिर देखेगा कि वह कैसी प्रतिक्रिया देगा।

वह सोच रहा था एक छोटे से कस्बे में डाक्टर होना कितनी अजीब बात है, रोजाना लोगों के मुँह में झांकते रहो और उनकी छोड़ी हुई साँस से साँस लेते रहो। क्या हुआ यदि डॉ मुल्तानी महीने में आठ हज़ार रूपये कमा लेता होगा तो, आखिर जीवन की गुणवत्ता भी तो कोई चीज है। लेकिन वह इस पर कुछ नहीं बोला, मुल्तानी के चेहरे पर संतोष देखकर उसने इस विषय पर बहस करना उचित नहीं समझा।

मुल्तानी हरेक मरीज को देखने में दो मिनट से कम समय लगा रहा था; कुछ मरीजों को वह अगस्त्य की तरफ़ शर्माकर मुस्कराते हुए स्क्रीन के पीछे वाले बैड पर लेजा रहा था। वह उनसे पाँच-पाँच रूपये ले रहा था और हरेक को फ्रेंड्स केमिस्ट्स के पास जाने को कह रहा था। वह अगस्त्य से तीखी बातें करता जा रहा था। फिर एक अगस्त्य की उम्र का लम्बा और पतला आदमी आया, वह तपेदिक़ का मरीज़ लग रहा था। वह मुल्तानी के सामने बैठ गया और उसने खाँसना शुरू कर दिया, अगस्त्य ने एकदम से साँस लेना बंद कर दिया, उसकी आदत थी कि उसके आस-पास कोई भी खाँसता था तो वह साँस लेना बंद कर देता था। लेकिन वह व्यक्ति मरीज नहीं था वह एक सेल्समैन था। उसने मुल्तानी के सामने अपने भद्दे से प्लास्टिक के ब्रीफकेस में से दवाइयाँ और गोलियों की पट्टियाँ सजा दी, और उनके महत्व और गुणों के बारे में बताने लग गया। सेल्समैन के हिरण जैसे दाँत थे। उसे मदना में पहली बरसात की याद आई, उस दिन उसने शंकर की पत्नी को देखा था, उसके सिर्फ कुचले दाँत ही दिखाई दे रहे थे, और वह बड़ी हिंसक लग थी। लेकिन सेल्समैन के होँठ उसके सामने के दाँतों को नहीं ढँक रहे थे और वह हारा हुआ सा लग रहा था। मुल्तानी सख़्ती से पेश आ रहा था और अगस्त्य की तरफ़ कनखियों से धूर्त की तरह देख रहा था। हाँ, मैं देखूँगा, मैं देखूँगा– इस गोली और

उस टेबलेट के बारे में सोचूँगा। सेल्समैन को उसकी कृतज्ञता के एवज में पसीना आ रहा था, लेकिन उसकी मुस्कुराहट बरकरार थी। क्या आप मुझे अभी कुछ आर्डर देंगे? 'नहीं, अभी नहीं, अभी नहीं,' मुल्तानी ने कहा। सेल्समैन की नजरें मुल्तानी से परे नहीं हट रही थी। वह अगस्त्य की उम्र का ही था, लेकिन वह मदना से दूरदराज के इलाके से आया था जिससे अगस्त्य परिचित नहीं था। वह सोच रहा था कि सेल्समैन का दिन कैसा होता होगा, शायद एक मुल्तानी से दूसरे के पास जाना, ऑर्डर्स के लिए मिन्नतें करना। लग रहा था मुल्तानी के चेहरे को देखकर वह किसी दूसरे के पास जाने का इच्छुक नहीं था। लेकिन यह सच था कि सेल्समैन बातें करते समय नाराज सा और बुखार से पीड़ित लग रहा था। अगस्त्य सोच रहा था शायद वह अपने इस काम से संतुष्ट नहीं था और कोई और व्यवसाय करने की सोच रहा था। सेल्समैन की कुछ ठोस योजनाएँ और एक तयशुदा भविष्य होना चाहिए और पैसा चाहे ज़्यादा हो ना हो उसे ख़ुशी मिलनी ही चाहिए।

अपनी डेल कार्नेगी जैसी स्थिर मुस्कान में वह इतना भावुक लग रहा था कि मुल्तानी भी कमजोर पड़ गया लगता था। अगस्त्य सोच रहा था, सेल्समैन उसके बारे में क्या सोच रहा होगा। शायद वह उसकी अनदेखी कर रहा हो, या उसे उससे जलन हो रही हो, सोच रहा होगा, रसीली सफलता की कहानी, एक गवर्नर का बेटा, अंग्रेज़ और महानगरीय, अब भारतीय प्रशासनिक सेवा में आपको बस इतना करना है कि आप अपने पैसे कमाने के लिए आरा म करें और पाद मारें। और यदि अगस्त्य उसे बताए कि, मैं इस्तीफा देना चाहता हूँ क्योंकि मुझे इस नौकरी से बेचैनी हो रही है? फिर उसने सेल्समैन के बारे में सोचा, दिन भर दवाइयों के बारे में बातें करना, सेल्समैन की नौकरी के आगे उसे अपनी बेचैनी बहुत तुच्छ लगी और बुजदिल और गुनहगार होने का आभास दिलाया... भगवान का शुक्र मनाओ कि तुम उस जैसे नहीं हो, और तुम इतनी बुरी तरह व्यवहार क्यों कर रहे हो जबकि तुम उस जैसे नहीं हो।

मुल्तानी फिर सीधा हो गया और अपनी थर्म्स आप पीते हुए उसकी तरफ़ मुस्कराने लगा। अगस्त्य अपनी कमजोरी बताने में काफी समय ले रहा था, फिर उसने जोड़ा, ' मेरी गुप्त जगह पर लाल चकते भी हैं।' मुल्तानी ने मुस्कराना बंद कर दिया, और उसे

आश्वासन देने लगा, फिर उसे लेटने को कहा और उसका गला, पल्स और पेट का मुआयना किया।

अगस्त्य बैड पर लेटा था और मुल्तानी उस पर झुका हुआ बहुत भयानक लग रहा था, उसके गाल ऐसे पिचके हुए थे, जैसे शेव किए हुए चूतड़ हों, जैसे गुरुत्वार्षण उसके शरीर को निर्दयता से नीचे की ओर खींच रहा हो। मुल्तानी हैरान हो रहा था, उसने कहा, 'तुम बिलकुल ठीक लग रहे हो,' 'शायद तुम्हारे चकत्ते। ...कहते ही अगस्त्य ने अपनी पैंट उतारी और आंखें बंद कर ली, बाएं पैर को मोड़ लिया,जैसे एक कोकेशियन पिन-अप लड़की किसी विदेशी समुद्र तट पर धूप सेक रही हो, सोचकर वह चुपचाप हँसने लगा। वह इतना हँसा कि उसकी नाक में से पानी बाहर आ गया और बदबू आने लगी। वह बुदबुदाया मुल्तानी इतना नजदीक नहीं आएगा,' मुझे कोई तकलीफ नहीं हैं...।' 'और उसे एक मलहम, एक टॉनिक और कुछ विटामिन की गोलियाँ दीं, जो भरी अलमारी में थीं, जिन्हें किसी और घुसपैठिये सेल्समैन ने उसे दिया था। अगस्त्य ने तुरंत टॉनिक में अल्कोहल की मात्रा की जाँच की। वह चौदह प्रतिशत थी। फिर वही डाक्टरी नसीहतें,'तुम्हें सच में कोई तकलीफ नहीं है , तुम्हें ठीक से खाना खाना चाहिए और अच्छी नींद लेनी चाहिए, तुम्हारी अनिद्रा...'

'ओह, अच्छा खाना खाओ। यह तो मैं नहीं कर सकता,' और वह दिलेरी से मुस्कुराया। 'ठीक है, अच्छा खाना तो नहीं हो सकता, मैं रेस्ट हाउस में रह रहा हूँ...' उसके दो मिनट बाद मुल्तानी ने उसे रात के खाने के लिए आमंत्रित किया। उसने तुरंत कहा, हाँ, धन्यवाद, और पूछा, 'शायद मुझे कुछ दिनों के लिए आराम करना चाहिए, है कि नहीं, जब तक कि मौसम बदलना बंद हो जाता है?'

'हाँ, हाँ, निश्चित रूप से,' मुल्तानी ने थोड़ा अनमने मन से कहा, शायद अगस्त्य की हाँ में हाँ मिलाते हुए, या फिर जाँच के तहत। मैं फ्रेंड्स केमिस्ट्स के यहाँ पर्ची भिजवा दूँगा,और घर पर फोन कर दूँगा कि मैं घर पर एक दोस्त को ला रहा हूँ। बस जरा दो मिनट।' बाहर जाते समय उसने अपने गुंडे को अगस्त्य के लिए एक और चाय लाने को

कहा। अगस्त्य कमरे के दस-दस के बिल में नजरें दौड़ाता रहा, कभी कपबोर्ड की तरफ़, फिर स्टील की मेज से कूलर तक उसने सोचा यहाँ से कुछ चोरी करूँ। लेकिन दराज में रखे पैसों के अलावा वहाँ पर कोई खास चीज नहीं थी, और पैसों को शायद मुल्तानी ने गिनकर रखा होगा।

मुल्तानी का स्कूटर नया था और शायद ऑफ-व्हाइट शेड का था। अँधेरे में ख़ास पता नहीं चल रहा था। वे गुंडे को क्लिनिक का ताला बंद करते हुए देखते रहे। अगस्त्य यह देख कर हैरान था कि मुल्तानी बड़ी बेतरतीबी से स्कूटर चला रहा था, लेकिन मुल्तानी के चेहरे पर इस बात की कोई चिंता नहीं दिखाई दे रही थी, वह बार-बार मुड़कर देख रहा था और पूरे रास्ते अपने आप ही बातें कर रहा था। अगस्त्य को जैसे ही कोई खदकी लगती, वह मर जाने के डर से आँखें बंद कर लेता, फिर वह इस डर से मुक्त होता तो थोड़ी देर में फिर उसी आशंका में फँस जाता, यह बार-बार मरने जीने का अहसास था। स्कूटर शहर की गलियों में दौड़ता जा रहा था। उसकी आँखों पर गुजरते हुए वाहनों की रोशनी पड़ रही थी और उसकी नाक में मुल्तानी के सिर के बालों के तेल की खुशबू भर रही थी; उसे अपने पिताजी की बात याद आई, उसके पिता ने कहा था, कि उसकी पीढ़ी बालों में तेल नहीं लगाती।

लग रहा था मुल्तानी एक अँधेरी गली में बदबूदार नाली के सामने रुका। उसने स्कूटर नीले रंग की लकड़ी की दीवार के बाहर बंद कर दिया। मुल्तानी ने उसे खटखटाया और उसका कुछ हिस्सा अंदर की ओर लुढ़का।'मदना में आवास एक बड़ी समस्या है ,'मुल्तानी ने उसे अंदर लेजाते हुए सफाई देकर कहा, 'मैं इस घरोंदे का पाँच सौ रूपए किराया देता हूँ।' वह लकड़ी का बॉक्स असल में मुल्तानी के घर का बरामदा और ड्राइंग-रूम था, जिसमें कुछ लोग बैठे थे।'सेन साहब, इनसे मिलो ये मेरे पिताजी हैं... मेरे बच्चे, विनोद और अप्सरा, अंकल को नमस्ते करो बच्चो...'(उन्होंने नमस्ते नहीं किया बल्कि अपनी माँ की साड़ी में छिप गए और वहाँ से देखने लगे वे सुन्दर लग रहे थे)'... मेरी बीवी और ये डॉ. घोषाल हैं सरकारी अस्पताल में डॉक्टर हैं।

फिर सब थोड़ी देर के लिए चुप हो गए; 'यहाँ बैठो सेन साहब,जैसा कि अभी दर्शन ने बताया यहाँ पर आवास की बड़ी समस्या है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम बैठ भी ना पाएं।' सब लोग हँसने लगे तो अगस्त्य को हैरानी हुई; वह बूढ़े लोगों से ऐसी वाक् पटुता की अपेक्षा नहीं करता था, और विनोदी होने की तो बिलकुल भी नहीं। हास्य तो अव्यवस्था की तरह पीढ़ीगत है... उदाहरण के लिए, पलटुकाकु, अपने समय में एक बहुत बड़े जोकर थे (जब किसी पूजा जैसे खास मौके पर पूरा समाज कट्ठा हो जाता था तो सभी मौसियाँ उसकी तरफ़ मुखातिब हो उसके मुँह से कोई भी शब्द निकलते ही दबी हँसी हँसने लगती थी), लेकिन अगस्त्य को तो मुस्कराना (ही मुस्कराना) याद था, वो भी उसकी चौबीस साल की उम्र में सिर्फ़ उसकी दो लाइनों की बात पर; इसके विपरीत, उसने कभी भी अपने पिता, पुल्टुकाकु या अपनी मौसियों को ऐसा कुछ नहीं कहा कि उन्हें हँसी आई हो।

लेकिन वह मुल्तानी के पिता की तरफ़ देखकर मुस्कराया। 'कृप्या मुझे मिस्टर सेन मत कहिए, अगस्त्य कहें तो अच्छा है।' वह शायद बुढ़ापे के कारण सठिया गया था, अगर उस बूढ़े आदमी के बारे में कुछ बखान किया जाए तो, वह सारा दिन टीवी देखता रहता था चाहे टीवी बंद ही क्यों न हो, पाखाने में बहुत ज़्यादा समय लेता था, वह जोर-जोर से डकारें लेता था, मुल्तानी के अधिकतर पैसे उसकी दवाइयों पर खर्च होते थे। (दिल्ली से उसने अपने पिताजी को बताया था, 'माणिक काकू कंकाल लग रहे थे, शायद उसके दादा भी वैसे ही दीखते थे। वह अपने आपको एक बायोलॉजी की प्रयोगशाला में क्यों नहीं बेच देते?' अगले ख़त में उसके पिता ने अचानक बिना कोई संकेत दिए, लगभग मार्कस के फैशन में बुढ़ापे के बारे में लिखा, उन्होंने भारतीय रीति के अनुसार बूढ़ों के प्रति युवाओं के कर्तव्य बताए और उनका आदर करना बताया, उन्होंने बताया कि सम्मान की आड़ में वे युवाओं से ज़्यादा आश्वस्त होते हैं)।'

और अगस्त्य के मुल्तानी के पिता के प्रति तिरस्कारपूर्ण खुलासे के सबूत भी थे; मदना में जब टीवी नहीं आया था तो वे रेडियो सुनते रहते थे, उन दिनों डायबिटीज़ पर

एक सवाल जवाब प्रोग्राम आया करता था, तब कई बार अनायास ही वे अपना सिर हिलाने लगते थे।

'अगस्त्य एक अच्छा नाम है, बेशक बेतुका सा तो है। आपको तो पता ही नहीं है कि इसका मतलब क्या है,' मुल्तानी के पिता ने कहा। अगस्त्य ने एक बार अपने पिताजी से कहा था कि बहुत बड़ा होना और बहुत छोटा होना ज़्यादा अच्छा रहता है क्योंकि तुम कुछ भी ऊटपटांग बोल सकते हो, तुम्हें कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलेगी, कोई तुम्हें अन्यथा नहीं लेगा, और इन दोनों में से बूढ़ा होना ज़्यादा बेहतर है क्योंकि, ज़्यादा छोटा होने पर तुम्हें कहा जाएगा, कितना प्यारा है। लेकिन इस बात पर उसके पिता को हँसी नहीं आई।

अगस्त्य के कुछ कहने से पहले, उसके पिता ने खाना लगभग आधा घंटा पहले मैं तुम्हारे बेटे के सामने नंगा हो गया था ताकि उसे अपना लँगोट दिखा सकूँ, फिर उसके पिता ने कहा, 'आगम एक पर्वत है। अगस्त्य आगम प्लस अस्यती हो सकता है, जो पर्वत को धक्का देता है। हम अक्सर अपने नामों के प्रति अनभिज्ञ रहते हैं हमें नहीं पता होता कि उनका मूल कहाँ से आता है। इसका मतलब लैटिन अ्यूज़ुस से भी जुड़ा होना चाहिए, जिसका अर्थ है अग्रिम। यह ठीक है क्योंकि ऋषि अगस्ती भी भटकनेवाला था, जो बनारस जाने के लिए बेताब रहता था। अच्छा नाम है, और हममें से कुछ के लिए नाम का महत्व है, लेकिन ऐसा कब तक रहेगा मैं नहीं जानता।'

फिर डॉ. घोषाल ने हस्तक्षेप किया, 'नाम की एक बहुत ही बंगाली पसंद। बंगाली सुंदर नामों के बहुत शौकीन हैं मेरा खुद का नाम लो, श्यामलेन्दु। किसी का नहीं होगा। डॉ घोषाल वास्तव में, स्वयं सीखने में बिलकुल बंगाली ही थे। लम्बे और पतले, लेकिन एक बड़े पेट के साथ, निकोटिन और मछली करी द्वारा पीली उंगलियाँ, चश्मा लगाए, लम्बे पीले दाँत, पीछे की तरफ़ बनाए हुए काले लम्बे बाल। अगस्त्य हैरान था उसमें और डॉ मुल्तानी में उनके व्यवसाय के अलावा एक जैसा क्या था। बंगाल के बाहर रहने का चुनाव करनेवाले अन्य बंगालियों की तरह, डॉ घोषाल ने उन्हें ऐसा करने से रोकने के लिए कलकत्ता को दोषी ठहराया। 'लेकिन कलकत्ता में जीवन है,' उन्होंने स्वीकार किया।

मुलतानी के पिता ने एक शब्द कहे बिना, बहुत जोर से रेडियो चालू कर दिया। इससे (अब धीमी गति से पढ़ा जानेवाला समाचार चल रहा था) सारी बातचीत रुक गई। फिर डॉ मुल्तानी और उनकी पत्नी घर के अंदर से बाहर आए; उसने (वह कुर्ते पायजामे में था) शांतचित्त हो रेडियो बंद कर दिया और चारों ओर सबकी तरफ़ एक-एक कर देख मुस्कराए।

फिर अगस्त्य के पिता के बारे में मामूली बातें हुई, वे अगस्त्य को सहज करना चाहते थे, उसे विश्वास दिलाया कि उसे सहजता की आवश्यकता है, और वह विकारग्रस्त, चिंताजनक और ज़्यादा से ज़्यादा असुविधाजनक दिखने में आनंद ले रहा था(कम समय में उन्हें छूने); डॉ घोषाल ने आवाज़ करते हुए मुँह से साँस ली और अपनी नाक में नसवार डाली, और भारत में राजदूतों और सचिवों जैसे उच्च स्थानों पर बैठे बंगालियों के नाम बोले; इससे अगस्त्य विचलित हो गया, मैं तो अपनी इस पोस्ट से इस्तीफा देना चाहता हूँ, यह सब बकवास है, मारिजुआना पीना, धूप में बैठकर मस्ती से मार्कस ऑरलियस को पढ़ना, उसकी बात पर उसे सबके चेहरों पर कोरापन दिखा।

अचानक बूढ़े श्री मुलतानी ने उन्हें टोका, 'श्री सेन, क्या आप बांग्ला जानते हैं? मेरा मतलब है क्या आप धड़ल्ले से बंग्ला बोल लेते हैं? इस सवाल पर मुल्तानी, उसकी पत्नी और घोषाल ने एक दूसरे को चुपके से देखा। बूढ़े आदमी ने, लगभग जुझारू चेहरा लिए, आग्रह में दृढ़ता से अगस्त्य की ओर देखा।

'क्यों हाँ।'

बूढ़े आदमी ने कुछ देर और देखा, फिर सिर हिलाया, 'मैं बहुत हैरान हूँ,' लेकिन तुम्हारा लहजा बता रहा है, तुम बिल्कुल झूठ बोल रहे हो। वे बोलते रहे, 'दर्शन केवल हिंदी बोलते हैं, 'मुल्तानी ने मुस्कुराते हुए कहा' और मुझे ऐसा लगता है कि विभाजन के बाद पैदा होनेवालों को इन चीज़ों से कोई फर्क नहीं पड़ता।

'सन् 1947 के बाद जब मैं मदना में बसने आया, तब मैं लाहौर में बहुत कुछ छोड़ आया था, और मुझे दर्शन को इंदौर में मेडिसन पढ़ने भेजने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा।' बूढ़ा मुलतानी धीरे धीरे बातें कर रहा था, लेकिन गहनता से, वह बोलता जा रहा था और सोच रहा था कि उसे सम्मान देने की गरज से उसे बीच में कोई नहीं टोक रहा, भले ही चाहे उसे कोई सुन नहीं रहा था। 'मैं इसे आगे बढ़ते देखना चाहता था,' मुल्तानी ऊब रहा था और उसे शर्म भी आ रही थी... उसने ये बातें बहुत बार सुनी थी, शायद उसके पिता उम्रदराज होने की वजह से सिर्फ अपनी सोचते हैं, उन्हें सोचना चाहिए एक अजनबी को इस तरह बोर नहीं करना चाहिए, 'और, मेरे बेटे ने तो वह सब नहीं देखा, अच्छा रहा, उसने ना अंग्रेज देखे और नाही पाकिस्तान हिंदुस्तान के दंगे। जबकि मेरी पूरी पीढ़ी को दंगों का सामना करना पड़ा। कुछ समय पहले यहाँ मदना में भी दंगा हुआ था, लेकिन चालीस के मुकाबले वह तो केवल पटाखेबाजी की तरह का हुड़दंग भर था फिर समझौता करने की बैठकें हुई। उदाहरण के लिए, सेन ने कभी हिंदुओं और मुसलमानों की लड़ाई नहीं देखी? (बेशक़ उसने वैसी लड़ाई नहीं देखी। जब वह कॉलेज के दूसरे साल में था तब पुरानी दिल्ली में दंगे हुए थे, और यूनिवर्सिटी बंद कर दी गई थी। उन्होंने हिप्पी-सीआईए एजेंटों के साथ सिगरेट पीने और समय बर्बाद करने के लिए तुरंत मनाली के लिए बस ली, और दिल्ली से बाहर जाते समय ध्रुबो मुसलमानों की खिलाफत करने लगा, 'ये लोग भारत की दमनकारी धर्मनिरपेक्षता के खिलाफ प्रभावी ढंग से क्यों नहीं चीखते? अगर ईसाईयों को खुश करने के लिए रविवार को छुट्टियाँ हो सकती हैं, तो उनके लिए शुक्रवार की छुट्टी होनी चाहिए। फिर हमारा चार दिन का हफ्ता होगा, देखो जरा।' दंगे छह किलोमीटर दूर थे।) 'मुझे लगता है दर्शन भाग्यशाली है, यह मेरी तरह शरणार्थी नहीं बना --बीते हुए को पकड़नेवाले घुम्मकड़... हमारे पास और कुछ नहीं था। लेकिन फिर भी हमने जो भी जिया, हालांकि वह भयनाक था, लेकिन महत्वपूर्ण भी था, और मुझे कभी-कभी लगता था कि आनेवाली पीढ़ी को और भी बहुत कुछ बुरा कुछ झेलना पड़ेगा।'

बूढ़े आदमी ने एक तर्कहीन गर्व दिखाया, एक तरह का कालभ्रमित राष्ट्रवाद प्रदर्शित किया। उसने विभाजन के दहशत के बारे में बताया (घोषाल ने अगस्त्य से एक जोरदार

आवाज़ में पूछा, तुम्हें क्या लगता है कलकत्ता का भूमिगत (मेट्रो) काम कब तक पूरा होगा), '...तुम्हारी पीढ़ी ने हमारी सदी के पहले पाँच दशक, सबसे नाटकीय रूप से महत्वपूर्ण सालों को खोया है...' 'लेकिन राष्ट्रवाद और वो पचास साल भी मदना में बिताए, अगस्त्य ने सोचा, इसलिए उन्होंने कई दोपहर पहले महसूस किया था, फिर उसने याद किया कि उसने पहले की कई दोपहरियाँ, साठे के साथ, रोजाना उंनींदा होकर शहर को पुल से देखते हुए बिताए। मुलतानी के पिता को औपनिवेशिक शासन की दिक्कतों को पता था, लेकिन अगस्त्य और दर्शन मुल्तानी को कुछ नहीं पता था, और जॉन ऐवरी के विपरीत, वह विशेष रूप से जिज्ञासु भी नहीं था। देशभक्ति और इसके खूनी दौर ने शायद मदना को बरी कर दिया था... रिचर्ड एवरी ने अपने खतों में इसकी गवाही दी थी, और अगस्त्य का जन्म तो बहुत देर बाद हुआ था। उसे बहुत अजीब लग रहा था, वह वंचित और उत्सुक था, उसे लग रहा था की कितनी अजीब बात थी कोई कलकत्ता की गलियों में घूम रहा हो और उसे कलकत्ता क्लब में स्वदेशी होने की वजह से अंदर ना घुसने दिया जाता हो,'... और मैं सोचा करता था की वे हमारी संस्कृति की प्रशंसा ना करके उसे अपंग कर गए, लेकिन मुझे अब लगता है, कि उनका कोई कसूर नहीं था, अब अनगढ़ अंग्रेजी बोलते हैं और यही अपरिहार्य है। इसलिए मैं तुम्हारे नाम और तुम्हारे बंगाली के ज्ञान से अचम्भित हुआ, मुझे ऐसी आशा नहीं थी।' लेकिन उसी समय मुल्तानी की पत्नी उन्हें खाना खाने के लिए बुलाने आ गई और वे सब भीतर की और चले गए।

खाना शाकाहारी था, और बहुत ही उम्दा था। अगस्त्य ने खूब खाना खाया।बूढ़ा आदमी कम ही बोला, लेकिन घोषाल और मुलतानी उसके बारे में सब कुछ जानने के लिए लगातार बोलते जा रहे थे, अगस्त्य की बैकग्राउंड के बारे में, सिविल सर्विस परीक्षा, उसकी नौकरी की प्रकृति के बारे में, मदना के बारे में उसकी प्रतिक्रियाएं, उसकी शादी की योजना, और दूसरे शौक़ इत्यादि की बातें होती रही। ग्यारह बजे उसने धन्यवाद कह विदा ली, और फिर मिलने का वादा किया, और वह वापिस जाने के लिए फिर से ख़तरनाक सवारी के लिए मुल्तानी के पीछे स्कूटर पर बैठ गया। वे एक सिगरेट की दुकान पर रुके। शहर इतनी रात गए तक भी थमा नहीं था। उन्होंने पान लिया और

मुल्तानी ने सिगरेट ली। मुल्तानी ने बड़े प्यार से बताया, 'मैं अपने पिताजी के सामने सिगरेट नहीं पीता। अगस्त्य को आभास हुआ कि वह सांस नहीं ले पा रहा था।

वह, कसरत करने, हस्तमैथुन करने, संगीत सुनने, नशे में धुत्त रहने, दर्शनशास्त्र पर पतली किताबें पढ़ने और अपना गुप्त जीवन जीने कि लिए अपने कमरे में अगले तीन दिनों तक रुका रहता है। दिल्ली के सूरज में तीन दिनों का स्थलीय आनंद ले पाता लेकिन मदना में उसने अपने सामान्य उत्साहहीन पागलपन का और तामसे की पेंटिंग के आस-पास एक दूसरे का पीछा करनेवाली छिपकलियों के थकाऊ प्रेमालाप का आनंद लिया। तो कुछ पलों के लिए मार्कस ऑरलियस की संदिग्ध सांत्वना और जिसका ज्ञान में उसे बहुत आनंदायक मिला। (बगलों और बुरी साँसे आपको खामखाह गुस्सा दिलाती हैं? यह आपके लिए भला क्या अच्छा करेगी? आदमी को मिले मुँह और बग़ल उस स्थिति में गंध पैदा करने के लिए बेबस हैं...) फिर भी, कौन है जो उसे घृणा और इसके कारण के निवारण के लिए किसी लालसा के मध्य दोलन द्वारा पसंद करना जारी रखेगा। तीन दिनों के लिए उसने केवल वसंत और दिगम्बर के लिए दरवाज़ा खोला था। दो रातों में वह मीलो तक रेल की पटरियों के साथ टहलता रहा।

चौथी दोपहर उसने एक सुट्टा समाप्त किया ही था कि एक शोर करती कार उसके कमरे के बाहर रुकी। तभी दरवाज़े पर एक दस्तक हुई। एक मुस्कुराता हुआ अजनबी। उससे पहले वह कुछ कह पाता अगस्त्य ने कहा, मैं बीमार हूँ। 'मैं कहीं नहीं जा सकता।' अजनबी के पीछे सरकस की जीप खड़ी थी।

'मैं अधो तिवारी।' अजनबी ने कहा (दो माह बाद अगस्त्य को अहसास हुआ कि अधो तिवारी किसी नाम का हिस्सा नहीं था, मगर वास्तव में आ.डी.एच.ओ., सहायक जिला

स्वास्थ्य अधिकारी था), मिस्टर बजाज ने मुझे भेजा है। आप बाबा रमन्ना के पुनर्वास शिविर में जाना चाहते थे?

'यकीनन नहीं।' तिवारी (काफ़ी हद तक उम्मीदतन) इस उत्तर के झुँझलाहट में वह थोड़ा भौंचक दिख रहा था। लेकिन... जवाब देना शुरू किया, और ज़ाहिर हैं, आख़िरकार अगस्त्य बहस मे हार गया और जीप में बैठ गया और पूरी तरह से अनिच्छा से नहीं। उसे बस एक चीज़ के लिए अच्छा लगा। ऐसी जीप में बैठने के लिए, उसे गगारिन की तरह थोड़ा-सा सहज महसूस किया। तो वह अकेले यात्रा करेगा, क्योंकि तिवारी ने समझाया, बजाज साहब को और डीएचओ साहब को भी काम है। और मुझे भी, मगर बजाज साहब ने कहा आप शिविर देखने को बहुत उत्सुक थे। तो मैंने शिविर को फ़ोन कर दिया कि मिस्टर सेन आईएएस आ रहे हैं और उन्होंने कहा, स्वागत है। मगर सबसे अच्छा क्या था पूरी तरह से बेमतलब की इस यात्रा में एक अजनबी जगह नशे में धुत्त होकर जाना। एक और लम्बी जीप की यात्राकर कुछ अजनबी लोगो से मिलना। उम्मीद है कि बाबा निम्फ़ोमैनियक और वेश्याओं का पुर्नवास कर रहे थे। और स्वीकार करना इंकार करने की तुलना में काफी कम कठिन प्रयास था। फिर से, वह मुस्कुराया जो एक आसान विकल्प था।

गोरख पार्क वाली सड़क पर सर्दी दूर नहीं थी। मगर मदना में दोपहर अभी भी गर्म थी और गाँव सो रहा था। फिर से पूर्व द्वार के माध्यम से, एक बार इसे आदिवासी राजा के हाथियों द्वारा ही इस्तेमाल किया गया था। दरवाज़े की जगह एक पानवाला अब अकेला अपने ट्रान्जिस्टर के साथ था। हिन्दी फ़िल्म के गाने जो हमेशा की तरह हतोत्साहित करनेवाले होते है चल रहे थे, किसी महिला की आवाज़ काम वासना के लिए हज़ारों सुननेवालों को आमंत्रित कर रही थी। उनका झोपड़ियाँ के माध्यम से पीछा किया जो क्षितिज तक फैली हुई लग रही थी।

'रात अकेली है
बुझ गए दिए

आके मेरे पास
बाँहों में मेरी'

जीप इधर भी भक-भका कर रही थी। यह तेज़ रफ्तार के लिए असमर्थ लग रही थी। 'मैं धीरे-धीरे चलाने का आदी हूँ, सर,' ड्राइवर ने पुष्टि की। एक बातूनी आदमी, सर, 'जब भी हम गुज़रते हैं, लोग जीप पर लिखे संदेश पढ़ सकते है, 'अगस्त्य ने बुद्धिमानी में सिर हिलाया। उसने सोचा फिर नए चेहरों के साथ एक और मुठभेड़, जैसे कि उसने किसी पेड़ और धीमी गति में एक बादल को आगे बढ़ते देखा और अंत में यह भी अन्य में लीन हो जाएगा; सब कुछ तब भी अलग रहेगा, शायद कुछ शब्द होंगे जो महत्त्वपूर्ण होंगे, या चेहरे का एक कोण, जो उसके मन को दूसरी चीज़ों के साथ जोड़ेगा। या फिर उच्चारण की कोई विषमता या कुछ अन्य शब्द, भ्रमित समय, जगह और लोगों का एक पैटर्न।

वे लगभग एक घंटा चले। आख़िरी के आधे मील में परिदृश्य में परिवर्तन हुआ। तारों के बाड़ और युकलिप्टिस से घिरे छोटे-छोटे मैदान। सिलेटी अभ्रक की छतों के साथ सफ़ेद झोपड़ियाँ। ड्राइवर न कहा, 'सर, घर। लम्बी लाल बजरी पर सफ़र, नीम के पेड़, अधेड़ उम्र के बरगद। सदर आँगन के आस-पास लम्बी बौनी झोपड़ियाँ, सफ़ेद, सिलेटी। कोई आदमी किसी स्थान पर नहीं। शांतिपूर्ण, कभी-कभी पक्षियों के चिचियाने की आवाज़, कहीं से पानी के पंप की आवाज़। घर, जैसा भी है, अगस्त्य ने सोचा, ज़िले में अन्य जगह से साफ़ और खूबसूरत दिखता है, संलाप करने को तैयार दिखता है।

चालीस साल की एक औरत सफेद साड़ी में, एक सिलेटी झोपड़ी में से बाहर आई। अगस्त्य जीप पर रंग, चित्र और लिखे विचार पर हैरान था और फिर याद किया, निश्चित रूप से, उन्होंने इसे यहाँ कम से कम एक सौ बार पहले देखा होगा। वे उसकी ओर बढ़े। झोपड़ी की दीवार पर (अंग्रेज़ी, हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा में) विचार फलक पर भोजन चित्रित था। सबसे पास लिखा हुआ एक पढ़ा, 'असली कुष्ठ रोग अशुद्ध मन से जुड़ा हुआ है – एम. के. गांधी।

ड्राइवर मुस्कुराया और औरत से कुछ कहा। उसने भावशून्य होकर अगस्त्य की ओर देखा और उसके पीछे आने को कहा। झोपड़ी के किनारे दस क़दम पर वह रुकी और मुस्कुराहट के संकेत के साथ झोपड़ी के पीछे खेतों से आनेवाले व्यक्ति की ओर इशारा किया।

अगस्त्य चार घंटे से अधिक समय तक कुष्ठ रोगियों के लिए बाबा रमन्ना पुनर्वास शिविर में जमा रहा और उसे काफ़ी मज़ा आया। ड्राइवर को तो नहीं, लेकिन उसे यात्रा करने के लिए या इंतज़ार करने के लिए भुगतान किया गया था। इसलिए उसने इंतज़ार किया। अगस्त्य खुद सत्तर के बाबा रमन्ना से नहीं मिला, जिसकी बुद्धिमत्ता की प्रसिद्धि फैली हुई थी। मगर वह उनके पुत्र रमन करन्त से मिला, जो उस झोपड़ी के पीछे, खेतों में उनको मिला था। करंत छोटा और दुबला-पतला था और सफ़ेद खुरदरा खादी पहने था।

‘मिस्टर सेन, आप यहाँ क्या देखना चाहते हैं?’

उफ... ‘जो कुछ भी आप सोचते हैं, मुझे देखना चाहिए।’

‘आप आईएएस हैं कि नहीं?’

‘हाँ।’

‘मैं जो कहना चाहूँगा, आप वह नहीं देखोगे।’

‘हाँ। इस पर करंत ने उसे देखा।’

चालीस साल पहले बाबा रमन्ना, तब शंकर कारंत के कम, सेजलिक नाम से बेंगलूरु में लाभदायक चिकित्सिक का अभ्यास किया करते थे। उसके लड़के ने अगस्त्य को बताया उसने शादी नहीं की थी। फिर उसने उसे शिविर में सब्ज़ियों का बगीचा दिखाया। इसने उसे ज़रूर सहज बना दिया। उसका माता-पिता तुमकुर में थे। मेरी दादी अभी भी ज़िन्दा है, वैसे वह छियानबे की हैं। अभी भी तुमकुर में हैं। कारंत ने पालक, गाजर, मूली, फूलगोभी के खेतों की ओर इशारा किया।

अगस्त्य ने पूछा, 'इस खेतों के लिए तुम कहाँ से पानी लेते हो? '

यह रमन्ना की कहानी का हिस्सा था। बैंगलोर में चालीस साल पहले, चारों ओर राष्ट्रवाद की गूँज के साथ, एक कुँआरा डॉक्टर जब बहुत पैसा बना रहा था तो वह अपने भविष्य के बारे में चिंता करने लगा। उसके बेटे ने कहानी को काफ़ी आसानी से बताया और अगस्त्य को भी बाकी का एहसास हो गया था। कारंत ने कहा, 'चलो, पहले चाय पीते हैं,' 'फिर मैं थोड़ा इधर-उधर और दिखाऊँगा।' वे सब्ज़ियों के आगे एक झोपड़ी की ओर चले गए। दरवाज़े पर एक चिन्ह् चित्रित था, जो बता रहा था 'डाइनिंग हॉल'। उसके ऊपर लिखा था –शारीरिक कुष्ठ रोग से कहीं ज़्यादा बदतर मानव जाति को तुच्छ समझना, किसी भी समुदाय या पुरुषों की निंदा करना एक बीमार दिमाग़ का द्योतक है: एम. के. गांधी।' 'जब मैं कहता हूँ कि वह अपने भविष्य के बारे में चिंतित है मेरा मतलब है कि उसने इसे केवल अपने वर्तमान के अनुमानित विस्तार के रूप में देखा था। उसने खेद जताया और अगस्त्य ने ख़ामोशी से जोड़ा। प्रथाओं के चक्कर में पैसे कमाते हैं, शादी करते हैं और बच्चों का पोषण करते हैं।

ज़मीन और दीवारें मिट्टी और गाय के गोवर से पुती हुई थी। उनकी छत पर अभ्रक, दीवारों पर चित्र और फ़र्श पर चटाई बिछी थी। चित्र ध्यान भंग न करने वाले सहज प्राकृतिक परिदृश्य थे। अगस्त्य ने सोचा, सरकार की गेस्ट हाउस में लगाए हुए चित्रों से ये कई गुना अच्छे प्राकृतिक परिदृश्य हैं।

'हाँ, कारंत मुस्कुराया, 'लेकिन इन कलाकारों को चित्रित करनेवाले कलाकार ने अपनी सारी उँगलियों को कुष्ठ रोगों से खो दिया था। एक बहुत ही संगीन मामला है। उसने कुछ बचे हुए पैरों की उँगलियों से इन्हें चित्रित किया है।'

आगे रसोई थी, समान मिट्टी और गाय के गोबर से पुती हुई। आदमी और औरतें, सफ़ेद खादी में थे। उन्होंने अगस्त्य को देखा और कारंत को नमस्कार किया। अगस्त्य ने उनकी हाथ की उंगलियों और पैर की उंगलियों को देखा। वह चाय का कप पकड़े थे और

कुएँ की ओर जा रहे थे। कारंत ने कहा, 'बहुत सारे संभावित लोगों में विद्रोह की भावना होती है। मुझे लगता है, मेरे पिता भी इस कार्य के भयानक अपरंपरागत खेल से आकर्षित थे।' शंकर करंत बैंगलोर से दूर कोई जगह ढूँढ़ रहा था। जहाँ वह घटिया और बेकार हस्तक्षेप और परिचितों की आलोचना से तंग नहीं होगा और जहाँ वह शहर के प्रभाव को महसूस नहीं करेगा। उसे सबसे बड़ा पश्चात्ताप शुरूआती सालों में होता रहा कि उसे बैंगलोर छोड़ना ही पड़ा। क्योंकि वह इसे प्यार करता था।

'तुम इस जगह क्यों आना चाहते थे?' कारंत ने एकदम से अगस्त्य से पूछा, 'क्या इसलिए कि किसी ने कहा, यह ज़िले का एक पर्यटन स्थल है ?'

उसने उत्तर दिया, 'हाँ, कमोबेश।'

एक तीखी बिना रुकी आवाज़ में कारंत हँसा। चाय बहुत तेज़ और अधिक मीठी थी। अगस्त्य को बाद में यह अहसास हुआ कि इसमें चीनी की जगह गुड़ था।' वे केले के पेड़ के झुंड की तरफ़ घूमे। उसने प्यार से कहा 'इसमें बहुत बड़ा प्रांगण है।'

बेशक यह था, कुछ निराश्रित कुष्ठ रोगियों की शारीरिक इलाज करने के लिए जब शंकर कारंत पहली बार पहुँचा था, तब बहुत कम था। कारंत ने कहा, 'भगवान को पता है, मदना गाँव बैग्लोर से बहुत दूर है, और यह जगह पृथ्वी के छोर के पार लगती है।' मगर यहाँ ज़मीन बहुत सस्ती थी। शायद गोरख पार्क मंदिर की वजह से यहाँ कुष्ठरोगियों को छोड़ दिया गया था और इस मैदानी क्षेत्रों में पानी की अधिकता बहुत ज़्यादा थी।'

अपने जीवन में लम्बे समय के बाद अगस्त्य खुश था कि वह नशे में धुत्त था। वह अपनी अलसाई आँखों के पीछे पिन और सुइयों की चुभन महसूस करता हुआ इन सबसे दूर हो गया था। सब कुछ समान रूप से असली और इसलिए समान रूप से बर्दाश के काबिल थी जैसे केले के पेड़ और एक पहाड़ी के ऊपर शाम का सूरज और उसके पास

छोटी दाढ़ी वाला आदमी वास्तविक और महत्त्वपूर्ण जान पड़ रहा था जैसे वह शब्द प्रयोग कर रहा था और स्वयं को दिखा रहा था। शुरू में, उनके लिए, बाबा रमन्ना बच्चों के लिए पागल और दूरवर्ती लग रहा था, बच्चों के लिए किंवदंतियों की एक किताब से बाहर एक अच्छा आदमी, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर-जैसा पुरुष या मदर टेरेसा के समकक्ष। बाद में शाम को यदाकदा उनकी याद आती रही। उसे बाबा रमन्ना की उपलब्धि अमानवीय लगी, लगभग दानवी; जैसे अगस्त्य ने खेत और बाग़ देखे और वे दो कुएँ अचंभित करनेवाले थे। बाबा ने नाकाबंदी से जीत हासिल करने में उनकी मदद की थी, उसे मानवीय इच्छा की विशालता पर, साथ ही उनकी महानता और उदारता पर, मानव प्रयास की क्षमता की असीमता पर थोड़ा बुरा लगा। लेकिन साथ ही, सफल होने के प्रयास के लिए असीम धैर्य और कला भी आवश्यक है।

कारंत ने पूछा, 'कुष्ठ रोग के बारे में तुम क्या जानते हो?' कुछ दूरी पर बच्चे दो सी-सॉ और एक झूले रहे थे। कारंत का उसके बग़ल में होना अगस्त्य को पसंद आया। उसने अच्छी तरह से बात की थी और उसे समझाया था। उसने डींगे नहीं मारीं, लेकिन वह अपने पिता की उपलब्धि के निहितार्थ से अवगत था।

अगस्त्य हँसा, कारंत हैरान हो रहा था। 'नहीं, सच में कुछ नहीं। मुझे भी पता है कि यह संक्रामक रोग नहीं है, और यह शुरूआती चरणों में आसानी से ठीक किया जा सकता है।'

कारंत ने कहा, 'तो आप औसत भारतीय नहीं है।' वह ऐसे मुस्कुराया जैसे माता-पिता बच्चों पर। फिर उसने थोड़ी देर के लिए उनके साथ बकवास की।

शंकरन कारंत ने पहले पाया कि कुष्ठ रोगियों को अपने पास लाना भी दुर्लभ था; जैसा कि बाद में अगस्त्य को पता चला कि जोमपन्ना के आदिवासियों ने शुरू में नक्सलवादियों को अकेला छोड़ने के लिए कहा था। वास्तव में महत्त्वपूर्ण और कठिन बात उनके मनोवैज्ञानिक पुनर्वास की थी। उन्हें समझाने के लिए उनके माँस के सडांध को बंद

करने के बाद उन्हें समझाना कि वे शैतान नहीं थे, या राक्षस नहीं थे।' कांरत ने किसी को देख कर हाथ हिलाया। 'उन्हें काम करने के लिए भी दे रहे है। भीख माँगना मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत हानिकारक है। यह एक तरह के घातक आलस को प्रोत्साहित करता है।', शंकरन कांरत चाहते थे कि वे स्वतंत्र और पूरी तरह आत्मनिर्भर हो जाएँ जो कि शुरूआती वर्षों में कुछ कुष्ठ रोगियों को यह विचार पसंद नहीं आया।

'आप मदना के सहायक कलेक्टर हैं?' एक झोपड़ी के बाहर रोक कर अचानक कारंत ने पूछा। अंदर ट्रांजिस्टर पर भजन चल रहा था।

'नहीं। अभी तक, मैं यहाँ प्रशिक्षण ले रहा हूँ।'

कांरथ चिढ़कर हँसा, 'यह आंशिक रूप से आपकी सुनने की इच्छा से स्पष्ट होता है।'

'अधिकतम ज़िला अधिकारी बहरे हैं। कुछ जर्मन संगठनों के हमें पैसा मुहैया कराने से पहले, इनमें से कोई भी यहाँ आया नहीं। अब ऐसा लगता है कि वे हमें अकेला नहीं छोड़ सकते। वह ऋण हमारे मत्थे मढ़ना चाहते हैं। चार साल बाद वह इस शिविर को आधिकारिक मानेंगे मतलब कि इसमें हस्तक्षेप करना है।'

यह सुनने के लिए उनकी इच्छा नहीं थी, अगस्त्य ने अनुमान लगाया कि वह कारंत को बोलने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था। किसी व्यक्ति से बात करने की कारंत की खुद की इच्छा थी, जिसे किसी नशे के सिर से सहानुभूति वाले कान की उपस्थिति से प्रेरित किया गया था। कारंत एक डॉक्टर भी था, मगर वह पूना में पढ़ा रहा था। उसकी पत्नी और बच्चा हैदराबाद में थे। अगस्त्य को लगा उसके पिता और भी एकांतप्रिय हो चुके थे। शिविर में वह केवल उन कुष्ठ रोगियों से बात कर सकता था जो उन्होंने और उनके पिता ने इलाज में मदद की थी और उनका एकमात्र विषय उनके जीवन की दैनिक दिनचर्या हो सकता था।

झोपड़ी के दरवाज़े से उपर का बोर्ड दिखा रहा था, 'इस टॉल्स्टाय फ़ार्म पर कमज़ोर मज़बूत हो गए और श्रम सभी के लिए टॉनिक साबित हुआ।' 'स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने इन बोर्डो को देखा, तो और भी उत्साहित हो गए, आपनी आवाज़ में एक आकर्षक सनक के साथ, कारंत ने कहा,' वे हमारी सहायता ज़रूर करते, अगर हमारे पास महात्मा गांधी के उद्धरणों की शुद्धता होती। नए बोर्डो पर हमने एम. के. गांधी लिखना बंद कर दिया है, और कोई भी विज़िटर उनके पास नहीं है। एक कार्यकारी अभियंता– मैं उसका नाम भूल जाता हूँ, उसने हमारी महात्मा की प्रतिमा बनाने के लिए मदद की। उन्होंने कहा कि उन्होंने काफ़ी कुछ बनाया था, और बहुत कुछ लग रहा था। मगर जब हमने इनकार कर दिया तो उन्हें काफ़ी बुरा लगा। वह मेरे पिता को नहीं समझ पाया जब उन्होंने कहा कि मूर्ति बनाना आदमी को भूलना है, या यह एक प्रकार का मूर्तिपूजा की ओर पहला कदम है। कार्यकारी अभियंता ने कहा कि हमें इसके लिए कुछ भी भुगतान नहीं करना होगा।'

वे मिट्टी की पैकड़ी पर बैठकर और चाय पी। शंकरन कारंत ने अंतत: कुष्ठरोगी को कुआँ खोदने और उसके आस-पास भूमि पर स्वयं का अनाज पैदा करने के लिए प्रेरित किया। उसने अपने माता- पिता द्वारा चुनी लड़की से शादी कर ली, लेकिन इस शर्त पर कि वह उसके जीवन पर कोई आक्षेप नहीं लगाएगी। पिछले कुछ वर्षो में कुष्ठ रोगियों ने उसे एक चमत्कार समझा और उसे बाबा यानी पिता नाम से बुलाया।

बाद में अपने मुआयने के बारे में सोचने पर अगस्त्य ने बाबा रमन्ना से ईर्ष्या करते हुए कहा था कि जब वह केवल शंकरन कारंत ही थे तो कैसे अपने भविष्य को काबू किया। कारंत ने एकदम से पूछा, 'क्या तुम मेरे पिता से मिलना चाहते हो?' तब अगस्त्य हिचकिचाया और नहीं कहा, तो वह लगभग राहत में दिखा। हालाँकि इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि उसने रात्रिभोज के आमंत्रण को स्वीकार कर लिया था।

एक छोटा अगूँठा, कुछ उँगलियों की जगह ठूँठ, तीन उँगलियों वाले पैर, कुछ विकृत चेहरे– ऐसे कुष्ठ रोगियों के साथ रात्रि भोजन, वह मुश्किल से स्वीकार कर सकता था।

अपने पेट में गहरी गड़गड़ाहट की तरह उसने इस अनुभव की नवीनता को बहुत कामोत्तेजक पाया। ड्राइवर ने नहीं खाया, कारंत मुस्कुराया। उसके कुष्ठ रोगियों के बारे में कुछ पुराने विचार हैं। खाना अच्छा नहीं था, चावल, दाल, पालक, दही– मगर अगस्त्य ने निर्णय लिया कि वसंत को कुष्ठ रोगी हो जाना चाहिए ताकि पता चले आश्रम में अच्छा खाना कैसे बनाते हैं और कुछ समय यहाँ गुज़ार सके। 'तुम यकीन नहीं करोगे,' कारंत ने कहा, 'जैसा कि वह शिविर के अन्य निवासियों के साथ डाईनिंग हॉल के फ़र्श पर बैठे थे,' ये लोग एक बार भिखारी की तरह थे जो भारत भर में देखे जा सकते थे। उदाहरण के लिए, हावड़ा स्टेशन पर, जहाँ उनके शरीर का रंग और उनके ढ़ाँचा, बस-खण्ड सिलेटी और क्षय की तरह था, जहाँ वे लाखों राहगीरों की उदासीनता को अतीत या घृणा में बदलने की कोशिश कर रहे थे। ब्रह्मांड भर में उनका दर्शन बेहद सरल था। सिर्फ एक लाख ट्रम्पिग पैर अगस्त्य ने सोचा, मैट्रोमोर्फ़ेसिस– चमत्कार था, जैसे उसने देखा की तीन और एक आधी उँगली वाला हाथ उसे कुछ और दही दे रहा है।

कुष्ठ पीढ़ियो में से कुछ शिविर में नए प्रवेशकों की मदद करने के लिए बने रहे, अन्य को बेहतर जीवन की कोशिश करने के लिए छोड़ दिया था।

जीप तक जाने कारंत ने कहा, 'फिर आना।'

'हाँ, मै कोशिश करूँगा, अगस्त्य ने एक बार के लिए सच्चाई दिखाई थी। मगर मैं अगले दो महीने में जोमपन्ना में गुज़ारना चाहता हूँ।

ड्राइवर ने कहा, 'साहब, आपको खाना नहीं चाहिए था। चिंता की बात है, जैसे वे अंधेरे में चले गए, वे कुष्ठ रोगी हैं।'

अगस्त्य ने कहा, आप सही हैं। मैं महसूस कर सकता हूँ कि मेरी उंगलियाँ सुन्न हो रही है। देखो, और उसने डैशबोर्ड से आधी रोशनी में उसका हाथ पकड़ लिया।'

यह आपराधिक रूप से तुच्छ था– इसलिए नीरा ने बाद में ड्राइवरों के कोढ़ी के विचार के प्रति अपने दृष्टिकोण की निंदा की थी। लेकिन फिर, जब वे कुछ महीने बाद कलकत्ता में मिले, तो उसने अपने दिमाग़ के कई अन्य विषयों का भी समाप्त कर दिया था। हल्की-सी सर्दी में, वह विस्तर पर था और आईने में उसका लम्बा मगर आरामदायक शरीर देख रहा था। जब उसने यह स्वीकार किया कि उसने बाबा रमन्ना और नानापाली जामपन्ना की उद्देश्य की महानता के लिए ईर्ष्या नहीं की। लेकिन यह जानने में उनका प्रमाण स्वयं के साथ क्या करना है, वह मुड़ी, हाथ में पारम्परिक चोली लिए और अपने जुझारू मार्क्सवादी तरीके से यह समझाने की कोशिश की कि आदिवासी और कुष्ठ रोगी वहाँ थे। जहाँ वे है वहाँ वह वर्ग शोषण की वजह से थे। जहाँ से दोनों सम्बंध रखते है। 'वर्ग सम्बंध' इत्यादि। वह हँसा, उसे और अधिक उत्तेजित किया और कहा, 'मुझे ख़ाक़ फ़र्क़ पड़ता– ख़ैर, शायद एक बकवास है, कुछ और नहीं। मुझे नहीं लगता बाब रमन्ना और वे लोग नक्सलवादी हैं, 'बेघर लोग हैं,' वैसे भी, पश्चात्ताप की भावना से सब कुछ कर रहे हैं। ये लोग ऐसा कर रहे हैं क्योंकि वह चाहते हैं करना। देखो, नीरा सब कुछ खुद के लिए। आप वास्तव में किसी और की मदद नहीं कर सकते यदि आपको खुद सही नहीं लग रहा है। जैसे बाबा रमन्ना के बेटे, कारंत मुझे नहीं लगता कि वह इतना अच्छा लग रहा है। छह महीने में वह एक बार अपनी पत्नी और बच्चे को मिलता है और वह कभी न्यूरो सर्जन बनना चाहता था, लेकिन वह शिविर से प्यार करता है, इसलिए वह थोड़ा उलझन में दिखता है और ऐसे किसी अजनबी के साथ बात करने के लिए उत्सुक रहता है, जो अच्छा श्रोता दिखता है। और सर्कस जीप का ड्राइवर, कब तुम गड़बड़ और उलझन में महसूस करते हो, जैसा मैं हमेशा महसूस करता हूँ। तुम्हारा मन केवल चारों ओर घूमता है, तुम दूसरों की राय या उन्हें शिक्षित करने के बारे में परवाह नहीं कर सकते। केवल एक ही रास्ता है, कुछ गुप्त चुटकुले सुनाना और अपने पेट को चुपके से हिलाना। मगर उसे समझ नहीं आया।

'सर, आपको समझ में नहीं आता', जीप के शोर मे ड्राइवर चिल्लाया। 'कुष्ठ रोग मज़ाक़ नहीं है।' एकदम से, बाएँ हाथ पर पेड़ की काली छाया में, अगस्त्य ने आकाश में एक लम्बी सोने की गेंद देखी, जैसे एक मनोरजन पार्क के ऊपर कुछ उल्लास के लिए कुछ

विज्ञापन हो। एक पल के लिए उसने सोचा कि उन्होंने पंद्रह मिनट में एक घंटे की यात्रा पूरी कर ली थी और वह गेंद मदना थर्मल पावर स्टेशन की अंतरिक्ष युग की विलक्षणता थी। इस चंद्रमा की सुंदरता में लगभग दैवी पारभासिता थी। अम्बर का एक विशाल ग्लोब उसने मदना तक जाते पूरे रास्ते देखा। एक काली चाँदी- जैसे बादल उसके चेहरे के सामने से निकला। यह शनि का संकेत देता है– स्वयं खुद का शानि, आपका और मेरा, शंकर ने कहा। अपने बुझी नारंगी चमक के समक्ष दूरवर्ती पेड़ों की छाया आकृति बना रहा थी, जैसे आग के सामने, रूई के बादलों का टीला किसी अनजान से किनारे को छूते थे, लाल और चमकदार। उसने सोचा, यहाँ एक गृह प्रदीप्त हो सकता था ।

बजाज ने पूछा 'बाबा रमन्ना कैसे थे? क्या उसने ऋण के बारे में अपना मन बदल लिया था?' वह और अगस्त्य अपने कार्यालय में थे, जो भूरे रंग के पूरक रंगों से घिरा था।

अगस्त्य ने कहा 'नहीं, सर।'

बजाज ने कहा, 'वह उदास है' और हँसा। 'उसने बहस की कि सरकार उसे ऋण इसलिए देना चाहती है क्योंकि वह अब प्रसिद्ध व्यक्ति है। मगर भाई, हम सिर्फ़ ऋण उन लोगों को देते हैं हमें पता है, जो उसका सही प्रयोग करेंगे।'

'जी, सर।'

'तो? जोमपन्ना से वापस आ गए?' बजाज अपनी कुर्सी के पीछे झुका औऱ दुख: पूर्वक मुस्कुराया। हमें अक्सर मिलना चाहिए, और ख़ैर, तुम एक विकास अधिकारी होगे, जिसे हर महीनें बैठकों का पुनरावलोकन करना होगा। लेकिन मालूम होता है कि तुम्हारी पोस्टिंग जोमपन्ना में कुछ लोगों को परेशान करेगी। सभापति, तुमने बताया था तुम

उससे एक बार मिल चुके थे। वह इधर आए था। उसने तुम्हारा पोस्टिंग आदेश निरस्त करने के लिए मुझे मनाने की कोशिश की।

अगस्त्य ने अपनी हैरानी दिखाई। 'तब अन्य राजनीतिज्ञ ने भी, मगर मैंने उन्हें कहकर चुप कर दिया, देखो, यह सिर्फ़ दो महीनों के लिए है और मिस्टर सेन एक आईएएस अधिकारी हैं, वह आईएएस के लोगों को नीचे नहीं गिरने देंगे।' बस तुम इंतज़ार करो, अगस्त्य ने धीरे से कहा।

बजाज ने हल्के से अपनी बगल खुजलाई, 'जोमपन्ना क्षेत्र में आधी आबादी जनजाति है, जितना हो सकता है उनकी मदद करो! 'राजनेताओं का मुख्य डर है कि तुम करोगे।' दोपहर के सूरज ने खिड़की से बजाज के सर को जला दिया था। उसके कान लाल चमक रहे थे, और अगस्त्य सोने से चमचमाते हुए उनके किनारे देख सकता था। 'वहाँ पर कोई जाति भेद या उस- जैसी कोई अन्य चीज़ नहीं है', बजाज ने बताया जैसे अगस्त्य उसको अनुसरण कर रहा था,' 'यह बहुत सरल है, सिर्फ़ अर्थशास्त्र और राजनीति है। यहाँ की जनजाति वर्षों से नज़रअंदाज़ किए जा रहे हैं। क्योंकि शुरूआत में उनमें से बहुत सारे पहाड़ी जंगलों में रहते थे। राजनेताओं द्वारा निर्देशित जोमपन्ना में बेहिसाब धन डाला गया था, मैदान में ग़ैर-जनजाति जनसंख्या को लाभ देने के लिए। तुम्हें पता है, प्राथमिक स्कूल, दवाख़ाने, सड़कें, कुएँ, बैकऋण– बदले में उसी राजनेता को स्थानीय राजनीतिक निकाय में, ब्लाक पंचायत में सत्ता के लिए वापस वोट दिया गया था। तुम्हारे सभापति, उदाहरण के लिए, लगभग तीस सालों के लिए ब्लॉक पंचायत के अध्यक्ष रहे हैं। तभी फ़ोन बजा। बजाज ने क्षेत्रीय बोली और हिन्दी को मिलाकर कुछ मिनट तक बहस की। तो वह जोशभरी चर्चा में वापस आ गया। हाँ सेन, तो मैं क्या कह रहा था? हाँ, इसके लिए सरकार को वास्तव में दोषी नहीं कहा जा सकता है'– उसके हाथ हवा में ऊपर– नीचे हुए, 'जोमपन्ना का विकास।' तुम देखो, कुछ दशक पहले तक आदिवासी व्यावहारिक रूप से अदृश्य थे। कभी-कभी मुझे उनके लिए बुरा लगता है। वे कभी भी भारत की मुख्यधारा से नहीं जुड़े। सन् 1947 से इन दशकों में भारत के आदिवासियों को दिखाने के लिए क्या किया है? बस, नेहरू के साथ कुछ फ़ोटो। बजाज बुरी तरह हिला

और अगस्त्य अपनी कुर्सी पर स्थानांतरित हो गया। आदिवासियों ने जंगल छोड़ना शुरू कर दिया जो उनको बरक़रार रखने के लिए बहुत बर्बाद हो गए थे।' बेशक इसकी आलोचना भी हुई है। बजाज ने अगस्त्य के सामने सिर हिलाया जिसने जल्दी से वापस से सिर हिलाया, जो कहते हैं कि सन् 1947 से सरकार ने अपनी नीतियों के साथ वास्तव में क्या किया है। किसी भी वास्तविक हर्ज़ाने के बिना विशिष्ट आदिवासी संस्कृतियों को बर्बाद करना है। और यह हमेशा की तरह है, क्योंकि आलोचकों को पता नहीं है कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं।

एक चपरासी चार बजे की चाय के साथ आया। अगस्त्य ने ज़ोर से उससे फुसफुसाकर कहा कि उसे एक और कप चाहिए। बजाज ने कहा, 'बीडीओ के तौर पर' और बातचीत के लहजे में, ब्लाक का दौरा जितना तुम कर सकते हो, गाँव देखा करो। गाँववालों से मिलो, यह तुम्हें नौकरी का एक बेहतर अंदाज़ा देगा। ज़ाहिर है, अब भी जंगल में अन्दर सभी मौसम के योग्य सड़कें अधिक नहीं हैं। बजाज ने अपने कप से, अगस्त्य पर उदासी से दृष्टि डाली, शायद कोई जिज्ञासु प्रश्न न पूछने के कारण उसे निराशा हुई होगी मगर और भी क्योंकि यह उसकी सामान्य अभिव्यक्ति थी। तुम पूछोगे क्यों वहाँ बहुत कम ऐसी मौसमी सड़कें हैं। अज्ञानता के कारण तो आलोचकों का क्या होगा। आदिवासी गांवों की कितनी आबादी होगी? कुछ की पचास के रूप में कम जनसंख्या है। याद रखो कि कुछ दशक पहले तक बहुत से लोग ख़ानाबदोश थे। जंगलों के एक हिस्से से दूसरे तक जाते रहते थे। इसलिए उनके गांव बिखरे हुए हैं। तो वे क्या उम्मीद करते हैं, कि हम सिर्फ़ पचास जनजाति के समूह के लाभ के लिए एक सड़क बनाएँ? बेतुकापन है। उसने अपना चाय ख़त्म की और कप मेज़ पर रखने के लिए झुका। 'एक सड़क, किसी भी अन्य विकास कार्यक्रम की तरह आर्थिक रूप से व्यवहार्य होनी चाहिए, है कि नहीं? तो इसलिए हम कहते हैं, अगर आप इन गांवों को एक साथ मिलाते हैं तो उनसे सभी को एक या दो स्थानों पर जाने के लिए कहें, तो हम उस क्षेत्र को विकसित करने, उनके घरों का बनाने में मदद करेंगे। तो आलोचकों ने रोना शुरू कर दिया आप आदिवासी संस्कृति को बर्बाद कर रहे हैं। उनको अकेला छोड़ दो। मगर मुझे एक आदिवासी दिखा दो जो अकेला रहना चाहता है, जो विकास के विरोध में है, जैसा कि हम समझते हैं।

औषधालय, स्कूल, सड़के, बाज़ारों तक पहुंच, बस सेवा, बैंक ऋण, बेशक आदिवासी यह सब चाहते हैं, लेकिन इसके लिए उन्हें बड़े समूहों में एक साथ रहना होगा। हम ग़रीब देश में हैं। हमारे पास हर पचास आदिवासी के लिए एक सड़क और एक औषधालय नहीं हो सकता है।

अगस्त्य ने अपनी दूसरी चाय खत्म की और नीचे मटमैले क़ालीन को देखा। वह खुद तनावग्रस्त महसूस कर रहा था, और वह था। अपनी कुर्सी लाँघकर गरमजोशी से बजाज को शुक्रिया अदा किया और कहा सर, वह उसे निराश। नहीं होने देगा और बड़े विनम्र भाव से कमरे से बाहर निकला, सूक्ष्म जगत के विकास के बोझ के बावजूद गरिमापूर्ण ढंग से। हालाँकि, बजाज ने भारत सरकार को अपनी उपयोगिता को लेकर गंभीरता से और संदेह के साथ उसको बुरी तरह से देखना ज़ारी रखा।

अगस्त्य ने देखा, बाहर निकलने का यह उसका पहला आंदोलन था, जिसकी उसने योजना बनाई थी, और बजाज ने कहा, ‘चीपांथी। तुम्हें चिपांथी ज़रूर जाना चाहिए। यह एक विशाल क्षेत्र में फैले गाँवों के एक समूह में एक केंद्रीय आदिवासी गाँव है और अनोखा है। जोमपन्ना एक बहुत ही सूखा अछूता ब्लाक है। सभी तुमसे पहले ही दिन से पानी की कमी की शिकायत कर रहे होंगे।

अगस्त्य दरवाज़े पर था, जब बजाज ने कहा, ओह, सेन, मैं तुम्हें कुछ दिलचस्प बात बताना भूल गया। चीपांथी के नज़दीक कुछ गाँवों में, कोई दो साल पहले वहाँ आदमी की क़ुरबानी की कुछ अफ़वाह थी।

जोमपन्ना के लिए तैयारी। वसंत के दौड़ कर आया और दिगंबर की आलोचना करने लगा। अगस्त्य को उसका पहला दिन याद आया, ट्रेन तीन घंटे देरी से थी और उसे लगा कि जैसे वह किसी और की ज़िंदगी जी रहा था। वैसे पहली सुबह वह तामसे की पेटिंग से मंत्रमुग्ध हो गया था। और आश्चर्यचकित था कि क्या दीवारें भी उस पर बढ़ेंगी। अब दो महीने जोमपन्ना में प्रशिक्षण के अंत में, और वह वापस कहीं सहायक कलेक्टर होने

से पहले वह कलकत्ता में थोड़ा रुकेगा। वह जगह रामेरी भी हो सकती थी। क्योंकि उसने सुना था कि मेनन का तबादला होने ही जा रहा था, उसने ख़ामोशी से कहा ऐसा है क्या! वह अपनी कैसेट संकलन पर मुस्कुराया। इस कमरे की चाहत जगाए रखने के लिए मैं महीने में कम-से-कम एक बार बैठक आदि के लिए मदना में आऊँगा। उसने वसंत को कहा, कोशिश करना और मेरे लिए इस कमरे को ख़ाली रखना।

उसे साठे से कहना चाहिए कि वह अपनी गीता थोड़े अधिक समय तक रखे। उसने सोचा मोहन के साथ भाटिया के लिए भी एक पत्र छोड़ना चाहिए। भले ही उसने जोमपन्ना के हफ्ते बाज़ार से गांजे की गंध आई थी पर उसे कुछ और गांजा ले लेना चाहिए। उसे उन दिनों बजाज के कार्यालय से कुछ चुरा लेनी चाहिए थी।

बीडीओ, जिससे वह जोमपन्ना रेस्ट हाउस के बरामदे में मिला था और जिसका नाम उसने शाम के लगभग छह बजे तक नहीं सुना था।

अगस्त्य ने प्यार से पूछा 'तुमने पिछली बार अपना नाम नहीं बताया था।'

उसने कहा 'सर, पटेल' और मुस्कुराया। पटेल ऊपरी तौर से उसके कार्यालय के बारे मे उसे सचेत करने आया था। 'सर, सभापति कार्यालय की जीप हमेशा अपनी वैयक्तिक यात्रा के लिए इस्तेमाल करना चाहता है। सर, मगर आप आईएएस अधिकारी हो, आप इसे रोक सकते हो। और सर, कार्यालय अधीक्षक बहुत ही ख़तरनाक आदमी है।' अगस्त्य ने कंधों के उचकाने वाले हल्के रंग की आँखों वाले उस आदमी के बारे में सोचा।

वह उस शाम श्रीवास्तव के घर गया। श्रीवास्तव ने अपनी बात 'तुम तुम्हारे प्रशिक्षण के सबसे अच्छे भाग को शुरू कर रहे हो' के साथ ख़त्म की। इसको अच्छी तरह करना।

अगली सुबह जीप में उसने सूटकेस वग़ैरह सभी बाँध रखे थे और वह जोमपन्ना के लिए निकल गया, वसंत के बच्चों ने रेस्टहाउस के दरवाजे तक जीप के साथ दौड़ लगाई।

वह सड़क पर एक तीसरी यात्रा थी, जो कि पहले कुमार के साथ और फिर एवरी-सीता के साथ कर चुका था। लेकिन पहली बार वह अकेला था। लेवल क्रसिंग, तीलन पर दोपहर का खाना। ड्राइवर धीरे और सावधानी से गाड़ी चला रहा था और उस अधेड़ उम्र के चेहरे पर हल्का-सा चिड़चिड़ापन था। देखो, ड्राइविंग में जल्दबाज़ी की कोई ज़रूरत नहीं है, या किसी अन्य सरकारी काम में– उसके पास इसी तरह का चेहरा था। वह जोमपन्ना गोधूलि तक पहुँच गए थे। लेकिन जो हल्की रोशनी बाकी रेस्ट हाउस की कुरूपता केवल मामूली रूप से कम कर सकती थी। कार्यवाहक ने उन्हें वह कमरा दिया, जो पहले एवरी और सीता को दिया था। बरामदे में चाय, गन्ने के खोकों पर लैंप चालू हो गए थे और ड्राइवर ने कहा, सर मैं अब जाऊँगा और कल दस बजे आउगा ?'

ड्राइवर जीप में था जब अगस्त्य ने कहा, 'ओह... चंदराम! ड्राइवर मुड़ा।' जब मिस्टर पटेल बीडीओ थे तब जीप उसके घर पे रुकती थी ना।

ड्राइवर ने कहा, 'हाँ, सर।'

'तो अब तुम जीप कहाँ ले जा रहे हो? यह मेरे साथ रेस्ट हाउस में नहीं रहनी चाहिए?'
ड्राइवर की आवाज़ तब थोड़े डर में बदल गई, जो कम-से-कम निर्दोषता में एक बदलाव था। सर, सभापति ने इसके लिए कहा था।

अगस्त्य ने सोचा, यही ख़त्म करें। 'ठीक है, कल दस बजे आजाओ।' जीप चली गई। वह अपने कमरे को सही करने के लिए चला गया। तब पुर्वानुभव, जैसा कि उन्होंने अतिरिक्त फ़र्नीचर को लेकर केयरटेकर से बहस की थी। 'देखो, मुझे इस सोफ़े और इन दो कुर्सियों और इस डाइंनिग टेबल की ज़रूरत नहीं है।'

सर, 'मगर यह डाइनिंग टेबल नहीं है, यह पढ़ने के लिए टेबल है।'

‘बस, इसे बाहर ले जाओ! और याद रखो, उबला हुआ पानी। पानी को पांच मिनट तक ऊबालना। पानी उबलने तक पाँच मिनट गिनना बस।

रात्रि भोजन के बाद बरामदे में रात की आवाज़ और घुड़साल से रात्रि संगीत आ रहा था। क्रेयरटेकर ने उसे ज़बरदस्त ढंग से हैरान कर दिया। डच अस्पताल पर कुछ रोशनी, उसने सोचा एवरी-सीता इस समय क्या करते थे, यहाँ जोमपन्ना मे दो महीने और एक नौकरी, जिसके बारे में उसे कुछ नहीं पता था।

साढ़े नौ बजे सुबह, केयरटेकर एक अदभुत विचारधारा वाले आदमी की तरह कहा, आपको इसी समय दिन का भोजन खाना चाहिए। आप जब काम से लौटकर शाम को आएँगे, आप रात्रि भोजन कर सकते हैं। दिन मे दो बार भोजन, यही सब अधिकारी लेते हैं, यह आपको तंदुरुस्त रखता है।

‘और अगर मुझे दोपहर को भूख लगी तो?’

आपको नहीं लगनी चाहिए। अधिकारियों को नहीं लगती है। और आपको लगती है तो केला खाना! यह सेहत के लिए और पेट के लिए अच्छा होता है। फ़िलहाल, आप आओ और दिन का भोजन करो, मैने पहले से ही बना लिया है।’

डच अस्पताल के पीछे ब्लाक पंचायत कार्यालय पाँच मिनट की दूरी पर था। जैसे अस्पताल के किनारे लगी, वह फिर से अपनी विसंगति पर हैरान हो गया। यहाँ की लाल रेत पर, जिसने केवल विचित्र पेड़ों को पोषित किया है, बेकार सा रेस्ट हाउस और गन्दे खोके में लोग चाय और जूस बेच रहे थे। हरे रंग की लॉन डिग्नीफाइट सिलेटी पत्थर का था। वह इसके निर्माण की प्रेरणा से हैरान था: क्योंकि भारत के दूर कोने में दान के एक

अस्पताल बनाने के लिए या जर्मनी वाले कुष्ठ रोगियों के लिए एक भारतीय उपचारक को राशि देने के लिए डच को किसने प्रेरित किया था? मगर वह कुछ हफ़्ते बाद बहुत प्रसन्न हुआ, यह जानकर कि अस्पताल में डच मिशनरी आदिवासियों को ईसाई धर्म के लिए परिवर्तित कर रहे थे। इस ख़बर का कोई गवाह नहीं था। इस बात पर वह हँसा, मगर थोड़े अविश्वास के साथ क्योंकि उसे यह बहुत ही बेतुका लगा कि ऐड्स और ऐटम बम के दौर में कुछ मिशनरियाँ उनका उपचार करने से पहले बुतपरस्ती को लॉड के रास्ते में परिवर्तित कर रही थीं। हे भगवान, वह हँसा। ये लोग कभी बड़े हो पाएँगे। उसकी माँ की झीनी स्मृति उसे शर्मिन्दा नहीं करती थी। तब से उसे अस्पताल का परिवेश और सौंदर्य घटिया लगने लगा। कुछ जनजातियों को लुभाने के लिए सिर्फ़ लाखों रूपये, कुछ बीमार, अशिक्षित और परेशान व्यक्ति पर क्रॉस का संकेत बनाने के लिए जिसे अंगनागला कहा जाता है, या कुछ इस प्रकार के नाम से पहले या उसके बाद डेविड या जॉन पर ज़ोर देते हैं। वह कभी-कभी सोचता था कि जब भी वह अस्पताल से गुज़रता, उनके पास लाल फोन होता था, वेटिकन तक एक हॉट-लाइन और रोज की खबर भेजनी होती थी, महरानी, (मगर वास्तव में क्या बुलाते होगे? शायद जार्ज रिंगो प्रथम) 'आज चार और बुतपरस्त पकड़े। दो असफल मामले मुस्लिम के थे। वह बहुत ज़्यादा गुस्सा थे और हमारे हाथों से दवा छीनकर भाग गए।

ब्लॉक पंचायत कार्यालय भी लाल रेत पर था, मटमैला पीला और एकमंज़िला। उसके बाहर पेड़ के नीचे निरुद्देश्य आलसी समूह बैठे थे। इनके चेहरे उनकी याद दिलाते हैं जिनको वह कलेक्टर के गलियारे में और बाहर देख चुका है। सुस्त लोगों के चेहरे और कुछ इंतजार में भावशून्य लोग। वह खुद सुबह गाँजा फूँक चुका था हमेशा की तरह, नहाने से पहले उसकी गुप्त कसरत और जैसे वह जीप से बाहर निकला, हमेशा की तरह उसकी कामना थी कि वह कुछ ज़्यादा फूँकता।

सबने देखा। अगस्त्य का जीप पर आना उन लोगों के लिए रोमाँचकारी था, जो जोमपन्ना ब्लॉक कार्यालय के बाहर इंतज़ार करते थे। उन्होंने कहा, 'ओह, चंदराम!' ड्राइवर मुड़ा, उसके चेहरे से लगा कि वह अगस्त्य की इस टोन पर शक करना शुरू कर

चुका था, ज़ोर से और प्यार से, मुझे जीप की चाबी दो, क्या तुम दोगे। मैंने सोचा, मैं रखूँ। उसे जीप को लेकर सभापति की तनावभरी शर्मिन्दगी अच्छी लगती थी।

गलियारे में स्वागत करनेवाले का मजमा था। उन्होंने उनके कमरे के ही तरफ़ रास्ता दिखा या उनके नाम और पदों को बुदबुदा रहा था। सबसे आगे एक छोटा और मोटा आदमी सबसे अधिक बड़बड़ाया। उसका कमरा गलियारे के एक छोर पर था, खिड़की के ऊपर गांधी और नेहरू के चित्रों के साथ, गुलाबी दीवारें। वह अपनी डेस्क के सम्मुख लगभग बीस कुर्सियाँ को देखकर हताश था क्योंकि यह इस बात का संकेत करता था और यह मुमकिन है कि एक बार में बीस लोग उससे मिलने आ सकते थे। एक फिरिज दो खिडकियों के बीच रखा था, वह तुरन्त उसे खोलने गया। वहाँ नैपकिन, एक चॉक का डिब्बा, कुछ बँधे हुए मानचित्र और तीन पैनस्टैंड थे। मगर उसकी कुर्सी हद से ज़्यादा आरामदायक थी, कार्यालय की उन चीज़ों मे से एक जो सभी दिशाओं में कई कोणों पर घूम हो रही थी। जब दरवाज़ा खुलता तो वह सभी तरफ़ घूमता और जब भी अंदर आते(और जब यह लगा वे बैठ गए। वे सिर्फ सात थे)। यह एक नेता और छह गुंडों का समूह था– वे आकर बैठ गए।

जोमपन्ना में नेता बहुत महत्त्वपूर्ण है, कम-से-कम उसकी टोन से ऐसा लगा। लाल आँखे और पाँच इंच की मूँछें। अगस्त्य ने न तो उसका नाम पूछना और न ही उसकी महत्ता का कारण जानना चाहा। राजनेता ने कहा, मैं हिन्दी में बोलूँगा, सेन साहब, आपके लाभ के लिए। अगर मैं अपनी भाषा में बोलता हूँ तो आप नहीं समझ पाओगे। गुंडों द्वारा फटी हुई हँसी गूँजी। नहीं, मैं समझ लूँगा। पहले आप सिर्फ अपनी भाषा में मुझसे बात करना सिखाइए। फिर से फटी हुई हँसी। अगस्त्य ने खुद से कहा सब एक हैं।

राजनेता बीडीओ साहब को सलाम दुआ करने और अगले बीस मिनट में खुद के बारे में बताने आया था। नए बीडीओ साहब को ब्लॉक में पीने के पानी की समस्या को गंभीरता से समझने के लिए भी और अंत में बोर की शिकायत के लिए। कुछ गाँव में

जिसका नाम है जो अगस्त्य से छूटनेवाली लाखों चीज़ों में से एक थी, काम नहीं कर रहा था।

'बोर?' अगस्त्य ने चौकसी से पूछा। 'तुम्हारा मतलब है बोरवेल!'

जिस पर राजनेता चौंक गया, ज़ाहिर है। आपके आने से पहले मैं बस उसके हाथ ने दरवाज़े की ओर इशारा किया था, ईओ से मिला, जो कहता है बोर दो दिन पहले ही ठीक हो गया था मगर गाँव वाले कहते है कि नहीं हुआ था।

पहले दिन की समाप्ति पर अगस्त्य को पता लगा कि ईओ एक विस्तार(एक्सटेंशन) अधिकारी होता था। दूसरे दिन के समाप्ति तक कार्यालय में उनमें से कम-से-कम दस थे; मगर हफ्तों से हर एक ने भी क्या किया, यह अंधकार में था।

उसने घंटी बजाई। दरबान हाज़िर हुआ, कुछ कारणों से वह मुस्कुरा रहा था; अगस्त्य बहुत भौंचक था। बुलाओ... वह अचम्भित था, शायद उसे उस छोटे-मोटे आदमी को बुलाना चाहिए था जो गलियारे में सबसे ज़्यादा बुदबुदाया करता था। वह बहुत धौस देने वाला और बाइख्तियार लग रहा था। वैसे भी, वह किसी और को नहीं बुला सकता था, उसने शायद ही कोई और आकृति याद आई। लेकिन निश्चित रूप से उस मोटे आदमी का नाम और पद था... उस मोटे आदमी को बुलाओ जो बुदबुदाता रहता है...?' उसने हल्के से उससे हाथ मिलाया। बहुत आश्चर्य से दरबान ने तेज़ी से सिर हिलाया और चला गया। शायद सभी बिलकुल इसी तरह नाटे छोटे आदमी को बुलाते थे, एक पल के लिए अगस्त्य ने सोचा। और उसे चपरासी की चाल समझने में लगभग एक हफ़्ता लगा। चपरासी का उसूल था कि जितना कम हो सके, उतना अपने बॉस को देखो और बहुत कम समय के लिए। जो भी वह कहता था, उस पर सभी चपरासी चालाकी से हामी भरते थे और जल्दी से कमरे से निकले जाते। वह उनकी काफी प्रशंसा करता था।

चपरासी उस नाटे मोटे आदमी के साथ वापस आया, इसलिए नहीं कि उसने अगस्त्य को समझ लिया था, लेकिन क्योंकि वह आदमी कार्यालय प्रबंधक मलिक था, इसलिए अगस्त्य की माँगों को समझ सकता था और इसने चपरासी के काम को कमकर दिया। मलिक राजनेता को देखकर कुछ बुदबुदाया और कमरे से चला गया। गुंडो के देखकर अगस्त्य मुस्कुराया। मलिक किसी अन्य काले और मैले-कुचैले आदमी के साथ वापस आया, जिसने कुछ मिनट तक राजनेता से उत्तेजित होकर बातें कीं। दोनों ने असंतुष्ट चेहरे के साथ बात समाप्त की, फिर राजनेता ने अचानक कहा, वह अगस्त्य से विदाई लेगा। बाहर गुंडे ने ठहाका लगाया।

लोगों की लाइन, जो नए बीडीओ को देखने आए थे, अनंत थी। पहले कुछ दिनों के लिए वह सभी मिलनेवालों से डरता था। वह हर बार दरवाज़ा खोलकर प्रत्यक्ष रूप से बीमार महसूस करता था। पहले दिन के दूसरे मिलनेवालों में एक चश्मा लगाए हुए बुजुर्ग औरत थी, जो कुछ बुदबुदा रही थी, कुछ देर बैठी, फिर से कुछ बुदबुआई और चली गई। उसे कभी पता नहीं चला की वह क्यों आई थी? शायद उनके लिए जरूरी था, शायद उसने उससे एक सवाल पूछा था और उसका जबाब हाँ चाहती थी - इंतज़ार किया और उसकी ख़ामोशी को न समझकर वह चली गई। उसने चपरासी के लिए घंटी बजाई और पागलों की तरह पूछा, 'बूढ़ी औरत क्या चाहती थी?' चपरासी ने लापरवाही में कहा, 'वह? वह कुछ नहीं चाहती थी' इसके बाद मलिक, वह छोटा-मोटा आदमी ने उसके साथ बैठने के लिए पूछा। चीज़ें बराबर विस्मयकारी लग थीं, मगर अलग तरीके से। मलिक के लिए हर एक की मुलाकात का मक़सद उसे अच्छे से समझाना था। एक बैंक से ऋण लेना चाहता था, दूसरा किसी और जगह तबादला कराना चाहता था। चश्मा लगाए हुए डॉक्टरों में से कुछ पुरुष नसबंदी और महिला नसबंदी के शिविर कहीं लगे हुए हैं, की सूचना दी (उसे याद आया कि भाटिया उन्हें 'तुम्हारी योनि और लिंग काटनेवाले शिविर' बुलाते थे)। चार नेता दो प्राथमिक स्कूलों में सात शिक्षकों का तबादला तीन अन्य स्कूलों में कराने के लिए आए थे। एक पुराना सैनिक सवाल और क्रोध में अपने गाँव के कुछ नेताओं की शिकायत करने को आया, जो पूर्व सैनिकों की मरज़ी और उस जैसी सोच वालों के ख़िलाफ़ गाँव का नाम बदलने की योजना बना रहे थे। कुछ मिलनेवालों की माँगों और

निवेदनों को तो मलिक भी समझ नहीं सका था। यह उसने शांति से अन्य कार्यालय की ओर बढ़ा दी– 'ओह, इसके लिए तुम्हें तहसीलदार के पास जाना पड़ेगा।' 'नहीं हम यह नहीं कर सकते। यह हमारे पास मदना के डिविज़नल फॉरेस्ट ऑफिस से आना होगा।' और अगस्त्य यह खारिज दरख़्वास्त एक अनजान कार्यालय से दूसरे बेकार कार्यालय तक घूमते देख सकता था। हर एक दरख़्वास्त पर काली सिलवट उसकी पेचीदा सफर की छाप थी और उसे कलेक्टरेट में अपने पहले दिन की याद है, श्रीवास्तव के कमरे में जितना आसान उसे लग रहा था, जो लोग उसे देखने आए थे उनको आश्वासन देना (और न केवल प्रबंधन)।

मलिक का चेहरा कुछ हद तक फ़िल्मों के खलनायक जैसा था, जिस तरह से पिछली रील में, कसाई का नहीं है, मगर इसकी जगह, दंडित और डरा हुआ है। जैसे कई सालों तक जेल में रहा हो। शिथिल शरीर और जड़ आँखें जिन्हें वह कभी मार भी नहीं पाएगा। अगस्त्य ने सोचा, मगर वह शायद ब्लैकमेल कर पाएगा– उसके चेहरे और मेरी अक्षमता के बीच फँस गया था। मुझे यह जोमपन्ना के विकास के लिए बुरा लगा।

उसने सम्बंधित गलियारे के बुदबुदानेवाले को बुलाया जो मिलनेवालों की बातों को जो समझ जा सकता था। तब उन्होंने बतियाया और वह पीछे बैठ गए (सभी तरफ़ घूमने के इच्छा को रोककर) बिना बात को समझे, लेकिन संयोजित होने के लिए खुद से बहुत खुश हुआ, जो मतलब की बातचीत तरह लग रही थी। मगर वह काफ़ी देर तक खुश नहीं रहा, क्योंकि आवेदकों के असंतुष्ट चेहरे और उनके लगातार उससे आवेदनों ने यह साफ संकेत किया कि संवाद उपयोगी नहीं रहे थे। कुछ दिनों में वह देख सकता था कि गलियारे के खबरी और उसके लगभग सभी अधीनस्थ काम को पसंद नहीं करते थे, मगर पहले दिन के कुछ ही घंटो में उसे लग गया था कि उनमें से बहुत से बेशक बेकार थे और उसने सुस्त याचिकाकर्ता और टालने वाले अधिकारी दोनों को घूरना शुरू कर दिया।

विकास भारत की कहानी में एक प्रमुख लेटमोटिफ की तरह है, संस्कृतियों का गुलाम और लम्बी और जटिल इतिहास की अनन्य विरासत है, लेकिन विकास कभी फ़ैशन योग्य

या तड़क-भड़क वाला नहीं होगा। जोमपन्ना भारतीय गुमनामी था; अधिकांश के लिए जीवन धीमा और बहादुरीवाला नहीं था। पहले पन्ने वाले राजनेता यहाँ कभी नहीं गए थे और जो गए थे, वह पाँच वर्षों में गए थे। वादे करने और वोट पाने के लिए। और निश्चित रूप से काकेशियन मिशनरियों के साथ मलयाली नन को छोड़कर, उनकी जागृति के लिए कभी भी कोई भी जोमपन्ना रहने नहीं आया था। विकास के इलाके कहीं और ही दिखाई दे रहे थे। एक थर्मल पावर स्टेशन की क्षितिज में, एक सड़क के किनारे मृत शैलों में, मगर यहाँ सरकारी फ़ाइलों में एकमात्र अल्फाज़ लग रहा था। कई महीने पहले अगस्त्य के लिए मदना देश का अब तक अनुभवहीन एक टुकड़ा रहा था–लेकिन जोमपन्ना को दुरूह होना चाहिए था। कई महीनों पहले तक, अगस्त्य के लिए मदना देश का एक अनुभवहीन टुकड़ा रहा, लेकिन जोमपन्ना तो इससे भी बढ़कर था।

एक घंटे का दोपहर का ब्रेक था, लेकिन उसे चार घंटे तक बढ़ाया जा सकता था। अगस्त्य बहुत पेटू हो चला था, वह खिड़की से बाहर की तरफ़ देखते हुए, धीरे-धीरे छह केले खा गया। उसे खिड़की से आधा पेड़, कुछ निठ्ठल्ले टहलते लोगों के टोपी पहने सिर, और उनके आगे दूर तक लाल रेत, सड़क किनारे कुछ और पेड़, कभी-कभी निकलते वाहन, एक जीप, एक साईकिल, एक बैल-गाड़ी (जिसे उसकी खिड़की के सामने से निकलने में कई मिनट लग रहे थे), एक डच अस्पताल का कोना, झोपड़ियाँ और कुछ दूरी पर एक इंच ऊँचाई तक जंगल दिखाई दे रहा था। दो महीनों तक वह यही चीजें देखता रहा, बस जगह बदलने से कभी-कभी उनका कोण और रोशनी की तीव्रता बदल जाती थी। धीरे-धीरे उसके लिए वही कुछ अंडर-डेवलेपमेंट की टिकाऊ रूपरेखा बन गई।

पहले दिन दोपहर के भोजन के समय जब वह चौथा केला खा रहा था तो ड्राइवर जीप की चाबियाँ लेने आ टपका। 'सर, डीज़ल भरवाना है।'

अगस्त्य ने मन ही मन में सभापति के कौशल की सफाई की सराहना की। हालांकि, उसने पूछा, 'क्यों?' और अपना पाँचवाँ केला खाना शुरू किया।

'लेकिन सर... '

'मैं कहीं भी नहीं जा रहा हूँ, क्या मैं कहीं जा रहा हूँ? हम बाद में भरवा लेंगे। 'जब दोपहर के भोजन के ब्रेक के बाद मलिक लौटा (चेहरे पर पेट की तृप्ति से नरम हो गया), तो उसने उससे पूछा,'सभापति के ऑफिस की जीप का इस्तेमाल करने के क्या नियम हैं?'

मलिक कार्टून फ़िल्म की एक मोटी चूहिया की तरह मुस्कुराया। फिर उसने, पहले की तरह अगस्त्य की तरफ़ बिना देखे हुए समझाया। वह किसी भी ऑफ़िसियल उद्देश्य के लिए, विकास कार्यक्रम की साइट पर जाने के लिए, या किसी भी ऑफिसियल (राजनीतिक विरोध के रूप में) बैठक में भाग लेने के लिए, ऑफिस की जीप का इस्तेमाल कर सकता है– इसी तरह की कई बातें कही।

वह बाई-हैंड आई याचिकाओं, आवेदनों, और अनुरोधों को नहीं लेता– केवल बाई पोस्ट ही उन्हें स्वीकार करता था। दैनिक पोस्ट एक बड़ी मोटी फाइल थी, काग़ज़ और आनेवाले दस्तावेज थे। उसने अंग्रेज़ी के लिखे दस्तावेज़ और कागज पढ़े, और दूसरों पर आँख बंद कर हस्ताक्षर कर दिए, तर्क (बहुत ही ख़ुशी के साथ, किसी दूसरे गड़बड़ ऑफ़िसर के लिए), यह था कि यदि कुछ महत्वपूर्ण होगा, तो वैसे भी, उसे पता चल जाएगा। ऐसा नहीं था कि अंग्रेजी के ख़त ज़्यादा समझ में आ रहे थे। उदाहरण के लिए, एक मोटी बात, टिलन की बैंक ऑफ इंडिया की ब्रांच से एक तरह का द्विभाषी उपन्यास था, जो इस तरह शुरू हुआ था: 'हम निम्नलिखित कारणों से अयोग्य ठहराए जाने के बाद आपके इस ऋण प्रस्ताव को वापस कर रहे हैं...' उसके बाद काग़ज़ और मुहर लगे दस्तावेज़ों, आँकड़ों और फिर हाथ से लिखे, भयानक कामों के बयान। उनका क्या मतलब था? और कभी-कभी उसे बहुत बुरा लगता (लेकिन वह खूब आनंद लेता), कि मुझे क्या?

और फिर फ़ाइलें ही फ़ाइलें। उसकी मेज पर पड़ी फाइलों का पहाड़ श्रीवास्तव की फाइलों के मुक़ाबले का था, और अब उसे उन्हें जमीन पर पटकने का आनंद मिल रहा

था। उसकी फाइलें अपने वज़न के हिसाब से धीरे और तेज धमाके से जमीन पर गिर रही थी; कुछ फ़ाइलें अस्पष्ट जीत का भ्रम देती हुई, एक युद्ध के मैदान में पड़ी लाश की तरह दागदार गलीचे पर भी पड़ी थी।

फाइलें नाजुक भूरी या मोटी पीले काग़ज़ की थीं। सभी को जल्द निबटाने के लिए चिह्नित किया गया था। हरएक फ़ाइल के पहले पेज पर ही उसका दिमाग चकरा जाता। उसे उन पर कहीं-न-कहीं हस्ताक्षर करने थे, उसे तर्कसंगत कारण देना होता था, वरना बदमाश उसके सामने पेश हो जाऐंगे। खोजबीन के बाद वह हस्ताक्षर करने के लिए जगह देखता, उसे 'ब्लॉक डेवलपमेंट ऑफिसर, जोमपन्ना' के स्टैम्प के ऊपर, और उसके पार एक छोटा सा क्रॉस का चिन्हन यह चीखता नजर आता जैसे वह स्पष्ट रूप से कह रहा हो, यहाँ बेवकूफ, यहाँ पर हस्ताक्षर करो। उसे लग रहा था कि हरएक फाइल पर हस्ताक्षर के लिए जगह ढूँढ़ने में ही उसे काफी समय लग रहा था (कई फाइलों पर तो उसके लिए यह खोज एक जटिल खजाने की खोज की तरह हो जाती उसे स्टैम्प और क्रॉस का निशान क़ागंजों की तीसरे या चौथे मोड़ पर मिलता जो एक नक्शे की तरह खुलता था)। उसे पूरा विश्वास था कि यदि वह पूरी तहकीकात कर हस्ताक्षर करने की सोचेगा तो वह थके हुए मलबे के ढेर-जैसा हो जाएगा। इसलिए वह जल्दी-जल्दी फाइलें निबटाते हुए उन्हें फर्श पर पटकता जा रहा था, और बीच- बीच में अपनी कुर्सी को पूरा घुमा देता, लेकिन इससे मलिक को कोई घबराहट नहीं थी। बेशक कई फाइलों के प्रकरण उसे हैरान कर देते थे, लेकिन वह उनमें से एक-दो को ओएस के पास (दूसरे दिन वह उसे मलिक की जगह 'ओएस' कहकर बुलाने लगा, उसे लग रहा था ऐसा करने से वह ज़्यादा कुशलतापूर्वक काम करने लगा) 'यहाँ, समझाओ' बताकर भेज देता।

मलिक आगे झुकेगा, और कहेगा, 'हाँ, सर,' (आश्वासन देते हुए) 'यह एनिमल हस्बेंड्री के एक्सटेंशन ऑफिसर्स की एडवांस इंक्रीमेंट के लिए है', और यह 'पिछले साल के खरीफ अभियान पर डीडीओ के डीओ पत्र का जवाब है।' एक फाइल में, स्वास्थ्य के कुछ स्पष्ट पहलू पर, स्वास्थ्य मंत्रालय से अंग्रेजी में पुस्तिकाएं थी। अगस्त्य ने बेपरवाही से उनमें से एक को खोला, और पढ़ा '...रबर की शीट को चूतड़ों के नीचे सावधानीपूर्वक

रखें... ' वह उठकर बैठ गया। पोर्न, यह तो बिलकुल पोर्न था, क्या स्वास्थ्य मंत्रालय गुप्त रूप से पूरे देश में पाँच हज़ार बीडीओज़ को अश्लील पोस्टिंग भेज रहा था। उसने वापिस पुस्तिका के कवर को पलटा: ग्रामीण मिडवाइव्स के लिए निर्देश। ओह, कितनी बुरी बात है, मैंने इसे क्या समझा था, वैसे भी (अपनी अप्रिय सोच पर वह हैरान था, लेकिन यह अंग्रेजी में क्यों था)।

जब वह एक आगंतुक को समझदारी से सिर हिला कर हिदायत दे रहा था, या न समझ में आने वाली फाइलों को फ़र्श पर फेंक रहा था, तो उसके मातहत अक्सर दरवाजे के बीच से फुसफुसाते हुए कोई-न-कोई कागज या किसी अन्य फाइल को उद्देश्यपूर्ण ढंग से उसके पास धकेल देते। और तनी हुई तर्जनी ऊँगली से इशारा करते हुए कहते, इधर-बेवकूफ-इधर इस क्रॉस पर हस्ताक्षर करो। और वह अपने पैन को हवा में थमा कर विनम्रता से पूछता, इसके लिए क्या करना है...?' उसने कुछ पूछा, उन्होंने जवाब दिया, उसने सिर हिलाया, आश्वस्त हुआ और हस्ताक्षर कर दिए (और उसे लगा कि, वे बाहर जाकर हँसी से दोहरे हुए जा रहे थे)। पहले कुछ दिनों में, उसने महसूस किया कि वे समझते हैं कि वे मुझसे कहीं पर भी हस्ताक्षर करवा सकते थे - 'मैं प्रमाणित करता हूँ कि मेरी नाक एक बनावटी लंड जैसी दिखनी शुरू हो गई थी,' वह आसानी से उस पर भी हस्ताक्षर कर सकता था।

आख़िरकार, उसने पैटर्न को देखना सीख लिया, कि कुछ ही हफ़्तों में पद में बेफ़िक्री कैसे बनती है (मदना की तुलना में जोमपन्ना में चीजें भी धीरे-धीरे आगे बढ़ीं), एक फ़ाइल में असंगति – एक याचिका का संदेश, या डेस्क से डेस्क तक निवारण के लिए अनुरोध, उसके चारों तरफ़ दाने चुगनेवालों की तरह भीड़, फ़ाइल पर टिप्पणी फिर काउंटर-टिप्पणी, और अप्रासंगिक टिप्पणी जब तक कि फाइल इतनी मोटी ना हो जाए कि ऑफिस की अलमारी में सड़कर चूहों के खाने के काम आए।

ऑफिस छह बजे बंद होता था, कुछ लोग छाया की तरह चार बजे निकल जाते। पहले दिन सात बजे वह रेस्ट हाउस के बरामदे में था, पूरी तरह से, लेकिन सुखद रूप से थका

हुआ था, और आलसता से सोच रहा था कि पीने के लिए क्या किया जाय। जीप एक पेड़ के नीचे खड़ी थी। स्टालों पर परिचित हिंदी गीत चल रहे थे।

तुझसे नाराज़ नहीं ज़िन्दगी
हैरान हूँ मैं

हाल ही का एक सुपर-हिट गाना जो उसने सौ अन्य स्थानों पर सुना था।

चौथे दिन ब्लॉक पंचायत की जनरल बॉडी की बैठक से उसने समझने की कोशिश करना बंद कर दिया, और नौकरी में आनंद लेने की कोशिश की। बैठक चार घंटों तक चली। लेकिन वह पत्र नहीं लिख सकता था, या फिर लकड़ी की कुर्सी पर अपने चूतड़ इधर-उधर सरका कर समय बिता रहा था और अपने पड़ोसियों के साथ चिपककर अपने पसीने को उन पर मसल रहा था। उसे पीने के पानी की कमी पर, और प्राइमरी-स्कूल के शिक्षकों के हस्तांतरण पर ध्यान केंद्रित कर उन पर आधारित सवालों के जवाब देने थे। सभापति, जिसकी जीप की लड़ाई में हार हुई थी, विशेष रूप से मुखर और बेरुखा था। यह नहीं था कि अगस्त्य ने जवाब में गड़बड़ी की (वास्तव में, मलिक से प्रेरित होकर, उसने अधिकांश विषयों पर सक्षम नौकरशाहों की तरह गोल-मोल प्रतिक्रिया दी – 'हाँ, मैं उस पर गौर करूँगा', 'यह एक अच्छा मुद्दा है, ओएस, इस पर ध्यान दें')।

लेकिन वह अस्पष्ट सी आशा के साथ जोमपन्ना आया था कि किसी तरह, कुछ अस्पष्ट तरीके से, चीजें बेहतर होंगी। वह नौकरी में स्थिर हो जाएगा, हर किसी ने कहा था कि यह चुनौतीपूर्ण होगी,पेचीदा होगी, और शायद नौकरी की कार्रवाई उसकी बेचैनी भंग कर देगी।

लेकिन जब बैठक में वह शोरगुल करते राजनेताओं और शांत एक्सटेंशन ऑफिसरों और क्लर्कों से घिरा हुआ था, प्रश्नों से बच कर चिंताजनक बहस को प्रोत्साहित कर रहा था, तब उसने महसूस किया कि अंततः वह नौकरी में तो सैटल हो जाएगा, लेकिन

नौकरी में मशगूल नहीं हो पाएगा, उसकी बेचैनी कम नहीं होगी, जब वह अपने नए जीवन में, किसी के बैंक ऋण की समस्या, या कुछ परिवार कल्याण शिविर की व्यवस्था के मामलों को तरजीह देने लगेगा तो उसे थोड़ी असुविधा होगी। इसलिए वह अपने काम में सिर्फ आधा दिमाग लगाता, जबकि बाकी आधा हल्के सिरदर्द की तरह उसे चिंतित करता। उसने कुछ आदतँ डिस्ट्रिक्ट ऑफिसर की उठाई जैसे दिन में दो बार बेकार सा खाना खाना, शाम को कुछ फाइलें रेस्ट हाउस में ले आना,उन्हें खिड़कियों में से संगीत के साथ मच्छरों के आने के बीच समझना। कभी-कभी उस ने अज्ञात कारण से महसूस किया कि उसकी नीचे की यात्रा शुरू हो गई थी, लेकिन वह उसे किस रसातल से किस शिखर तक ले जाएगी, उसे इसकी परवाह भी नहीं।

जोमपन्ना में अपने तीसरे हफ्ते का समय था। उसके ऑफिस में उसके सामने पैंतीस के करीब की एक आदिवासी महिला आ खड़ी हुई, वह उसे शायद ही सुन रहा हो, उसका लंड तन रहा था वह अजीब तरह के बेकाबू दौर से गुजर रहा था। महिला मजबूत काठी की थी, नसों वाली कलाइयाँ, झुर्रियों वाला कारुणिक चेहरा, मुड़ी हुई नाक, आँखें एक घृणित जीवन से काली थीं, उसमें से जीवन भर नीच कर्म किये जाने की गंध आ रही थी, आकार में बड़े सख्त चूतड़, उसने चुपचाप हँसते हुए सोचा, मैं बेवजह समय बर्बाद कर रहा हूँ। उस महिला ने अपने शब्द कई बार दोहराये जब कहीं जाकर उसे समझ में आया।

उसने कहा, वह चीपांथी से आई थी। लोगों ने उसे बताया कि मैं ना मिलूँ, लेकिन मैंने सुना था कि एक नया अफ़सर या है, शायद वह मेरी मदद करेगा। इस इलाके में सिर्फ एक ही कुआँ था, वह भी सूख गया, इसे साफ करने की जरूरत थी, हमलोगों ने पहले वाले अफसर से शिकायत की थी, लेकिन किसी ने भी कुछ नहीं किया। अगस्त्य उस महिला पर से आँखें नहीं उठा पा रहा था, उसने नए आये डिप्टी इंजिनियर को फ़ोन

किया, जो कि उत्साही था और आईएएस से जलन करता था। डिप्टी इंजिनियर ने मामूली सा विरोध किया कि चीपांथी नक्सली इलाके का दिल है और बहुत ख़तरनाक है, जिसका उसने प्रतिवाद किया (वह अपने जवाब की चतुराई से हैरान था) कि नक्सलियों को भी पानी की जरूरत होती है। उसने फिर उस महिला से कहा कि मैं जल्द ही, कुछ दिनों में चीपांथी जाऊँगा, और देखूँगा। वह भरोसा दिलाते हुए उस पर मुस्कराया, उसका चेहरा थोड़ा नरम हो गया, जैसे वह लगभग आ गया हो।

कुछ दिनों बाद एक सुबह वो और डिप्टी इंजीनियर दो जीपों में गए। ('आपको अपनी जीप नहीं लेनी चाहिए, चौधरी साहब, सरकारी पेट्रोल क्यों बर्बाद करें?' लेकिन डिप्टी इंजीनियर चीपांथी से कहीं और जाने के बारे में चिंतित थे, यह मामला सरल था, अगस्त्य जानता था, कि वह आधिकारिक तौर पर, 'प्रतिष्ठा का मुद्दा' था। एक जीप में सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का पता इससे लगता है कि वह सीट पर कहाँ बैठा है, वह सामने की बाईं सीट पर बैठा था, शायद इसलिए कि वह सबसे आरामदायक सीट थी। अगर चौधरी और वो एक साथ यात्रा करते हैं, तो चौधरी को वह सीट उसके लिए छोड़नी होगी। अगस्त्य को उसके ओछेपन पर बहुत हैरानी हुई।

इस तरह वे दो काफिलों में जंगल में गए। कई किलोमीटर उजड़े जंगल में से होते हुए वे दो घंटों में चीपांथी पहुँचे। चीपांथी नीची पहाड़ियों के धरातल पर बसा था जो कभी घने वृक्षों से ढ़का था। अब पेड़ों में कम बारिश होती है, आदिवासियों ने जंगल को बर्बाद कर दिया क्योंकि एक बदलती दुनिया ने उन्हें बर्बाद कर दिया था। पीढ़ियों पहले वे राजाओं के संस्थापक टाउनशिप में सक्षम थे, अब वे बेमानी हो गए थे, और बड़े पैमाने पर सरकारी सहायता पर निर्भर थे।

चीपांथी जाने वाली सड़क आखिर में पक्की नहीं थी, और आखिरी हिस्सा बड़ा उबड़-खाबड़ और रेतीला था। लेकिन जंगल तबाह हो गया था, जगह-जगह पेड़ों के टुकड़े, साफ-सफाई के लिए जला हुआ जंगल का हिस्सा, और मोटी लाल रेत थी। उनके आसपास नीची और भद्दी पहाड़ियाँ, उनकी हरियाली भी जलाई हुई थी। जली हुई मिटटी

पर बनाई हुई झोपड़ियों वाला चीपांथी नजर आया। उनकी जीप रुक गई। वह बाहर निकला तो अकड़ा हुआ लग रहा था। वहाँ की चुप्पी चौंकाने वाली थी। यहाँ तक कि जंगल भी मृतप्राय लग रहा था। लाल रेत की ऊबड़-खाबड़ जगह, सूखे के ढेर की गंदगी, सूखे पेड़, फिर भी बजाज ने कहा था कि उसे चीपांथी जाना चाहिए।

उन्हें झोपड़ियों के आसपास कोई भी नहीं दिखाई दिया। कुपोषण के विज्ञापन में दिखाए गए बच्चों की तरह, कहीं कोई नंगे और सवालिया बच्चों का शोर नहीं। सिर्फ एक दोपहर की चुप्पी और देर नवंबर के सूर्य की गर्मी, और उनके पैरों के नीचे आती सूखी टहनियों की चरमराहट।

अगस्त्य ने पूछा, 'कुआँ कहाँ है?'

'झोपड़ी के पीछे' चौधरी के गिरोह में से एक ने कहा। फिर पहली झोपड़ी के दरवाजे पर एक दुबला और नीरस जवान आदमी दिखाई दिया।

अगस्त्य ने पूछा 'चीपांथी की आबादी कितनी है?' लग रहा था किसी को पता नहीं था। फिर कुछ और काले और अजीब से चेहरे दिखाई पड़े। उसने उस महिला को देखा जो उस दिन उसके ऑफिस में आई थी। वह कुछ अलग लग रही थी, उसमें आत्मविश्वास लग रहा था।
'इस रास्ते पर,' उसने कहा।

उसने कुएँ के चारों तरफ़ बहुत से लोगों को देखकर राहत की साँस ली, जिससे उसका दृष्टिकोण बदल गया। लेकिन कुछ अजीब था, और उसने एक पल में महसूस किया कि गाँव में मौन था, वहाँ पर न तो कोई हँसी थी और न कोई बातचीत। गाँव में बच्चे थे, लेकिन वे सभी व्यस्त थे। महिलाएँ बच्चों को रस्सियों से बाँध कर कुएँ में लटका रही थी। थोड़ी देर के बाद रस्सियों के साथ बाल्टी ऊपर लाई गई। वह उनके क़रीब आ गया। बाल्टी कुछ गीली मिट्टी से आधी भरी थी। वहाँ पर केवल बाल्टी के कुएँ की दीवार से

भिड़ने की आवाज़ें गूँज रही थी, और कुछ थके हुए बच्चों के ठुनकने की आवाज़ें थीं। उसने उनको देखा। उसने देखा कुछ बच्चों की कुहनियों और घुटनों पर कुएँ की दीवार से रगड़ खाई चोटें थी, एक बच्चे के माथे पर फूल की तरह घाव था। वह महिला जो उसके ऑफिस में आई थी, उसकी तरफ़ एक तरह की जीत की तरह देख रही थी। उसने कुएँ में अच्छी तरह झाँका। वहाँ कोई पानी नहीं दिख रहा था, लेकिन बच्चों को चालीस फीट नीचे भेज दिया गया था, ताकि वे कुएँ के तले से पानी निकाल बाल्टी में भरें, जैसे कुछ पौराणिक सजाओं में पापियों को सज़ा में ऐसी सेवा करनी होती थी।

चौधरी ने कुएँ में झाँक कर देखा। एक-एक करके, वे सभी कुएँ में झाँके, और हॉरर की उचित अभिव्यक्तियों के साथ बाहर की तरफ़ देखने लगे। उनके आसपास लोगों की तादाद बढ़ रही थी। अगस्त्य ने खादी पहने एक पतले से बीच की उम्र के आदमी को देखा, वह उन अधनंगे लोगों के साथ फिट नहीं हो रहा था।

चौधरी ने अपनी घड़ी को देखते हुए कहा, 'बहुत चिंताजनक स्थिति है।'

अगस्त्य ने पूछा, हम क्या करने जा रहे हैं?' वह खादी पहने -आदमी और वह महिला जो अगस्त्य से मिलने आई थी उनकी बातों को समझने के लिए उनके क़रीब आ गए। अगस्त्य ने फिर से सोचा, यह खादी पहने आदमी वास्तव में यहाँ पर फिट नहीं हो रहा, अपनी दाढ़ी और लम्बी नाक के साथ वह अलग लग रहा था, वह एक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जैसा लग रहा था, जिसने किसी ऐसे विषय में पढ़ रखा हो जिसमें बकवास करने का बहुत स्कोप हो– सोश्योलॉजी, तुलनात्मक साहित्य, या ऐसा कोई विषय।

चौधरी ने कहा, 'हम तुरंत पानी का टैंकर भेज देंगे।'

अगस्त्य ने पूछा, 'कितनी जल्दी हो सकेगा यह सब?' चौधरी ने उसे देखा, उसकी आवाज़ से वह थोड़ा चौंका। खादीधारी आदमी ने कुछ और आदिवासियों को बुलाया, जो

इसमें रुचि लेने लगे थे। अगस्त्य को यह बात अच्छी लगी। चौधरी के गिरोह के बाद उनमें से लगभग चार लोगों ने स्वचालित रूप से जीप की तरफ़ बढ़ना शुरू कर दिया।

'ओह - मुझे लगता है कुछ दिन लगेंगे। एक टैंकर खराब है, उसकी टिलन में मरम्मत की जा रही है, एक और टैंकर बहुत बुरी तरह से लीक हो रहा है, अगर उसमें पानी भर कर यहाँ लाया जाए तो यहाँ आते-आते उसमें कोई पानी नहीं बचेगा। और तीसरा छोपा में है। 'अगस्त्य ने उसे नाराजगी से देखा।' छोपा तो सभापति का गाँव है, है, ना। शायद वह इतना मूर्ख है कि 'वह कहने जा रहा था, सभापति की ऐसी-की-तैसी, लेकिन वह खुद इसकी जाँच करेगा। 'नहीं, चलो इसे मेरे तरीके से होने दो।' वह चौधरी की तरफ़ शरारत से मुस्कुराया। 'यह अच्छा है कि तुम अपनी जीप लाए। तुम इस जीप में वापिस जाओ, और सबको अपने साथ ले जाओ।

तुम लगभग दो-तीस तक जोमपन्ना पहुँचोगे। मुझे लगता है तुम एक टैंकर का इंतजाम करो, और तुम्हारा – 'कहकर वह रुका, सोच रहा था कि उन्हें क्या कहा जाए'– वह गिरोह यहाँ आने के लिए कुएँ से हट गया था। मैं उनके लिए यहाँ पर इन्तजार करूँगा, ताकि तुम यह सुनिश्चित कर सको कि तुमने– 'कहकर वह रुक गया, और फिर बेवजह सच्चा होने का फैसला किया' - जब तुम अपने ऑफिस पहुँचो तो तुम इस बारे में कुछ काम करो।

चौधरी ने अगस्त्य की बात नहीं मानी; और ऐसा करके, सूखी हँसी हँसते हुए, उसने अगस्त्य को और तंग कर दिया। जब वह अगली बार प्रभावित हुए बजाज से मिला, तो उसे समझाया, 'मैंने सोचा था कि उनसे काम लेने का एकमात्र तरीका यही है, सर। अगर मैं उस दोपहर जोमपन्ना वापस चला जाता, तो मैं इस मामले से आमतौर पर ऑफिस में होनेवाली रूटीन पर चल रहा होता, और वे जूनियर इंजीनियर एक-एक करके, टैंकरों में क्या गलत था, यह समझाने के लिए आते, और बताते कि महीने तक कुआँ क्यों नहीं ठीक किया जा सकता, इसी तरह के बहाने बनाते और कोई न कोई तर्क देते – आप जानते हैं, सर, उनका आलसीपन उनके भजनों में छिपा होता – और मैं मानता हूँ,

कि जोमपन्ना, छोपा के ब्लॉक ऑफिस में बैठे यह समस्या दूरस्थ लग रही होती, और सब कुछ टाल दिया गया होता।

चौधरी और उसके अधीनस्थों का दायरा ऐसे दुरूह व्यवहार का अभ्यस्त नहीं था, लेकिन अगस्त्य निरंकुश और पक्का बना रहा, साथ ही यह सोच रहा था कि उन्हें कोई अन्य कारण बताया जाना चाहिए, कि वह कम से कम कुछ घंटों के लिए एक नई दुनिया में रहकर कुछ सेक्सी महिलाओं को देख सके। फिर उदास और भ्रमित लोगों की भीड़ से भरी जीप लाल रेत पर अनाड़ीपन से उछलती हुई चल पड़ी। वो और आदिवासी जीप को जंगल में से निकलता देख रहे थे। वह अपने आपको नाटकीय और मूढ़ महसूस कर रहा था।

उसने चारों ओर देखा। आदिवासी उसकी तरफ़ भावशून्य हो देख रहे थे। एक सुखद दोपहर की धूप, और हल्की हवा चल रही थी। उसे यहाँ पर एक परिचित सा अवास्तविक भाव महसूस हो रहा था, वह सोच रहा था मैं यहाँ एक सूने जंगल में, मिट्टी की झोपड़ियों में अजीब आदिवासियों के बीच, कुएँ से घायल बच्चों में– क्या कर रहा हूँ? उसने उन चेहरों को देखा अचानक एक महिला दूसरी के कंधे के पीछे से उसकी तरफ़ खिसियाने लगी। एक जवान आदमी हिचकिचाहट में मुस्कुराया, खादीधारी आदमी ने पूछा, 'शायद आप चाय पीना चाहेंगे?' उसने अजीब-सी हिंदी में बात की।

अगस्त्य ने पूछा, 'तुम कौन हो? क्योंकि वह अपने आधे हिस्से में अब भी अकड़ महसूस कर रहा था।

उस आदमी ने कहा, 'मेरा नाम प्रकाश राव है'।

उन्होंने कुएँ की तरफ़ पीछे चलना शुरू कर दिया। कुछ आदिवासियों ने आगे बढ़कर उनका मार्गदर्शन किया, उसने एक थके हुए रेवेन्यू सर्कल इन्स्पेक्टर, और जॉन एवरी को

याद किया। वे राव और अगस्त्य के लिए कुएँ के पास एक चारपाई ले आए। राव ने पूछा, 'सूर्यास्त तक सबसे पहले टैंकर केवल यहाँ आ सकता है?'

अगस्त्य चारपाई पर बैठ गया, राव खड़ा रहा। कुएँ के पास उनकी उपस्थिति से वहाँ कुछ आदिवासी बेचैनी महसूस कर रहे थे। कुछ बच्चे अपने घावों को भूल कर, बेख़याली से फ़रियादी की तरह, उनकी तरफ़ देख रहे थे। उसने सोचा, चाय में इस कुएँ का पानी होगा, फिर उसने खुद पर बहुत शर्म महसूस की और वह मुस्कराया। लेकिन राव उस पर घूर रहा था, इसलिए उसने कहा,'हाँ, ओह, हाँ।' अब वह बहुत अच्छा महसूस कर रहा था कि इस तरह एक बेहद अजीब तरीके से ऑफिस से बच निकला, और दोपहर में तने हुए शरीर वाली महिलाओं को कुएँ के कीचड़ से पानी निकालते हुए संघर्ष करते देख रहा था। उसने अपने चेहरे पर अय्याशी को भाव कम करने की कोशिश की।

राव फिर से कुछ कह रहा था। 'जब पैरा आपसे आपके ऑफिस में मिलकर आई और हमें बताया कि आप यहाँ पर आओगे, तब हम बड़ी उलझन में थे।' राव नजदीक से बड़ी उम्र का लगता था, वह पचास के करीब लग रहा था। जाहिर तौर पर वह बाहरी व्यक्ति था, लेकिन कलेक्टर की पार्टी में एवरी के साथ की तरह, उसने निश्चय किया कि वह उससे यह नहीं पूछेगा कि वह चीपांथी में क्या कर रहा था। उसने सोचा, राव नक्सली नहीं हो सकता, या हो भी सकता है? कई और दूसरी अन्य चीज़ों की तरह, नक्सलियों के बारे में भी उसके विचार ढुल-मुल थे। पैरा चाय लिए हुए उनकी तरफ़ आई। उसकी पतली साड़ी उसकी पूरी जांघों को रेखांकित कर रही थी। जब वह फर्श पर उसके पास चाय रख रही थी, तब उसे उसकी कलाइयों की नीली नसें साफ़ नजर आ रही थी।

अचानक कुएँ के पास खड़ी एक महिला जोर से हँसी। एक बच्चे से बंधी रस्सी अचानक खुल गई, लेकिन उस बच्चे ने कसकर रस्सी पकड़े रखी। भीड़ में हर किसी ने उस महिला को घेर लिया जो रस्सी पकड़े थी, और वह धीरे-धीरे रस्सी खींचती रही। दूसरों ने कुएँ में झाँक कर उसे प्रोत्साहित किया, और वह उछल आया। बच्चा एक बड़ी टूटी मकड़ी की तरह कुएँ की दीवार पर पैर अटकाने के लिए संघर्ष कर रहा था। बाद में

अँधेरे में उसका पीला भयभीत चेहरा ऊपर दिखाई दिया। कई हाथों ने उसे बाहर निकालने में मदद की। वह नम रेत पर बैठ गया और उसने रोना शुरू कर दिया। महिलाओं ने उसे शांत करने की कोशिश की।

अगस्त्य उन लोगों का विरोध करना चाहता था, जो इस तरह का जीवन जीते थे। एक पल के लिए उसे लगा कि वे सब उसके सामने एक नाटक कर रहे थे, और उसे एक बार फिर, बेहूदा या दोषी महसूस करवा रहे थे। वह उनसे इतना चिढ़ गया था कि उसे गुस्सा आने को था; लेकिन बाद में, वह बिलकुल विचलित नहीं हुआ ना नक्सलियों के बारे में किसी बहस से या राव के यह बताने की कोशिश करने से कि आदिवासियों को ऐसे रहने के लिए मजबूर किया गया है, उनके बच्चे आधी-बाल्टी कीचड़ निकालने के लिए संघर्ष करते हैं और ये ऐसे ही रहने के आदी हो गए।

चाय के बाद राव ने टहलने का सुझाव दिया। मिटटी की झोपड़ियों के नीचे की ओर एक लगातार ढलान था। अगस्त्य ने कहा 'यह जगह लगभग बाबा रमन्ना के घर की तरह साफ है।' 'ओह, मैंने उसे कभी नहीं देखा, लेकिन ज़ाहिर है, मैंने उनके बारे में सुना है। हाँ, अधिकतर आदिवासियों को साफ़ रहने की आदत है, यही एक आदत है जो उन्हें सिखाने की जरूरत नहीं है।' वे स्लेटी-भूरे रंग के पेड़ों और सिकुड़े पत्तों से होकर - जंगल की पटरियों पर चल रहे थे।

आख़िर राव नक्सली ही था। 'मैं तेलंगाना से हूँ' राव ने कहा। फिर, अगस्त्य की तरफ़ कनखियों से देखते हुए, उसने पूछा, 'आप तेलंगाना आंदोलन के बारे में क्या जानते हैं, मिस्टर सेन?'

'वास्तव में, कुछ भी नहीं।' सिर्फ इतना जितना मैं एक हिंदू मंदिर की दीवारों पर सेक्स के बारे में जानता हूँ या नाक की रिंग से मोती गिरने के मामले के बारे में, इससे ज़्यादा और कुछ नहीं। 'यह बंगाल में मूल नक्सली आंदोलन की तरह, ग्रामीण शोषण के खिलाफ था। यह सब कुछ ही मैं जानता हूँ, पूरा विवरण मैं नहीं जानता, और कृपया

मुझे अगस्त्य कहें।' 'या अंग्रेजी, उसने सोचा, या ओगू, या अगस्त। उसका नाम उपनामों की तरह लग रहा था, उसके अलग-अलग तरह का जीवन जीने की तरह।

'ग्रामीण शोषण,' राव उदासी से मुस्कुराया। वह भी, आदिवासियों की तरह, अगस्त्य को चिढ़ा रहा था। 'यह एक ऐसा वाक्यांश है, जिसका कोई मतलब नहीं है, वास्तव में यह दहशत है।' राव ने उनकी तरफ़ आनेवाली कुछ महिलाओं के बारे में नाटकीय ढंग से बताया। 'वे सुंदर हैं, हैं कि नहीं, मिस्टर सेन?' असल में वे सुंदर थीं। महिलाएँ जब उनके नजदीक आई तो, राव मुस्कुराया, वे जिस बोली में बोलीं, उसे वह समझ रहा था। 'दस साल पहले तक, इन जंगलों के दूरदराज़ के इलाकों में,' उसने विशेष रूप से एक पेड़ की चोटी पर इशारा करते हुए बताया - पिरताना। ये महिलाएँ, अपने शरीर के ऊपरी हिस्से को नहीं ढँकती थीं, यह उनका अपना रिवाज था।' उसने यह कहकर अगस्त्य की तरफ़ देखा जैसे उसे हैरानी हो रही होगी।

'हाँ, और वे बहुत से लोगों से संबंध रखती थी,' वह कहना चाहता था, लेकिन उसने अपने आपको रोक लिया।' ज़िले के बहुत से छोटे कर्मचरियों ने उनकी मासूमियत का फायदा उठाया, जैसे कि वन रेंज के ऑफिसर, रेवेन्यू सर्कल इंस्पेक्टर्स, हैड कॉन्स्टेबल्स आदि।

'न केवल मामूली, बल्कि अधिकता सम्मानित ऑफ़िसर भी।' उन्होंने एक और साफ़ किये गए जंगल के बंजर, चट्टानों, पत्तों-टहनियों के ढेर और लाल रेत को पार किया। एक झाड़ी के नीचे एक साँप की चमड़ी थी। अगस्त्य ने उसे उठाया सलेटी-सफेद और भंगुर थी वह, वह उसके शरीर से परे हट रही थी, इससे वह उत्साहित था।' उनमें पिरताना में वन के नए असिस्टेंट कंजर्वेटर भी थे। यहाँ तक कि गाँधी नामक एक आदमी ने, अपने घर में खाना पकानेवाली आदिवासी महिला के शील को भंग किया। उसके गाँव के लोग बहुत गुस्से में थे। वे तीन रात पहले गाँधी से मिलने गए, और उन दोनों को आश्चर्यचकित किया। उन्होंने बदला लेने और सजा के रूप में, उसकी बाँहें काट दी।'

हल्की हवा चल रही थी, जंगल में पत्तियों और धूल की सनसनाहट थी, बगल में गीलेपन से बहुत तेज़ बैचेनी हो रही थी। उसके हाथ में कुछ फटा, और लग रहा था कि उसकी रीढ़ की हड्डी की जड़ से कुछ गर्म तरल पदार्थ बह रहा हो। मोहन।
'... हम जो कह रहे हैं इस पर उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ रहा लेकिन राव ने परवाह नहीं की, 'उन्हें रोकना असंभव था।'

सूर्यास्त हो गया। जंगल ठंडा हो गया था। धीरे-धीरे सितारों के साथ, एक तेज और स्वच्छ रात का आकाश उभरने की शुरूआत हो गई थी। वे अब भी पानी का इंतज़ार कर रहे थे।

राव के अन्य दोस्त आ गए, उनमें से तीन पहाड़ियों के गाँवों से थे। उन्होंने सुना था कि एक आईएएस ऑफिसर चींपाथी आए हैं, क्योंकि वे आदिवासियों में बहुत रुचि रखते हैं, वे मुश्किल से टूटी-फूटी हिंदी बोल रहे थे। वे सभी एक जैसे लग रहे थे, पतले, काले, दाढ़ीवाले, सभी ख़ालिस खादी में थे। अगस्त्य ने उनसे मोहन के बारे में पूछा, लेकिन उनमें से कोई भी उसके बारे में जानकारी नहीं रखता था।

शुरूआती झटका लंबे समय से पीछे छूट गया था, इसी तरह वह अविश्वास भी चला गया था। सिर्फ़ उन लोगों के अजीब से क्रोध का हल्का भय था। उसने उन लोगों को यह नहीं बताया था कि मोहन उसका दोस्त था। किसी वजह से उसने उन्हें नहीं बताया। राव के दोस्त किसी भी मामले में उससे कुछ नहीं सुनना चाहते थे, वे सिर्फ उससे बातें करना चाहते थे, समझाना चाहते थे, अपनी बात रखना चाहते थे, अपने दिमाग को साफ करने के लिए, औचित्य रखना चाहते थे। उनके लिए मोहन केवल दो–अक्षरों का नाम भर था। उनके मुँह से माओ के उद्धरण के साथ-साथ आदिवासियों की दुविधा का उत्साहजनक

विश्लेषण फूट रहा था। इन आदिवासियों को सोचने में मदद की ज़रूरत है, क्योंकि वे नई दुनिया में अनचाहे महसूस करते हैं। 'आपने देखा है, वे पानी के लिए किस तरह से संघर्ष कर रहे थे। आपने यह भी देखा है, वे कितने सरल हैं। '

वे राव की झोपड़ी में चाय के छठे दौर में थे। एक केरोसीन का दीपक, और कोने में एक बिस्तर, दीवार पर खूँटी से लटके कपड़े। पैरा ने उन्हें चाय दी। पैरा की झोपड़ी के साथ अंतरंगता दिखाई दे रही थी, अगस्त्य को लग रहा था कि वह इसी झोपड़ी में रहती है। अचनाक वह जोर से हँसा, सोच रहा था कि ये इज्जत के ठेकेदार राव के हाथ भी क्यों नहीं काट रहे उसे वहाँ पर पैरा की उपस्थिति खल रही थी, और उसने कहा, 'इन्हें सरल मत कहो, तुम्हारा नजरिया कृपालु है। वे केवल सरल नहीं हैं, वे भी बेहद हिंसक हैं, जो कुछ आपको बताया गया है वह गलत है। यह मत कहो कि वे सरल हैं, कहो कि वे अलग हैं, बस यही सब ठीक है।' 'पैरा को हिंदी समझ नहीं आई, लेकिन उनकी टोन ने उसे चौंका दिया। 'अगर गाँधी ने एक आदिवासी महिला का शील भंग किया है, तो निश्चित रूप से यह सच है कि वह भी यही चाह रही थी।' उन्होंने एक तरह की घबराहट से वह रुक गया।

‘नहीं, उन्होंने विद्रोह करते हुए कहा, सेक्स शोषण का एक बड़ा हिस्सा था, इसलिए इसे बिना सजा दिए नहीं छोड़ना चाहिए। उसने उन्हें, बैंगनी होंठ और सफेद दाँतों, में से शोर मचाते देखा उनके चेहरे पर हिंसा की भावना और उत्साह का जुनून था, लैम्प की रोशनी में उनकी काल-पीली चमड़ी नजर आ रही थी, वहाँ पर धुएँ की गंध थी। और उनके आसपास कीचड़ की उदासी। इससे भी विकट बात यह थी कि, मोहन अपनी सिर्फ हवस के लिए ऐसी परिस्थितियों को झेल रहा था, वह अपने आपको वश में करने के लिए शारीरिक जरूरतों को नहीं दबा सकता था।एक दोष दूसरे अन्य दोषों को जन्म देता है और इस तरह का दीवानापन तो एक धब्बा है।

बाद में उसने आदिवासी तरीक़े से तंबाकू पीया। एक सूखा और बड़े करीने से लिपटा हुआ तंबाकू का पत्ता, जो उसे लगभग मारिजुआना जैसा लगा, वह जाना-पहचाना

पीड़ानाशक। उसके बाद उसके मन में मोहन की याद फीकी पड़ गई और वह रुक-रुक कर कभी राव और कभी उसके दोस्तों को सुन रहा था, जो कि वनों के तरह-तरह के शोषण के बारे में बता रहे थे, कि किस तरह ठेकेदारों ने आदिवासियों द्वारा उनके लिए इकट्ठे किए गए तेल के बीज और तंबाकू के पत्तों के लिए मुनासिब भुगतान नहीं किया, लकड़ी के तस्करों ने आदिवासियों की तुलना में जंगलों को ज़्यादा बर्बाद कर दिया था, लेकिन रेंज फोरेस्ट ऑफिसर्स को रिश्वत देकर उन पर दोष लगा दिया। 'इस तरह आदिवासी फँस जाते हैं, और आपका सरकारी विकास उनको बचा नहीं सकता क्योंकि उन बड़े शहरों में बैठकर आपको नहीं पता चलता कि वे कैसे रहते हैं।'

हालाँकि वह आकस्मिक, लेकिन सम्मानित व्यक्ति था, इसलिए बाद में, जीप के पास एक बड़ी सी आग के आसपास, आदिवासियों ने उसके लिए नृत्य किया। पुरुषों ने एक तरह की ताड़ी पी। राव ने जोर से उसके कान में कहा,' हमारे आने से पहले ये लोग 'पूरे दिन पीते थे, ये अपने बच्चों को छह महीने की उम्र से पिलाना शुरू कर देते थे। 'अगस्त्य ने भी ताड़ी पी, वह बहुत प्रभावशाली थी, और वह जल्द ही अनियंत्रित रूप से मदहोश हो गया। महिलाओं ने एक धीमी गति के नीरस बेताल ढोल के चारों ओर एक क़तार में खड़ी होकर हाथ में हाथ डाल कर बार-बार एक कदम आगे, दो कदम पीछे, होते हुए नृत्य किया।

उनकी काली चमड़ी पर उसे एक नारंगी झलक दिखाई दी, वे उनके पैरों की तरफ़ देखते हुए, एक दूसरे पर मुस्कुराते हुए, नाच रही थी, उसे उनकी मासूमियत भयभीत कर रही थी, क्योंकि वह ख़तरनाक थी, किसी को भी अपने जाल में फँसा सकती थी।

दूर से दो टैंकरों की रोशनी दिखाई दी। उनका नृत्य पानी की ख़ुशी से, मदहोश चिल्लाहट के साथ बंद हो गया।

'मुझे लगता है, वह बहुत अकेला हो गया था, और वह हमेशा एक बहुत ही स्थूल किस्म का व्यक्ति था, और याद करो, रोहिणी पिरताना नहीं गई थी,' भाटिया ऐश ट्रे तक

पहुँचने के लिए आगे झुका। 'जब वह मदना किसी काम से आया था, तब मैं उससे दो या तीन बार मिला था। वह हँसते हुए कह रहा था, कि मदना बहुत उबाऊ था।

मदना सर्किट हाउस में एक शाम। अगले दिन अगस्त्य ने बजाज की डेवलपमेंट मीटिंग के लिए जोमपन्ना से पूरे दिन यात्रा की थी। वसंत उसे देखकर खुश हुआ, मुस्कुराया और बताया कि उसका रेस्ट हाउस का पुराना कमरा किसी और ने क़ाबिज़ कर लिया। वह उस रात जिस कमरे में रुका उसके पर्दों पर हरे आँगन पर लाल रंग के छोटे हवाईजहाज बने थे। जैसे ही वह पहुँचा, उसने भाटिया को फोन किया, और वह आधी बोतल के साथ आया। एक पखवाड़े पहले, उसने अपनी चींपाथी की यात्रा के बाद सुबह, फ़ोन पर भटिया से संपर्क करने की कोशिश की थी, लेकिन वह नहीं मिला। बाद में, जब वह उसके ऑफिस गया, तो भाटिया ऑफिस में नहीं था।

'पिरताना के रेंजरों को मोहन के बारे में जानना चाहिए, वे खुद हर समय यही करते हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मदना में किसी को भी यह पता था। ज़ाहिर है अब और कोई बात नहीं कर सकता।'भाटिया ने एक और सिगरेट जलाई अगस्त्य ने जब पिछली बार उसे देखा था, वह उससे ज़्यादा सिगरेट पी रहा था।

मोहन के बारे में बात करना लगभग एक ज़िम्मेवारी थी (अगर अगस्त्य ने फोन नहीं किया होता, तो बाद में भाटिया कहता, 'तुम कैसे दोस्त हो, तुम मदना आए, न मिले और न कोई फोन किया, न ही मोहन के बारे में पूछा')। इसके अलावा, एक पखवाड़ा बीत गया था, और वह यह महसूस करके थोड़ा हैरान था कि समय के साथ यहाँ तक कि सबसे भयावह ख़बरें, जो सीधे खुद से संबंध नहीं रखती, थोड़ा बासी हो जाती हैं। लेकिन जब भाटिया शुरू हुआ, तो उसकी उदास उत्सुकता लौट आई, जिससे उसने दोषी महसूस किया। भाटिया उत्साहित और महत्वपूर्ण लग रहा था, जैसे बर्बादी की फर्स्ट-हैंड रिपोर्ट का चौधरी उनके क़रीब हो। 'जैसे ही हमने खबर सुनी, गोपालन और मैं आधी रात के करीब पिरताना गए।' अगस्त्य सोच रहा था एक त्रासदी लंबे समय तक कोई त्रासदी नहीं रहती,

जब तक वह खुद पर नहीं घटती, और जब वह एक दोस्त पर घटित होती है, तो तुम उसके बारे में लम्बे समय तक सोचते हो।

'पिरताना में एक छोटा और बेकार सा प्राइमरी हैल्थ सेंटर था। मोहन सदमे की स्थिति में था। उसे डॉक्टर ठीक लगा, उसने हमें उसे देखने नहीं दिया। वह चौकीदार सेंटर में ही था, जिसने पुलिस को बुलाया था। उसने हमें मोहन की पूरी कहानी बताई। न तो गोपालन ने और न ही मैंने उस बात पर विश्वास किया, कि मोहन अपनी खाना बनानेवाली महिला के साथ मैथुन करता था।'

शायद यह पेय था, या भाटिया का 'मैथुन' शब्द का प्रयोग, या कहानी के लज्जाजनक दहशत पर अजीब सी प्रतिक्रिया, या गुप्त रूप से इस बात पर राहत कि तुम्हारे अपने पापों पर किसी और को सजा मिली, लेकिन अचानक वे दोनों हँसने लगे। वे अपने आप पर हैरान थे, और किसी तरह के दर्द से उन्हें हँसी आए जा रही थी। अगस्त्य ने बैडसाइड के बदसूरत लैम्प को जला दिया और सभी ट्यूब-लाइटें बंद कर दीं। 'यह ठीक है, हल्की रोशनी में हँसना।' भाटिया ने अपने ग्लास से पिया और उसकी हँसी खाँसी में बदल गई।

'मुझे अलवर ऑफिस में टेलीग्राम भेजना पड़ा। मैं क्या कह सकता था? चाहे जो हो, मैंने भेजा, 'मोहन को एक दुर्घटना में चोट लगी। जल्दी आओ।' फिर हमने कहानी को फैलने से रोकने की कोशिश की, लेकिन उसने काम नहीं किया। वह दैनिक वास्तव में एक बेकार अख़बार है। पिरताना के एक रेंज फारेस्ट ऑफिसर ने यह भी बताया कि कुछ पत्रकार फ़ॉरेस्ट रेस्ट हाउस में अक्सर मोहन से मिलने आते थे। मैंने सोचा कि शायद वे पत्रकार मोहन को ब्लैकमेल कर रहे थे लेकिन मुझे लगता है कि यह सब बकवास है। डॉक्टर ने कहा कि मोहन को स्थानांतरित नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन रोहिणी और उसके बड़े भाई आए, वे दिल्ली गए और फिर शायद अलवर चले गए। मैंने इसके बाद उनके बारे में कुछ नहीं सुना।'

अगस्त्य भाटिया की तुलना में थोड़ा कम नशे में था; भाटिया के पास बताने के लिए एक कहानी थी, उसे लग रहा था कि बोलनेवाले को सुननेवाले से ज़्यादा पीनी चाहिए, वह बीच-बीच में आह भर रहा था, और निर्जीव चीज़ों को गौर से देख रहा था। 'मैं रोहिणी से मिलना बिलकुल पसंद नहीं करता। एक साथ रहने के दौरान हम तीनों अच्छे दोस्त बन गए थे। तुमने देखा ही था कि, मैं उनके साथ अक्सर रात का खाना खाया करता था। जब मैं स्टेशन पर उससे मिला, तो वह बहुत भयभीत लग रही थी। मुझे उसे एक सेक्सी देहाती और इस तरह की बकवास कहने पर पछतावा हो रहा था। मैं हर चीज़ के लिए अपने आपको दोषी मान रहा था, जैसे कि मोहन की घटना मेरी गलती थी, मैं उसी ज़िले में था जब यह हुआ था, इसलिए यह मेरी गलती थी। इस तरह की तर्कहीन अपराध की भावना आपको एक तरह से बीमार कर देती है। वह निश्चित रूप से गर्भवती भी थी, और एक कोमल गर्भवती की तरह से सेक्सी थी, मुझे इसके बारे में भी पछतावा महसूस हुआ, तुम समझ सकते हो, इस तरह के अजीब हालात तुम्हें कैसे कठोर बना देते हैं? और रोहिणी पूछे जा रही थी, मैंडी भैया, किस तरह की दुर्घटना, वह कैसा है, वह ठीक है, है ना? और एक पल के लिए मैं ऐसा कुछ कहना चाहता था, ओह, वह टेलीग्राम वह तो अप्रैल फूल का मज़ाक़ था।'भाटिया के होंठ अजीब तरह से हिले, और उसने कहा,' 'मैं बहुत नशे में हूँ। तुम?'

अगस्त्य संगीत के लिए अपने कैसेट टटोलने लगा ताकि भाटिया को खुश कर सके। उसके पास कोई नहीं था। उसने चुपके से, कि भाटिया को पता ना चले, और उसने धीरे-धीरे, नज़रूल इस्लाम के गाने लगा दिए। भाटिया ने तुरंत कहा, 'बीमार बंगाली गाने मत बजाओ।' 'नहीं, इन्हें बजने दो,' अगस्त्य ने तर्क दिया, 'हमें तुम्हारी निराशाजनक कहानी के लिए पृष्ठभूमि में कुछ असंगत शोर चाहिए।'

'गोपालन, बेवकूफ़, ने उन्हें सच्चाई बताने की हिम्मत नहीं की। तुम उन्हें बताओ, उसने मुझसे कहा और फिर, तुम उन्हें बेहतर बताओगे। इसलिए हमारे पिरताना छोड़ने के ठीक पहले, मैंने उसके बड़े भाई को बताया। वह थोड़ा अजीब था। वह हमेशा व्यस्त रहता था, जैसे कि वह रसोई में गैस सिलेंडर बंद करना भूल गया हो या उसने किसी नल को

खुला छोड़ दिया हो। मैंने उससे कहा था कि आदिवासियों को मोहन के एक महिला के शीलभंग करने का संदेह था। मैं उसके साथ मोहन को देखने गया था। वह सफेद और मृत दिखाई दे रहा था। उसने हमसे बात नहीं की। उसने हमें देखा, और फिर कहीं दूर देखा, फिर हमें देखा, फिर से दूर देखा। वास्तव में वह एक भयानक पल था। वह इतना भयानक लग रहा था कि रोहिणी ने उसके हाथ छूने के लिए अपने हाथ चद्दर के नीचे किए। फिर वह टूट गई, और उसने त्यौरियाँ चढ़ा ली।'

अगस्त्य ने पूछा, 'मोहन उस आदिवासी महिला के साथ बदसलूकी कर रहा था, क्या वह नहीं कर रहा था?' इस बार यह अजीब आवाज नहीं थी, लेकिन बहुत ही असत्य; शायद क्योंकि मोहन उसका दोस्त था, और दोस्तों के अप्रत्याशित कृत्य दोगुना चौंकते हैं, जिससे महसूस होता है जैसे किसी को कुछ भी नहीं पता था - उसने दिल्ली के हवाईअड्डा रोड पर धुबो के क्रोध को याद किया, जब अगस्त्य की पागल योजनाएं स्कॉट जोप्लिन और चलती हुई कारों की सनसनाहट में मिल गई थी, और उसे हैरानी थी कि क्या उसका क्रोध इसलिए था, क्योंकि उसके विचार धुबो के विचारों के अनुरूप नहीं थे, एक आईएएस ऑफिसर जो एक सनकी फ़िल्म की घटना जैसा दिखता था, जिसे एक छोटे से शहर में हजारों मिल जाती होंगी, लेकिन बेहद मजेदार ख़त लिखने के सिवाय, निश्चित रूप से इस तरह का कुछ नहीं करता होगा।

'हाँ, वह गया होगा। चौकीदार ने कहा कि वह महिला एक वेश्या थी, जो एक गिरनेवाले दाँत की तरह ढीली थी, और मुझे लगता है कि मोहन रोहिणी को मिस कर रहा होगा, फिर ऐसा कुछ हो गया होगा।'

'मूर्ख मत बनो, मैंडी, तुम और मैं यहाँ मदना में अकेले हैं और उत्तेजित भी हैं। लेकिन तुम अपना खाना बनानेवाली के साथ मैथुन नहीं कर सकते, भले ही वह खजुराहो की मूर्तियों की तरह रूपवती हो, चाहे वह खाना खाते समय तुम्हारे पास बैठती हो या तुम्हारे सामने अपने गुप्तांगों को शेव करती हो।'

'ओह, ठीक है, मुझे नहीं पता, मुझे लगता है कि हम मोहन को अच्छी तरह से नहीं जानते थे। वह महिला पिरताना के आसपास के जंगलों में, चार आदिवासियों के साथ भाग गई थी। एक बारगी हम खुश हैं कि तस्करों और आदिवासियों द्वारा जंगलों को काटकर कम गहन कर दिया गया है। मुझे लगता है, वह पुलिस को मिल जाएगी। वे इस इलाक़े के नक्सलियों को भी बाहर निकाल देंगे। यह काफी हद तक सच है कि ऐसा कुछ भी नहीं होता। अगर ये नक्सली कुछ महीनों से इन आदिवासियों के साथ नहीं रह रहे होते, हरामियों का एक दल दूसरे हरामियों के दल को सही सोच सिखाने चला है।'

उन्होंने आख़िरी पेय लेकर, आधी-बोतल ख़ाली कर दी। अगस्त्य ने कैसेट को बी की तरफ़ बदल दिया।'इस शहर के दैनिक को श्रीवास्तव और महिला बीडीओ की कहानी के बाद बहुत मजेदार खबर नहीं मिली थी। और साठे तो बेहद काफ़ी पागल है। अचानक उसने कहा, "मैं मोहन के काफी कार्टून बना सकता था।"

'क्या हम उस दिन को दोहराएँ, दक्षिण की ओर चलें, एक और आधी-बोतल ख़रीदें और रात का खाना साठे के पास करें?'

दिसंबर का महीना था, फिर भी गलियाँ गर्म थीं। एक नीले दरवाजे के बाहर प्रहरी बनी खड़ी बकरियां, अभी भी वहाँ खड़ी थी। भाटिया ने पूछा, 'कोई खबर है कि तुम कहाँ पर असिस्टेंट कलेक्टर के रूप में तैनात होंगे?'

'नहीं, अभी नहीं।' दक्षिण में भी, पूरी रोशनी और शोर था। एक मेज पर ल्यूकोडर्मा वाला आदमी अभी भी सांबर के समुद्र में इडलियाँ डूबा-डूबाकर खा रहा था। भाटिया, अपने हाथ के नीचे एक आधी-बोतल थामे, फिर से साठे के होटल के बाहर रिक्शा-वाले के साथ बहस कर रहा था। 'मुझे पहली बार लगा कि मुझे कुछ निरंतरता की आवश्यकता है' – अगस्त्य ने अचानक अपने अतीत की उस लाइन को याद किया। उसने कहीं इसे पढ़ा था, या कहीं सुना था, शायद दिल्ली में? लेकिन वह याद नहीं कर सका।

साठे घर में नहीं था। वे होटल के कुछ दरवाज़ों में से निकले, साठे के भाई से मिले, और भाई के अनुरोध को शालीनता से स्वीकार कर लिया कि खाना घर पर खाएँ और फिर बहुत खाया।

बैठक अगले दिन तक चली। बजाज लगभग श्रीवास्तव की तरह चिल्लाया। शाम को अगस्त्य श्रीवास्तव के घर गया। श्रीवास्तव ने कहा, 'बजाज कह रहा था कि तुम जोमपन्ना में अच्छा काम कर रहे हो, अच्छा है।'

मिसेज श्रीवास्तव ने कहा, 'देखो तुम किसी आदिवासी महिला के साथ दुर्व्यवहार मत करना।' फिर उन्होंने मोहन के बारे में चर्चा की।

अगली सुबह के सात बजे थे। उसने कसरत की, नहाया और नशा किया, जोमपन्ना जाने के लिए तैयार हो गया, जब रेस्ट हाउस से, उसने एक मोटे व्यक्ति को अपने हाथ हिलाते हुए और धीरे-धीरे उसकी तरफ़ आते देखा 'हो, सेन साब,' शंकर ने चालीस गज़ की दूरी से चिल्लाते हुए कहा, 'वसंत ने मुझे बताया कि आप यहाँ पर हो, इसलिए मैंने सोचा कि जाने से पहले हम एक बार फिर मिल लें।' वह हाँफ रहा था, उसमें से आती पसीने और व्हिस्की की दुर्गंध ने सुबह को रोचक बना दिया। 'मैंने फिर से सारी रात गाया है शांत, नियंत्रित गायन। 'वह आगे झुका, और अपने सिर को हिलाते हुए, अपनी आँखों को घुमाते हुए और अपने कानों को कसमसाते हुए, अगस्त्य के चेहरे पर धैर्यपूर्वक साँस ली।

'मुझे अपनी पलकों के साये में,रहने दो।'

फिर वह सीधा हुआ। 'अतुलनीय ठुमरी, सेन साब। और मैं दुःख में नहीं, लेकिन आनंद में गा रहा हूँ। लेकिन,' उसने मुस्कुराना बंद कर दिया, और अपने चेहरे पर चिड़चिड़ाहट की सलवटें बनाते हुए बोला, 'मैं कल रात से वास्तव में संतुष्ट नहीं था। जब मैं उदास होता हूँ तब मैं ज़्यादा बेहतर गाता हूँ। आप कहाँ जा रहे हो?'

'वापस जोमपन्ना।'

'आपके पास मेरे साथ कुछ चाय पीने के लिए समय है?'

'अरे हाँ।'

'आह, मुझे पता था कि आपके पास मेरे लिए समय होगा। 'उन्होंने रेस्टहाउस की तरफ़ चलना शुरू कर दिया। 'कितनी बार मैंने आपको बताया है, सेन साब, कि हम एक जैसे हैं? हम बिना महत्वाकांक्षा के आदमी हैं, हम सिर्फ इतना चाहते हैं कि हमें शांत रहने के लिए अकेला छोड़ दिया जाए, ताकि हम खुश रहने की कोशिश कर सकें। इस तरह की सादगी कुछ लोगों में ही होगी। कोई और होता तो कहता, नहीं, मुझे नहीं लगता कि मेरे पास चाय के कप के लिए समय है, पहले ही देर हो चुकी है, मुझे जोमपन्ना में कई छोटे-मोटे काम करने हैं? इस तरह के काम कभी खत्म नहीं होते। लेकिन आप अलग तरह के हैं, सेन साब,बेहद शांत।'

'मुझे लगता है कि मैं तरक्की कर रहा हूँ।' शंकर इतना खिलखिलाकर हँसा कि जोर से उसका पाद निकल गया। वसंत दिखाई दिया, वह अब भी बिना शेव किए हुए था और पागल लग रहा था। वे बरामदे में बैठे थे, जहाँ से, उसने कितनी ही सुबहों को ट्रेनें गुजरती देखी थी। 'सेन साब, मेरा कोलतांगा में तबादला कर दिया गया है। मैं दोपहर को यहाँ से निकल जाऊँगा।'

ओह, ठीक है, उसने सोचा, एक और इंसान एक और यात्रा पर। 'क्या तुमको अपने मंत्री को कुछ देना पड़ता है?'

'नहीं, नहीं, मैंने कई बार आपको जगदम्बा में विश्वास करने के लिए कहा है। आप समझते क्यों नहीं। 'शंकर के सिर के पीछे कलकत्ता जाने वाली एर्नाकुलम एक्सप्रेस गुजर रही थी।

'मैंने पैसे दिए थे, मेरा मतलब है, मैंने एक बार दिल्ली में पैसे दिए थे। उससे प्रार्थना करो, दुर्गा के रूप में, जगदम्बा, मेरा मतलब है प्रार्थना करते रहो।' वह शर्मिंदा हो कर, चुप हो गया। उसने इसके बारे में कभी किसी और को नहीं बताया।

वसंत चाय ले आया। 'शायद आप कुछ हफ्तों में जोमपन्ना से वापस आओगे, है ना? अगली बार मैं आपके लिए आपका पुराना कमरा खाली रखवाऊँगा। 'शंकर तश्तरी में चाय पी रहा था, और गा रहा था,

'मुझे अपनी पलकों के साये में, रहने दो।'

वह एक भावपूर्ण मूड में था, और आनंद से भरा था।

बाक़ी के महीने जोमपन्ना में, एक जैसी दिनचर्या, ऑफिस और रेस्टहाउस, हर दिन दो शाकाहारी भोजन, शाम को बैड और डेस्क के बीच रखी तीन फ़ीट जूट की क़ालीन पर कसरत करना, फिर कमरे में स्टालों से आते संगीत के बीच फाइलें देखना। स्टालों ने गन्ने के जूस की बिक्री बंद कर दी थी। अब उन्होंने गाजर और नारंगी, सेब और अंगूर का जूस को बेचना शुरू कर दिया। चेतावनियों के बाद, मलिक ऑफिस में उतना ख़तरनाक नहीं था, लेकिन सुस्त रहता था ऑफिस के मानकों से भी ज़्यादा सुस्त। चींपाथी के बाद, उसने अपनी मेज से दूर रहने की गरज से और जीप की लंबी शांत सवारी का आनंद लेने के लिए और भी जगहों का दौरा किया। उसने प्राइमरी स्कूलों का

और प्राइमरी हेल्थ सेंटरों का दौरा किया, अपनी पहली दाई को देखा, तीन नसबंदी शिविरों का आयोजन किया, जहाँ पर उसने देखा कि पुरुष और महिलाएँ अपने आप को बंजर करवाने के लिए पैसे दे रहे थे, और उसने सोचा कि किस तरह एक प्राइमरी हेल्थ सेंटर का विषमलैंगिक डॉक्टर एक दिन में सौ लोगों की जाँघों के बीच का ऑपरेशन करता है। सभापति भी, बेदिली से, उससे प्रभावित था। पूरा ब्लॉक भी उसे बेहद कुशल ऑफिसर बता रहा था, और लोग एक दूसरे से कह रहे थे, 'आख़िर ये आईएएस ऑफिसर है।' उसने वहाँ पर काफी काम किया, वहाँ करने को ज़्यादा कुछ नहीं था; जब वह रात को कहीं और रुकता था, तब वह जोमपन्ना के अलग-अलग रेस्ट हाउसों की छतों को निहारता था।

पिछले हफ्ते उसे श्रीवास्तव ने फोन किया 'फोन पर कलेक्टर हैं, सर!' मलिक ने घबराते हुए कहा।'हैं सेन,' श्रीवास्तव नाक-भौं चढ़ाते हुए अपनी आवाज़ सहज कर रहा था, 'तुम शुक्रवार को वापस आ रहे हो, है ना? एक दिन पहले वापस आओ, ताकि तुम आरडीसी जोशी की विदाई में भाग ले सको। वह महीने के अंत में रिटायर हो रहा है, है ना! और तुम्हारा पोस्टिंग ऑर्डर आ गया है, तुम कोलतांगा में असिस्टेंट कलेक्टर बनोगे।'

उसने फोन नीचे रखा और खिड़कियों से बाहर दो निवेदकों को देखा। निठ्ठल्ले घूमते लोगों के सिर पर से देर दोपहर की धूप चमक रही थी, सड़क के पास लाल रेत और पेड़ दिखाई दे रहे थे, हल्की रोशनी पिछड़ेपन की झाँकी प्रस्तुत कर रही थी।

फिर उसने जोमपन्ना से अलविदा कहा। ब्लॉक ऑफिस ने उसे भेजने के लिए एक पार्टी का आयोजन किया। मीनू में मिर्च के पकौड़े, बर्फी, गलाबजामुन और चाय थी। उसने, सभापति ने और दो अन्य नेताओं ने भाषण दिया। सभी भाषणों में वह एक प्रकार के भारतीय अल्बर्ट स्वेत्ज़र के रूप में उभरा। एक बहुत ही बदसूरत सा बिदाई उपहार था, कांस्य में बना, कृष्ण और अर्जुन के रथ में धड़ और टाँगों पर रखा एक घड़ी का चेहरा, और जहाँ उनके पैर होने चाहिए थे वहाँ पेंसिल की बैटरी लगी थी। अगस्त्य ने आभार

जताने की कोशिश की। उसने हमेशा की तरह धीरे-धीरे अपना सामान पैक किया। रेस्टहाउस में उसे हर कोई सलाम और विदा करने आ रहा था।

वह शाम को देर से मदना पहुँचा, लेकिन वसंत ने उसके लिए उसका पुराना कमरा रखा था। कमरे में रखा फालतू फर्नीचर वापस आ गया था। अगस्त्य ने कहा, 'मैं यहाँ पर सिर्फ दो या तीन दिनों के लिए हूँ लेकिन अगर तुम इस सामान को एक बार फिर हटा दो तो बहुत अच्छा रहेगा।' वसंत ने कहा ठीक है, और उसने कुछ अन्य लोगों को मदद करने के लिए बुलाया। सोफे के नीचे मेंढक था, जिसने अगस्त्य को छोड़ कर हर किसी को चौंका दिया। वह श्रीवास्तव के घर अलविदा करने और खाना खाने गया। श्रीवास्तव ने उसे बताया कि जोशी का विदाई समारोह अगले दिन शाम पाँच बजे के लिए निर्धारित किया गया था, और उसके बाद रात का खाना होगा, और उसने कहा कि उसके कोलतांगा ज्वाइन करने से पहले वह कुछ दिनों के लिए कलकत्ता जाना चाहेगा।

वह दस बजे के बाद श्रीवास्तव के घर से लौटा। श्रीवास्तव जल्दी ही सो गया, क्योंकि उसे क्लब में बैडमिंटन खेलने के लिए जल्दी उठना था। पिछले इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टीटूट और मदना क्लब के बाद, वह कोलतांगा के बारे में सोच रहा था। वह बरामदे में एक कुर्सी लगाई और ट्यूब-लाइट बंद कर दी। शंकर का कमरा चुप था, और बंद था। उस समय वह अकेला नहीं होना चाहता था। वह सर्किट हाउस चला गया, लेकिन जिस कमरे में फोन रखा गया था वह बंद था। वह मदना इंटरनेशनल होटल की तरफ़ चला गया, पुल के नीचे अंधेरे ऑफ़िसों के पीछे रात के लिए भिखारियों ने डेरा जमा रखा था। लेकिन साठे हैदराबाद गया हुआ था। होटल से उसने वन कॉलोनी को टेलीफ़ोन किया। कई बैल देने के बाद एक चौकीदार ने फोन उठाया। भाटिया मारीगढ़ में था।उसने साठे के भाई के साथ एक ड्रिंक ली, और वापिस जाने के लिए सर्किट हाउस के पीछे और रेल की पटरियों की ओर चला गया।

इस बार, वह पटरियां नहीं जो क्षितिज छू रही थी, लेकिन थर्मल पावर स्टेशन के लिए चलने वाला ट्रैक था। लकड़ी और पत्थर पर रबर के तलवों का पैड, कहीं दूर से अँधेरे को

तोड़ती हुई ट्रक की गर्जना आ रही थी, दूरवाली पानवाले की दूकान से हँसी की आवाज आ रही थी। इस समय उसे कुछ सोचना था। वह सोच रहा था कि वह कोलतांगा नहीं जा सकेगा और फिर उसने नए सिरे से सोचना शुरू किया, घर के फर्नीचर को फिर से ठीक करना, बिना सोचे समन्वय मीटिंग में भाग लेगा।

एक लंबी पैदल दूरी थी, उसे अंदाजा था– नहीं कितनी दूरी थी। उसके रात के टहलने में समय, कोई बाधा नहीं था। चाँद लगभग पूर्ण था, और अपनी नीली-सफेद रोशनी में था, सबकुछ--घर और झोपड़ियाँ, पेड़ और झाड़ियाँ--बिना किसी आकार या रूपरेखा के, अपनी छाया के धब्बे से लग रहे थे। उसने सोचा, वह भी किसी को दूर से अज्ञात अंतिम स्टेशन की तरह, चलती हुई छाया के धब्बे-जैसा दिख रहा होगा।

खुला इलाका, मीलों तक ताजा बोए गए खेत। और आकाश के सामने नदी को अवरुद्ध करता पावर स्टेशन। तारामंडल में नक्षत्र के मॉडल जैसे दिखते, स्टील से जुड़े रोशनी के प्वाइंट। वह लंबे समय तक वहाँ खड़ा रहा, अपनी त्वचा पर रात की ठंडी हवा महसूस कर रहा था, सोच रहा था, मुझे दूसरे ट्रैक से जाना चाहिए था। फिर वह पीछे मुड़ गया।

जब वह अपने कमरे में पहुँचा तो रात के लगभग दो बजे थे। उसने दोनों ट्यूब-लाइटें और मेज का लैम्प जलाया, और अपने कैसेट रिकॉर्डर पर एला फ़िटजराल्ड को चलाया। वह अपने जूते उतारने के लिए ड्रेसिंग-मिरर के सामने स्टूल पर बैठ गया। काला-हरा मेंढक ड्रेसिंग टेबल की छाया में, आराम कर रहा था। वह इसे छूने के लिए आगे बढ़ा। छूने पर एक पल के लिए उसकी उंगलियों को उसकी ठंडी चिपचिपी त्वचा महसूस हुई, इससे पहले मेंढक अपने कंधे से चिपका और उसके सूटकेस के पीछे छिपा था।

उसे इन दो-तीन दिनों के लिए कुछ चीज़ों को खोलना होगा। एला गा रही थी, 'मैं हर पल पेरिस से प्यार करती हूँ' उसने कैसेट बंद कर दिया। फिर कलकत्ता के मुकाबले, ढुल-मुल तरीके से कुछ सामान खोला। लेकिन वह वहाँ पर सिर्फ एक पखवाड़ा भर रहेगा,

उसने फिर से चीज़ों को अपने सूटकेस और होल्ड-आल में भर दिया। फिर कोलतांगा, कम से कम दो साल तक। उसने ट्यूब-लाइटें बंद कर दी, लेकिन लैम्प को जलता छोड़ दिया, और छत को देखने के लिए अपनी जींस में ही लेट गया।

वह सुबह जल्दी, लगभग छह बजे उठ गया उसे बुरा लग रहा था। उसने खिड़कियों के बाहर देखा, अभी तक दिन नहीं निकला था, मेज पर लैम्प की रोशनी महज एक गर्म पीला बिंदु लग रही थी। वह हिल नहीं सका। तकिए पर उसकी आँख से एक इंच की दुरी पर एक भूरे रंग का दाग था। वह उसे देखता रहा, फिर दरवाजे का हैंडल बजा। वसंत चाय लेकर आया था। 'नहीं, आज कोई दूसरा कप नहीं।' उसने खड़े हुए, जल्दी से कप खत्म कर दिया। चाय गर्म थी, इसलिए उसने आधी चाय तश्तरी में पी। वसंत आलसी बना चारों तरफ़ देख रहा था। अगस्त्य ने कहा, 'मैं आज ठीक नहीं महसूस कर रहा, जब तक मैं ना कहूँ मेरा नाश्ता मत लाना। वसंत ने उसकी तरफ़ संशयपूर्ण ढंग से देखा। बसंत के कप लेकर कमरे से बाहर निकलने तक वह दरवाजे पर ही खड़ा रहा। फिर वह बाथरूम गया और बाहरी दरवाज़े से बाहर निकला, कोने से मुड़ा, अपनी खिड़कियों के पास से गुजरा, और सामने आ गया आसपास कोई भी नहीं था। उसने अपने कमरे के दरवाज़े को बाहर से बंद कर दिया और बाथरूम के दरवाजे से अपने कमरे में वापस आ गया। उसने अपारदर्शी खिड़कियों को बंद करके बोल्ट कर दिया। अब सिर्फ वेंटिलेटर्स और लैम्प की धुँधली रोशनी भी ज़्यादा चमक रही थी। वह फिर से लेट गया।

एक देर-शाम का बोध, उसके चारों तरफ़ एक सुगंधित अंधेरे का आभास। लेकिन फिर भी पूरे जिस्मानी आराम की संभावना असम्भव थी। उसे जल्दी या बाद में, कुछ न कुछ करने के लिए उठना ही था। उसने अपनी हथेलियों को मिलाया और उन्हें देखा, ठुल्ले और रेखाएं, लंबी पतली उंगलियाँ। वह सोच रहा था कि उसे हस्तरेखा-शास्त्र पर विश्वास करना चाहिए, अपने आपसे परे हर चीज पर विश्वास करना चाहिए उसने अपनी उंगलियों को तान दिया और फिर ढीला कर दिया, वह बार-बार इस तरह करता रहा अपनी

उंगलियों के बीच से वह जापानी सनकी टोपी, और सूर्यास्त के दो धुँधले टुकड़ों की झलक देख सकता था।

वह मदना में बहुत से लोगों से मिला, लेकिन तामसे से नहीं। वास्तव में वह उससे मिलना ही नहीं चाहता था, जैसे कि वह बाबा रमन्ना से नहीं मिलना चाहता था, शायद उनसे मिलकर उसे निराशा ही हाथ लगती। तामसे अब सन् 1962 वाला नहीं रह गया, वह बदल गया, बाद में तामसे बेहूदा कैसे बन गया, उसकी समझ से बाहर की बात थी, एक सरकारी कलाकार, जिसने मूर्तियाँ और लोगों के लिए रेस्ट हॉउस बनाए, और अब जिसकी कला का विचार नालों में पाया जा सकता है। उसने सोचा, तामसे को सीखना चाहिए, अकेला होना ठीक नहीं।

मुँह अँधेरे की आवाज़ें, लेकिन वह बंद दरवाजे के पीछे सुरक्षित महसूस कर रहा था। साइकिल की घंटी, वसंत के बच्चों की बड़बड़ाहट, फिर बरामदे पर बातचीत, उनकी निकटता उसे अच्छी नहीं लगती। जिस कमरे में शंकर रुका था, उसे किसी ने जोर से खोला, शायद उसमें कोई रहने आया होगा। वह दम घोंटू और आवाज़ों का इंतजार कर रहा था। दीवार में से उसने हँसी की आवाज़, सूटकेस के धड़ाम से रखने, कुर्सियों को खींचने की आवाजें सुनी। किसी ने वसंत को चाय के लिए कहा। फिर एक खाली बाल्टी में पानी गिरने की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी।

एक छिपकली धड़ाम से कालीन पर गिरी और कचरे के डिब्बे की तरफ़ दौड़ गई। वह सोच रहा था, मेनन भी अपने नए डिस्ट्रिक्ट डेवलेपमेंट ऑफिसर के पद पर कोलतांगा में होगा, वह लगातार उसे याद दिलाता रहता था कि उसे क्या होना चाहिए। उसे एक बेहोशी वाला सुस्त बुखार महसूस हुआ, वह जानता था कि इसके लिए मुलतानी कुछ भी नहीं कर सकता। उसने कंबल सिर पर ढका और अपनी खुद की छोड़ी हुई साँसें ली। वह बीमार, लेकिन अच्छा महसूस कर रहा था, और वह मुस्कुराया। यदि वह मुलतानी के क्लिनिक में गया तो वह एक और दवा बेचने वाले से मिलेगा, जिसका थका हुआ चेहरा

देखकर वह फिर से अपने आपको दोषी मानेगा। उसकी बेचैनी का कारण कई ठट्ठेबाज थे, साठे के कार्टून, शंकरन करन्त का समर्पण, नक्सलवाद की कट्टरता आदि... आदि...

बाहर दिगंबर की आवाज आई, वह वसंत से पूछ रहा था कि वह कहाँ था। वह फिर से परेशान हो गया। वसंत कुछ बड़बड़ाया। बरामदे में पड़नेवाली पदचापों के साथ ही दिगंबर के बीड़ी पीने का आभास हो रहा था। कंबल उसकी नाक और दाढ़ी को परेशान कर रहा था। उसने बायीं ओर करवट ली। उसके तकियों के पास एक नैपकिन था, जो सूरज से बचने के लिए, एक नाइब तहसीलदार ने देर गर्मियों में उसके लिए खरीदा था। अब यह सूखे वीर्य से अकड़ा हुआ पड़ा है। उसने अपनी मुट्ठी में उस कपड़े को कुचल दिया और अपने तकिये में मुँह छिपाकर हँसा।'

सूरज के निकलने से रोशनदान चमक उठे। वह उठ कर कसरत करना चाहता था, शायद धीरे-धीरे, ताकि ज़्यादा समय लगे। बरामदे से आवाज आ रही थी, लगता है दिगंबर जा रहा है। पूरा दिन खाली था, शाम को जोशी के लिए पार्टी को छोड़कर, जहाँ वह अहमद और अग्रवाल और लैंड रिकार्ड के डिस्ट्रिक्ट इंस्पेक्टर से मिलेगा, और शायद वे सभी उसके उपनामों की जांच करेंगे। आधी हँसी हँसते हुए उसने हस्तमैथुन करने की कोशिश की, लेकिन वह नीरा पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सका।

वह उठ गया और अपने रिकॉर्डर को, तकिये के आगे, नेपकिन के ऊपर रखा। उसने एला फिटज़राल्ड को हटा दिया लेकिन सोच नहीं पाया कि क्या बजाना है। टैगोर की अनंत सज्जनता उसकी मनोदशा को नागवार थी। विवाल्डी बहुत दूरदराज थी। शंकर के पास तो उसकी ठुमरी और गज़ल्स थी, वह सांत्वना के लिए नाक की लोंग और पलकों को छाँव बिछा सकता था, और ध्रुबो के लिए भी, समयानुसार राग और उसके फैशनेबल जेज़ थे, लेकिन उसके अपने स्वाद की कोई निरंतरता नहीं थी– केवल एक दुखद दोगला हरामीपन था। उसने रेडियो का स्विच ऑन किया और हिंदी फ़िल्म संगीत को पकड़ने की कोशिश की। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका – बहुत जल्दी या बहुत देर हो चुकी।

वह जोड़ को घुमाने के लिए फिर से उठ गया। उसने अपनी किताबों के पीछे अपनी मारिजुआना रखी हुई थी। नशे में होने का अर्थ है कि वह कुछ घंटों के लिए कसरत नहीं कर पाएगा। गीता ने उसे मदना के जोकर की याद दिलाई। 'यदि आप अपने जीवन की लड़ाई नहीं लड़ेंगे क्योंकि स्वार्थ में आप युद्ध से डरते हैं, तो आपका संकल्प बेकार है: प्रकृति आपको मजबूर करेगी। क्योंकि आप अपने पूर्व जीवन की शक्तियों के कर्मों के बंधन में हैं।' अचानक उसे साठे के प्रति घृणा हुई, जिसने इसका मज़ाक उड़ाया जैसे किसी मित्र के हाथ काट दिए हों।

वह चाय के बाद बाथरूम के दरवाज़े से बाहर निकल गया, कोने के चारों ओर घूमते हुए, अपने कमरे के सामने का दरवाज़ा खोल दिया और नाश्ते के लिए वसंत को पूछने लगा। वसंत धूप में बैठा अपने पैरों के तलवों से मैल निकाल रहा था। वसंत ने कहा, 'मैंने सोचा था कि आपको नाश्ता नहीं करना, वसंत ने उसकी तरफ़ देखते हुए कहा, हमने अपने लिए टमाटर पकाए हैं।'

'फिर मुझे आलू, अंडे और दूध दो।'

वह सर्किट हाउस, वसंत की पत्नी, आवारा कुत्तों, दुनिया के लोगों को सामान्य रूप से घूमते हुए देख कर अजीब महसूस कर रहा था, जबकि वह निर्बाध रूप से अपना गुप्त जीवन जी रहा था।

वह टिन के छेद से गाढ़ा दूध चूस रहा था, उसी समय साठे ने दरवाज़े से पूछा कि वह क्या कर रहा था, क्या वह सेक्स कर रहा था। 'ओ, नमस्ते,' अगस्त्य ने कहा, 'मैंने तुम्हारी थपकी नहीं सुनी। आओ, चूसो।'

'तुमने मुझे नहीं सुना क्योंकि तुम इस दूध के छेद में व्यस्त थे, और मारुती एक इक्कीसवीं सदी वाली कार है आवाज नहीं करती, अरे नहीं, धन्यवाद, तुम्हारी इस टिन

की उदार पेशकश के लिए धन्यवाद। कमरे में इतना अँधेरा क्यों है, क्या सूरज की रोशनी तुम्हें डराती है?

'अगस्त्य ने कहा, 'आओ बैठो'। उसने कमरे में एक और व्यक्ति को देखकर, अजीब महसूस किया, और एक तरह की घबराहट में बात की। 'गाढ़ा दूध मेरा एकमात्र दोस्त है। मैं अपने हर खाने के बाद दिन में तीन बार इसे चूसता हूँ। यहाँ के कुक को, आधिकारिक लोगों को हर ट्रे के साथ फ्रिज से टिन लाने का आदेश है। 'तुम चाय पीना चाहोगे?'

अनमने मन से अगस्त्य की प्लेट में झाँकते हुए साठे ने पूछा, 'क्यों क्या दूध भूरा है?'

'कुक शायद चीनी के बदले टट्टी का इस्तेमाल करता था। या यह ट्रे की गंदगी है। तुमने देखा होगा, उसके हाथ चट्टान जैसे नहीं हैं, और ना ही उसके हाथों की पकड़ मजबूत है, और इस तरह की कई चीजें। उसके हाथों में ट्रे उरी गैलर की तरह नाचती है, और ट्रे में दूध बिखर जाता है, फिर वह दूध को गिलास में वापस डालता है। मैं कल रात तुम्हारे यहाँ गया था, तुम्हारे भाई ने कहा कि तुम हैदराबाद गए हुए हो।'

'हाँ, उसने मुझे बताया था। मैं आज सुबह वापस आया हूँ। और वह आज रात, अपने कार्टूनों के झमेलों के बारे में बहस करने के लिए बॉम्बे और पूना के लिए निकल रहा है। लेकिन मैंने सोचा कि हम आज बियर पीने और आराम करने गोरापाक चलें। मेहनती मूर्ख भाटिया मारीगढ़ में हैं। मैंने कलेक्ट्रेट को फोन किया, और चिदंबरम ने कहा कि आप जोमपन्ना से वापस आ गए हो। अब यह मत कहना कि तुम नहीं चलोगे।'

'निश्चित रूप से मैं चलता, लेकिन तुम्हारे इस शर्ट को पहने, बिलकुल नहीं।' साठे की शर्ट अरुचिकर थी, बाथरूम के पर्दे की तरह, उसके सफेद आँगन पर पीले और हरे फूल बने थे। साठे हँसा और बोला, 'यह एक सुंदर पिकनिक शर्ट है इसके अलावा, यह मदना है अगस्त्य, कोई भी इस पर ध्यान नहीं देगा।'

अगस्त्य के दिमाग में कुछ खटका, उसे एक बात याद आई, उसने एक बार किसी से बहस की थी, या मदना के टेस्ट के बारे में किसी से बहस करना चाह रहा था। फिर उसने कहा, 'थोड़ी देर रुको, मैं अपनी लंगोटी की गंद साफ़ कर लूँ।' साठे के हँसने पर उसने बाथरूम का दरवाज़ा बंद कर लिया।

जब वह बाहर आया, तो साठे हँसते हुए उसके मारिजुआना के पॉलिथीन बैग को हाथ में उठाए, किताबों के बगल में खड़ा था। 'हमें इसे साथ ले जाना चाहिए। इससे बीयर का मज़ा बढ़ेगा।'

'एट टू, गोविंद।

'यह एक महान भारतीय परंपरा क्यों है, यही एक कारण है कि मुझे मदना पसंद है, हैजा की तुलना में यह मिलना यहाँ ज़्यादा आसान है। 'वह फिर से हँसा।' तुम जैसे दिखते हो वैसे नौकरशाह नहीं हो मुझे लगता है भाटिया भी धूम्रपान करता है।'

'आधा कॉलेज धूम्रपान किया करता था। यह काफी फैशनेबल था। और भाटिया के फेफड़े शायद ग्रे-हरे रंग के हो गए होंगे। मुझे यकीन है कि अगर हम उसकी रक्त वाहिकाओं को काटें और सूंघें तो हमें नशा चढ़ेगा। मुझे तुम्हे गीता देनी है।'

'कृपया इसे रखो! मेरे पास कई अन्य अनुवाद हैं। और यह बंगाली खंड है, देखो क्या है यह?' उसने पथेर पांचाली और गोरा को छुआ।

'ओह, ये बहुत दूर हैं, एक क्रांतिकारी होने के बारे में है, और दूसरा, बंगाल में गरीब होने के बारे में है। हालाँकि, दोनों महान उपन्यास हैं।'

'बेशक, ये बंगाली में होंगे, है ना?' साठे हँसा, 'लेकिन तुमने मुझे हैरान कर दिया, मुझे नहीं पता था कि तुम बंग्ला पढ़ सकते हो। मैंने सोचा था, तुम्हारे पिता को ही बंग्ला

पढ़नी आती होगी। वे बम्बई गोअन्स की तरह नहीं चाहते होंगे कि तुम सिर्फ़ अंग्रेज़ी के जानकार ही रहो।' उसने अगस्त्य के बदलाव को देखा। 'ऐसे लोगों के लिए जो इस तरह का विषादपूर्ण जीवन जीते हैं, तुम काफी अच्छी स्थिति में हो।'

'मैं अपने कॉलेज के दिनों में एक मैराथन आदमी था।' अपने जूते पहनते समय अगस्त्य हँसा। 'मैं यहाँ पर भी काफी नियमित रूप से भी कसरत करता हूँ। यह, 'उसने अपने हाथ दीवार पर रखे,' लगता है दिन को कोई आकार देनेवाला है।'

'एक दिन, जब आप समझदार बन जाते हैं, तब आप थम जाते हैं।' साठे हँसा, और कैसेट रिकॉर्डर के पास बैड पर बैठ गया 'आप शरीर की फ़ालतू चर्बी हटाने के गुर सीख जाते हैं। मुझे पता है तुम ऐसा क्यों करते हो, सिर्फ सेक्सी दिखने के लिए। हँसने का ठहाका लगते समय उसके पैर फर्श से ऊपर उठ रहे थे, लेकिन मुझसे पूछो सेक्सीपना तो दिमाग़ में होता है। और एक भारतीय के रूप में, आपको चिंतन का जीवन जीना चाहिए, कामसूत्र किस प्रकार के पुश-अप का सुझाव देते हैं?'

कार में अगस्त्य को याद आया। 'ओह, शाम को जोशी के लिए कोई पार्टी है। मुझे उसमें जाना था। 'वह साठे की तरफ़ मुस्कुराया। 'यह डीजे वीयू (पुरानी बात याद आना) है, क्या तुम्हे अपने घर का पहला लंच याद है? क्या तुम थोड़ी देर इन्तज़ार करोगे जब मैं बहाने बनाऊँगा। 'सर्किट हाउस से उसने चिदंबरम को फ़ोन किया और उसे बताया कि वह बीमार है। फिर उसने कार में पीछे बैठे साठे को बताया, 'अगर श्रीवास्तव मेरी सेहत के बारे में पूछने जाएगा, तो उसे मेरा दरवाज़ा बंद मिलेगा और कुक उसे बताएगा कि रोगी सुबह ग्यारह बजे लाल मारुती में बैठकर कहीं चला गया।'

फिर उसकी आखिरी सवारी शहर के बीच से होती हुई बाहर को निकली, बेहद शांत और सुखद; कार की खिड़कियाँ खुली थी, उनमें से धूल और गर्मी बराबर आ रही थी, चलती कार में से साइकिल सवार, रिक्शावाले और जूस बेचनवाले किसी फ़िल्म के नजारे-जैसे लग रहे थे, यात्रा आरामदायक और सुखद लग रही थी। साठे अपनी बेल्ट छिपाते

हुए, आराम से बैठा था, और अपने मोटे होठों से बिना आवाज की सीटी बजा रहा था।सड़क किनारे टट्टी करने वाले मारुती को देख कर इतने उत्तेजित हो रहे थे जैसे उन्होंने कोई नया खिलौना देखा हो– कार लाल थी, और उनकी लम्बाई से ज़्यादा ऊँची नहीं थी।'क्या तुम अपना सिर बाहर निकाल कर उन्हें देख सकते हो?'

फिर उन्होंने शहर को पीछे छोड़ दिया और साठे और भी आराम से हो गया। अगस्त्य ने कहा, 'आखिरी बार जब मैंने इन टट्टी करनेवालों को देखा तो मैंने गाँधी जी की लिखी वह लाईन याद की कि हममें कैसे स्वच्छता की भावना की कमी है। यह बहुत आसान लगता है, कि पहले गड्ढा खोदो और फिर उसमें टट्टी करो।'

'लेकिन यह सिर्फ फ़ालतू का शारीरिक काम है,' साठे ने कहा, 'हमेशा कोई न कोई आसान तरीका ढूँढना चाहिए।'

बहुत दूर एक खेत में दो बैलों के पीछे एक किसान हल जोत रहा था, भूरे और हरे रंग के खेत में तीन खाली पड़े स्थान थे। अगस्त्य ने उसे देखा और सोचा, बहुत सारा संसार, घना, और केंद्र में वह, एक बेचैन आत्मा। मदना, और इसके भीतर जोमपन्ना, चींपाथी, गोरपाक, मारीगढ़, जैसे जादूवाले नाम, एक स्वभावगत विशेषता के साथ मजबूत, जहाँ अभी भी उन आदिवासियों की उपेक्षा होती है, जो सदियों से यहाँ के मूल निवासी थे। और दिल्ली और कलकत्ता की महानगरीय दुनिया, मोहक, क्योंकि मायावी, और वैकल्पिक। इसके अलावा, आंतरिक इलाके जहाँ, हर दिन अनगिनत ट्रेनें रतलाम और आज़मगंज से गुजरती थीं। और अनन्त तक पहुँची हुई एक दूसरी दुनिया थी, जिससे जॉन एवेरी आया था, जहाँ पर ध्रुबो की रेनु गई थी, केवल वहाँ से असंबद्ध महसूस करने के लिए। बिना किसी उद्देश्य के एक दुनिया से दूसरी दुनिया तक गमनागमन, एक अंतराल और प्रवाह, सैर और यात्राएँ, आराम या शांति के लिए पनाह नहीं, सिर्फ़ क्षणभंगुर आनंद के लिए। अब मन के भीतर और परे समुद्र का प्रवाह, एकमात्र पैटर्न लग रहा था– यहाँ तक कि उससे मिले असंख्य लोगों में भी यह दिखाई देती है, उसने उन्हें जब तरतीब से लगाकर देखा तो उसे उनमें अपनी ही छवि दिखाई पड़ी, लेकिन

अराजकता का माहिर बनकर उस तरह के आराम की लालसा अब खुद को ही बेकार लग रही है। शायद यह सच था कि वह पहली बार सारी इच्छाओं को खत्म करने के बारे में सोच रहा था, और उसे होनी को स्वीकार करना सीखना था, शायद यह सच था कि सब कुछ इच्छाओं से धूमिल हो गया था, जैसे आग धुएँ से, दर्पण धूल से और जैसे अजन्मा बच्चा आवरण से।

सड़क पर रहनेवाले कुछ अवैध निवासियों की वजह से कार धीमी हो गई और डरते-डरते हॉर्न बजाने लगी। वह साठे की तरफ़ मुड़ा, 'मुझे नहीं लगता कि तुम्हे मेरे बारे में कुछ मालुम है। मुझे कोलतांगा में पोस्ट किया गया है। जहाँ पर मेनन का साथ शंकर की तुलना में कहीं बेहतर होगा।'

इस पर साठे का हँसना लाजिमी था। वह एक बेपरवाह आदमी था। 'कोलतांगा। वह शहर आकार में मदना का दसवाँ हिस्सा है। कोई इंडस्ट्री नहीं, कोई होटल नहीं, कुछ नहीं, बस रिक्शा और एक वीडियो पार्लर। मुझे नहीं लगता कि मैं कभी मेनन से मिला हूँ, लेकिन मैंने उसे देखा है, वह सभ्य और तीखा है, है ना, और हमेशा आपको बेअदबी से अपवित्र महसूस कराता है?' साठे ने हॉर्न पर एक धुन बजाई। 'और शंकर वैसे भी कोलतांगा जाना चाहता था। उसने ट्रांसफर करवाने के लिए पंद्रह हज़ार से ज़्यादा रूपये दिए होंगे।' 'वह बिना विनोद के मुस्कुराया। 'शंकर तो एक बीमार कहानी है। वह कोलतांगा इसलिए जाना चाहता था कि वह होम सिक था, दूसरे इंजीनियरों की तरह इसलिए नहीं कि वे अपनी पसंद की जगह इसलिए ट्रांसफर करवाते हैं कि वहाँ वे ज़्यादा पैसे कमा सकें। शंकर ने सिंचाई मंत्री को दस हज़ार रूपये दिए, और मंत्री ने कुछ नहीं किया। शंकर शक्तिहीन था क्योंकि उसके पास अयोग्यता और निष्फलता का ऐसा रिकॉर्ड है कि उसे किसी भी समय निलंबित किया जा सकता था। यदि कोई वास्तव में अपनी नौकरी करने के योग्य नहीं, तो उसे इस्तीफा दे देना चाहिए। हर कोई शंकर पर हँस रहा था - देखो, मंत्री ने तुमसे दस हज़ार ले लिए और तुम्हारे मुँह पर पाद दिया। और वह अजीब शख्स है, शराब और संगीत और ज्योतिष और पता नहीं क्या-क्या। फिर उसने कुछ और पैसे दिए, और उसका ट्रांसफर हुआ। यह एक बीमार कहानी है, उसे बाक़ी सब

छोड़ कर संगीत में मशगूल होना चाहिए। मैंने उसे कई साल पहले सुना था, जब वह नया और आशावान था। अब वह मन से नहीं गाता, सिर्फ मातम के गीत गाता है।

दो घंटे में वे गोरपाक पहुँचे। उन्होंने खाना और बियर निकाल लिए। साठे ने कहा, 'मेरे भाई के बच्चे आना चाहते थे। मैंने उन्हें स्कूल जाने के फायदों के बारे में समझाने की कोशिश की। अगर वे आए होते तो मुश्किल होती। वे बिना किसी मतलब के इधर-उधर घूमते और क्रिकेट खेलने की जिद्द करते। फिर बाल के बाद बाल को बाहर निकालने की जुगत में खेल से बाहर निकलना मुश्किल होता।

शरारती बच्चों ने पेड़ों के बीच से मंदिर के गेट की गंदगी के ढेर तक जाते हुए उनका पीछा किया, वे उनके कपड़े नोचते रहे, और पैसे माँगने के लिए उनकी चमड़ी को भी धीरे से चिकोटियाँ काट रहे थे। उन्होंने उनको धमकाया और गालियाँ दी फिर वे मुस्कराए, शरारती बच्चों ने उन्हें बदले में और वे भी मुस्कराए। गेट को एक झुके हुए भिखारी ने घेर रखा था, उसने अपने हाथ ऊपर उठा कर माँगने की फ़रियाद की। अगस्त्य ने कहा, 'मुझे लगता है कि अगर हम इसकी गली हुई उँगलियों पर दया नहीं करेंगे तो इसे दुःख होगा। वह बाबा रमन्ना के पास क्यों नहीं जाता, वह बहुत दूर नहीं है?'

वह थोड़ा-सा रुका और वहाँ खड़े कुष्ठ रोगी के बारे में भी यही कहा, जो उनकी तरफ़ निस्तेज बेरुखी से देख रहा था। उसकी बड़ी सी नाक और छोटी चंचल आँखें थी। कुष्ठ रोगी अपनी बाँह की कलाई से पेट को खुजला रहा था। 'शायद वह अस्पष्ट आदिवासी बोली के अलावा कुछ भी नहीं बोल सकता था,' साठे ने मंदिर में घुसते हुए कहा, 'और असल में ये लोग बाबा रमन्ना को पसंद भी नहीं करते होंगे, क्योंकि वहाँ पर इनसे काम करवाया जाएगा और इनकी आजादी भंग होग़ी। हममें से हरएक के इनके बारे में अपने विचार हैं, नहीं।'

मंदिर परिसर बिलकुल सूना पड़ा था। मंदिर के अंदर से कोई मंत्रोच्चारण की आवाज़ नहीं आ रही थी। पिछली यात्रा की यादें, एक पल के लिए रोहिणी के प्रति लालसा का भाव, कामुक कुमार, विष्णु के अवतारों के सामने मोहन और भाटिया के साथ नशा करना। साठे ने कहा, 'हमें नीचे नदी की तरफ़ चलना चाहिए, वहाँ एक अच्छी जगह है।' नदी अपने शुरूआती शीतकालीन आकार में कम हो गई थी, उस पानी में स्लेटी-रेत के द्वीपों के बीच कम नौकाएँ थीं।

साठे असमान चट्टानों की सीढ़ियों से नीचे की तरफ़ उतरा। दोनों तरफ़ कूड़ा पड़ा था, कुछ बकरियाँ टेढ़ी-मेढ़ी दिशा में खड़ी होकर शांत भाव से जुगाली कर रही थी, साठे के जूतों के तले पत्थर पर आवाज़ करते हुए पड़ रहे थे, और तट पर गाँव की महिलाओं की धीमी फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी। मुलायम मुस्कराहट। साठे ज़ोर-ज़ोर से हाँफ रहा था। महिलाओं ने देखा कि वह रेत से गुज़रता हुआ पेड़ों से खाली जगह की तरफ़ जा रहा था, जहाँ पर गाँव के लोग सदियों से शौच करते आ रहे थे। साठे ने हाँफते और हँसते हुए कहा, 'जिस जगह को मैं जानता हूँ, वह आगे है।' ख़ाली रेत में पाँच मिनट और, और वे एक ढँके हुए छोटे से तालाब पर पहुंच गए।

अगस्त्य ने कहा, 'ग्रामीणों के टट्टी करने के लिए कितनी सही जगह है।' 'क्यों, है कि नहीं?'

साठे हँसा ' दुरूह कहावतों के लिए भगवान का शुक्र है।' उसने अपनी टोकरी नीचे रख दी और अपना चेहरा और गर्दन पोंछे, जो पसीने से सराबोर हो गए थे। 'ग्रामीणों के लिए यह स्थान पवित्र है, इसलिए वे इसे अशुद्ध नहीं करते।'

वह एक सपाट पत्थर पर पसर गया। तालाब लगभग तीस फीट चौड़ा था, इसका पानी स्थिर और साफ था। उस पानी पर बेहद पुराने घुमावदार बरगदों में से हल्की नीली धूप पड़ रही थी। तालाब के चारों ओर किसी विशाल मुकुट के टूटे हुए मोतियों की तरह भूरे रंग के पत्थरों के ब्लाक बिखरे हुए थे। 'ये मंदिर के पत्थरों जैसे हैं,' अगस्त्य ने बताया,

'उसी तरह के पत्थर हैं। खासकर उस झोपड़ी के पत्थर। 'पत्थर की झोपड़ी तालाब के दूसरी तरफ़ थी; उसकी दीवारें भी करीने से खुदी हुई थीं। 'यह राजाओं के लिए सेक्स या किसी और तरह की अय्याशी के लिए बनाई होगी।' उसने चारों ओर देखा। पेड़ों ने तट और नदी दोनों को साफ़ और शांत रखा हुआ था, लेकिन पत्तियों की चहचहाहट और दूर के पक्षियों की आवाज़े ख़तरनाक लगती थी, कई अप्रत्याशित जगहों पर मौजूद असहजता कुछ ज़्यादा ही हैरान करने वाली थी।

'मंदिर से यह जगह एक और टट्टी करने की जगह की तरह दिखती है।' साठे उठा और बीयर की बोतल खोलने लगा। 'इस जगह को मैंने अपने पिता के साथ पच्चीस साल पहले खोजा था। ज़िले में यह एकमात्र जगह है, जिसे सालों के बाद भी बर्बाद नहीं किया गया।' उसने दो बोतलें पानी में खड़ी कीं। 'यह फ्रिज की तुलना में ज़्यादा अच्छी तरह ठंडा करेगा।' जब साठे बात कर रहा था तो अगस्त्य एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर फुदक रहा था। 'एक बूढ़ा और अद्भुत उबाऊ साधू उस झोपड़ी में रहता है। मुझे लगता है वह यहाँ आसपास नहीं है। वह हमारे इस तरह के बड़े पैमाने पर अपवित्र काम को बिलकुल बर्दाश्त नहीं करेगा। बीयर और गोमाँस और मारिजुआना।' साठे ने अगस्त्य को बुलाया,' तुम बीफ़ खाओ, खाते हो ना?'

वह अपने पैर की उंगलियों को एक पत्थर पर टिका कर आराम करने लगा। 'जब तक मेरी बुआ को इसका पता नहीं चलता।' उसे बहुत अच्छा लगा। 'मेरी सबसे बूढी बुआ, मेरे पिता की बड़ी बहन कहती है कि अगर तुम बीफ खाते हो तो समझो कि तुम अपने माता-पिता का माँस खाते हो।' वह फिर से कूदने लगा। पत्थर पर थिरकते एक पतली दाढ़ी वाले शख्स की आवाज, छन-छन कर साठे तक आ रही थी। 'मेरे पिता भी गोमाँस खाते हैं। वे अजीब हैं,' वह हँसा,' वह मक्के के बीफ़ सैंडविच खाते हैं और धोती पहनते हैं और संस्कृत में उपनिषद् पढ़ते हैं। वह लगातार मेरी बुआओं को परेशान करते हैं। हर बार जब मैं छुट्टियों में पूजा के लिए दार्जिलिंग से कलकत्ता लौटता था, तो मेरी बुआओं के घरों में बीमारों जैसा खाना खाता था, मेरे पिता उन दिनों दिल्ली में थे, वे मुझसे बीफ़ न खाने की क़सम लेती थी और मैं कसम खाता था, वे बदले में मुझे उपहार देती थी।'

वह तालाब के चारों तरफ़ आधे रास्ते पर पहुँच गया। 'और स्कूल में मेरा पीटर मार्टिन नामक एक एंग्लो-इंडियन सहपाठी था, उसके माता-पिता भी दार्जिलिंग में रहते थे, वे इसे चाय-संपदा के प्रकार की तरह, दार्ज कहते थे। वह अक्सर घर का खाना खाता था, जिसमें बहुत सा बीफ होता था। जब हम छठी कक्षा में थे तब वह अपने आप को ग्यारह साल का बताता था, और वह था तेरह साल का। साला, फेल होता रहता था। वह मुझे कहता था, "हे, अंग्रेज़ी", 'यदि तुम एंग्लो इंडियन बनना चाहते हो तो तुमको गोमाँस खाना पड़ेगा, लेकिन फिर तुम भी नरक में जाओगे।' मूर्ख यह सोचता था कि ऐसा कहकर वह हमें अपने खाने पर हमला करने से रोक देगा।

आखिरी उछाल उसे उस पत्थर पर ले आई जिस पर बैठा साठे एक सैंडविच चबा रहा था। साठे ने पूछा, 'क्यों न हम पहले तुम्हारे गांजे का धूम्रपान कर लें?'

अगस्त्य पत्थर पर सिर टिकाकर बैठ गया, 'यह इस तरह की रोशनी है, अगर तुम यहाँ पर कुछ महीनों तक रहो तो तुम्हारी नज़रें तेज हो सकती हैं। यह पानी के तले की तरह शांत और हरा है।' उसने झोपड़ी में देखा। 'अगर साधु यहाँ है, तो शायद वह हमें बुलाए। मुझे यकीन है कि वह धूम्रपान करना पसंद करेगा। एक आदमी, जिससे हमें नहीं मिलना चाहिए, वह है दुबे, यहाँ असिस्टेंट कंजर्वेटर है, संभवत: एक रूढ़िवादी मैथिली ब्राह्मण, जो इस तरह की अपवित्रता पर हैरान होगा।'

'ठीक है, मैं भी ब्राह्मण हूँ,' साठे हँसा, 'मैं चित्पावन ब्राह्मण हूँ। इसी तरह मैं पहली बार साधु से मिला था। लगभग पाँच साल पहले। मैं यहाँ अकेला आया था। जब मैं सिगरेट पी रहा था तब वह अचानक कहीं से प्रकट हो गया और उसने मुझे लानत दी। केसरी लबादा और भूरे रंग के लंबे बाल, विशाल और कठोर, मैं उससे पूछने की कोशिश कर रहा था कि क्या वह वजन उठा सकता है। मैंने कहा कि अज्ञानतावश मुझे पता नहीं था क्योंकि मैं अज्ञानी था, और मेरा अपवित्र होने का मतलब ही नहीं था क्योंकि मैं एक ब्राह्मण था। फिर मैंने उसे अपनी जनेऊ दिखाई।' साठे की हँसी ने फिर से वहाँ की शान्ति भंग की। साठे ने कहा, 'उसके बाद उससे मेरी कई बार मुलाकात हुई। वह बहुत

बातूनी आदमी है। मुझे लगता है उसे ग्रामीणों के साथ गंभीर और चुप रहना चाहिए। वह इस जगह का एक तरह का स्वयं नियुक्त गार्ड है।' साठे ने सैंडविच अगस्त्य की तरफ़ बढ़ाए। 'यह सभी तरह की ग़ैर ज़िम्मेदाराना वासना और नाजायजंपना के बारे में एक अजीब कहानी है। एक अनजान आदिवासी सरदार का एक बेवक़ूफ़ बच्चा था। उसने अपनी पत्नी और बच्चे दोनों को त्याग दिया था। उसकी पत्नी ने इसी तालाब में आत्महत्या कर ली, और यह पानी लाल हो गया। लवली, है ना? लेकिन यह उसका बहुत ही ग़ैरज़िम्मेदाराना व्यवहार था, क्योंकि उसने अपने बच्चे को इन पत्थरों में अकेला छोड़ दिया। मैंने साधु से पूछा, इन पत्थरों में से किस पत्थर पर छोड़ा था उसने अपने बच्चे को। वह थोड़ा परेशान हुआ, और उसने शायद काफी सही बताया, कि पत्थरों के सभी ब्लॉक पवित्र हैं। वह बच्चा किसी तरह इस एक हज़ार वर्गगज के चौकोर ओएसिस में बच गया। मिथकों के बारे में यह सबसे अच्छी बात है, उनमें ज़िंदा रहना बहुत आसान होता है। मैं साधु से पूछना चाहता था, बच्चा टट्टी कहाँ करता था? सबसे हैरान करनेवाली बात यह थी कि, बच्चे ने नदी या रेत को नहीं देखा। यह अच्छा था कि आज के मुक़ाबले, कोई इतनी हरियाली में बिना किसी गंदगी और सूखेपन के यहाँ पर रहा होगा। लेकिन पानी तब तक लाल रहा, जब तक उस सरदार ने माफ़ी नहीं माँगी। फिर तीसरे विश्व युद्ध- जैसा, एक बहुत बड़ा सूखा पड़ा, दूर-दूर तक कहीं पर पानी नहीं था, लेकिन यहाँ पर पानी था। हर कोई राजा के पास गया और, सहायता माँगी। वह यहाँ आया और उसे बहुत अपराध बोध हुआ। उसने अपने राज्य को अपनी वैध औलाद बनाया और यहाँ रहने के लिए आ गया। फिर पिता और बेटे एक साथ रहे, पिता धार्मिक हो गया और बेटे को दुष्ट दुनिया के बारे में बताया, और अपना लक्ष्य बताया। पानी साफ़ हो गया, और इस तालाब की हजारों मछलियाँ ऊपर आ गईं। हज़ारों, कहकर साठे ने बेदिली से पानी की तरफ़ इशारा किया। 'इसमें कुछ रोटी के टुकड़े छोड़ दो और देखो यहाँ पर मछलियाँ नहीं हैं, यहाँ तक कि मछलियों को भी ज्ञान दिया जाता है। और यह सच है कि भयंकर गर्मियों में भी यहाँ का पानी सूखता नहीं, जाहिर है कोई गुप्त भूमिगत स्रोत है, और इस जगह से कोई भी पानी की एक बूँद तक नहीं लेता।'

अगस्त्य ने पानी से बोतलें उठाईं। उसने कहा 'ठंडी और मनोरम।' उसने अपनी सैंडविच से एक टुकड़ा तोड़ा और तालाब में फेंक दिया। अचानक पानी में कुछ हलचल हुई, फिर पानी शांत हो गया, और वह चौंका। वह धुँधलेपन और फुर्तीली चांदी की मछलियों की वजह से पानी के तले को नहीं देख सका। फिर अचानक, वही पुरानी चुप्पी, लेकिन अब झूठ, जैसे यह सिर्फ एक आवरण हो।

माँस और बीयर की डकारें आ रही थी। अगस्त्य ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि मैं कोलतांगा जा रहा हूँ। मैं घर जाकर सोचता हूँ। मुझे सोचना होगा।'

देर दोपहर, साठे सीधा लेटा, सूरज द्वारा बरगद के पत्तों पर चढ़ी सोने जैसी चमक देख रहा था। नींद की एक झपकी लेकर, थोड़ी देर बाद, उसने कहा, 'हाँ, तुम कलकत्ता रह सकते हो और बंगाली अखबारों के लिए मेरे कार्टूनों का अनुवाद कर सकते हो।'

अगस्त्य को उसकी इस बात से नफरत थी। वह उठकर चला गया और पानी के किनारे बैठ गया। तालाब के विस्तार को देखकर उसने कहा, 'मैं परेशान हूँ और मुझे डर लग रहा है। यात्रा के बाद फिर यात्रा, कभी ट्रेन से तो कभी जीप से, सिर्फ़ चलना और चलना। कभी इंटीग्रेशन मीटिंग, कभी रेवेन्यू मीटिंग, डेवलेपमेंट मीटिंग यही सब। पहले नौकरी मुझे भा नहीं रही थी, जब मुझे इसमें अच्छा लगने लगा तो, मुझे लगा मैं सैटल हो जाऊँगा। जब ऐसा हुआ, तब भी मुझे कोई फायदा नहीं हुआ, मैं हमेशा भटकता रहा हूँ, अपने विचारों की चपेट में रहा हूँ, जैसे मेरे अतीत की संतुष्ट परछाइयाँ, मेरा मजाक कर रही हों। ज़्यादातर समय मैं अपने आप में दोषी महसूस करता रहा हूँ। मैंने सोचा, अगर मेरा मन इतना बेचैन ना होता तो मैं चींपाथी में काम में जुट जाता, गाँव में पानी उपलब्ध करवाने के लिए कुछ ठोस काम करता, यहाँ तक कि बाबा रमन्ना के यहाँ भी

मैं खुद को दोषी महसूस कर रहा था, खुद में डूबा रहता था, जबकि एक डॉक्टर ने वहाँ पर एक चमत्कार कर दिखा था।'

दोपहर का सूरज पानी पर उबासी लेता लग रहा था। उस धुँधली रोशनी में उसे उसकी सतह पर एक चेहरा दिखाई दिया। चलने की आवाज़, और अचानक साठे ने उसके कंधे को छुआ और उसके बगल में बैठ गया। कुछ क्षणों बाद, अचानक, वह हँसा, 'सालों पहले। मेरे पिता सोच भी नहीं सकते थे कि मैं एक कार्टूनिस्ट बनना चाहता था। यह जीने का कोई रास्ता नहीं है। मैंने कहा था, मुझे नहीं लगता कि आपका जीने का कोई भी तरीक़ा सही है। उन्होंने हमारे लिए बहुत पैसा बनाया था, लेकिन इसके लिए उन्हें जो काम करना पड़ता था, मुझे वह काम अमानवीय लगता था। जंगल में दिन और कभी-कभी रातों में भी, फ़ारेस्ट के अधिकारियों को रिश्वत देना, आदिवासियों को भी वे कम मजदूरी देते थे, और अपने-जैसे लकड़ी के ठेकेदारों को धोखा देते थे। उनके पास धन था, लेकिन कोई गरिमा नहीं थी, जिसे वह हमसे चाहते थे। वे मुझ पर नाराज थे, मुझे पता था, क्यों। उनका मतलब था, कोई भी कार्टूनिस्ट को गंभीरता से नहीं लेता, मदना का जोकर समझते हैं। वे समझते होंगे ये मेरी जिंदगी पर हँसता होगा, लेकिन मैं ऐसा नहीं करता था। उन्हीं की वजह से मुझे पैसों की कभी कमी महसूस नहीं हुई। मैं उनका आभारी था, निश्चित रूप से मैं आभारी रहा हूँ। लेकिन अगर मैंने अलग रास्ता चुना, तो यह मेरी कोई गलती नहीं थी, यह सिर्फ एक अलग विकल्प था। 'साठे ने अगस्त्य की प्रोफ़ाइल को देखा। कहीं एक पक्षी शोकपूर्वक, चिल्लाया। साठे उठ गया और बचे हुए सैंडविच के साथ लौट आया।

उसने धीरे-धीरे सैंडविच के टुकड़े को तालाब में फेंक दिया, और उन्होंने पानी को हिलते देखा। 'पहले दिन, कुमार के ऑफिस में, तुमने मुझसे पूछा था कि मैं मदना में क्या कर रहा हूँ। जहाँ पर आप पले-बढ़े होते हैं, उस जगह बात ही अलग होती है, है ना। हर कोई अपने "निष्कर्ष" को सही ढंग से घोषित करता है और "बनने" के बाद "पर" का उपयोग नहीं करता, और ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे कि ये चीजें मायने रखती हैं। लेकिन अगस्त्य, मदना मेरे लिए घर है, बॉम्बे में मैं खोया-खोया सा महसूस करता हूँ। मेरे

सबसे अच्छे साल, मेरा अतीत, यहाँ है, कड़वा-मीठा सब कुछ क्योंकि वह बीत गया। जो कुछ करना आप चुनते हैं, आप सब कुछ का पछतावा करेंगे, या कुछ भी खेद नहीं करेंगे।'याद रखें,' और साठे धीरे-धीरे हँस रहा था,'आप जेम्स बॉन्ड नहीं हैं, आपको ज़िंदगी सिर्फ़ एक बार ही मिलती है।'

बाद में वे झोपड़ी के (साठे हर पत्थर पर असहाय तरीके से हँसते हुए) चारों और घूमे। यह बिल्कुल खाली थी, एक साफ मिट्टी का फर्श और हवा के लिए पत्थर में एक छेद था।

'पक्का है कि साधु यहीं रहता है?'

'तुम्हें यहाँ किस चीज़ की उम्मीद थी, एक वीडियो?' वे दीवार पर खुदे सेक्स की सराहना कर रहे थे। 'अद्भुत। साठे ने कहा, वह बहुत ग़ज़ब का नजारा रहा होगा, 'दर्जन भर कारीगर पत्थरों को तोड़ रहे होंगे, जिनमें से बड़े-बड़े स्तन और जांघ उभरे।'

जॉन एवरी ने मुझसे पूछा था कि हिंदू मंदिर में इतना सेक्स क्यों था? मैंने उन्हें बताया कि कोई संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं है।'

'जॉन एवरी, मैं उस तीर्थयात्री को भूल गया।' वे पीछे चलना शुरू हो गए। साठे कुछ पूछने के लिए एक ब्लॉक पर रुक गया, 'उसकी सेक्सी पत्नी और उसके साथ मारीहांडी में कैसा रहा? मुझे उनके लिए बुरी तरह खेद महसूस हुआ, उसे कलेक्टरेट और क्लब से हटा दिया गया था। वह तुम्हारी तरह थी, है ना, मुझे लगता है, वह अपने बालों को तेल नहीं लगाती थी। उसे एवरी की जिज्ञासा पर हैरानी होनी चाहिए।' उन्होंने बोतलों और नैपकिनों को पैक करना शुरू कर दिया। 'उसके लिए देश का सबसे अच्छा टुकड़ा बॉम्बे होगा– वार्डन रोड में एक फ़्लैट और दोपहरें जहाँगीर आर्ट गैलरी में। मुझे नहीं पता कि जब वह यहाँ आई थी, तो उसने क्या सोचा होगा, उसके पास अर्पण करने के लिए कुछ नहीं होगा, किसी के हित के लिए कोई सनकीपन नहीं -वास्तव में न तांत्रिक संस्कार, या

राज, या गाँधी, कोई अतीत नहीं। और एवरी काफी परेशान था, क्या वह नहीं था, निश्चित रूप से उसके चेहरे पर सामान्य अभिव्यक्ति नहीं थी। सीता को कोई परवाह नहीं थी, और हममें से, जो अपने इतिहास के प्रति सचेत होता है वो उसको लेकर घुटता रहता है – मुझे आश्चर्य है कि उसे यह महसूस हुआ या नहीं।' उन्होंने चलना शुरू कर दिया। 'लेकिन हम एवरी को सीता की दुनिया या तुम्हारी दुनिया में दिलचस्पी नहीं रखने के लिए कैसे दोषी ठहरा सकते हैं।' साठे हँसा, 'देखो, किसी की नहीं, बिलकुल किसी की नहीं अगस्त्य, तुम्हारी पीढ़ी में दूर से भा किसी की दिलचस्पी नहीं है।'

अगस्त्य ने पीछे देखा। 'यहाँ फिर से आना अच्छा रहेगा।'

'शायद तुम्हें साधु मिल जाएंगे, वे तुम्हें तुम्हारे नाम की उत्पत्ति के बारे में बताएंगे।'

पेड़ों से परे रेत पर ठंडी हवा थी और नदी काली और मृत लग रही थी। गाँव की महिलाओं ने गोधुलि में उन्हें ढीले शर्ट और तंग जींस पहने पास से गुज़रते देखा। वे सीढ़ियों पर दर्जनों बार रुके। नदी एक काला दर्पण लग रही थी, आसमान सलेटी और उदास था। साठे ने कहा, 'कुछ दृश्य, दिमाग़ में बस जाते हैं, नहीं।' उसने अपना हाथ लहराया। 'वे सुंदर हैं, और कभी-कभी तुम उन्हें सबसे अप्रत्याशित स्थानों पर देखते हो। या तुमको लगता है कि वे महत्त्वपूर्ण हैं। वर्षों से मैं मदना पुल से देख रहा हूँ कि थर्मल पावर स्टेशन आकाश की ओर बढ़ रहा है। किसी तरह वह महत्त्वपूर्ण लग रहा था।' मंदिर सुनसान था। गेट पर एक ही बल्ब जल रहा था। कोढ़ी अब वहाँ नहीं था। कार के पास साठे ने अचानक कहा, 'तुमने मोहन के बारे में सुना है।' मैं हँसना चाहता था। वह बहुत समझदार लग रहा था, वह वासना के मामले में इतना भावुक कैसे हो सकता था। वह महिला सिर्फ एक आवारा महिला थी। और मुझे बहुत अजीब लगा, कि अगर यह उसके साथ हो गया तो, हमारे में से किसी भी आदमी के साथ हो सकता है।'

वे आठ बजे मदना पहुँचे। अगस्त्य ने अपना दरवाज़ा खोला और उसक पैर एक ख़त पर पड़ा। नीरा।

प्रिय ओगु,

मेरे सबसे क़रीबी दोस्त को, मैं यह कहना चाहूँगी कि पिछले हफ्ते मैंने अपना कौमार्य खो दिया। तुम मेरी इस औपचारिक घोषणा को कैसे पसंद करोगे? मैंने अभी तक यह बात किसी और को नहीं बताई है, लेकिन इन दिनों इस बात के लिए मेरा दिमाग फटा जा रहा था। और अजीब तरह से, मेरी ख़ास मंशा यह थी कि मैं राहत महसूस कर रही हूँ। यह बोझ उतारने- जैसा भाव था (!) मुझे कई लड़कियों ने बताया कि कौमार्य खोने के बाद उन्हें लगा की उनका कुछ खो गया। मेरे दूसरे जज़्बात बहुत उलझन में हैं लेकिन सच कहूँ तो, मुझे राहत मिली है। इसलिए मैंने यह बात बताने का फ़ैसला लिया। और निश्चित रूप से वास्तव में इससे बिल्कुल फर्क नहीं पड़ा। मेरी ज़िंदगी उतनी ही निढाल है जैसी पहले थी। मेरा मानना है कि प्यार के साथ यह होना चाहिए था, लेकिन सब कुछ तुम्हारे मन का नहीं हो सकता। तुम उससे कभी नहीं मिले हो, लेकिन तुम उसे पसंद नहीं करोगे। वह भी एक पत्रकार (टेलीग्राफ़) है, जो कि दाढ़ी रखता है, कुर्ता - पजामा पहनता है और मार्क्सवाद के सपने देखता है। मुझे लगता ही तुम मुझ पर हँसोगे। कृपया ऐसा मत करना। मुझे वैसे भी बहुत अजीब लग रहा है। मैं मनु की शादी में मद्रास जा रही हूँ। लेकिन में वापसी में तुमसे कलकत्ता में मिलूँगी।

प्यार के साथ, नीरा।

ओह, नीरा, मेरी प्यारी कुतिया, अगस्त्य ख़त हाथ में लिए कमरे में चारों ओर घूमते हुए हँसा। सेक्स के लिए मैं यहाँ उत्तेजना के मारे नैपकिन में हस्तमैथुन कर रहा हूँ, नंगा भी होता हूँ तो सिर्फ डॉक्टरों के सामने और बस स्टेशनों पर चपरासियों को कामोत्तेजक बूटियाँ खरीदते हुए देख रहा हूँ, और तुम साली कलकत्ते में चश्मे वाले के साथ मुख मैथुन का इतिहास बना रही हो!

वसंत का वाहियात डिनर दिन भर का मजा किरकिरा कर देगा। यह सोच वह यहाँ पर अपनी आखिरी सैर के लिए शहर के बीच से निकला। वह डिस्ट्रिक्ट जज के घर के सामने से निकला, उनके घर के बरामदे में एक ट्यूब-लाइट जल रही थी। उसका कल का दिन भाटिया, श्रीवास्तव, कुमार, बजाज आदि को गुड- बाय करने में बीतेगा। शंकर जा चुका था और साठे से वह मिला ही था। गैराजों से आने वाली बेख़ौफ़ ठुकाई, संगीत की दुकानों से आने वाली छद्म- ग़ज़ल का सत्यानाश कर रही थी। मैकेनिक किसी काले ठेले पर झुका हुआ था। उसकी दुकान के पीछे से आनेवाली रोशनी से उसकी बाँह, हाथ और हाथ का हथौड़ा कभी ऊपर तो कभी नीचे चमक रहा था। यह नजारा ऐसा लग रहा था जैसे किसी मंच पर एक नृशंस हत्या की जा रही हो। वह सोच रहा था कि वह नौकरी छोड़ देगा क्योंकि उसे महसूस हो रहा था- बेकार के काम, सब कुछ यंत्रवत् बेसमझी से जाना, जैसे सुबह बजे मैदान में दौड़ना, अपनी तर्जनी को जानबूझ कर काटना। उसे स्ट्रीटलाइट में, रस-विक्रेताओं के पीछे एक फ़िल्म का विज्ञापन दिखाई पड़ा लिखा था, कंचनजंगा। उसने एक बार शरद् ऋतु के सूरज की हल्की गर्मी में,अपने कूच कर जाने का सपना देखा था, लेकिन अब उतार असंभव था। अब तो गति आगे की तरफ़ बढ़ सकती थी, ऊँट की तरह पीछे हटना नामुमकिन था। दक्षिण में हमेशा की तरह बहुत हलचल और तेज़ रोशनी थी उसने लबालब भरे सांबर के कटोरे में इडलियाँ खाइ, स्पीकरों में से आते हिंदी डिस्को गाने सुने, और वह चाहता था कि उसे कोई जान-पहचानवाला ना दिखे। वह नौ बज कर तीस मिनट पर रेस्ट हाउस वापस लौटा। उसने एक चौकीदार तरह खिड़की से अपने कमरे में झाँका। ट्यूब- लाइट की नीली रोशनी में, उसने अपना अस्त-व्यस्त बिस्तर देखा, तकिये के पास एक नैपकिन पर एक कैसट रिकॉर्डर, कैसेट और टेबल पर एक खुला हुआ ख़त शेल्फ पर कुछ किताबें देखी।

मदना में अपने आखिरी दिन उसने ध्रुबो को लिखा, 'तुम अपनी सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने में खप रहे होगे। इस बीच, मैं तुम्हारे लिए अमेरिकन बन चुका हूँ, कॉलेज के बाद खुद मुझे खुद को समझने के लिए एक वर्ष का समय लगा।' मेरी बुआएँ नाराज़ थी; एक ने मेरे व्यवहार को खालिस पाप बताया, उसके मन में यह बात घर कर गई थी कि, एक बंगाली हिंदू की शादी गोवा कैथोलिक के साथ जो हुई थी। पुल्टुकाकु की

प्रतिक्रिया अपेक्षाकृत अपरंपरागत थी। उन्होंने अगस्त्य के पिता को फोन पर कहा, 'जब तक कि यह बेवकूफ टॉनिक को ज्वाइन नहीं कर लेता इसे चैन नहीं।'

उसने श्रीवास्तव और कुमार से झूठे वायदे किए कि वह कोलतांगा से उन्हें मिलने आएगा, फिर उसकी ट्रेन की आखिरी यात्रा शुरू हुई। ट्रेन में अगस्त्य के सामने एक गंजा आदमी बैठा था, जो उससे अपने पेट के बारे में पूछना चाहता था। उससे बचने के लिए उसने अपनी मार्कस औरेलिअस खोल ली। वह सोच रहा था 'आज मैं अपनी सभी परेशानियों से मुक्त हूँ; या यों कहें कि मैंने सभी परेशानियों को दूर कर दिया– क्योंकि वे बाहर नहीं भीतर हैं; ये मेरे अपने नज़रिये के अनुरूप हैं।' वह उस खुले पेज को पढ़कर मुस्कुराया और सोचा, यह झूठ है, लेकिन उसने बड़ी चतुराई से झूठ बोला, वह उदासीन रोमन जो कि एक ज़िंदगी से भी ज़्यादा खुशी की तलाश में था, लेकिन वह बहुत सुघड़ता से इसमें असफल रहा। ट्रेन दौड़ती जा रही थी और वह अपने पिता को मिलने की उत्सुकता लिए भीतरी इलाक़ों को निहार रहा था।

तीसरा अध्याय

स्रोत और लक्ष्य पाठ का भाषिक अनुशीलन

तीसरा अध्याय
स्रोत और लक्ष्य पाठ का भाषिक अनुशीलन

भाषा केवल 'ध्वनियों का समूह' या 'अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र' नहीं है, वरन् वह मनुष्य की व्यक्तिगत और सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता की परिचायक भी है। साथ ही भाषा मनुष्य के मानसिकता और बौद्धिक स्तर का मापदण्ड भी है। भाषा ही वह एकमात्र कड़ी है, जिसने हमारे वर्तमान को हमारे प्राचीन मूल्यों और परम्पराओं से जोड़ रखा है। हर एक समाज का अपना एक अलग भाषा-संसार है और उसकी अपनी संरचना अपना भाषिक व्यवहार है। हर एक भाषा का अपना शब्द- संसार, उसकी वाक्य संरचना, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, भावनात्मक स्थितियाँ तथा आंचलिक, व्यावहारिक एवं व्यावसायिक शब्दावली निर्धारित होती है। इन्हीं कारणों से एक भाषा दूसरे से भिन्न होती है। भाषा की इसी भिन्नता को पाटने का कार्य अनुवाद करता है। अनुवाद एक सेतु है जो एक भाषा के समाज को दूसरे भाषा के समाज तक पहुँचाता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में उपमन्यु चटर्जी का अंग्रेजी उपन्यास *इंग्लिश ऑगस्त* का अनुवाद हिन्दी भाषा में किया गया है। अत: मूल पाठ की भाषा यानी स्रोत भाषा (अंग्रेज़ी) और लक्ष्य पाठ की भाषा (हिन्दी) का भाषा अनुशीलन अति महत्त्वपूर्ण हो जाता है। उपन्यास प्रत्यक्षत: भावपूर्ण शब्दों का पुंज होता है। एक विशेष योजना के तहत शब्द, पद और वाक्य फिर पद, अवतरण, प्रकरण और परिच्छेद बनते हैं। अन्तत: वे पाठक के चेतना मे एक कथा-संसार का सृजन करने मे समर्थ होते है।

कथा संसार का यह सृजन एक ओर उपन्यासकार से जुड़ा होता है और दूसरी ओर पाठक से। रचनाकार शब्द की सहायता से अपनी चेतना में एक कथा-संसार की पुनरर्चना करता है। किसी भी उपन्यास की श्रेष्ठता उसकी भाषा की सर्जनात्मकता पर निर्भर करती है। उपमन्यु चटर्जी द्वारा लिखित उपन्यास *इंग्लिश ऑगस्त* भारतीय परिवेश की ही कथा को समेटे हुए है जो कि मात्र भाषा के स्तर पर विभिन्नता उत्पन्न करता है। यह एक युवक की कहानी है, जो तमाम महत्त्वकांक्षी युवकों के लिए एक उदाहरण है। भारत में रहकर भी वह भारत की संस्कृति और विचार से दूर और पाश्चात्य संस्कृति और विचार के क़रीब रहता है। उपन्यास के नाम से ही इस भारतीय युवा नायक अगस्त्य (एक प्राचीन ऋषि का नाम) पर अंग्रेज़ी रंग दिखाई पड़ता है जो अंग्रेज़ी में विकृत होकर '*इंग्लिश ऑगस्त*' हो गया है। यह कहानी एक युवक की अपनी व्यक्तित्व की खोज की ऊहापोह पर चलती है। जो जन्मा तो भारत में है परन्तु भारतीयता से कोसों दूर है।

उपन्यास का आरम्भ एक वर्ष के भारतीय सिविल सेवा के एक प्रशिक्षु अगस्त्य की पहली पोस्टिंग सह प्रशिक्षण जीवन से होती है। महाराष्ट्र के मदना ज़िले में उसकी बहाली होती है, जो देश की सबसे गरम जगह है। सामाजिक यथार्थ पर आधारित यह उपन्यास मुख्यत: भारतीय प्रशासन की निष्ठुर सच्चाई के साथ एक कल्याण राज्य (वेलफेयर स्टेट) की अवधारणा और व्यंग्य को हास्य की चाशनी में लपेट कर प्रस्तुत करता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा को लेकर हमेशा जो विरोधाभास रहा है उसे उपन्यास का नायक अपनी भूमिका से उजागर करता है। वह इसके व्यवस्था पक्ष से विमुख है परन्तु प्रमुख गतिविधियों में स्वयं को ढालने की कोशिश करता है। वह भारतीय प्रशासन तंत्र को चलाने वाले बाबू समुदाय में ख़ुद को स्थापित करने की पहल करता है। सबसे सर्वश्रेष्ठ समझी जानी वाली प्रशासनिक सेवा के कटु यथार्थ से लेखक ने रू-ब-रू कराया है। लेखक स्वयं एक प्रशासनिक अधिकारी रहा हैं इस कारण उन्होंने प्रशासनिक सच्चाई को बारीकी से उजागर किया है। किस प्रकार प्रशासनिक सेवा उत्तीर्ण कर सेवा में आनेवाले अधिकारी प्रोन्नति से आने वाले अधिकारियों को दोयम दरज़े का समझते हैं और उन्हें तरजीह नहीं देते। उच्च पद पर कार्य करने वाले अधिकारी दिग्भ्रमित रहते हैं और साथ ही, आज का नवयुवक ज़रा-सी कठिन परिस्थिति में अपना साहस छोड़

देता है। उनका सुविधापरक और विलासितापूर्ण जीवन की ओर झुकाव ज़्यादा होता है।

उपन्यास के नायक को प्रशासनिक सेवा से जुड़े होने के कारण देश की वास्तविकता का ज्ञान होता है कि स्वतंत्रता के चालीस साल बाद भी देश के गाँव में विकास के नाम पर टूटी-फूटी सड़कें हैं। नेता वोट बटोरने के चक्कर में विकास के नाम पर टीवी उपलब्ध कराने का दावा कर रहे हैं। परन्तु यह सब एक जुमला भर होता है। लेखक ने नकसलवाद जैसी गंम्भीर समस्याओं पर प्रकाश डाला है। आदिवासियों की स्थिति बद से बदतर होती चली गई है। उनकी भूमि को हथियाकर उस पर कारख़ाने तो खोले जा रहे हैं मगर उनको न ही उस भूमि का मुआवज़ा मिलता है और न ही काम। उनके अधिकारों और संस्कृति का हनन तो हो ही रहा है। साथ ही, बड़े-बड़े अधिकारियों द्वारा उनके घर की स्त्रियों की इज़्ज़त को तार तार किया जा रहा है। बलात्कार जैसी अमानवीय समस्या आज की नहीं हैं इसकी जड़ें हमेशा व्याप्त थी। इसलिए लेखक ने यह संकेत किया है की किस तरह विदेशी फिल्मों में भारत को बलात्कार की भूमि के बतौर दिखाया जाता है। लेखक ने नौकरशाही की कटु सच को प्रस्तुत किया है कि किस प्रकार ऐसे नौकरशाह अपने पद को फ़ायदा उठाकर अपने वैयक्तिक लाभों को पूरा करते हैं।

इस उपन्यास का मुख्य किरदार अगस्त्य प्रशासनिक सेवा छोड़कर शहर में रहकर किसी पत्रिका के लिए लेखन करना चाहता है। अगर यह उसका रुझान होता तो यह अलग बात होती लेकिन परिस्थिति से बचने के लिए वह यह विकल्पों की तलाश करता रहता है। उपन्यास का मुख्य पात्र बंगाली परिवार से सम्बद्ध है इसलिए उपन्यास में बंगाली संस्कृति और साथ ही शहरी परिवेश का वर्णन किया गया है। इसकी कथा मदना की टूटी सड़कों- जैसे अविकसित कस्बें और गँवई परिवेश के बरक्स दिल्ली की चकाचौंध भरे जीवन पर प्रकाश डालती है। लेखक ने आज के युवकों की जीवन शैली को जो जैज़ संगीत, सेक्स और नशे में डूबी है, उनकी विषम मानसिक स्थिति को बहुत ही मनोविश्लेषात्मक सोच के साथ उकेरा है। लेखक ने हास्य और व्यंग्य शैली का प्रयोग करके उपन्यास को बहुत ही रोचक

बना दिया है। इस उपन्यास ने समकालीन भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य में कथा, शैली और विचार के स्तरों पर एक नया स्थान बनाया है।

स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद परे पूर्वासर संबंध होता है। "दोनों का उद्देश्य वक्ता/ लेखक से श्रोता/ पाठक तक संदेश संप्रेषित करना है।"[1] अंतर यह है कि अनुवाद में यह संदेश दो भाषाओं से होकर संप्रेषित होता है। अत: अनुवाद-प्रकिया का कोई भी विश्लेषण संप्रेषण सिद्धांत के स्थापित मानदंडों की परिधि से ही हो सकता है। स्रोत भाषा के मूल पाठ का अर्थ ग्रहण करने के लिए अनुवादक सबसे पहले मूल पाठ का विश्लेषण ज्ञात या अज्ञात रूप से करता है। चूँकि मूल पाठ भाषाबद्ध होता है और उसके संदेश या मंतव्य का संप्रेषण लक्ष्य भाषा में भाषिक संरचना के माध्यम से करना पड़ता है, इसलिए नाइडा कहते हैं कि मूल पाठ के विश्लेषण के लिए भाषा सिद्धांत तथा उसमें अपनाई जाने वाली विश्लेषण तकनीक का उपयोग करना होता है। नाइडा का यह भी कथन है कि "हर भाषिक संरचना के दो स्तर होते हैं– एक अभ्यंतर और दूसरा बाह्य। अभ्यंतर संरचना का सबंध भाषा के सार्वभौम पक्ष से होता है, इसलिए इस स्तर पर निहित संदेश स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के लिए समान रूप से होता है।"[2] दूसरी ओर बाह्य स्तर की संरचना का संबंध भाषा-विशेष की विशिष्ट व्याकरणिक व्यवस्था के साथ होता है, जिससे गहन स्तर पर निहित समान संदेश को अभिव्यक्ति करने के लिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों अलग-अलग अभिव्यक्ति-प्रणालियों का प्रयोग करती हैं। इसी गहन स्तर पर निहित समानधर्मी संदेश से ही अनुवाद हो सकता है। इसलिए बाह्य स्तर पर अभिव्यक्ति की विभिन्न इकाइयों और आयामों अर्थात् ध्वनि-संयोजन, रूप-प्रकिया, शब्द-संस्कार, वाक्य-विन्यास, प्रोक्ति-संरचना आदि का विश्लेषण किया जाता है ताकि गहन स्तर पर उसके अर्थ का पता लगाया जा सके। इसके साथ ही अनुवाद से विषय-वस्तु के ज्ञान की भी अपेक्षा रहती है, जिससे अर्थ-ग्रहण करते हुए विभिन्न विषयों और कार्य क्षेत्रों की संकल्पना भी स्पष्ट हो सके।

---

[1] डॉ. नगेन्द्र, *अनुवाद विज्ञान सिद्धांत और अनुप्रयोग*, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, पृ.100

[2] गोस्वामी, कुमार, कृष्ण, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, 2008, पृ.39

भाषा स्तर पर भाषिक अभिव्यक्तियों के विश्लेषण के आधार पर मूल पाठ के अर्थ को पूर्ण रूप से ग्रहण करने का प्रयास किया है। स्रोत भाषा का विश्लेषण करते हुए उसकी व्याकरणिक संरचना को सरल और स्पष्ट रूपों में देखा गया है। कुछ संरचनाएँ आधारभूत होती हैं और कुछ रूपांतारित या व्युत्पन्न। इनमें मूल वाक्यों, उपवाक्यों, पदबंधों, पदों या शब्दों आदि पर ध्यान दिया। वाक्यों को आधार वाक्य और उसके संयोजन के संदर्भ में देखा गया है। यदि कोई संयुक्त वाक्य या मिश्र वाक्य दो या दो से अधिक उपवाक्यों का बना है, तो उस वाक्य की मूल संरचना और विस्तार संरचना पर विचार किया है। उदाहरण के लिए:–

The man, who killed the dog, is sitting on tree.
इस वाक्य का आधार वाक्य है– क. The man is sitting on the tree.
और विस्तारक वाक्य है– ख. Who killed the dog.

वास्तव में विस्तारक वाक्य (ख) का कर्ता who आधार वाक्य का ही The man है, लेकिन इन दोनों वाक्यों के संयोजित हो जाने के कारण विस्तारक वाक्य में the man के स्थान पर 'who' का रूपांतरण संबंधवाचक संरचना में हुआ है, जिससे मिश्र वाक्य बना है। इस प्रकार वाक्यों के विश्लेषण से अर्थ प्राप्त करने में आसानी होती है। यह विश्लेषण न केवल पाठ के कोशगत अर्थ या संकेतार्थ तक सीमित रहता है, बल्कि इसमें संरचनात्मक अर्थ, सामाजिक अर्थ, लक्षणापरक अर्थ पर भी विचार किया। उदाहरण के लिए ;

1. It is a fox.
2. He is a fox.
3. She will fox him.

उपर्युक्त दो वाक्यों अर्थात् वाक्य (1) और वाक्य (2) में fox शब्द का प्रयोग 'संज्ञा' (क) रूप में हुआ है और वाक्य(3) में fox शब्द का प्रयोग 'क्रिया' के रूप में हुआ है। वाक्य (1) में fox का प्रतिनिधित्व करने के लिए It सर्वनाम का प्रयोग हुआ है। It सर्वनाम का प्रयोग अप्राणिवाचक अथवा मानवेतर प्राणिवाचक के लिए होता है। अत: यह fox पशु का संकेतार्थ या कोशगत अर्थ का प्रयोग हिन्दी में

जंगली पशु 'लोमड़ी' के लिए होगा, किंतु वाक्य (2) में He अन्य पुरुष सर्वनाम का जो प्रयोग हुआ है, वह पुरुषवाचक मानव के लिए होता है। यहाँ fox शब्द का प्रयोग संज्ञा के रूप में न होकर क्रिया के रूप में हुआ है। संकेतार्थ एक होते हुए भी प्रकार्य की भिन्नता के कारण संकेतार्थ 'पशु' और 'धूर्त' धूमिल हो जाएगा और क्रिया के रूप में संरचनात्मक दृष्टि से इसका लक्षणापरक अर्थ 'धोखा देना' होगा।

इस प्रकार भाषा की मूल संरचना में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनका अर्थ-ग्रहण वाक्य के प्रकार्य द्वारा निर्धारित होता है। ये शब्द कभी संज्ञा, कभी क्रिया और कभी विश्लेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। एक अन्य उदाहरण द्रष्टव्य है।

1. There is stone lying on the road.
2. Now days, the students stone their teacher.
3. He is stone deaf.

उपर्युक्त तीनों वाक्यों में stone क्रमश: संज्ञा, क्रिया और विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। वाक्य (1) में stone 'पत्थर' वस्तु का द्योतक है, वाक्य (2) में 'पत्थर मारना' घटना का और वाक्य (3) में अमूर्त रूप अर्थात् पूर्णता या नितांत अर्थ का द्योतक है। stone के इन तीनों रूपों के संकेतार्थ परस्पर मिलते-जलते हैं, किन्तु प्रकार्य की भिन्नता के कारण वे न केवल उनके संरचनात्मक अर्थ को भिन्न रूप में द्योतक करते हैं, बल्कि अपने लाक्षणिकता और व्यंजनात्मक अर्थ में भी भिन्नता लाते हैं। एक अन्य शब्द 'chair' की संकेतित वस्तु तो एक ही है, किंतु प्रकार्य की भिन्नता के कारण इनके संकेतार्थ अलग-अलग हो गए हैं; जैसे-

1. He bought a chair at the furniture shop. (कुर्सी)
2. He was condemned to the electric chair.(फांसी की सज़ा)
3. Please address the chair(अध्यक्ष महोदय)
4. He will chair the meeting .(अध्यक्षता करना)
5. He was appointed to the Mrs Shrivastava in Madna in Kolkata University.(अध्ययन पीठ)

इसी प्रकार्यात्मक भिन्नता के कारण कई शब्द अनेकार्थी और संदिग्धार्थी हो जाते हैं। अत: विश्लेषण करते हुए ऐसे अनेकार्थी शब्दों के प्रकार्यों को पहचानना और संदर्भपरक अर्थ देना अनावश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए; My Father (पिता)(53), Father Grib (पादरी), The Heavenly Father(ईश्वर), The Holy Father (पोप), Father of the nation (राष्ट्रनिर्माता, राष्ट्रपिता)(87), Father of invention(अविष्कारक), our fathers in Haven (पूर्वज), the wish is father to the thought(जननी), the child is the father of the man(प्रवृत्तियों का निर्धारण)

भाषा सामाजिक संस्कार का बोध भी कराती है। भाषिक परिवेश का संदर्भ सामाजिकता-सांस्कृतिक स्थिति के साथ रहता है। इसमें संप्रेष्य कथ्य का संबंध भाषिक अभिव्यक्ति के प्रयोग या व्यवहार से जुड़ा होता है। इससे सामाजिक शैली का जन्म होता है और इससे जो अतिरिक्ति अर्थ व्यंजित होता है, वह सामाजिक अर्थ भी माना जा सकता है। उदाहरण के लिए, 'तू, तुम और आप' मध्यम पुरुष सर्वनाम भाषा में सामाजिक संबंधों का परिचय देते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसी अभिव्यक्तियाँ भी मिलती हैं, जिनका कोशगत अर्थ और संरचनात्मक अर्थ जिस कथ्य का बोध कराता है, उससे भिन्न उसका सामाजिक और सांस्कृतिक अर्थ। गंगा में मात्र स्नान करना नहीं है। इसके कई सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ निकलते हैं;जैसे– 'पवित्र डुबकी' (holy dip), 'पाप धोने के लिए गंगा में नहाना' (to bath in the ganges to wash away the sins), 'बेटी के विवाह के बाद मुक्त हो जाना या मुक्ति महसूस करना' (to be relieved or to feel relieved after the marriage of the daughter).

भाषिक अभिव्यक्तियों के संकेतार्थ का कोशगत अर्थ में अतिरिक्त भाषा में ऐसे अर्थ की व्यंजना भी मिलती है, जिसका समाहार मूल अर्थ में नहीं हो सकता। यह लक्षणापरक अर्थ भाषिक संरचना और वक्ता की मानसिक स्थिति के संबंध पर बल देता है। उदाहरण के लिए; 'उसका बाप पत्थर दिल है' वाक्य में 'पत्थर दिल' का कोशगत अर्थ संभव नहीं है, क्योंकि पत्थर तो एक ठोस वस्तु है। यहाँ 'दिल' के साथ पत्थर का योग हो जाने से लक्षणापरक अर्थ पर जाना होगा – 'अत्याचारी' या 'कठोर दिल'। इसी प्रकार 'रमेश तो भेड़िया है', लेकिन 'रमा गाय है'- जैसे वाक्यों में

भेड़िए का नाम रमेश नहीं है और न ही गाय का नाम रमा है। यहाँ भेड़िया का लक्षणार्थ ज़ालिम व्यक्ति से है और गाय का लक्षणार्थ 'भोली-भाली' या 'साधी-सादी' लड़की से है।

विश्लेषण का लक्ष्य मात्र वाक्य संरचना या विषयवस्तु को समझना नहीं है, बल्कि पाठ में अंतर्भुक्त अर्थ ग्रहण करना भी है। कई बार वाक्य में अर्थ का बोधन नहीं होता, इससे वाक्य से ऊपर की संरचना पर जाना पड़ता है। इसमें दो या दो से अधिक वाक्यों में परस्पर संयोजन होता, जो अपेक्षित अर्थ की प्राप्ति में सहायक होता है। व्याकरणिक और अर्थपरक दृष्टि से इस अंतरवाक्यीय अथवा वाक्योपरि संरचना को प्रोक्ति भी कहते हैं। यह वाक्योपरि स्तर संसक्तिपूर्ण, संदर्भपरक और तर्कपूर्ण होता है। इसमें भाषिक रूपों और संप्रेषणपरक प्रकार्यों के बीच साम्य बना रहता है। कई बार अनेकार्थी, संदिग्धार्थी अथवा पर्यायवाची संरचनाएँ मिल जाती हैं, जिनके अर्थ का विशिष्टीकरण संदर्भ से ही हो पाता है। उदाहरण के लिए:

1. आज मुझे सोना महँगा पड़ा।

इस वाक्य में सोना शब्द स्वर्ण तथा निंद्रा में शब्द स्तर पर सोना शब्द संदिग्धार्थी है। इसमें 'सोना ' शब्द स्वर्ण अथवा निद्रा दोनों अर्थ दे रहा है।

इस प्रकार हर भाषा में अनेक संदिग्धार्थी वाक्य होते हैं। इन संदिग्धार्थी वाक्यों का अर्थ तभी स्पष्ट होता है, जब भाषा की विभिन्न इकाइयों अर्थात् शब्दों, पदों, पदबंधों, उपवाक्यों, वाक्यों आदि में अंत:संबंध और परस्पर संयोजन होता है और वे अपने-आप में एक संपूर्ण इकाई का रूप धारण कर लेते हैं। इन पूर्ण इकाइयों से अपेक्षित अर्थ ग्रहण किया जाता है। इसलिए अनुवादक को न केवल भाषिक ज्ञान तक सामीत रहना पड़ता है, बल्कि भाषा की अर्थ-व्यवस्था और अर्थ-क्षेत्र पर भी सजग दृष्टि रखनी पड़ती है।

इस सूचना शक्ति की भिन्नता के कारण हम जब भी अनुवाद करते हैं तो उसमें वाक्यों और शब्दों के अलावा संदर्भ का पता होना बहुत आवश्यक है। *इंग्लिश ऑगस्त* उपन्यास में भाषा के विभिन्न स्तर है, जो सर्वथा पात्रोचित हैं। उपन्यास की भाषा में मुहावरे, लोकोक्ति, गीत, कविताएँ और गालियों का प्रयोग किया गया

है। साथ ही, हिन्दी के आंचलिक शब्दों को और संबोधनात्मक शब्दों का प्रयोग ज्यों का त्यों किया है। भाषा में प्रवाह विद्यमान है। विषय को रुचिकर बनाने के लिए व्यंग्य और उपहास का प्रयोग किया गया है।

अगर आरम्भ से देखा जाए तो शीर्षक *इंग्लिश ऑगस्त- एन एंडियन स्टोरी* ही उपन्यास कथा के सार को बयान करता है कि कथा का नायक किस प्रकार पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित है। या उस पीढ़ी के युवा का उदाहरण है, जिसके जीवन और सोच पर पाश्चात्य समाज और संस्कृति ने बहुत तेज़ी से और गहरा प्रभाव छोड़ा है। स्वयं को 'कूल' लगने के लिए स्वयं के नाम पर पाश्चात्य का अमली जामा पहनाने की होड़ में से एक है। नायक का नाम अगस्त्य है परन्तु उसके मित्र उसे अगस्त नाम से पुकारते हैं। उस पर पाश्चात्य का प्रभाव भाषा के प्रभाव से प्रस्तुत किया है। इस लिए शीर्षक से स्पष्ट हो जाता है कि पात्र 'इंग्लिश कूल कल्चर' से प्रभावित है परंतु उपन्यास एक भारतीय कथानक को समेटे हुए है।

अनुवादक जब किसी का लक्ष्य भाषा (यहाँ हिन्दी में) जिस भाषा में अनुवाद कर रहा है, यदि उसको बोलनेवाला समाज मूल रचना के वातावरण, देशकाल और समाज से परिचित हैं तो अनुवादक का काम अपेक्षाकृत सरल हो जाता है। परंतु रचना का देश-काल या वातावरण सभी उसके लिए नवीन हो तो अनुवादक का दायित्व काफ़ी कठिन हो जाता है। उसके दो काम हो जाते है– पहला पाठक को मूल वातावरण सभी से परिचित कराना और दूसरा उसके देश काल एवं पात्र से तारतम्य स्थापित कराना। प्रस्तुत उपन्यास भारतीय परिवेश से सम्बद्ध है अत: वातावरण को रचना आसान हो जाता है। कथा मदना ज़िले की टूटी सड़कों, गलियों कूचों से होकर कलेक्टरेट की इमारतों में चलने वाली बहसों, नीतियों, योजनाओं, गाँववासियों की समस्याओं, बहसमुबाहसों से आदिवासियों के पिछड़े अधिकारहीन अस्तित्वों तक जाती हैं जो कि भारतीयता को समेटे हैं। यह एक भारतीय कथा है अत: वातावरण को हिन्दी भाषा में उकेरना दुष्कर नहीं है। इसलिए संबंधित परवेश से पाठकों को परिचत कराने के लिए न तो पहले कोई भूमिका देने की आवश्यकता है, न ही बड़ी-बड़ी टिप्पणियों की। अनूदित पाठ के सहारे ही सटीकता सुनिश्चित

करनी है। कुछ विशिष्ट संदर्भों को स्पष्ट करने के लिए संक्षिप्त पाद-टिप्पणी ज़रूर देने की आवश्यकता हुई है। लेकिन यह टिप्पणी लंबी और अधिक न हो, इसका ध्यान रखा है। क्योंकि इससे पाठक की ज्ञानवृद्धि भले हो जाती है परन्तु रचना की पठनीयता के साथ तादात्म्य स्थापित करने में बाधा आती है। अनुवादक के पास साधन होता है उसका सामर्थ्य- और न्यूनतम एवं निकटतम शब्दावली की सहायता से भाषान्तरण और उसका साध्य होता है– मूल के संपूर्ण चित्रण से तादात्म्य स्थापित कराना, जिसका अनूदित पाठ में मुख्य रूप से, ख़याल रखा गया है।

पात्र उपन्यास की कथा को अपने कंधों पर शुरू से अंत तक लेकर चलता है। कथानक से संबद्ध समाज और भाषा को प्रस्तुत करने का पात्र ही एक महत्वपूर्ण माध्यम है। स्थानीयता को पात्र के माध्यम से ही पाठक तक पहुँचाया जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने पात्रों के माध्यम से कथानक की बारीकियों को प्रस्तुत किया है। उपन्यास का मुख्य पात्र अगस्त्य है, जो शहरी परिवेश से संबद्ध शिक्षित युवक है। उसकी जीवन शैली में अंग्रेज़ी साहित्य, पाश्चात्य संगीत और पाश्चात्य पहनावे से जुड़ी हुई है तथा जिस पर उपन्यास कथानक घूमता रहता है। जैसे ही वह अपनी प्रशासनिक प्रशिक्षण के लिए शहर से ग्रामीण परिवेश की ओर बढ़ता है वैसे ही उसे ग्रामीण पात्रों से जुड़ना पड़ता है। चूँकि वह शिक्षित वर्ग का है और साथ ही नौकरशाही जमात से संबद्ध है इसलिए उसके सहकर्मी भी शिक्षित समाज से हैं। इसके पद की कार्य प्रणाली के कारण वह क्षेत्रीय लोगो के सम्पर्क में आता है। इसलिए लेखक ने जहाँ एक ओर शहरी परिवेश से संबद्ध शिक्षित और समृद्ध वर्ग के पात्रों जैसे– अगस्त्य, ध्रुव, श्रीवास्तव, साठे, मैनन, नीरा, रोहिणी आदि की पात्रता को साकार किया हैं वहीं दूसरी ओर मदना के ग्रामीण और निम्न वर्ग से संबद्ध पात्रों जैसे वसंत, चपरासी, करंत, पारा की भूमिका को जीवंत रखा है। अंग्रेज़ी भाषा में क्षेत्रीयता मात्र रहन सहन या परिवेश का विवरण मात्र से ही प्रस्तुत की जा सकती है परन्तु हिन्दी भाषा में क्षेत्रीयता और वर्ग, भाषा से साकार कर सकते हैं क्योंकि समृद्ध वर्ग, निम्न वर्ग, ग्रामीण परिवेश, शहरी परिवेश विशेष और धर्म से संबद्ध वर्ग की सम्पर्क या संवाद की भाषा में अन्तर होता है। विभिन्न सामाजिक श्रेणियों के पात्रों को साकार करने और उपन्यास में जीवंतता

और धारा प्रवाह लाने के लिए अनुवाद में इसका विशेष ध्यान रखा गया गया है। जब एक पात्र अपने नौकर से बात करता है तो उसका अपने सहकर्मी से बात करने से उस नौकर से बात करने में भिन्नता होती है जिससे परस्पर सम्बंधों की उपयोगिता का पता चलता है। कलक्टर श्रीवास्तव अपने नौकर गोपू को कभी 'आप' करके नहीं बोलेगा वह 'तू' या 'तुम' करके ही उसे संबोधित करेगा। लेकिन यह भेद अंग्रेज़ी भाषा में नहीं उत्पन्न कर सकते। अनुवाद के दौरान हिन्दी भाषा में सहज ही उत्पन्न कर सकते हैं। साथ ही, अपशब्दों का प्रयोग और लहज़ा भी यह विभेद को पैदा करता है। पात्रों का पहनावा भी उनके स्वरूप और सामाजिक स्तर का बोध कराता है उपन्यास में यह संबंद्ध पात्रों की पात्रता को उकेरने के लिए किया गया है इसलिए यथाप्रसंग उसका अनुवाद करने में शब्दानुवाद का सहारा लिया गया है।

कोई भी कृति शब्द का संसार होती है। वह शब्द कृति में प्रस्तुत समाज, उस समाज की बोली-बानी को, उसकी व्यावसायिकता, आंचलिकता आदि को मूर्त रूप देते हैं। प्रस्तुत कृति एक युवक की है, जो आईएएस अधिकारी है और महाराष्ट्र के मदना ज़िले में प्रशिक्षण के लिए गया हुआ है। इस कारण उपन्यास में प्रशासनिक शब्दावली का प्रयोग हुआ है। चूँकि यह युवक एक अभिजात बंगाली परिवार से है और दिल्ली जैसे शहरी परिवेश से सम्बद्ध है तो लेखक ने उन शब्दावलियों का प्रयोग मूल कृति में कर के वास्तविकता का संचार किया है। इसी वास्तविकता की अपेक्षा अनूदित कृति से भी की जाती है। जैसे कि प्रशासनिक शब्दों में पदों के नाम जैसे– Collector(15), Deputy Collectors (13), Assistant Collector (17), Engineers (4), District Magistrate (9), Superintendent of Police (11), Supply Officer (15), Block Development Officer (17) आदि का अनुवाद प्रशासनिक शब्दवाली से किया गया जो मानक पदनाम हैं। लेकिन दूसरी ओर लेखक ने पद के हिन्दी रूप का प्रयोग किया है जो कि प्रचलित मानक हैं जैसे– Tehsildar, Naib tehsildar, sabhapati Taluka, tahsil, chowkidar, ayah आदि पदनाम– जिनका मात्र लिप्यांतरण किया गया है।

उपन्यास का पूरा कथानक जिन स्थानों पर रचा गया वह पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र के आंतरिक इलाके जैसे– मदना, रामेरी, जोमपन्ना, कोलतंगा और दिल्ली

आदि हैं– जिनका मात्र लिप्यांतरण ही करना था। इसलिए कथा वस्तु की वास्तविकता तथा मार्मिकता का उजागर इन स्थानों के नाम मात्र से हो जाता है क्योंकि ये सभी स्थान काल्पनिक नहीं, वास्तविक हैं। लेखक ने पेरिस, अमेरिका आदि स्थानों के नामों का भी प्रयोग किया परन्तु कथानक उन देशों में नहीं गढ़ा गया मात्र संवाद में प्रयुक्त जिनके लिप्यांतरण मात्र से काम चल जाता है।

कथा का पात्रों के नाम पर बहुत प्रभाव पड़ता है। वस्तुत: पात्र के नाम से स्थान के साथ परिवेश का भी अनुमान लगाया जा सकता है। हर भाषा के अपना शब्द संसार होता है। अंग्रेज़ी भाषा से संबंध समाज के नाम भारतीय समाज के नाम से भिन्नता होगी, जैसे– Richard Avery (211), John (206) आदि नाम जहाँ पाश्चात्य समाज से संबद्ध है वहीं अगस्त्य, नीरा, गोविन्द साठे, मधुसूदन सेन, शंकर, रोहिणी आदि नाम भारतीय संसार से। कथानक की माँग के अनुसार भारतीय नाम और पाश्चात्य का प्रयोग किया गया है जिनका मात्र लिप्यांतरण करना रहा, जिससे मौलिकता बनी रहे। कुछ नाम ऐसे भी होते है जिनको प्यार से घर के बड़े लोग या दोस्त बुलाते हैं तथा उस नाम से कोई-न-कोई क़िस्सा या घटना जुड़ी होती है। ऐसे कई नाम उपन्यास में पात्रों के हैं तथा लेखक ने उससे संबद्ध कहानी भी उल्लिखित की है जैसे ओगु (अगस्त्य), पलटूकाकु (पार्थिव सेन), टॉनिक आदि।

अपशब्द और फूहड़ शब्दों के साथ दुर्वचन का प्रयोग भी स्रोत भाषा में काफ़ी किया गया है। अपशब्दों या गालियों का बेबाकी से प्रयोग संबद्ध भाषा के समाज के बेबाकीपन का संकेत करता है। हर एक परिवेश, वर्ग, धर्म की अपनी सीमाएँ होती हैं और साथ ही बेबाकीपन की भी। यह बेबाकीपन संबद्ध पात्रों की मानसिकता और प्रसंगों के माध्यम से भी सामने आता है। यह बेबाकीपन परिस्थिति पर भी निर्धारित होता है। कोई पिता या भाई अपनी पुत्री या बहन के सामने अपशब्दों का प्रयोग करने से बचेगा लेकिन चाहे वह कितना भी सभ्य हो या कितना भी शिक्षित हो, अपने दोस्तों और संगियों के साथ बात करने में बेबाकी से ही पेश आएगा। यह बेबाकीपन को लक्षित पाठ में उकेरना चुनौतीपूर्ण होता हैं क्योंकि अंग्रेज़ी भाषा में अपशब्द का प्रयोग बेहद सहज और सामान्य रूप से होता

है तथा वर्ग भेद या कोई सामाजिक भेद नहीं उत्पन्न करता। लेकिन हिन्दी भाषा में ऐसा नहीं है। हिन्दी में अपशब्द या अपनी भावनाओं को बेबाकी से प्रस्तुत करने पर सामाजिक परिवेश का अत्यधिक प्रभाव दिखायी देता है तथा जो वर्गों को विभाजित कर देता है। हिन्दी समाज में शिक्षित समाज, अभिजात्य समाज के पुरुष, स्त्रियों के अपशब्दों के प्रयोग को अभद्र मानते हैं। यही भेद इस अपशब्दों के माध्यम से गढ़ा जा सकता है और पात्रों में भाषा के माध्यम से विभिन्न पात्रों का संसार रचा जाता हैं। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने अपशब्दों का प्रयोग बहुत अधिक किया है जैसे– Fucked, Mongrelness (1), Fucker, Mother Fucker (38), Bastard (58)। जिसका समतुल्यता सिद्धांत के आधार पर अनुवाद किया गया है। चूँकि कथानक भारतीय है, अत: लेखक ने स्थानीयता तथा वास्तविकता का संचार करने के लिए हिन्दी के कई शब्दों का प्रयोग ज्यों का त्यों किया है, जैसे– Hazar fucked।

अगर किसी समाज की झलक किसी भाषा में देखनी है तो वह मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग द्वारा दिखायी देता है। हर समाज के अपने मुहावरे और लोकोक्तियाँ होती हैं। इन मुहावरों और लोकोक्तियों का यथोचित एवं सटीक अनुवाद दूसरी भाषा में करना भागीरथी प्रयत्न होता है क्योंकि हर समाज एक दूसरे के समाज से स्वभावत: भिन्न होता है। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में व्यंजकता लाने के लिए मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। सामान्य शब्दावली के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति की तुलना में मुहावरे और लोकोक्तियों के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति जितनी अधिक संश्लिष्ट, प्रभावशाली तथा व्यंजक होती है, उसका अनुवाद भी उतना ही कठिन होता है। अनुवाद करते समय स्रोत भाषा में उस मुहावरे के शब्द तथा अर्थ दोनों ही दृष्टियों से सामान मुहावरे की खोज की दिशा में होती है। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में कुछ मुहावरे ऐसे भी मिल सकते हैं, जिनमें शब्द और अर्थ (या भाव) दोनों की समानता होती है। यह सामानता कई कारणों से हो सकती है। इसका प्रमुख कारण है एक भाषा का दूसरे भाषा पर प्रभाव। अंग्रेज़ी भाषा, ने अन्य क्षेत्रों की भाँति मुहावरों के क्षेत्र में हिन्दी भाषा को प्रभावित किया है। अत: यह स्वाभाविक है कि दोनों भाषाओं में ऐसे आमतौर पर

अनेक मुहावरे प्रयुक्त हैं, जो शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियों से समान हैं और कई ऐसे हैं जो अलग हैं। जैसे–

Action was better than inaction (136)

कुछ न करने से अच्छा था कुछ न कुछ करना।

Seize the Day (69)

दिन के सभी अवसरों का लाभ अठाओ।

Skeletons in his cupboard (43)

घर का भेदी लंका ढाए।

Into some coherent whole (118)

एक ही थाली के चट्टे बट्टे।

a second string to your bow (9)

मुसीबत की घड़ी के लिए हुनर सीखना

Down our throats (236)

हमारे मत्थे पड़ना।

From washing your arse to dying (38)

चूतड़ धोना सीखने से लेकर मरने तक

Hyperboles of love (236)

प्यार का बखान करना

इस प्रकार स्रोत भाषा के मुहावरों का लक्ष्य भाषा में अनुवाद करने का प्रयास किया है ताकि भाषा में व्यंजकता और स्थानीयता का पुट बना रहे।

लेखक ने उपन्यास में विस्मयादिबोधक शब्दों का अत्यधिक प्रयोग किया है। ध्वनियों के माध्यम से उपन्यास में एक जीवन्तता-सी आ गई है। पात्रों की भूमिका में जान डालने के लिए यह एक उपयोगी उपकरण है। पात्रों के भाव मात्र इन ध्वनियों के माध्यम से प्रस्तुत हो जाते हैं बिना किसी भारी शब्द के प्रयोग करने से। ऐसे पाठ-प्रसंग को पढ़ने पर लगता है मानों कोई पात्र आपके समक्ष स्वयं बोल रहा है और एक फ़िल्म चल रही है, जिससे उपन्यास में वास्तविकता-सी आ गई है। इस कारण से लेखक द्वारा रचित पात्रों को आत्मसात कर पाते हैं जैसे –

Arey, I shall be honoured bhai, honoured! (41)

Arey, any time, yes, of course, come now! (41)

Hahn-Sen come in! (41)

Oops, thought Agastya! (39)

Uh... Cambridge. Massachusetts! (39)

उपर्युक्त वाक्यों से लगता है कोई आपके समक्ष बोल रहा है और आप एक पात्र के भावों की रूपरेखा बना लेते हैं। ऐसे ही बहुत सारे विस्मयादिबोधक शब्दों का उपन्यास में प्रयोग किया गया है जैसे- uh (1), uh-uh (1), Chhee-chhee,cheee (98), Hahn (22), Phew (21), Oof (30), Ahhh (31), Oho (29) आदि। ऐसे वाक्यांशों की जीवन्तता बनाने कि लिए भी अनुवाद में पूर्णत: ख़याल रखा गया है।

उपन्यास में मुख्य पात्र अगस्त्य अंग्रेज़ी साहित्य से स्नातकोत्तर है। साहित्य से संबद्ध होने के कारण लेखक ने अंग्रेज़ी साहित्य को कथानक में बहुत प्रयोग किया। उपन्यास में मुख्यत: पात्र शिक्षित समाज से संबद्ध हैं इसलिए लेखक ने वास्तविकता का संचार करने के लिए धार्मिक किताबें जैसे- Bhagavad Gita (82) का प्रयोग किया। वहीं दूसरी ओर अंग्रेज़ी साहित्य की लेखकों और किताबों ज़िक्र भी किया है। अंग्रेज़ी लेखक जैसे–Ab salom, Achilophel (14), Jarrett (27), Ruth Prawar Jhabvala (39), Marcus Aurelius (69)आदि तथा किताबें जैसे– *Hamlet* (60), *Meditations*, *Heat and dust* (39) आदि। लेखक कभी-कभी एक पात्र दूसरे पात्र को कोई बात समझाने के लिए महान लेखकों की प्रसिद्ध

पंक्तियों का सहारा लेता है जिससे पात्र की बौद्धिकता ज़ाहिर होती है और उस बात का मूल्य भी बढ़ जाता और ज्ञान का अर्जन भी होता है। धार्मिक ग्रंथ की भी पंक्तियों से पात्र की मनस्थिति और दुविधा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, जैसे–

> 'The mind is restless, Krishna, impetuous, self-willed, hard to train: to master the mind seems as difficult as to master the mighty winds.'
> 'The mind is indeed restless, Arjun: it is indeed hard to train. But by constant practice and by Freedom from passions the mind in truth can be trained.' (84)

> 'मन बहुत बेचैन है कृष्ण, अविवेकी और मनमौजी भी, इस पर लगाम लगाना मुश्किल है: मस्तिष्क को वशीभूत करना उतना ही मुश्किल है जितना शक्तिशाली हवाओं को वशीभूत करना।'
> 'मन वस्तुत: बेचैन होता है, अर्जुन : इस पर अंकुश लगाना कठिन है। मगर लगातार अभ्यास करते रहो और वासना से मुक्त होते रहो, तो सचमुच मन पर अंकुश लगाया जा सकता है।'

उपन्यास में लेखक ने गीतों का भी प्रयोग किया है। यह प्रयोग मात्र वातावरण के निर्माण करने के साथ-साथ रस उत्पन्न के लिए भी किया गया है। लेखक ने जहाँ एक तरफ़ ठुमरी (thumri (47)), ग़ज़ल (Ghazal) (62), बोलीवुड के डिस्को गीत का ज़िक्र किया है वहीं दूसरी तरफ़ पाश्चात्य संगीत में Scott Joplin और Keith Jarrett का भी। लेखक ने कहीं बंगाल के कवि नज़रुल इस्लाम (Nazrul Islam, 72) तो कहीं Vivaldi के संगीत, का ज़िक्र किया है। संगीत के स्वाद की विभिन्नता के माध्यम से लेखक ने शहरी और ग्रामीण परिवेश के प्रभाव को प्रस्तुत किया है। किस प्रकार किसी गाँव में रात में किसी चाय के खोके या गन्ने के रस के खोके से रेडियो पर कोई फ़िल्मी गीत सुनाई पड़ता है। यह गीत उस समय विशेष का भी संकेत करता है, जिस पर वह कथा चल रही है, और साथ ही उस

भाषा से संबद्ध समाज की जीवन शैली और संस्कृति का भी। क्योंकि हर संस्कृति का अपना इतिहास और देशकाल होता है। कथा को वास्तविकता से जोड़ने के लिए लेखक तात्कालिक कला का प्रयोग किया है। लेखक ने जहां हिन्दी गीतों और कविताओं के साथ अंग्रेज़ी के महान शेक्सपीयर कवि की कविताओं का भी उल्लेख किया है, जो कथा को पाठक से जोड़ता है। हिन्दी गीत जैसे–

The night is alone
The lamps are dimmed
Come closer my love
Into my arms(232)

रात अंधेरी है
बुझ गए दिए
आके मेरे पास
बाँहों में मेरी

Allow me to stay
In the shadow of your eyelashes(268) का

मुझे पलकों की छाँव मे रहने दो

You do not disappoint me, life
You astound me(252) का

तुझसे से नाराज़ नहीं ज़िन्दगी
हैरान हूँ मैं।

लेखक ने उपन्यास में बंगाली संस्कृति से संबद्ध नायक को रचा है। जो उसी का प्रतिरूप है तथा उस पात्र से संबद्ध वातावरण को रचने के लिए बंगाल की सुप्रसिद्ध दिग्गज रवीन्द्रनाथ के गीतों का भी प्रयोग किया है जैसे–

With the death of the day, a red bud burgeons within me
It shall blossom into love.(150)

दिन की समाप्ति के साथ, मेरे भीतर एक लाल कली पनपती है
जिसे प्रेम में खिल जाना चाहिए।

उपर्युक्त गीतों के भाव को बनाने के लिए तथा लक्ष्य भाषा से संबद्ध समाज में व्याप्त गीतों का विकल्प का सहारा लेकर समतुल्यता सिद्धान्त के माध्यम से अनुवाद किया गया है। यह जो अनूदित कृति में स्थानीयता और वास्तविकता का संचार करने में सहायक हुई है।

लेखक ने मदना जैसे ज़िले में किसी अधिकारियों के रात्रिभोज में ठुमरी से वातावरण को मूर्त करने की कोशिश की है, जिसके अनुवाद में सावधानी बरती गई है। जैसे-

The pearl has fallen from your nose-ring, my beloved.(189)
गिर गया तुम्हारी लौंग का मोती, मेरी सजनी।'

इसी प्रकार लेखक ने शेक्सीपियर के *मैकबेथ* की कुछ पंक्तियों से अन्तर संवाद किया है–

–The innocent sleep,
Sleep that knits up the ravell'd sleave of care,
The death of each day's life, sore labour's bath,
Balm of hurt minds, great nature's second course,
Chief nourisher in life's feast,
- Shakespeare, Machbeth

वो आंतरिक शान्ति की नींद
बाँहों में लिपटा वह चैन भरा प्रेम
जो दिन को थपकी दे कर सुलाता है
अशांत मन को लोरियाँ सुनाता है
प्रकृति का सबसे संपूर्ण उपहार।

उक्त अनुवाद द्वारा अनूदित कृति में रस-बोध को बनाए रखने का प्रयास किया गया है। जो गीत मूलत: हिन्दी के हैं, उनका अनुवाद करने में सहजता हुई। अनुवाद के दौरान कहीं तथा समतुल्यता सिद्धांत का सहारा लिया, तो कहीं भावानुवाद का तो कहीं शब्दानुवाद का।

वैश्वीकरण के कारण अंग्रेज़ी एक वैश्विक भाषा के रूप में उभर कर आयी है। इस कारण इसका प्रभाव सामान्य जीवन की शब्दावली भी पर पड़ा है। अब यह मात्र शिक्षित वर्ग तक ही सीमित नहीं रह गई है। अब सामान्य बोलचाल में अनेक अंग्रेज़ी के शब्द ज्यों के त्यों आम बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त किए जाते हैं, वह चाहे शिक्षित वर्ग हो या अशिक्षित वर्ग। वह शहरी परिवेश हो या ग्रामीण परिवेश का। भले ही वह उच्च वर्ग या निम्न वर्ग से सम्बंध रखता हो। मात्र उच्चारण के स्तर पर ही भिन्नता ही मिलती है। हिन्दी अनुवाद में मूल पाठ और पात्रों की जीवंतता और स्वाभाविकता बनाने के प्रयास में कई शब्दों का लिप्यांतरण किया है।

भाषा, शैली, लहजा, मुहावरे आदि के आधार पर कह सकते हैं कि लेखक ने उपन्यास में हिन्दी भाषा और अंग्रेजी भाषा के दोनों संसार को साथ में रचा है। उन्होंने वातावरण और पात्रों को मूर्त बनाने के लिए संबद्ध संस्कृति और परिवेश का भरपूर प्रयोग किया है। उनको चाहे इसके लिए बॉलीवुड गीतों का सहारा लेना पड़ा हो या फिर पाश्चात्य संगीत का। वह भाषा में मुहावरों के माध्यम से स्थानीयता का प्रामाणिक संचार करते हैं। लेखक ने व्यंग्य और उपहास का प्रयोग किया हैं, जिसमें पर्याप्त व्यंजकता विद्यमान है। उसी व्यंजकता एवं रोचकता को बनाए रखने का पूर्ण प्रयास अनूदित कृति में भी करने की कोशिश की गई है।

चौथा अध्याय

‘इंग्लिश ऑगस्त’ के हिंदी अनुवाद पक्षों का सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

चौथा अध्याय

‘इंग्लिश ऑगस्त’ के हिंदी अनुवाद पक्षों का सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

दो भाषाओं की प्रकृति सर्वथा एक-सी नहीं होती, न बोलनेवालों की मानसिकता सदा समान होती है और न ही सांस्कृतिक परम्पराएँ परस्पर मेल खाती हैं। इसलिए अनुवादक को स्रोत भाषा के साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक परिवेश को लक्ष्य भाषा में अनुवाद करने में अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। भाषाओं की स्वाभाविक भिन्नताएँ भी समस्याएँ उत्पन्न करती है। संसार की अधिकतर भाषाएँ किसी-न-किसी सांस्कृतिक अनुभव को भी स्वीकार करती हैं और भावानुसार नए शब्दों के निरंतर निर्माण में जुटी रहती हैं।

भाषा और संस्कृति का संबंध अटूट है। इससे किसी भी समाज के बारे में काफ़ी सूचनाएँ मिल जाती हैं। इन सूचनाओं से भाषिक रूपों का अंतरण नहीं हो पाता। वास्तव में मानव अभिव्यक्ति के एक रूप के कारण भाषा में, भौगोलिक, ऐतिहासिक-सामाजिक और सांस्कृतिक तत्त्वों का समावेश होता जाता है जो कि एक भाषा से दूसरी भाषा से भिन्न प्रतीत होते हैं। इसलिए स्रोत भाषा के कथ्य को लक्ष्य भाषा में पूर्णतया संयोजित करने में अनुवादक को कई बार कठिनाई का सामना करना पड़ता है। यह बात अवश्य है कि विषम सांस्कृतिक भाषाओं के परस्पर अनुवाद में अधिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। जब दो संस्कृतियाँ समान होती हैं या एक-दूसरे से संबद्ध होती हैं तब अनुवाद की भाषा स्रोत भाषा की प्रकृति के

प्रसंगानुसार बदल जाती है। लेकिन विषम सांस्कृतिक स्थिति में प्रसंगानुसार परिवर्तन नितांत आवश्यक होता है अन्यथा उससे सटीक अर्थ की प्रतीति नहीं हो पाती।

सम-सांस्कृतिक भाषाओं में भारत हिन्दी, बांग्ला, तमिल, तेलुगु, मलयालम, मराठी आदि भाषाएँ आती हैं। इनके परस्पर अनुवाद में जो समस्याएँ उत्पन्न होती हैं वे कुछ ही अभिव्यक्तियों में मिलती हैं। यथा तेलुगु में घनिष्ट मित्र को 'प्राण मित्रुडु' और बचपन के दोस्त को 'बाल्यसवेहितुडु' कहा जाता है, किन्तु 'बालसवेहितुडु' के लिए हिन्दी में 'लंगोटिया यार' वाली अभिव्यक्ति उपयुक्त नहीं बैठती। विषम सांस्कृतिक भाषाओं में इस प्रकार की समस्याएँ बहुत अधिक मिलती हैं। देवर-भाभी, सास-ननद, जीजा-साली का अनुवाद यूरोपीय भाषा में नहीं हो सकता, क्योंकि भाव की दृष्टि से इसमें जो सामाजिक संबंधों से सम्बंधित सूचनाएँ निहित है, वह शब्द के स्तर पर नहीं आँकी जा सकती। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति के कर्म का अनुवाद न तो Action हो सकता है और न ही performance क्योंकि कर्म से यहाँ पुनर्जन्म निर्धारित होता है जबकि Action और Performance में ऐसा भाव नहीं है। इस प्रकार यह उन रूपों का प्रतिस्थापन नहीं है जो एक ही विषय वस्तु से जुड़े हुए हैं।

साहित्य समाज का आईना होता है। अगर किसी देश या क्षेत्र के समाज को जानना है तो उस क्षेत्र के साहित्य और संस्कृति से ही उसके समाज को बारीकी से जान सकते हैं। क्योंकि कोई भी लेखक समाज से ही उत्पन होता है और फिर अपनी क़लम के दम पर समाज की अच्छाई या बुराई को रेखांकित करता है।

ग्रीस के प्रसिद्ध आचार्य एरिस वेटल ने साहित्य को जीवन और समाज का अनुकरण माना है। रचनाकार जीवन और जगत के अनुभवों और घटनाओं को समाज से उठाकर समाज को ही लौटा देता है। साहित्यकार समाज का उत्थान-पतन, रीति-रिवाज, आस्था एवं मूल्यों को स्पष्ट रूप से साहित्य में प्रदर्शित करता है। शेक्सपियर के नाटक, चार्ल्स डिकेन्स के उपन्यास, जेन आस्टन के उपन्यास, ओ हेनरी की कहानियाँ, वर्ड्सवर्थ की कविताएँ, शैली, कोलरिज एवं कीट्स की कविताएँ,

जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ, रवीन्द्रनाथ की कविताएँ, प्रेमचंद के उपन्यास आदि कृतियों को पढ़ने पर समाज एवं साहित्य का सम्बन्ध समझ आता है।

इसके अलावा भी कई लेखक जैसे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, फणीश्वरनाथ रेणु, महादेवी वर्मा, यशपाल, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, हरिवंशराय बच्चन, किरण देसाई, अरुंधती राय, सलमान रश्दी, आदि कई साहित्यकार हुए, जिन्होंने न केवल अपनी क़लम के द्वारा समाज की विसंगतियों को उजागर किया बल्कि उनके समाधान भी दिए। उपमन्यु चटर्जी भी इसी की एक कड़ी हैं तथा अपने साहित्य के माध्यम से समाज के गंभीर विषय को दर्शाते है। साथ ही, यह भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य के एक नई परिपाटी के लेखक हैं।

उपमन्यु चटर्जी भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य के उन तमाम लेखकों से जो विदेश में रहकर भारत को अपने कथानक में सँजोते रहे हैं, उनसे भिन्न हैं। क्योंकि वह भारत में रह कर भारत को जी कर अपने कथानक में रचते हैं। इन्होंने *The Assassination of Indira Gandhi* नामक एक कहानी संग्रह रचा। साथ ही, उन्होंने *The Last Burden* (1993), *The Mammaries of the Welfare State* (2000), *Weight Loss* (2006), *Way to Go* (2010), *Fairy Tales at Fifty* (2014) जैसे उपन्यास भी लिखे हैं। इसी कड़ी का उनका पहला उपन्यास *इंग्लिश ऑगस्त– एन इंडियन स्टोरी* है जो सन् 1988 में प्रकाशित हुआ। उपमन्यु चैटर्जी भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य के सन् 1980 दशक के लेखक हैं। जब भारत के आज़ाद हुए लगभग चालीस वर्ष हो चुके थे। लेखक स्वयं प्रशासनिक सेवा रहे हैं। अत: वह भारतीय प्रशासनिक सेवा के माध्यम से भारत के आन्तरिक क्षेत्रों की वास्तविक दशा से ज़्यादा ही करीब से रू-ब-रू रहे हैं। और इसी स्थिति को उन्होंने अपने पहले उपन्यास *इंग्लिश ऑगस्त– एन इंडियन स्टोरी* का विषय बनाया। उक्त उपन्यास में उन्होंने एक पाश्चात्य सामाज से प्रभावित और शहरी परिवेश में जन्में और पले बड़े नायक के माध्यम से आज की पीढ़ी के द्वंद्वों को उकेरा है साथ ही, उसके माध्यम से आज़ादी के चालीस साल बाद भी देश की आंतरिक स्थिति और नौकरशाही का सच, नेताओं की वोट की राजनीति और लुभावने वादों के भ्रमजाल, आदिवासियों की दयनीय स्थिति और नक्लसवाद- जैसी समस्या को बयान किया है। साथ ही, लेखक

ने मनोविश्लेषण के आधार पर एक नई पीढ़ी और घर से दूर नौकरी करने वालों की मानसिक स्थिति का वर्णन किया है। लेखक ने गम्भीर विषयों को बहुत ही बेबाकी से उपन्यास में व्यंग्य-विद्रूप और उपहास शैली के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

उपन्यास का मुख्य पात्र अगस्त्य सेन, जो आजकल के युवकों की भाँति पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित जैज़ संगीत और नशे में लिप्त हैं का प्रतिनिधित्व करता है। वह भारतीय प्रशासनिक सेवा के एक साल के प्रशिक्षण के लिए महाराष्ट्र के मदना जिले मे जाता है, जो कि देश भर में सबसे गर्म स्थान के लिए जाना जाता है। अगस्त्य आज की पीढ़ी के उन सभी युवकों की भाँति हैं जो बड़े-बड़े लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं परन्तु उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के बाद उसकी प्रासंगिकता को समझ नहीं पाते। लक्ष्य प्राप्त करने के बाद कर्तव्यों से बचने के लिए पलायनवादी प्रवृत्तियों को अपनाते हैं। एक शहरी परिवेश में रहने के बाद किसी आंतरिक क्षेत्र में, जहाँ बहुत गर्मी होती है, में रहना आज की पीढ़ी के युवा लिए एक समस्या है। उसे आवास की सुविधा के नाम पर बारिश में टपकती छत वाले रेस्ट हाउस में रहना पड़ रहा है जो कि उसके लिए दूभर है। जहाँ पूरी रात बिजली की चकाचौंध में पूरा शहर जगमगाता रहता है वहीं दूसरी ओर देश के आन्तरिक इलाक़ों में बिजली न होने एक समस्या विकराल रूप में है। यहाँ मनोरंजन के नाम पर मात्र रेडियो है। परंतु शहर में मनोरंजन के लिए और दोस्तों के साथ मज़े करने कि लिए शहर में क्लब, कॉफ़ी पार्लर बहुत संख्या में हैं। उन सबको त्याग कर एक और अनजानी जगह सुविधाओं के अभाव में मदना- जैसी जगह अगस्त्य के लिए रहना दूभर था। लेखक ने अगस्त्य के माध्यम से आज की पीढ़ी के अन्दर चल रही दुविधा को उजागर किया है। अगस्त्य प्रशासनिक सेवा में आने के अपने लक्ष्य की प्राप्ति के बाद भी किसी भी प्रकार से संतुष्ट नहीं है और उसको छोड़ कर शहर में किसी पत्रिका के लिए लिखना चाहता है। यह आजकल की पीढ़ी के युवकों में सामान्य प्रवृत्ति है कि उसे किसी भी चीज़ से बहुत जल्दी ही मोहभंग हो जाता है। किसी भी समस्या का हल खोजने की जगह उससे पलायन का सहारा लेते हैं। चाहे वह व्यावसायिक समस्या हो या फिर संबंधों से संबंधित समस्या हो। जिस प्रकार अगस्त्य गाँव में नहीं रहना चाहता उसी प्रकार उपन्यास का एक मात्र ध्रुव कॉरपोरेट जीवन से खुश नहीं है। वह शहरी जीवन को उथला मानता है और उससे थक चुका

है। उसे अपना जीवन निरुद्देश्य लग रहा है और वह प्रशासनिक सेवा की परीक्षा दे रहा है। क्योंकि वह पाश्चात्य से प्रभावित समाज से उकता चुका है। मल्टीनेशनल (बहुराष्ट्रीय) कम्पनियों में मनुष्य का मशीन (यांत्रिक) रूप में प्रयोग किया जाता है। आज के युवक पैसे और आधुनिकता के चकाचौंध में इन कम्पनियों में कार्य करने तो लगते हैं परन्तु जल्दी ही इसकी वास्तविकता उनके सामने आ जाती है कि किस प्रकार यह कंपनियाँ उन्हें उनके मूल्यों से उनके स्वस्थ्य जीवन शैली से दूर कर रही हैं। इसी पर रवीन्द्रनाथ जी ने अपने अमेरिकी यात्रा में कहा था कि “पश्चिमी सभ्यता की आत्मा मशीन से बनी है। यह मशीन बराबर चलती रहती है और बराबर अपनी गति को कायम रखने के लिए वह मनुष्यों का उपयोग ईंधन के रूप में करती है।”[1] लेखक पूरे उपन्यास में इसी द्वंद्व को किसी न किसी घटनाओं के साथ जोड़कर उजागर करता है। लेखक ने आज के युवकों के मस्तिष्क में पौराणिक और आधुनिक संस्कृति के मध्य चल रहे द्वंद्व को प्रस्तुत करने की कोशिश भी की है। उपन्यास में पात्र अपनी आंतरिक शांति के लिए *भगवत गीता* पढ़ता है जहाँ एक सिरहाने पर मार्कस ऑरेलियस रखता है तो दूसरे सिरहाने पर *भगवत गीता* । उपन्यास में नायक आधुनिकता से भाग कर पुराण में शान्ति ढूँढ़ने की कोशिश करता है। संस्कृत साहित्य के विद्वान डॉ. बलदेव उपाध्याय जी ने कहा है कि “संस्कृति के स्वरूप की जानकारी के लिए पुराणों के अध्ययन की महती आवश्यकता है। पुराण भारतीय संस्कृति का मेरूदण्ड है– वह आधार –पीठ है जिस पर आधुनिक भारतीय समाज अपने नियमन को प्रतिष्ठित करता है।”[2] अत: उपन्यास में पात्र स्वयं की पहचान से संबंधित प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए पुराणों की ओर बढ़ता है। लेखक ने आज के युवाओं के नए और पुराने मूल्यों के टकराव को बहुत ही सहजता से दिखाया है।

लेखक ने उपन्यास में नौकरशाही की सच्चाई के अनेक बिन्दुओं को उजागर किया है। जिन नौकरशाहों के कंधों पर देश का वर्तमान और भविष्य को सुदृढ़ बनाने का दारोमदार है उस नौकरशाही की वास्तिविक स्थिति को लेखन ने बताने का प्रयास किया है। लेखक ने भारतीय नौकरशाही की स्थिति के सभी पहलुओं को

---

[1] दिनकर, डॉ.रामधारी सिंह, *संस्कृति के चार अध्याय*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद सं. 1993, पृ.771

[2] उपाध्याय, बलदेव, *पुराण विमर्श*, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, सं. 1976, पृ.64

दिखाने की कोशिश की है। जैसे अगस्त्य जहाँ एक सरकारी रेस्ट हाउस में रहता है जो बारिश में टपकता है। भारत में सबसे उच्च स्तर के सरकारी नौकरी पर कार्यरत अधिकारियों को आवासीय सुविधा तक उपलब्ध नहीं है। जब स्वयं को न्यूनतम सुविधा भी उपलब्ध नहीं है तो वह देश को किन सुविधाओं के स्वप्न दिखा सकता है। दौरे करने के लिए सही गाड़ियाँ मुहैया नहीं होती। टूटी सड़कों से होकर उन आंतरिक क्षेत्रों तक पहुँचना बहुत ही मुश्किल होता है। इस तंत्र के पास प्राप्त संसाधन ही नहीं है जिससे वह आम जनता के लिए अधिक कुछ कर पाए। परंतु दूसरी ओर ऐसे भी अधिकारी हैं जो अपने पद का फ़ायदा अपनी वैयक्तिक लाभों के लिए करते हैं। श्रीवास्तव जैसे अधिकारी भी हैं जो अपनी पत्नी की शिक्षा अपने रुतबे के माध्यम से पूरी करवाते हैं परंतु अधीनस्थ अधिकारियों को सही ग़लत का पाठ पढ़ाते हैं। मैमन- जैसे अधिकारी भी है, जो आन्तरिक क्षेत्र में सिर्फ़ अपनी दूसरी जगह बदली कराने के लिए समय काटने में लगे रहते हैं। नेताओं को पैसे खिलाते हैं ताकि किसी तरह अच्छी जगह उनका तबादला हो जाए और वह पैसे कमा सके। आंतरिक क्षेत्रों में सब अपना समय काटने में लगे हैं। किसी को स्थानीय विकास की चिंता नहीं है। दूसरी बेहतर स्थानों पर तबादला कराने के जुगाड़ के साथ मात्र फ़र्नीचर इकट्ठा कर रहे हैं। कुछ अधिकारी कार्य भी करना चाहते हैं परन्तु सहकर्मियों के गैर ज़िम्मेदाराना रवैया कार्य में बाधा उत्पन्न करता है। इससे न केवल अधिकारी का मनोबल समाप्त होता है बल्कि विकास में रुकावट उत्पन होती है।

लेखक उपन्यास में नौकरशाही में एक और छोटी मानसिकता की ओर संकेत करता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा की परिक्षा को उत्तीर्ण करके बने कलेक्टर स्वयं को पदोन्नति से बने उच्च अधिकारी से स्वयं को उच्च दर्ज़े का मानते हैं। और उनके साथ भेदभाव करते हैं। बजाज, जो पदोन्नति से प्रशासनिक सेवा में पहुँचा है उम्र में श्रीवास्तव से ज्यादा है परन्तु पद में श्रीवास्तव से कम। श्रीवास्तव उसके ज्ञान और उसके कार्यनीति की उपेक्षा करता रहता है। उसको दोयम दर्ज़े का मानता है। साथ ही, उसके लिए अपशब्द का प्रयोग करता और उसे भ्रष्ट बताता है। उच्च अधिकारियों द्वारा अपने अधीनस्थ अधिकारियों के प्रति बुरा सूलूक कार्य संचालन में विघ्न डालता है। चूँकि अकेला चना भाड नहीं फोड़ सकता इसलिए स्थितियाँ बद से

बदतर होती जा रही हैं। देश के विकास के लिए सबको सहयोग और सद्भावना से कार्य करने की आवश्यकता है।

लेखक ने उपन्यास में राजनेताओं के सच पर प्रकाश डाला है। आज कल के नेता मात्र वोट के लिए पांच साल बाद जनता को अपनी शक्ल दिखाने पहुँचते हैं। जनता को लुभाने के लिए बड़े-बड़े वादे करते हैं परन्तु चुनाव जीतते ही ग़ायब हो जाते हैं। मदना जैसे आंतरिक ज़िलों की तो स्थिति और भी बुरी है जहाँ नेताओं के पोस्टर ही मात्र दिखाई देते हैं। मदना में बिजली पानी की सुविधा है नहीं परन्तु नेता टीवी लाने की बात कर रहे हैं जो कि असंभव है लेकिन यह भी उनके चुनाव प्रचार करने का माध्यम मात्र है। जितना टीवी पर दिखो, उतना जनता आपको जानेंगी और आपको प्रचार के लिए इन अविकसित स्थानों पर जाना भी नहीं पड़ेगा। जोमपन्ना और चितपंथी जैसे- आदिवासी क्षेत्रों का भी उल्लेख किया गया है जहाँ नेता कभी गए ही नहीं लेकिन उनके चेले वहाँ भी जाकर दीवारों पर चित्र बना कर आए हैं। जिनके कुएँ सूख गए हैं और जिनको पानी जैसी विकट समस्या का सामना करना पड़ रहा हैं।

उपन्यास में राजनेता अपनी वोट की राजनीति के लिए इतना गिर जाते हैं कि साम्प्रदायिक दंगे तक करवा देते हैं। अंग्रेज़ों ने जो आग धर्म के नाम पर 'बाँटो और राज करो' की नीति के आधार पर लगाई थी उस पर आज भी राजनेता रोटियाँ सेक रहे हैं। इससे देश का विकास नहीं हो रहा। इसी कारण जनता अपने मूल हितों से विमुख हो रही है। इस संदर्भ में प्रो. बिपन चंद्र लिखते हैं कि "धर्म साम्प्रदायिकता का कारण नहीं है और साम्प्रदायिकता को भी धर्म में कोई ख़ास दिलचस्पी या उससे लेना-देना नहीं है। मगर यह भी सच है कि धार्मिक मतभेदों को राजनेता अपनी राजनीति के लिए इस्तेमाल करते हैं और धर्म की राजनीति के ज़माने में जनता को उनकी गहरी धार्मिक भावनाएँ भड़काकर और उनके धर्म को ख़तरे में बताकर वोट जमा करने की कोशिश करते हैं।"[3] प्रो. बिपन चंद्र का कहना ठीक है कि राजनेता वोट की राजनीति के लिए धर्म का प्रयोग करते हैं। उपन्यास में सांप्रदायिक सद्भाव के लिए अधिकारी एकीकरण सभाएँ आयोजित करते हैं जिससे ज़िले में शांति और

---

[3] चंद्र, बिपिन, *साम्प्रदायिकता: एक परिचय*, अनामिका पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2004, पृ.42

सद्भाव स्थापित हो। किसी स्थान या किसी राष्ट्र का विकास तभी हो सकता है जहाँ सभी धर्म के अनुयायी साथ मिल कर रहें और भारत- जैसा राष्ट्र किसी एक धर्म का नहीं है। *हिन्द स्वराज* में गांधी जी ने कहा है–" हिन्दुस्तान में चाहे जिस धर्म के आदमी रह सकते हैं; उससे वह एक राष्ट्र मिटनेवाला नहीं है। जो लोग उसमें दाख़िल होते हैं, वे उसकी प्रजा को तोड़ नहीं सकते, वे उसकी प्रजा में घुलमिल जाते हैं। ऐसा हो तभी कोई मुल्क एक-राष्ट्र माना जायेगा। ऐसे मुल्क में दूसरे लोगों का समावेश करने का गुण होना चाहिए। हिन्दुस्तान ऐसा था और आज भी है। यों तो जितने आदमी उतने धर्म ऐसा मान सकते हैं। एक-राष्ट्र होकर रहने वाले लोग एक दूसरे के धर्म में दखल नहीं देते; अगर देते हैं तो समझना चाहिए कि वे राष्ट्र होने के लायक नहीं। अगर हिन्दू मानें कि सारा हिन्दुस्तान सिर्फ़ हिन्दुओं से भरा होना चाहिए, तो यह एक निरा सपना है। मुसलमान अगर ऐसा मानें कि उसमें सिर्फ़ मुसलमान ही रहें, तो उसे ही सपना ही समझिए। फिर भी हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, जो इस देश को अपना वतन मानकर बस चुके हैं एक-देशी, एक-मुल्की हैं, वे देशी-भाई हैं, और उन्हें एक-दूसरे के स्वार्थ के लिए भी एक होकर रहना पड़ेगा। दुनिया के किसी भी हिस्से में एक-राष्ट्र का अर्थ एक-धर्म नहीं किया गया है; हिन्दुस्तान में तो ऐसा था ही नहीं।"[4] गांधी जी ने 1908 ई. में भविष्य की समस्या से सचेत कर दिया था क्योंकि इस समस्या के बीज अंग्रेज़ों ने बो दिए थे। इसलिए गांधी ने इस समस्या का बारे में लिखा और जनता को समझाने की कोशिश की थी। यह आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। उन्होंने अपने समय में ही जनता को और आने वाले नेताओं को एक संदेश दे दिया था कि "हिन्दुस्तान अगर प्रेम के सिद्धान्त को अपने धर्म के एक सक्रिय अंश के रूप में स्वीकार करे और उसे अपनी राजनीति में शामिल करे, तो स्वराज स्वर्ग से हिन्दुस्तान की धरती पर उतरेगा। लेकिन मुझे दुख के साथ इस बात का भान है कि ऐसा होना बहुत दूर की बात है।"[5] क्योंकि आज सत्ता की भूख में नेता इतने बौखला गए हैं कि वह राष्ट्र की परिभाषा को भूल गए हैं। वह कैसे भी सत्ता हथियाना चाहते हैं और अपने वैयक्तिक हितों को पूरा करने की जुगाड़ मे रहते हैं।

---

[4] गाँधी, महात्मा, *हिन्द स्वराज*, शिक्षा भारती, 2016, पृ.36

[5] गाँधी, महात्मा, *हिन्द स्वराज*, शिक्षा भारती, 2016, संदेश

लेखक ने उपन्यास में दर्शाया है कि राजनेता पैसे के लालच में अधिकारियों से घूस खाकर तबादले करते हैं और अपने मूल कर्तव्यों से विमुख यही अधिकारी दी गई घूस को वापस निकालने के लिए भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हैं। यह एक सतत् चक्र के रूप में कार्य करता रहता है इसलिए गाँव वैसे के वैसे पिछड़े ही रहते हैं और वर्ष पर वर्ष गुज़रते जाते हैं। बिजली के नाम पर सिर्फ़ खम्बे नज़र आते हैं। स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाओं के नाम पर कार्यरत संस्थाओं के लिए केवल जर्जर इमारतें हैं।

लेखक ने आदिवासियों की भूमि अधिग्रहण की समस्या, उनके अधिकारों का हनन, तथा उनके क्षेत्रों पर कारखानों का बनना, तथा उनकी बहू-बेटियों पर दुराचार करने जैसी समस्याओं को बहुत ही मार्मिक तरह से दर्शाया है। सरकार आदिवासियों की भूमि पर कारखाना बनाने की अनुमति तो दे देती है परन्तु उन कारखानों में उनको रोज़गार नहीं मिलता। जिन भूमि पर वह कुछ खेती करके अपना जीविकोपार्जन चलाते थे वह अब उनके पास नहीं है। साथ ही, उनके पास कोई अतिरिक्त साधन भी नहीं है अपना पेट पालने के लिए। इस दयनीय स्थिति में आत्महत्या के अलावा उनके पास कोई रास्ता नहीं रह जाता। वह सरकार से अपने अधिकारों की माँग करते हैं परन्तु सरकार को मात्र अपना फ़ायदा दिखाई देता है और अपने बड़े-बड़े उद्योपतियों के साथ किए गए गुप्त समझौते याद रहते हैं। वे इन सबके ख़ातिर उनको नज़रअंदाज़ किए हुए हैं।

लेखक ने आदिवासियों की दयनीय स्थिति का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है। आदिवासियों के पास पीने का पानी भी नहीं है। वह सूखे कुएँ में अपने बच्चों को कुदवा कर पानी के नाम पर कीचड़ पीकर गुज़ारा कर रहे हैं। उनके हितों का संरक्षण मात्र सरकारी फाइलों में दफ़न है। राजनेता उस ओर रुख़ तक नहीं करते परन्तु उनके चुनावी निशान ज़रूर पहुँच गए हैं। आदिवासियों के क्षेत्रों तक कच्ची सड़क तक नहीं है, जिसके रास्ते कोई अधिकारी वहाँ तक पहुँच पाए। परन्तु उद्योगपति को यह रास्ता और भूमि मिल जाती है। शहरों में भी पाँच साल के बाद अपनी शकल दिखानेवाले नेताओं का ऐसे दूभर क्षेत्रों में जाना एक स्वप्न मात्र ही है। शिक्षा, बिजली, स्वास्थ्य सुविधाएँ बस एक शगूफा मात्र है। इन्हीं विवशता, लाचारी, भूखमरी से नक्सलवाद का जन्म होता है। लेखक ने नक्सलवाद की समस्या पर प्रकाश पर

भी प्रकाश डाला है। किस प्रकार सरकार के ग़ैरज़िम्मेदार रवैइयों की वजह से कुछ लोगों को हथियार उठाना पड़ा है। परन्तु अब इस डर से उन स्थानों पर सरकारी अधिकारी या राजनेता जान की हानि और ख़तरे के नाम पर नहीं जाते। जिसके कारण ऐसे आन्तरिक क्षेत्र और पिछड़ते जा रहे हैं। जिन आदिवासियों ने नक्लसवाद का साथ नहीं दिया वह न तो सरकार से मदद ले सकते हैं और न ही नक्लवादियों से जिससे वह इस कुचक्र मे फँस गए हैं। सरकार भी खतरे के नाम पर पल्ला झाड़ती रही है। अत: यह बहुत ही ख़तरनाक समस्या बन कर देश के समक्ष खड़ी हुई है।

लेखक ने उपन्यास में पीत पत्रकारिता की समस्या का भी ज़िक्र किया है। पीत पत्रकारिता उसे कहते हैं, जिसमें सही समाचारों की उपेक्षा करके सनसनी फैलाने वाले समाचार या ध्यान खींचने वाले शीर्षकों का बहुतायत में प्रयोग किया जाता है। इससे समाचार पत्रों की बिक्री बढ़ाने का घटिया तरीका माना जाता है। पीत पत्रकारिता में समाचारों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है – घोटाले खोदने का काम किया जाता है; सनसनी फैलायी जाती है; या पत्रकारों द्वारा अव्यवसायिक तरीक़े अपनाये जाते हैं। लेखक ने इस माध्यम से बहुत से पहलुओं पर सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। लेखक ने यह दिखाने की कोशिश की है किस प्रकार आज पत्रकारिता बिक गई है। नेता अपने हितों के लिए सामाचार पत्र और पत्रिकाओं का उपयोग कर रहे हैं और साथ ही पत्रकार भी खबरों का कारोबार कर रहे हैं। एक अच्छा पत्रकार जनता के अधिकारों लिए सत्ता वर्ग के समक्ष सवाल खड़े करता है। और जनता के समक्ष सरकार की सच्चाई को लाकर रखता है जिससे वह जागरूक हो और सही ग़लत के विकल्प को समझ सके। गांधी ने भी पत्रकारिता के गिरते मूल्यों पर नाराज़गी व्यक्त करते हुए कहा था कि “अख़बार अप्रामाणिक होते हैं, एक ही बात को दो शकलें देते हैं। एक दल वाले उसी बात को बड़ी बनाकर दिखलाते हैं, तो दूसरे दल वाले उसी को छोटी कर डालते हैं। एक अख़बारवाला किसी अंग्रेज़ नेता को प्रामाणिक मानेगा, तो दूसरा अख़बारवाला उसको अप्रामाणिक मानेगा। जिस देश में ऐसे अखबार हैं उस देश के लोगों की कैसी दुर्दशा होगी?”[6] ये पंक्तियाँ आज भी

[6] गांधी, महात्मा, *हिन्द स्वराज*, शिक्षा भारती, 2016, पृ.24

प्रासंगिक हैं और तब भी जब गांधी ने इसे कहा था। तथा लेखक द्वारा दर्शायी गई इस समस्या ने आज बहुत गम्भीर रूप ले लिया है।

लेखक ने उपन्यास में उन तमाम लोगों की समस्या को उकेरा है कि वे नौकरी के कारण अपने घर-परिवार से दूर रहते हैं। अकेले रहने के कारण वे मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं रह पाते। लेखक ने उपन्यास में एक बुज़ुर्ग जज के माध्यम से अकेलेपन की पीड़ा को उकेरा है कि किस प्रकार वह पूरा जीवन देश के किसी आन्तरिक जिले में गुज़ार देता है। क्योंकि जहाँ पर वह नियुक्त है वह विकसित क्षेत्र नहीं है और उसके परिवार को सभी सुख-सुविधा नहीं मिल पाएगी, इसलिए वह उनके साथ न रहकर शहर में रहते हैं। इसी कारणवंश वह पूरा जीवन अपने परिवार को सुविधा देने के लिए अकेला काट देता है। लेखक ने उसकी पीड़ा को और उसके अकेलेपन के कारण उसके बर्ताव को बहुत बारीकी से उकेरा है। जैसे कि उसकी सारी चीज़ें अस्तव्यस्त है जहाँ वह नियुक्त है। मानों उसके घर कभी कोई आया ही न हो। उसका व्यवहार भी चिड़चिड़ा हो गया है। परन्तु अकेलेपन की पीड़ा से पीड़ित जज अगस्त्य की बोरियत को समझता है और उसे कहता है कि वह उसे रोज शाम को फ़ोन करके पूछेगा कि वह कैसा है और उसकी बोरियत दूर करेगा। और जज जब स्वयं के विचार अगस्त्य के सामने रखता है कि वह मदना में बहुत अकेलापन महसूस करता है और उसे अपने बेलागांव की याद सताती है। तब अगस्त्य को वह अपनी तरह लगने लगता है और उसके दिल में उसके लिए हमदर्दी पैदा हो जाती है क्योंकि एक और उस जैसा है मदना में जो उसकी तरह महसूस कर रहा है। यहाँ पर फ्रॉयड के 'प्रोजेक्शन'[7] के सिद्धान्त की झलक दिखती है, 'जिसमें जब अपनी भावनाओं को एक दूसरे के व्यक्तित्व में देखता है और स्वयं की भावनाओं को न्यायसंगत साबित करने की कोशिश करने लगता है यही नहीं, अपने व्यक्तित्व को बचाने की कोशिश करता है।'[8] हालाँकि अगस्त्य के पिता हमेशा कहते हैं कि वह अकेला नहीं है जो घर छोड़ कर किसी दूसरी जगह गया है। सब अधिकारी जाते हैं

---

[7] Projection … in its simplest form , refers to seeing one's own traits in other people. (Baumeister, Dale and Sommer 1998,p. 1090)

[8] Freud, S(1961c). The ego and the id.In.J.Strachey (Ed. And Trans.). The standard edition of the complete works of Sigmund Freud (Vol. 19). London, Hogarth Press, p.12-66

अत: उसे सबकी तरह हँसी-खुशी अपना कार्य करना चाहिए। चूँकि अगस्त्य को अपने घर की याद सताती है और वह मदना में अपना दिल नहीं लगा पा रहा होता है। परंतु अपने घर के दूर रहने का दर्द जज समझता है इसलिए अगस्त्य को वह अच्छा लगने लगता है। हालाँकि जज बस कुछ महीनों में सेवनिवृत्त होने वाला है अत: वह इस बात से बहुत अधिक प्रसन्न है कि अब अपने परिवार के साथ रह पाएगा। क्या इतने सालों बाद उसके परिवार वाले उससे वह संबंध स्थापित कर पाएँगे जो होना चाहिए। समय के इस अंतराल में काफ़ी चीज़ें बदल गई। कोई सुविधा वह नहीं जुटा पाया जब उसे अपने परिवार के साथ होना चाहिए था या उसके परिवार को उसके साथ। क्या यह अंतराल भर पाएगा। शायद नहीं। यह न तो उसकी ग़लती है और न ही उसके परिवार की, लेकिन आज के समय में संबंधों में गहराई और आत्मीयता में कमियों की ओर लेखक ने संकेत किया है।

लेखक ने उपन्यास में यह भी संकेत किया है कि हर इंसान को अपनी जगह से प्रेम होता है चाहे वह विकसित हो या न हो। परन्तु काम के कारण सबको आज कल घर छोड़ना पड़ रहा है, वैसे कौन अपना घर छोड़ना चाहता है। लेखक ने इस बेबसी को जज के माध्यम से प्रस्तुत किया है कि वह किस प्रकार अपने क्षेत्र बेलागाँव को याद करता है और वहाँ जाना चाहता है। वर्तमान में नौकरी की तलाश में सबको अपने घरों से दूर जाना पड़ता है। अत: अकेलेपन में वह ग़लत नशे- जैसी चीज़ों का सहारा लेते है, जो कि उपन्यास के मुख्य पात्र के माध्यम से लेखक ने प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। लेखक ने इस बात को बताने में कोई गुरेज नहीं किया है कि अपने अकेलेपन को पाटने के लिए युवा अगस्त्य हस्तमैथुन का सहारा लेता रहा है। यही नहीं कई युवक वेश्यावृत्ति की ओर भी रुख करते हैं।

लेखक ने मनोविश्लेषण के आधार पर पात्रों की मन:स्थिति को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। वह उपन्यास में यह दिखाने का प्रयास करता है कि किस प्रकार समाज ने गलत सही का पैमाना बना दिया है और इस कारणवश मनुष्य अपनी मूल इच्छा को सही तरह से व्यक्त नहीं कर पाता अत: यह भावनाएँ विकृत रूप में निकलती हैं जैसे अगस्त्य ने बंद कमरे में एक गुप्त संसार बना रखा है जो कि बाहरी संसार की नज़र से दूर है। और उसे यह गुप्त संसार बहुत प्यारा है और

बाहरी संसार से ज़्यादा अपने गुप्त संसार को पसंद करता है। अंतर्मुखी रहना ज़्यादा रहना पसंद करता है। फ्रॉयड ने भी कहा है कि 'सांसारिक दबावों के कारण आन्तरिक भावानाओं के दमन से एक अंतर्मुखी व्यवहार का जन्म होता है, जिसको फ्रॉयड 'एबनॉरमल रिपरैशन' कहते हैं।'[9] अगस्त्य भी समाज के उस पैमाने से इतना ज़्यादा बँधा हुआ है कि उसने अपना एक गुप्त संसार बना रखा है जो कि उसके करीबी मित्र को भी नहीं पता अत: उस गुप्त संसार का बाहरी संसार के समक्ष आने में डरता है। इसलिए वह अकेला रहना ज़्यादा पसंद करता है।

लेखक ने समय के साथ संबंधों में मूल्यों और विश्वास के लोप को दर्शाया है। यह उपन्यास सन् 1988 में प्रकाशित हुआ था और लेखक उस समय इस समस्या को प्रस्तुत किया जो आज की मुख्य समस्याओं में से हैं। यानी यह समस्या कोई आज की नहीं हैं। लोग इस समस्या को आधुनिकीकरण के चरम से उत्पन्न एक दीमक के रूप में मानते हैं जो संबंधो को और उसकी अस्मिता को खोखला करता जा रहा है। मनुष्य एक विकल्प बन चुका है और कुछ नहीं, जिसकी मांग मात्र ज़रूरत पूरी होने तक है। उपन्यास में श्रीवास्तव, जो कि पहले से ही शादीशुदा है परन्तु अपने ही कार्यस्थल में किसी बीडीओ से संबंध स्थापित करता है और शादी का झूठा वादा करता है। परन्तु वह अपनी पत्नी को तलाक नहीं देता इसलिए वह महिला सहकर्मी आत्महत्या कर लेती है। यह किस प्रकार की प्रवृत्ति है? हम यह तो नहीं कह सकते कि यह पूरी तरह से वर्तमान की उपज है। इसकी जड़े ज़रूर इतिहास में रही होगी। वास्तविकता यह है कि मनुष्य में स्वयं में बहुत सारी विकृतियाँ होती हैं। तभी कहा जाता है मनुष्य गलतियों का पुतला है। परन्तु यह गलती एक पाप के रूप में बदल जाती है जब कोई मनुष्य अपनी जान गवाँ देता है। और मनुष्य को पश्चात्ताप भी नहीं होता। इसी विकृति और द्वंद्व को लेखक ने बहुत ही इमानदारी से दर्शाया है। हिन्दी अनुवाद करते समय भी उसकी पात्रता और मानसिकता का विशेष ध्यान रखा गया है।

लेखक ने नौकरशाही के उस घिनौने चेहरे से भी अवगत करवाया है, जिससे पाठक का विश्वास अपने रक्षक से उठ जाता है। लेखन ने मोहन-जैसे पात्र के

---

[9] Sigmund Freud, *Five Lectures on Psychoanalysis*, penguin,1995, p.28-29

माध्यम से ऐसे तमाम अधिकारियों पर कटाक्ष करता है। वह इस प्रशासनिक वास्तविकता का नग्न चित्रण करता है किस प्रकार लोग अपनी इच्छा, शक्ति और अपने ओहदे का फ़ायदा उठाकर ग़लत सही का फ़र्क़ भूल जाते हैं। मोहन उपन्यास में एक आदिवासी महिला का बलात्कार करता है जिसके चलते वह आत्महत्या कर लेती है। इसको मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखे तो पुरुष को शारीरिक रूप से ताकतवर बनाया गया है और स्त्री को कमज़ोर। इसी कारण स्त्री की स्वीकृति या अस्वीकृति का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। एक कमज़ोर व्यक्ति की चाहे वह भौतिक रूप में या शारीरिक रूप में हो कि स्वीकृति और अस्वीकृति का अर्थ नहीं माना जाता हैं। इसी संदर्भ में फ्रॉयड ने कहा है कि 'जैविक रूप से स्त्री और पुरुष को अलग बनाया गया है। पुरुष को जैविक रूप से उग्र और शक्तिशाली बनाया गया है। इसी कारण स्त्री की स्वीकृति या अस्वीकृति का पुरुष की इच्छा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। फ्रॉयड इस इच्छा को प्राकृतिक मानते हैं।'[10] परन्तु फ्रॉयड के इस सिद्धान्त का कई नारीवादी आलोचकों ने आलोचना की है। मनुष्य को अपनी शक्ति और इच्छा को इतना वशीभूत नहीं आ जाना चाहिए कि सही ग़लत का फ़र्क़ भूल जाए। अत: लेखक ने अगस्त्य के माध्यम से इस अंतर को उपन्यास में उकेरा है।

उपन्यास का नायक अगस्त्य है जो बंगाली संस्कृति से संबद्ध है। पूरी कहानी इस लेखक के चारों तरफ बुनी गई है इस कारण बंगाली संस्कृति का प्रभाव कथानक पर स्वाभाविक रूप से बना हुआ है। नायक की माता गोवा की ईसाई थी लेकिन पुरुष प्रधान भारतीय समाज के कारण संतान अपने पिता का धर्म और संस्कृति का अनुसरण करती है। इसी कारण वह अपनी माता के किसी भी धार्मिक संस्कार या संस्कृति से अछूता रहा। लेखक ने इस बात का ज़िक्र भी किया है किस प्रकार नायक की बुआ उसे बंगाली संस्कृति का अनुसरण करने पर ज़ोर देती थी और उसके पिता कभी भी उसकी माता की संस्कृति का अनुसरण करने को या जानने के लिए नहीं कहते थे। लेखक ने दुर्गा पूजा जो की बंगालियों का महत्त्वपूर्ण त्यौहार होता है को

---

[10]- Nature takes less careful account of its [that function's] demands than in the case of masculinity. And the reason for this may lie - thinking once again teleologically - in the fact that the accomplishment of the aim of biology has been entrusted to the aggressiveness of men and has been made to some extent independent of women's consent. p.429

बहुत ही बारीकी से उकेरा है। किस प्रकार दिल्ली- जैसे शहर में बड़े-बड़े पंडाल लगते है और ढोल की आवाज़ गूँज उठती है। लेखक ने यह भी दिखाया कि किस प्रकार बंगाली मर्द पूरे साल पैंट- शर्ट में रहते हैं परन्तु त्योहार पर सब कुर्ते पाजामे में आ जाते हैं। किस प्रकार संस्कृति अब सिर्फ़ त्योहारों तक सीमित हो चुकी हैं।

इस उपन्यास में आज के आधुनिक समाज की संस्कृति भी चित्रित की गई है। आज यह देखना भी रोचक होगा कि संस्कृति की व्यापक अवधारणा में वर्तमान आधुनिकीकरण में संस्कृति की जगह कितनी बची है। रामधारी सिंह दिनकर ने संस्कृति शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है – "अनेक शताब्दियों तक एक समाज के लोग जिस तरह खाते-पीते, रहते-सहते, पढ़ते-लिखते, सोचते-समझते और राज-काज चलाते अथवा धर्म-कर्म करते हैं, उन सभी कार्यों से उनकी संस्कृति उत्पन होती है। जो कुछ भी वे करतें हैं उसमें उनकी संस्कृति की झलक होती यहाँ तक कि हमारे उठने-बैठने, पहनने-ओढ़ने, घूमने-फिरने, रोने हँसने में भी संस्कृति की पहचान होती है।"[11] वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के खान-पान, रहन-सहन, राज-काज आदि ने भारत की जनता को बहुत अधिक प्रभावित किया है। इसलिए उपन्यास में लेखक ने पाश्चात्य जीवन शैली के प्रभाव को भी उकेरा है। लेखक ने ध्रुव, भाटिया, टॉनिक जैसे पात्रों के माध्यम से अमेरिकी सभ्यता के गहरे प्रभाव को उनके कपड़ों के ब्रैन्ड और स्कॉट जोपलिन और किथ जार्रेट के संगीत, वेरनर हीरोज़(जर्मनी के फिल्म निर्देशक), कारलोस साउरा (स्पेनिश फिल्म निर्देशक) की फिल्मों को देखने के माध्यम से दर्शाया है। जिसमें वह बहुत ही सफल हुआ है। तथ्यों के साथ यही प्रभाव और अनूदित कृति में बनाए रखने का प्रयास किया गया है।

लेखक प्रस्तुत उपन्यास में कई सामयिक विषयों और प्रश्नों को प्रस्तुत किया है। हर लेखक की अपनी शैली और दृष्टिकोण होता है जो कि उसके साहित्य के माध्यम से सामने आता है। यही एक साहित्यकार को दूसरे साहित्यकार से अलग करती है। इसी सन्दर्भ में मैनेजर पाण्डेय का कहना है–"उपन्यास केवल साहित्यिक रूप नहीं है, वह जीवन जगत देखने एक विशेष दृष्टि है और मानव जीवन तथा समाज का एक

---

[11] दिनकर, डॉ.रामधारी सिंह, *संस्कृति के चार अध्याय*, लोकभारतीय प्रकाश, इलाहाबाद सं. 1993, पृ.652

विशिष्ट बोध भी। उपन्यास का इतिहास इस दृष्टि और बोध के परिवर्तन का इतिहास भी है वह केवल उपन्यास के बदलते रूपों का इतिहास नहीं है।"[12] उपन्यास में उठाए गए प्रश्न आज भी उतने प्रासंगिक है जितने जब उसकी रचना हुई थी हालाँकि इसकी रचना सन् 1988 में हुई थी। परंतु उसमें विन्यस्त सामाजिक और राजनीतिक समस्याएँ आज भी प्रासंगिक हैं। निष्कर्षत: यह कहना उपयुक्त होगा कि लेखक भारतीय कहानी को कथानक बनाता है और उन बहुत ही महत्त्वपूर्ण और जटिल प्रश्नों की चर्चा करता है जिससे हिन्दी भाषी समाज को परिचित होना चाहिए।

'इंग्लिश ऑगस्त' नाम से देव वेनगल द्वारा फ़िल्म भी बनाई थी परन्तु वह कार्यालय में आग लग जाने के कारण ध्वस्त हो गई और उसकी एक भी कॉपी उपलब्ध नहीं है। इसका अनुवाद बांग्ला में हो चुका है परंतु हिन्दी भाषी समाज अभी तक इससे अछूता रहा हैं। अथवा कम से कम हिन्दी माध्यम में इसकी कमी महसूस की जाती रही हैं। आशा है, इसके हिन्दी अनुवाद से जुड़ पाएँगे और इसको आत्मसात कर पाएँगे। साथ ही, जिन गम्भीर विषयों पर लेखक प्रकाश डाल रहा है वह पाठक वर्ग को सोचने के लिए निश्चय ही मजबूर करेंगे। कथा भारतीय परिवेश से जुड़ी है इसलिए अनूदित कृति से जुड़ना कठिन कार्य नहीं था। अनुवाद करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि मूल कृति का स्वर एवं संदेश यथासंभव सुरक्षित रहे। ज़ोर इस बात पर भी रहा है हिन्दी अनुवाद शब्दानुवाद न होकर भावानुवादपरक हो। उसमें उजागर की गई नई पीढ़ी की बेबाकीपन, आत्मसंघर्ष, नौकरशाही में व्याप्त समस्याओं आदि को उसी तरह संरक्षित और उसी साहसिकता के साथ यथासंभव प्रस्तुत किया जाए जैसा कि मूल रचना में है।

---

[12] पाण्डेय, मैनेजर, *उपन्यास और लोकतंत्र*, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2013, पृ.11

पाँचवाँ अध्याय

'इंग्लिश ऑगस्त' के हिन्दी अनुवाद की समस्याएँ

पाँचवाँ अध्याय

'इंग्लिश ऑगस्त' के हिन्दी अनुवाद की समस्याएँ

अनुवाद दो संस्कृतियों के बीच सेतु निर्माण का कार्य करता है। इसमें साहित्यिक अनुवाद की भूमिका सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होती है। इसका मुख्य कारण यह है कि किसी भौगोलिक क्षेत्र का साहित्य उस क्षेत्र की संस्कृति, कला और रीतियों का प्रतिनिधित्व करता है। कहा भी गया है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। यही वह बिन्दु है जो साहित्य अनुवाद को बेहद उत्तरदायी और कठिन कर्म बना देता है। किसी भी एक साहित्यिक कृति का उसकी मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय बहुत सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं। ये सभी सावधानियाँ सांस्कृतिक भिन्नताओं के चलते समस्याओं का रूप ले लेती हैं। क्योंकि सांस्कृतिक भिन्नता को समाप्त करने के लिए मूल भाषा में लिखित रचना की भाषा में व्यक्त प्रतीकों, भावों और उन अनेक विशेषताओं को सटीक तरीके से लक्ष्य भाषा में उतारना होता है। साथ ही यह ध्यान रखना होता है कि लक्ष्य भाषा में अनूदित कृति पढ़ने वाले को सहज, रोचक और आत्मीय लगे।

अनुवाद प्रक्रिया में आने वाली समस्याएँ मूलत: दो प्रकार की होती हैं– अन्तर्निष्ठ और बहिर्निष्ठ। भाषिक संरचना, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आदि के कारण आने वाली समस्याओं को अन्तर्निष्ठ माना जा सकता है। ये समस्याएँ अनुवाद कार्य के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों से जुड़ी होती हैं। बहिर्निष्ठ समस्याएँ वे हैं, जो प्रत्यक्षत: अनुवाद कार्य के अन्तर्गत नहीं आतीं, परन्तु बाहर से उस कार्य को प्रभावित

करती हैं। राजनीतिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक कारणों से उत्पन्न समस्याओं को इस कोटि में रखा जाता हैं।

स्रोत भाषा का अनुवाद करते हुए उसमें निहित संस्कृति, समाज, मूल्य मानता आदि का भी अनुवाद करते हैं। अत: इन तमाम तत्त्वों का किस प्रकार लक्ष्य भाषा, में रूपांतरित करें यह प्रश्न सामने आता हैं। महान अनुवाद चिन्तक जे. सी. कैटफ़ोर्ड ने अनुवाद का आधार समतुल्यता का सिद्धान्त माना है। वहीं दूसरी ओर रोमन जैकब्सन ने इसे आलोचनात्मक प्रक्रिया कहा है। भाव, भाषा का पूरक होता है। भाषा की लय, उसका प्रवाह, उसके मुहावरे, पात्रों की स्थानीयता से यह स्पष्ट होता है कि मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करना सरल कार्य नहीं है।

प्रस्तुत उपन्यास *इंग्लिश ऑगस्त– एन इंडियन स्टोरी* का अनुवाद करना कई माइनों में आसान रहा और कई मायनों में अत्यधिक कठिन। क्योंकि *इंग्लिश ऑगस्त* एक भारतीय कहानी को समेटे हुए है, जिसका आभास शीर्षक से हो जाता है। परन्तु लेखक ने कथानक में जहाँ एक ओर भारतीय वातावरण और पात्रों को विषय बनाया है वहीं दूसरी ओर इन पात्रों पर पाश्चात्य का प्रभाव भी दर्शाया है। जो कि उनकी जीवन शैली जैसे– पहनावा, संगीत, फ़िल्म और साहित्य से दर्शाया गया है। अनुवाद करते समय मुख्यत: दो चुनौतियों का सामना करना पड़ा। पहला, भारतीय संस्कृति का अंग्रेजी भाषा में रूपांतरण को पुन: उसी भावना और व्यंजना के साथ प्रस्तुत करना और दूसरा पात्रों की जीवन शैली पर पाश्चात्य संस्कृति के पड़ने वाले प्रभाव का लक्ष्य भाषा में अनूदित करना। यह पाश्चात्य संस्कृति से उपजे बाई प्रोडक्ट को लक्ष्य भाषा में रूपांतरित करने- जैसा था।

कविता तथा नाटक की ही तरह कहानी, उपन्यास अथवा कथा साहित्य में सर्जना का स्तर किसी भी तरह से हल्का या कम नहीं होता है, इसीलिए इसका अनुवाद किसी भी तरह से सहज या सरल क्रिया नहीं होती है। कथा का अपना एक विशिष्ट प्रारूप होता है। इसमें साहित्य की अन्य विधाओं के गुण भी अंतर्निहित होते हैं। जिस तरह से नाटक के पात्र अपनी संस्कृति एवं पृष्ठभूमि का प्रतिनिधित्व करते हैं। उसी तरह उपन्यास में भी पात्र किसी विशेष समय, संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में कथा साहित्य के गुण के साथ-साथ काव्य साहित्य के गुण भी विद्यमान हैं। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने कविता, गीत और ठुमरी आदि का बहुत प्रयोग किया है। अत: यह मात्र कथा साहित्य का अनुवाद नहीं कहा जा सकता। इसमें सभी विधाओं के कुछ अंशों के अनुवाद की चुनौतियों का समाना करना पड़ा। विदित रहे कि अंग्रेज़ी भाषा एक संश्लिष्ट (Synthetical) भाषा है तथा हिन्दी विश्लिष्ट (Analytical) भाषा है। स्पष्टत: कई कठिनाइयाँ साथ आने के बावजूद संरचना के स्तर पर यह अनुवाद का सफर काफी हद तक ज्ञानवर्धक और रुचिकर रहा है।

कथा साहित्य में पूरे पाठ को भाषिक स्तर एकल इकाई के रूप में प्रस्तुत एवं ग्रहण करने से ही उसका अर्थ स्पष्ट होता है। अर्थात् संपूर्ण पाठ श्रृंखलाबद्ध होता है, जो आपस में गुँथा होता है। और प्रत्येक कड़ी अगली या पिछली कड़ी को अर्थ प्रदान करती है। इस पूर्वापर संबंध या तालमेल को अनुवाद में क़ायम रख पाना एक समस्या हो सकती है। प्रस्तुत उपन्यास में पूर्व दीप्ति (फ़्लैश बैक) शैली का भरपूर प्रयोग किया है, जिससे कथा में प्रवाह बनाने में थोड़ी बांधा उत्पन्न हुई है, परन्तु संरचना या भाषिक परिवर्तन के बावजूद, सरल और सहज भाषा के माध्यम से प्रवाह और अभिप्रेत अर्थ को यथारूप को बनाने की पूरी कोशिश की है।

उपन्यास में लम्बे वाक्य विन्यास का प्राय: प्रयोग किया गया है। यह अंग्रेज़ी भाषा की एक परिचित खूबी होता है। परंतु हिन्दी भाषा में वाक्य छोटे और सरल हों तो वे अर्थबोधक एवं सहजग्राहय माने जाते हैं। अत: भाषा में सहजता और स्वाभाविक प्रवाह के लिए आवश्यकता अनुसार वाक्यों को छोटा रखा गया और जहाँ अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा था वहाँ भावानुवाद को प्राथमिकता दी गई। जैसे–

> ‘And Agastya sensed the largeness of the world, and the consequent littleness of his own crises; while he had been in Madna, talking to Mohan or walking carefully to avoid a buffalo’s tail from flicking dung on to his arms, Dhrubo had been where he, Agastya wanted to be, but struggling against the surreal.’ (153)

'और अगस्त्य फिर से सोचने लगा कि संसार कितना बड़ा है और उसकी तकलीफ़ें कितनी छोटी; जब वह मदना में था और मोहन के साथ बातें करते हुए चलते समय बच-बचकर चल रहा था कि कहीं भैंस अपनी पूँछ का गोबर उसे न लगा दे, तब ध्रुव उस जगह था, जहाँ अगस्त्य रहना चाहता था, लेकिन उसे तो संकटों से जूझना था।'

उक्त अनुवाद ज्यों का त्यों किया है। क्योंकि अगर इसको छोटे-छोटे वाक्यों में बाँटा जाता तो भाषिक प्रवाह समाप्त होने के संभावना रहती है इसलिए मूल भाव प्रवाह बनाए रखने कि लिए स्रोत भाषा की संरचना का अनुकरण किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने प्रशासनिक परिवेश को बुना है इसलिए प्रशासनिक शब्दावली का अधिक मात्रा में प्रयोग किया गया है जैसे पदों के नाम, कार्यालयी प्रक्रियाएँ उनका मानक प्रर्याय ढूँढ़ने में समस्या उत्पन्न हुई परन्तु प्रशासनिक शब्दावली कोश का सहारा लेकर इस समस्या को हल किया। परंतु कई प्रशासनिक शब्द ऐसे हैं, जिनको लेखक ने वास्तविकता का संचार करने के लिए स्वयं हिन्दी भाषा से ज्यों का त्यों लिए हैं जैसे तहसीलदार, नायब तहसीलदार आदि। उसी प्रकार कहीं पदों के नाम हिन्दी में प्रचलित हो गए हैं जैसे जज, कलक्टर आदि। अत: स्वभाविकता का संचार के लिए लिप्यांतरण किया है।

अनुवाद में जिन विभिन्न प्रकार की समस्याओं से अनुवादक को जूझना पड़ता है, उनमें एक महत्त्वपूर्ण समस्या मुहावरों के अनुवाद की है। सामान्य शब्दावली के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति की तुलना में मुहावरों के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति जितनी अधिक प्रभावशाली तथा व्यंजक होती है, उसका अनुवाद भी उतना ही कठिन होता है। अलंकार, मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी अनुवादक के लिए उतनी ही समस्या पैदा करती हैं जितनी कि नाटक या अन्य विधाओं में। अनुवाद करते समय स्रोत भाषा में किसी मुहावरे के मिलने पर अनुवादक का प्रयास सबसे पहले लक्ष्य भाषा में उस मुहावरे के शब्द तथा अर्थ दोनों ही दृष्टियों से समान मुहावरे की खोज की दिशा में होना चाहिए। स्रोत और लक्ष्य भाषा में कुछ थोड़े मुहावरे ऐसे मिल सकते हैं, जिनमें शब्द और अर्थ (या भाव) दोनों की समानता हो।

यह समानता कई कारणों से हो सकती है। इनमें सबसे प्रमुख कारण एक भाषा का दूसरे पर प्रभाव है। अंग्रेज़ी भाषा ने अनेक अन्य क्षेत्रों की भाँति मुहावरों के क्षेत्र में हिन्दी भाषा को प्रभावित किया है, अत: यह स्वाभाविक ही है कि दोनों में अनेक ऐसे मुहावरे प्रचलित हैं, जो शब्द और अर्थ दोनों ही दृष्टियों से समान हैं। उपन्यास में व्यंजकता लाने के लिए लेखक ने मुहावरों का प्रयोग किया है। मूल कृति अंग्रेज़ी भाषा की है इसलिए मुहावरों का समतुल्यता के आधार में रूपांतरण लक्ष्य भाषा में किया है ताकि अनूदित कृति में व्यंजकता यथावत् बनी रहे। इसमें स्रोत भाषा के मुहावरे का लक्ष्य भाषा में प्रयाय ढूँढ़ने में समस्या हुई क्योंकि कई मुहावरे ऐसे थे, जिनका शब्दानुवाद करने से अर्थ की पुष्टि नहीं हो पा रही थी इसलिए समुचित लक्ष्य भाषा में इसका समुचित पर्याय ढूँढ़ा गया और जिन मुहावरे का शब्दानुवाद मे अर्थ की पुष्टि हो रही थी उसका शब्दानुवाद किया गया जैसे–

Skeletons in his cupboard(43)
घर का भेदी लंका ढाए।

Into some coherent whole(118)
एक ही थाली के चट्टे बट्टे।

a second string to your bow(9)
मुसीबत की घड़ी के लिए हुनर सीखना

Down our throats(236)
हमारे मत्थे पड़ना।

परंतु कहीं पाठ के अर्थ को बनाने के लिए शब्दानुवाद भी किया जैसे–

From washing your arse to dying(38)
चूतड़ धोना सीखने से लेकर मरने तक

Hyperboles of love(236)

प्यार का बखान करना

Action was better than inaction(136)
कुछ न करने से अच्छा है कुछ-न-कुछ करना।

लेखक ने हिन्दू धर्म से संबंधित धार्मिक ग्रंथों और उनमें निहित मूल और पंक्तियों का उपन्यास में प्रयोग किया है। जो की पात्र के आधुनिक और पारम्परिक के बीच के द्वंद्व को दर्शाने में सहायक है। इसी के लिए धर्म के पौराणिक कथा को जानना तथा आत्मसात करने की आवश्यकता होती है जो समस्या रूप में सामने आयी। परन्तु धार्मिक ग्रंथ का सार पढ़कर और पौराणिक कहानियाँ पढ़कर इसका अर्थ ग्रहण करके तथा उस को मूल की तरह सटीक और आदर्श रूप में रूपांतरित करने की कोशिश की। जैसे–

'The mind is restless, Krishna, impetuous, self-willed, hard to train: to master the mind seems as difficult as to master the mighty winds.'
'The mind is indeed restless, Arjun: it is indeed hard to train. But by constant practice and by Freedom from passions the mind in truth can be trained.' (84)

'मन बहुत बेचैन है कृष्ण, अविवेकी और मनमौजी भी, इस पर लगाम लगाना मुश्किल है: मस्तिष्क को वशीभूत करना उतना ही मुश्किल है जितना शक्तिशाली हवाओं को वशीभूत करना।'
'मन वस्तुत: बेचैन होता है, अर्जुन : इस पर अंकुश लगाना कठिन है। मगर लगातार अभ्यास करते रहो और वासना से मुक्त होते रहो, तो सचमुच मन पर अंकुश लगाया जा सकता है।'

कविता के अनुवाद को लेकर काफ़ी विवाद रहा है। बहुतों की धारणा यह रही है कि कविता का अनुवाद हो ही नहीं सकता। मुख्यत: काव्यानुवाद को ही दृष्टि में रखकर इस प्रकार की बातें कही गई हैं–

1. All translation seems to me simply an attempt to solve an unsolvable problem. –Humboldt
2. It is useless to Greek in translations. Translators can but offers us a vague equivalent. – Virginia Woolf
3. Translation of a literary work is as tasteless as a stewed strawberry. – H. de Forest Smirth
4. Translation is meddling with inspiration. –Showerman
5. Ideas can be translated but not the words and their associations. –Sydney[1]

वस्तुत: कविता का अनुवाद करना बहुत कठिन तो है, किंतु वह असंभव है, यह नहीं कहा जा सकता। विश्व में अब तक अकूत संख्या में कविताओं के अनुवाद हुए हैं। इन अनुवादों को एकदम अनाधिकृत अथवा अग्राह्य मानकर अस्वीकार नहीं कर सकते। इस समय भी ऐसे अनुवाद हो रहे हैं, और आगे भी होते रहेंगे। यह अवश्य है कि कविताओं के बहुत कम ही अनुवाद मूल का पूरी तरह–कथ्य और कथन शैली- दोनों दृष्टियों से – प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रसंग में सबसे बड़ी बात यह है कि कविता जो कुछ प्रभाव पाठक या श्रोता पर डालती है वह न तो अकेले कथ्य (content) का होता है, न अकेले कथन या अभिव्यक्ति (Expression) का। वह दोनों का योग होता है। और ये दोनों भी एक सीमा तक एक-दूसरे पर आश्रित होते हैं–गद्यानुवाद की तुलना में बहुत अधिक। मूल कथ्य की विशिष्टता और विशिष्ट अभिव्यक्ति पर और लक्ष्य पाठ द्वारा अभिव्यक्ति का यह तालमेल उसी अनुपात में नहीं बैठाया जा सकता और न ही हर भाषा में कथ्य और अभिव्यक्ति के योग से एक- जैसे प्रभाव का। वांछित प्रभाव उत्पन्न करने वाले मूल काव्यतत्त्व का कुछ अंश छूट जाता है, और कुछ ऐसा अंश कभी-कभी जुड़ भी जाता है, जो मूल में नहीं होता। फ़िट्ज़जेराल्ड ने उमर ख़ैयाम के अनुवाद में अपनी ओर से काफ़ी जोड़ा है। उन्होंने स्पष्ट कहा है– "अनुवाद को अपनी रुचि के अनुसार मूल को फिर से ढालना चाहिए – भूसा भरे गीध की अपेक्षा मैं जीवित गौरैया चाहूँगा।"[2] इस तरह वे इस संस्कार करने के पक्षपाती थे।

---

[1] तिवारी, भोलानाथ, *अनुवाद विज्ञान, किताबघर प्रकाशन, 2005, पृ.116*

[2] तिवारी,भोलानाथ, *अनुवाद विज्ञान,* किताबघर प्रकाशन, 2005, पृ.117

जो भी हो, यह स्पष्ट है कि इस छूट जाने से अनुवाद मूल से दूर पड़ जाता है, और कुछ जोड़ने से और भी दूर पड़ जाता है। अत: यह अनुवाद से अधिक, मूल पर आधारित नई रचना-सा हो जाता है। क्योंकि स्रोत भाषा के सभी शब्दों के लिए लक्ष्य भाषा में प्राप्त शब्द आंतरिक, बाह्य तथा प्रभाव की दृष्टि से सर्वदा समान नहीं होते। अलंकारों का अनुवाद काफ़ी कठिन है और कभी-कभी तो असंभव-सा हो जाता है। काव्यानुवाद में छंदों की स्थिति भी अलंकारों से कम जटिल नहीं है। काव्यानुवादक कवि होता है, और वह अपने व्यक्तित्व को मूल रचना और अनुवाद के बीच में लाने से अपने को रोक नहीं पाता– शायद रोक भी नहीं सकता। काव्य की अर्थ-रचना और अभिव्यंजना की जटिलताएँ प्राय: अनूद्य नहीं होती, या बहुत कम ही होती है। विशिष्ट कविता का अनुवाद व्यक्तिनिष्ठ होता है। तत्वत: एक भाषा की काव्य-रचना अर्थात्, अभिव्यक्ति और प्रभाव केवल उसी भाषा में हो सकती है, किसी अन्य में नहीं।

प्रस्तुत लेखक ने बहुत से हिन्दी गीतों का भी वातावरण के निर्माण के लिए प्रयोग किया है। जो समय की ओर तो संकेत कर ही रहा है। इससे समकालीनता के साथ एक मनोरम वातावरण उत्पन्न हो रहा है। किसी गाँव में अगर हम जाएँगे तो किसी ढाबे या खोके से हिन्दी गानों का स्वर आ रहा होगा न कि किसी पाश्चात्य हिप होप का। लेखक ने इस फ़र्क़ को अपने उपन्यास में उकेरा है जिसका लक्ष्य पाठ में वैसे ही वर्णन काफ़ी एक चुनौतीपूर्ण था परन्तु इसको बनाने की पूर्ण कोशिश रही जैसे–

The night is alone
The lamps are dimmed
Come closer my love
Into my arms (232) का

रात अंधेरी है
बुझ गए दिए
आके मेरे पास
बाहों में मेरी

You do not disappoint me, life
You astound me (252) का

तुझसे से नाराज़ नहीं ज़िन्दगी
हैरान हूँ मैं।

Allow me to stay
In the shadow of your eyelashes (268) का

मुझे पलकों की छाँव मे रहने दो

लेखक ने उपन्यास में बंगाली संस्कृति से संबद्ध पात्रों एवं परिवेश को रचा है। पूरे देश में रवींद्रनाथ टैगोर को एक महान हस्ताक्षर रूप में माना जाता है। अत: बंगाली समाज में मुख्यत: टैगोर को सभी सुनना पंसद करते हैं। किसी-न-किसी के घर से टैगोर के गीतों की शब्द सुनाई देते हैं। टैगोर जैसे महान हस्ताक्षर की पंक्तियों का अनुवाद अपने आप में एक चुनौती थी। जैसे–

With the death of the day, a red bud burgeons within me
It shall blossom into love. (150)
दिन की समाप्ति के साथ, मेरे भीतर एक लाल कली पनपती है
और उसे प्रेम प्यार में खिलना चाहिए ।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने कविताओं की पंक्तियों का प्रयोग करके गद्य में काव्य का रस लाने का प्रयत्न किया जो कि अनुवाद करते समय एक चुनौती रूप में सामने आई। लेखक ने शेक्सपीयर की *मैकबेथ* की कुछ पद्य अंश का प्रयोग किया जिनका अनुवाद करना भी चुनौतीपूर्ण रहा। पहले उन पंक्तियों का अर्थ ग्रहण करके समतुल्यता सिद्धान्त के अनुरूप भावानुवाद करने की कोशिश की गई। जैसे–

–The innocent sleep,
Sleep that knits up the ravell'd sleave of care,

The death of each day's life, sore labour's bath,
Balm of hurt minds, great nature's second course,–
Chief nourisher in life's feast,

–Shakespeare, *Machbeth*

वो आंतरिक शान्ति की नींद
बाँहों में लिपटा वह चैन भरा प्रेम
जो दिन को थपकी दे कर सुलाता है
अशांत मन को लोरियाँ सुनाता है
प्रकृति का सबसे संपूर्ण उपहार।

–शेक्सपीयर, *मैकबेथ*

लेखक ने उपन्यास में अपशब्दों और गालियों का भरपूर प्रयोग किया है जो कि भाषा में बेबाकीपन का संचार कर रही है परन्तु अनुवाद में यह एक समस्या उत्पन्न करती है। यह अंग्रेज़ी भाषा में जितना सामान्य लगता है वहाँ हिन्दी भाषा में इससे असामान्यता उत्पन्न होती है। परन्तु स्थानीयता और वास्तविकता स्थापित करने के लिए उपन्यास की माँग के अनुसार मूल पाठ में प्रयुक्त अपशब्द जैसे – Fucked, Mongrelness (1), Fucker, Mother Fucker (38), Bastard (58) आदि का उतनी ही बेबाकी से प्रयोग लक्ष्य पाठ में किया है। अपशब्दों का सटीक प्रर्याय ढूँढ़ने में बाधा उत्पन्न हुई जिसमें काफी समस्या का सामना करना पड़ा क्योंकि शब्दानुवाद से अर्थ सार्थक नहीं हो पा रहा था इसलिए इनका भावानुवाद किया। लेखक ने कहीं-कहीं हिन्दी के शब्दों का ज्यों का त्यों प्रयोग किया है जैसे– Hazar fucked (1) अत: उसका सटीक अर्थ पुन: अनूदित पाठ में करना उतना ही कठिन था, जैसे अंग्रेज़ी शब्दों का था। क्योंकि कभी-कभी कई शब्द किसी दूसरे शब्द से मिलकर भी पूर्ण अर्थ नहीं देते। इसलिए उसका भावानुवाद करने की कोशिश की गई है।

साहित्य की अन्य विधाओं के अनुवाद की तरह ही कथा विधा में भी अनुवादक को कथ्य के विभाजन तथा शिल्पगत प्रयोग पर चिंतन-मनन करना पड़ता है। अनुवादक कभी कुछ जोड़ता है तो कभी कुछ हटाता है। इस सारे कार्य और गतिविधि के साथ उसे मूल पाठ के भाव को बनाए रखना पड़ता है। स्रोत एवं लक्ष्य भाषा में

सही प्रतीकों का चयन यहाँ भी उतना ही कठिन और समस्याप्रद होता है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने कई ऐसे शब्दों की सर्जना की है। जैसे- 'Intellectual fart'(35) का भावानुवाद किया गया है 'बौद्धिक कचरा'।

उपन्यास में टीवी धारावाहिकों के पात्रों के नामों का प्रयोग किया गया है। जैसे– Dorothea(1), Marmaduke(1) आदि, जिनको उपन्यास के पात्र एक दूसरे को किए गए संबोधनों में उन नामों से संबोधित करते हैं। इन पात्रों का नाम का अनुवाद नहीं किया जा सकता क्योंकि ये किसी कृति विशेष को ध्यान में रखकर प्रयुक्त है। परन्तु इनका मात्र लिप्यांतरण कर फुटनोट दे दिए गए हैं। जिससे की पात्रों की वास्तविकता बनी रहे तथा उपन्यास में प्रमाणिकता बनी रहे।

हमारा सम्मिलित अवचेतन हमारी धार्मिक आस्था, हमारे विश्वास, हमारा खान-पान, रहन-सहन, आभूषण, स्थापत्य, चित्रकला, संगीत, साहित्य और अनेक प्रकार के शिल्प हमारी संस्कृति से ही निर्धारित होते है। इसलिए जीवन के अनेकों कार्य-कलापों का विश्लेषण हम किसी संस्कृति विशेष के परिप्रेक्ष्य में ही के द्वारा प्रस्तुत कर सकते हैं। समाज का समूचा व्यवहार भी संस्कृति द्वारा निर्धारित होता है। इसलिए सामाजिक विश्लेषण में भी संस्कृति की पहचान करना संभव नहीं है। बेकन के अनुसार, "संस्कृति नैतिक जीवन, धार्मिक एवं बौद्धिक विकास से सम्बंधित होती है।" इसी प्रकार मैथ्यू आर्नाल्ड "संस्कृति को पूर्णत्व की खोज मानते हैं, वह पूर्णत्व जो मानव को मानवता और समाज को सर्वांगीण उन्नति की ओर प्रेरित करता है।"[3] वहीं हिन्दी विश्वकोश के अनुसार– "संस्कृति उस समुच्चय का नाम है जिसमें ज्ञान-विश्वास, कला, नीति विधि, रीति-रिवाज़ तथा अन्य ऐसी क्षमताओं और आदतों का समावेश रहता है, जिन्हें मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में मानता है।"[4]

हर समाज का अपना साहित्य, संस्कृति और अपनी कला होती है। लेखक ने उपन्यास में पात्रों पर पाश्चात्य प्रभाव दिखाने के लिए पाश्चात्य फिल्मों और संगीतकारों के नामों का प्रयोग किया है जैसे, Scott Joplin और Keith Jarrett

---

[3]Arnold, Mathew, *Culture and Anarchy*, Cambridge University Press, 1932, p.11

[4] *हिन्दी विश्व कोश*, खण्ड 12, पृ.14

आदि का संगीत, Herog और Carlos Saura आदि फ़िल्म निर्देशकों की फिल्में, Ab salom, Achilophel, Marcus Aurelius लेखक, जो विशेष प्रवृत्ति के द्योतक हैं। अत: किसी पात्र को उपन्यास में साकार करने के लिए उनके रूझानों को समझना एक बहुत ही सही तरीका होगा। उपन्यास के पात्र भारतीय हैं परन्तु पाश्चात्य संस्कृति से भी प्रभावित है। उनकी जीवन शैली से ही उनके व्यक्तित्व को उकेर सकते हैं। जैसे, वह क्या पहनता है, वह कौन-सा संगीत सुनता है, वह कैसी फिल्में देखता है, किस प्रकार का साहित्य पढ़ता है। इसी लिए लेखक ने उक्त घटकों के माध्यम से उसकी उपस्थिति को साकार किया है। उसी को अनूदित कृति में बनाए रखना एक चुनौती थी, परन्तु लिप्यांतरण और फुटनोट का सहारा लिया है, जिससे पाठक वर्ग को समझने में असुविधा न हो और वह पात्रों की वैयक्तिकता को भी जान सके।

लेखक ने मनोविश्लेषण के आधार पर पात्रों की मन:स्थिति को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। वह उपन्यास में यह दिखाने का प्रयास करता है कि किस प्रकार समाज ने ग़लत और सही का पैमाना बना दिया है और इस कारणवश मनुष्य अपनी मूल इच्छा को सही तरह से व्यक्त नही कर पाता। उसकी गुप्त भावनाएँ विकृत रूप में निकलती हैं जैसे अगत्स्य ने बंद कमरे में एक गुप्त संसार बना रखा है जो कि बाहरी संसार की नज़र से दूर है। और उसे यह गुप्त संसार बहुत प्यारा जान पड़ता है और बाहरी संसार से ज्यादा अपने गुप्त संसार को पसंद करता है। अंतर्मुखी रहना वह कहीं ज़्यादा रहना पसंद करता है। फ्रॉयड ने भी कहा है कि 'सांसारिक दबावों के कारण आन्तरिक भावानाओं के दमन से एक अंतर्मुखी व्यवहार का जन्म होता है जिसको फ्रॉयड 'एबनॉर्मल रिपरैशन' कहते हैं।'[5] अगस्त्य भी समाज के उसी पैमाने से इतना ज़्यादा बँधा हुआ है कि उसने अपना एक गुप्त संसार बना रखा है जो कि उसके क़रीबी मित्र को भी नहीं पता। उस गुप्त संसार का बाहरी संसार के समक्ष आने में डरता है। इसलिए वह अकेला रहना ज़्यादा पसंद करता है। पात्र के मनोविज्ञान को समझकर मूल पाठ की तरह लक्ष्य पाठ में साकार करना एक बड़ी चुनौती थी। उसकी पात्रता को मनोवैज्ञानिक रूप से समझने के लिए फ्रॉयड का सहारा लिया तथा फिर अनूदित कृति में उकेरने का प्रयास किया गया है।

---

[5] Sigmund Freud, *Five Lectures on Psychoanalysis,* penguin,1995, p.28-9

लेखक के पात्रों विशेषकर नायक अगस्त्य की पात्रता को फ्रॉयड के 'प्रोजेक्शन'[6] सिद्धान्त के माध्यम से समझने की कोशिश रही। उपन्यास में जज जब स्वयं के विचार अगस्त्य के सामने रखता है कि वह मदना में बहुत अकेलापन महसूस करता है और उसे अपने बेलागाँव की याद सताती है तो अगस्त्य को वह अपनी तरह लगने लगता है और अचानक उसके दिल में उसके लिए हमदर्दी पैदा हो जाती है। क्योंकि एक आदमी उसके जैसा है मदना में, जो उसकी तरह महसूस कर रहा है। यहाँ पर फ्रॉयड के 'प्रोजेक्शन सिद्धान्त' का प्रभाव दिखाई देता है। इस प्रकार पात्रों की मानसिकता को समझने में चुनौतियों का सामना करना पड़ा परन्तु मनोविश्लेषण के द्वारा पात्रों की मानसिकता को समझ कर अनुवाद करने की कोशिश की गई है।

सभी साहित्यिक विधाओं के अनुवाद में अनुवादकों को कमोबेश समान समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अनुवाद के दौरान दो भाषाओं का आपसी संचार, अनुवादक की संवेदना तथा स्रोत साहित्य की मूल संस्कृति की समझ, प्रतीकों, मुहावरों अथवा लोकोक्तियों का भरपूर ज्ञान आदि ऐसे गुण हैं जो साहित्यिक अनुवादक के लिए अपरिहार्य हैं। साहित्यिक अनुवाद के लिए प्रतिभा, क्षमता और अभ्यास तीनों का अत्यधिक महत्त्व है।

यह अनुवाद कार्य करने में प्रस्तुत अध्येता को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा है। साहित्यिक कृति का अनुवाद तो वैसे भी काफ़ी दुरूह कार्य होता है। उपर्युक्त वर्णित विवरण एवं समस्याओं के अलावा इसमें वाक्य-विन्यास संबंधी समस्याएँ भी कम नहीं थी। सर्वविदित है कि अंग्रेज़ी भाषा में वाक्यों की प्रकृति काफी संश्लिष्ट होती है जबकि हिन्दी में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। उसमें मुख्य वाक्य के साथ सहवाक्य, उपवाक्य, योजक चिन्ह या योजक पद और क्रिया पदों का विशेष संयोजन किया जाता है। प्रस्तुत अनुवाद में प्रस्तुत शोध अध्येता ने कई स्थलों पर मूल के अनुरूप लंबे-लंबे वाक्य ही सँजोए हैं और कहीं अर्थ की प्रभावी सार्थकता के लिए कहीं-कहीं संदर्भानुसार छोटे-छोटे वाक्य भी रखे हैं। कविताओं, गीतों, ठुमरी के अनुवाद जहाँ एक तरफ चुनौती बन कर सामने आए वहीं कुछ नया सीखने में आनंद

---

[6] Projection … in its simplest form, refers to seeing one's own traits in other people. (Baumeister, Dale and Sommer, 1998, p. 1090)

भी आया। पात्रों और उनकी बेबाकीपन को साकार करना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य था परन्तु कथानक के भारतीय परिवेश से सम्बद्ध होने कारण मूल पाठ को आत्मसात करने में आसानी हुई और इसे अनूदित करते हुए कई-कई बार अभ्यास के दौरान इससे काफ़ी कुछ सीखने को भी मिला।

उपसंहार

उपसंहार

'उपमन्यु चटर्जी के अंग्रेज़ी उपन्यास *'इंग्लिश, ऑगस्त–एन इंडियन स्टोरी' का हिन्दी अनुवाद एवं भाषिक-सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण* विषयक इस शोध में भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य के प्रख्यात लेखक उपमन्यु चटर्जी के चर्चित उपन्यास *'इंग्लिश ऑगस्त'* का हिन्दी अनुवाद करते हुए दोनों भाषाओं की विशिष्ट संरचना की भाषिक और सामाजिक-सांस्कृतिक समतुल्यता सम्बन्धी कई रोचक प्रसंग सामने आए। दोनों भाषाओं की स्थानीयता एवं सांस्कृतिक पहचान और भाषिक प्रयुक्तियों को ध्यान में रखकर विश्लेषणपरक व्याख्या प्रस्तुत करना वस्तुत: आह्लादक और ज्ञानवर्द्धध रहा। यह कार्य उक्त उपन्यास के हिन्दी अनुवाद को सामने रखकर किया गया है। आवश्यकतानुसार पाठपरक व्याख्या एवं पुनर्सृजन को भी आधार बनाया गया। अनुवाद के दौरान एक तरफ़ समान (सम) अभिव्यक्ति को प्राथमिकता दी गयी, तो दूसरी तरफ़ असमान (विषम) व्याख्यात्मक अभिव्यक्तियाँ को भी प्राथमिकता दी गई है। इन प्रसंगों पर पर्याप्त सावधान रहते हुए समुचित अनुवाद किया गया है। स्थानीय समाज तथा लेखक के जीवन एवं स्मृति में विद्यमान बंगाली रीति-रिवाज़ों के साथ, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्सवों, पर्वों, पदनामों एवं नाते-रिश्तों की शब्दावली के साथ मूल पाठ के आन्तरिक पक्षों का भी अध्ययन किया गया है।

पाँच अध्यायों में विभाजित इस शोध-प्रबन्ध के पहले अध्याय में भारतीय अंग्रेज़ी में लिखित उपन्यास की चर्चा करते हुए स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय अंग्रेज़ी कथा साहित्य के चर्चित कथाकार उपमन्यु चटर्जी का साहित्यिक परिचय दिया गया है। इस अध्याय में भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यास की लेखन-परम्परा के साथ इसके विकास, वर्तमान स्थिति, मुख्यतया आज़ादी के बाद भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यास की चर्चा की गई है। इसी आलोक में प्रमुख लेखक उपमन्यु चटर्जी का जीवन-वृत्त तथा सामाजिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि पर भी विशेष रूप से परिचय दिया गया है। साथ ही, उनके द्वारा लिखित साहित्य और वैचारिक लेखन का भी अद्यतन उल्लेख किया गया है। इन सबके अलावा *'इंग्लिश ऑगस्त'* की अन्तर्वस्तु का सम्यक् मूल्यांकन किया है।

प्रबंध के दूसरे अध्याय में 288 पृष्ठों के अंग्रेज़ी उपन्यास *'इंग्लिश ऑगस्त'* का हिन्दी अनुवाद है। अनुवाद के दौरान विभिन्न सिद्धान्तों– जैसे समतुल्यता सिद्धान्त, व्याख्या सिद्धान्त, व्यतिरेकी सिद्धान्त, लोप एवं संयोजन -जैसी प्रविधियों का विशेष ध्यान रखा गया है। पुनर्सृजन सिद्धान्त के आधार पर हिन्दी अनुवाद कार्य संपन्न करते हुए, भाषा और शैली के स्तर पर स्रोत भाषा के समतुल्य प्रभाव का सृजन करने का ध्यान रखा गया है। क्षेत्र-विशेष या स्थानीय परिवेश में प्रयुक्त शब्द या विशेष पदों की व्याख्या पाद-टिप्पणी के माध्यम से की गई है। अनुवाद कार्य के दौरान भावानुवाद, शब्दानुवाद और शैलीपरक अनुवाद का विनियोग यथाप्रसंग किया जाता है। इस अध्याय में अनुवाद करते हुए मूल कथावस्तु प्रवाह-धारा, पात्रगत वैशिष्ट्य, परिवेशगत प्रामाणिकता, सांस्कृतिक प्रंसगों, क्षेत्रीय पहचान की आवश्यकता को को यथासाध्य अक्षत भाव से प्रस्तुत किया गया है।

तीसरे अध्याय में स्रोत एवं लक्ष्य पाठ का भाषिक अनुशीलन है। इस अध्याय में मूल अंग्रेज़ी पाठ के संदर्भ में, हिन्दी अनुवाद का भाषिक विश्लेषण किया गया है। भाषाई समानताओं और विषमताओं के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन और विश्लेषण इसका आधार है। *इंग्लिश ऑगस्त* उपन्यास के रूपपरक, भावपरक, शैलीपरक विश्लेषण के साथ इसमें प्रयुक्त मिथक, मुहावरे, लोकोक्ति, स्थानीय प्रयोग, अपशब्द, गीत, कविता आदि का भी अनुशीलन किया गया है ।

चौथा अध्याय में 'इंग्लिश ऑगस्त' के हिंदी अनुवाद से संबद्ध समस्याओं के आलोक में सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण किया गया है। मूल उपन्यास के आधार पर बंगाल की सांस्कृतिक पहचान और मदना जैसी जगह की विशिष्ट एवं स्थानीय प्रथाओं, मान्यताओं एवं रिश्ते-नातों से संबंधित पदों एवं प्रयोगों का विश्लेषण किया गया है। उपन्यास में विन्यस्त पात्रों की प्रवृत्तियों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। उपन्यास में चित्रित प्रशासनिक और सामाजिक विडम्बनाओं तथा स्थानीय आदिवासियों के शोषण एवं नक्सलवाद से उत्पन्न समस्याओं का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है। भाषा तथा संवेदना के स्तर पर इन प्रसंगों से जुड़ी अवधारणाओं के अनुवाद में भाषिक एवं सांस्कृतिक अंतरण की समस्याओं और चुनौतियों पर भी विचार किया गया है।

पाँचवाँ अध्याय *'इंग्लिश ऑगस्त'* के हिन्दी अनुवाद की समस्याओं पर केन्द्रित है। इस अध्याय में उक्त उपन्यास के अंग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद के दौरान आनेवाली विभिन्न समस्याओं पर विचार हुआ है। अंग्रेज़ी एवं हिन्दी दोनों अलग-अलग भाषा परिवारों की भाषाएँ है। इनमें समानताओं की अपेक्षा विषमताएँ अधिक हैं। उपन्यास में चित्रित अविकसित कार्यक्षेत्र (मदना, जोमपन्ना आदि) और लेखक के समृद्ध भावक्षेत्र (कलकत्ता, बंगाल, दिल्ली) के अपने-अपने सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ एवं प्रकृति सर्वथा भिन्न हैं। इन विषमताओं के कारण सामाजिक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का सटीक अनुवाद अत्यंत चुनौतीपूर्ण था। इन पक्षों पर इस प्रबंध में विस्तार से चर्चा करते हुए, अनुवाद के दौरान उपस्थित समस्याओं का यथासंभव निदान ढूँढ़ा गया है। उपसंहार में शोध योजना से संबंधित निष्कर्ष दिए गए हैं।

उपन्यासकार उपमन्यु चटर्जी *इंग्लिश ऑगस्त* के पाठक वर्ग से भांलि-भांति परिचित थे। वे जानते थे कि इसके भारतीय पाठक वही होंगे, जो अंग्रेज़ी कथा साहित्य पढ़ते हैं और आधुनिक प्रवृत्तियों, चुनौतीपूर्ण विषयवस्तु और नई शैली से परिचित होंगे। इसलिए उन्होंने *इंग्लिश ऑगस्त* में मध्यवर्गीय भारतीय मानसिकता का रूढ़िग्रस्त ढ़ाँचा खड़ा किया गया है। हालाँकि मुख्य नायक अगस्त्य का अभिजात्य पात्रों के साथ कई परंपरागत जीवन जीने वाले पात्रों से ही नहीं, आदिवासी इलाक़े के पात्रों से भी

सामना हुआ है, लेकिन वह अपने स्वभाव और रचाव के अनुरूप सबसे अलग अपना अपनी शर्तों पर निर्द्वंद्व और निर्बंध जीवन जीना चाहता है।

प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु उपन्यास के अनुवाद में एक नई समस्या उत्पन्न करती है। उपन्यास में भारतीय कहानी को अंग्रेज़ी भाषा में रचा गया है जो कि स्वयं में सांस्कृतिक अनुवाद है अत: उसको पुन: भारतीय भाषा के सांचे में ढ़ालना चुनौतीपूर्ण था। कथावस्तु को लेखक ने व्यंग्य और विनोद के सांचे में प्रस्तुत किया है। उनकी यह विंडबनापूर्ण शैली उपन्यास को उन तमाम उपन्यास से अलग स्थान देती है जो समान विषयस्तु को गंभीर स्वर में प्रस्तुत करते हैं। लेखक की इसी व्यंग्य और विनोद की शैली को उन तमाम गंभीर प्रसंगों में यथारूप में प्रस्तुत करना चुनौतीपूर्ण रहा। परन्तु प्रस्तुत अध्येता ने जैसे-जैसे उपन्यास का भाषिक-सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण किया वैसे-वैसे अनुवाद करने का रास्ता खुलता गया।

लेखक ने उपन्यास की भाषा में व्यंजकता लाने के लिए देशी और ठेठ मुहावरों का बहुत प्रयोग किया है। अंग्रेज़ी भाषा का अपना समाज और भाषा संसार होता है। अत: उससे ही संबद्ध मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी होती हैं। यही मुहावरे और लोकोक्तियाँ समाज विशेष का द्योतक होते हैं। लेखक ने क्षेत्रीय बोली यहाँ तक कि फूहड़ और भदेस (अश्लील) शब्दावली में स्वगत और परस्पर संवाद में भरपूर उपयोग किया है। इनका अनुवाद करते समय तथा किसी भी भाषा के मुहावरे को दूसरी भाषा में यथारूप प्रस्तुत करना और मूल के आशय को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता है। मूल के अनुरूप अनुवाद करते हुए मुझे चुनौती का सामना करना पड़ा। कई मुहावरों का शब्दानुवाद हो सकता था परन्तु कई का भावानुवाद करने से ही अर्थ को अनर्थ होने से बचाया जा सकता था। जैसे- Skeletons in his cupboard (43) का घर का भेदी लंका ढाए।, Into some coherent whole (118) का एक ही थाली के चट्टे बट्टे। आदि मुहावरों का भावानुवाद करके ही अर्थ को यथारूप प्रस्तुत कर सकते थे। उपन्यास भारतीय सामाज से संबंद्ध है इसलिए उन मुहावरों का विशेष रूप से भारतीय समाज को ध्यान में रखकर अनुवाद करने की कोशिश की गई है, जिससे मुहावरे का अर्थ का अनर्थ न हो और साथ ही व्यंजकता विद्यमान रहें।

उपन्यास में लेखक ने परिवेश और वातावरण को साकार करने के लिए हिन्दी फ़िल्म के गीतों जैसे– You do not disappoint me, life You astound me.., रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीत जैसे– With the death of the day, a red bud burgeons within me, It shall blossom into love.., आदि कविता पंक्तियों का प्रयोग किया है। साथ ही ठुमरी के अंश और शेक्सपियर की कविताओं का भी सहारा लिया है, इनका अनुवाद करना उपन्यास विधा के अनुवाद से बहुत ही भिन्न है। क्योंकि हर विधा का अनुवाद अलग-अलग प्रक्रियाओं से होकर गुज़रता है। हर गद्य विधा का अनुवाद शब्दानुवाद नहीं किया जा सकता। कविता या गीतों के अनुवाद को मुख्यत: पुर्नसृजन कहा जाता है। इन अंशों के अनुवाद में भावानुवाद और पुर्नसृजन का सहारा लिया।

उपन्यास में हर एक पात्र एक दूसरे से बहुत भिन्न है। यह भिन्नता लेखक ने मूल कृति में पहनावे, रहन-सहन, क्रिया कलाप एवं पसंद-नापसंद से प्रस्तुत अलग-अलग किया है। क्योंकि अंग्रेज़ी भाषा में भारतीय पात्रों को रचना ने लेखक के लिए भी समस्या उत्पन्न की होगी। वहीं अनुवाद के दौरान पात्रों को वैसी ही जीवंतता प्रदान करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था परन्तु इस चुनौती का समाधान पहनावा, पसंद नापसंद के साथ-साथ भाषा के स्तर में भिन्नता लाकर अनूदित करने का प्रयास किया है। चूँकि इसकी कथावस्तु भारतीय है इसलिए भाषा के स्तर पर जो भिन्नता हमारे देश में पाई जाती है उसे मूल के अनुरूप बनाए रखने का प्रयास किया गया है। जैसे शिक्षित और अभिजात्य वर्ग के अपने सहयोगियों और मित्रों से जैसे बात करते हैं वैसे अपने से अधीनस्थ वर्ग या लोगों से नहीं करते उनसे बात करने का स्तर और लहजा अलग होता है। यह हिन्दी भाषा की विशिष्टता है जो कि अंग्रेज़ी भाषा में नहीं है। अत: इसी विशिष्टता का प्रयोग करके अनूदित पाठ में पात्रों की निजता और वैयक्तिकता को बनाए रखा गया है।

लेखक ने उपन्यास में नई पीढ़ी का बेबाकीपन और पाश्चात्य सामाज से प्रभावित जीवन शैली को दर्शाया है। लेखक ने पात्रों के बेबाकीपन का संचार करने के लिए भाषा के स्तर पर Mongrelness (1), Fucker और Mother Fucker(38) जैसे स्त्रीवाची

अपशब्दों और गालियों का अत्यधिक प्रयोग किया है, इसका अनुवाद करना एक बड़ी समस्या थी। परन्तु भाषिक और सामाजिक विश्लेषण करने के दौरान इस समस्या का समाधान मिला तथा पाठ की माँग के अनुसार कहीं भावानुवाद किया कहीं शब्दानुवाद। जिससे मूल की विशिष्टता का अनुवाद के कारण क्षति ना हो।

उपन्यास मुख्यत: भारतीय कथावस्तु को समेटे हुए है परन्तु कई पात्रों पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिखाया गया है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव उनकी मानसिकता, जीवन शैली, उनके द्वारा पढ़े जाने वाले अंग्रेज़ी साहित्य, पाश्चात्य संगीत और कपड़े के ब्रैन्ड आदि से दिखाने की कोशिश की गई है। लेखक ने उपन्यास के मुख्य पात्र के मन में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति के मध्य एक द्वंद्व को दिखाने की कोशिश की है। इसे भाषा, साहित्य, संगीत के स्तर पर दिखाया गया है। लेखक ने नायक द्वारा उसके पढ़े जाने वाले साहित्य के द्वारा बताया है कि वह कैसे मार्कस ऑरेलियस की *मेडीटेशन* पढकर शांति खोजता है तो कभी *भगवतगीता* पढ़कर। अत: अनुवाद के द्वारा इस विशिष्टता को बनाए रखना भी एक समस्या थी। भाषिक-सामाजिक विश्लेषण के दौरान इसको समझने का प्रयास किया गया और इससे कथनात्मक ढंग से संबंधित पाठ को अनूदित करने में सहायता मिली।

उपन्यास में अगस्त्य के अन्तर्मन में चल रही फैन्टसी को अनूदित कृति में उसी बेबाकीपन से प्रस्तुत करना चुनौतीपूर्ण था परन्तु मनोविश्लेषण विज्ञान का सहारा लेकर पात्र की मानसिक स्थिति से रू-ब-रू होने में आसानी हुई। इससे उसकी संवेदना और बेबाकीपन को ध्यान में रखकर हिन्दी में से अनुवाद करने का प्रयास किया गया है जिससे मूल का ह्रास ना हो।

निष्कर्षत: यह कृति स्वयं में बहुत सारी विधाओं को समेटे हुए है जैसे रचनात्मक गद्य और कहीं-कहीं पद्य। हिन्दी में इसे अनुवाद करते समय इन विधाओं में आनेवाली समस्याओं का ज्ञान हुआ तथा उनके समाधान निकाले का प्रयत्न भी किया गया। प्रस्तुत कृति भारतीय कथावस्तु को लेकर लिखी गई है इसलिए अंग्रेज़ी भाषा में विन्यस्त भारतीय संस्कृति के अनुवाद को– यानी सांस्कृतिक अनुवाद को पुन: भारतीय संस्कृति की मौलिक भाषा अर्थात् हिन्दी में अनूदित करना था। चूँकि

उपन्यास में आए कई पात्र पाश्चात्य संस्कृति से बहुत गहरे रूप में प्रभावित हैं, इस कारण पाश्चात्य संस्कृति से संबद्ध पहलुओं का भी अनुवाद करना था, जिसमें कहीं भावानुवाद और कहीं शब्दानुवाद का सहारा लिया गया। कोई भी कृति का अनुवाद अंतिम अनुवाद नहीं होता अत: कोई न कोई सुधार की गुंजाइश रह ही जाती है परंतु अनुवाद के भाषिक और सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण द्वारा संबंधित समस्याओं और उनके समाधान की चर्चा से आगे किए जाने वाले अनुवादों में इससे निश्चय ही सहायता मिलेगी।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography)

आधार ग्रंथ-

- चटर्जी, उपमन्यु, *इंग्लिश, ऑगस्त-एन इंडियन स्टोरी*, फ़ेबर एण्ड फ़ेबर, बोस्टन, लंडन, 1988

सहायक ग्रंथ-

- अय्यर, एन. ई. विश्वनाथ, *अनुवाद: भाषाएँ-समस्याएँ*, ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली, 1992
- अय्यर, एन. ई. विश्वनाथ, *अनुवाद कला*, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली
- अय्यर, एन. ई. विश्वनाथ, *व्यावहारिक अनुवाद*, प्रतिष्ठान प्रकाशन, दिल्ली
- उपाध्याय, बलदेब, *पुराण विमर्श*, चौखम्बा विद्याभवन .सं ,वाराणसी ,1976 ,
- कुमार, सुरेश, *अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1986
- खरे विष्णु(सं.), *स्वप्न और यथार्थ का सृजन शिखर*, उद्भावना, दिल्ली, 2006
- गाँधी, महात्मा, *हिन्द स्वराज, लोक भारती,* 2016
- गुप्त, आर. एस. *1400 से अधिक लोकोक्तयाँ एवं मुहावरे*, 2014
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2008
- चंद्र, बिपन, *साम्प्रदायिकता: एक परिचय*, अनामिका पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2004
- जैन, वृषभ प्रसाद, *अनुवाद और मशीनी अनुवाद*, सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995
- जी.गोपीनाथन और एस.कंदास्वामी(सं.), *अनुवाद की समस्याएं*, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, 1993
- टंडन, पूरनचंद, *हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी और अनुवाद*, किताब घर, नई दिल्ली, 2012

- टंडन, पूरनचंद, *अनुवाद साधना*, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली, 2007
- तिवारी, बालेन्दु शेखर (सं.), *अनुवाद विज्ञान*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- तिवारी, भोलानाथ, *अनुवाद विज्ञान*, अमर प्रिटिंग प्रेस, दिल्ली, दिसम्बर-1972
- तिवारी, भोलानाथ, *अनुवाद विज्ञान: सिद्धान्त एवं प्रविधि*, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली, 2011
- तिवारी, भोलानाथ, महेन्द्र चतुर्वेदी(सं.), *काव्यानुवाद की समस्याएँ: साहित्य का अनुवाद*, शब्दकार, दिल्ली, 1983
- दूबे, महेन्द्रनाथ, *अनुवाद कार्यदक्षता, भारतीय भाषाओं की समस्याएँ*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
- द्विवेदी, देवीशंकर, *भाषा और भाषिकी*, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993
- द्विवेदी, राजेन्द्र, *भाषाशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश*, आत्मा राम एंड संस, दिल्ली, 1963
- दिंनकर, डॉ. रामधारी सिंह, *संस्कृति के चार अध्याय*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद सं.,1993
- नगेन्द्र, *अनुवाद विज्ञान, सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग*, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली, 1993
- नाईक, ए.के. , अनु पहारे .हेमचन्द्र, भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य का इतिहास, साहित्य आकादमी, 1989
- पाण्डेय, हेमचन्द्र, *भाषा स्वरुप और सरंचना*, ग्रंथलोक, नई दिल्ली, 2015
- पाण्डेय ,मैनेजर ,उपन्यास और लोकतंत्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
- पालीवाल, रीतारानी, *अनुवाद प्रक्रिया और परिदृश्य*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2007
- भारद्वाज, मैथली प्रसाद, *शोध प्रविधि*, आधार प्रकाशन, हरियाणा, 2005
- रावत, चन्द्रभान (सं), *अनुवाद: अवधारणा और अनुप्रयोग*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1998
- लियोन्स, जोन, *सैद्धान्तिक भाषा विज्ञान*, मुंशीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली, 1972
- वाशिष्ठ, सरिता, *भाषा विज्ञान*, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली, 2014
- शर्मा, राजमणि, *आधुनिक भाषा विज्ञान*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1996

- शर्मा, रामविलास, *भाषा और समाज*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2002
- शास्त्री, चक्रधर नौटियाल '*हंस*', *बृहद् अनुवाद चन्द्रिका*, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1961
- शास्त्री, सूर्यदेव, *मनोभाषिकी*, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1973
- सिंह, अनुज प्रताप, *अनुवाद सिद्धान्त एवं व्यवहार*, 2008, ग्रंथलोक, दिल्ली
- सिंह, सूरजभान, अंग्रेज़ी-हिन्दी अनुवाद व्याकरण, प्रभात, दिल्ली, 2006
- श्रीवास्तव, रविन्द्रनाथ, *भाषा शिक्षण*, वामी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992

अंग्रेज़ी पुस्तकें

- Angelelli, Claudia V, Brian James Baer, *Researching Translation and Interpreting*, Routledge, Newyork, USA, 2015
- Anjaria, Ulka, *A History of the Indian Novel In English*, Cambridge University Press, 2015
- Aneta Pavlenko(Ed.), Multilingualism, second Language Learning And Gender, De Gruyter. Newyork, 2001
- Arnold, Mathew, *Culture and Anarchy*, Cambridge University Press, 1932.
- Baker, Mona, *In other Words, A Coursebook On Translation*, Routledge Taylor And Francis Group, London And Newyork, 2002.
- Bassnet, Susan, *Andre' Lefevere, Constructing Cultures, Essays On Literary Translation*, Cromwell press, UK, 1998.
- Bassnet Sussan, *Relections On Translation*, Multilingual Matters, Toronto, 2011.
- Bassnett, Sussan, Andre Lafevere(Ed.), *Translation, History And Culture*, Cassell Willington House, London, 1996.
- Bassnet, Susan, *Translation Studies*, Fourth Edition, Routledge, Taylor And Francis Group, London , And Newyork, 2004

- Bellos, David, *Is That A Fish In Your Ear, Translation And Meaning Of Everything*, Farrar, Straus and Giroux, US, 2011.
- Barnstone, Sandra And Michael Wood, *Nation, Language And Ethics of Translation*, Princeton University Press, UK, 2005.
- Bhushan, Nalini and L.Garfield, *Indian philosophy in English from renaissance to independence*,: Oxford University, New York, 2011.
- Boase, Jean, Beier, *Stylistic Approaches To Translation*, Routledge Taylor And Francis Group, London And Newyork, 2006.
- Boase, Jeane, Beier, *A Critical Introduction Of Translation Studies*, Continuum International Publishing Group, London, 2011.
- Catford, J.C. , *A linguistic Theory of Translation*, London,1965
- Chakravorty spivak, Gaytri, *An Aesthetic Eduaction in the Era of Globalization*, Harvard University Press, 2013.
- Chaudhuri, Amit, *The Picador Book of Modern Indian Literatur,* Picador, 2001.
- Chesterman, Andrew, Emma Wagner, *Can Theory Help Translators?- A Dialogue between Ivory Tower And Wordface*, St Jerome Publ, UK, 2002.
- Chetan. *Indian writing : Chetan Karnani*, Arnold, New Delhi,1995,
- Chomsky, Naom, *language And Of the Theory of Syntax*, MIt Press, Cambridge, London, 2014.
- Chomsky, Naom, *Language And The Mind*, Cambridge University Press, London, 2006.
- Cook, Vivian, David Singleton, *Key Topics In Second Language Acquistion*, MM Textbooks, Toronto, 2014.

- David, McCutchion. *Indian writing in English: critical essays*, writers workshop, Calcutta, 1973
- Das, Bijay Kumar, *A Handbook Of Translation Studies*, Atlantic Publishers(p), Delhi, 2013.
- Delabastita, Dirk(Ed.), *A topical Bibliography Of Translation And Interpretation*, Benjamin Publishing House, Amsterdam.
- Deutscher, Guy, *The unfolding Of Language*, Arrow Books, Uk. 2005.
- E V Rama krishan, Harish Trivedi And Chandramaoha. *Interdisciplinary Alter-Natives in Comparative literature*, SAGE Publication Pvt. Ltd, 2013.
- Gentzler, Edwin, *Contemporary Translation Theories*, Cromwell Press, UK, 2003
- Hornberger, Nancy H, Sabdra Lee Mckay (Ed.), *Sociolinguistics And Language Education*, Multilingual Matters, Toronto, 2010.
- House, Juliane, *Translation Quality Assessment, Past and Present*, Rotledge, New York, 2015.
- K.R Srinivasa Lyengar and K srinivasa sastry. *Indian English Literature*. Aisa Publication, Newyork, 1962.
- Lyengar, K.R.S. *Indian Writing in English*. Bombay: Asia Pub.c1962.
- .Mehrotra, A. K., *An Illustrated history of Indian Literature in English*, Delhi Permanent Black, 2006.
- Naik, M.K.,ed *Twentieth century Indian English fiction*, Delhi Pencraft International, 2004.
- Paranjape, Makarand. *Post-Independence Indian English literature*. *Economic and Political Weekly*, Vol.33.Issue18,. Sameeksha Trust Language, 5/02/1998
- Pathak ,R.S., *Quest for identity in Indian English writing*. New Delhi: Bahiri Publication, 1992.

- Prasad, J.V., *Indian writing in English;Language,location*. London: New York:Routledge, 2011.
- Ramnarayan, Gowri, Way to go, man!, *The Hindu, 11 November, 2016.*
- R Raghunath Rao, *The Art of Translation*, Bookhind Corporation, Hyderabad, 1990
- Riemenschneider, *Dieter. The Indian Novel in English*. New Delhi: Rawat, 2005.
- Salama, Myriam-Carr (Ed.), *Translation And Interpreting Conflict*, , Rodopi, USA, 2007.
- Saldanha, Sharon O' Brien, *Research Methodology In Translation Studies*, Routledge Taylor and Francis Group, London And Newyork, 2014
- Shastri Prastima Dave, *Fundamental Aspects Of Translation*, PHI Learning Private Limited. Delhi, 2012.
- Sigmund Freud, *Five Lectures on Psychoanalysis,* penguin,1995.
- Singh, R.K . *Indian English Writing 1981-1985*. Bahri publication, 1987.
- Sinha, K.N. *Indian Writing in English*. New Delhi: Heritage publication,1979.
- Susan Bassnett And Harish Trivedi. *Postcolonial Translation:Theory and Practice*, Routledge, 1999.
- Swvory, Theodre, *The Art of Translation*, London, Cape, 1957
- Tiffin, Helen. *"Postcolonialism, Postmodernism and the Rehabilitation of Post-colonial History".* The Journal of Common - Wealth Literature. London: Hans Zell publisher, 1988.
- Tokuhama, Tracy, *Espinosa, Living Languages, Multilingualism Across The Lifespan*, Greenwood Publishing Group, Westport, USA.

- Toury, Gideon, *Descriptive Translation Studies And Beyond*, 2012, John Benjamin's Publishing, Amsterdam.
- Trevidi, H. C., *Problems in Linguistic and Cultural Translation*, Ahmedabad, New Order Book Depot,1971
- Trivedi, Harish. Colonial Transactions: *English Literature and India*. Manchester University Press, 1995. English
- The standard edition of the complete works of Sigmund Freud (Vol. 19). London, Hogarth Press.

शब्दकोश

- Oxford English-English Hindi Dictionary, Dr. Suresh Kumar, Dr. Ramanath Sahai,
- Little Oxford English Dictionary, Angus Stevenson Eighth Edition, 2005
- Prabhat Vidyarthi English-Hindi dictionary, Badri Nath Kapoor prabhath Prakhashan, 2013
- Concise Dictionary English-Hindi, V& S Publishers, 2014
- Comprehensive Dictionary English-Hindi, B. B. Sinha, Invincible Publisher, 2015.
- Collins, Cobuild Pocket English-English-Hindi Dictionary, Little brown And company publishers, 2011
- हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राज्यपाल एण्ड सन्स, 2009

Websites

http://www.shabdkosh.com/

https://translate.google.co.in/

https://www.collinsdictionary.com/dictionary/english-hindi

https://shabdkosh.raftaar.in/English-Hindi-Dictionary

http://www.thehindu.com/features/metroplus/Way-to-go-man/article15789505.ece

https://www.revolvy.com/main/index.php?s=Upamanyu%20Chatterjee

https://www.loc.gov/acq/ovop/delhi/salrp/upamanyuchatterjee.html

https://scroll.in/article/874564/a-new-illustrated-biography-of-indira-gandhi-offers-a-visual-treat-but-omits-many-of-her-key-flaws